THE BOOK WAS DRENCHED

TIGHT BINDING BOOK

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182888

UNIVERSAL
LIBRARY

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-10.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

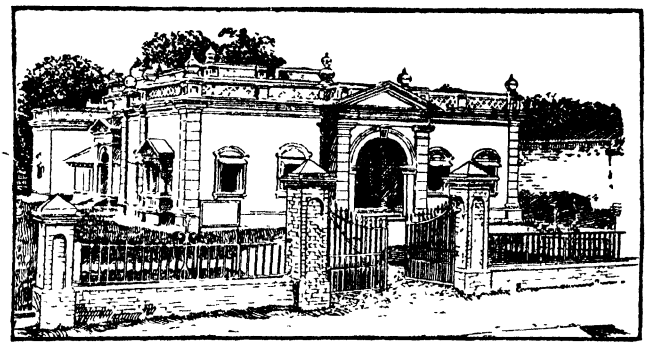
BY

Mohanlal Vishnulal Pandia,

AND

Syam Sundar Das, B A.

CANTOS XXXVI to XLIII.



महाकवि चंद बरदाइ

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

दूहा

पर्व्व ३६ से ४३ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

[ ] Issued 15th July, 1907. [*Price Re. 1-4.*

Checked 1962

सूचीपत्र ।

—:o:—

(३६) हंसावती व्याह	....	....	पृष्ठ १०७३ से १०९७ ।
(३७) पहाड़राय समय	....	....	,, १०९९ ,, १११८ ,,
(३८) वरुण कथा	....	....	,, १११९ ,, ११२८ ,,
(३९) सोमबध समय	....	....	,, ११२९ ,, ११५२ ,,
(४०) पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव	....		,, ११५३ ,, ११५६ ,,
(४१) पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव	....		,, ११५७ ,, ११६३ ,,
(४२) चंद द्वारका समय	....		,, ११६५ ,, ११७७ ,,
(४३) कैमास जुद्ध (अपूर्ण)	....		,, ११७९ ,, १२०० ,,
रासोसार	....	....	,, ९३ ,, १०४ ,,

———o———

तिथ पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी ॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भौ दुज्जन बहिय ॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय ॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन ।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय ॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय ॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लद्धिय ॥
अमृत भाग चिचंग। सेन हाला हल सद्धिय ॥
बारुनी बीर असिय सु झर। अरिन पाइ जस रतन लिय ॥
मह मथन रंभ हथ्थह कपट। सिंभ सीस बर अप्प लिय ॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना ।

दूहा ॥ तब लगि मंतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ ॥
बारू बन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ ॥ छं० ॥ १०१ ॥

पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृबैर लेने का विचारकरना ।

कवित्त ॥ बारु विरल बन न्रपति। राइ आषेटक सारिय ॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि बैर विचारिय ॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं ॥
पिता बैर बहु बंध। हुओ कर नार समानं ॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ ॥
बर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान बर मंगयौ ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है ।

दूहा ॥ बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त ॥
करि वसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥

कवित्त ॥ सुनि मंचीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भँति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥छं०॥१०४
[1]कित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
कित्ति काज विक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
कित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
कित्ति काज बर सिवरि। [2]मथ्थ कर कट्टि सु अप्पौ ॥
❁ रयंत [3]अचल गल्हां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तौ गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। करन जोग में ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाहू सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंद्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सों हथलेव। मूल कट्टन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

---

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता बैर बहुवन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

❁ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "कित्ती काज विक्रम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक्क ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिंग। बर चालुक्क सु यान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह बिच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्क लोह सह दीन। करै चालुक्क सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न मुष्य मिट्टै सघन। सुबर बीर संगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनंदे पाप बर। ग्रह बड्डे बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्य हनंदे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्वपति। बन न्वप बोलत सद्द ॥

---

* इस प्रबन्ध में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है।

(१) को. मो.-धाइक (२) मो.-सन्नाहित।

फेरि बीर दष्षिन भयौ। बैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब बत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंझ ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार। । बिपन बर बर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्त राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर पवास लोहान भर ॥
बर बंध उभै सेवक चिगट। समर काज उभ्भौ समर ॥छं०॥११५॥

दूहा ॥ तक्कि बक्कि उट्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मच्ची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कड्ढी सु हक्कि कर ॥
बज्ज कड्ढि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभ्भि सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बड्ढी मन हस्सी ॥
कैधूं दुबद्धि बंदर सिरह। हलधर हल सिर झारयौ ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि अस्से।

तेग इथ्थ झकझोर। बीर खिन्नों सु बथ्थ [1]भरि ॥
दुतिय घात आघात। घाइ [2]अग्गा बर बाहै ॥
कमल पंति दंती। समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं। चीकट जल घट बूंद जिम ॥
आहुट्ट उग्ग साहस करिय। पच तरोवत अरिन तिम ॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय। अरिन करन्न सु दाह ॥
[3]हद्द नंषि उच्चाइ अरि। ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना।

मोतीदाम ॥ रन बीर रवद्द कहै कवि चंद। सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढ़ै बर आवध बज्जत तूर। उठे परसद्द महल्लन सूर ॥
छं० ॥ १२० ॥
नचै बर उट्ठि धरं धर सूर। करै हक देषि उसस्सि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मद्धि। रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ ॥
छं० ॥ १२१ ॥
दिषी दिषि [4]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ। उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट। चलंत है विद्धि अगम्मनि वट्ट ॥
छं० ॥ १२२ ॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ। चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
बरं कुलटा छँडि छंडि सु केउ। झुझै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ ॥
छं० ॥ १२३ ॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ। चली बर नारि अमग्गन धाइ ॥
लरंतह भूपति भान कुंआर। करै मनु [7]वज्जय बज्ज प्रहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-परि। (२) मो.-लग्गा।
(३) मो.-हट्ट नंषिउ। * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष। (४) मो.-सुकवि, कुक्कवि।
(५) ए. को. मंत। (६) ए.- अपजस। (७) मो.-बजूह।

लरै भर चालुक चंपत घट्ट। सचीरह नारि अगंम सुभट्ट॥
ग्रिगं ग्रिग लज्जन दच्छन जाइ। भजै क्रम खूर [1]चियं गय पाइ॥
छं० ॥ १२५ ॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल लोह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि
छं० ॥ १२६ ॥

तजै जर जम्म भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु खूरन आइ॥
॥ छं० ॥ १२७ ॥

गमराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त ॥ बर बड़ गुज्जर राम। कूह वज्जिग बर धायौ॥
पौलवान अरियान। [3]पौल अरि पूर लगायौ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जल जोर सु बट्टी॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चट्टी॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल। लोह लहर सम्हौ हली॥
अरि धरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय घुट्टिय॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन घुट्टिय॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगै सु पुव्व अब॥
व्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटँब सब॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको षेत बिन मुक्कयौ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सथ्थ झोरी कियौ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-"लोथि पर लोथ"।

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी बीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद। बीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त बस्त अरु सस्त। टूक लभ्भै न ढुंढ धर ॥
विहत बीच अरु षंड। एक [2]उग्गरि षँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय। नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुंढंत अस्ति न सुझि परै। लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेद्यौ राह रुपह सु रवि। बरन बीर बैकुँठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार। सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच। सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद। रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए। चूक एकन ठट्टनवै ॥
उद्दिग दार पांवार पर। पहुर तीन तुथ्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यौ। सहु सथ्थैं [4]बंध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा।

कुंडलिला ॥ मरन न लद्धौ तुंग तिहि। सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला। गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार। तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूकि चालुक्क। स्वामि कज्यौ बर बारुन ॥
[6]है हलान हथ्थियन। रयन रायत्तन सिद्धे ॥
सह सथ्था तन ताइ। तुंग तिन मरन न लद्धे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो.-सुत। (२) ए.-ठगरि। (३) मो.-रावन।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ। (५) ए. कृ. को.-कला। (६) मो.-हेसतथ्थान बंधेरन।

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाइ चालुक छंडायौ ॥
ढक्कि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग घुंमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग। राइ तुल्लै दल लीनौ ॥
अंकुर्यौ अरिन रिनथंभ सौं। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह ससि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संघ समरी आहट्टै ॥
सजि सद्धै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [1]तुरँब। सथ्थ बंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हस्त बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि घुमान चल्ल्यौ पलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंथिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ सुंदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि कूह। चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंध ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. क. को.-तुरा। (२) ए. पीठ।

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना।

दूहा ॥ अमर बंध रथ्थो अमर। अगि दीनो बर माल ॥
जस बेली चतुरंग कौं। बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसबेली [1]बरिगी चतुरंगी। चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी। सु धर फेरि चालुक न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है।

कवित्त ॥ अद्ध रयनि संदेह। सह सावह कवीयस [2] ॥
पर्‍यो बीर जदव। नरिंद चंदेल छवीयस ॥
गूढ़राइ सचसलह। जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुर्‍यो सेन पुब्बहि। पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अष्प बीतक बित्यौ। बंधि चंदेल सज्जै सुहर ॥
आवह बीर मत्तौ कहर। गहौ गल्ह बंधौ सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

घुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना।

गाथा ॥ जिन्नासाय घुमानं। जिसानें सद्दयं धायं ॥
छुट्टा रव रनथंभं। घा कम्मे घीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ घीचीराइ हमीर अवन्निय। दोइ चहुआन धरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां लों चूक सवन्निय। दुन्नियं दीपंता निरवन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग मैं। राज विहंग गति कीनी ॥
मध्यदेश मालव नरिंद। इंसध्वज भीनी ॥
नीलध्वज कर धरिग। विप्र बंदन संपन्नौ ॥

(१) ए. क. को. षरिगो। (२) ए. कृ. को.-सवीयस। (३) कृ. अप्पांह।

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ॥
सत पच लगन लभ्भह भरिय। घरिय अठ्ठ तेरह तिनह॥
रनथंभ सेन संचरि न्रपति। करिय अवधि ताकरि रनह॥
छं० ॥ १४१ ॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा॥ आगम वीर बसंत कौ। रन जित्तै जुधवान॥
वर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन॥ छं० ॥ १४२ ॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यों कुंजिन मेलयं सव्वं॥
वय रुप मुष अंकुरियं। सा मिलयं बंकुरी मुच्छं॥ छं० ॥ १४३ ॥

दूहा॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। वर बंधिग सुरतान॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान॥ छं० ॥ १४४ ॥

दोधक॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरनौ बरु जानय॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भरु कित्ति लही चहुआनय॥
छं० ॥ १४५ ॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुट्ठिय॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संभय गानकला कल सथ्थिय॥
छं० ॥ १४६ ॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन॥
उद्दिम मेन उदार सुधारिय। [1]न्यज्जय रूप सरूप सुरारिय॥
छं० ॥ १४७ ॥

दूहा॥ श्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन विविध तन लग्ग॥
वापी कूप [2]तड़ाक दष। विधि ब्रंनन कवि लग्ग॥ छं० ॥ १४८ ॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोषे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-न्यज्जय, न्यजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

सा सुंदरि हंसावती। सुनि श्रोतान सुरुष्प ॥
बर दिष्टा नन मानियै। बेला लग्गि गवष्प ॥ छं० ॥ १४९ ॥
सुनि आयौ चहुआन अप। गुरुजन बंध्यौ जानि ॥
तब मति सुंदरि चिंतवै। मेदक गौष वषान ॥ छं० ॥ १५० ॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ पंथ बाल पिय झंकि। सुभ्रित विंटियं सु राजै ॥
मनों चंद उड़गन विचाल। मेरह चढ़ि भाजै ॥
सुनिय श्रवन दै सैन। अलिन अलिमैन सरोजं ॥
रति मच्छर मति काम। जानि अच्छरि सुर सोजं ॥
धावंत वेस अंकुरित वपु। बसि सैसव तिन बेस पुर
श्रोतान सुष्प दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि ॥
छं० ॥ १५१ ॥

दूहा ॥ प्रथम वत्त श्रोतान सुनि। सुष पै दिषहि सलोइ ॥
सच्च बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्प न होइ ॥ छं० ॥ १५२ ॥
सुनि श्रोतान सु मन्नियं। दिषि दिष्टांत सचीय ॥
बीज चंद पूरन्न जिम। बधै कला मनि जीय ॥ छं० ॥ १५३ ॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी नृपति। गौ न्निप न्निपबर थान ॥
बालु सुअंबर काज कौं। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १५४ ॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्नपति। वैसँधि कहि न कविंद ॥
कवि ब्रनन इह लग्गि चिय। ज्यों बढ़त लघु चंद ॥ छं० ॥ १५५ ॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त ॥ बर भूषन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय ॥
सोइ छवि बर दिष्पनह। कोटि [1]ओपम पारंभिय ॥

(१) मो.-उपमा।

बर सैसव बर चंपि। कंपि सिंधु कोद्द कृपायौ ॥
सो ओपम कविचंद। जोन्ह बूड़त नख धायौ ॥
बालपन बीर बर मिच पन्न। रवि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
बय बाल [1]उबीचन प्रीति अख। सैसव तें बरई करिय ॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैन ॥
बाल घरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम ॥ बि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
लटिं भिंजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक्र लग्यौ ससि आइ ॥
छं० ॥ १५८ ॥

बि ओपम दै बरनै कबिराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल मेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
छं० ॥ १५९ ॥

सु राहय त्रास पियै बिष सोम। द्रवै मुष चंद्रह मत्तह भीम ॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि ॥
छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच ॥ कियं सुरंग सज्जनं। नराच छंद रज्जनं ॥
सुगंध केस पासयौ। बिहथ्थ इथ्थ भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उपम्म जोस साधयौ। बिरंचि लेष बाधयौ ॥
सु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

[1]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी तराइ दो खरे ॥
मनौस बाल साच ज्यौं । कि कन्ह कालि नाच ज्यौं ॥ छं० ॥ १६३ ॥
धरी नवैन कथ्थयौ । जु कन्ह कालि मथ्थयौ ॥
तिलक भाल भासयौ । भलक काल साचयौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिथ्थराज आसयौ ॥
वसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [2]बाढ़यौ । सुराइ कंपि [3]ठाठयौ ॥
सु पट्टि बाल ठानयौ । सु राइ रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नेन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [4]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम बिंब उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
हलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥
अमत्त तार विच्छुरी । दु चंद अग्ग निकरी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
विभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न बिंब जानयं । सु चंदवी प्रमानयं ॥
चिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [5]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीरु राइ छंडि कैं । असंन बैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि ईस दीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं विअंग जित्तयौ । जु सुक्क वग्ग पंतयौ ॥
कि काम बीर भंजयौ । दइत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम ईस [6]कुत्तयौ । अनंग नीति रत्तयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु। (२) मो.-बाढ़को। (३) मो..ठाढ़को।
(४) ए. कृ. को.-संक।

(५) मो.-लुभई। (६) ए.-चक्कयौ।

उरज्ज पच काम कौ । लिषै जोवंत वाम कौ ॥
कटी अलप्पता ग्रही । मनों कि रिद्धि रंकई ॥ छं० ॥ १७५ ॥
कि सोभ ह्वै न्रपं रही । तुला कि दंडिका कही ॥
रुलंत छुद्र घंटिका । सदंत सद्द दंडिका ॥ छं० ॥ १७६ ॥
जु जेहरी जराइ की । घुरंत नद्द पाइ की ॥
नितंब अद्ध तुंबियं । प्रवाल रंग [1]घुम्बियं ॥ छं० ॥ १७७ ॥
कि काम रथ्थ चक्कए । चलंत एड़ि वक्कए ॥
उलट्टि रंभ जंघनं । करी सु नास पिंडनं ॥ छं० ॥ १७८ ॥
उपंम रंग राजही । अलज्ज भांति साजही ॥
सुभ्रत्त सेत बन्नयं । उपम्म कव्वि भन्नयं ॥ छं० ॥ १७९ ॥
मनों कि दीय अभयं । सुभंत मध्य रंभयं ॥
दसन्न जोति दामिनी । मनों अनंग भामिनी ॥ छं० ॥ १८० ॥
सुगत्ति हंस लोनयं । सिंगार सोभ कीनयं ॥
झंकार झंजनं झनं । मनों कि सोर भद्दनं ॥ छं० ॥ १८१ ॥
सु कासमीर रंगयं । जु एड़ि जावकं लयं ॥
मनों कि हंस सावकं । चलै बिद्रुम्म भावकं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
[2]जरित्त मुद्रका नगं । सु जोति अंगुली लगं ॥
जुवास रास चासयं । मनों हुतास पासयं ॥ छं० ॥ १८३ ॥
[3]दिपंति नष्ष बीसयं । रबी ससी सुरीसयं ॥
नव ग्रहीय पुच्छिया । उपम्म कव्वि बंछिया ॥ छं० ॥ १८४ ॥
जु चंद राह षेदि कै । कि हस्त चंद भेदि कै ॥
उभै तिषट्ट भूषनं । सजंत मेटि दूषनं ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चलंत वाम कोड़यं । तजंत हंस होड़यं ॥
उमग्गि प्रिथ्थि देषनं । अलौन मच्छ पेषनं ॥ छं० ॥ १८६ ॥
सु सैसवं लगंत रष्पि । मुक्कियं दरस्स दिष्पि ॥
॥ छं० ॥ १८७ ॥

(१) मो.- घुम्भियं,को.-पुब्बियं। (२) मो.-जरित। (३) मो.-दियत्त।

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कोकिल जोइ। अवजंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसन्न। बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होड़ सुजानि ॥
नौ ग्रहिअ पुंचिय हथ्थ। उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
बर एड़ि मंडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़। गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरन लगि चिंपयान। पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ। बे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तव लग्गी सैसव रष्पि। मो [2]कंत दरसन दष्पि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ बर कुंकुम सब सथ्थ रंगि। बहु सथ [3]नृप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि। कवि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थें ॥
मन ससितर काम कौ। प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रत रवि ससि रूप। एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ। पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीराज का विवाह मंडप में प्रवेश।

दूहा ॥ वंदन वर आयौ नृपति। तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-यान। (२) मो.-कहत। (३) मो.-उप।
(४) मो.-कै सुभ्रत ससि रूप।

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुद्ध तट वर अन लक्की ॥
रहै नृपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
षंचन पष चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किद्ध अवंत अली। नंषत वर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रूप रस [3]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु वर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। मधुर मधुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिठ्ठ वर कमल में। कै मकरंद झुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठवन्धन होना।

दूहा ॥ वर अंचल सोमेस चित। बंधि वीर वर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम कही। सो वर वीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा। (३) मे.-मानी।
(२) ए. कृ. को.-पिय।

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्टयौ । बदन ससि राका लुट्यौ ॥
नैन पदम पंषुरिय । कुंभ कुच नारिंग छुट्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज । हंस गति [1]सारँग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत । कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन । दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समग्ग एकत करिय । काम राज [2]जीतन सुधर ॥छं०॥२०१॥

दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्तीस कही । उकति चंद नन छेव ॥
मनों जनक बंदन कवन । जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत । चूक सब सेन सु दिष्पिय ॥
घट दस बर सामंत । मरन केवल मन लिष्पिय ॥
घंत निसुरत्ति समूह । जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [3]उचरंत । मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि । तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध । सुबर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे सरे । काफरं विद्धु रे, लोह मच्ची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥

पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं । कढ्ढियं पंजरं, नंघ्पि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

सूर बथ्थं परं, मोह मोहं परं । कूक बज्जी धरं, लोह वडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

---

(१) ए. कृ. को. सारद । (२) मो.-जीपन ।
* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छं० ९२० में खुलती है।
(३) ए. कृ. को.-उचंत, उच्चंत ।

अग्ग उट्ठी झरं, वीर बाजं ढरं। ओन रतं [1]धरं, अंत आलुझरं॥
छं० ॥ २०७ ॥

खुर जा उच्चरं, सरि उग्गं जरं। लज्ज पव्व परं, लोह लोहं करं॥
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि अद्धी बरं। बाज कुट्टी झरं, घान झारा झरं॥
छं० ॥ २०९ ॥

डाइ मीरं धरं, मझझ रोसं ररं। सानि सामं नरं, घाइ घुम्मं घरं॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध मझझैं रह्यौ। रहे सु जैत कु आर॥
[2]चंदुक्किव सामंत गौ। उप्पर मेर पहार॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान ख्वां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात घान सुरतान। सेन [3]बंधी अहसारी॥
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी॥
अर्द्ध चंद्र महमूंदि। अर्द्ध घुरसान घान करि॥
मध्य भाग रुस्तम्म। सेन घुरसान जिम्मि [4]धरि॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर॥
चिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [5]बंधव अमर॥छं०॥२१२॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

त्रोटक ॥ सारंग चल्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की॥
छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुग्घर पष्प रनं। ठननंकहि आइ प्रसह घनं॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुग्घुर रेनिय अस्स घटै॥
छं० ॥ २१४॥

---

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चक्किय"।

तमके तम तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे ॥
कविचंद सु अंसुय [1]साव धरे। चय [2]नेत्त जु गंग समीर घरे ॥
छं० ॥ २१५ ॥

दोउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी ॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उट्ठि ढाल चहुआन बर। बद्दि अवाज परवान ॥
सुनि बरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे बर थान ॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ धुअ मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि ॥
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि ॥
जुद्ध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्ठे ॥
चामर छत्र रषत्त। तषत है वै बर लुट्ठे ॥
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि [3]नषिच पति ग्रहन गिरि ॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन वार अट्ठंग गिरि ॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना और पीरोज खाँ का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी ॥
[4]एक लष्ष प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी ॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्यारी ॥
समर सिंघ रावर। नरिंद झोरी करि डारी ॥
बज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै लुट्टि दल ॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छत्र रषत्त तल ॥ छं० ॥ २१९ ॥

---

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-"एक लष्ष पम्मर प्रमांन" ए. कृ. को.-एक लष्ष पष्षर प्रमांन।
(५) मो.-"बिन सुरतान सु लुट्टि छल"।

पृथ्वीराज का सब सामंन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुग्रहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने ॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने ॥
नैन चैन नन बैन। हीन सुपन्न कढ़ि दोज ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोज ॥
रष्यौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर ॥
चिचंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर ॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूह ॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस ॥
संभरि संभरि वार दै। दीहित्तौ सोमेस ॥ छं० ॥ २२१ ॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त ॥ तब चिचंग [3]नरेस। षिझवि नंष्यौ बर पट्टौ ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर ॥
हम आहुट्ट मझामि। स्वामि कहिजै सु [4]उंच बर ॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ. पाय।

(२) छंन्द २२१ की प्रथम उक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुंभकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम धरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चद। (५) ए. कृ. को.- बिरुद्ध।

(६) कृ.-चीतौर।

समर सिंह का चित्तौर जाना।

दूह ॥ ग्रेह गयौ चिचंग पति। गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास बीय बित्ते न्रपति। मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना।

विमल विलोकन कोक रस। सोक हरन सुष सत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलग्रभ। विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं। मुषं मूल बिप्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं। हयं हेम हडुं पताका सु थानं ॥
[1]सु अंषं च सोभा स सोभा स मंचं। [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं। सुराया बिहंगं सु पुची प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्जा प्रथंमं अलीनं। मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

बचं अंकुसं हेट हेटं चलावै। दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं। फिरे जानि बाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाहं। कवी केलि कंठे थकौ सच्च स्याहं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं। कला केलि बढ्ढी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सद्दान सेजं। सदा स्वेद षेदं हुओ प्रात हेजं॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३० ॥

---

(१) कृ. को.-सुयं। (२) मो.-" छय दुत्तिय छंन्द छम्माय तंत्रं।
(३) मो.-बन्धे।

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

* कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु खुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय। सरस रस सौर सु खुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय। [2]हइय हय हयइ यथा [3]हइ ॥
सहिय सेज कइ कहिय। चंपि चिंचनिय सन्न यइ ॥
कामंध अंध मुद्दइ वृषभ। भ्रमन भ्रमावइ तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गइ। अगह मुगइन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय वृत्तन मुगधनिय। रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]मग रथिय। निसि त्रिम्मल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥

शनैः शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कमंध ॥ त्रिम्मली नेह नासा। दिष्ट एन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संवची ॥
† पुस्तका पढ़ि विस्तरी। कथा गाथा प्रेम बिस्तरी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कंडक निस्तरी। हास विलास सुस्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सज बंधू चक्कवाकोपि कीरा ॥

---

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद। (२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मगाथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

तिमिरगजम्रगेंद्रं चन्द्रकातंप्रमाथी।
विकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु मोननीमानमर्दी।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये।

मुरिल ॥ बंछय चंद चकोरत राजन। [1]हंसनि हंस उदै भयौ साजन ॥
बिछु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय। कनक जेम कसि कर [2]आहुट्ठिय॥
छं० ॥ २३८ ॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा। विसनी पत्त वलाकरे इथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्ने। परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना।

झिल्ली झिंगुर खरी। गायन पुचीय ललित लुब्भरियं ॥
पहुकिय घंघ [3]सु हासं। झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुक्करियं। मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही। पुक्कारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना।

पंपट करि करतारं। हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बड्डय अंकुरियं। कुक्कडयं [4]कंठ कलायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर। [5]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं। गावै एकंतं चित्त सलाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति। (२) ए.-आहुट्ठिय। (३) ए. कृ. को.-सहासं।
(४) मो.-कंठक। (५) ए. कृ. को.-"अचलिय नेह से सहिए"।
(६) ए. कृ. को.-रसरह।

हे मौनं करि कोकिलयं। जलधर सम एह कंठ [1]उंचत ॥
बिकसित कर जल बंदे। विकसित रमे कोक सावासी ॥ छं० ॥२४४॥
संग्राम गए सूरौ [2]संपगे। होइ चंद्रोदए ॥
विविधा काम तौयं। अवसर रत्त [3]काम लभ्भाइं ॥ छं० ॥ २४५ ॥
गाहा नक्किय तत्ती। सदानं नूपुरं उरवा ॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं। भूतं जुथ्थांइ मंग भंगुरयं ॥ छं० ॥ २४६ ॥
जोई छविना वेनं। रचया सि महिला न रूप महु कमले ॥
तां नंचिय सु बियोगे। निमहं मुत्तंच जुग्ग जुग्गाए ॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे।

पीय आरंभत चिययं। चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं ॥
सो तिय पिय पिय पतौ। मा पिमं [6]विहमं धामं ॥ छं० ॥ २४८ ॥
अजा [7]सन्न जो होजा। कंठायं पयो हरं फलयं ॥
दीहंते सय लष्यं। हसनं रस नाय स बकियं होइं ॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ। उचसिया कील कंतायं ॥
सो तिय अग्ग सुहाई। दिस असनी रसं नायं ॥ छं० ॥ २५० ॥

कवित्त ॥ रयनि पंच संकुलित। पंच लज्जित दुरि लोइन ॥
भिरत उभय भिरि षग्ग। मग्ग लग्गिय जुर जोइन ॥
[8]मिलत चतुर इक रीय। अतुर ग्रह ग्रहं [9]दद्दुर बल ॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त। नष अष [10]बष्प बल ॥
आरति सोइ दइता विछुरि। पार [11]समुद्र न नेह लहि ॥
इय प्रात पतिव्रत प्रथम पहु। नवति चित्त आचंभ लहि ॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-उचंती। (२) ए.-संष। (३) ए. कृ. को.-कान।
(४) ए. कृ. को.-"निद अकुरं ए वित्त"। (५) ए. कृ. को.-वितायं।
(६) मो.-बंदयं। (७) ए. कृ. को.-सानंज।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है।
(८) मो.-माचित। (९) ए. कृ. को.-दुदुर।
(१०) मो.-चष्प। (११) मो.-समुद्रिन।

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हस्थिय ॥
मालव द्रुग देवास । [2]वास मुहत नव वस्थिय ॥
हय गय धुर धर धम्म । क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चिचंग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जहव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अभ्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं० ॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस । दिवस चिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥



(१) ए..संसनिय । (२) मो.-व'स मुहंत नवस्थिय ।
(३) ए. कृ. को.-बेदराज । (४) मो.-कवि छंद ।

अथ पहाड़राय सम्यौ लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा ॥ दुज सम दुजौ सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ।

कवित्त ॥ संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्प ध्रम्मधुर ॥
चनिय दीह अहरुन्न । उदित रबि ब्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ [1]गज्जे [2]विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठढ्ढौ सु बर ॥
अष्पै ततार घुरसान षां । कहा पबरि चहुआन घर ॥ छं० ॥ २ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि षान ततारं । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत सूर सभारं । मत्त अमित समित जमकारं ॥ छं० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ।

भुजंगी ॥ कहै साह साहाब तत्तारषानं । रचौ मंडली मंडि दीवान थानं ॥

---

(१) मो.-गज्ज । (२) र. कृ. को.-विसंग मन ।

अरी [1]षान दिष्यौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४ ॥

दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं किति हूरं॥
अनंहद नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५ ॥

हलाद्दम्म ग्रंकार हुंकार झारौ। तुटै तेक तानं झरं दुमि धारौ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६ ॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजी रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७ ॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८ ॥

असं बेस कंपी दुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]व्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९ ॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल बैताल मिंदू सबैनं॥
बनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छँ तरैनं॥
छं० ॥ १० ॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आकृत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पथो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मों.-करौ कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. कृ. को.-विमानं विमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

मही मंडि माया रहै लोपि मालं। षिले [1]षग्ग अग्गं बलं बोलि ताल्लं॥
नवं नद्द नीसान [2]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [3]कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२ ॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ [4]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं० ॥ १३ ॥
अरुन बरुन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि [5]रूप॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली मम भूप॥ छं० ॥ १४ ॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन [6]विपष्ष। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गेंन [7]रवि षन्त धुंध इल॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [8]परिग॥
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं० ॥ १६ ॥

अरिल्ल ॥ मिले मेच्छ मंडल्ल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि [9]बढ़ौ थिर कर कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-भेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रचि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थटौ थट्ठौ।

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेंन कंपि दिसान ॥
पहु ओर कोरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]बाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनसूर सेर हुजाब। जिन दान षग जम आब ॥
[2]महमंद कम्मन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ऋंद जम्मन धीर। तेजम्म षान गँभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पौन। तिन हक्कि अरि तन छौन ॥
आषेट आतस मीर। सारुफ सेर गंभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥
॥ छं ॥ २४ ॥

सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनों सेन हिंदवान। ऐन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिन्न अरि भीर। हक्कि हक्कों षग [4]षंधों ॥

---

(१) मो.-बाजीद। (२) ए. महमूंद।
(३) ए. संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ. को.-बन्धौं।

गज बाज साजि जथल पथल। षल अंदुन भंजौं [1]भरन ॥
भुअ भाष भिस्त मंकोद रन। कै [2]घोरह जीवन धरन ॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी ॥ षुरसान षान कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपौ सु ढार ॥
दल जोर तेज हिंदू अकार। बर मंच सेन रष्यौ [3]विषार ॥
छं० ॥ २७ ॥

बुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि। तम छतें जुद्ध [4]किम साह संकि ॥
संग्रहौ सेनपति हिंदुराज। बंधों अषारि षल षग्ग बाज ॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब। तम हसे साह किज्जै न ग्रब्ब ॥
॥ छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज। एन सीस हयबीर ॥
अप्पा कोनन उच्छयौ। कालू से रनमीर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पद्धरी ॥ पुनि अष्पि साहि निसुरत्ति बैन। सुरतान आन भरकान [5]नैन ॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब। भीषंग कंपि है ग्रब्ब सब्ब ॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार। [6]अल्लह सुआल ऐसी विचारि ॥
बिन साह तेज बद्धै सु ग्रब्ब। इष्पै न ताहि अल्लह अदब्ब ॥छं०॥३२॥
मनो न संक चहुआन खूर। बंधव सुमंच भर मंच पूर ॥
बेलू विलाइ नदि बंधि वारि। बिन सेन कंक चहुआन च्यारि ॥
छं० ॥ ३३ ॥

* हिंदू सहस्स दस सामसंद। दल गैन लेस तन तेक कंद ॥
बुल्लाइ बैनपति समर मंड। बंचै विचार सु विहान चंड ॥
छं० ३४ ॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना।

---

(१) ए. कृ. को.-सरन। (२) ए. कृ. को.-घोरहि। (३) ए. कृ. को.-विचार।
(४) मो.-क्यों। (५) मो.-दैन। (६) ए. कृ.-अलहसुआल।
* ए. कृ. को.- "हिन्दु सु हद्द सोमेस नंद। लग्गे न लेस तन तेक कंद"।

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं। मंडे पचीय बीर पचायं ॥
अष्पित पान प्रमानं। कथ्थौ गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय। दिय सु पच तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ भ्रम्मान सों। सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं। वर साहाब ढिल्लीयं ग्रासं ॥
बरति मंच मष किव्वं। गज्जीय मह भह नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव। करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन। बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [2]पष्ष पूरन क्रमिग। पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर भ्रम्मान कर। बर [3]ग्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धर्म्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पचौ भ्रम्मानं। पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं। सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर। हायथ [4]हाय सु कौय ॥
साहि काल सुभ्भर सभर। आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धर्म्मायन का दरबार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पचौ भ्रम्मन बाचि कैं देहु। बहुरि दरबार गएहु ॥
कै मास कों तसलीम कीनौ। पचौ सु हाथ दीनौ ॥ छं० ॥ ४२ ॥

---

(१) ए. कृ. बुल्लवि। (२) मो.-साह। (३) मो.-पथ्थ।
(४) ए. कृ. को.-मगै। (५) ए. को. हीय।

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम घरतें सौगँध कीनी। नाते धम्म दुहु हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भौ लग्गे। तातें बैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का मांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में बंध्या अहंकार। मरदां धम्म पुरातन धार ॥
मरदा अखि भारथ्था षेती। मरद मरै तब निपजै षेती ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदां षेती षग मरन। [3]अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सद्धा कद्धा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा। अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें इठ इजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्री दूत कहि सु कर। करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुनि मंत्री नृप अग्गि सम। बंचि पत्र तिन बार ॥
कूंच कूंच षंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्री चहुआन ने। सब सामंतन राज ॥
बात परठ्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरथ आयौ सु अप्प [5]पर ॥
साज बाज मय मत्त। षग्ग बर भर उभारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गो। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-बल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय ॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंब रन ॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन ॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

समकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर ॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु चर ॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल षित्तह ॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह ॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर ॥
ज्यों मान व्योम आरूढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर ॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल ॥ चल्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्ष दल बल गज बाजन॥
चामर छत्र रषत्त निसानं। मनुं घनघोर दिसान दिसानं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

चोटक ॥ चढ़ि राज महा भर सेंन भरं। उडि धेह धुरं रुकि सूर करं ॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [4]कौतिग भूत बेताल वरं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

मुष छंद सु चंद बरं पठियं। [4]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गहियं ॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्पिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५६॥

---

(१) ए॰ कृ. को.-लागस्ति, अगस्त।
(२) ए. कृ. को.-धरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन।
(४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथ्थं।
(६) ए. कृ. को.-कौतिक।

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा ॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज ॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज ॥ छं० ॥ ५७ ॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चल्यौ राज सजि सेन ॥
उर पातर कातर [1]दूसे। मेच्छ पीर फर सेन ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसट्ठ गैन गोमायं ॥
हर हरषे हारायं। जुद्धं सज्जाइ दो दसा दीनं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा ॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [2]दीन ॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ बीरां रस भीन ॥ छं० ॥ ६० ॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर षान सब। पति पुच्छी इह वत्त ॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल ॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। वाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं ॥
चल्यौ साहि संमर करि सूरं। अरुन बरुन मिलि तथ्थ [3]सनूरं ॥
छं० ॥ ६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा ॥ ढलकि ढाल बहुरंग बर। [4]गुरुत मत्त गजराज ॥
झलकि नीर वपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज ॥ छं० ॥ ६३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरुतम चढ़ि गजराज"।

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी ॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्के ति [1]हूरं। धमक्के धरा, नाग नीसान[2]पूरं ॥
किलक्कै सुभैरं, बजे बाज तूरं। झलक्कै सुनेजा धरा [3]धूम धूरं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरक्के विताल, बजै तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिंदू ॥
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेंन सेनं, टगी लग्गि [4]नेंनं। वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्ध गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अट्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

सुषं अग्ग मंने, षुरासान अन्नी। भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठन्नी ॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गौर तारं, फरी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जगं जोरं, हुआ बीर सोरं। घनंनह नीसान, भहं सघोरं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ भर सद्दाव सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुल्लित वीर मुष। काइर कंपत अंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह वद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। वढ़ी बेद साषी चढ़ी जाग रूरं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै। करं छत्त पग्गं सु पट्टे चमक्कै ॥
छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए.-निसानं। (२) ए.-मेरं, क.-मूरं।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं"। (४) मो. गैनं।

घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंडि राजं । गजं बाजि रोहं इथन्नार साजं॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्हं किवारं । सतं तथ्थ सामंत सेनं सवारं ॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू [4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंद्यौ घगं [6]घंडि जीसं । फिरैं वेक ढालं [7]दुरैं नागरीसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पंच पंचास संगी विराजं ॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं । इलं लेघ नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं । सबद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्दं सु लज्जं ॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अग्गी । कथी व्यास भारथ्थ सा आज वग्गी ॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यौ बधे आप अग्गे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । इकि इय गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ़े बर धीर ॥
इकि तेज असि वेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

---

(१) मो.-फौजं। (२) ए. कृ. को.-मधं। (३) ए. कृ. को.-दिसा।
(४) मो.-अईसं। (५) मो.-"रसं शङ्कर मडि षग पांडे जीसं"।
(६) ए. कृ. को.-षंड। (७) ए. कृ. को.-ढलै, ढलैं।
(८) ए. कृ. को.-मयं। (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि।

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल ॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि ॥
रुंड मुंडन षंड षर हर। मत्त बहुत सुरत्त झरहरि ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल थूरिज्ज धीरन ॥
रुंड चढ़िय रचि थर हरि। रक्त जुग्गिनि पच पिय भरि ॥ छं० ॥ ८० ॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि ॥
सिद्ध थूरन बीर जुरि जुरि। .... ॥ छं० ॥ ८१ ॥
प्रबल पौलिय पाल सेनिय। विचलि थल दिग परै ऐनिय ॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय ॥ छं० ॥ ८२ ॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। ओन तुच्छिय हीर झारन ॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन ॥ छं० ॥ ८३ ॥

गाथा ॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं ॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं ॥ छं० ॥ ८४ ॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा ॥ थकि झुझझत संध्या सपत। सपत भान पायान ॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह थूझत गोयान ॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५ ॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया ॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमन्न चतुरंग ॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। बहसि बढ़ी [1]सु तुरंग ॥
बहसि बढ़ि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि ॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि ॥
जिम रघुपति पतिलकं। बकं कंकन कर अग्गी ॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) मो.-चतुरंग।

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कबित्त ॥ उदय भान पापान । कोर दिष्पिय दल चढ़िय ॥
हय गय [1]नर आरुरिय । सद्ध पर सद्दन बढ़िय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ़िय ॥
दिष्पि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ़िय ॥
हथ्थिय सुधारि हथनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तोकम अमर । धनुष बान अग्यान ॥
हिंदुअ मीर सुद्दक्क हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेंछं अनी एक मेकं । [2]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच [3]सत्ती चवै [4] सिंध नद्दं । अवै ओन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं । सतं [5] सेत नीलं जलंजात संगं ॥
उठं पच [6]डंडूर सर सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
विताल विताल रजे ताल प्रेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [7]तिभग्ग अग्गं बढ़े षग्ग षग्गं ॥
छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) मो.-"बजे षग्ग धोरं जितो झत्ततेकं" ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी । (४) मो.-सिद्ध ।
(५) मो.-सेल । (६) ए.-डेंडूर । (७) ए. कृ. को.-तिल्ल ।

जयं अग्गि जग्गी जनू जग्य जूनं । रते अंग अंगं चले संग [1]हूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ बान भान । परे पाइ सामंत सो चंद जानं ॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड [2]कैरूं परे मच्छिभ जुद्धं । सही सच्च कथ्थी घगं बद्धि उद्धं ।
कवीचंद कथ्थी कुरष्पेत हेतं । इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ नेत बंधि हिंदू । नरिंदं सामंत मत्तभर ॥
मीर भार असरार । सबें ढाहे सु सद्धि सर ॥
पथ्थ जेम भारथ्थ । कथ्थ सुभ्भै जिम कथ्थिय ॥
सु कविचंद बरदाइ । एम कथ्थिय रन बत्तिय ॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट । तेक तानि नंचिय करस ॥
चहुआन राइ सुरतान दल । न्रत्य बीर मंद्यौ सरस ॥ छं० ९४ ॥

दूहा ॥ तेग तार मंडिय समर । नचिय नंच बिन षैर ॥
चाहुआन सुरतान रिन । रचे न्रत्य बर बैर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्रत्य बर बैर [3]हिंदू रु मीरं । मृदुंमंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं । करें न्रत्य भूतं रचें और कोरं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं । भमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ़ि व्योमं । छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं रत्त गुलाल फूले सु [4]फागं । षलं षग्ग कूचं समं माल लागं॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं । लगें षग्ग पत्तं सु पेरंत मानं ॥छं०॥९८॥

(१) मो.-रूनं। (२) ए. कृ. को.-केरं।
(३) मो.-हिन्दू समीरं। (४) ए. कृ. को.-कागं।

कटै अद्ध सीसं बहै रत्तजानं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिम्झिझ भानं ॥
सुरं सट्ठि नद्दं चवै मुष्प गानं। फिरैं जुद्ध जोधं बहै मोह बानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

बढ़े मांस प्रासाद भूतं अहूरं। रतं पानि डारं तकै सूर नूरं ॥
ररै रत्त रूपं कचं कुंच वासं। विधिं छित्ति राजी रसं रंग रासं ॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं बिना सीस केसं। मनों अग्ग फागं जगे न्रत्य षेलं ॥
षगं घंटि नाना कटे रुंड सेषं। इभं रूढ़ सट्ठी निनें नारि भेषं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे। जिसे राम रन मभ्भ रावन्न मंडे ॥
नवं नारिका बाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै ॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव बट्ठिय नाटिका। षग्ग कट्ठी असु हक्किय ॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय ॥
रा चावँड रा जैतसी। राइ पज्जून [1]कनक्कह ॥
मीर षान भर पंच। षग्ग वट्टए तननंकह ॥
वपु बेद चन्द बानी विमल। विदुरि षग्ग षल षेत बढ़ि ॥
केवल सु कट्ठि [2]सुरतान दल। सिय रतन्न मथि देव दधि ॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कय्यौ सुरतान दल। दधि केवल मन वट्ठि ॥
मीर षान मारूफ दल। बीर विमानन चट्ठि ॥
बीर विमानन चट्ठि। दिष्ट बट्ठी बारह परि ॥
भर चंदेल विरंम। षेत झोरी सुभोंह भर ॥
गय नंगचंद अमृत झरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि ॥
विम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि ॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमक्कह। (२) मो.-पुरसान, पुरसांन।

इस युद्ध में जो जो बीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन।

मोतीदाम ॥ मथ्थो सुरतानय सेन पयार। खई जस कीरति चंद सुचार ॥
परे रन मझ्झ चंदेल सुघाइ। परे बहु घान सुघाइ अघाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पर्‍यौ धर बाहर [1]राइति साल। धरद्धर धग्गन तुट्टिय ताल ॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल। धकद्धक काइर छत्ति विसाख ॥
छं० ॥ १०६ ॥

झुकि झझुकि तुंडन अद्ध कमद्ध। मनों हरि चक्कन केतन बद्ध ॥
पर्‍यौ घन [2]घाव सु वीरमदेव। हयग्गय विद्दिय छुच अनेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बिनों सिर नंचत मीर कमंध। हये हय नाग नरब्भर संध ॥
खयौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ। हनैं [3]लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

[3]हए लगि पंचल षिम्मन घाइ। ....
[4]पर्‍यौ पौरीज सु रावन नंद। करे [5]नय कोतिग ह्वरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानं। लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरद्द सुमंच [6]विभीर। लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात। विय छवि छंछ बढ़ी हबिपात ॥
[7]रजे रति आगम राव वसंत। नगग्गनि जंग परे बर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-राय विसाल।
(२) मो.-घाय। (३) ए. कृ. को.-हनैं, हने।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोज" (५) ए. कृ. को.-जय।
(६) ए. कृ. को.-विमीर। (७) मो.-रते।

गही तरवार विपानि सु झारि। नवंतिय वाइस अंत उतारि ॥
पर्‍यौ सम बाज सु हाजमधान। रचे गज इंद्र सु [1]ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कर्‍यौ मन सूर तिलत्तिल षग्ग। उड़े रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गैवर रूप। छयौ सम सीस धरब्बर भूप ॥छं०॥११३॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ। गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥
.... छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय घाइ अघाइ ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन झरत। रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना।

भिरि तूंअर लिय बग्ग भरि। हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन घाइ संमुष [4]समर। लगे मेच्छ पति आह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन।

घाइ घाइ तन छाइ छिति। रत्त छिंछ उछरंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत ॥छं०॥११७॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जंत अरि ॥
गजन बाज धर ढारि। धरनि बर रत्त जुथ्थ परि ॥
भग्गि मीर काइर कनंक। हिय पत्त [6]मुच्छि [7]द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्पि भर सुंभर पानि कढ़ ॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय। झरिय ओन मद गज्ज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥छं०॥११८॥

---

(१) मो.-ब्रह्म सुधान। (२) मो.- पातरि।
(३) ए. कृ. को.-मुंड। (४) ए.-ससन, कृ. को..सरन। (५) मो.-जमुन।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि। (७) मो.-द्रग।

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर। समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि। ससि जिम सद्धि षिसान ॥
छं० ॥ ११६ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग। झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि। धक्क बज्जिय भर इक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि। झुम्मि झंझरिन अकासहि ॥
भूत बीर बेताल। मंस तुहत श्रम चासहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि। बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी। रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उद्दोत आरनि। सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर। घाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥१२१॥
स्रोन द्रोन प्रवाह थरहर। अंत अंतन अंत झर झर ॥
[1]तार तान विताल करि करि। तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय। अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय। दिष्पि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय। [2]विकल मुष छै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय। [4]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर। (२) ए. कृ. को.-विमल।
(३) ए. कृ.को.-निकरि। (४) ए. विमल।

बीर बहुरि विग्रेष वानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन सूर दिसान थानय। सोक कोक [1]असोक आनय॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर मुष सस्त्र लग्गिय। दमकि दिसि दिसि षग्ग नग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दलन दोन कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नषत षित्त सुहत्त फिरि फिरि। मष्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम बहत धार स। भँवर पंषिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ बाज सनमुष आइ॥छं०॥१२८॥

डारिय तेग सिर करि षीज। *गिर पर जनु कि करकिय बीज॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैवर गिरत निकरि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्पि राइ पहार। गैंवर दिष्पि है कँध डारि॥
भावरी भग्गि जव्व मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुस्लमान सेना का घबरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राइ ससि बक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जति।

* मो.-गिर पर जानु करंकिय बीज-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय बीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठो में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरिस।

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु। करत उच्चार सार मुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ। विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि बर [1]तुंड चंड सँग ॥
ओन छोनि छय छंछ। गुंज गन देन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ घाइ घट सघन परि। इत्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी। बार भृगु बर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रम्मान। वहै षट रित्त मह भर ॥
कोटेक द्रव्य नृप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर। सुभत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥



(१) ए. कृ. को. तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सलन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उच्चरै । है पुर षग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्नप । कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान विचारिय राज । रची विधि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पवित्त । [5]सुध्रमय ध्रम्म तहां बिपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥

जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र विराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥

सुबाहन बीर बली कुनि तथ्थ । तिने कलि भ्रम्मन दुज्जि यकथ्थ ॥
तहां गुर राज [7]विराजत ताम । तिदिष्ट बचिष्ट मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी । (२) ए. कृ. को.-होम जग्य ।
(३) ए. कृ. को.-बुध । (४) मो.-देवनी ।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय धूम नहीं वियचित । (६) ए. कृ. को.-इन्द, इन्द्र । (७) मो.-बिरामत ।

सु और अनेक महाभर संभ्रं। भ्रमंत क्रमंत [1]सयन्तिय संभ्रं ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन।

साटक। मुँदी मुष्प कमोद हंसति कला, चक्कीय [2]चक्कंचितं।
चंदं किरन कढ़ंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं।
[3]निद्रा वस्य [4]अगत्त भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं॥ छं०॥ ७॥

चोटक॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं। बिछुरे बिय दिष्पिय संभ्रं मयं॥
†जु पयो ध्रिम तत्त मभ्रं मुरबी। सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [5]जबी॥
छं०॥ ८॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं। सु मनों लगि पारसियं पढ़नं॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं। कुलटा बसि छैल रसं किमिदं॥
छं०॥ ९॥

विरही जन दिष्टि सु धाम ढुरी। उलटैं बसि डोरि ज्यौं चंग उरि॥
बजी बर देवल झल्लर झूर। तिसं घरु सिंगिय सिङ्गन पूर॥छं०॥१०॥

[6]कपी मुग धापिय केलि कठौर। मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै। जनु दंपति नैन सुभे उमगै॥
छं०॥ ११॥

जु लगीं धुअ घुंमर रैनन मंडि। चलै क्रम चोर मगं [7]पियं छंडि॥
‡जुरसे रस चामर सीस इसे। दिषि दीपक जोति पतंग जिसे॥
छं०॥ १२॥

विरहा उर झारिय केलि करी। इन दाहिय देहरु प्रीति धरी॥
विरही चिय मुष्प सु दुष्प [8]सदं। कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं॥
छं०॥ १३॥

---

(१) ए. कृ. को-सपन्निय। (२) मो.चक्काचितं। (३) मो.-निद्रया।
(४) ए. कृ. को. जगंत। *ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय"।
†ए. कृ. को.-जु पयोध पतंत भझं सुरबी। (५) मो.-बची।
(६) मो.-किपि। (७) ए. कृ. को.-पिम।
‡ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर सीदक से"। (८) ए. कृ. को.-मुदं।

जु सँजोगय भोग सुषं सरसे। सु कमोदिन चंद फुली दरसे॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं। जु वए मनु काम के बीज भुवं॥
छं० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना।

दूहा ॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ। गइ जामिनि जुग जाम॥
ग्रहन समय दिषि होतहौ। जमुन पधारे [1]ताम॥ छं० ॥ १५ ॥

वरुण के बीरों का जाग्रत होना।

स्नानं जंकी नौ न्वपति। जल रक्षा जगि बीर॥
[2]हक्कारे पुष उठे। मंगन जुद्ध [3]सरीर॥ छं० ॥ १६ ॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन। इस्त दरभ कुस कोस॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन दूत उठि रोस॥ छं० ॥ १७॥

वीरों का गहरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे बल बीर॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर॥ छं० ॥ १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ अति उतंग बज्जंग। उदित उर जोति रत्त द्रिग॥
अरुन रुधिर नष अधर। बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग॥
दसन जंघ सिर केस। वेस भय भग्गिय पासं॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि॥

---

(१) मो.- बाम। (२) ए. कृ.- को.-हहकारे।
(३) ए. कृ. को.-समीर।

इम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि ॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतों का ग्राव पर चला जाना।

दूहा ॥ सुभट दिष्प करि क्रोध उर। भये भयानक हूर ॥
सस्त्र हथ्थ दिष्पे नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर ॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुष्प फल सुबन ॥
बजत घात आघात। फुरत अवसान वीर तन ॥
रावतन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी ॥
[3]जोग ग्यान चय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी ॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोबिदह ॥
इतनी बस्त अवसान मिलि। मनहु मंच जनु गुन भिदह ॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पचारिय ॥
अंग अंग संग्रहहिं। इक्क इक्कत अधिकारिय ॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय ॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कब झार झरंगिय ॥
कबहूं मेघ [6]उट्ठें सुजल। कबहिं करन ग्रावह बरष ॥
उच्चरहिं बैन बहु वीर वर। बिरचि कबहु बुल्लैं हरष ॥ छं० ॥ २२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुमूढ़। (२) ए. कृ. को.-मति।

*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी त्यक्त्वा त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्"। इसका तात्पर्य डेलटा से है।

(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।
(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो. बुट्ठे।

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना।

कबहुं सस्त्र सर परहिं। कबहुं डक्कें डक्कारिहिं॥
तीन लोक तन [1]हकहिं। बकहिं बीरन बक्कारहिं॥
अकल कलह बल करहिं। समहि संग्राम सुधारहिं॥
अजुत अंग उद्धरहिं। *कलह बल धार उघारहिं॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं। गिरहिं परहिं उट्ठहिं लरहिं॥
सोमेस सूर संक न [2]गनहिं। विरचि गाल गल बल करहिं॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना।

हम सु भयंकर बल अभूत। सुभटन [3]हक्कारिहिं॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान। कनिष्ट अंगुरि उप्पारहिं॥
हम समुद्र प्रम्मान। डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं॥
देषौ सुनौ [6]न कोइ। सोइ ब्रह मंडल गावहिं॥
किन काम धाम तजि वाम सुष। आइ सपत्ते जमुनि निसि॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं। नीर रमें तिल लेइ धसि॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना।

दूहा॥ [7]इह कहि के लग्गे सरन। गैन गुंज जल फार॥
मानहु भारथ अंत कौ। भार उतारन हार॥ छं० ॥ २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना।

कवित्त॥ काल संक अहुरहि। तार बज्जत प्रहार सुर॥
जम्मु न [8]जल अंदोल। बीर बोलंत बीर गुर॥

---

(१) मो.-तकाँहि। * क. को.-कक्कहि वीरन वक्कारहिं। (२) मो.-गिनाहिं।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय। (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान।
(५) मो.-प्रवानहि। को.-प्रवाहिहि। (६)-न होइ। (७) मो.-एह कहे। (८) मो.-सजन।

कलह केलि सम केलि। ठेलि कहूँ चावहिसि ॥
एक ग्राव वरषंत। एक फारंत नष्प कसि ॥
परि मुच्छि मथ्थ विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर विषम [1]अषि ॥
वर वीर धीर धप्पे खरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]खषि ॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरो का वल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी ॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर ॥
वड्ढै [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार ॥छं० ॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मथ्थ जल इन प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार॥
छं० ॥ २८ ॥
वर भरहिं करहिं खत्तननि हाइ। * वज्जंत वज्ज जनु विषम घाइ ॥
रन रह बहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन ॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्पि जब समय सूर। झलमलत किरन न्निमल करूर ॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥
तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के वाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा ॥ ज्यौं सैसव में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मथ्थह अरुन कर। उदित दिसा [8]लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
* रत्ति रही वर विलगि वर। ज्यों ससि कोरह राइ ॥
हरि डढ्ढै वाराह धर। कै हरि चंपत राइ ॥ छं० ॥ ३३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पिषि। (२) ए. कृ. को. लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वछै। (५) मो.-मुगल।
* मो.-वज्र लेत हथ्थ जम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-कव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सब मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोहिष्यं न्रप राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्र तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय मुष्प ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्य ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्गी जमं पै [6]कहाया॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गग्गी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करग्गी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-प्रान। (२) ए. कृ. को.- सो दिष्यं।
(३) ए. कृ. को.-हाली। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तद्गुरं। (५) मो.-सूरज्ज।
(६) ए. कृ.को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

महा ब्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही॥
बलीभद्र रष्पी हरष्पी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी॥
छं० ॥ ३० ॥
चयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी॥
तुही तारनी अुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं० ॥ ४० ॥
तुही याम सूरं जलं मुक्ति धारा। तुही नभ्भ मातंग नर लोग सारा॥
तुहीं साधवी मात नष्पं समानी। तुही तारनं लोक चै लोक रानी॥
छं० ॥ ४१ ॥
तुही बाल बेसं तुही वृद्ध कालीं। तुही तापसं ताप आपं सुरालीं॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्ध सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं० ॥ ४२ ॥
तुही [3]महनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव चय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप रावंत आलं
छं० ॥ ४३ ॥
तुही विस्व रूपं तुहि विस्व माया। तुही तारनं जन्म संसार आया॥
कियौ अस्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै॥
छं० ॥ ४४ ॥
तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत सूरं॥
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्पी अकारी
छं० ॥ ४५ ॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त ॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि थप्पिय॥

---

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"।
(३) मो.-महंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प।
(५) ए.-आवार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

मिली आइ [1]झल मंग। गंग सागर अवधारिध ॥
ता सोमेसर रोग। दोष दोषह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन। करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि नृप मूरछा। प्रति बुझौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु कम्म दारुन धरै आवस्य [4]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनै अद्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं बिस्मत [5]अस्संतरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंषी वरं [6]सुद्धयं ॥
सुष्पं दुष्पय मध्य दृच्छ तवयं साषास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त दृन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकश्रय सँतोष दोष तिगुना अस्साय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूतं आभूत वर्ष सु सतं आयुर्बलं अदभुतं ॥
तेषा अद्ध निसा गतं रवि उभै बाल्यै च दृद्ध गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुने [7]संभार निस्तारयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय। भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब। जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंधव मंच सुदृष्ट [8]जिय। आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]बरुन दोष तन ताप गय। उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जल गंग। (२) ए. कृ. को.-त्वमे। (३) ए.-सस्सी।
(४) ए. कृ. को.-सबदं। (५) ए. कृ. को.-नर। (६) मो.सुठयं।
(७) मो.-संसार। (८) ए. कृ. को.-हुअ। (९) ए. कृ. को.-वरन।

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि जाइ। जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ। निसि समय बरुन तन धरिय पाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ। पाताल ईस कौलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ। उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तब्ब तहँ एक ठाइ। करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किलह पराइ। भए सुद्ध पाय गए तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमइवर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना।

दूहा ॥ बरुन दोष मेंट्यौ सुप्रथु। ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम न्रप। फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥



(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ। (३) ए. कृ. को.-फुलाइ।

अथ सोमबध सम्यौ लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [1]अंतर बल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछत्र मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्पै इलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रषै डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राह केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक्क इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झालहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
बुल्लाइ सब्ब मर इक्क ठौर । चढ़िवाइ बेगि बर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गढ्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बढ्ढि ॥छं०॥६॥

---

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-कालिंद ।
(४) ए. कृ. को.-षेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि॥
भज्जंत भौल जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करौं हाल॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कहौं नरिंद। रानिंग राज बर॥
चौरा सिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर॥
धौल हरै सुरतान। बीर सारँग मकवानं॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्ग्यौ परवानं॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुव्व बैर साल्यौ हियैं॥
केतीक बत्त संभरि धरा। रहै रंग चच्चर कियैं॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं॥
[1]तं केलि कलहंतं। सल्लै सूल षग्ग [2]मग्गायं॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोली राव रानिंग। बोलि चौरासिम भानं॥
स्यामा स्याम नरिंद। भौर कहौ रन थानं॥
अति उदार अति रूप। भूप साहूँ रन रष्यन॥
चाहुआन बरसिंह। [3]षिभ्यौ बड़वानल भष्यक॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुबर बैर कहौ विषम॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुभर मुत्ति लभ्भै सुषम॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर। जुग जोग [4]नह लभ्भ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अभ्भ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंशा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग कौ सोन जोनं॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.,"तंकेलि कुलहंता"। (२) ए. कृ. को.-मग्गाई।
(३) मो.-षिज्यौ। (४) ए. कृ. को.-नहिं।

करै कोन जमजोति जोत्य प्रकारं। गनै कोन बेलू सु गंगा प्रकारं॥
गिनै कान तारक्क ते [1]तेज भोरै। लरै कोन चालुक्क सो जुद्ध सोरै॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना।

गाथा॥ फट्टै पुडु फरमानं। धाये धराजित्त जिताइं॥
इम जुट्टे सब सेनं। ज्यों भू नीर वट्टि सरताइं॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य।

विअष्पुरी॥ जुट्टे दस पहु पंग [2]अपारं। हैगै बर भर लभ्भि न सारं॥
बनै हयं पय पंष समानं। षह भूमी जनु पंष उड़ानं॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं। भद्दव बद्दल जानि समीरं॥
दिषियै सूर नूर षह पूरं। संध्या सागर [3]नूर करूरं॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे। धावैं धर पग पाहर कारे॥
कच्छे कच्छै बंधै डोरी। चंदन षोरि षिलै जनु होरी॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लै कोई। विचरै लरै जानि जम दोई॥
पाइक पग पिन्नै जनु नट्ठं। षंडा कट्टि बढ़े गज [4]दट्ठं॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न लिज्जै। धार अनी कर बर ठेलिज्जै॥
चंचल अस्सह [5]नंषत सूरं। सूर तेज जिन मुष्प सनूरं॥ छं० ॥ १९ ॥
बंकी भोह भयंकर नैनं। फूली बंबर लग्गे गैनं॥
रत्ते [6]स्वामि धम्मं रस रंगं। जोग जुगति मन चट्टत जंगं॥
छं० ॥ २० ॥
नेह न देह न माया ग्रेहं। चिंतत सदा ब्रह्म मन लेहं॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं। सुभ्भत सेन मनों सुअ गंगं॥ छं० ॥ २१ ॥
गट्ठ परे नृप गाहत गट्ठं। जिम वाराह मोथ रस दट्ठं॥

---

(१) मो.-मेज। (२) ए. कृ. को.-प्रपारं। (३) ए. कृ. को.-सूर।
(४) मो.-वट्टढं, वट्ठं। (५) मो.-ननुंषत। (६) मो.-साम।

औगुन अंग न खामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रत्ते षग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसहूं दिसि दारुन दल बट्टं। ज्यों धुर बद्दल भद्दव चट्टं॥ छं० ॥ २३ ॥
सिलह सज्जि बट्टे बल बंकं। रीछ लगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्पत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥ छं० ॥ २४ ॥
अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरूं भट्ट तत्त बुधि जानं॥
बंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब बंधि रु छंडे॥ छं० ॥ २५ ॥
मांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं० ॥ २६ ॥
लीने भौम संग चव मंची। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंची॥
सुर्ग मृत्य, पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं० ॥ २७ ॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा ॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। बर सिघंन आकार॥ छं० ॥ २८ ॥
ए बुलाइ चालुक्क बर। मंची भोरा राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज॥ छं० ॥ २९ ॥
[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भौम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं० ॥ ३० ॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंची मंच तब। सुनि भौमंग सुदेव॥
धरतौ वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव॥ छं० ॥ ३१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. त्यौ।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-स्यंद। (७) ए. कृ. को.-सेव।

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण।

साटक ॥ भूमीनं धर धम्म कम्म [1]निरतं, बंध्यो बधें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्र कारनं ॥
केकइयं भुअ काज रामय बनं, दसरथ्थ मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव सरसा, स्नेहाययं भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ। आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह। विनोद रषह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह। कपूर पूरन प्रभु कोवह ॥
जा जीवन आरंभ। कित्ति सा धम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि। भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह। तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि। अच्छित सती समान ॥
चावहिसि नष्पै निडर। वौ लभ्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना।

सुनत मंत चक्कित्र न्रपति। सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बद्दल घह उल्लए। दिट्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं। [6]ज्वाला मलि [7]ज्वालाह छत्तनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी। है हिलम्ब हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं ॥ ३६ ॥

---

(१) मो.-सरसं। (२) मो.-काज।
(३) मो.-सर। (४) ए. कृ. को.-पिम।
(५) ए. कृ. को.-भमंग। (६) मो.-क्षाला।
(७) मो.-क्षालाह। (८) ए. कृ. को.-लम्मी।

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै हूरतं बीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उद्यौ छत्र छिति राज सिर। चिषत बीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियैं। ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंच मंचिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना।

आनिअ [2]अच्छित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न ॥
पुब्ब बैर सोभित्ति कौ। झिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥

पंच सहस पंचौ सुक्कत। पंचौ पंच प्रकत्त ॥
पंच रष्पि पंचौ ग्रहैं। तौ भारथ्थ सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सखी मिली कज्जल वरन। भेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गैं गज पंति ॥छं०॥४२॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चक्खिय जलद दक्खिय गरज नग घन भुक्खियं ॥
दल दलन घंटन घोर घुंघर नाग दुभ्भर डुक्खियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर दलहि धरवर धाइहौ ॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावहौ ॥छं०॥४३॥

---

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनीत।

गज बहत मदहद [1]मनहुँ घन भद छुट्टि छिंछन उभ्भरै ॥
पग जोरि मोरि मरोरि सुर जनु दिष्पि सुरपति लुभ्भरै ॥
बनि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही ॥
मनुं सिषर गिरि वर काम अंगन छच चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत बज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड़ मन्नत सिषर गिर रद झल्लही ॥
दल मुष्प मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमह मभ्भ मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
बर मंगि बाजिय सिलह संजिय [2]वहै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत। रोह रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस। संग सामंत सुराजं ॥
षौचौ राव प्रसंग। जाम जद्दौं घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय। भान भट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाह [3]पग्गार भर। बलिय राव बलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्पि कैमास सँग। कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था।

दूहा ॥ जिन कंठन ढिल्ली नयर। ते रष्पे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरह। कलह न [4]इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

---

(१) मो.-मनल। (२) मो.-वहो।
(३) ए. कृ. को.-पागार। (४) ए. कृ. को.-इछत।

सुनत पुकारह छोह छकि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चढ़े हयन। बिंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर जानत जंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्ववैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कलं मखि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोभत्ती बर बैर। बहुरि हालाहल मच्चौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। लेष लंघै को रच्चौ ॥
करि [2]न्हान दान इट्ठं सु जप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय बयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संद्यन कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बच्यौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुअ। धुअ प्रमान पय [3]डंड धरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उभ्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

इनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर बिचार। सजि चढ़े बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-आउ। (२) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

*धरा धरा कंपिय भार। .. .. ॥
चढ़ि राइ चालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुथान ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज। बर बज्जि [२]विजयत बाज ॥
तन [३]चविधि तूल तरंग। विधि मंडि बीर विजंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देषि सूर सुरंग। उर होत अरियन पंग ॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माध नूत तमाल ॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचग अच्छतुपार। पाहार फारि प्रहारि ॥
उड्डि वृत्त तिड्डिय सेन। मनों राम लंका लेन ॥छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का वल वर्णन।

कवित्त ॥ चिविध साज वड्डिय। अवाज भेरी कोकिल सुर ॥
भवर झुंड झंकार। चौर मोरह ढुरंत बर ॥
बर बसंत सम वीर। नच्चि तोषार चिंभगिय ॥
[४]रन रत्तौ सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय ॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरषि सूर बज्जिय करस ॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन। सुभर कंक मंडिय सरस ॥छं०॥५८॥

युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ सुबर बीर मंड्यौ समर। रन उतंग सोमेस ॥
दै दुबाह [१]दुज्जन घरौ। घरी सु अद्ध तरेस ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान।

कवित्त ॥ जा दिन जीव रु जम्म। क्रम्मता दिज जम पच्छै ॥
सुष्य दुष्य जय अजय। लोभ माया नन सुच्छै ॥

---

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छ० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े बीर सुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है। (२) मो.-विजयसु। (३) ए. कृ. को.-विवि। (४) को. कृ.-नर, ए.-मर। (१) ए. कृ.-दुज्जन।

काल कलह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरह्यौ ॥
[1]मुगति मग्ग सुझझै न। ग्यान अंतह किन सुह्यौ ॥
प्रतिब्यंब अंब अंबह जुगति। भुगति भ्रम्म सह उद्धरै ॥
केवल सु भ्रम्म [2]घिचिय तनह। कन्ह कंक जौ सुद्धरै ॥ छं० ॥ ६० ॥

दूहा ॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। *नर निरदोष सदोष ॥
संभरवै [3]संमर सुमति। न्हप लगि सुमत जमोष ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना ।

कवित्त ॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय ॥
सुमरि साह इक्क देव। द्रुवन दल देषि [4]दपट्टिय ॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना ॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरीठ भयन्ना ॥
फूलह सु धार धर कंन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह घरिय ॥
पग सट्ठि नट्ठि भौमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय ॥छं०॥६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन ।

दूहा ॥ काल चंपि बर चंपि कल। नर निर्घोष निसान ॥
सुबर बीर हिंदुअ सयन। बर बीरा रस पान ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन ।

†कलाकल ॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं ॥
नचि [5]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं ॥
छं० ॥ ६४ ॥
झमकंत सु दंतन अस्सि झरी। जनु विज्जुलि पब्बत मेघ परी ॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [6]जुग्ग जुगह्हि पनं ॥छं०॥६५॥

---

(१) क्र. को.-मुकति, ए.-सुकति। (२) ए. क्र. को.-छत्री। (३) ए.-संभर।
*ए. क्र. को.-नर निर पोस दोष। (४) ए.-दृपट्टिय, मो. को.-लपट्टिय।
(५) मो.-नौ रस में। (६) मो.-सज्जि।

†इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं।

बजि [1]डौरुअ डक्क निसान घुरं। जनु बीर जगावत बीर उरं॥
दुअ सेन बलं असियो बरषी। नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुआर झरै। वहुव्यौ नन पंजर आय परै॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर भगर जिम षेल। ठेल सेलन सम ठिल्लहिं॥
इक्क धुकत धर तुट्टि। *इक्क वल्लन गल मिल्लहिं॥
इक्क कमंध उठंत। इक्क अंतन आलुझझहिं॥
इक्क इथ्थ [3]पग झरहिं। टिक्कि षग[4]पग बिन झुझझहिं॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छिचिन कन्यौ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर। इम सु जुद्ध कन्हह [7]भिन्यौ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सीसन बिन किन्नय॥
इय किन्नय बिन नरनि। सेन भीमह करि झिन्नय॥
[8]षुद्धा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्पिय॥
पल डारिय पल पूर। सूर कन्हा भय भिष्पिय॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल। सचल सस्त्र सह झंझरिय॥
मदमत्त गंध महियों [9]ढुरिय। मनों वाय इच्छह गुरिय॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान॥
[11]सो संभरि सोमेस वर। सो कीनी पहिचान॥ छं० ॥ ७० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-डरुअ। (२) मो.-जिनं।
* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहि।
(३) ए. कृ. को.-षग। (४) मो.-षग। (५) ए. कृ. को.-तरफंत।
(६) ए. कृ. को.-छत्री। (७) ए. कृ. को.-लन्यौ। (८) ए.. षुधा, कृ.-षुदया।
(९) मो.-ढुरत। (१०) ए. कृ. को. आधारिय।
(११) ए. कृ. को. से भरिवै सोमेस वर।

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। दृढ़ वय कामति सोचन ॥
[2]पुच बिना बिन बंध। बल सु बंध्यौ भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुष्प लष्पं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। *नय तरत्त रत्तौ सुगति ॥
सोमेस हूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥
छं० ॥ ७२ ॥
मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥
छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥
छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥
छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥
छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय न्विघाइ। †मन्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हार्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ ॥

---

(१) मो.-धूम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
*मो.-"नयन तरत तरनी सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
†मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

छह घरी स्रोन असिवर उह्यौ। धार मार रुधि धार चलि॥
संजुत्त अग्गि धूमह स जुत। [1]छलि बलि बीर बलिट्ठ बलि॥ छं॥ ७७॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन।

सिद्धि रिद्ध विथ्थुरिय। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय॥
स्रोन सलिल बढ़ि चलिय। मरन मन किंकन जुट्टिय॥
कलमल सिर वहि गुरिय। नयन अलि वास सु वासिय॥
जंघ [2]मगर कर मीन। कच्छ घुप्परि घग चासिय॥
पोइनी अंत सेवाल कच। अंगुलि पग करि झिंग झरि॥
सोमेस सूर चहुआन रन। भीम भयानक जुद्ध करि॥ छं०॥ ७८॥

दूहा॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि। बहत सार असरार॥
*मानों जालुग अंत कौ। आनि सँपत्तौ पार॥ छं०॥ ७९॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना।

कवित्त॥ सोमेसर अरि सूर। ढाहि [3]दीनै [4]बरि वानै॥
नल कूबर मनि ग्रीव। जमल भग्गा [5]तरु कान्है॥
वे सराप नारद प्रमान। दरसन हर लद्धिय॥
इन तमंग उत्तरै। सार कट्टे बर बद्धिय॥
न्विघ्घात घात मत्तौ कलह। असुर सुरन मत्तौ [6]महन॥
कट्टै सुरत्त कित्तिय सुभट। सु कविचंद [7]कित्तौ कहन॥ छं०॥ ८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध।

भुजंगी॥ बजे बीर बीरं सु सारं घनक्कैं। महा मुक्ति बत्ते सु बीरं रनक्कैं॥
गजे बीर बद्दं करन्नाल सद्दं। सनाहं ससूरं बहै सार हद्दं॥ छं०॥ ८१॥
नचै जंग रंगं ततथ्थे तथंगं। [8]लचै रंक चित्तं मनं सूर [9]पंगं॥
बढै बंक कंकं ससंकौ धरानं। नगं नग्ग जुट्टे अमग्गं परानं॥ छं०॥ ८२॥

---

(१) ए. कृ. को.-बलि। (२) ए. कृ. को.-मकर।
* ए. कृ. को. मनो जोग जुगत्ति को। (३) ए. कृ. को.-दीनौ।
(४) ए. कृ. को.-वर। (५) मो.-तर। (६) ए.-सहन।
(७) मो.-कीरति। (८) ए. कृ. को.-जंगं।
(९) ए. कृ. को.-चलै।

ठनक्कंत घंटं रनक्के नफेरी। मया मोह दोषन्न हूरन्न [1]नेरी॥
धरं धार ढौरै ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्र फेरें कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३ ॥

जामराय यद्धव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त ॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्पिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्पौ॥
[2]ता मुष्पह षंगार। झार अग्गी झर रुप्पौ॥
बिरचे कि [3]महिष बलबंड बल। दल [4]चमूह चवदंत हुअ॥
न्रप काम जाम इक जहर झर। बहर रूप पिष्पेति दुव॥ छं० ॥ ८४ ॥

रसावला ॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सरोधं। भरं भार क्रुद्धं, रमै रोस उद्धं॥
छं० ॥ ८५ ॥

करें केलि कंकी, घुते लज्ज पंकी। करुरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ ८६ ॥

पियें लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूनें, फिरं अश्व हूनें॥
छं० ॥ ८७ ॥

विना दंत दंती, किए क्रुद्धवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रक्त धारे॥
छं० ॥ ८८ ॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं॥
छं० ॥ ८९ ॥

दुअं मुष्प लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति हूरं॥
छं० ॥ ९० ॥

वहै ओन धारं, झरैं [6]भिन्न तारं। .... छं० ॥ ९१ ॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तसु। (३) ए. कृ. को.-वलष।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं। ज्यों मत्त [1]दृषभ रोस रंगाइं ॥
गरजैं धर धुर धुंदे। तक्कैं घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना।

दूहा ॥ अंमर धर पन्नग असुर। पिषि सह रष्यित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्पि क्रम। सुमन स [2]दृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट। षिसै कि पन्नग मंच ॥
विस भोए डंविस सबल। [3]सगति नहीं जुग [4]जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ वाम अंग सजि संग। बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत। सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह। घंट घूंघर घनघोरं ॥
वष्पर पष्पर जीन। सार दल्लुर दल रोरं ॥
गज गाज बाजि नीसान धुनि। अति उभ्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिंधूस धुनि। करन सु उथल्ल [5]पत्थल्लधर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय। सजि सारंगी आइ ॥
षिभिर षेत घन घाइ मिलि। जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो.-मनयं रोमं। (२) मो.-द्रष्टिय।
(३) मो. सकति,। (४) ए.-तंत्र। (५) मो.-पथ्थ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं। वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है। कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है।

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं करूरं करारे। छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघात बीरं। फिर रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं ॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे ॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों सूर सीसं षसे चंद तारे ॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ षंडेव जानं ॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों धनं कूटकंती ॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वासंत भूपाल भूपं ॥
जिनं कछछ वच्छं धरं धम्म धारै। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं धम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। वृत्त अनुव्रिय सार ॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसर अरि भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर षल चूरं ॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह सासूरं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्पेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं ॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं ॥

(१) ए. कृ. को.-सार। (२) मो.-तीरं।

जो वंडं करवान कर्णित दलं, अज्जेन आयातयं ॥
श्री बीरं चहुआन वानति बलं, चालुक्क संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढ़े बान चहुआन चालुक्क षेतं। महा मंच विद्या गुरं सुक्क जेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद बर्षा [1]प्रहारं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत बिज्जू करन्नाल सादं ॥
छुटी बान जंची उड़ी गेन अग्गी। [2]महादेव बीरं चषं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचें ताल संमाल वेताल श्रीरं ॥
नचें न्रत्य नीसान नारह घाई। चढ़ी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्ष गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्याल [3]ष्यालं विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [4]तबल दारं दुवं बिरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं ॥
दुअं सूर पूतं दुअं [5]कस्य पाए। दुअं दंद दारुन्न बाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार बहुबे रानं ॥
दुवं सैन स्याही जलं बहलानं। दुअं गज्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रहत्तीय वेरा अचंती करारी ॥
[6]सरं जाल भालं भिदै जंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं ॥
छं० ॥ १११ ॥

---

(१) मो.-पहारे। (२) ए. कृ. को.-महावीर देवं।
(३) को.-षत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तल्व।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयंनं भमंती॥
उछैं छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं दृष्ट बंधूक पूजं [1]जुतंगं॥
छं० ॥ ११२ ॥

छटैं मभ्भ सभ्भं नरं केक कच्चे। खरैं जंग हथ्थं बिना केक रच्चे॥
उड़ै घुप्परी घग्ग झारैं करारी। मनों चंद खूरं दधी पूज धारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघ्घाइ घट घूम लुट्टैं। [2]तिनं जम्म खनं क्रमं बंध छुट्टै॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमै॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे॥
कहै कव्वि वष्यान किं वर्नि तेनं। फली [3]कृष्णि पच्छं मरनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त ॥ हाकाइल वित्तयौ। सार मत्तौ झोलाइल॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पस्सु पंषिन कोलाइल॥
धर परंत दुरि धरनि। उत्त मंगत्तिहि कारहि॥
झर झरंत घग्गाइ। बीर डंकिनि ढक्कारहि॥
महि मज्झि मज्झरत मरन रन। सद्द जाइ जय सुर करिय॥
चहुआन खूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

इय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ सम्मानं॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै॥
हकि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [4]सु रारै॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन खिलहि॥छं०॥११७॥

(१) ए. कु. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋष्णि। (४) मो.-सुसारै।

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों की संख्या कथन ।

बाजि नंषि सोमेस । सहस बर इक्क प्रमानं ॥
[1]तिन मध कहि पंचास । बीर भारथ भरि पानं ॥
तीन तीस षट परे । पर्‍यौ सोमेसर षेतं ॥
गिद्ध सिद्ध वेताल । कंक बंध्यौ सिर नेतं ॥
लभ्भी सु मुगति अदभुत जुगति । इंस इंकि इंसह मिल्यौ ॥
सोमेस करी सोमेस गति । पंच तत्त पंचह मिल्यौ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना ।

दूहा ॥ जुझ्झि पर्‍यौ सोमेस धर । डोला चालुक राय ॥
दुहूं सेन झरि धर परे । बजी बत्त पग चाइ ॥ छं० ॥ ११९ ॥
नर भृत्य न्रप रिष्पि के । ज्यों फिरि करिहैं झुझ्झ ॥
चतुरानन चिंता भई । नर भारथ्थ अबुझ्झ ॥ छं० ॥ १२० ॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली ।

गाथा ॥ जा [2]मुक्किं जोगिंद । काल काइ धम्म धमाइं ॥
सा मुक्की सोमेसं । इक्क छिने लभ्भियं राजा ॥ छं० ॥ १२१ ॥
भूमी भरंत भरयं । कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं ॥
जै जै जंपि जगत्तं । है है नभ्भ सह सुर वायं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना ।

कवित्त ॥ सुन्यौ राज प्रथिराज । भूमि सिज्जा अवधारिय ॥
तात काज तिन पिंड । दान षोडस विचारिय ॥
भद्द मद्द सह्यौ । राज गति अग्ग प्रकारं ॥

---

(१)मो.-तिन मध्य सु पंचास । (२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुक्ति ।

दादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संचारं॥
विन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान जनमंत नर॥छं० ॥ १२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अट्ठ सहस दिय धेंन।। *तब प्रथ्थौ विधि धारिय॥
हेम शृंग षुर हेम। तौल दादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि नान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात वैर संग्रहन। लेन प्रथिराज विचारं॥
घृत मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुहृत बीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिके। कढ़ौ तात उदरह सुषम॥छं० ॥ १२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात बैरह बिनान॥
राजिंदु दृष्टि रग तेत नेन। बध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥छं॥ १२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहै न्रपति। बैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुत्र बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्धह काज॥छं० ॥ १२६॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि बिप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। ध्रम्म क्रम्महं तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्प जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

---

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।

(१) मो.-सुष्प। (२) मो.-ब्रिम्म।

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं। काल चिदस जानै सुमति ॥
सासँति छूर सोमह बरन। सुविधि छूर मंडी सुभति॥ छं० ॥ १२७ ॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुवृत। जजन सुजग्य पवित्र ॥
तच कोइ पुज्जै नहै। क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरबार बार। [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत [3]रत्ति प्रथमोत जोग। जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव। तिन प्रसन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति विप्र इन विधि प्रकार। जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

महि मगन मंडि नहिं निकट फंद। दिष्पंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग। अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज। सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम इक्क। अप्पै सु दान मानह विसिक्क ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज कित्त। बर बीर धीर साधंत भित्त ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार में नृत्य गान होना।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिष्षा जहां ब्रम्ह सुत। करि अभिषेक नृपान ॥ छं॥ १३४ ॥

---

(१) कृ.-साबधन। (२) ए. कृ. को.-चार।
(३) ए. कृ.,को.-रत्त। (४) कृ. ए.-नैंन। (५) को. मो.-राजन।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद्र। (७) मो.-मंति।

भ्रमरावली ॥ नव वीर नवं रस वीर नच्यो। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यो ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं ॥
चिय दिष्पिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु बनन कित्ति करं ॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त बुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम कबन्ध नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं ॥
छं० ॥ १३८ ॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारै ॥
छलकै छिति मत्ति अराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं ॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्पियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]घट राग [4]मति ॥
संसार भेद अभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रकृति साधत [7]सुरति ॥छं०॥१४१॥

---

(१) ए.-भरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगीं द्रपंगीति वाखे। इकं मोल अंमोल लोलंत भाखे॥
गरे पुष्फ माला विसालाति धारैं। मयंका मुषी कंठ [1]कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि। न्रप जै जै प्रथिराज ॥
मनों इंदु सुरपुर गहन। उदै करै मनु साज ॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ स पते तिन महल। जहँ सामंत नरिंद ॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि। मनों इंद्रानी इंद्र ॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्रपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे। मनों कामता काम की बुद्धि तारैं॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी। मनों जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥

सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे। मनों मेनिका रंभ आषे अषारे ॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै। बने कोन इत्तंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै। सब सामंतन सथ्थ ॥
जस जा इथ्थन विष्प के। भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर सूरं। सामंतं सत्त षट दूनं ॥
ता अप्पन प्रथिराजं। चौ अग्गा लच्छि संग्रामं ॥ छं० ॥ १४८ ॥

ईच्छनी से गठवन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना ।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं। दियौ कन्ह चहुआन इथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं। मनो देवता जीव के जग्ग जत्तं ॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना ।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय। दुत्तिय निडर रठौर ॥
दून अग्गह सुभ संत करि। तापछ सुभ्भर और ॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक ।

कवित्त ॥ कियौ तिलक वर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। इथ्थ इंदौवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। छुरत चावहिसि सीसं ॥
मनों भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छत्र। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावहिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बज्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल व्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कबिचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥३९॥



अथ पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना ।

दूहा ॥ †सुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यौ भीम सोमेस ॥
आतुर षरि आयौ जहां । दिल्लि देस नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन ।

दूहा ॥ किति कला कूरंभ बल । कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोरा राइ ॥ छं० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । झाला रानिंग हूय ॥
विरद बुलावै महबली । छोंगा सज्यौ सधूय ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छोंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना ।

कवित ॥ छोंगा ला सिर छच । सीस बंध्यौ पज्जूनं ॥
जस जयपत्त जु आनि । करै परसन सह [1]जनं ॥
अप्पातें घर रैठि । रीस कीनी चालुक्का ॥
हीय घटक्के साल । बात संभरि बालुक्का ॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों । अप्पानौ दल टारियौ ॥
पज्जून मलयसी बीर वर । करन कूच उच्चारयौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छोंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।

† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है ।

(१) ए. कृ. को.-दूनं ।

‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं । सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है ।

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिंगर के किले में है और वहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना ।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
किये कूच पर कूच। काल घेऱ्यौ कि कूट गिर ॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं ॥
उद्धि मद्धि जिम अनिल। जलधि लंका गढ़ जानं ॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय। हक्कार्‌यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ वर। सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जौ परै न [3]भत्ति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पद्धरी ॥ चल्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छची उठी भोमि भोरं ॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क थानं। अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं ॥
छं० ॥ ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै। सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै ॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा साइ मानें। इसे बीर कूरंभ रैवान जानै ॥
छं० ॥ ९ ॥

तहा घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरब्बार आयं ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

---

(१) ए. कृ. को. ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जित्ति।
(३) ए. कृ. को.-मित्ति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै । झाला रानिंग सथ्थ ॥
छोंगा बीर महाबली । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चंपि काल पज्जून । बीर भोरा भीमंदे ॥
कै आयौ उप्परै । फुट्टि प्रायास सबद्दे ॥
सकल सेन चमकयौ । बीर भोरा उठि जग्यौ ॥
मलैसीह मुष काल । हाल सम [1]व्याल सु [2]भग्यौ ॥
[3]बक्कार बीर छौंगा गज्यौ । सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि । समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जान।

दूहा ॥ लै छोंगा बर [4]बीर चलि । चाबक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस ते बाहुर्‌यौ । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मभ्भ ते । लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछें बाहर चढ्यौ । दल चालुक्की बीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी ॥ चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं । हकारे नरिंदं सु क्रूरंभ तेनं ॥
सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं । छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥
छं० ॥ १५ ॥
बजै घाइ अघ्घाइ गज्जै हवाई । बजै आवधं मभ्भ आवज्ज झाई ॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे । परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सार सारं चिनंगीस उट्ठे । मनो झिंगनं भद्दवं रैनि वुट्ठे ॥
घनं रत्त घंटै उमा बीर रत्तं । परै अट्ठदह बीर क्रूरंभ पत्तं ॥छं०॥१७॥

---

* ए. कृ. को.-"षिझ्झी विमान चिढ़्ढयो"। (१) ए. कृ. को.-व्यालह।
(२) ए. कृ. को.-लग्यौ। (३) ए.-चक्कार। (४) ए.-वलि।

परे सहस चालुक्क ह्वै बान बीरं। तहां इत्तनैं भान अस्तंम नीरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मलैसीह पज्जून रा। दस दिसि कित्ति अवाज ॥
दै छौंगा भोरा फिर्‌यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कनै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है वर आरोहि ॥
घटि चालुक [4]बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥
मलैसिंह रानिंग सुत। सुभ्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पर्‌यौ। ज्यों तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥
*पज्जुन राइ महाबली। मलैसिंह धर पारि ॥
छौंगा लै पाछे फिर्‌यौ। सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति [5]तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

---

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दौनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ। (४) मे.-बधि। (५) ए. कृ. को.-तवी। *छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ [1]बालुका हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥
साम भेद जैचंद किय । पति दोखी सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त ॥ आइ षबरि चहुआन । [2]सु दल बालुकराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस । साह साहाब बैर कजि ॥
लष्य दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिर कारी कढ़िय । समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध बालुक कमध । [4]कहें कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है ।

चालुका परि राइ । बीर बज्जे नीसानं ॥
सकल छूर सामंत । षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सबर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरँभ को दल्ल । नृपति इह तथ्य उचारिय ॥
जो चियन वस्य मन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनै ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का । (२) मो.-"सुवर चालुक्का राह सजं ।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि । (४) मो. कहो कान चढ़ै ।

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा ॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान इथ्थ दिय [1]साज ॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान बर ॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क अंपि धर ॥
परमारह कमधज्ज। बीर परिहारथ भट्टिय ॥
सकल सूर बर नटे। काल चंपै मति घट्टिय ॥
पज्जूनराइ षग अग्गरौ। करै नाम निरमल सु धर ॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्पिय [4]निजर ॥
छं० ॥ ५ ॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहत धनुद्धर ॥
*जो मह नह पूजंत। जोग षल षंडन सद्धर ॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ आसि असि अरि झारिय ॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय ॥
लै पान सौस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि ॥
चालुक्कराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि ॥छं०॥६॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

---

(१) ए. कृ. को. बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को.-दिष्षै।
(४) ए. कृ. को..नजरि। *मो.-प्रति-जोगन पुज्जै जोग षल षंडन बीर।

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल। कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल। ते सज्जि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइं। स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं॥
मिलि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं। गई हट्ठ चहुआन सुरतान मानं॥
छं० ॥ ८ ॥
बजै दुंदुभी देव देवं सु थानं। भयौ मुष्प कूरंभ चितं स भानं ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग बर। बगसि राज तब बाज ॥
लिय कूरंभ कुल उज्जले। सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना।

कवित्त ॥ [2]षग्ग बंधि कूरंभ। आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र। तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर। सिंघ पाल्हन्न सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ। संग लीने भर सारं ॥
चित स्वामिध्रंम सो अरि भिरन। लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि। बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन। पावस सक्र समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून [3]भर। सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चल्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं। कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं॥
छबी तेज मुष्पं सु सोभंत बीरं। मनों केवलं अंग बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जूटं। (२) कृ. को.-षगा। (३) मो.-परि

चढ्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिट्ठी दिट्ठ दिट्ठी मनों वेद गायं॥
चढ्यौ राइ पज्जून छत्रं सुधारे। बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे॥
छं० ॥ १४ ॥
द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तिथं पंचमी पूर आदीत वारं॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा॥ तिथि पंचमि रवि बार बर। छंडि पंच भर आस॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं॥
जित्तेतं सुरतान मान सरसं, आइत्त बानं बियं॥
भूयो बाल भुआल भारथ क्रतं, छप्पो धरा धट्टियं॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्कं बरं॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत॥ छं० ॥ १८ ॥
तहां हुए सगुन ए सुध रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप॥
दाहिनैं पूठ मृग मृगिय जाय। बामह सुबीय सारस सुभाय॥
छं० ॥ १९ ॥
उत्तरै तार देवीति वार। डहकंत सह जुग्गिनिय भार॥
मृगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदे सुराज पज्जून जान॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर॥
तबै राइ चालुक्क बर। आइ [4]सँपत्तौ तीर॥ छं० ॥ २१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-मुकाति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-बद्दे, कृ.-बंदै। (४) ए. कृ. को.-संपत्तौ।

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ सँपत्ते सूर भर। सुरताना कमधज्ज॥
कूरंभइ पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज॥ छं० ॥ २२ ॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन।

पद्धरी॥ दुअ दीन हिंदु संमुह प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन भान॥
चहुआन सूर रवि जेम वीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर॥
छं० ॥ २३ ॥
कूरम्म दान पग रूप दीन। अज्ञान जान रज रूप कीन॥
छं० ॥ २४ ॥

दूहा॥ करिग सेन संमुष सुबर। गरूड़ व्यूह किय वीर॥
खरन मरन भारथ्थ कृत। जज्जर करन सरीर॥ छं० ॥ २५ ॥
[1]ग्रिद्ध व्यूह कूरंभ करि। नाग व्यूह सुरतान॥
षा ततार घुरसान पति। मंडि फौज मैदान॥ छं० ॥ २६ ॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त॥ [2]पग जहव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय॥
भट्टी सेन विषम्म। पिंड पावं अधिकारिय॥
जानु होइ पुंडीर। नष्य उर मंस अंस करि॥
चंच अंष सुभ जीह। वीर कूरंभ [3]पयद्धरि॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाइ गहि। [5]लहि लोहानौ [6]ठौर बर॥
छचह [7]मुजीक पज्जून सह। दौरि पर्‍यौ बलिभद्र बर॥ छं० ॥ २७ ॥

युद्ध की तिथि।

धरिय सत्त दिन रह्यौ। बार नौमीति सुक्क बर॥
पंच बीस आवट्टि। * यट्टि लोथं सुबंधि थर॥

---

(१) मो.-गरुड़। (२) मो.-पंग। (३) ए. कृ. को.-राइ धरि।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह। (५) ए. लरि। (६) मो.-मीठि। (७) मो.-मुनीक।
*ए. कृ.- को.-"लुथ्थि पर लुथ्थि बंधि थर"।

कूरम्मह षग भारि। सार भारथ्थ सु किन्नौ ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टंकार सु भिन्नौ ॥
आचार चारु राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर ॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [1]सुर ॥ छं० ॥ २८ ॥

श्लोक ॥ मानवं दानवं नैवं। देवांनां कुरु पांडवो ॥
कूरम्म राइ समो बीरं। न भूतो न भविष्यते ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि भट्ट। इट्ठ बलिभद्र अंमरिय ॥
बलिय तप्प कूरंम। सार साहित्त घुम्मरिय ॥
यों पजून दल मल्यौ। सोइ ओपम कवि भाइय ॥
कमल पंति गजराज। सरित मझ्झह झुकि ग्राहिय ॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट। करिय एम कूरंभ घट ॥
सुघ्घाट आइ कुघ्घाट किय। सुभट घाइ भारथ्थ [2]थट ॥ छं० ॥ ३० ॥

दूहा ॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि। ते अंगन दिष्पाइ ॥
रुधि सुक्कै कद्दम हुए। हय तरंग सुभ्भाइ ॥ छं० ॥ ३१ ॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुद्ध सुचाखुक राइ तहँ। च्यार बंध परि षेत ॥
पंच भ्रात कूरंभ बर। उप्पारे सु अचेत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त ॥ उप्पारिग पज्जून। बीर बलिभद्र उपारिग ॥
उप्पारिग पालहन नरिंदु। घाव [3]सट्ठं तन धारिग ॥
परि पंचाइन कन्ह। जैत जैसिंह जुवानं ॥
हिंदु बीर दभ्भान। मेच्छ गडुन परिमानं ॥

---

(१) मो.-अमर। (२) ए.-तट।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठे।

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौं ॥
जस जैत लियौ कूरंभ [1]रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंशा।

दूहा ॥ *आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्कै आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥४१॥



(१) ए. क. कौ.-नर। * छन्द ३४ मो.-प्रति में नहीं है।

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन [1]चिंत चंदह कय्यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल अप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है बर [3]बिसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक बेद जोजन प्रमान । घटे * संघल क्रत पाइय ॥
साज लष्ष तन लष्ष । सकल बल कोरि सजाइय ॥
धानुक्क धार सत अट्ठ चलि । करन तिथ्थ जाचह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[6]गज घंट्टन चंबाल । भेरि सहनाइय बज्जिय ॥
चलत आइ चितकोट । पुरन चियलोक [7]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
शृंगारिय गढ़ इट्ठ । [8]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

---

(१) मो.-चित्त । (२) मो.-पैं । (३) ए. कृ. को.-विलास ।
(४) ए. कृ. को.-बारुनह । (५) मो.-समथ्थह ।
* पाठ अधिक है । (७) मो.-घ्रज । (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय ।
(९) मो.-मनो इन्द्र थान विसिष्षिय ।

बजि चंब बंब बज्जन बहुल। मन उच्छाह भिष दान दिय ॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [1]तथ्थ डेरा करिय ॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा ॥ गिरवर झुंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर ॥
चिचंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर ॥ छं० ॥ ४ ॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चिचंगद सर बर ॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर ॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी ॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी ॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्पयौ ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्पयौ ॥ छं० ॥ ५ ॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल ॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइब। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय ॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कहि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्य ॥
मुहु अग्गे सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य ॥ छं० ॥ ७ ॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त ॥ नगर अजोध्या नृपति। नाम कीरत्ति धवलं ॥
सर जसुरि तातट्ट। रमत सिकार सयलं ॥
तानि बान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय ॥
तरफंरत अवलोकि। ओन घन धार अवंतिय ॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत ॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत ॥ छं० ॥८॥

---

(१) ५. कृ. को.-सथ्थ। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १५ पर्य्यंत मो.-प्रति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि । सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
सूनि कान बानि रानी प्रफुल्लि । उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥

अनुराग सुत्तपति को हरष्ष । उठि चलिय मिलन मारग गवष्ष ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ । तड़िता कि तेज तारक दिषाइ ॥
छं० ॥ १० ॥

जल जलनि विष्ष गिरि झंप पात । पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिष्थ असनान दान । कोटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं०॥११॥

अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ । अहंकार उअर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल । आइ गिरि कंदर प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स । भंजि अँग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कंति चमकंत । जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत । जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्प अंसू ढरत । पंसूरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि । गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥छं०॥१३॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि । अवन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर । कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥

रघुवंसी राजिंद नें । मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
ग्रभवंती हिरनी हनी । तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना।

कवित्त ॥ कवि सु सष्ष मति प्रबल । बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन । अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रूप माल सु विसाल । मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति । विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) कु.-पोह।

नरकंध रथ्थ के आरुहिय। ढंकि छब्बि मनों अंब जल ॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद्द। मोघ निरषि मनुराज थल ॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छब्बि वस्त्रंग। मद्धि माला मुत्तिय मनि ॥
सौतारामी सहस। कनक थारी सत बीजनि ॥
अगर पान अड़सट्ठ। रजक पालिका पठाइय ॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारँग [1]मुह गाइय ॥
मुक्कलिय प्रथा कवि थान कहूं। भरन भार अश्वन भरिय ॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सषियन आदर करिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा ॥ दिय बहोरि नृप नगर कों। प्रिथ आसीस पढ़ाइ ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]कूप कल नाइ ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि ॥
फुनि नरिंद चिचंग मिलि। चंद दंद तन मेटि ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल ॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय ॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं ॥
छं० ॥ २० ॥

[3]लोह कंड रच्चे सुर सच्ची। कुरछन झारि दियंत सु पिच्ची ॥
मनों ओपमा में छबि [4]रच्ची। जेबैं बरन अठारह जच्ची ॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय ॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेबैं सब परिगह परिवारिय ॥
छं० ॥ २२ ॥

(१) ए.-सूह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो..लहो। (४) मो.-मेछ ते रंची।

केसर अगर घौरि सब किद्धिय। पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय॥
हथ्थी है मोती नग विद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज दै तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय॥
अमरसिंघ गज मुत्ति सुभाइय। जो चिचंग अत्य सम राइय॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्यासन आरोहिय उप्पर॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पौर॥
पंथ एक पष्पह चलिय। द्रिग सागर दिषि नौर॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन॥
दिट्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अंग अंगन॥
गजत पिट्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्य पर॥
सुरथान मान इतनौ सुचित। देवलोक कैलास दर॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा॥ हाटक मंडप छच लहि। मुत्तिय [1]पंतिन माल॥
मनों चंद बहु भान मझ। कल मष कट्टत काल॥ छं० ॥ २८ ॥

फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्पि प्रमान॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान॥ छं० ॥ २९ ॥

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल। (१) ए.-वंतिय, पंतिय।

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला ॥ तुअं देह दट्टी, तुअं मान वट्टी। तुअं बीर दट्टी, तुअं थान थट्टी ॥
छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं। तुअं भाल भालं, तुअं त्रिग्गपालं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दथ्थी, तुअं भीर भथ्थी। तुअं द्रोप रथ्थी, तुअं सर्ग सथ्थी ॥
छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रथ्थी, तुअं ब्रह्म लथ्थी। तुअं पंथ रोही, तुअं गोप मोही ॥
छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सचु दोही, तुअं सग्ग सोही। तुअं सिद्धि तूंही, तुअं रिद्धि सोही ॥
छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्ब अंडं, तुअं तीन कुंडं। तुअं षित्त [1]षंडं, तुअं थार मुंडं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ थट्टं। कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं ॥ छं०॥३६॥

दूहा ॥ हरिहर वप्प सच वारि वर। पुर धरि सिर पर इंद ॥
मनुँ गुर तरु फर भार नमि। झलमलि हसि गोविंद ॥छं०॥३७॥

देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी। नमो तुं नमो तुंज संसार सारी ॥
नमो तुं अभथ्थी नमो बीज भथ्थी। नमो रिथ्थ पूजंत सज्जंत सथ्थी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई। नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई ॥
नमो तंत जालं विकासंत राई। नमो विस्वथानं [3]गिरंजा गिराई ॥
छं० ॥ ३९ ॥

*नमो सस्सिपालं अकालं अभथ्थी। नमो काल जम्मं न कालं न सथ्थी ॥
नमो एक भग्गी भरत्तार पंचं। नमो कोरि कोरं करत्तार संचं ॥
छं० ॥ ४० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-पंडं। (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ्झ, तुझे। (३) ए. कृ. को. गिरज्जा।
* मो.-नमो सस्सि पालं अकालंत राई। नमो काल जमन कालं नसाई ॥

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानी। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो किर्त्ति तुं मंच तुं गीत मानी। नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१ ॥
नमो विश्व तुं भिस्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अट्ठरानी॥
छं० ॥ ४२ ॥
नमो बाल तुं वृद्ध तुं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्दं। नमो भुंड मुंडं तुहीं पारि सद्दं॥
छं० ॥ ४३ ॥
नमो पच्च तुं छच्च तुं छित्ति धारी। नमो दृष्ट तुं दृक्ष तुं अघ्घ हारी॥
नमो रूपतुं रंग तुं राग [1]रत्तौं। नमो भौंल तुं भाव तुं सील [2]सत्तौ॥
छं० ॥ ४४ ॥
नमो अत्त तुं दत्त तुं वारु बानी। नमो चंद चंडी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा ॥ करि असतुति ससतुति सुबर। होम हवन हरि नाम॥
सीवन तुला सु साज बर। करि सुभट्ट मुंचि काम॥ छं० ॥ ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्थिय [3]द्रब दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त ॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहिं दिवावहिं॥
ते दरवारह चढ्ढि। न्याय हय पिठ्ठ दमावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]झूलत तर वर॥
दीनी न जिनहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-रंगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-धर।
(४) ए. कृ. को.-अनत अनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनें मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं। (५) ए.-झूमत, को.-भूलत।

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]फेरिरंत नर ॥छं॥४८॥
भट्ट मेषनह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न भ्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन इन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आरूढ अंघ परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न आद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम ॥
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव दारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर बदि बद्द। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाध लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रवल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्पि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
बिप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस वहु। दोइ गंजन बादह पच्यौ ॥
अन्नेक चीर लूपरु फिरंग। मनों मेर कंठै भच्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दारह।
*"कविचंन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दो की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।
(३) ए. कृ. को.-बाहन।

षलक बिबिध घन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुक्कत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कहै सुषह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन। कवि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्धनराच ॥ बजान बज्जयं घनं। सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सह सागरं। समुद्दयं पटा भरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]मग्गयंद कै गजं बरं। .... ॥
इलं मलं इयं गयं। नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं। सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि भानयं। नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं। इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं। .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं। परीस रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संभयं। अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं। .... ॥
अरुढ़ काम रथ्थयं। सु उत्तरी समथ्थयं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनहुं कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कग्गजं गरं। (२) मो.-सुधा।

किनक जान भोरा कह्यौ। दिल्लीपति दानेस ॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म बेस ॥ छं० ॥ ६१ ॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त ॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समप्पन ॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपप्पन ॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय ॥
लै सु जाहु तुम लच्छि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय ॥
चल दुष्ट भट्ट आयौ वरै। करि झुझ्झौ मंचह सुपरि ॥
आरंभ डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन षेद करि ॥ छं० ॥ ६२ ॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा ॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट ॥
करिय अनूपम रूप दुरि। बेस अचंभम [3]नट्ट ॥ छं० ॥ ६३ ॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ ॥ छं० ॥ ६४ ॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त ॥ सोमेसर किन बधिय। चंद जानौ वह गत्तिय ॥
आबू गढ़ किन लौन। भीम चालुक जुध मत्तिय ॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन ॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाम धामह गति गंमन ॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझ्झौ नाहिन मरम गति ॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति ॥ छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर ॥
बत्त घत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अप्पिय द्रव कौर ॥ छं० ॥ ६६ ॥

---

(१) मो. सलप्पन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह अप्पिय इव कोर"

साज बाज सब फेरि दिय। प्रथु किय किति अपार॥
जगदेवह भोरा भनिय। [1]काह सु कवित्त उचार॥ छं० ॥ ६७॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना।

सोमेसर किन बधिय। सार संमुह किन सज्जिय॥
कन्ह पौर क्यों सहिय। किह किन आबू कज्जिय॥
इह गुज्जरी नरेस। वह सु दिल्ली विरदा मै॥
कूष पौर आदरै। धाम उदरे इत धामै॥
वागुरिन इत्त अवतार गनि। भिरि भुअंग भोरा सुबर॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ। कलि प्रगटिय मनुं सहस कर॥
छं० ॥ ६८॥

पुहमि राइ हस्तिनी। आर इंडी [2]रंधानिय॥
इक गज्जनी सहाब। सुइ सूंपी तुर [3]तानिय॥
इक्क राइ परमार। सधर सिर वानग जित्यौ॥
करन मंद चालुक्क। दई तिहुवार विधुत्तौ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर। सु इह वत्त जुग सब कि य॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि। एक राइ तुम उद्धरिय॥ छं॥ ६९॥

दूहा॥ दस लष्यन भष्यन करै। प्रथु सामत कुमार॥
भोरा उठि गोरा गयन। तब सिर छत्र उभार॥ छं० ॥ ७०॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परें। दरियापति दस लष्य॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर। सित्त सूर पति भष्य॥ छं० ॥ ७१॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ।

कवित्त॥ दइय सीष जगदेव। जाहु तुम लै आओ प्रभु॥
जदिन सूर सामंत। तदिन पिष्यौ सुरत्ति सुभ॥
ताम करिग तुम सुथिर। पाव चंचल होइ जैहैं॥

---

(१) को.-कवि। (२) ए. कृ. को.-रंधानिग। (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग।
(४) ए. कृ.-मूग।

मेछ मिलै घट षंड। परम [1]उतमंग जुध जुरहैं ॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी इम करै ॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा ॥ आइ सु भोर चंद यह। इय गय नर भर भार ॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार ॥ छं० ॥ ७३ ॥
देषिय डेरा भीम नृप। उच्चै यह आवास ॥
गौष पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [2]रास ॥ छं० ॥ ७४ ॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमंग ॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी ॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अनेक दीप वाहन उतंड ॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर ॥ छं० ॥ ७६ ॥
गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष ॥
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अनेक माल ॥
छं० ॥ ७७ ॥
तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सभभ गुज्जर नरेस ॥
मभि दीप रोम राइब कुसाव। संजाल दीप प्रति काल आव ॥
छं० ॥ ७८ ॥
गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन भुभभ दभिभ आसिष्य बीर ॥
हय मुष्य ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]देक ॥
छं० ॥ ७९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

वाहन अरोहि लीने असंष। प्रति पान पुरातन लह्ह पंष॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि। इन भांति चंद्र कवि करि तवन्नि॥
छं० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदान सु दिज्जिय॥
बाद [1]बदि देवंग। सुपन पिष्पिय मन सिज्जिय॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय॥
थूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय॥
नट्टी जु सघी उपजी अनल। सुरस बंचि नंचौ कलिय॥ छं० ॥ ८१ ॥
अरिल्ल॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्पिय रष्पिय रंभानं॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं॥ छं० ॥ ८२ ॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि भ्रत्त है गै पति चलियं॥
चंद मंत्र पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं॥
छं० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन पुर षेह॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह॥ छं० ॥ ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ घरि गजनेस॥
कूच कूच मग चंद घरि। पहुंच्यौ घर दानेस॥ छं० ॥ ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥

(१) मो.-छंद।

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते ।

(तेंतालीसवां समय ।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहाबं । अष्पिय समह षान तत्तारं ॥
अरु षुरसान विचारं । संभर समुष राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १ ॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तारं । अरि अति जोर खूर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं । षट्ट दिसि मंत साह साहाबं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन ।

इनूफाल ॥ वर मंच किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिल्लिय चिंत । षट्टू अ दिसि मन षंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त इर आलीस । बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्ष 'अस असवार । बानैत सहस चिआर ॥
पयदल सु लष्ष प्रचंड । चय सहस मद् गल झंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदभि बज्जि । भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । षह षेह रुंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो..लष ।

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रबि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आब ॥ छं० ॥ ८ ॥
हनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आब। सम चढ़े षान नबाब ॥
तत्तार मंच सु प्रौड़। घुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। बर लाल षान [4]महन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा ॥ उतरि साद बर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोले षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार बर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहै साहि के दार सम। कहौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
धुम्माइन काइथ सुकर। इह लिष्यौ अरदास ॥
आषेटक षेलन नृपति। मन किय षट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक्क दस दिसि नृपति। चढ़ि चल्यौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय बत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित सुरतान ॥
[9]गुज्ज महल सब बोलिकै। बैठे करन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

---

(१) मो.-रति। (२) मो.-सूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुसन्न।
(४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-चाइ। (६) ए.-मंनि।
(७) ए. कृ. को. सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

पद्धरी ॥ साहाब कहै तात्तार षान। उपजै सुमंच अष्यौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय। कैमास आन कौनी सहाय ॥
छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत। झुझझंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आषैति वार। सम लालषान हस्सन हकार ॥छं०॥१९॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति। साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस। कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥छं०॥२०॥
सामंत कितक बल सूर कौन। लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल [3]अछेह। देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥
छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आने सु राज। हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥छं०॥२२॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान मुष। बंध्या जोर सहाब ॥
रह षट्टू दिसि चल्लियैं। उलट कि सायर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस। चैत विदि सप्तमि दूजौ ॥
चढ्यौ साहि साहाब। [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार। तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच। [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर। काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ। ढिँग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥२४॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ। सजि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं। दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

---

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. क्र. को.-अल्लेक। (४) ए. क्र. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यौ। (६) मो. सत्तह। (७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

बेर बेर आवंत दुइ। मानै मेछ न संधि ॥
उरह लौन प्रथिराज कौ। आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुनत बचन कैमास के। कही राव चावंड ॥
आन राज चहुआन पिय। हौं मारौं गज झुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनि संभरि नृप मौज दिय। दैवर सहस मँगाइ ॥
मनि मोती सोवन रजक। इसती [2]सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
गैवर दस इय सात सै। दिय कैमासह राइ ॥
तुरी तीन सै बीज गति। दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतो के नाम कथन।

भुजंगी ॥ चल्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं। चढ़े लष्ष [1]पावं समं सूर साजं॥
चलै मुष्ष अग्गै सुहथ्थी हजूरं। मनो प्रब्बतं झिरन मद झरत पूरं॥
छं० ॥ ३० ॥
चल्यौ मंच कैमास सा काम अग्गै। वियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै
जूचय्यौ लंगरीराइ रत्न जंगं। सकं राइ गोइंद सा काम अंगं॥
छं० ॥ ३१ ॥
*चल्यौ चष्ष कन्हा नरं नाह रत्नं। चले बीर पामार तेजं तिनत्नं॥
†बरं बीर नर सिंघ हर सिंघ दोऊ। भरं राम बड़ गुज्जरं कनक सोऊ॥
छं० ॥ ३२ ॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरत्नं। चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं बरत्नं॥
नरं निढ्ढुरं सूर कमधज्ज रायं। चल्यौ बग्घ बघेल रन जुरन चायं॥
छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम।

भुजंगी ॥ चल्यौ तमकि घुरसान साहाब भानं।
चली फौज तत्तार घुरसान थानं॥
वरं रुस्तमं थान [3]आषूब मानं।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं॥ छं० ॥ ३४ ॥

---

(१) मो.-सत्त अनाइ। (२) मो.-एकं।
* ए.कृ.को-चल्यौ सथ्थ काका नरनाह कन्हं। †ए. कृ. को.-बरं बीर हरसिंह बरसिंह दोऊ।
(३) मो.-आकूब।

दिपै पान दरियाव दरिया समानं। खुप्यौ अश्व [1]पुर हेव रवि आसमानं॥
चल्यौ पष्परं धार पति पान पानं। उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥
चल्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूषान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गष्परं षान कम्मान षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥
चल्ययौ [3]पतिक मारुफषां सो अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी [4]पठानं॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीवषानं। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥
चल्यौ ग्यास दीवस्स गरुअस्स षानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना।

दूहा॥ चारि कोस चौगिरद रन। दोऊ समद समान॥
उत साहिब घुरसान कौ। इत संभरि चहुआन॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन।

भुजंगी॥ चल्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्थ राजं॥
बरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौंसट्ठ बैरत्त बानं॥छं०॥४०॥
धरी फौज में सीस सुविहान छत्रं। तिनं देषतें कंपई चित्त सत्रं॥
तहां धारि इथनारि कमनेत पत्रं। .... ॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त वैरष्ष की बनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥
तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। बिना राइ चहुआन को सहै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

---

(१) मो.-पुर हेवरं। (२) ए. कृ. को.-आगंम। (३) ए.कृ.को.-मलिक।
(४) ए.को.-प्रमानं। (५) ए.कृ.को.-"हलै रत्त चौंरं सवै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि हूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मह ॥
सुनि अवाज संसार। लष्ष चयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्ष पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ बर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥छं०॥४४॥

दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडें में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षबरि चहुआन। मंचि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्जौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडभ्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू धरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड मइा भर ॥
तुम कुलीन बर लज्ज। लज्ज मो तुमह कंध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज बहू ॥
कहै ताम कैमास। राज दिन सुध लै चहू ॥
इह कहिरु घाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज च्यौ रबि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥छं०॥४७॥

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[1]सर नाम ॥
सुनी षवरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षबर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षबरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सनमुष मंडै [2]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहां सुभ्भर ॥
मन्नी सु बत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग जंग [3]नृप नाह नर। कंन्ह कंक अग्गें धरिय ॥छं०॥५०॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [4]सजौ मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभैं पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत मै मत्त[5] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहां कंन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [6]तीसरी फौज बाजिच बाजे॥
सहस पंच असवार गैहै सु पंचं। सहस पंच [7]माले सहै लोह अंचं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पब। (३) मो.-नर नाह नृप।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ. को.-वाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले याले।

बरं पंच हज्यौ सहस पंच बाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भंलै पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥
सजी पंचमी फौज पामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभै पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त बर पंच [2]ठड्डं॥
छं० ॥ ५४ ॥
इसी पंच फौजै चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाब को सहै तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चल्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छच [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा॥ सुनी बत्त साहाब तब। सजि आयौ चहुआन॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी॥ सुभै गोरियं जंग ठड्डौ गुमानं। उभै लष्ष बाजं सु तथ्थं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले लरै लोह पानं। .... ॥ छं० ॥ ५७ ॥
अढ़ौ सहस मैमत्त मद झर प्रनारं। दुजी ओपमा झिरत झिरना प्रहारं॥
भलै मीर देषे दिये देढ़ [4]लष्षं। इमं चढ़ियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥
तियं फौज षुरसान षां चढ़ि तेजं। उभै लष्ष असवार बर बाज भेजं॥
उभै लष्ष कमनैत इथनारि इथ्थं। सजे फौज नौइथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥
बनी फौज चौथी चल्यौ षान षानं। सुअं षान षंधार बर विरद वानं॥
दुअं लष्ष असवार पल्ले दुलष्षं। अढ़ौ सहस इथ्थौ कम नैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥
असी सहस असवार करव लह[5] सेनं। सवै अंग सन्नाह विन दोइ नेनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चलै लष्ष इ जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

---

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बड्ढं।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-लष्षें, भष्षें। (५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं।

सजी पंचमी फौज बनि ब्रंन एवं। गुरं गप्परं वग्ग कट्टै रनेवं ॥
बली मरद कंमाल षा बधं सथ्थं। लियै सकत मन सातकी गुज्ज हथ्थं॥
छं० ॥ ६२ ॥
सजे लष्ष ह्वै सुभट करि लोह सारं। तहां देषि पाइक्कलं दुष्ष जारं॥
तहा पंच हज्जार गट्टै गयन्नं। सजी पंचयं फौज सा [1]इंद्र ब्रन्नं ॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना।

दूहा ॥ [2]ह्वै दल बीच सकोस ह्वै। प्रथीराज कहि बात ॥
चौकी चढ़ि चक्कह कटक। दल अरियन करि घात ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई ॥ चढ़िय सुचक्क सेन चहुआनं। सुबर सूर जोधा परिमानं ॥
उत सज्ज्यौ चक्कह सुरतानं। दीसै फौज मनों दधि पानं ॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्क रच्यौ सुरतानं। प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं ॥
षरौ षबरि कहियौ परिमानं। पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर ॥ चढ़्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कटी किरवान कसी।
मय मत्त सुमंत, पढ़े बर पंत। सहस ह्वै सूर, सहस्स असी ॥
दस सट्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसी।
बर बान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी ॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन।

कवित्त ॥ ग्यारह सै चालीस। सोम ग्यारसि बदि चतह ॥
भए साह चहुआन। [5]लरन ठाढ़े बनि षेतह ॥
पंच फौज सुरतान। पंच चहुआन बनाइय ॥
दानव देव समान। ज्वान लरनं रिन धाइय ॥

---

(१) मो.-सावूत्र इन्दं। (२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच ह्वै।
(३) मो.-सुरतानं। (४) मो.-पयदार। (५) मो.-मरन।

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। बीर कहर चक्कर जहर ॥
जोधान जोध जंगह जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी ॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिभि लग्गे दुअं भूप छिची ॥
छं० ॥ ६९ ॥

समं कन्ह षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह षुरयं न सुझ्झंत भानं ॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥

चल्यौ कोपि परचंड परमार जैतं। उतै गष्परं झाम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै अत्य चहुआन सुरतान आनं ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तहां कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लाजं ॥
इकं एक सेलंत कट्टंत कोपं। इकं एक जमदट्ठ करि सेइ धोपं ॥ छं० ॥ ७२ ॥

इकं एक फरसी सु कट्टंत हथ्थं। इकं एक गुरजं लरै हूर बथ्थं ॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी जुरंता। इकं एक हूरं उठैं भू[2] भिरंता ॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम द्वै लरैं। हिंदू तुरक न्यघात ॥ छं० ॥ ७४ ॥

भुजंगी ॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै ओन छंछं जरे जानि [3]डुंडं ॥
इकं हूर सेलं करं कट्टि तेगं। *इकं हथ्थ कम्मान संचत्त वेगं ॥
छं० ॥ ७५ ॥

इकं इक्क हथियार बिन लात घातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं ॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तिमिति भानं। इकं जम्मदट्ठं लरैं लै जुवानं ॥
छं० ॥ ७६ ॥

---

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-सुंडं।
* मो.-"इकं अस्व कीनं रिनं वायु वेगं।"

इकं बीर बर बीर बैठे [1]विमानं। इकं सूर क्रूरं निरष्यंत पानं॥
इमं जाम ह्वै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]बाज गजराज नरराज गाढ़े॥
छं० ॥ ७७ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त ॥ घेऱ्यौ नृप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ॥
जंग करै चामंड। धरिग गज झुंडन जुट्टौ॥
बाग लेइ बगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ॥
करन कड्डि करिवार। दंत सम भसुँड सु तुट्टौ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड मुष। रुष किन्निय सुरतानं [3]तन॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ कलह राइ चामंड [4]करि। इह मा॰यौ गजराज॥
साह गहन कों मन कऱ्यौ। चढ़्यौ [5]हांस लै बाज॥ छं० ॥ ७९ ॥

कवित्त ॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग॥
जहां हक्यौ तहां भिऱ्यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय॥
षग्ग ताल बाजंत। सीव तरवर बन तुट्टिय॥
[6]कतरीय पुरष गय घर मुरिग। चंद बरद्दिय इम भन्यौ॥
भाजंत भीर तुष्यार चढ़ि। चौंडराव चावक हन्यौ॥ छं० ॥ ८० ॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गहौ तुम षूब॥ छं० ॥ ८१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गुमानं। (२) मो. राज।
(३) मो.-नन। (४) ए. कृ. को.-कहि।
(५) मो.-हंस। (६) ए. कृ. को.-कसरी।

कवित्त ॥ घूब घान तहां लाल । बान बरषंत बीर पर ॥
इह मरद मारूफ । [1]नेज फेरंत कहर कर ॥
इसन घान सेहथ्थ । षग्ग बाहंत सीस पर ॥
कट्टि कटारिय जंग । अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर । दाहिम्म कौनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ बर । कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल घान दुअ बान । तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि इय अंग । एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ । जंघ [2]हय उर महि भिद्दिय ॥
इसन घान तरवारि । मारि दै घा मुष किद्धिय ॥
आकूब कटारी कट्टि कर । घस्सिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम । भगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना ।

दूहा ॥ च्यारि घान चामंड इक । एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अम्म दाहिम्म कौ । भिर्‌यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना ।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग । [3][4]अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रीस । सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब । घूब जस लियौ लोह लरि ॥
इसन मारि कट्टारि । पारि मारूफ मुर्‌यौ धर ॥
मारूफ मुर्‌यौ उछर्‌यौ इसन । आकूबह सिर धर पर्‌यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय । लाल घान रन बिफ्फुर्‌यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खां का वर्णन ।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग । [4]लाल बरन इय अंग ॥
लाल सीस सिंधुर धजा । लाल घान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तेग । (२) मो.-हथ ।
(३) ए. कृ. को.-इह । (४) ए. कृ. को.-अंग ।

कवित्त ॥ लाल बरन वानैत । षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
षान षान किय घाउ । कंध कटि गिऱ्यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड । बिरचि फिरि बीर पचाऱ्यौ ॥
गहिय तेग षां लाल । अग्ग न्रप धरनि पछाऱ्यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय । केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकत्थ सुनौ हिंदू तुरक । जै जै सुर नारद [1]करहि ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना ।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि । सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल । रन ठट्ठौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप ।

कवित्त ॥ रन ठट्ठौ चामंड । मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[2]हयह चढ़ायौ आइ । बहुरि मुष बचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध । इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[3]तो बिन जग सब धंध । अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि बाज आज संग्राम में । राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आकूब से । षल षंडे ते अंग बर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर । [4]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठट्ठौ इक षिनक रन । करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब । तुम मेरे बड़ भ्रात ॥
क्यों षिचौ देषै परै । कलि न अमर इह [5]गात ॥
कलि न अमर इह गात । बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय इक्कारि । बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मचाइ । तबहि गज्जन पति [6]ग्रहिहै ॥
खरत कित्ति होइ तुरत । तुरक हिंदू सब [7]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

---

(१) मो.-कहिय । (२) मो.-हयानि ।
(३) मो.-"तौ बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ ।" (४) ए. कृ. को.-रकत ।
(५) मो.-घात । (६) ए. कृ. को. ग्रहियै । (७) ए. कृ. को.-कहियै ।

कैमास का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज षां। जाज षान महबूब ॥
मान मदन कैमास कौ। लगि घुरसानह घूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि की बत्त। सत्त सब मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]असमान। बान कम्मान प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार। इक्क मंची तहां टेय्यौ ॥
जबरजंग नीसान। मनहुं बहल घन घेय्यौ ॥
जिम पष्पबान कर बेग गहि। च्याय्यौ कैमासह लगे ॥
दिष्पेव सबल संग्राम भर। ब्रह्म जोग निंदह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥
नीर मीर [2]सक सस्त्र। मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान। बान बाहंत पष्प जिम ॥
जाज षान दुअ बान। तानि माय्यौति पय्यौ धम ॥
तष्पि बाज सहबाज। मरद [3]महबूब मुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन महि। जाइ जुय्यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंचौ सरिस। लरत घाव दुअ घरिय अम ॥ छं० ॥ ९४ ॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना।

भुजंगी ॥ धरिय जुद्ध द्वै घरिय बिती मध्यानं। जुरे ज्वान इथ्थं सुबथ्थं जुधानं॥
दलं दोई बीरं बरं जुद्ध बानं। धकं धक्क इक्कंत षेतं सु ढानं ॥ छं० ॥ ९५ ॥
वहै सस्त्र अम्मान कम्मान बानं। गिरैं तथ्थ छिंदू तुरक्कं अघानं ॥
करै सूर सूरं सु घावं कृपानं। इकं तेग लग्गे सु ठट्ठे [4]घुमानं ॥
छं० ॥ ९६ ॥
मनों घुमाई ध्यानं जोगिंद बानं। लरै सूर सामंत जो जाउ मानं॥
जुरै जंम रंगं सु ठट्ठै गुमानं। तहा मंचि कैमास महबूब षानं॥ छं० ॥ ९७ ॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं। इसे सुभिभयै तथ्थलै षग्ग पानं॥

---

(१) मो.-असमान। (२) मो.-सब।
(३) मो.-महमूंद। (४) मो.-गुमानं।

घनं घाव वज्जंत सो द्वै समानं। जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठानं॥
छं० ॥ ९८ ॥
जुरे च्यार घानं सु चावंड [1]मानं। जुरै अंग अंगं करै अप्प [2]मानं॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं। .... छं० ॥ ९९ ॥
रुप्यौ मंच महबूब दुअ जुद्ध थट्टं। तिनं बाहियं उअर नह तेग तुट्टं॥
तबै थरहरे काइरं कंपि नट्ठं। तहां ताज षां घान राषंत पुट्ठं॥
छं० ॥ १०० ॥
दलं देवता जुद्ध देषे विमानं। तहां देव निवरंत अछरीय गानं॥
तहां चौसठी करत भरि पच चल्ली। तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥
तहां स्वांमि कामं [1]लरै हिंदु मीरं। इमं सस्त्र वस्त्रं घुटे तीर तीरं॥
तहां मल्ल जिम लरैं बलवंत ग्रीरं। .... छं० ॥ १०२ ॥
तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं॥
तिसे दरसियं स्वर दंतं दँतानं। तहां हथ्थजोरं सु हत्ती हतानं॥
छं० ॥ १०३ ॥
सुभै ठाम ठामं परे तुरक झुंडं। तहां हह हिंदू भये षंड षंडं॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड। .... छं० ॥ १०४ ॥
तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं। तहां केस कुस दंत बगपंति मानं॥
तहां भोर ज्यौं भँवर हथ्थं करारं। तहां कंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥
तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं। तहां तीसरी नदिय बहिपाद्य ऐनं॥
तहां स्रोन की सरित जल पूर भल्ली। तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मंगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामंड सम। किय सहाब बर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-समानं। (२) ए. कृ. को.-पानं। (३) मो.-लहै षग्ग बीरं।

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ धरिय दोइ बर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे ॥
मंचि मिया महबूब। [1]अंग से अंग निहट्टे ॥
परिय मीर [2]सिर मार। भार दुअ भुज बर पिल्लै ॥
घायत्तन घन घुंमि। चाय षिचौ षग षिल्लै ॥
षग षेल मेल महबूब सिर। कैमासह कर टारियौ ॥
तकि बाज घान बल [3]चंड करि। गहि गिरदान पछारियौ ॥

छं० ॥ १०८ ॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन ॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज घाव घन ॥
पहुंचि जाज परिहार। धार मीरन सिर बट्टिय ॥
रन जित्यौ दाहिम्म। कित्ति पहुमी पर चट्टिय ॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक ॥
सुनि बत्त साह संमुह अरिय। जनु असि वर उग्गयौ अरक ॥

छं० ॥ १०९ ॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला॥ मत्त मत्तं लरी, मेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, सूरिमा संभरी ॥

छं० ॥ ११० ॥

काइरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्पंबरी, तेन धीरं धरी ॥

छं० ॥ १११ ॥

षग्ग षग्गें जुरी, सस्त्र कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी ॥

छं० ॥ ११२ ॥

ईस मालं धरी, [4]ग्रम्म जालंधरीं। राइ चामंडरी, जैत लछी घरी ॥

छं० ॥ ११३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जंम। (२) मो.-पर।
(३) ए. कृ. को.-षंड। (४) ए. कृ. को.-दिल्ला।

तेग लग्गी तरी, मेच्छ ग्रभ्भंटरी। मीर छुट्टे धरी, साहि ढिल्ल्यौ करी॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना।

कवित्त ॥ करिय साहि ठेलंत। मीर हक्कंत प्रबल दल ॥
षां ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सबल बल ॥
चक्रसेन चहुआन। लोह बाहंत आय षल ॥
नर हय गय गुंजार। लोह लग्गंत हयहल ॥
असि मार धार आकास उड्डि। उट्ठि जुरंत कमंध रिन ॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिषंड षंडे [1]करिन ॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना।

तब सहाब सुरतान। बान कंमान कोपि धरि ॥
अलूघान आलंम। सार बहि [2]कही सु घुप्परि ॥
चक्रसेन सिर षंडि। कियौ दह भरे लोह लरि ॥
षां ततार रुस्तंम। घांन घुरसान रहै डरि ॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। सूर नूर सामंत मुष ॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुष ॥ छं०॥११६॥

दूहा ॥ अप्प अपानी रुष लरत। करत अंग अँग मार ॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकबान प्रहारिय ॥
एक बान चामंड। लग्गि भुज दंड मुहारिय ॥
दुतिय बान सिर बहिग। चक्रसेनह सिर संधे ॥
सुकर कट्ठि अप बान। षंचि बसतर [3]सम संधे ॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि। बिजल घान बगसी बह्यौ ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जै जैं कह्यौ ॥ छं० ॥११८॥

---

१) मो. किरन, करन।
(२) ए. मो.-कढ्ढि।
(३) ए. कृ.-सस।

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ घाइन पारिय॥
चक्रसेन षग बहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि क्रपान कासिम्म। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टैति मीर तिहि साह रिन। छच धार छचिय षगन॥
दाहिम्म जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं०॥११६॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उट्ठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय घाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पर्‍यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिर्‍यौ॥ छं०॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंगोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सचह बरस सपन्न। राय बाहर कौ जायौ॥
कलिजुग जस विस्तरिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मारयौ मीर [5]जद्दव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं०॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

---

(१) मो.-लगन। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौ।
(३) ए. कृ. को.-रत रिन्यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार।
(५) ए. कृ. को.-जब दल।

दूहा ॥ चयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधबार ॥
समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥
भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन बेर बीरं । जुरे संभरी साहि सिरदार श्रीरं ॥
नरं कादरं क्रम्मले भग्ग भीरं । चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहां च्यारि बंधौ भए एक सूरं । लगे मंच कैमास दिष्पै करूरं ॥
लगे बान कंमान फुट्टै परारं । कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहां राग मारू बजै तबल तूरं । घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्र चूरं । तहां हूर रंभा बरै बरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे । तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥
दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान घर । बंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के । मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर । साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड । मंचि बंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि बाहि कैमास । पीत बाने बिच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड । तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
कट्टिय सु सुंड गज दंत सम । गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सद्द अमर ॥छं०॥१२८॥
चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं । साह सहाब ग्रह्यौ कैमासं ॥
सचह षान परे चिहु पासं । जै जै सबद भयौ आयासं ॥छं०॥१२९॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार । डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंचौ सुरतान । बंधि बिय राज पास गय ॥

दिष्पि नृपति साहाब। ताम अप्पन हिय डरयौ ॥
किय हुकम्म चहुआन। आनि सुष्यासन धरयौ ॥
नृप जौति चल्यौ दिल्ली पुरह। उप्पा-यौ चामंड बर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां। उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना।

उप्पारिग चहुआन। राज बंधव सु चक्कधर ॥
रामकिस्न गहिलोत। बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ। बीर कैमास अनुज्जिय ॥
सामल सेषा टांक। नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्परि षेत सामंत षट। षट्टपुर भारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत। रहे षेत कंदल करिग ॥ छं० ॥ १३१ ॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा।

दूहा ॥ जे भग्गे तेज मरे। तिन कुल लाइय षेह ॥
भिरे सु नर गय जोति मिलि। बसे अमरपुर तेह ॥ छं० ॥ १३२ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बांट देना।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज। दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ। बाज हज्जार अट्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज। दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज। सुभर उप्पारि मंझ रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह। बद्धाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय। चंद अप्पि कीरति अमर ॥ छं० ॥ १३३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षटू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४३ ॥

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग नृप । निक्त षटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु, बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता बैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल ओन सम । पियै सचु, अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सद्धि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्ष चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंम [1]षिचीय । करे संताप तात कहां ॥
षग धार षंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सम । आबूवै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक बत्त चालुक्क । किम सु अंगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुह सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पन ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) मो.-छत्रिय ।

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा ॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय। पुनि सु पिंड दै तात ॥
सहस धेन संकलप करि। ग्रंथौ कथ्थ व्रतांत ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहु सामंत सूर [1]सम ॥
जो निरमान भवस्य। सोई संपजै क्रंमक्रम ॥
जदिन भीम संग्रह्यौ। सोम उग्रह्यौ तदिन रन ॥
जोगिनि बीर बेताल। करौं संतुष्ट [2]चपति तिन ॥
घृत छंडि पाद्य बंधन तजिय। सजिय अप्प संभरि दिसह ॥
अवतार भूत दानव प्रबल। अगनि अंग प्रज्वलि रिसह ॥छं०॥६॥

गाथा ॥ जाइ संपते सूरं। ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं ॥
पिष्पिय नैरवि रूपं। भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिको की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहना।

दूहा ॥ भूमि सयन प्रथिराज करि। निसा बिहानी निट्ठ ॥
[4]अरुन समै उद्योत हौं। मंडि सभा सुभ बिट्ठ ॥ छं० ॥ ८ ॥

पद्धरी ॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ। [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ ॥
कर जोरि सभा सब उट्ठ ताह। नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि॥छं०॥९॥

चष पटी रहत जिन रत्ति दीह। बज्जंग अंग [7]संग-यौ सीह ॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै घट्ट घुम्मि। तब बीर सूर सोमेस झुम्मि ॥
छं० ॥ १० ॥

---

(१) मो.-सत्र। (२) मो.-नृपति।
(३) ए. कृ. को.-सहर्यं। (४) मो.-असन।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत। (६) ए. कृ. को.-सज्जंत।
(७) ए. कृ. को.-संकर्यौ।

दीपमालिका कथा

[तेइसवां समय]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि दीपमालिका के उत्सव के विषय में जो कुछ जानते हो सो कहो। पृ वीराज के ऐसे बचन सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि सतयुग में सत्यव्रत नामक राजा का पुत्र राजा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी और पुण्यवान था, वह प्रजापालन में बड़ा दक्ष था इसलिये लोग उससे बड़े प्रसन्न थे। सोमेश्वर की राजधानी की प्रधान नगरी जहां वह स्वयं सपरिवार निवास करता था भांति भांति के पुष्प और पल्लवों से परिवेष्टित समुद्र के तट पर स्थित थी। उस सत्यवती नगरी में सत्यश्रम नामक एक दरिद्र ब्राह्मण भी रहा करता था। एक दिन उसकी स्त्री ने अपने पति से कहा कि हे पति इस धनहीन जीवन से मृत्यु अच्छी। जिस पुरुष के पास धन नहीं है वह जीवित अवस्था में भी मृतकवत् है। स्त्री के ऐसे बचन सुन कर सत्यश्रम ने विष्णु भगवान का नियम पूजन और ध्यान किया। तब विष्णु ने उसे ब्रह्मा के पास भेजा और ब्रह्मा ने उसे शिव की आराधना करने को कहा। भाग्यवश रुद्र ने उसकी तपस्या से प्रसन्न हो कर कहा कि तूं मेरी अनुगामिनी माया का ध्यान कर, सांसारिक सब कार्य्य उसी द्वारा संपादन किए जाते हैं। निदान उस ब्राह्मण ने वैसा ही किया और उसके ३ महीने १३ दिन की तपस्या में देवी ने प्रसन्न होकर उसे ऋद्धि सिद्धि और १४ रत्न दिए। तब ब्राह्मण ने अपने मन में कहा कि ऋद्धि सिद्धि से क्या होगा। ऐसा विचार कर वह राजा की सेवा करने लगा। एक दिन उसे अकस्मात ज्ञान हुआ कि कार्तिक की अमावास्या को लक्ष्मी उसके घर आती है और दीपक जलते समय तक रहती है। दीपक शान्त होने पर वह अन्य दीपक प्रज्वलित स्थान में चली जाती है।

उस ब्राह्मण को राज्य सेवा करते करते जब चार वर्ष व्यतीत हो गए तो एक दिन राजा ने उससे कहा कि ब्राह्मण वर मांग। यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि मैं यही चाहता हूं कि कार्तिक मास की अमावास्या को मेरे सिवाय किसी क घर में दीपक न जलने पावे। ब्राह्मण क ऐसे बचन सुन कर राजा ने कहा कि हे ब्राह्मण जो तुमने माँगा सो पावोगे; किन्तु तुम अवश्य अपनी उलटी बुद्धि पर पछताओगे। इस समय तुम मुझ से अन्न, धन, स्वर्ण पृथ्वी जो कुछ माँगते वह मैं प्रसन्नतापूर्व्वक देता। इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह ब्राह्मण अपने घर गया और एक मन तेल और सवा सेर रुई मँगाकर अपनी कुटीर में दीप मालिका के उत्सव का प्रबन्ध करने लगा। जब अमावास्या की तिथि निकट आई तब वह पुनः राजा के पास गया और उसने पूर्वोक्त बरदान के पूर्ण किए जाने की प्रार्थना की। निदान राजा ने भी आज्ञा दी कि अमावास्या के दिन मेरे राज्य भर में कहीं भी दीप ज्वाला देख न पड़े। तब ब्राह्मण ने अपने घर आकर बहुत से दीपक जलाए और अपना गृह बाहर भीतर से सर्वत्र खूब प्रकाशमान करके वह बैठ रहा। जब आधी रात के समय लक्ष्मी समुद्र से निकली तो सर्वत्र अंधेरा देख कर ब्राह्मण के ही घर गई और उसने विचार किया कि इसी स्थान में सर्वदा रहूंगी, और ब्राह्मण के सम्मुख साक्षात् होकर उसे बरदान दिया कि तेरे यहां सात जन्म पर्य्यन्त बास करूंगी। यह चरित्र देखकर उस ब्राह्मण का बालसखा दरिद्र वहां से चुप के से चल दिया; परन्तु ब्राह्मण ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे कदापि जाने न दूंगा; तुम मेरे लंगोटिया यार हो अब भी तुम्हें उचित है कि तुम मेरा साथ न छोड़ो और आनन्द से तुम भी एक कोने में रह कर इस पुंश्चली लक्ष्मी को कहीं जाने मत दो; परन्तु दरिद्र ने उसकी एक न मानी और यह कहता हुआ कि अब मैं इस नगर भर में कभी न आऊंगा, वह भाग गया। उसी घड़ी से ब्राह्मण का घर धन धान्य से परिपूर्ण हो गया सर्वत्र धन रत्न के आश्चर्य्यजनक अटंब लग गए। उसी घड़ी से दीपमालिका का प्रचार हुआ है॥

धन कथा।

[चौबीसवां समय।]

एक समय मरूभूमि से दिल्ली को आते हुए जब कि पृथ्वीराज का डेरा षट्टू बन में पडा हुआ था पृथ्वीराज ने अतरंग सभा में बैठे हुए अपने बुद्धिमान मंत्री कैमास की बुद्धि की बहुत ही प्रशंसा करके उससे पूछा कि हे मंत्रिवर इस बन में सुन्दर जल से सुशोभित एक सरोवर के किनारे एक पाषाण मूर्त्ति है जिसके शीस पर लिखा है कि "सिर कट्टै धन संग्रहै सिर सज्जे धन जाय" इसका तात्पर्य्य जानने के लिये बड़े बड़े बुद्धिमान चक्रित चित हो रहे हैं। अब तक इसका मूल भेद कोई भी न जान सका; इस हेतु अबमैं तुमसे पूछता हू तुम बतलाओ कि उक्त लेख का क्या अर्थ है। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर कैमास ने उत्तर दिया कि सुना जाता है कि गत समय में वीर बाहन नामक कोई बड़ा प्रतापी राजा था, वह महान इन्द्रियलोलुप और प्रजापीड़क था। उसने प्रजा को कष्ट देकर यह अगनित द्रव्य का भंडार इकट्ठा किया। किन्तु प्रजा ने अत्यन्त दुखी होकर एकचित होकर उसे शाप दिया कि वह निःसन्तान मृत्यु को प्राप्त होवे। निदान प्रजा की प्रार्थना स्वीकार हुई और काल पाय ऐसा ही हुआ। सो हे महाराज! यह सब धन उसीका संचय किया हुआ है। इसका निकालना भी बहुत ही सरल है। यदि आप इस धन को निकालना चाहते हैं तो चित्तौराधिपति रावल समर सिंह जी को बुला लीजिए और तब इस कार्य्य में हाथ डालिए; क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव इत्यादि आपके शत्रु निरंतर आपकी ताक में रहते हैं; इसलिये उत्तम यही होगा कि सब प्रकार से अपना पक्का प्रबन्ध कर के तब धन निकाला जाय। कैमास के ऐसे नीति भरे बचन सुन कर राजा ने उसे अपने पास बुला कर बड़े आदर से बैठक दी और सिरोपाव भी दिया और कहा कि हे मंत्रिवर मैं तेरी सलाह से परम प्रसन्न हुआ हू। और उसी समय चन्दपुंडीर को बुला कर एक पत्र देकर उसे रावल समरसिंह जी के पास चित्तौर भेजा।

चन्द पुंडीर अपने साथ में रावल जी को भेट में देने के लिये पृथ्वीराज के दिए हुए बहुत से हाथी, घोड़े, पट, वस्त्रादि लेकर चित्तौर पहुँचा और सादर रावलजी से मिला और पृथ्वीराज का दिया हुआ पत्र रावलजी को नज़र करके उक्त धन संबन्धी समाचार आद्योपान्त सुनाने लगा। इसे सुन कर और पत्र को पढ़ कर योगिराज रावल समरसिंह जी ने हँस कर उत्तर दिया कि हे चन्द पुडीर इस संसारचक्र की गति विलक्षण ही है। एक मांस के लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और अन्य गिद्ध लड़ कर उससे वह लोथड़ा छीना चाहते हैं। और इस धर पकड़ में वह लोथड़ा किसी और के ही हाथ लगता है। रावल जी के ऐसे बचन सुन कर चंद पुडीर फिर बोला कि हे रावल जी आपका बचन तो सर्वथा सत्यही है परन्तु पृथ्वीराज को एक मात्र आपही का बल भरोसा है वह आप ही के भरोसे पर अपने बड़े बड़े शत्रुओं को कुछ भी नहीं समझते। इस हेतु मै यही प्रार्थना करता हूं कि आप पृथ्वीराज के उत्साह को भंग न करके कृपापूर्व्वक दिल्ली पधारिए और धन निकालने में उनकी सहायता भी कीजिए।

चन्द पुंडीर के ऐसे बचन सुन कर रावलजी एक बड़ी भारी सेना लेकर नागौर की ओर चल पड़े। पड़ाव पर पड़ाव करते हुए जब रावल जी नागौर में आए तब धर्म्मायन ने सब समाचार शहाबुद्दीन को लिख भेजे। जब रावल जी दिल्ली से दस कोस की दूरी पर रह गए तब दूत ने दिल्ली में जा कर पृथ्वीराज के दरबार में समाचार दिया जिसे सुन कर पृथ्वीराज अपने सब सूर सामन्तों और सेना सहित रावल जी की अगवानी के लिये दिल्ली से आध कोस आगे बढ़ आए और सादर समर सिंह जी को दिल्ली लिवा ले गए। वहां पर अनंग-

पाल जी के रहाइस भवन में रावल जी को डेरा दिया गया और सब भांति से उनकी सेवा सुश्रूषा होने लगी। दो दिवस योंही व्यतीत हुए। तीसरे दिन पृथ्वीराज ने रावल जी और सब सामन्तों सहित एक अतरंग सभा की, जिसमें धन निकालने के विषय में उचित युक्ति विचारने का प्रस्ताव किया गया। निदान फिर भी बुद्धिमान कैमास के विचार से यही निश्चय हुआ कि शहाबुद्दीन का मुहासरा पृथ्वीराज स्वयं रोकें और भीमदेव का पंथ रावलजी रोकें और तब इधर धन निकालने का यत्न किया जाय।

निदान इस प्रकार परामर्श पक्का हो जाने पर पृथ्वीराज और रावल समर सिंह जी समस्त सूर सामन्त और अपनी अपनी सेना समेत नागौर को चले। वहां पहुँचकर रावलजी के मतानुसार दो दो कोस के अंतर पर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर पृथ्वीराज और भोला राय के मुहासिरे पर रावलजी ने डेरा डाला। उधर इस बात की खबर शहाबुद्दीन के पास भी जा पहुँची। ज्योंही शाह ने सुना कि दिल्लीपति नागौर में धन निकालने के लिये आगए हैं, वह भी चुनिन्दा मुसलमान वीरों की बड़ी भारी सेना सजकर नागौर की तरफ चल पड़ा। उसने रास्ते में चलते चलते भी सेना को चक्रव्यूहाकार रक्खा और अब की बार पृथ्वीराज को अवश्य ही बंदी बना लूंगा ऐसा विचारता हुआ बड़ी धूम धाम से वह नागौर के निकट आन अड़ा। इस प्रकार शाह का आना जानकर रावल जी ने बहुत प्रकार से समझा बुझाकर मंत्री कैमास को तो धन रक्षा पर नियत किया और आप शाह पर आक्रमण करने के लिये प्रस्तुत हुए। प्रातःकाल होते ही रावल जी शाह की ओर बढ़े। रावल जी की असीम सेना के चलने से धूलि उड़ती हुई देख कर शहाबुद्दीन भी ताड़गया और इसलिये आप भी आने बाने से दुरुस्त होकर रावल समरसी जी से समर करने के लिये साम्हने हुआ। इधर से वीर राजपूत उधर से मुसलमान योद्धा लोग अपने अपने अस्त्र शस्त्र चमकाते, हृदय में इष्ट देवों का स्मरण करते और मुख से अपने अपने मालिकों की जै जैकार की पुकार करते हुए भूखे सिंह की भांति एक दूसरे पर टूट पडे। हाथी हाथी से, घोड़े घोड़े से और पदाती पदाती से भिड़ पड़े। रण क्षेत्र में दोनो सेनाओं की मुठभेड़ होते ही दोनो दलों के मुखिया सरदार भी एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर वार करने लगे। प्रबल प्रहार ने रुस्तम खां के भाई सूर खां को मार गिराया। उधर से रुस्तम ने प्रहार राय को भरपूर हाथ मारा। इसी प्रकार दोनों ओर के सूरवीर रणा मदोन्मत्त हो लड़ने लगे। रण क्षेत्र में रक्त की धार बह निकली; जिसमें पड़े हुए सुंड मुंड हाथी पहाड़ से और श्रेणीवद्ध शस्त्र धारी शूरवीरों की कतार नदी की कगार सी नजर आती थी। सारे दिन खूब लोहा भरा। हिन्दू और मुसलमान दोनों जी छोड़ कर लड़े, अन्त में आधी घड़ी दिन रहते बीर राजपूतों ने मीर पीरजादों को पीछे पिछेल दिया।

ज्योंही सूर्य्य भगवान अपने प्रकाश को संकुचित करते हुए अस्ताचलगामी हुए, कायर कमल संकोच से सिर नीचा करने लगे, कुमोदिनी गण प्रसन्नचित चन्द्रमा की ओर चित्त दे चहकने लगी, विहंग गण कोमल कोमल पत्तों की आड़ में किवाड़ देकर अपने अपने घोसलों में चुहचुहा कर चुप होने लगे, उधर समस्त दिन के समर श्रम से श्रांत दोनों सेना के सूरवीर गण अपने अपने स्वामियों की आज्ञा से अपने अपने शिविर समूह की ओर लौट पड़े और सब जमादार सिपाही इत्यादि अपने अपने स्थान पर जम कर जगत के जंजाल को तिलांजुली देकर निर्मूल हो निद्रा देवी की गोद में पैर पसार सोने में मस्त हुए। इधर रावल समरसी जी और पृथ्वीराज, उधर शहाबुद्दीन अपने अपने प्रशस्त शिवरों में सोते थे और उनके सगे विश्वासपात्र सरदार लोग सावधानी से पहरों पर सन्नद्ध थे। चामुंडराय निदुदुरराय अत्ताताई और जैतराव रेन प्रमार और कन्ह का भतीजा पृथ्वीराज के पहरे पर थे। और रुस्तम खां, तातार खां, नूरी खां, हुजाब

खां, महमद असाकेली खां और खोखर खां आदि मुसलमान सरदार शहाबुद्दीन की चौकी पर थे। रात्रि इसी प्रकार व्यतीत हुई। दूसरे दिवस पूर्व्व दिशा में सूक्ष्म सफेदी नज़र आते ही कुक्कुटने ज्योंही कड़कदार आवाज लगाई कि उसी समय दोनों सेनाओं में खर भर पड़ गई, सब सूर सिपाही लोग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर रणभूमि में शत्रुओं के रक्त की पिपासा से आकुलित हो नायकों की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। एक घड़ी दिन चढ़ते चढ़ते वीर पृथ्वीराज भी शूर बीरों के छत्तीसों बाने और जिरह बख़तर धारण कर मतवाले मैगल पर सवार हो कर अपनी सेना के मध्य में आकर सुशोभित हुआ और उसने शत्रु सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाते ही युद्ध रँगराते मदमाते वीर राजपूत उस असंख्य यवन सेना पर ऐसे टूटे जैसे भेड़ों के समूह पर भेड़िया दौड़े। दाहने रुख से पृथ्वीराज और बाएँ रुख से समर सिंह जी ने आक्रमण किया। तब मुसलमान सेना भी अल्लाह बिसमिल्लाह करती हुई हृदय में अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती हुई, युद्ध में प्रवृत्त हुई। पूर्व्व दिशा में उदयाचल स्थित बाल सूर्य्य की कोमल लालिमा में दोनों सेनाओं के उज्वल शस्त्रों की चमचमाहट से चकाचौंध सी छा जाती थी। उस समय रण वाद्यों की घड़ घड़ाहट, प्रबल वायु वेग से उड़ने के कारण उत्तग और प्रशस्त निसानों की फड़फड़ाहट, अग्न्यास्त्रों की धड़धड़ाहट, बान की बौछार और गोले गोलियों की सनसनाहट को सुन कर शूरबीरों को तो सुख होता था परन्तु कायर कपूतों के तो प्राण पखेरू ही पयान किए जाते थे। शाह की तरफ से अरब खां सेनापति था और उमर खां सहायक सेनानायक का कार्य्य संपादन करता था। उसने अपने बीरत्व पराक्रम और बुद्धिमता से राजपूत सेना से ११ दिन पर्य्यन्त साम्हना किया; अन्त में बारहवें दिन पांच घड़ी दिन चढ़ने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ ही पड़े। ऐसा समाचार पाकर पीठि सेनानायक खुम्मान खां ने बहुत जोर मारा और मुसलमान सेना को हिम्मत देनी चाही; जिससे वास्तव में मुसलमान सेना ठहर गई और यवन लोग जी तोड़कर युद्ध करने लगे। इसी प्रकार जब मध्यान्ह होगया और २००० गब्बर काम आ चुके तब मुसलमान सेना ने राजपूतों पर घोर आक्रमण किया। इसी प्रकार चोटें होते होते जब आधी घड़ी दिन शेष रह गया तब निसरत्त खां याकूब खां और तत्तार खां ने सेना की तीन अनी कर के राजपूतों पर तीन ओर से प्रबल आक्रमण किया और ऐसी बुद्धिमानी और बीरता दिखाई कि राजपूतों के पैर उखड़ पड़े। यह देख कर रावल समरसिंह जी और पृथ्वीराज हाथी से उतर घोड़ों पर सवार होकर प्राण का मोह छोड़ कर शत्रु सेना में घुस पड़े और अपनी उज्वल असि द्वारा वे बड़े बड़े यवन योद्धाओं को खंड खंड करके धराशायी करने लगे। उनके पीछे पीछे अन्यान्य राजपूत बीर भी अपनी अपनी माई के सपूत पूत होने का परिचय देने में तत्पर हुए और पावस के बद्दल की भांति संघटित यवन सेना को राजपूत लोग प्रबल वायु स्वरूप बन कर काई सा फाड़ने लगे; उधर मुसलमान भी पाव पीछे देना जहन्नुम में जाने से भी बुरा जानते थे। इसीलिये दोनों सेनाओं में खूब लोहा झरा किन्तु आखिर मुसलमान लोग रावल जी की तेज तलवार की धार के सम्मुख ठहरने में असमर्थ हो उठे। उधर पृथ्वीराज ने अपने हाथी को शहाबुद्दीन के सम्मुख झुकाया तब शाह पृथ्वीराज पर सघन बाणों की वर्षा करता हुआ अपनी सेना से बोला कि "अय बहादुरो, खाने और सोने में तो सब इन्सान बराबर है मगर सच्चा बहादुर वही है जो दुश्मन के सामने सीना खोल कर अड़े। गोकि मुझे यह पूरा यक़ीन है कि आप लोग अपने नाम पर और मेरे काम पर अपनी जान और जहान कुछ भी चीज़ नहीं समझते मगर तब भी कहता हू कि जिसका जी चाहे यहां से बिला शक चला जाय और अपने बाल बच्चों से मिले। मगर

मेरा तो यही क़सद है कि यातो इसी मैदान जंग में मरूंगा या जिस ख्वाहिश से गज़नी से चला हूं उसे पूरा करके छोड़ूंगा। मै यह भी जानता हूं कि बिला मतलब कोई सींक नहीं हिलाता, क्या देव क्या ज़िन्नत क्या इन्सान सब मतलब के यार हैं। इन्सान दौलत और आराम चाहता है तो शहीद देव व जिन्न परिसतिश के खाहिशगार है, मगर सच्चा नौकर वही है जो वक्त मुशकिल मालिक के काम आवे, सच्चा मित्र वही है जो मित्र के चित्त की गति जानता हुआ उसे सदैव प्रसन्न करने का यत्न करे और कोई वस्तु उससे छिपावे भी न और जो सच्चे दिल से मुहब्बत करता है वही दोस्त है।" सुलतान के ऐसी बातें सुन कर सब मुसलमान सरदार शाह के सद विचार की प्रशंसा करते हुए जा खोल कर लड़ने लगे। इधर कन्ह ने खुरासान खां के भाई का साम्हना किया और उसे एकही वार में मार गिराया। इससे मुसलमान सेना और भी घबड़ा उठी। उधर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को उत्तेजित करते हुए म्यान से खड्ग खींच लिया और शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया। इनके साथही चामुंडराय, बलभद्र, पीप पड़िहार और निद्दुररराय ये चार सामन्त भी धरो पकड़ो की ध्वनि मचाते हुए शाह के चारों ओर झुक पड़े। अपने स्वामी की रक्षा करने के लिये शाह के पांच सरदारों ने जो कि खवासखाने की जगह पर तैनात थे, बड़ा पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में वे मारे गए और शहाबुद्दीन भी पकड़ लिया गया। तब तो मुसलमानी सेना निपट निराश होकर भाग उठी और सब शाही रखत बखत जहां का तहां पड़ा रह गया जो कि विजयी राजपूत सेना ने राई रत्ती करके लूट लिया। शहाबुद्दीन के बंदी होते ही समस्त सेना में जय जय कार शब्द होने लगा। जहां तहां बीर राजपूत सैनिक आनन्द ध्वनि करते हुए स्वामी के उत्साह को द्विगुण उत्तेजित करते थे। इस युद्ध में पृथ्वीराज ने चतुर्दशी रविवार को विजय प्राप्त की।

इस प्रकार गज़नी के बादशाह शहाबुद्दीन पर विजय पाने पश्चात् आनन्दसूचक अतरंग सभा में गुरूराम ने पृथ्वीराज से कहा कि महाराज अब आप दिल्ली को चलिए और वहां पर इस विजय का उत्सव मना कर तब पुनः शुभ मुहूर्त साधकर धन निकालने को आइए तो अच्छा होगा। गुरूराम के ऐसे बचन सुनकर राजा ने काका कन्ह और दाहिम्म राय कैमास की तरफ देखा तो उन्होंने भी गुरूराम के बचनों का अनुमोदन किया। तब राजा पृथ्वीराज रावल समररसिंह जी कैमास तथा सब सेना को षट्टू बन में छोड़ और आप जामदेव, पज्जून राय, बलभद्र, जैतप्रमार, काका कन्हराय, अरिसिंह आदि छ सामन्तों और थोड़ी सी सेना को लेकर फाल्गुण सुदि १३ को दिल्ली की तरफ पधारे और दस दिन में पंथ पूरा करके दिल्ली जा पहुँचे। शत्रु पर विजय प्राप्त करके बीर पृथ्वीराज का शुभागमन सुनकर राजकुमार सब सेना और शहरवालों की भीड़ भाड़ सहित दिल्ली के बाहर आध कोस पर्य्यन्त पिता की अगवानी करने के लिये पैदल पधारे। राजा ने कुमार से सादर मिलाप करके उन्हे अश्व पर सवार होने की आज्ञा दी। और तब आप सब सेना सहित आगे बढ़े। चैत बदि ७ को पृथ्वीराज दिल्ली में पहुँचे। वहां उन्होंने सानन्द सबसे मिलाप करके सुख से भोजन किया और नाना प्रकार के भोग बिलास से सुखी होकर, शहाबुद्दीन को अपने साम्हने बुलवा कर सेवकों को आज्ञा दी कि उसे सुख से सम्मान सहित रक्खो।

शहाबुद्दीन के पकड़े जाने का समाचार जब गज़नी में पहुँचा तो वहां के राज्य उपमंत्री तत्तार खां ने एक चतुर खत्री को सब प्रकार से समझा बुझा कर और एक पत्र देकर दिल्ली की ओर भेजा। यह लोरक राय नामक खत्री पांच सौ सवारों सहित बारह बारह कोस का पड़ाव करता हुआ दिल्ली के नगर द्वार पर आ पहुँचा। वहां उसने सब दिन विश्राम कर के दो घड़ी दिन रहने पर दिल्ली नगर में प्रवेश किया और राजद्वार पर जाकर दरबार में इतला करवाई कि गजनी से तत्तार खां का भेजा

हुआ राजदूत श्रीमान के दर्शनों की अभिलाषा से द्वार पर उपस्थित है। यह समाचार पाकर राजा ने उसे खम्मुख बुलवाया। तब लोरक राय ने दरबार में पहुँच कर राजा को सादर प्रणाम किया और राजा की आज्ञा पाकर वह एक ओर अदब से बैठ गया। कुछ देर में राजा का रुख देखकर वह चतुर दूत फिर उठा और राजा को तीन बार झुक कर प्रणाम करके उसने तत्तार खां का दिया हुआ पत्र राजा के पेशकार मधुशाह के साम्हने सादर पेश किया। राजा की आज्ञा पाकर मधुशाह ने उस पत्र में लिखी हुई शहाबुद्दीन को मुक्त किए जाने के विषय में तत्तार खां की अर्जी पढ सुनाई, जिसे सुन कर राजा ने हँस दिया। बुद्धिमान मधुशाह राजा की दृष्टि से उनके आंतरिक अभिप्राय को ताड़ गया; और इसलिये उसने लोरक राय को युक्तिपूर्व्वक दरबार से विदा कर दिया।

दूसरे दिन लोरक राय पुनः दरबार में उपस्थित हुआ और उसने पृथ्वीराज की बीरता धीरता और सहनशीलता की बहुत कुछ प्रशंसा कर के पुनः बादशाह के मुक्त होने की बात चलाई। पृथ्वीराज ने उसकी बातों का कुछ भी उत्तर न देकर उससे प्रश्न किया कि शहाबुद्दीन का गोरी नाम क्यों पड़ा।

राजा के ऐसे बचन सुन कर लोरकराय बोला कि महाराज! गजनी में जलालुद्दीन नामक एक क्रूर बादशाह राज्य करता था। वह ऐसा विषयासक्त था कि उसके महल में ५१० हरमें (रानियां) थीं; किन्तु साथही इसके वह निष्ठुर और निस्स्नेह भी बड़ा था। वह जिस हरम के गर्भवती होने की खबर पाता उसका सर अपने हाथ से काट लेता था और वह केवल इसी भय से कि गर्भ से जन्मा हुआ पुत्र कहीं मुझे मार कर आप राज्य का अधिकारी न बन बैठे; किन्तु न जाने क्या सोच कर निजाम शाह नाम के एक फकीर की सेवा वह बहुत किया करता था। उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर फकीर नें आशीर्वाद दिया कि तुझ को एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा। फकीर का आशीर्वाद सुन कर शाह के शिर पर मानो वज्र पात हुआ। वह घबड़ाता हुआ घर आया तो सुनता क्या है कि एक बेगम गर्भवती है; परन्तु जब तक शाह उसके मारने का विचार करे कि वह भयभीत बेगम महल से निकल कर भाग गई। इसके पांच वर्ष पश्चात् शाह जलालुद्दीन भी जहन्नुम रसीद हुआ। तब राज्य कर्म्मचारी गण बड़े सोच विचार में पड़े कि अब इस अराजक प्रजा का पालन किस भांति होना संभव है। तबतक एक शेख ने आकर कहा कि एक अद्वितीय तेजस्वी बालक नगर के बाह्यप्रान्त में गोर अर्थात् कब्रिस्तान में रहता है, तुम उसे ही अपना बादशाह बनाओ। चलो, मैं तुम्हें उस बालक को दिखादूं। जब सब लोग उसके साथ हो लिये तो वहां जाकर देखते क्या हैं कि एक ५ वर्ष का परम प्रतापी बालक बैठा हुआ बाल क्रीड़ा कर रहा है। सब लोग उसका तेजस्वी स्वरूप और होनहार पुरुषों की आकृति देख कर उसे सादर राज्य महल में लाए और नजूमियों को उसके जन्म फल कहने की आज्ञा दी तो उन लोगों ने कहा कि यह बड़ा प्रतापी बादशाह होगा। यह भारतवर्ष में भी मुसलमानी शासन की नींव डालेगा और जिससे यह बार बार बंदी किया जायगा, उसे ही यह नाश करने वाला होगा।

इस प्रकार जब लोरक राय शहाबुद्दीन की पूर्व कथा वर्णन कर चुका; तब पृथ्वीराज बोले कि शाह के पास शृंगारहार नामक एक सिंहलद्वीपी परम सुन्दर प्रशस्तकाय हाथी है। वह और उसके साथ ३० हजार घोड़े हमको दंड में दिए जांय तो हम तुम्हारे बादशाह को छोड़ देवें। इस पर लोरक राय ने उत्तर दिया कि श्रीमान् की जैसी मर्जी होगी वही किया जायगा परन्तु हमारी प्रार्थना यही है कि शाह छोड़ दिया जाय। इस प्रकार प्रतिज्ञा करके लोरक राय ने गज़नी को एक पत्र लिख कर वहां से उक्त हाथी और घोड़े मँगा कर पृथ्वीराज को समर्पण किए; और तब शाह को छुड़ा लिया। शहाबुद्दीन कैद से छुटकर गज़नी जा पहुँचा और वहां उसके सूर

सामन्त और साथी लोग नाना भांति से आनन्द मनाने और अपने परवरदिगार को धन्यवाद देने लगे।

इधर पृथ्वीराज उस दीर्घकाय शृंगारहार को निरंतर अपनी आँख के साम्हने रखता था; वह हाथी सात हाथ ऊंचा नौ हाथ लंबा और दस हाथ मोटा था। जिस समय पृथ्वीराज गिरिपुत्र ऐसे गयंद पर सोने चांदी का साज सज कर सवार होता था उस समय ऐसा सुशोभित होता था मानों, पृथ्वी को तारण-तरण करने के लिये इन्द्र के अंश का आविर्भाव हुआ हो। एक दिन पृथ्वीराज उस हाथी पर सवार होकर शिकार करने के लिये पधारे तब तक नरनाह कन्ह भी साथ में हो लिए, दोनों नरसिंह बीर उस सघन बन में बिचरते फिर रहे थे कि बनरखे ने आकर खबर दी कि महाराज पास ही में एक बड़ा भारी सुअर है। तब राजा ने उसको रोकने की आज्ञा दी और वह आप स्वयं उसकी ओर बढ़ा; चारों ओर से घिर जाने पर उस सुअर ने हुंकार शब्द करते हुए जो बढ़ना चाहा कि राजा ने उसे बाण से मार कर धराशायी किया। तब तक एक शेर का समाचार मिला जिसे सुन कर राजा ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा कि मैं तो अब इसका शिकार किए बिना न रहूंगा और तत्क्षण ही वह पारधी के कहे हुए संकेत स्थल की ओर मुड़ पड़ा। थोड़ी ही दूर चलने पर देखा गया कि नदी के किनारे एक बिकराल सिंह एक वृषभ के मृत शरीर को भक्षण कर रहा है। ऐसा देख कर राजा ने उसके हांके जाने की आज्ञा दी; इधर से महावत ने भी शृंगारहार को उसी तरफ झुकाया। यह सब कोलाहल सुन कर वह सिंह बड़े ही वेग से राजा की तरफ झपटा और राजा ने भी तीर चलाया पर चूक गया। तब खवास खाने में बैठे हुए कूरंभ राय ने खड्ग से सिंह को दो टूक कर के गिरा दिया। इस वीरता से सब सेना तथा राजा ने स्वयं कूरंभ राय की बड़ी प्रशंसा की। इस प्रकार शिकार करके राजा जब दिल्ली लौट आए तब कविचंद ने शेर के शिकार सम्बन्धी उक्त समाचार को सुनकर राजा पर पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद देते हुए अपने हार्द्रिय आनन्द की सूचना और बधाई दी।

दूसरे दिवस राजा ने प्रोहित गुरुराम से धन निकालने के लिये षटूदू बन को चलने के लिये शुभ मुहूर्त्त पूछा। अतएव गुरुराम ने वैशाख सुदि ३ को प्रस्थान निश्चय किया। तदनुसार ही महाराज ने यात्रा की। रास्ते में नाना प्रकार के मांगलीक वस्तुओं का दर्शन करते हुए जब पृथ्वीराज षट्बन में पहुंचे तब रावल जी ने आगे बढ़ कर सादर मिलाप किया। इधर पृथ्वीराज ने भी योगिराज रावल को शाह छोड़े जाने और शिकार इत्यादि का समाचार सुना कर प्रसन्न किया।

इस प्रकार उस दिन पंथ का परिश्रम निवारण करने पश्चात् राज्यमंत्री कैमास से राजा ने धन निकालने के विषय में पूछा। तब कैमास ने वहां का भेद वर्णन किया और राजा, रावल जी तथा मुख्य मुख्य सामन्त और कुछ सेना को लेकर उपरोक्त पाषाण लिपि के पास पहुंचे। कैमास ने उस बीजक को पढ़ा तो उसमें ये वाक्य लिखे थे—

दोहा॥

ऊरध अंगुल सठ त्रिसठ, तीर कहत चवसट्ठि।
तहां अच्छर त्रिम्यो सु इम, सर में द्रव्य अनिट्ठ॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग, तिय अंगुल सत अंक॥
अंगुल अंगुल अंक में, एकादसो प्रसंक॥२॥

कैमास ने बीजक के तात्पर्य को भली भांति समझ कर और तदनुसार ही अपने हाथ से स्थान को माप कर वहां पर खोदने की आज्ञा दी। रावल जी ने वहां पर अनिष्टों के नष्ट होने के अभिप्राय से प्रथम पूजनार्चन किया और तब खुदवाना आरंभ किया। कुछ ही गहरा खुदने के अनंतर एक पाषाण पूतरी पाई गई जिसके माथे पर कुछ अंक खुदे हुए थे। निदान उसे भी कैमास ने पढ़ा तो उसमें लिखा था कि "सब सामंत लोग मुझे देख कर न

हंसे तो पाषाण को देखें।" निदान शुभ मुहूर्त का वेध होते ही कमान की मूठ के बीच की ताली निकालने के लिये ज्योंही उसे तोड़ा गया कि एक बड़ा भारी सर्प फनफना कर निकला जिसको देख कर और तो सब लोग भागे परन्तु चन्द ने मंत्र द्वारा कील कर उस सर्प को पकड़ लिया और तब सब लोग धन देखने लगे।

चंद की बात मान कर (संवत ११३८) महाराज पृथ्वीराज स्वयं धन निकालने के लिये वहां आए और आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकाला जाय; राजा की इस आज्ञा के देते ही वह भूमि कांपने लगी और एक हुंकार शब्द भी हुआ। शस्त्र की नोक से एक पत्थर हटाया गया जो कि तीस अंगुल मोटा था जिसमें से बारह अंगुल मोटे हंडे का मुंह दबा था। इस प्रकार खजाने का मुंह खुल गया। जब बारह हाथ और खोदा गया तो वहां से एक महा भयानक देव निकला और नाना भांति की राक्षसी माया करके युद्ध करने लगा। जब उसने अधिक उपद्रव किया तब चंद ने देवी को स्तुति और अर्चना से प्रसन्न करके आवाहन किया और उस राक्षस के बध करने की प्रार्थना की। जब देवी उस दैत्य का बध कर चुकी तब चंद ने विनीत भाव से पुनः प्रार्थना की कि हे माता हम लोग इस धन की पूर्व्व कथा जानने के बड़े अभिलाषी है। सो कृपा कर कहिए तो बड़ा अनुग्रह हो।

चंद के ऐसे बचन सुन कर देवी ने कहा कि हे पुत्र, सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। हे कविचंद गत समय में रघुबंश में कोई आनन्द नामक राजा बड़ा वीर और पराक्रमी था परंतु साथ ही इसके वह अधर्मी अन्यायरत और प्रजापीड़क भी था। जहां कहीं ऋषि ब्राह्मणों के यज्ञादि की चरचा सुनता कि उसे बिध्वंस कर देता। इसलिये ऋषियों ने उसे शाप दे दिया जिससे उसका शरीर उसी समय भस्म हो गया और तब से वह दैत्य रूप धारण कर इस स्थान पर निवास करने लगा। इसके बहुत दिन पश्चात उसी रघुकुल को भगवान रामचन्द्र ने जन्मधारण कर पवित्र किया। इस प्रकार काल तो पुराना हो गया परन्तु यह लक्ष्मी अब तक ज्यों की त्यों बनी हुई है।

देवी के मुख से ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज ने प्रार्थना की कि अब कृपा कर ऐसा बर दीजिए कि धन निकालने में अब किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न न हो। इस पर देवी एवमस्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गई। तब देव ने चन्द से कहा कि मेरे पिता रघुवंशी धर्म्माधिराज थे। उनका अन्यायी पुत्र आनन्द चन्द मैं ही हूं। शाप से मर जाने बाद मेरा नाम वीर पड़ा। यह सब धन मेरा ही संग्रह किया हुआ है। इसी कारण मेरी यह गति हुई। निदान इसी प्रकार अपने पिता तथा अपनी बीरता की प्रशसा करते हुए उसने अपने साम्हने ही धन निकाले जाने को कहा; तब चन्द ने पूछा कि हे वीर अब तुम्हारी प्रसन्नता के लिये हमारे महाराज क्या कार्य्य करें। यह सुन कर वीर बोला कि मेरे लिये ब्राह्मणों से जप करवाओ और महिष का बलि दो- इस प्रकार कहके वह वीर अन्तर्ध्यान हो गया।

तदुपरान्त राजा ने विद्वान पण्डितों को बुलवा कर पूजन करने की आज्ञा दी और आप, रावल जी, चंद, कैमास तथा अन्य छ प्रधान सामन्तो सहित वहां ही बैठे। उस स्थान के खोदे जाने पर एक बड़ा भारी पत्थर का स्वच्छ दालान निकला उसमें एक स्वर्ण के मणिजटित हिंडोले पर एक सोने की पूतरी बीणा बजाती और नाचती हुई निकली; जिसे देख कर सब के सब आश्चर्य्य में पड़ गए। तब चंद ने कहा कि यह मायारूपी पूतरी है और ध्यान द्वारा वीर से उस का वृत्तान्त जानकर कहा कि यह पुतरी ऋद्धि रानी का अवतार है। इस से डरिए मत, इस हिंडोले को पूजन में रख देना उचित होगा। इस प्रकार वार्तालाप हो ही रहा था कि उस पूतरी की एक कटाक्षमय दृष्टि से गुरु राम और चन्द मूर्छित होकर गिर पड़े; परन्तु कुछ

देर में फिर से सम्हल कर उठ बैठे। तब गुरुराम ने पृथ्वीराज से पूछा कि यह जो धन अब तक प्राप्त हुआ है सो तो श्रीमान नजर ही कर चुके; आगे अब क्या किया जाय सो आज्ञा दीजिए।

दूसरे दिवस सब धन सम्मुख रक्खा गया। राजा पृथ्वीराज और रावल समर सिंह जी पहिले तो देवी पूजन को गए। वहां दस महिष बलि करके और देवी की प्रसन्नता प्राप्त करके दोनों बीर पुरुष प्रेम पूर्व्वक एक ही सिंहासन पर बैठ कर उक्त धन का निरीक्षण करने लगे। उसी समय पृथ्वीराज ने रावल जी को आधा धन बाँट देने की इच्छा प्रगट की; परन्तु रावल जी का रुख न देख कर चुप हो रहे। और उनके अनुचरों को यथायोग्य द्रव्य प्रदान करके उन्हें प्रसन्न किया। तदुपरात रावल जी ने भी आग्रह पूर्व्वक विदा मांग कर चित्तौर चलने की तय्यारी की; तब पृथ्वीराज ने उन्हें ५ हाथी और १०० घोड़े देकर बिदा किया। चंद कवि और कैमास कुछ दूर पर्य्यन्त पहुँचाने गए। जब कैमास रावल जी को पहुँचा कर लौटे तब राजा की आज्ञाअनुसार वह सब धन हाथियों पर लदवा कर ससैन्य दिल्ली की ओर यात्रा की गई। निदान ज्येष्ठ सुदि १३ रविवार को राजा पृथ्वीराज दिल्ली में दाखिल हुए। इनका आगमन सुन कर राजकुमार ने सब राजसी ठाट बाट सहित नगर के बाहर आकर अगवानी की। उस दिन दिल्ली नगर भी अपनी सजधज और प्रतिभा से इन्द्रपुरी को परास्त करने का अभिमानी था; अटा अटारी गोख और झरोखों में मंगला मुखी स्त्रियां कलकण्ठ से गान करती थीं। राज द्वार पर नौबत झड़ती, बंदीजन विरदावली पढ़ते और ब्राह्मण लोग स्वस्तिवाचन कह रहे थे। राजा ने महलों में जाकर सब रानियों को प्रसन्न किया। दूसरे दिवस राजा ने दरबार में बैठ कर उस संपति का आधा भाग यथायोग्य सब सामन्तों में बांट दिया। शेष को राज्य कोष में जमा किए जाने की आज्ञा दी।



शशिवृता वर्णन।

(पचीसवां समय।)

पृथ्वीराज के खटूलूबन में गड़ा हुआ धन प्राप्त करने की कथा समाप्त करके कवि शशिवृता के व्याह की सविस्तर कथा इस प्रकार से वर्णन करता है।

गरमीली ग्रीष्म ऋतु के अवसान और पावस के आरम्भ में एक समय जब कि पृथ्वीराज, केशर कुंकुमादि अष्टसुगंधमिश्रित घनसार का शरीर में लेप किए हुए लहलहाती हुई ललित लताओं, प्रस्फुटित पुष्पों और हरे भरे तृण समूह से पूरित उद्यान में, सेवक, सामन्त और सखाओं सहित बैठा हुआ स्वछन्दता से प्रकृति का आनन्द ले रहा था उसी समय चन्द्रोदय नामक एक नट ने आकर प्रणाम किया। राजा ने प्रसन्नतापूर्व्वक उसका प्रणाम स्वीकार कर के उसे अपनी नाट्य विद्या सम्बन्धी कलाएं दिखाने की आज्ञा दी। अतएव नट ने मृदंगी, दण्डिका ताली, कलही, श्रुत, धुर्द्धरी आदि प्रबन्धबद्ध गीत और नृत्य इत्यादि दिखला कर राजा को सन्तुष्ट किया।

नट की नाट्य एवं नृत्यादि कलाओं के खेल से प्रसन्न हो राजा पृथ्वीराज ने उसे बैठने की आज्ञा दी और पूछा कि हे चतुर नट, तेरा नाम ग्राम क्या है सो कह। यह सुन कर नट ने उत्तर दिया कि हे महाराज! देवगिरि नामक नगर में सोमवंशी यादव राज्य करता है जो कि एक उत्तम राज्य शासक होने के सिवाय संगीत विद्या और कलाओं में भी अत्यन्त निपुण है। मैं उसी राजा के दर्बार का नट हूं। अपने दर्बार से सीख (छुट्टी) लेकर कुरु क्षेत्र की तीर्थ यात्रा करने जा रहा था, श्रीमान् की गुणग्राहकता के विषय में सुन कर दिल्ली को आया हूं। तब पृथ्वीराज ने पूछा कि हे नट, तुम्हारे राजा की कन्या का विवाह कहां हुआ? नट ने उत्तर दिया कि प्रथम तो उसका सम्बन्ध उज्जैन के राजकुमार से होना निश्चय हुआ था किन्तु यह सगाई तोड़ दी गई है और अब वह व्याह कन्नौज के राजा के भतीजे के साथ होगा। अन्नदाता! वह राजकुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मुझ से उसके सहज सौन्दर्य्य और स्त्रियोचित गुणों का वर्णन कदापि नहीं किया जा सकता।

पृथ्वीराज ने सभा विसर्जन कर नट को एकान्त में बुलाकर पूछा कि शशिवृता के विषय में जो कुछ कहना हो अब कहो। तब नट बोला कि धर्म्मावतार क्षमा, अन्नदाता, मैं क्या कहूं। उस चद्रमुखी, मृगलोचनी, कलकंठी, सुकनासा, गजगामिनी, सर्वाङ्ग सुन्दरी सुकुमार राजकुमारी शशिवृता का ऐसा मनोहर स्वरूप है मानो ब्रह्मा ने भूमि पर दूसरी मैनिका का निर्म्माण किया हो। नट के ऐसे वचन सुन कर पृथ्वीराज के हृदय में शशिवृता के सौन्दर्य्य का चित्र सा खिंच गया। उसने उत्सुक होकर नट से पूछा कि कोई ऐसा उपाय भी है जिससे शशिवृता का व्याह मुझ से हो। इस पर नट ने उत्तर दिया कि इस विषय में श्रीमान् से मैं फिर कभी निवेदन करूंगा परन्तु अपने वश भर आपके लिये संतोष जनक प्रयत्न करने में किसी प्रकार की त्रुटि भी न करूंगा।

पृथ्वीराज ने नट को तो एक हाथी, पांच घोड़े और बहुत सा द्रव्य देकर विदा किया और वह कुरुक्षेत्र को चला गया, परन्तु राजा का चितचकोर शशिवृता के रूपराशि रूपी शशधर की धुन में ऐसा निमग्न हुआ कि उसे अहर्निशि कल्पसम व्यतीत होने लगा। राजा ने अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिये शिव की आराधना की और आशुतोष शिव ने उसे वाञ्छित वरदान भी दिया; परन्तु उससे पृथ्वीराज की आशालता को एक प्रकार का सहारा होने से उसकी निज प्रेयसी से सम्मिलन की लालसा दिन प्रति दूनी बढ़ने लगी। पावस का प्रवेश होते ही पृथ्वीराज की विरह वेदना और भी बढ़ने लगी, ज्यों ज्यों जल की वृष्टि अधिक होती, पपीहा, मोर मेढ़क बोलते, झिंगुर झनकार करते, जुगनू दम दमाते, घन घहराता और बिजली चमचमाती त्यों त्यों राजा की शशिवृता प्रति विरह वेदना बढ़ती ही जाती थी। जब पावस का अवसान और स्वच्छ

शरद् ऋतु की अवाई हुई, तब प्रकृति के निर्मल होने के साथ ही पृथ्वीराज की हृदयस्थ प्रेयसी प्रतिमा भी मानो स्वच्छ भाव से भासित होने लगी। सुन्दर सर सारिताओं का निर्मल जल, उसमें कल्लोल करते हुए पक्षी समूह, वन और उपवन की लहलहाती हुई लौनी लताएं और सुगन्धित सुमन राजा की कामेच्छा को अत्यन्त उद्दीपित करते थे प्रफुल्लित कुमोदिनी और कमल तो पृथ्वीराज के कलेजे पर कटारी का काम करते थे। इसी समय पृथ्वीराज ने अपने मन बहलाने के लिये निज स्वाभाविक व्यवसाय एवं व्यसन अर्थात् शिकार खेलने की इच्छा की। राजा की आज्ञा होते ही समस्त शिकारी साज सामान सज कर दुरुस्त हो लिए। नियत दिन मंगल बार को पृथ्वीराज अपनी मित्र मंडली एवं सामंतों सहित शिकार करने के लिये जंगल को पधारे। पृथ्वीराज के साथ में अगनित बागुर, जाल, शिकारी बैल, चीते, कुत्ते, हिरन, श्रीगोस और कुही, बाज, जुर्रा आदि शिकारी पक्षी भी थे। जंगल में पहुंच कर जहां तहां शिकारी जानवर छोड़े गए और राजा एक उत्तम स्थान में ठहर कर अपने पालित पशुओं एवं बधिकों का जघन्य कार्य्यकौशल निरीक्षण करने लगे। राजा जिस समय इस व्यवसाय में व्यस्त होकर बधिकों को इनाम दे रहे थे तब तक एक बनरखे ने खबर दी कि अमुक स्थान में एक बड़ा भारी वाराह है। उसने यह भी कहा कि उक्त स्थान ऐसे समारोह के साथ जाने योग्य नहीं है। ऐसा सुनते ही पृथ्वीराज बदूक कँधे पर रख कर अकेले ही उस बनरखे (बधिक) के साथ हो लिए। उस समय राजा के साथ में गतिसिंह (सिंह-गति) नामक स्वान भी था जिसपर पृथ्वीराज का अत्यन्त प्रेम और विश्वास था। राजा ने बड़ी कठिनता से उक्त स्थान पर पहुंच कर वाराह को एक ही गोली से मार गिराया। राज ने उस बधिक को बहुत सा इनाम दिया। एक दिन और भी उसी गहन बनमें ठहर कर दूसरे दिन दिल्ली को प्रस्थान किया।

कविचन्द के इतनी कथा कह चुकने पर उसकी स्त्री ने कहा कि हे शुक! राजा पृथ्वीराज और शशिवृता के गंधर्व विवाह का सम्पूर्ण प्रबन्ध वर्णन कीजिए। ऐसा सुन कर कविचन्द ने कहा कि जिस समय दक्षिण दिशा में स्थित देवगिर के राजा शशिवृता के पिता राजा भानराय यादव का भेजा हुआ ब्राह्मण शशिवृता का टीका लेकर कन्नौज में पहुंचा और उसने जयचन्द के दर्बार में अपने आने की खबर कराई तो जयचन्द ने उसे तुरन्त ही अपने पास बुला कर उसके आने का कारण पूछा। तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं देवगिरि के राजा भानराय का प्रोहित हूं। मैं उन्हीं की कन्या का लग्न लेकर आपके भतीजे को चढ़ाने आया हूं।

जयचन्द की सभा में वर्तमान एक गंधर्व उक्त वृत्तान्त के सुनते ही देवगिर की तरफ चल दिया और नगर के बाहर एक रमणीक उपवन में सखी समूह सहित बाल क्रीड़ा करती हुई शशिवृता के पास सुन्दर हँस के स्वरूप में जा पहुंचा। राजकुमारी शशिवृता ने उस हंस को प्रसन्नता पूर्वक पकड़ लिया और उसे अपने कोमल कर कमल पर बिठा कर वह कहने लगी कि हे पक्षिवर, तुम्हारा निवासस्थान कहां है? यह सुन कर हंस ने उत्तर दिया कि मैं वास्तव में गंधर्व हूं और इन्द्र की आज्ञा पाकर इस स्वरूप से तुम्हारे पास आया हूं। तब शशिवृता ने कहा कि हे त्रिकालज्ञ गंधर्व आप मुझे यह बतलाइए कि मैं पूर्वजन्म की कौन हूं और मेरा विवाह किसके साथ होगा। इस पर हंस वेषधारी गंधर्व ने उत्तर दिया कि तुम पूर्वजन्म की चित्ररेखा नाम की अप्सरा हो, कोई विशेष अपराध हो जाने से इन्द्र के शाप वश तुम्हें मानव शरीर धारण करना पड़ा। तुम्हारे पिता ने तुम्हारा ब्याह कन्नौज के राजा के भतीजे वीरचन्द से करना विचारा है परन्तु वह वर तुम्हारे योग्य नहीं है क्यों कि वह एक ही वर्ष बाद युद्ध में मारा जायगा। ऐसा विचार कर इन्द्र ने दयापूर्वक मुझे तुम्हारी सहायता करने के लिये भेजा है। हंस की ऐसी विचित्र वाणी सुन कर शशिवृता ने उससे कहा कि आपने मेरे ऊपर माता पिता के समान वात्सल्य प्रगट

किया है अतएव अब आप जिसे बतलावेंगे मैं अपना व्याह उसीके साथ करूंगी। तब हंस ने कहा कि दिल्लीपति चहुआन ही तुम्हारे योग्य बर है, इस समय वह एक अद्वितीय वीर पुरुष है, उस ने गुजरात के राजा महाबली भीमदेव को परास्त किया और गज़नी के बादशाह सुलतान शहाबुद्दीन को कई बार बांध बांध कर छोड़ा दिया है। इस पर शशिवृता ने उत्तर दिया कि तो आपही वहां जाकर पृथ्वीराज के हृदय में मेरे प्रति अनुराग उत्पन्न कराइए और यदि उन्होंने मुझे न स्वीकार किया तो मैं शरीर त्याग दूंगी।

इस प्रकार शशिवृता के हृदय में पृथ्वीराज के अतुल अनुराग का अंकुर अंकुरित करके वही हंस वेशधारी गन्धर्व पृथ्वीराज के पास चला। सुन्दर स्वच्छ चन्द की कला के समान स्वेत एवं हिमवत धवल देहधारी हंस गहन बन में विहार करता हुआ पृथ्वीराज के समीप आकर फिरने लगा, पृथ्वीराज ने ज्यों ही उसे हाथ बढ़ा कर पकड़ना चाहा कि वह उसी समय ब्राह्मण के स्वरूप में हो गया, उसने सायंकाल के समय राजा को एकान्त में पत्र देकर कहा कि महाराज यादव कुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मैं ही क्या कोई भी उसके अनुपम लावण्य और प्राकृतिक सौन्दर्य्य का यथावत वर्णन नहीं कर सकता। वयःसन्धि अवस्था में होने से उसकी अंग शोभा इस समय ऐसी जगमगा रही है जैसे पूर्णिमा को सूर्य्य के अस्त और चन्द्रमा के प्रकाश होने के समय प्रकृति की शोभा होती है। एवं राजन उस सुकुमार कुमारी की बाल्यावस्था शिशिर ऋतु के अवसान के समान ह्रास और बसंत ऋतु के आरंभ के समान उसके यौवन का प्रकाश होता आता है। उसके बाल्यावस्था सम्बन्धी साधारण अवयवों का प्राचीन पत्रों के समान काट छांट होता हुआ उसके सुकोमल अंग नवीन कोपों की भांति कुसुमित हो रहे हैं। अधिक क्या कहूं वह सुकुमारी स्वयं बसंत ऋतु की फुलवारी की क्यारी के समान मुनि मनहारी, संसार सुखमा की मूर्ति बन रही है। एक तो पृथ्वीराज का मन पहिले ही से शशिवृता की याद में व्यग्र था तिस पर हंस के मुख से ऐसी उपमाएं सुन कर पृथ्वीराज की कामाग्नि एवं उसका भविष्य प्रिया प्रति अनुराग ऐसा बढ़ा कि उसे सब रात्रि शशिवृता की ही मूर्ति स्वप्न में दिखाई दी। प्रातःकाल होते ही राजा ने पुनः उससे मिल कर शशिवृता के विषय में वार्तालाप छेड़ा और इस समय उसने शशिवृता के पिता के कन्नौज दूत भेजने, शशिवृता की उस सम्बन्ध प्रति विरक्तता होने और उसको पृथ्वीराज प्रति प्रीति होने की कथा कह सुनाई। उसने कहा कि हे राजन् वह चित्ररेखा अप्सरा का अवतार शशिवृता आपको बर पाने के लिये व्रत धारण करके सदा शिव का पूजन करती है, अतएव मैं उन्हीं शिव की प्रेरणानुसार आपके पास आया हूं। अब जहां तक आपसे हो सके जल्दी कीजिए और शशिवृता से मिलिए।

हंस के मुख से ऐसे अलौकिक युक्तिमय वचन सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि हे सर्व विद्याओं में विज्ञ, सब रसों में सरस शृंगार रस के शिरोमणि हंसराज, मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि जो कवियों ने स्त्री जाति के चार भेद कहे हैं उन का सूक्ष्म विवरण क्या है और शशिवृता उनमें से किससे सम्बन्ध रखती है। इस पर हंस ने उत्तर दिया की महाराज जिस स्त्री की जिह्वा लाल हो, सिंह के समान जिसके अंग हों, वाणी मधुर हो, रति सम हो, प्रभावाती हो, शील हो, कुलीन हो जिसके स्तन साधारण और उदर सम हों वही स्त्री सर्वोत्तम कही गई है। आगे जो कवियों ने स्त्रियों के चार लक्षण कहे हैं वे ये हैं—पद्मनी उस स्त्री को कहते हैं जिसके केश कुटिल हों, स्तन गोल हों, दंत पंक्ति स्निग्ध हो, जिसके शरीर से कमल की सी गंध आती हो, वीणा स्वर समान जिसकी वाणी हो, निद्रा काम क्रीड़ा और प्रवाद में कम प्रीति करने वाली हो, धैर्य्य, क्षमा, शीलादि सद्गुण जिसके स्वाभाविक हों, सब भांति के वस्त्रों पर जिसकी रुचि रहती हो। हंसिनी उसे कहते है जिसके केश ऊर्द्ध हो,

स्तन वक्र, दांत चमकीले, गंध मधुर, जो कामक्रीड़ा में अधिक प्रीति करने वाली हो, नेत्र जिसके खंजन की भांति चित्रित, विशाल और चंचल हों और हृदय जिसका सदैव अनिस्थिर हो, किन्तु पति की प्रेम मूर्ति का चित्र सदैव चित्त से चिंतन करती हुई, जो उस से मान की अभिलाषिनी हो। चित्रनी उसे कहते हैं जिसके केश बड़े और चन्द्रमा के समान मनहरण मुख हो, जिसके शरीर से मृगमद की गंध आती हो, कोकिला के समान जिसका उच्चारण हो, रति में प्रीतियुक्त हो, जिसके नेत्र शील, लज्जा और आलस्य से भरे हुए हों और वह छवि की खानि सहज क्षमावान, मोहनी मंत्र के समान कटाक्षमय दृष्टिपात से ही हृदय पर आघात करती हो। और संखिनी उसे कहते हैं जिसके केश छोटे और सूक्ष्म हों, स्तनतल क्षीण हो, दांत मोटे हों, उच्चारण मधुर हो, उदर और कटि मोटी हो, जिसके शरीर से दुर्गन्ध आती हो, कम बोले और अधिक सोवे, शील और गम्भीरता हीन सदैव कलहकारिणी हो, आचार विचार में स्वच्छन्द हो स्त्रियोचित सद्गुणों से रहित, व्यभिचार में दत्तचित्त ऐसी असंख अवगुण की मूर्ति शंखिनी स्त्री का स्वामी सदैव सांसारिक सुखों से वंचित रहता है। हे राजन वह यादव कुमारी सुकुमारी शशिवृता इनमें से उपरोक्त प्रथम श्रेणी की स्त्री है। उसके उठते हुए यौवन ऐस सुशोभित होते हैं मानो उसके हृदय कमल पर आसीन मनोज महाराज ने अपनी रक्षा के लिये दो दृढ़ दुर्गा निर्माण किए हों। इस अवस्था में उसके सुरंग नख और एड़ी माणिक और कमोदिनी की रक्त प्रभा का उपहास करते हैं, हंसशिशु की चाल को नीचा दिखाने वाले, उस गजगामिनी कामिनी के जंघा और पिंडुरी काम की खराद एवं अनंग के रंग से रँगे हुए स्वर्ण के खम्भे से सुशोभित होते हैं। उसके बड़े बड़े कोमल और सुडौल नितम्ब मनासिज की शय्या के गुलगुले गैडुए से ज्ञात होते हैं। उसकी क्षीण हीन लङ्क परआरोपित उतंग अग्रभाग तुला का सा कांटा तुल रहा है, सुन्दर सुकोमल उदर पर विराजमान रोमराजि ऐसी प्रतीत होती है मानो मुख चंद का अमृतपान करने की लालसा से सुमेर शिखर पर चींटियां चढ़ रही हों, उसकी ग्रीवा शंख एवं कपोत की ग्रीवा के समान है, उसकी सुढार चारू सुन्दर चिबुक पर रक्खा हुआ नील बिन्दु इकटठा हुआ चन्द का कलङ्क सा मालूम होता है। उसके सुढार दुतिमय दातों की दमक दामिनी की दीप्ति सी प्रदीप्त होती है, उसकी नासिका कीर की नासिका का लाज्जित करती है, उसके स्वाभाविक कटाक्षमय नेत्र देखने वाले के कलेजे को काढ़े लेते है, उसका प्रशस्त ललाट साक्षात् अनंग भवन के सुविचित्रत आंगन के समान शोभित है, उसके सुकोमल काले सटकोर घुंघरारे सिवार सम सूक्ष्म केश रेशम को मात करते है और उनसे गुही हुई अलकें साक्षात सर्पिणी सी विराजती है, हे राजन् उस आनन्द मूर्त्ति रसिक मन हारिणी राजकुमारी की सुन्दरता को मैं क्या कहूं उसे देख कर बड़े काव्यविशारद चतुर कविजनों का चित्त चकित होना सम्भव है।

पृथ्वीराज ने पुनः पूछा कि हे हंसराज अप्सरी का अवतार क्यों कर हुआ सो कहो? यह सुनकर हंस बोला कि एक समय महादेव जी स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर पधारे तब इन्द्र ने आशुतोष शिव को सादर सुभग आसन दे अर्घपादादि पूजा से प्रसन्न किया और उनकी रुचि जानकर इन्द्र ने अप्सराओं को नाना प्रकार के नृत्य गान से उन्हें संतुष्ट करने की आज्ञा दी, तदनुसार रंभा, घृतार्चा, मेनिका मंजुघोषा, उर्वसी, केशी इत्यादि देवाङ्गनाएँ नाना प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित हो उच्च स्वर से उत्तमोत्तम राग रागनियों का अलाप और ताण्डवादि नृत्य कर कर शिव के सम्मुख कामोद्दीपक कटाक्षों सहित हाव भाव बताने में प्रवृत्त हुई। संयोग वश चित्रेरखा के स्वरूप पर मोहित हो महादेवजी क्षणमात्र के लिये काम के वशीभूत से हो गए। इस लिये उन्होंने कुपित हो कर उक्त अप्सरा को शाप दिया कि वह स्वर्ग से पतित होकर मृत्युलोक में मानवी शरीर धारण करे। शिव जी

के शाप से भयभीत हुई उस अप्सरा ने विनीत भाव से स्तुति कर के शिव जी को किसी प्रकार प्रसन्न किया तब उन्होंने कहा अच्छा तू मृत्युलोक में देवता के समान बलवान और प्रतापी पति पावेगी। यह कह कर महादेवजी तो कैलाश को चले गए और अप्सरा स्वर्ग से पतित हो उसी क्षण शशिवृता के नाम से देवगिरि के राजा भान के घर जन्मी, हे महाराज सो उसका यह अवतार आप ही के लिये हुआ है। यद्यपि शशिवृता के माता पिता उसे कान्यकुब्जेश्वर के भतीजे को व्याहना चाहते हैं परंतु वह अपना तन मन आप पर न्योछावर कर चुकी है; अतएव अब आपको भी उचित है कि यथासम्भव शीघ्रही उसकी प्रेमपिपासा को पूरा कीजिए। हंस की ऐसी बातें सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि शशिवृता का मेरे प्रति अनुराग क्यों कर हुआ, हे हंसराज, इसका भी कारण बतलाइए। तब हंस ने उत्तर दिया कि देवगिरि के राजा भान के मंत्री आनन्द चन्द की बहिन का नाम चन्द्रिका था। उसका विवाह हिसार प्रान्तान्तर्गत नगर कोट में एक बड़े धनाढ्य और गुणवान पुरुष से हुआ, दैव योग से चन्द्रिका के पति का सहसा परलोक वास होगया, तब वह पतिविहाना दुःखित चित्त चन्द्रिका स्वसुराल से आकर देवगिरि में ही रहने लगी, वह मंत्रिपुत्री पठन पाठन, गान, वाद्य इत्यादि स्त्रियोचित गुणों में अत्यन्त दक्ष और चतुर थी इस लिये राजा भानु ने उसे शशिवृता को शिक्षा देने के लिये नियत कर दिया। चन्द्रिका शशिवृता को पढ़ाते समय बहुधा आप के अतुल बल पौरुष और प्रताप का वार्तालाप किया करती थी जिसे शशिवृता बड़े चाव से चित्त लगाकर सुना करती थी। इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत होने पर जब शशिवृता का यौवन काल आया तो उसका मन मकरन्द आपही के यश कमल पर मोहित हो गया और वह आपकी प्राप्ति के लिये शिवजी का पूजन करने लगी अतएव आशुतोष शिवजी ने प्रसन्न हो कर आपके साथ विवाहे जाने का वर उसे दिया और मुझे आपके पास प्रेषित किया। पृथ्वीराज ने कहा कि उसके पिता ने जयचन्द के ही घर क्यों व्याह ठहराया! तब हंस ने कहा कि आप इसको क्या पूछते हैं उसे वही घर जँचा तो क्या! परन्तु यह अवश्य है कि यादव के प्रोहित ने कनवज्ज जाकर कुम्भा को टीका चढ़ा दिया और वह कमधुज्ज पचास हज़ार सेना के साथ सज धज से व्याहने आ रहा है। पृथ्वीराज ने कहा कि तब मैं भी दस हज़ार रणकुशल सेना लेकर चलने को तय्यार हूं किन्तु आप कृपा कर विवाह की नियत तिथि और शशिवृता से मिलने के संकेत स्थल की सूचना मुझे दीजिए, तब हंस ने कहा कि विवाह की तिथि माघसुदी १३ है। आपको वहां पहुंच कर शशिवृता से शिवजी के ही शिवालय पर मिलना चाहिए; यह कह कर हंस तो उड़ कर आकाश मार्ग में लोप होगया और यहां पृथ्वीराज शशिवृता से मिलने के लिये जाने की तैयारियां करने लगे।

हंस के चले जाने पर पृथ्वीराज ने दस हज़ार अश्वारोही सेना सजी जाने की आज्ञा दी। राजाज्ञानुसार माघबदी ५ शुक्रवार को प्रातःकाल से ही कन्ह, कैमास, जैतराव प्रमार, पज्जूनराव कछवाहा, चावण्डराव, जैतराव, गोइन्दराव, रामराय रघुवंसी, प्रसंगराय खीची, निढुढुरराय रट्ठौर, लंगरीराय, सलख प्रमार, देवराज बग्गरी, हाहुलीराय, हम्मीर, लोहाना आजानबाहु, नरसिंह, वीरसिंह और लक्खराज बघेला समस्त सूर सामन्त स्वयं सिंधी, कच्छी, पहाड़ी, अरबी, ताजी, आदि उत्तमोतम खेत के कुलीन और लक्खी कुल्ला कुमैत, सिरगा, सुरंग, गुलाबी, हरिया, समद स्याह, हंसी आदि अनेकानेक रंग के घोड़ों पर, भांति भांति के अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित होकर, अपनी अपनी रणकुशल अस्वारोही अनी कनी सेना सहित राजद्वार पर आ उपास्थित हुए। वे वीर बानैत सिपाही सामंतोंके घोड़े अपनी जातीय तेजस्विता के कारण तनिक भी स्थिर न रह कर जहां तहां नट की सी कलाबाजियां कर रहे थे। तब तक स्वयं पृथ्वीराज भी अपने शक्ति नामक घोड़ेपर सवारहोकर उनके बीच मेंआकर डटगया।

जिस समय पृथ्वीराज घोड़े की पीठ पर सवार हो कर चलने को था कि साम्हने ही छिद्रमय काले कलश, मुक्त केश कामिनी के दर्शन हुए, इन अशकुनों को देख कर राजा ने चन्द से इसका फल कहने को कहा तब। चन्द ने उत्तर दिया कि इसके पहिले जो शुभ सूचक शकुन हो चुके हैं उससे कार्य्यसिद्धि की सूचना तो अवश्य ही प्रतीत होती है; परन्तु ये अपशकुन केवल इतनाही बतलाते हैं कि यातो यात्रास्थान पर ही या घर पर लौट कर कुछ विग्रह और रक्तपात होना आवश्यक है। उसने पुनः कहा कि इसमें सन्देह ही क्या है, क्योंकि आपसे और जयचन्द से एक तो पूर्व्व से ही विरोध भाव चला आरहा है अब इस अवसर पर तो मानों आहुति में घी डालना है। इधर जब कि पृथ्वीराज रास्ते ही में थे जयचन्द के भतीजे ने भी एक लाख दस हज़ार सुसज्जित सेना सहित माघबदी ९ को देवगिरि की तरफ कूच किया, और अपनी अवाई का समाचार दूत द्वारा देवगिरि के राजा भान के पास भेजा।

ज्योंही शशिवृता ने यह समाचार सुना कि जयचन्द का भतीजा बड़ी भारी बरात सजकर उसे व्याहने के लिये शीघ्रही देवगिरि को आरहा है और पृथ्वीराज का अब तक पता भी नहीं है वह पृथ्वीराज के विरह वियोग से और भी व्याकुल हो कर और अपने को उपेक्षित वर के साथ व्याहे जाने से बचाने के लिये आत्महत्या करने पर उद्यत हुई। उसकी यह दशा देख कर उसकी सखी सहेली और सहचरी आदि उसके विरह विदग्ध व्याकुल मन को शांत्वना देने के लिये उससे बोलीं कि हे सखी शशिवृता तूं क्यों वृथा रोरो कर प्राण देती है। यदि तेरी सच्ची भावना पृथ्वीराज में है तो तुझे वही वर मिलेगा, रोने और वृथा विलाप करके अपने सुकुमार शरीर को कष्ट देने से क्या लाभ। इस व्यर्थ अलाप विलाप से होनहार नहीं मिटती। बलि ने इन्द्र का वैभव लेने को यज्ञ किया था परन्तु उसे बंधनयुक्त होकर पातालही में वास करना पड़ा। कहां तो रामचन्द्रजी को राजतिलक होने वाला था और कहां उन्हें भाषी के वश होकर बन बास भोग करना पड़ा, सीता जी को रावण हर ले गया, और वे रामचन्द्र स्त्री वियोग के संताप से तप्त हृदय होकर बन में भटकते फिरे; हे सखी इतिहास में इस प्रकार के सहस्रों प्रमाण विद्यमान हैं कि होनहार की गति अमिट है, मनुष्य सब कुछ करना चाहता है परन्तु होता वही है जो होनहार होती है, इसलिये हे सखी तूं शोक को छोड़ कर शान्ति भाव धारण कर। सब ने सब कुछ समझाया बुझाया परन्तु शशिवृता कब किसी की सुनती थी, उसे तो एक मात्र पृथ्वीराज के बिना सब संसार सूना सूझता था। अतएव किसी प्रकार यह समाचार राजा भान के कान तक भी जा पहुंचा।

जब राजा भान ने भी देखा कि शशिवृता किसी प्रकार से नहीं मानती और वह सचमुच प्राण देने को तय्यार है, तब उसने अपने मंत्री हम्मीर सम्मीर को बुला कर सब हाल कह सुनाया और उनका भी मत पूछा। तब हम्मीर सम्मीर ने सलाह दी कि एक तो प्रथमही आपको सब सोच विचार कर काम करना था और जो आपने जयचन्द के घर टीका भेजही दिया, वहां से बारातही आरही है तब अब क्या है। आपको निज धर्म्मानुसार उचित तो यही है कि आप शशिवृता का व्याह कमधुज्ज से ही करें। यद्यपि मंत्रियों की यह सलाह राजा भान को अनुकरणीय थी परन्तु संतान का स्नेह भी तो ऐसी वस्तु है कि जिससे मनुष्य क्षणमात्र के लिये बावरा सा होजाता है। अस्तु जब राजा भान ने देखा कि मंत्रियों का मत मानने से बेटी के प्राणों पर आ बनेगी तब उसने एक गुप्त दूत पृथ्वीराज के पास प्रेरित किया और लिख भेजा कि आप शिवालय पर आइए वहीं पर शशिवृता आपको मिलेगी।

इधर पृथ्वीराज ने सेना का भार तो नरनाह कन्ह के सिर सौंप दिया और आप निद्दुर राय और जइचराय बग्गरी इन दोनों सामंतो सहित देवगिरि के पास जा पहुंचा। रात्रि भर तो उसने नगर के

बाहरी प्रान्त में एक उपबन में विश्राम किया। दूसरेही दिन वह सज बज कर विवाहोत्सव में सुसज्जित देवगिरि नगर की शोभा देखने को निकल पड़ा। उस ने देखा कि समस्त नगर के हाट बाट चौहटे बड़ेही साफ़ और सुथरे बने हुए हैं और स्वच्छ सुगंधित जल से सींचे गए है, जहां तहां ऊँचे ऊँचे मकानों के गौख और झरोखे फूल माला और बन्दनवार से सजे हुए हैं। उनमें बैठ कर झांकती हुई सुन्दर कोम लाङ्गी स्त्रियां साक्षात् देवाङ्गनाएँ सी सुशोभित हो रही हैं।

हंस द्वारा तो इस बात की खबर पहिले ही शशिवृता को लग चुकी थी कि पृथ्वीराज शीघ्रही आन पहुंचता है इस लिये वह सदैव अपने महल की गौख में बैठी पृथ्वीराज के दर्शन की बाट जोहा करती थी। जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता के महल के सम्मुख पहुंचा और उसने आँख उठाकर ऊपर को देखा तो उसकी और शशिवृता की आंखें चार हो गईं. उस निमेष काल में दोनों के आंखो में ऐसी बातें होगईं मानो वे सनातन के परिचित हों। पृथ्वीराज को देखते ही शशिवृता के मृग शिशु के से बड़े, मीन एवं खंजन से चंचल और शूल की हूल से भी अनियारे नेत्र निमेष मात्र में एक ऐसा विलक्षण कटाक्ष कर गए कि जिसका भाव रसिक शिरोमणि मनोन्मत्त मनुष्यों के सिवाय अन्य कोई भी नहीं जान सकता। वे कानों से लग कर फिर लज्जा से पलाच्छादित हो गए। मानो पृथ्वीराज की यशकथा सुनने वाले कानों से उन्होंने पूछा कि क्या यही पृथ्वीराज हैं और उनसे संतोष जनक उत्तर पाकर उन्हों ने पृथ्वीराजा को प्रेम मूर्ति को हृदयस्थ कर लिया।

उपयुक्त समय को उपस्थित हुआ जान कर शशिवृता ने पिता से कहला भेजा कि मैंने बाल्यावस्था से शिव जी का पूजन किया है। अब मैं शान्ति के किये आशुतोष सदाशिव को अन्तिम अर्घ देना चाहती हूं यदि आज्ञा हो तो शिव जी का पूजन कर आऊं। यह सुन उसके माता पिता ने प्रसन्नता पूर्व्वक आज्ञा दी और उसकी सखी सहोलियां उसका उबटन आदि करने लगीं, जिस समय सखियों ने शशिवृता को वस्त्र विहीन कर के उसके गुहे हुए केश पास और वेणी को छोड़ दिया उस समय वह ऐसी शोभित होती थी मानों स्वर्ण स्थम्भ पर से सार्पिणी अवतीर्ण हो रही हों।

उबटन लगाने बाद स्वच्छ जल से नहला धुला कर सुगंध संयुत लेप शशिवृता के शरीर में लेपण किए गए तदन्तर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित करके जब उसे सखियों ने संवार कर तैय्यार किया तब उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग से अनुपम लावण्य रस टपक रहा था; उसकी पुष्प गुंथित वेणी ऐसी मालूम होती थी मानों सर्प राज स्वयं पुष्प माला के बीच में विराज रहे हों और मांग पर सुहाग सूचक सिन्दूर ऐसा मालूम होता था मानों अरुणोदय के अंशुमाली भगवान अंधकार को फाड़ कर निकल रहे हों, उसके कानों के रत्न जटित कर्ण फूल ऐसे भासित होते थे मानों उसके मुख चन्द की प्रभा की सहायता के लिये दोनों तरफ दो सूर्य्य प्रकाशमान हों। उसके स्वच्छ अच्छे ललाट पर बारीक बिंदा ऐसा सोहता था मानों चन्द्रमा की गोद में बुध विराज मान हो। उसकी सुरंग कंचुकी के बीच में चंपक वर्ण युगल कुचकलश ऐसे भासित होते थे मानों वे उसके हृदयस्थ कामराज के किले के दो बुर्ज हों।

इस प्रकार सुसज्जित हो कर शशिवृता शिव पार्वती का पूजन करने के हेतु प्रस्थान करने के लिये रत्नजटित चौडोल * में सवार हुई। शशिवृता की चौडोल के आस पास १३ चौडोलें और थीं जिनमें उसकी सखी सहोलियां थी। वे सब चौडोलें पांच सौ दासियों से घिरी हुई थीं। उनके आस पास चारों ओर राजा भान की सेना के पांच पांच सौ सवारों का घेरा था और तब कमधुज्ज के पचास हजार पैदलों की भीड़ थी। इस तरह से

* चौडोल--लकडी के डांचे की एक पालकी सी बनाई जाती है और उसके ऊपर कपडा चढ़ा जाता है। किसी २ राजपूताने में अब भी यह चाल है कि जिस दिन वहां से बारात चलती है उसी दिन लड़की चौडोल में बैठकर नगर के देवी देवता:ओं का पूजन करने जाती है।

शशिवृता घर से निकल कर पूजने चली। पूजा करके जिस समय वह शिवालय की तरफ़ बढ़ी और उसने शिवालय के शिखर पर स्थित त्रिसूल को देखा तो एक तो शिव प्रति भक्ति और दूसरे पृथ्वीराज के प्रति प्रेम इन दोनों भावों का आविर्भाव शशिवृता के हृदय में इस प्रकार से हुआ कि उसकी विचित्र ही गति होगई। वह शिव जी का नाम स्मरण करती हुई और पृथ्वीराज का कुशल मनाती हुई आगे बढ़ने लगी। जिस समय वह शिवालय पर पहुंच कर चौडोल से उतरी तो मनही मन चौकन्नी होती हुई शिवजी की प्रदक्षिणा करने लगी कि इधर सेना में बड़े उत्कर्ष से मधुर मधुर वाद्य ध्वनि होने लगी, सखी सहचरीं भी मंगल गीत गाने लगीं तब तक कमधुज्ज का भतीजा भी शिवार्चन की इच्छा से कुछ थोड़े से सखाओं सहित उसी तरफ आता देख पड़ा जिसे देख कर किसी किसी मुँहलगी सखी ने कहा कि "वही शशिवृता का पति आरहा है" यह बात शशिवृता को बहुत ही खटकी परन्तु वह कुछ कह न सकी, और अवसर पर पृथ्वीराज को पति पाने की फिर शिवजी से प्रार्थना करने लगी। तब तक पृथ्वीराज भी सात हजार शस्त्रधारी सूर सामंतो के साथ वहां पर आ पहुंचा, पृथ्वीराज के सब सिपाही शरीर में विभूत रमाए, नंगे सिर कावरी टांगे, हाथों में त्रिशूल लिए, शिव शिव उच्चारण करते हुए, ठीक कथाधारी योगियों का सा वेष बनाए थे, परन्तु उनकी गुदड़ी के भीतर छूरी, चक्र, कटार, बिछुआ, बाँक आदि सब मुठमार हथियार थे; वे सब कपटवेषधारी योगी शृंगी नाद करते हुए कमधुज्ज की फौज में निधड़क पैठ पड़े जिन्हें देखतेही शशिवृता ताड़ गई कि ये योगी पृथ्वीराज के ही सामन्त हैं और अपनी इच्छित अभिलाषा की पूर्ति का सुअवसर जान कर वह शिव जी का धन्यवाद सूचक अभिवादन करने लगी।

तब तक पृथ्वीराज भी अपने बानैत घोड़े पर सवार हुआ आ पहुंचा। पृथ्वीराज को देखतेही शशिवृत्ता के लज्जा से नेत्र नीचे होगए, उसके हृदय में अब तक जो सम्मिलन की उत्कंठा थी वह तो शान्त हुई परन्तु अब उसे आन्तरिक कामाग्नि व्याकुल करने लगी। जिस समय पृथ्वीराज ने अपने शत्रुशूलक बलवान भुजदण्ड को बढ़ा कर सुकोमल शशिवृता के कर कंज को पकड़ा उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लहलहाती हुई नवीन बल्लरी को मदोन्मत्त मतवाले हाथी ने पकड़ लिया हो। पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने जन्मदाता माता पिता एवं जीवनाधार जननी जन्मभूमि और सखी सहेली तथा सहचरियों के विछोह की याद आगई। यद्यपि एक समय वह था कि वह पृथ्वीराज के नामही पर प्राण न्यौछावर करती थी, किन्तु इस समय जन्मभूमि के अकृतृम प्रेम ने उसको भी क्षणमात्र के लिये भुला कर कुमारी शशिवृता के हृदय को विह्वल कर दिया जिससे उसके अनियारे नेत्रों से आँसुओं की धारा बह कर निकलने को थी परन्तु ऐसे मंगलमय समय पर अमंगल सूचक चिन्ह को निवारण करना ही उचित जान कर शशिवृता ने अपने कोमल कलेजे को पाहन सा कठिन बना लिया। उसके अधिकतर रोकने पर भी जो दो एक कज्जलमय अश्रुबिन्दु उसके कोमल कपोलों को स्पर्श करते हुए उन्नत उरोजों पर आकर ठहर गए वे ऐसे सुशोभित होते थे मानो सोने की कसौटी पर कस्तूरी कसी गई हो। जिस समय पृथ्वीराज ने देवालय की सीढ़ियों पर से बढ़ कर कामरूपी करि एवं पवन के वेग से झकझोरी हुई ललित ललाम बल्लरी वत् शशिवृता का कर कमल पकड़ कर हृदय से लगाते हुए अपने साथ घोड़े पर उसे बिठा लिया उस समय पृथ्वीराज स्वयं रौद्ररस की मूर्ति बनगया और शशिवृता उक्त कारण वश करुणा रस का अवतार स्वरूप थी, सामन्त एवं सैनिक गण स्वामी सेवा के लिये वीर रस में रंगे हुए थे, और कमधुज्ज के पक्षपाती भयानक रस में पगे थे।

जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता को अपने साथ घोड़े पर बिठा कर चलने लगे उस समय चारों

तरफ धरो पकड़ो शब्द का कोलाहल होने लगा। मूर्तिमान नवरस के मूर्ति स्वरूप महादेव जी के शिवालय के चारों तरफ एक क्षण पहिले शृंगार रस का श्रोत बह रहा था, शशिवृता की सखियां विवाह समय के मंगल गीत गा रही थीं, जहां तहां बंदीजन विरदावली पढ़ रहे थे, कमधुज्ज की फौज के सैनिकों में परस्पर हास्यमय वार्तालाप के फुहारे उड़ रह थे। वे सब इस समय वीररस में परिवर्तन होने लगे। वीरोत्तेजक उच्चस्वर कड़खों ने सुन्दर स्त्रियों के सुकोमल स्वर को परास्त कर दिया, मेघ की गर्जन के समान रणवाद्यों के भीषण और कठोर रव ने अन्यान्य मंगल वाद्यों को रद्द कर दिया। जयचन्द का भतीजा कमधज्ज वीरचन्द जो केशरिया बाना पहिने सिर पर पुष्पों का मौर बांधे विवाह की आनन्द बधाई में मस्त मन शिव जी का दर्शन करने आ रहा था वह भी यह अपूर्व दृश्य देख कर चौकन्ना हो गया और तलवार निकाल कर पृथ्वीराज की तरफ झपटा। उसके अन्यान्य सूर सामन्तों ने झपट कर पृथ्वीराज से शशिवृता को छीनना चाहा परन्तु यह क्यों कर हो सकता था। पृथ्वीराज के साथी योद्धा गण भी अपनी अपनी कपट गूदड़ी फटक कर उसके अन्दर छिपे हुए अपने राजपूती बाने खड़ खड़ाते हुए मार मार करने लगे। इधर स्वामिधर्मधारी कमधुज्ज के योद्धा भी उन पर शस्त्र बरसाने लगे। उन दोनों दलों के अटपटे वीरों की झपट झपट कर विकट मारा मार से लोहे के हथियार परस्पर खटपट होते थे। उनसे इस प्रकार का शब्द प्रगट होता था, मानो जंगल में आग लगने से बांस की गोंठें चटक रही हों। किसी किसी वीर की खोपड़ी फट जाने से जो कुछ कुछ भेजी देख पड़ती थी वह ऐसी मालूम होती थी मानो काला कौवा खीर खा रहा हो। सब सैनिकों एवं स्वयं कमधुज्ज के विवाह समय के रंग विरंगे नाना रंग के वस्त्रों पर ताजे ताजे रक्त के छींटे पड़े हुए विचित्र ही छटा दिखाते थे। पहर दिन चढ़ने से पहर दिन रहते तक बराबर इसी प्रकार की खचाखच मार होती रही। तब तक पृथ्वीराज शशिवृता को लिये मार काट करता हुआ अपनी सेना के पड़ाव में आगया।

तदनन्तर क्रमबद्ध युद्ध होने लगा। कमधुज्ज ने राजा भान की सेना सहित अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार बनाया, मनबंध नामक सोलंषी पुच्छ स्थान पर, गुज्जर राय पग स्थान पर, स्वयं कमधुज्ज धड़ स्थान पर, कमधुज्ज का भाई फन स्थान पर और कूरंभ जिहूवा स्थान पर नियत हुए। इधर पृथ्वीराज की आज्ञानुसार चहुआन सेना मयूर व्यूहाकार रची गई, इधर चुंच स्थान पर कन्ह, पायँ पिंड और पच्छ स्थान पर गहलोत, पुच्छ स्थान पर रामराय रघुबंशी, चरण स्थान पर पुरडीर आदि योद्धा रहे। इस प्रकार क्रमबद्ध होकर जिस समय दोनों सेनाएं परस्पर विद्वेन्द युद्ध करने पर उद्यत हुई उस समय कायरों के कलेजे काँपते थे और सूर बीर योद्धाओं का हृदय उमंग से फूला नहीं समाता था, वीर लोगों का प्रशस्त प्रदीप्त ललाट चन्द्रमा सा चमक रहा था, टेढ़ी मूछें कानों से टकरा रहीं थी और वे अपने अपने चंचल चपल घोड़ों को कुदाते हुए शत्रुओं के सम्मुख होकर अपने अपने पराक्रम दिखाने के लिये उत्सुक थे। तब तक पृथ्वीराज की आज्ञा से नरनाह काका कन्ह की आंखो पर से पट्टी हटाई गई। वह व्यूह मुख पराक्रमी काका कन्ह शत्रु सेना पर इस प्रकार से टूटा जैसे मतवाला हाथी हथनी पर, क्षुधित मृगराज मृग पर, सिंह गजराज पर, और बाज तीतर पर टूटता है। कन्ह चहुआन बड़े बड़े मतवाले हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर उखाड़ने और सवारों सहित घोड़ों को पटक पटक कर मारने लगा। कमधुज्ज के सैनिक लोग भी खूब मार करने लगे। इसी प्रकार झनाझन लोहा झरते झरते सांझ का समय हो गया और राजा भान का पुत्र मारा गया। इसलिये राजा भान ने तो लोहा मान लिया और वह अपनी ढाल गिरा कर गढ़ को चला गया, परन्तु कमधुज्ज ने हार न मानी। उसने अपनी सेना को और उत्साहित करके युद्ध को बराबर जारी रक्खा, यहां तक कि तीन घड़ी रात्रि चली गई दसों दिशाओं में अधिक

अन्धेरा छा गया परस्पर की जान पहिचान में फर्क पड़ने लगा और तब उस दिन के युद्ध का अंत हुआ।

युद्ध समाप्त होने पर रात्रि के समय शिविर में सब सामंतो के बीच में बैठे हुए राम रघुवंश ने कहा कि स्वामिधर्म्म सम्बन्धी जो यह रणक्षेत्र है सो सूरबीर पुरुषों के लिये साक्षात् काशी के समान है तलवार की धार बरना और पीठ असी है, इस रीति से तलवार के बीच का जो लोहा है सूर वीरों के लिये वही काशी के समान उस मुक्ति का दाता है जो कि योगी लोग सहस्रों वर्ष तप करके भी नहीं पा सकते। उसी समय गुरुराम ने पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच दिया।

दूसरे दिन पौ फटते ही जिस समय शीतल मंद सुगंध त्रिविध बयार बह रही थी तारागण मंददुति हो रहे थे कुमोदिनी लज्जा से संकुचित सी हो रही थी, अरुणोदय की लालिमा से दसों दिशाओं में लाली छा रही थी, मधुर मधुर कलरव कर कर मानों सूर्य्य को आशीर्वाद देते हुए चक्रवाकों के जोड़े परस्पर मिल रहे थे, उसी समय सामंत लोग शैय्या को त्याग कर स्नान ध्यान बंदनादि नित्त क्रिया से निश्चिन्त हो कर स्वामिसेवा में शीश देने के लिये अपने अपने अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होने लगे। पृथ्वीराज भी अपने बीरबर सामंतों के बीच में इस प्रकार सुशोभित होने लगा जैसे नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा और समस्त ग्रहों में सूर्य्य सुशोभित होता है। गुरु राम ने राजा को विष्णु पंजर कवच पहनाया और आशीर्वाद देकर शत्रु के सम्मुख युद्ध करने की आज्ञा दी।

उधर यादव राजा भानु और कमधुज्ज की सेनाएं भी परस्पर मिल कर व्यूहबद्ध हुई पृथ्वीराज की तरफ चली आरही थीं। कमधुज्ज की सेना का व्यूह इस प्रकार का था। सब से आगे हराबल में देवगिरि की सेना तिस के पीछे मुसलमान सेना तिस के पीछे हाथियों की पंक्ति तिस पीछे हथनार और कुहुक बान आदि और सब के पीछे अपनी निज अश्वारोही सेना लगाई गई थी। कमधुज्ज के अश्वारोही सैनिक वीरों के घोड़े ऐसे चंचल और चपल थे कि वे अपनी चपल चाल से चंचला को भी मात करते थे। उनकी द्रुत चाल से आकाश में आच्छादित धूलि से चक्रवाक सूर्य्यस्त का समय जानकर अपने दंपति के विछोह की आशंका से व्यस्त हो रहे थे। सवारों के नेजों की अनी इस प्रकार घनी थी कि जिनके बीच से पक्षी भी पर न हिला सकता था और चढ़ते हुए सूर्य्य की किरणों में उनकी चमक से ऐसा मालूम होता था मानों आज दामिनी ने मेघों को त्याग कर भूमि पर ही अपना निवास स्थान स्थिर कर लिया हो। कमधुज्ज की सेना के हाथियों की जंजीरों की झनकार अग्रगनित झिंगुरों के रव को मात करती थी और उन मतवाले हाथियों के कपोल से बहता हुआ मद पावस ऋतु के पहाड़ी झरने की भांति झर रहा था। जिस समय सेनापतियों की आज्ञानुसार दोनों दलों ने रणवाद्यों का भीषण रव करते हुए एक ने दूसरे पर चढ़ाई की उस समय वह रणभूमि साक्षात् पावस ऋतु का क्रीड़ास्थल स्वरूप बन रही थी।

वीर रस के आवेश में आकर जिस समय सूर बीर योधओं ने क्रोधित हो परस्पर एक दूसरे पर खड्ग और खाड़ों के वार किए उस समय सहज भीरु हृदय कायरों के कलेजे कँपे जाते थे। वे मोहवश अपने नश्वर जीवन को नित्त मान कर रण भूमि से भाग जाने की इच्छा करते थे, परन्तु बीर लोग कलेजे के छिन्न भिन्न होजाने पर खिन्न मन न होते थे। वे बराबर सीना साम्हने किए हुए निज स्वामी के जय की अभिलाषा किए हुए मार करते जाते थे। उनके बज्रवत शरीर में जितने अधिक क्षत होते वे उतने ही अधिक क्रोधित और भयानक होते जाते थे। शूर बीर लोग शरीर का रक्त निकल जाने पर भी अपने स्थान पर अचल रूप से डटे हुए मार मार करते थे। उन शूरवीर पुरुषों के अवयव कट कट कर गिरे हुए बिना पानी के मछली के समान

तड़फड़ाते थे। कटार बिछुआ छूरी आदि के घाव लगने से किसी किसी के आंत कलेजे और फेफड़े निकल पड़ते थे, किसी का सिर कट जाने पर धड़ तो बराबर खेत में खड़ा खड्ग से खेलता था और मुंड पृथ्वीपर पड़ा हुआ मार मार शब्द उच्चार करता था। इसी विकट मारामार के समय में वीरचन्द के हाथी पर खवास खाने में बैठा हुआ घूज नामक खवास अपने स्थान पर से कूद कर समरभूमि में सम्मुख युद्ध करने लगा, वह बीर रस में मतवाला मदमत्त गयन्द की भांति झपट झपट कर किसी किसी पर वार करता और उसे तुरन्त काट कर दो कर देता था। घूज खवास जिस समय हाथी के मस्तक पर कुम्भस्थल के बीचों बीच तलवार का वार करता था उस समय उसकी उज्वल एवं चमकदार तलवार काले काले दँतारे हाथी के मस्तक पर इस प्रकार से शोभित होती थी मानो पावस के मेघ को फाड़ कर चन्द्रमा निकलता आता हो। इसी बीरता से युद्ध करते करते घून खवास मारा गया। उसके मरतेही वीरचन्द के चित्त में ऐसा कुछ भय और अनित्यता का सचार हुआ कि वह उसी समय मंत्रिमंडली को एकत्र कर के वर्त्तमान अवस्था पर विचार करने बैठ गया। अतएव उसके मंत्रियों ने कहा कि एक मात्र स्त्री के लिये सहस्रों मनुष्यों का रक्तपात होना ही हमारे बिचार से ठीक नहीं है। यद्यपि रामचन्द्र सुग्रीव और पांचो पांडव अपने अपने समय में आद्वितीय वीर, बलवान, प्रतापी और पराक्रमी पुरुष होगए हैं परन्तु समय विशेष पर वे भी अपनी अपनी विवाहिता स्त्रियों की रक्षा यावत् एवं यथार्थ रूप से न कर सके। अर्जुन गोपिकाओं की रक्षा करने में असमर्थ हो गए। हे राजकुमार अच्छे अच्छे उस्ताद अपने काम में चूक जाते हैं, इससे क्या। अतएव हमारा विचार तो यही है कि जिस प्रकार से बने इस उपद्रव की इति ही कर देना उत्तम है। मंत्रियों का यह विचार वीरचन्द कमधुज्ज के मन में बैठ गया और उसने उसी समय अपनी सेना को फिरने की आज्ञा दी।

बीरचन्द की आज्ञानुसार कमधुज्ज सेना का रुख कुछ ढीला पड़ने से चहुआन सेना का वेग और भी बढ़ उठा। उसने समझा कि कमधुज्ज सेना लोहा मान कर ही मनहार हो रही है परन्तु वास्तव में कमधुज्ज सेना का बल नहीं घटा था इसलिये वे भी सामन्तों के मुकाबिले पर डट गए और कमधुज्ज बीरचन्द ने देख लिया कि इस समय रणोन्मत्त योद्धाओं को युद्धविमुख करना उसके वश का नहीं है तब वह भी अन्तिम वारा न्यारा होने तक के लिये आंखें मीच कर युद्ध करने लगा। यह सब लौट फेर दुपहर के समय हुआ था। दो पहर से सायंकाल तक दोनों ओर से खूब लोहा झड़ता रहा। दोनों सेनाओं में से कोई भी न मुरी, न मनहार हुई। सायंकाल में सूर्य्यास्त के समय मृत घूज खवास के भाई ने कमधुज्ज की तरफ से और राम राय बड़गुज्जर ने पृथ्वीराज की तरफ से धावा किया। इस बाजी में निहुर राय ने बड़ा पराक्रम दिखाया। वीरचन्द यद्यपि निहुर राय का भतीजा था परन्तु उसका उसने कुछ भी विचार न कर के केवल चहुआन पृथ्वीराज के नमक का ही विचार किया और कमधुज्ज के सहस्रों सिपाही मारे गए। घूज खवास का भाई भी निहुर राय के हाथों मारा गया उसके सिवाय कमधुज्ज सेना के नौ मुखिया सेनापति और भी काम आए। कमधुज्ज की सेना के घूज खवास, देव सिद्ध मोरी, किल्ह काम जादव भाटिया पंगराय मोरी, और पांचो भाइयों सहित बलिभद्रराय ये योद्धा मारे गए। इधर पृथ्वीराज की ओर से चन्द पुंडीर, सारंगदेव, बलिभद्र, जैत पँवार सलख, लष्पन आदि वीरों ने अद्वितीय पराक्रम दिखाया। वीरचन्द के पिता के सिर पर जो चांदी का स्वेतछत्र चमचमा रहा था उसे तोड़ कर चन्द पुंडीर ने एक ऐसा बाण मारा कि जिससे वह छत्र कट कर दूर जा गिरा। छत्र के कटतेही तमाम सेना में कोलाहल मच गया और कमधुज्ज स्वयं भयभीत हो उठा। आकाश में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा उजेला था। जब वह भी अस्त होगया और

भूमि पर पड़े हुए मृत एवं घायलों के कारण योद्धाओं को निपट अंधेरे में युद्ध करने में असुविधा होने लगी तब दोनों ओर से फरहरा फिर गया युद्ध बन्द होगया और दोनों ओर के योद्धा गण सूर्य्योदय पर्यन्त किंचित विश्राम लेने के लिये अपने अपने शिविर शैली की तरफ चल दिए।

सूर्य्यास्त होने पर अंधकारमय रात्रि के राज्य काल में जिस समय समस्त संसार के प्राणी मात्र दिन भर के व्यवसाय और परिश्रम से निश्चिंत हो कर निद्रा देवी की गोद में निस्तब्ध रूप से पांव पसार कर सोते हैं उसी समय प्रीतिपास में बँधा हुआ मधुप, दंपति विछोह से दुखी चक्रवाक और युद्धस्थल में शत्रु, दुःख से विहित शूर वीर निमेष मात्र के लिये सुखी नहीं होते। वे सदैव सूर्य्योदय का ही चिंतवन किया करते हैं एवं रात्रि के समय जब की श्रमित सेना सोती है संयोगिनी स्त्रियां अपने अपने स्वामियों के गले का हार होती है उस समय भी कुमोदिनी और वियोगिनी को कल नहीं पड़ती। यह तो पहिलेही कहा जा चुका है कि पृथ्वीराज सदा से अपने सामन्तों के साथ ऐसा व्यवहार रखता था कि वे उसका अपने प्राण से भी अधिक सम्मान करते थे, इधर पृथ्वीराज भी कभी कोई काम उनकी इच्छा के विरुद्ध न करता था। उपरोक्त युद्ध का अवसान होते ही सामन्त लोगों ने एक सभा रची और उसमें उन्होंने परस्पर गुप्त गोष्ठी द्वारा निश्चय करके पृथ्वीराज से कहा कि "आप तो शशिवृता को ले कर दिल्ली को चले जाइए इधर हम लोग शत्रु का साहम्ना करेंगे।" इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि वीर योद्धाओ मुझे तुम्हारे बल का पूरा भरोसा है परन्तु क्या चन्द्रमा के बिना सम्पूर्ण तारागण ही चन्द्रमा का कार्य्य संपादन कर सकते हैं, क्या बिना सूर्य्य के दिवस हो सकता है, यद्यपि हनुमान जी बड़ेही पराक्रमी और रामचन्द्र जी के सच्चे भक्त थे परन्तु क्या वे लङ्का को अकेले विजय कर सके? हे बीर सखाओ, मैं नहीं चाहता कि मैं तो दिल्ली में जा कर सुख सहवास करूं और तुम लोग विदेश में वृथा प्राण दो, मेरे भाइयो यहां तुम्हारे हृदय बाण से बेधे जांय, तुम्हारे कण्ठ पर शत्रु की तलवार कहर करे और मैं अपने हृदय से प्रियतमा को लगाऊं। हा! ऐसा नहि व्यवसाय मुझसे न हो सकेगा, जो कुछ तुम लोगों के लिये होगा वह मुझे भी होगा। यद्यपि राजा का ऐसा रुक्ष उत्तर किसी को अच्छा न लगा परन्तु किसी ने इसका प्रत्युत्तर भी न दिया और यही बिचार और वादविवाद होते होते दिशाओं में हलकी हलकी सफेदी की झलक देख पड़ने लगी। इसे सूर्य्योदय के समय की सूचना जान कर सामन्तों ने जहां तहां अपने अपने हरवे कमर से लगाए, तब तक और सब सेना भी सजकर दुरुस्त हो गई। इस दिन निडुर राय सेनापति नियत किए गऐ। वह कमधुज्ज बीर निडुरराय सूर्य्योदय के पहिले ही सेना सहित रणक्षेत्र पर जा पहुंचा। उधर से बीरचन्द कमधुज्ज की सेना भी रणभूमि में आ डटी और दोनों दलों में फिर से अस्त्र शस्त्र चल उठे, बाण बर्ष उठे, लोह झड़ उठे खड खेल उठे, लोहू बह उठा और रुंड हांक उठे। दोनों सेनाओं के बीर सैनिक लोग यद्यपि दो दिन से बराबर युद्ध के व्यवसाय से श्रमित थे परन्तु उनका दिल दूना होरहा था। डंके पर चोट पड़ते ही उनके दिल फिर से हरे भरे हो गए और वे परस्पर एक दुसरे को ललकार ललकार कर वार करने लगे। इस प्रकार स्वामिसेवा में दत्तचित्त, बीररस मदमाते बीर जो रणभूमि में मारे जाते हैं वे वास्तव में स्वर्ग को ही जाते हैं क्योंकि वे उस समय माया मोह आदिक नीच भावों से विरक्त हो कर उच्च भावों को धारण किए हुए केवल मरना मारना ही देखते हैं। इन दोनों दलों के शूर बीरों ने दिल खोल कर ऐसा युद्ध किया कि आशुतोष शिव की रुंडमाला पूर्ण हुई, योगिनियों का खप्पर भरपूर हुआ, शशिवृता और पृथ्वीराज की विरहाग्नि शान्त होकर उनकी हार्दिक अभिलाषा भी पूर्ण हुई।

जिस समय पृथ्वीराज से उत्तर पाकर सामन्त

लोग इधर लड़ने की तय्यारियां कर रहे थे उसी समय पृथ्वीराज शशिवृता के पास गया। उसने शशिवृता से प्रेममय वार्तालाप करते हुए उसे सब भांति से संतुष्ट किया। तब शशिवृता बोली कि हे स्वामी यद्यपि आपके योद्धा लोग सब भांति बलवान और पराक्रमी हैं परन्तु लज्जावश मैं और तो कुछ नहीं कह सकती केवल मेरी इतनी प्रार्थना है कि यह जीवन सादर आपको समर्पण है और इसकी बनी बिगरी सब आपही के हाथ है। हे नाथ अधिक क्या कहूं? यह सुन कर पृथ्वीराज बोले कि "हे प्रिये मैं तुझे सदैव कुसम्ब के रंग की भांति हृदय में धारण किए रहूंगा। मेरे रहते तुझे किसी प्रकार की चिन्ता को चित्त में स्थान न देना चाहिए। मैं शपथ करके कहता हूं कि मैं तेरी तीनों अवस्थाओं में इसी प्रकार एक सी प्रीति रक्खूंगा जैसी कि तुझसे अभी इस युवा अवस्था में है। पृथ्वीराज के ऐसे संतोषप्रद बचन सुन कर शशिवृता उसके पैरों से लिपट गई और उससे दिल्ली चलने की प्रार्थना करने लगी। इस समय पृथ्वीराज बड़े अड़चन में पड़ गया। जब तक पृथ्वीराज शशिवृता से निश्चित होकर शिबिर के बाहर हुआ तब तक उसे समाचार मिला कि शत्रु सेना बिचल उठी और खेत निहुर के हाथ रहा।

इधर वीर निहुर ने बिकट पराक्रम कर के कमधुज्ज की सेना को भगा दिया और वीरचन्द को घेर लिया। सब सामन्तों ने तो चाहा कि उसे पकड़ कर बंदी बना लें परन्तु पृथ्वीराज ने कहा उसे पकड़ने से क्या मतलब, अपना काम हो चुका अब उसे जाने दो। पृथ्वीराज की ऐसी आज्ञा पाकर निहुर ने वीरचन्द को छोड़ दिया और रण भूमि में चहुआन पृथ्वीराज की विजय का डंका बज उठा

जब भानराय यादव ने देखा कि कमधुज्ज सेना तीन तेरह हो कर जिधर तिधर भाग गई और वीर पृथ्वीराज ने विजय पा ली तब उसने शेष १२ डोलियां भी पृथ्वीराज के साथ विदा कर दीं। इस प्रकार शशिवृता सहित तेरह डोलियों को लिए हुए वीरचन्द कमधुज्ज को युद्ध में परास्त कर के विजय के बाजे बजाता हुआ पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया। पृथ्वीराज दिल्ली नगर में सुन्दरी शशिवृता के साथ विहार करते हुए इन्द्र की भांति स्वच्छदता और स्वतन्त्रता से राज्य करने लगा।

देवगिरि समय।

[छब्बीसवां प्रस्ताव।]

पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर दिल्ली को चला गया; परन्तु चन्द के भाई ने लज्जाग्रस्त हो कर पृथ्वीराज से हार खाने की कसर राजा भान पर निकालनी चाही; इस लिये उसने देवगिरि के किले के चारों ओर अपनी फौज का घेरा डाल दिया और एक दूत द्वारा सम्पूर्ण समाचार जयचन्द के पास लिख भेजा। इधर राजा भान ने भी अपने को असीम आपात्तिग्रस्त जान कर पृथ्वीराज को लिखा कि आपके ही कारण आज मेरा किला घिरा हुआ है और उसने कन्नौज से कुमक भी माँगी है न जाने भविष्य में क्या हो मैं आपको लिख चुका आगे जो आप जानें सो करें।

वीर चन्द के भेजे हुए दूत ने कन्नौज पहुंच कर उक्त पत्र जयचन्द को दिया और नीची गरदन करके खड़ा हो रहा। दूत को इस प्रकार तन क्षीण मन मलिन देख कर जयचन्द ताड़ गाय कि समाचार के लक्षण शुभ नहीं देख पड़ते परन्तु तब भी उसने अपने अनुमान को निश्चय करने की इच्छा से दूत से पूछा कि कुशल तो है? चुप क्यों हो, जो कुछ कहना हो सो कहो। तब दूत ने उत्तर दिया कि पत्र से तो आपको सब हाल मालूम हो ही जाय गा; आगे हाल यह है कि देवगिरि नगर में अपनी बारात पहुंचने के पाहिले ही से पृथ्वीराज पड़ा हुआ था; उसका पड़ाव देवगिरि से आधे कोस की दूरी पर थी। निहुर राय उस सेना का सेनापति था; बस उसी ने नव दुलहिन को हरण कर लिया और निहुरराय ने लड़ाई ठान कर अपनी सेना को नीचा दिखलाया, इस कर्तव्य में राजा भान का भी कुछ मेल मालूम होता है; इस लिये श्रीमान ने देवगिर के दुर्ग पर डेरा डाल कर मुझे आपके चरणों में भेजा है। दूत के ऐसे बचन सुनते ही क्रोध से जयचन्द का मुख लाल हो गया। उसने आवेश में आकर कहा कि पृथ्वीराज को इतना गर्व है कि उसने जान कर भी मेरे कार्य्य में बाधा दी। मैं नहीं चाहता था कि परस्पर व्यर्थ विरोध बढ़े परन्तु कोई क्या करे, होनहार रोकने से नहीं रुकती। अच्छा यदि उसने ऐसी धृष्टता की तो मैं उसे उसका फल भी चखाऊंगा। पृथ्वीराज अपनी जिस सेना के भरोसे इतना घमण्डी बना है, उस सब को मेरा एक मीर बदां नेश्तनाबूद और बरबाद कर सकता है। जयचन्द ने उसी समय अपने राज्य मंत्रियों को बुला कर समस्त समाचार कह सुनाया और आज्ञा दी कि मेरे सब सम्बन्धी और मित्र राजाओं के पास उक्त समाचार की सूचना देते हुए पत्र भेजे जावें कि वे यथा सम्भव शीघ्रही समय पर एकत्रित हो सकें और यहां अपनी राजधानी में सब सेना अपने युद्ध सम्बन्धी सब सामान से सुसज्जित हो रहे मैं आज इस समय पण करके कहता हूं कि पृथ्वीराज चौहान और देवगिरि के राजा को मार करके तब राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही कन्नौज राज की चतुरंगिणी सेना भांति भांति के अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगी। जयचन्द की सवारी का घोड़ा भी सज कर द्वार पर लाया गया। वह लाल रंग का कुलीन, तेजस्वी तुरंग अपनी अधिक चपलता के कारण इधर उधर चटकता हुआ ऐसा भला मालूम देता था मानो कुकर्मी मक्रकेतु को भस्म करने के समय शिव जी के तीसरे नेत्र से निकला हुआ अग्नि का तिनका अश्व के स्वरूप में परिणत हो गया हो। जयचन्द के घोड़े की पीठ पर सवार होते ही जिस समय वह घोड़ा थिर रूप से डट कर खड़ा हो गया उस समय ऐसा भान होता था मानो भूमि ने अश्व का रूप धारण कर के सपक्ष होकर आकाश में जाने की इच्छा की हो और उस पर कुपित हो कर इन्द्र ने बज्राघात करके उसके चापल्य को दमन कर दिया हो। जयचन्द के सवार होने पर अचल स्वरूप से वह घोड़ा खड़ा रहा परन्तु खुरी करता हुआ ऐसा सुशोभित

होता था मानो चतुर वेश्या नृत्य करने के लिये उद्यत हो रही हो। उसकी पूँछ चौरसी डोल रही थी, अयाल खुले और खड़े हुए कान ऐसे मालूम होते थे जैसे वायु से हिलती हुई दीपक की जोति हो उसके बड़े बड़े नेत्र शालिग्राम की सी शिलाएं से शोभित होते थे एवं ऐसे भले लगते थे जैसे शान्त और श्रमित पथिक अंजुली भर भर कर जमुना जल पान कर रहे हों। जयचन्द के घोड़े पर सवार होते ही तीस लाख अन्य पैदल सेना और दस लाख (मुसल्मान) मीर बन्दे तितर बितर अवस्था से एकत्र जुट कर तुरन्त ही इस प्रकार से श्रेणी बद्ध और व्यूहबद्ध हो गए जैसे दैवेच्छा से पूर्व्वकृत कर्म्मों का फल एकत्रित हो जाता है।

जिस समय जयचन्द चलने लगा उसकी सुकुमार स्त्री विरह वेदना से व्याकुल हो गई। जयचन्द की इस नवोढ़ा प्रियतमा का ऐसा सहज सुन्दर सुकोमल स्वभाव था कि रात्रि में पति से पृथक होकर चन्द्रमा के उजियारे में काले काले भ्रमर को देख कर वह भयभीत होती थी। ज्यों ही उसने सुना कि उसके कमल कलेजे का मकरन्द जयचन्द उसे त्याग कर प्रातःकाल ही परदेश को पयान करने के लिये प्रस्तुत है त्योंही उसकी सुखमामय मनहरण मुखकान्ति मन्द सी पड़ गई। केसर कपूरादि मिश्रित घनसार उसके शरीर में घाव से करने लगा; उसे संपूर्ण सुख की सामिग्री शत्रु सी सूझने लगी एवं वह सब आमोद मय व्यवसायों से विरक्त हो कर चित्र लिखी पूतरी सी रह गई। विरह ज्वाला के जोर से प्रज्वलित हो उठते ही जो कभी दो एक बूंद आंसू निकल कर आंख के कोने पर स्थिर रह जाते थे वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो चित्रकार ने चातक का चित्र रच कर उसे मोती चुँगाया हो; यदि वह अश्रु बूंद किसी प्रकार वहां से मुक्त हो कर कोमल कपोल को स्पर्श करता हुआ उसके वक्षस्थल पर आकर विलीन हो जाता तो ऐसा ज्ञात होता था मानो उसके नेत्र रूपी कमंडल से पतित गंगाजल को कुच रूपी सदा शिव जी ने सादर शीश पर धारण कर लिया हो। यदि कोई सखी सहेली उसको इस अवस्था में देख कर उसे सचेत करने की चेष्टा करती तो वह लज्जा शील सुन्दरी स्वास विच्छेद कर मृतप्राय की भांति निश्चेष्ट हो कर रह जाती थी। उस रात्रि का एक एक निमेष उसे काल रात्रि के कल्प सम व्यतीत होता था। उस की सखी सहचरी जो उसे आंचल से पवन करके सचेत किया चाहतीं उसे वह मंद मंद पवन लू की भांति लगती थी, उस सुकुमार सुन्दरी की असीम विरह वेदना का सविस्तर वर्णन कहां तक करें उसकी उस समय ऐसी दशा हो रही थी जैसे चन्द्रमा के ग्रास होने के समय उसकी प्रियतमा कमोदिनी की हो जाती है। यह सब कुछ था परन्तु राजा जयचन्द ने उसकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया और प्रातःकाल होते ही अपनी नौ वोवना धर्म्मपत्नी को उसी विकल अवस्था में छोड़ कर राजा पृथ्वीराज पर बदला चुकाने की इच्छा से देवगिरि पर आक्रमण करने के लिये सब भांति के सैनिक समान से सुसज्जित हो कर चल दिया।

राजा जयचन्द महलों से निकल कर घोड़े पर सवार हुआ, उसकी सैनिक ध्वजा बड़े भारी वृक्ष की भांति आगे आगे चलने लगी तिसके पीछे समस्त शूर वीर योद्धा लोग थे। उसी समय नरवर के राजा का छोटा भाई अमरासिंह गहलौत और पर्व्वत के समान दीर्घकाय पंगुरराय भी उसकी सेना में आ मिले। सब सेना के पीछे हाथियों की भीड़ थी, उन हाथियों पर जरकसी सिरी और भसुंड पर सिन्दूरी ऐसी भली मालूम होती थी मानो कज्जल गिरि पर्व्वत पर सूर्य्य और मंगल दोनों एकत्र यथास्थान विराज रहे हों, अथवा पृथ्वी पुत्र मंगल ने पृथ्वी से और सूर्य्य ने आकाश से अकार परस्पर भेंट भलाई की हो। जयचंद की तय्यारी होते समय यद्यपि नाना भांति के भयंकर अपशकुन हुए किन्तु उसने भले बुरे सबको विधिनिर्मित होनहार के सिर पर छोड़ कर कुछ भी किसी की परवाह न की।

इधर देवगिरि के राजा भानुराय यादव का भेजा हुआ दूत भी पृथ्वीराज के पास आ पंहुचा। राजा पृथ्वीराज जो क्षणेक पहिले नवयोवना प्रियतमा के साथ काम क्रीड़ा में रत साक्षात् काम का स्वरूप हो रहा था यादव राज का समाचार पत्र पढ़ते ही शंकर अर्थात् बीर स्वरूप बन गया। उसी समय उसे यह भी समाचार मिला कि मीर हुसैन के वैर का बदला लेने की लालसा में लिप्त शहाबुद्दीन अपने भाई पल्हन खान को बदरी बन में तपस्या करते हुए अनंगपाल के पास भेज कर उन्हे उभाड़ना चाहता है। यह सब सोच विचार कर पृथ्वीराज ने चित्तौराधिपति रावल समर सिंह जी को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे प्रार्थना की गई कि वे इस गाढ़े समय में अवश्य सहायता दें। जब यह पत्र रावल जी के पास पहुंचा तो उन्हों ने लिखा कि जब उधर शहाबुद्दीन भी प्रपंच रच रहा है तो ऐसे समय में आपको दिल्ली छोड़ना उचित नहीं है। आप कुछ सामन्त हमारे साथ कर दीजिए। हम इधर देवगिरि की तरफ का प्रबन्ध कर लेंगे। रावल समर सिंह जी की यह सलाह पृथ्वीराज ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार कर ली और यहां से चामंडराय और जैतसी को उनकी मदद के लिये भेज दिया। निदान तब रावल समरसिंह जी ने अपने भाई अमरसिंह को कुछ सेना सहित उक्त दोनों सामन्तों के साथ देवगिरि की तरफ भेज दिया।

इधर जयचन्द का भतीजा वीरचन्द बराबर देवगिरि के किले को घेरे हुए अखम रूप से डटा हुआ था; चामंडराय ने पहुंच कर दूर ही अपनी सेना का पड़ाव डाल कर किले में घेरे हुए राजा भान से सैनिक सैनों (इशारों) से वार्तालाप करके यह निश्चय किया कि वीरचन्द की फौज पर रात्रि को धावा किया जाय। अस्तु पावस की घनघोर अँधियारी रात्रि में जब कि अपना ही हाथ नहीं सूझता था झलाझल मेह बरस रहा था बिजली कोंद रही थी और तड़ातड़ तड़कता हुआ बादल मेदनी को कंपायमान कर रहा था, एक तरफ से चामंडराय ने और दूसरी तरफ से राजा भान ने वीरचन्द की सेना पर आक्रमण किया। एक तो वे लोग बिचारे वर्षा के कारण स्वयं असुविधा में पड़े हुए थे परन्तु जब उनपर बाण वर्षा की बौछार भी पड़ने लगी तब वे लोग भी अताने बताने सज कर अपना बचाव करने लगे। लड़ाई होते होते जिस समय पहर रात्रि बाकी रह गई तब रावल जी के भाई अमर सिंह ने स्वयं चन्द के हाथी के सर में संपाफनी सेल का एक ऐसा वार किया कि जिससे वह बिकल होकर लवालोट हो गया।

इधर से जयचन्द बराबर बढ़ता चला जाता था, दूतों द्वारा उसके पास पल पल के समाचार भी पहुंचा करते थे। ज्योंही उसने उपरोक्त भीषण दुर्घटना का समाचार सुना रातों रात चल कर सवेरा होते वह भी देवगिरि के सिवाने रणभूमि पर आ गया। उसने चढ़ी सवारी चलते युद्ध में हिस्सा जा लिया। परन्तु सूर्य्योदय होते होते किसी तरह युद्ध बन्द हो गया। इस युद्ध में गोयन्द राय का भाई हरचन्द, नरसिंह राय का छोटा भाई और कन्ह पुंडीर पृथ्वीराज की तरफ के और वीर बाघेल और जयचन्द का पुत्र आदि सामन्त खेत रहे।

यद्यपि जयचन्द की इच्छा थी कि देवगिरि को चढ़ी सवारी तोड़ लिया जाये, परन्तु जब उसने वहां जाकर देखा कि दस कोस के विस्तार में पक्के कोट और खांई से घिरा हुआ अभेद्य दुर्ग सहज ही हाथ नहीं आ सकता तब उसने भी अपने लश्कर का पड़ाव डाला और राजनैतिक चाल द्वारा वहां के भूमिया तथा द्वाररक्षक रावतों को उत्कोच देकर अपने वशीभूत कर के क़िला फ़तह करने का मत पक्का किया, तदनुसार यथासमय यथासाध्य चेष्टा भी की गई किन्तु वह सब निष्फल हुई। देवगिरि के स्वामिधर्म धारी सेवकों ने यही उत्तर दिया कि आपके दिए हुए किंचित धन के लोभ में आकर हम लोग अपने सनातन स्वामी को धोखा न देंगे, वरन इस तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते रहते स्वामिसेवा पर अटल स्वरूप से डटे रहेंगे।

जयचन्द तो इन प्रपंचो में लगा था, रावल जी के भाई अमरसिंह और चामंडराय समय पा कर बराबर मार काट किया करते थे। इस आपत्ति से उकता कर जयचन्द ने किले पर सुरंग लगाने की आज्ञा दी; परन्तु किले की पहिली ही खाई अत्यन्त गहरी होने के कारण यह सब चेष्टा निष्फल हुई। जयचन्द के साम, दाम दंड ये तीनों राजनैतिक अस्त्र व्यर्थ गए तब उसने भेद नामक चौथे अस्त्र का प्रयोग करके शत्रु पर जय प्राप्त करने की इच्छा की। इस हेतु उसने चर-कार्य्य में चतुर कीर्ति-पाल नामक भाट को राजा भान के पास भेजा; कीर्तिपाल ने राजाभान के पास जाकर कहा कि जयचन्द चाहता है कि आप मुझ से संधि करलेवें क्यों कि वास्तव में हमारा आपका कुछ विरोध नहीं है, और हम और आप दोनों मिल कर इस चहुआन सेना का नाश कर दें। राजा भान से कीर्तिपाल ने ये सब बातें एकान्त में कही थीं किन्तु कीर्तिपाल ने मंत्री को बुला कर सब हाल कह सुनाया। तब मंत्री ने उत्तर दिया कि हे राजन सर्प, सिंह, दुर्जन पुरुष, अग्नि और स्नेहहीन सम्बन्धी तथा शत्रु इनकी बातों का क्या विश्वास? जयचन्द की चालों में न आना ही उचित है। यह कह कर उसने कीर्तिपाल से कहा कि यदि हमसे सम्बन्ध रखना था और यदि वे हमारे हितेच्छु थे तो चढ़ कर ही क्यों आए, बस यदि हमसे मिलना चाहते हैं तो किले को भेद कर के ही मिलें। हे कीर्तिपाल! यही जाकर जयचन्द से कह देना। इस प्रकार रूखा उत्तर पाकर कीर्तिपाल वहां से उठ आया और जयचन्द को उसने सब समाचार कह सुनाया। यह सुनते ही जयचन्द क्रोध से लाल हो उठा, परन्तु करे तो क्या करे, किले पर तो कुछ चारा चलने का नहीं था। इसलिये उसने किले का घेरा छोड़ कर देवगिरि के राज्य में अपने थाने बैठा दिए और राज्य पर एक प्रकार से कब्जा दखल कर लिया, परन्तु राजा भान ने इस पर कुछ हाथ पैर न हिलाया। तब तो जयचन्द के मंत्रियों ने सलाह दी कि अपनी राजधानी से अधिक दूर होने के कारण इस राज्य का अपने शासनाधीन रहने पर भी उचित प्रबन्ध तो किया ही नहीं जा सकता और जो होनहार थी वह तो हो चुकी, दूसरे यह राज्य श्री उस अमूल्य रत्न की तुलना योग्य नहीं है जो कि हाथ से जाता रहा, इसलिये इसे योंही छोड़ कर अब कन्नौज को चलिए। अतएव यह मत जयचन्द ने भी निर्विवाद स्वीकार कर लिया और उसने सब दल बल सहित आश्विन बदि ६ को देवगिरि से कन्नौज की तरफ कूच किया॥

रेवा तट समय।

[सत्ताइसवां समय]

देवगिरि के युद्ध में विजय प्राप्त करके चामंड राय दिल्ली को आया। पृथ्वीराज भी बड़े आदर सम्मान के साथ उससे मिले। परस्पर के कुशल प्रश्न तथा आवश्यक वार्तालाप से निश्चिंत हो कर चामंड-राय ने पृथ्वीराज से कहा कि हे राजन्! जिस हाथी के लिलाट पर शिव जी ने अपने हाथ से तिलक कर-के उसे इन्द्र की सवारी के लिए दिया था अथवा जो कि ऐरावत के नाम से प्रसिद्ध है उसीके जोड़े के लिये पार्वती जी ने स्वयं एक हथनी निर्माण करके उसको साथ कर दी। उसी उक्त दंपति से उत्पन्न हुए हाथियों के झुंड के झुंड रेवा (नर्मदा) के किनारे पर पाए जाते हैं। इसके सिवाय वह रमणीक स्थान नाना प्रकार के सिंह व्याघ्रादि पशुओं से पूरित है। यदि आप वहां पर चल कर शिकार करें तो आपका चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो। उस गहन बन में भद्र मंद मृग और साधारण चारों जाति के हाथियों के झुंड के झुंड पाए जाते हैं। यह सुन कर राजा पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि देव-ताओं का वाहन ऐरावत पृथ्वी पर किस कारण वश आया। तब कविचन्द ने उत्तर दिया कि प्राचीन समय में हिमाचल पर्व्वत के उपकंठ में एक बड़ा भारी बर्गद का पेड़ था जिसकी अत्यन्त ऊंची ऊंची शाखाएं आकाश को स्पर्श करती थीं। उसके सन्नि-कट एक मुनि का आश्रम था। अवकाश के समय आकाश से आया, बन में विहार करता हुआ ऐरा-वत उक्त स्थान पर आ पहुंचा। उसने एक तो उस सुन्दर बड़ की शाखाएं तोड़ डालीं दूसरे मुनि का आश्रम भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया। ऐरावत के इस अत्याचार से कुपित हुए ऋषि ने शाप दिया कि वह आकाशगामिनी गति से हीन हो जाय और उस पर मनुष्य सवार हों। अस्तु इस प्रकार ऋषि के शाप के कारण ऐरावत अपनी आकाशगामिनी शक्ति से वंचित होकर अंग देश के पूर्व्व प्रदेश में स्थित गहन बन में जहां कि नाना प्रकार के कमल और कुमोदिनी समूह से आच्छादित निर्मल जल-मय अच्छे अच्छे सुवृहत् सरोवर शोभायमान हैं, आनन्द से केल क्रीड़ा करता हुए समय व्यतीत करने लगा। उसी बन में पालकाव्य नामक एक ऋषि रहते थे। पालकाव्य और ऐरावत में ऐसी घनी प्रीति हो गई कि वे एक दूसरे को देखे बिना पल भर भी न रहते थे। दैव योग से चंपापुरी का राजा रोमपाद वहां पर शिकार करने आया और वह ऐरावत को पकड़ कर अपनी राजधानी को ले गया। इधर हाथी के विरह में पालकाव्य दिन दिन दुबला होने लगा। अन्त में वह उसी सोच में मर गया और हाथी की योनि में जन्मा।

ब्रह्मा ऋषी की तपस्या का प्रताप बढ़ता देख कर उसकी तपस्या भंग करने के लिये रंभा ने इन्द्र की आज्ञानुसार ऋषि का तप भ्रष्ट करने के लिये यथासाध्य उपाय और चेष्टा की; उससे ऋषि का चित्त तो चंचल न हुआ वरन उसने कुपित होकर रंभा को शाप दिया कि वह हथिनी होजाय। निदान रंभा हथनी का रूप धारण कर बन में विहार करती हुई हाथीभेष धारी पालकाव्य के पास आ पहुंची। उन दोनों में अत्यन्त प्रीति और दाम्पत्य स्नेह बढ़ गया और वे दोनों साथ साथ रह कर रेवा के किनारे विचरने लगे, उन्हींसे उत्पन्न हुए हाथी रेवा के किनारे पाए जाते हैं

राजा पृथ्वीराज आजन्म से मृगया व्यसन लोलुप था ही, उपरोक्त आख्यान सम्बन्धी सुन्दर बन प्रान्त और उसमें स्वछन्दता से विहार करते हुए गज समूह मृग जूह और सिंहादि पशुओं का हाल सुनकर उसकी शिकार करने की इच्छा प्रबल हो उठी। पृथ्वी-राज को अधिक उत्कंठा इस बात की थी कि उक्त स्थान जयचन्द की राजधानी में था। पृथ्वीराज ने उसी समय रेवातट की तरफ शिकार करने की तय्यारी की। जिस समय पृथ्वीराज अपने सब सामंत रावत सुर वीर सिपाही और अगनित शिकारी सामान

सहित रेवातट को जा रहा था, उस समय भान विस्तरी खंडल गढ़ी का राजा, नंदीपुर का राजा और रेवानरिंद आदि भूमिपाल पृथ्वीराज की सेवा में आए।

गुप्त रीति से संतत लाहौर में रहने वाले शहाबुद्दीन के जासूस ने गज़नी को लिख भेजा कि पृथ्वीराज सेना सहित रेवातट पर शिकार खेलने गया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन ने दरबार में पान का बीड़ा रख कर कहा कि जो इस बीड़े को खा कर पृथ्वीराज को पकड़ कर मेरे पास लावे उसे मैं बहुत कुछ इनाम दूंगा। इतना सुनतेही तत्तार खां और मारूफ खां ने वह बीड़ा उठा कर शहाबुद्दीन को प्रणाम किया और कुरान को हाथ में लेकर कौल किया कि जो हम अब की बार पृथ्वीराज को पकड़ कर न लावें और दिल्ली पर अधिकार करके राजपूत सेना में प्रसिद्ध बलवान चामंडराय को मार न गिराएं तो हमारा नाम न हो तो नहीं!!।

इधर पृथ्वीराज ने उस समय लाहौर के प्रतिनिधि शासक चन्दपुंडीर को परवाना भेज कर अपने आने का समाचार जता दिया और आप कभी ६ और कभी ८ कोस का मुकाम करता हुआ पंजाब की सींध में चलने लगा। जिस घड़ी पृथ्वीराज ने पंजाब की भूमि पर पैर रक्खा उसी समय मुसल्मानी सेना ने भी वह सीमा पार की।

जब रेवा के किनारे शिकार करते हुए पृथ्वीराज को खबर लगी कि मुसल्मानी सेना बड़े भारी समारोह के साथ इस ओर आ रही है तब उसने सब सामंतों को एकत्र कर के पूछा कि अब क्या करना चाहिए? यह सुन कर पृथ्वीराज के राज्यनीति विशारद मंत्रियों ने उत्तर दिया कि वृथा अपनी तरफ से उपद्रव मोल लेना उचित नहीं, क्योंकि इस समय अपना बल पहिले का सा नहीं है इससे उचित यही है कि इस प्रबल दल को किसी उपयुक्त नैतिक युक्ति द्वारा टाल दिया जाय। इस बात के सुनतेही पज्जून राय, प्रसंग राय खीची, देवराय बग्गरी आदि सामन्त बोले कि यह सब मंत्र तंत्र व्यर्थ है। "भरत" का वचन है कि यह जीवन अग्नि ज्वाला से झुर से वृक्ष में लगे हुए पत्र के समान है, न जाने कब वायुलगते ही इस का पतन हो जाय अतएव इस सुअवसर पर चूकना क्या? जब कि शत्रु सामने आ गया है तो उससे लोह लेना ही अच्छा है। जैत राव ने कहा कि मेरा विचार तो यों है कि लाहौर के पास ही शहाबुद्दीन से युद्ध छेड़ा जाय और तब तक इधर अपने इष्ट मित्र सगे सम्बन्धियों को परवाने लिख कर इस बात की सूचना दे दी जाय कि वे भी यथा अवसर सहायता के लिये आ जावें। मैं ने एक वार शाह को पकड़ा है अब फिर भी पकड़ ने की प्रतिज्ञा करता हूं। तब तक रघुवंश राम बड़गुज्जर बोला हे वीर सामन्त भाइयो, शाह आगया, अपना दिल छोटा न करो, गज, सिंह, सूरवीर पुरुष इनका यही नियम है कि जहां मिले वहां मार खांय। हम लोग वीर सामंतों का काम समय असमय गीला सूखा देखना नहीं है, हम लोग किसी की मंत्र सलाह क्या जाने; हम तो केवल मरना जानते हैं। शहाबुद्दीन को कई बार बाँध चुके हैं अबकी फिर से बाँधे तो अपने पिता करणसिंह के पुत्र नहीं तो नहीं। यह सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि रे गँवार गूजर, ऐसी बेसमझी बूझी बातों में ही राज्य सत्यानाश होते हैं।

परस्पर वादविवाद बढ़ता देख कर पृथ्वीराज ने कहा कि इन व्यर्थ बातों से क्या लाभ, जो बात आगे आई है उसका विचार करो। यह कह कर वह तो अपने सयनागार में चला गया, इधर सब सामन्त लोग भी अपने अपने डेरे को गए। अभी आधीरात का समय था कि लाहौर से एक दूत आया और वह पृथ्वीराज को सोते से जगा कर उसी वक्त उसके पास जाकर कहने लगा कि श्रीमान शहाबुद्दीन अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख और सब सेना के साथ इस तरफ बढ़ता आरहा है। उसने कहा कि इस प्रकार शाह की अवाई का समाचार सुन कर पचास हजार सेना के साथ चंद

पुंडीर ने नदी का नाका जा बाँधा है और मुझे आपके पास भेजा है। चन्दपुंडीर को रास्ते में डटा हुआ देख कर शहाबुद्दीन ने मारुफ खां, तत्तार खां, खिलचीखां नूरी खां हुजाब खां महम्मद खां आदि सर्दारों से गोष्ठी करके उसने अपनी सेना को दो भागों में बाँटा। महमूद खां, मंगोल लल्लरी, सहबाज खां, जहांगीर खां आदि सेनानायकों और निज पुत्र सहित एक सेना को लेकर सुलतान ने तो चिनाब पार करने की तय्यारी की और आलम खां, मारूफ खां, उजबक खां आदि तीस यवन वीरों को कुछ सेना सहित उस पार अपनी सहायता के वास्ते रक्खा। जिस समय शहाबुद्दीन सेना सहित नदी में आया, इधर से वीर चन्दपुंडीर ने उसको जा रोका। दोनों दलों में बड़ी देर तक लोहा झड़ता रहा अन्त में चन्द-पुंडीर घायल हो गया और शाह सब सेना सहित चिनाब पार हो आयाहै उसने बराबर बढ़ते हुए लाहौरे के पांच कोस उस तरफ़ अपना पड़ाव डाला है।

दूत के मुख से ऐसे बचन सुनते ही क्रोध से पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, दोनों भुजाएं फड़क उठीं, ओठ फड़ाफड़ा उठे। उसने उसी समय आज्ञा दी कि प्रातःकाल ही शहाबुद्दीन के ऊपर चढ़ाई की जाय। उसने कहा कि यदि अब भी फिर शहा-बुद्दीन को कैद करके न छोड़ूं तो मैं सोमेश्वर का पुत्र नहीं। यों कह कर पृथ्वीराज रात्रि के शेष दो प्रहर व्यतीत होकर सूर्य्योदय की इस प्रकार इच्छा करने लगा जैसे रात्रि में दंपति विछोह से दुखी चक्र-वाक, कठिन व्याधि पीड़ित रोगीजन वैद्य के द्वार पर जाने के लिये सूर्य्योदय की इच्छा करती हैं, एवं जिस प्रकार पतिविहीना स्त्री संसार को असार जान कर पति की मृत्यु के साथ अपने भस्मी भूत शरीर को भी भस्म कर देने की इच्छा करते है। नियमानुकूल सबेरा होते ही चन्द और तारा गणों का प्रकाश मंद हो गया, दीप शिखा भी द्युतिहीन हुई। इधर पृथ्वीराज और उसके सामन्त एवं अन्यान्य सैनिक सूर वीर सूर्य्योदय से कमल की भांति प्रफुल्ल चित्त हो उठे। उस दिन मंगल वार और तिथि पंचमी थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाते ही समस्त राजपूत सेना चन्द्रव्यूहाकार होगई। वे सच्चे स्वामिसेवी एवं समरभूमि में शरीर त्याग कर स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने की अभिलाषा से भरे हुए राजपूत बच्चे उत्साह ओज और आतंक सूचक ध्वनि करते हुए शत्रु सेना की तरफ इस तरह बढ़ते जाते थे जैसे मद से भींगे हुए गण्डस्थल वाला मदोन्मत्त मातंग मेघस्पर्शी उत्तंग तरुवर की तरफ उसे तोड़ने के लिये बढ़ता जाता है। उधर यवन सेना में ऊंचे हाथियों पर बैठे हुए योद्धाओं के मणिमय वस्त्र एवं स्वच्छ चमकीले हथियार ऐसे सुशोभित होते थे मानों मंद ज्योति उड़गन समूह सूर्य्य के प्रखर ताप से उत्तापित हो कर पृथ्वी की ओर आ रहे हों। राजपूत सेना जो चन्द्रव्यूहाकार रची गई थी उसमें रावल जी, राजा पृथ्वीराज एक सिरे पर, हुसैन खां और चन्दपुंडीर दूसरे सिरे, पर रामराय रघुवंशी और साखला सूर सारंग देव ऐसे स्थान पर थे जहां से ठीक शहाबुद्दीन का सामना पड़ता था। पावस के प्रबल दल बदल रूपी यवन सेना को देखते ही प्रचंड पवन रूपी मेवाड़पति रावल समर सिंह जी ने उस पर इस वेग से आक्रमण किया कि वे छिन्न भिन्न होने लगे। उनके पीछे जैतराव और तिस पीछे चामंडराय ने धावा किया। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ पूर्ण मध्यान्ह काल होने में आधी घड़ी शेष थी। चन्दपुंडीर ने छक पाकर यवन सेना पर तिरछे रुख से इस प्रकार धावा किया कि उनके पैर उखड़ पड़े। यह देख कर शहाबुद्दीन मनहार होकर घबराने लगा परन्तु तत्तार खां ने उसे धैर्य्य देकर समझाया कि मेरे रहते आप किसी बात की चिन्ता न करें। इस प्रकार शाह को संतोष देकर तत्तार खां अपने सैनिकों को उत्तेजना जनक वाक्यों से सम्बोधन करता हुआ आगे बढ़ा। अपने सरदारों को झुकता हुआ देख कर यवन सेना भी अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती और धरो, पकड़ो, मारो इत्यादि नाना प्रकार के भयानक शब्द करती हुई हिन्दू सेना पर टूट पड़ी। उधर से खिचली अर्थात् खिलजी खां

को अगुवा देख कर इधर से माधव राव सोलंकी हरावल में होकर उसके साम्हने हुआ। दोनों वीर पहिले तो तलवारों से युद्ध करते रहे परन्तु जब दोनों की तलवारें टूट गईं तब वे दोनों मल्ल युद्ध करते हुए परस्पर कटारों के वार करने लगे और यवन सेना के कई एक सिपाहियों ने मिल कर माधव राव को मार डाला। यह देखते ही गोइन्दराय का भाई यवन दल रूपी समुद्र को दीर्घकाय मगर की भांति मथता हुआ खिलजी खां के ऊपर टूटा परन्तु उसे भी कई एक मुसल्मान सिपाहियों ने काट कर टूक टूक कर दिया। गोइन्दराय के भाई का नाम जय सिंह था। इसने अपने शरीर के एक एक अवयव कटते कटते अद्वितीय पराक्रम किया, मरते मरते सहस्रों यवन योद्धाओं को पञ्चतत्व में लीन कर के आप स्वर्ग में अप्सराओं के साथ विहार करने लगा। चन्दपुंडीर के भाई वीर पाल्हन ने खुरासान खां का साम्हना पकड़ा, परन्तु जब तक यह खुरासान खां पर वार करे कि उसने एक ऐसा हाथ मारा कि पल्हन का सिर कट कर अलग जा खड़का और कमन्ध नाचने लगा। इधर जब खिलजी खां के मुकाबले में दो तीन अच्छे अच्छे वीर काम आए तब सारंग देव ने उस पर आक्रमण किया, सारंग देव ने अपने घोड़े को एड़ देकर खिलजी खां के हाथी के मस्तक पर जा टपकारा। इस अद्भुत कौशल से इधर तो हाथी चिक्कार उठा उधर सारंग देव ने खिजली खां को मार कर दो कर दिया। गोइन्दराय सिसोदिया वीर तत्तार खां के सम्मुख जा पहुंचा। उसने जिस समय तत्तार खां के हाथी का दांत पकड़ कर दे पटका और तलवार से एकही वार में मय दतूसरों के भसुंड से सुंड उतार दिए उस समय ऐसा मालूम होता था मानों कंस की मखशाला में कृष्ण ने कुवलिया पील को पछाड़ा हो। कूरंभराय के पुत्र नरसिंह ने खांड़ा खींच कर ख्वाजा की खोपड़ी पर मार उसे एकही वार में खपाना चाहा परन्तु उसने गिरते गिरते नरसिंह के पेट में कटारी भोक दी जिससे उसके पेट की अंत मेदा मज्जा आदि बाहर निकल पड़ी। वह वीर उसकी कुछ भी परवाह न कर के करारे वार करता ही रहा। इसी प्रकार युद्ध होते होते सायंकाल हो गया।

दूसरे दिन सूर्य्योदय होतेही पुनः युद्ध आरंभ हुआ। इस युद्ध में जैतराव का भाई लक्ष्मन प्रमार हरावल का अनीपति था। उसने बड़ा पराक्रम और वीरता दिखाई। लक्ष्मन के मारे जाने पर इन्द्र की अप्सारएं इस बात की आशा ही करती रह गईं कि वे उस नव युवक वीर को आलिङ्गन कर सकें और वह वीर इन्द्र और चन्द्रमंडल दोनों को बेध कर सूर्य्य की प्रभा में लीन हो गया। इसने पहर दिन चढ़ते चढते तक युद्ध किया था। लक्ष्मन कुमार के मारे जाने पर भीमदेव जंघारा हरावल पर झुका, जिस समय वीर रस मदमत्त मतंग की भांति सर्वाङ्ग शरीर में विभूति चढाए त्रिसूल खप्पर आदि कपालिकों की समस्त सामिग्री लिए शृंगी नाद करता एक मात्र कटार लिए हुए यवन सेना पर टूटा उस समय अच्छे अच्छे योद्धाओं के होश छूट गए। उसके पश्चात् सुन्दर केशर मय चन्दन की खौड़ दिए, सिर पर पुष्प माला धारण किए हुए वीरता के छत्तीसों वस्त्र लिए हुए लंगरी राय ने पसर की, जंघाराय भीम कटारे और लंगरी राय तेगे से मुसल्मानी सेना को इस प्रकार से उजाड़ करने लगे जैसे हनुमान जी के अग्नि लगाने पर लंका उजड़ रही थी। इस तरफ आजानबाहु लोहान अजब ही मजा कर रहा था। वह जिस लंबे चौड़े काबुली वीर के सीने में कटार मार करके वारा पार कर देता तो ऐसा मालूम होता था मानो किसी दृढ़ दुर्ग का द्वार खोला गया हो। इस दिन के युद्ध में तेरह हिन्दू सरदार और चौसठ मीर काम आए। दूसरे दिन मीर हुसैन के पुत्र हुसैन खां ने मारूफ खां का मुकाबला किया और उसे घायल करके गिरा दिया, यह देख कर उजबक खां उसके मुकाबले पर आया। दोनो में बड़ी देर तक बड़ी ताक झांक की मार होती रही अन्त में उजबक खां ने एक ऐसा हाथ मारा कि जिससे हुसैन खां

के भी गहरी चोट लगी और उसका घोड़ा कट कर जमीन पर लोट गया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन विकट व्यूह से रचित स्वयं तलवार लिए मरने मारने पर उद्यत था। शाह की बातों से तैश में आकर खुरसान खां ने बड़ा पराक्रम दिखाया परन्तु राम राय रघुवंसी ने उसे खूब ही छकाया, राजपूत वीरों की विकट मार के मारे जब यवन सेना पस्त हिम्मत हो उठी तो कुछ सामंतो ने मिल कर शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया और उसे घेर कर पकड़ना चाहा। यह देख कर शाह ने एक बान से रघुबंस राम गुसाईं और दूसरे से भीम भट्टी को घायल किया तीसरा बाण जब तक चढ़ता था कि पृथ्वीराज ने आकर उसके गले में कमान डाल दी।

पृथ्वीराज इस प्रकार यवन सेना को जीत शहाबुद्दीन को पकड़ कर दिल्ली को चला। दिल्ली में आकर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को एक महीने तीन दिन तक कैद रक्खा, बाद इसके गजनी के अमीर उमराओं के अत्यंत विनीत भाव से विनती करने पर ६ हजार घोड़े, सात हाथी और बहुत सा जवाहिरात आदि नजर लेकर शाह को सकुशल उसके घर गजनी भेज दिया।

अनंगपाल समय।

[अट्ठाइसवां समय]

राजा अनंगपाल तोमर दिल्ली का राज्य पृथ्वीराज को सौंप कर आप बदरिकाश्रम में तप करने चला गया था। परन्तु उसने पुनः दिल्ली में आकर पृथ्वीराज से विग्रह क्यों किया इसी का वर्णन इस समय में किया जाय गा।

तोमर वंश के कुल प्रोहित व्यास जी के विज्ञान मय बचनों ने अनंगपाल के हृदय पर ऐसा अधिकार कर लिया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज को अजमेर से बुला कर दिल्ली का राज दे दिया. और आप संसार को असार जान बदरिकाश्रम में तपस्या करने चला गया। उधर अनंगपाल तपस्या में रत हुआ इधर वीर पृथ्वीराज दिल्ली राज्य का राज्य शासन करने में प्रवृत्त हुआ। किसी को भला लगे या बुरा, किसी को दुःख हो या सुख, परन्तु इस परिवर्तनशील संसार चक्र का चरखा जिसे लोग होनी या विधना का लिखा हुआ कहते हैं एवं जिसके ही अधार पर सब पृथ्वी, वायु आकाश, सूर्य्य, चन्द्र और अन्यान्य चमकदार सितारे स्थिर है, अप्रतिहत रूप से चला करता है। इस सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा पंच महाभूत सहित इस काल में लीन हो जाता है परन्तु सब के शासक काल का ग्रास कभी भी खाली नहीं जाता, इसी काल चक्र के अनुसार जिस समय पृथ्वीराज दिल्ली का स्वामी हुआ तब यह समाचार सारे भारतवर्ष में फैल उठा। साथ ही इसके इस बात की भी चरचा चल उठी कि पृथ्वीराज अधर्म शासन करता है। दिल्ली राज्य के पूर्व्व कर्म्मचारी तथा प्रतिष्ठित प्रजा वर्ग को राजकीय स्वत्वों से रहित करके अपने सगे सम्बन्धियों का अधिकार बढ़ा रहा है। येही बातें उड़ती हुई अनंगपाल के कान तक जा पहुंची। यह सुनते ही अनंगपाल ने पृथ्वीराज के इस कृतघ्न आचार पर कुपित होकर पश्चाताप करते हुए कहा, हा! ऐसे भी लोग संसार में हैं कि उपकार की तरफ़ तनिक भी ध्यान नहीं देते!!

पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य मिलने का समाचार पा कर मालवे के राजा के जो कि सोमेश्वर से परस्पर शत्रुता रखता था, हृदय में डाह की ज्वाला जल उठी। उसने उसी समय अजमेर पर चढ़ाई करके सोमेश्वर को जीत लेने और फिर दिल्ली पर आक्रमण करने की इच्छा से, गज्जर, गोंड़, भदौड़, और सोरपुर आदि के अपने मित्र राजाओं को बुला भेजा। इस प्रकार अपनी और उपरोक्त मित्र राजाओं की चतुरंगिणी सेना सहित हसस्रबाहु के वंश में उत्पन्न यादव वंशी मालवा का राजा अजमेर पर चढ़ चला और सोरपुर के पड़ाव पर कुछ दिन ठहर कर उसी घाट से चंबल पार हुआ।

मालवपति के चढ़ आने का समाचार जब सोमेश्वर ने सुना तो उसे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई। उसने विचार किया कि समस्त सेना और परिकर सहित पृथ्वीराज तो दिल्ली में पड़ा हुआ है यदि इस प्रबल शत्रु से युद्ध करके मैं परास्त हो गया तो व्यर्थ मेरे नाम में टीका लगेगा। मैं इस अजेय उज्वल चहुआन कुल में कालिमा कहलाऊंगा, अस्तु यह सब सोच विचार करते हुए उसने नरसिंह प्रमार, वीरसिंह गौड़, वीर वाहन आदि सामन्त मित्रों और गुरुराम को बुला कर पूछा कि इस समय मुझे क्या कर्तव्य है? उन सब ने परस्पर सम्मति करके उत्तर दिया कि इस समय यदि साम्हने से युद्ध किया जायगा तो अपनी सेना बहुत थोड़ी होने के कारण हार खाने की अधिक आशंका है अतएव हमारा मत यह है कि त्रयोदसी को रात्रि के समय सेन सज कर सोते हुए शत्रु पर धावा करके उसे छल से ही परास्त किया जाय। यह सुन कर सोमेश्वर बोले, हे मित्रो यद्यपि तुम्हारा यह मत मेरे हित के लिये है परन्तु हा! इस अनुचित व्यापार का साधन मुझ से

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डाकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल–(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
गद्यकाव्यमीमांसा–(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
आलोचना–(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
आलोचनादर्श–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	=)	) ॥
उच्चाकर्तव्यशास्त्र– (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	–)
आसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
उरिश्चन्द्र–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
गवद्गीता–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।–)	) ॥
थेलो–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	=)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य–प्रति भाग	१)	–)
हेन्दी लेकचर–(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	–)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥=)	–)
नदलमिश्र की चन्द्रावती	।–)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	–)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	) ॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला–१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	–)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।–)	) ॥
पृथ्वीराजरासो–पहिला भाग (समय १–११)	४)	।)
,, दूसरा भाग (समय १२–२८)	४)	।)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	=)	॥)
बीधर का जंगनामा	॥।)	–)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	–)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	) ॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	–)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	) ॥

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	...	...	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित)	...	...	३॥)	=)॥
दादूदयाल की बानी	...	...	...	...	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	...	...	...	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	...	...	॥।)	-)
प्रबोधचन्द्रिका ...	...	...	...	...	॥।)	-)
वनितावितोद	...	...	...	...	...	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	...	...	...	...	१)	-)
गीतावली	...	...	...	...	...	।)	·)॥
योगदर्शन	...	...	...	...	...	२)	-)
गुरु गीता	...	...	...	...	...	।)	)॥
रामचरितमानस	...	...	...	...	८)	॥।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तकों का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।



Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-11.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

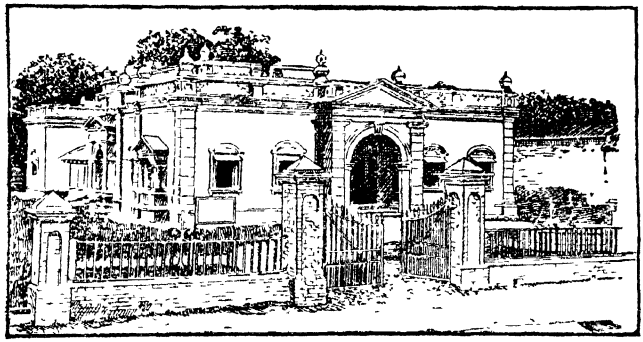
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XLIV to XLVIII.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

पर्व्व ४४ से ४८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूल्य १।) Issued 15th September, 1907. [*Price Re. 1-4.*

सूचीपत्र ।

—.o —

(४४) भीमबध समय	पृष्ठ १२०१ से	१२२७ तक
(४५) संयोगिता जन्म प्रस्ताव	,, १२२९ ,,	१२५८ ,,
(४६) विनयमंगल नाम प्रस्ताव	,, १२५९ ,,	१२७४ ,,
(४७) सुकवर्णन	,, १२७५ ,,	१२९१ ,,
(४८) बालकरराइ प्रस्ताव (अपूर्ण)	,, १२९३ ,,	१३२८ ,,
रासोसार	,, १०५ ,,	१३६ ,,

———o———

फुनि आइ जाम जदव नरिंद । जमनेस भेम वज्जंग ज्यंद ॥
वलिभद्र आइ कूरंभ देव । बहु भंति भूय जिन करत सेव ॥छं०॥११॥
पुंडीर आइ तहां चंद वीर । सम इष्ट इष्ट शृंगार अीर ॥
अतताइ आइ चहुआन चंड । जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

खंगरी राव तहां बैठि आइ । जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ । पर भूम झूम देयंत दाउ ॥ छं० ॥१३॥
लघु दिघ्घ सूर सामंत सब्ब । बैठे जु आइ दरबार तब्ब ॥
फुनि चंद चंड [1]बरदाइ आय । जिन प्रसन देव द्रुग्गा सदाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही [2]सब्बहि सुनाइ । सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरौ गुज्जर नरिंद । धनि धोदि [3]कढ़ौ चालुक्क कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमान बत्त भीमंग कीन । जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनी गर्भ कट्टौं नरौन । प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥१६॥
जहां जहां निसंक बंके मवास । धनि धोदि डारि दीजै अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सब । बोलिय जोतिगराइ ॥
सद्धि मह्हरत चढ़ियै । जिम अग्गै [4]जीताइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्पिय लगन । घरी मह्हरत जोइ ॥
इन समयै जो भज्जियै । सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्कार्यौ जगजोति न्रप । कहौ मह्हरत सद्धि ॥
जीति होइ सद्धौं बयर । सिंचो अग्गि समद्धि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो.-दरबार। (२) मो.-सब्रन।
(३) ए.-चढ़ौं। (४) ए. कृ. को.-जैपाय।

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम। भोम पंचम अधिकारिय ॥
राह बीर अष्टमो। वक्र सत्तम सुद्धारिय ॥
जंगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सेन भर ॥
कहै विप्र प्रथिराज। राज पंचम पंचम गुर ॥
[1]मन काम होइ सो किज्जियै। अरि जित्तह पइर दिवस ॥
पिठ्ठीय पवन रष्यै महन। तौन बसाइय काल बस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिय। चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन। तौ तन भग्गै पग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति। राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन। बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्प आरुहहि। लष्प लष्पन पग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन। पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[2]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय। एक बत्त संमुह मंडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ। तौ हथ्थह पचौ छंडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन नृप। पर धरती सकबंध ॥
असम समै साहस [3]हसह। हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चल्लिय सज्ज्यौ सयन। बोलि अत्य प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै। बट्ठि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर साज। बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजे जिति विजैपाल। सोइ राजन जस [4]छज्जिय ॥
तर उतंग इस [5]मूल। भूप [6]बल्लिय चित चट्ठिय ॥
जय जय जय उच्चार। देव दानव नर पट्ठिय ॥
सामंत गत्ति साधम्म धर। उद्धारन बर बैर पल ॥
चहुआन सज्जि चालुक्क पर। बीर बीर बट्ठे [7]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

---

(१) मो.-मम। (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर। (३) मो.-करान।
(४) ए. कृ. को.-सज्जिय। (५) ए. कृ. को. रूप।
(६) ए.-चल्लिय। (७) ए.-सकल।

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मानं। वितीतं जाम भग्गयो नथ्थं ॥
अरुनोदय चहुआनं। म्रगया आइ पच्छिमं थानं ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सा म्रगया चहुआन। राज सज्जौ दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न। राज एकंग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि बीर। भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहूं दिसिन संभरिय। सेन सज्जी मति भीगं ॥
जित्त तित्त फौजन हलिय। चलिय सूर सामंत बर ॥
संपत्त जाइ चहुआन कों। निढ्ढुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निढ्ढुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निढ्ढुर मन संजुरि सयन। मिलिय आन प्रथिनप्प ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उल्लटिय। कै चिक्कट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर। घन घुंमर बरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जिया। बज्यौ अवंनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज प्रथिराज सेन। कपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय मजाद। दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥

चर चरत चरित जंगल नरेस। बढ़ि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब षबरि कही भीमंग जाइ। सजि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥

सामंत नाथ सामंत जोर। बड्ढे कि जानि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह। अनभंग जंग बड्ढे बलेह ॥छं०॥३३॥
घृत तज्यौ पान चहुआन राइ। चिंतै सु चित्त बल विषम घाइ ॥

(१) मो.-ज्यों। (२) मो.-तेन, बलेन।

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंड्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [1]अभंग। अप अप्प विहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरो पग्ग पल विषम घाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनी दूत। [2]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फरकंत बांह थरकंत कंध। चष [3]चढ़ि कपाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुल्लाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन करन साज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ़ि आए नरेस ॥छं०॥३७॥

दुअ सहस पान तेजी पठान। हथनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्पर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस देड़ सोरठ्ठ ठाट। तिन सहस विषम अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेंच कोली करूर। कमनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग॥
चढ़ि मचि [4]मुकुंद कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठ्ठवार कठ्ठी नरिंद। तिन सचु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिघ्घ और को गने देस। इतने कटक्क आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [5]गुरज षंड। जनु [6]जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मा.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चरि। (४) मो.-कुद।
(५) ए. कृ को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

दूहा ॥ चढ़े देषि चालुक्क दल। बहुरे संभरि दूत ॥
भेष दिगंबर दुति तनह। जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गनिका कविचंद की। ठग विद्या परवीन ॥
दूत धूत अनभूत मन। नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ संमुष पिष्पिय राजं। बुल्ले बयन सुहित्त सुभाजं ॥
चढ़ि चालुक्की गाजं। नर भर समुद उलटि जनु पाजं ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्प सेना सकल। अकल कलीनह जाइ ॥
इक्क सहस मद गज करौ। दिप्पिय जानि बलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ इम भंजो भौमंग। जुद्ध जौ माहिं जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय। दंग जरि जात सघन घन ॥
इम भंजो भौमंग। भौम कुरुनंद पछारिय ॥
यों भंजो भौमंग। सगति महिषा सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भौमंग सम। अगनि तेज वायं हिता ॥
प्रथिराज नाम तद्दिन धरौं। उदर फारि कढ़ौं पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चलिय। करिय पंति भर साज ॥
चावद्दिसि बन बिंटि कै। मद्धि संपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय। घग घंती मन मभभह जग्गिय ॥
जमुन विहड़ बिंटिय बहु बंके। भालि सिंह वाराहन हंके ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन बन में पड़ाव पड़ना।

दूहा ॥ जमुन बंड बंके विषम। हंकत पत्तिय संभ्रु ॥
जो जहां हूतौ सो तहां। हुअ डेरा बन मंभ्रु ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]बढ़ि हुते। उत्तरि संध्या सूर ॥
अन्न पान पहुंच्यौ सकल। कहा नीरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनों पचमं। * मो.-मुरिल्ल।
(२) ए. कृ. को.-चढ़े।

हुकम नकीबत कह फिरै। डेरा डेरा गाहि॥
जो जिय जा ढिग निकरै। राज न षिज्जै ताहि॥ छं० ॥ ५२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुभित सब्ब सेनायं॥
पासं न्रप कयमासं। सेा सुत्ते षग्ग बंधाइं॥ छं० ॥ ५३ ॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं बीरं॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नट्ठियं कालं॥ छं० ॥ ५४ ॥
कवित्त॥ राज पास कैमास। कन्ह कनक्क सब्बूरा॥
सबर सूर पांमार। जैत साहिब अब्बूरा॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति पंडं॥
सारंग सूर कूरंभ बलि। बर पहार तूंअर सुभर॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर बीर पर॥ छं० ॥ ५५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। बत्त आषेट विचारिय॥
सुनौ सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय॥
जंत जीव जग्गै न। तंत कुम सिद्ध न होई॥
पुब्ब श्रवन संभव्यो। निगम [4]जंपे बर लोई॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सद्द सुनि॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुबर सगुन बज्जे सु धुनि॥
छं० ॥ ५६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा।

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्ठियं।
(३) ए. कृ. को.-सकल।
* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीरति पंडं"।
(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुबन।

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिंती चहुआनं। बर मासत्ति सह सुनि कानं ॥
घरी अद्ध अद्धं निरमानं। कहै बीर कन्हा चहुआनं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ प्रात प्रगट बत्तो कहिय। आगम चिंति प्रमान ॥
सुबर काल बित्तो घरिय। कलह परै परथान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ श्रवनं [1]सुनि सामंतं। रत्तं आचिज्ज मत्तयं [2]युद्धं ॥
आगम होइ प्रमानं। भूकंपं [3]पकयं षंडं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

मुरिल्ल ॥ कालं सुचंपि कालं कराल। इन सगुन सूर आवृत्त ताल ॥
आमुझझ सुझझ नंजिय प्रकार। बर बीर भीर विस्तार भार ॥
छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग सूर सामंत सब। कहि आगम सत काज ॥
सिंघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

जिहित सूर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
सोई सगुन ए सद्दियै। काल न चंपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

अरुन उदै जग्गे नृपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
सरन कमल थल भरन मुष। फूले आनद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भानं। विसत वसंमति अम्भत थानं ॥
को चंपै कै मरन जसूरं। यों मत मंत विमंत करूरं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

चढ़ि पति घट्टि सु सब्ब रसालं। अर वरि बीर अरं वरि भालं ॥
जिते सगुन दिषि रत्ति प्रमानं। तिते कहे चक्रित चहुआनं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ संभरि रा संभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
कछु सगुन्न निसि उच्चर्यौ। सुनहु सु जंपहु काज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुर। (२) ए. कृ. को.-सूरं। (३) मो.-कीनयं।

कहै सब्ब पयलग्गि भर । भर निहचै सामंत ॥
जु कछु राज दिष्यौ नयन । जंपि झंपि बर कंत ॥ छं० ॥ ६७ ॥
गाथा ॥ सो संघौ निसि सद्द । बद्दे कन्ह तीनयो सद्द ॥
नं जानय किंमानं । परिमानं किंनयं होइ ॥ छं० ॥ ६८ ॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक ॥ दिन सद्द सगुन्नन मद्द घरी । कलहंत विषंमति बीर भरी ॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं । घरि एक घरी महि जुद्ध रसं ॥
छं० ॥ ६९ ॥
भय [1]ग्रत्त भयानक बीर भटं । कलहंत कलेवर बीर घटं ॥
छं० ॥ ७० ॥
दूहा । कलह कलेवर बीर घट । सगुन सु वृत्तिय पान ॥
सुबर राज बद्धै विषम । देवासुर जु समान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्यौ नयन । न को मरत दिष्यान ॥
मात गरभ आवन [2]गमन । कर नंच्यौ बंधान ॥ छं० ॥ ७२ ॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम । जस अपजस लभ [4]हानि ॥
जिन जिन जुरि धर नष्यौ । सो दुरजोधन जानि ॥ छं० ॥ ७३ ॥
सो दुरजोधन जोधवर । सग्गुन बंधिय पान ॥
सुई अग्र नन भूमि दिय । बर भारथ्थ प्रमान ॥ छं० ॥ ७४ ॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना।

गाथा ॥ बर भारथ्थ प्रमानं । जानं जुद्धाय बौतयौ घटयं ॥
अट्टत वृत्तं चारौ । सगुनानं लभ्भियं पारें ॥ छं० । ७५ ॥
मुरिल्ल ॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि सूरं । सुघट घटय जमुना जल पूरं ॥
पथ इंदय अवत्ति पति सूरं । मयति काल विग्यानति सूरं ॥छं०॥७६॥
दूहा ॥ सुर विग्यान विग्यान पति । भयति भयंतर जुद्ध ॥
कानन बीर सु हक्कयौ । सुबर बीर गुन सुद्ध ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-भ्रत्य । (२) ए. कृ. को.-जनम ।
(३) मो.-बन्धौ । (४) ए. कृ. को.-भांन ।

बन हंकन न्रप हुकम भय। जहँ तहं गज्जत सूर॥
तबल तूल चंबक चहिय। कह नीरे कह दूर॥ छं० ॥ ७८ ॥

घुंघर गज घंटानि धुनि। हय गय हम मह लच्छ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय। कानन हांकिय पच्छ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना।

कवित्त॥ छुटत तीर चिंहु पष्य। सद्द बज्यौ सु सूर घन॥
सिंह सद्द पर सद्द। बज्जि पर सद्द मत्त पन॥
रद विमद्द गज भद्दग। बान भग्गे मन आररि॥
हाइ हाइ आरिष्ट। दिष्ट लग्गे पति गारुरि॥
गौमत्त भूत पंचाप नय। कानन पति कानन झुकिय॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय। जत्ति काल कालह बकिय॥छं०॥८०॥

दूहा॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित। सिंघनि सिसु यह पष्य॥
काल नाग नागिन जग्यौ। बर बीरां रस हथ्य॥ छं० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन।

पद्धरी॥ भाज्यौ सु सिंघ इक षेल वार। सूतौ सु मद्द कंदर लवार॥
लद्धौ सु वास नर निकट जानि। ग्रज्ज्यौ सु गर्ज्ज नभ घोर वानि॥
छं० ॥ ८२ ॥

पुच्छिय पटक्कि मंडिय सु सीस। बक्कारि उंच सिर दुदस दीस॥
छुट्टंत झाल जुगनेन दीस। चाटंत मुच्छ रिस अधिक हीस॥छं०॥८३॥

तिष्पे सु जोर जमदट्ठ वंत। फट्टंत घरनि हथ्थल तुरंत॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुषार। देषंत दंत जनु काल धार॥
छं० ॥ ८४ ॥

सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्थ। लीनौ सु घेरि सामंत सथ्थ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना।

कवित्त॥ झपटि लपटि जनु अग्ग। कन्ह दिसि किन्न लटक्किय॥

अतुल पाइ बल अतुल। अग्गि जनु जग्गि भटक्किय॥
जाजुल्लित गंभीर। गरुअ सहअ उच्चारिय॥
हाइ हाइ आरिट्ठ। राज इक्कम बक्कारिय॥
असवार चूकि चप्पौति इय। करि वुंडल कम्मान रजि॥
नर नाइ वाह अवसान फबि। परिय बथ्थ नर अस्व तजि॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्ह जुग जानि प्रलै बर॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह [1]जम जोध अडर डर॥
कंध कंध तिन चंपि। कन्ह कट्टिय कट्टारिय॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्ड मंस नस झूर हुअ॥
जय जय सु सद्द षह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद भुअ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंघह सूर। कन्ह जंगह चहुआनं॥
भयो नूर मुष सूर। सगुन लद्धौ परिमानं॥
उद्दांइ सेन सजि राज। गुज्ज बुझ्झौ न मसूरति॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति॥
आकास मध्य तारा तुटै। यों तुट्टौ अरि सेन पर॥
कल मलत सेस काइर कंपत। कीजहि उज्जर जारि धर॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी बीरता की प्रशंसा।

गाथा॥ सूरं किरन प्रकारं। सारं मार जुद्ध मय मत्तं॥
कै देवत्त विछुट्टा। कै [2]जुट्टा कालयं करनी॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रो से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामंत । मत्त मत्ते जनु चल्लिय ॥
'सो चौसठ्ठि हजार । भार भारथ वै हल्लिय ॥
चामर छत्र रचत्त । छत्र दौनों सिर कन्नं ॥
छुट्टिय पट्टिय अंधि । बिरद नरनाह जिमन्नं ॥
सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ । अग्ग फौज प्रथिराज बर ॥
पच्छली फौज निद्दुर बलिय । ता पच्छै पंमार भर ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले । तिम तिम छंडत मोह ॥
ज्यों [2]बंच्यौ दुज राज ने । तिथि पचानह सोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन हूर । दैवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास । दल बढ़ै राज जंगल सु चास ॥ छं० ॥९२॥
कलमलिय काय कंकह कठोर । * मारथ्थ किस्न सम राज जोर ॥
करि गिरद सेन सज्जी सभंति । मानों कि भांति किरनाल पंति ॥
छं० ॥ ९३ ॥

कलमलित कमठ भर पिट्ठ भूमि । सल सलित सेस सामंत भूमि ॥
हलमलत ग्राव बंके मेवास । षल भलत पंषि सम सहि न चास ॥
छं० ॥ ९४ ॥

चल मलत रैन सुभ्भै न पंथ । झल मलत हूर जनु समय अंथ॥
नल टलत चित्त काइर सु संक । गल वलत हूर जनु कप्पि लंक ॥
छं० ॥ ९५ ॥

नल कलत अस्व रह बल सु चाल। तल फलत ढाल हिरनाल फाल॥
दल हलत जानि सरिता सपूर । झलहलत छौंस साइर हिलूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

थल जलत इक्क मिलि कौच उट्ठि । मिलि चलित संसि सामंत रुट्ठि ॥
फल फलित मरन बंछत जिन्है न । कल कलत चंद कवि बल तिन्है न॥
छं० ॥ ९७ ॥

(१) मो. सौ, कु.-सी। (२) मो.-बन्यौ। * मो.-"सारथ्थ कि सर सम राज जोर"।

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक † चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अहो चंद चंदह मरन। दिन दिन [1]सल्लै दुष्प ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम। मंगै बैर समुष्प ॥ छं० ॥ ९८ ॥
† ले चल्लौ नृप भीम कौं। चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पघरी। इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ९९ ॥
कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ। करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न। अपन झुझ्झै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय। भीम सम संभरि वारं ॥
तात बैर संग्रहन। वचन तत्त उच्चारं ॥
गज भाट सुभर घट भंजि तुअ। सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं। तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान। बरषि घन अमृत धारं ॥
बालमीक पीयूष। सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत। आनि बब्बर पताल मनि ॥
बेद व्यास भारथ्थ। सकल छोहनि दीपक बनि ॥
चहुआन कहाइय चंदकर। पिता बैर कज इह बयन ॥
* चालक्क भीम उन सम सुनहु। तुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह। गरै जारी जंजारह ॥
नीसरनी कुहाल। दीप अंकुस आधारह ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्लै।

* चुल्लू==स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुंदेलखंड में चिन्ह चुन्ह भी कहते हैं। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त सो. प्रति में नहीं है।

कल्ल सूल संग्रहै। गयौ चालुक दरबारह ॥
इह अचंभ जन देषि। मिल्यौ पेषन संसारह ॥
भेष्यौ सु भीम भोरा सुभर। कहिय बत्ति संभरि बयन ॥
हो भट्ट चट्ट बोलहु कयन। कहा इहै डंबर सयन ॥ छं० ॥ १०२ ॥
एन जाल संग्रहो। जाम जल भीतर पड़यौ ॥
इन नौसरनी ग्रहो। जाम आकासह चढ़यौ ॥
इन कुद्दालै पनौ। जाम पायाल पनट्ठौ ॥
इन दीपक संग्रहौ। जाम अंधारै नट्ठौ ॥
इन अंकुस असिवसि करौं। इन त्रिसूल हनि हनि सिरौं ॥
जगमगै जोति जग उप्परै। ताडर प्रथम नरिंदरै ॥ छं० ॥ १०३ ॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे।

जाल ज्वाल करि भसम। करम नौसरनी कट्टौं।
घन भंजौं कुद्दाल। दीप कर पवन झपट्टौं ॥
अंकुस अंकुर मोडि। तिनह त्रिसूल संकोड़ौं ॥
हनन कहै ता हनौं। जोति जग मच्छर मोड़ौं ॥
हौं भीम भीम कंदल करौं। मो डर डंक अचंभ नर ॥
मम करइ ग्रब्ब धरि लज्ज अब। बित्तक पुब्ब परचि पर ॥ छं० ॥ १०४ ॥
रे डंदर [1]विड्डाल। कोइ कारन भिर मच्चौ ॥
रे गिद्धिन सिर हंस। दैव जोगह सिर नच्चौ ॥
रे भृग वघ संग्राम। लरै बर अप्पन आयौ ॥
रे अप्पह सो समर। करै मंडुक जस पायौ ॥
आचंभ ब्रह्म गति वह नहीं। बार बार तुहि सिष्पियै ॥
प्रज्जरै झार तरवर गिरह। का दीपक लै दिष्पियै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बैन बाद सो करै। होइ भट्टह कौ जायौ ॥
गारि रारि सो भिरै। जेन रस षष्प न पायौ ॥
हथ्थ बथ्थ सो भिरै। घरह धन बंधव [2]बट्टैं ॥
इह सोमेसर बैर। लेहु अप्पन सिर सट्टैं ॥

(१) ए. कृ. को.-बिल्लाउ। (२) ए.-चट्टै।

तुम कहौ जाइ संभरि बयन। इन डिंभन डिंभरु डरै॥
संचय्यौ दरक हक्कै चरत। [1]सज्ज फटक्कै निक्करै॥ छं० ॥ १०६॥

चन्द का भीमदेव के दरवार से कुपित होकर चला आना।

दूहा॥ चंद मंद मन आतुरह। उग्यौ रत्त करि नैंन॥
फिरि पहुंच्यौ नृप पिथ्थ पै। कहैं चरक्का बैंन॥ छं० ॥ १०७॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हौ आयौ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मौड़ि बर पुंछ जगायौ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। करिय सेन चतुरंग भर॥
मो दिट्ठ दिट्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]बाद मनो न उर॥
छं० ॥ १०८॥

जगदेव बचन।

कहु मिसरे छेड़यौ। राउ गुज्जरी नरेसर॥
दीबा जाल कुदाल। कहमि वह सह आडंबर॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्यन॥
चामंड रा कहां गयौ। बहुत राया बर दष्यन॥
कह मिसरे कन्ह बिप्पनौ। जग्गदेव संचौ चविय॥
वंभन हय या दिट्ठ धर। कह मिसरें संभरि धनिय॥ छं० ॥ १०९॥

चन्द वचन।

वार बार षेलयौ। सरस वत्तडिया गुज्जर॥
अब विगत्ति [3]लभ्भिहै। [4]मिरच चव्वै ज्यों गज्जर॥

---

(१) मो.-"क्यो छज्ज फट्टकै निक्करै"। (२) ए. कृ. को.-झुंठ।
(३) ए कृ. को.-लागे है। (४) मो.-मिरच चट्टै ज्यौ गज्जर।

तूअनि राव मजाम। जिके रन अंगन जित्ता॥
इन संभरिवै राव। कोड़ि सै सहस विघत्ता॥
भेदयौ नहीं गुर अष्परौ। कविय वयन संम्हौ सरै॥
कर नहीं मंच बौल्लिय तनौं। घत्ते हथ्थ सप्पा हरै॥ छं०॥ ११०॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा॥ सुनि सु बेंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमंग॥
आयौ नृप चहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग॥ छं०॥ १११॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्ढुर कर धारिय॥
सकल सूर सामंत। जुद्ध मग्गह अधिकारिय॥
आदि राज पहु आदि। आदि मम जुद्ध समंडौ॥
दैव काल संग्रहौ। बलह भारथ जिम पंडौ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज॥
एकंग अंग जंगह अटल। करन जुरौ सामंत सज॥ छं०॥ ११२॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निभ्भर सामंत। जूह जंगन दल मंडन॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम षंडन॥
इक्क उभत जुध उट्ठ। इक्क गज दंत उपारहि॥
इक्क कमंध उठि लरहि। इक्क रुधि बीर बकारहि॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल॥
बड़ बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल॥ छं०॥ ११३॥

निढ्ढुर का कन्ह राय की प्रशंसा करना।

दूहा॥ बालप्पन जोवन बिरध। [2]रन रत्तौ जोधार॥
कन्ह दलन अरि मंडइय। नम तिरुका करि डार॥ छं०॥ ११४॥

(१) मो.-अचल। (२) ए. कृ. को.-नर।

जिन अंपिन भर पट रहै। सोइ छुट्टै दै ठाम॥
कै मज्या वामा रमत। कै छुट्टत संग्राम॥ छं० ॥ ११५ ॥
जे बंके विरदन वहै। नरन नाह जग जप्प॥
कै भारथ भीषम सुभट। कै रामायन कप्प॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना।

अमुल माल मुत्तिय मजल। मोल लष्प गुन मान॥
अप उरते उत्तारि न्रप। दीनी निढ्ढुर दान॥ छं० ॥ ११७ ॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना।

कवित्त॥ हालाहल उर झाल। माल मुत्तिय दुति राजै॥
रवि कंठह जनु गंग॥ ईस जनु सोस विराजै॥
सुभर निडर रट्ठौर। बज्जि नीसान गराजै॥
जैसै बज्जत डंक। बीर बट्टत बल ताजै॥
मंडई मरन मन अरि कलन। चलन चित्त मन अटल हुअ॥
सब सेन मध्य इम राजई। पह मग्गह ज्यौं जानि धुअ॥ छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना।

दूहा॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप। [1]पाव पवंग परट्ठि॥
लइ नहीं मन संभ्रम मल। निट्ठ चढ़ाईय हट्ठि॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना।

कन्ह कहै न्रप जंगल। मोहि सजीवन भिट्ठ॥
सोम अरिन तन सद्दयौ। पंजर हंस न नट्ठ॥ छं० ॥ १२० ॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना।

कवित्त॥ एक समें सुग्रीव। चिया न रष्पिय अप्प बल॥
एक समै द्रुज्जोध। करन रष्पे न जित्ति षल॥

(१) ए. रू. को.-पाट। (२) गो.-भीमंग।

एक समै श्री राम। सीय बनवास अरिन ग्रहि॥
एक समै पंडवन। चीर रष्यौ न द्रोपदह॥
तुम कन्ह कंक अकलंक कहि। इष्ट रूप हम सब जपहिं॥
तुम तेज अंपि देपत नयन। मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥

दूहा॥ निढ्ढुर कन्ह प्रमोधि इम। सोलंकी सौमंग॥
सुनि आए धाए दुसह। दल दारुन भीमंग॥ छं०॥ १२२॥

सेना का सज कर आगे बढ़ना।

गाथा॥ जाइ संपते सूरं। पट्टन सेनाय मंड भारथ्थं॥
तातं बैर प्रमानं। बढ्ढे बीराइ बीर पल याइं॥ छं०॥ १२३॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना।

दूहा॥ दिपादिपी दुअ सेन भय। नारि गोर गहरानि॥
कुहकबान आघात उठि। उड़िय अग्गि असमान॥ छं०॥ १२४॥
अग्ग पच्छ बाजू बियन। दल मंडै दुअ राइ॥
तत्त तुरी जे तत भरे। असि कढ्ढै घन घाइ॥ छं०॥ १२५॥

भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन।

कुंडलिया॥ फिरत तुरी चालुक्क रन। बर रष्यै चिहु कौंन॥
नस चंपै न सु ढिल्लवै। ज्यों बंदर को छौंन॥
ज्यों बंदर को छौंन। मुष्य भंजै नन पंचै॥
तेज तुरी नष्यते। जानि आसन मन संचै॥
राग समंचै बाग। मौर लष्यै पति हेरै॥
लिपिय चिच असवार। मत्त मत्ते हय फेरै॥ छं०॥ १२६॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध।

दूहा॥ कढ़त बैर बंकम विषम। विषम ज्वाल छिति सार॥

सार सरीरन झेल नह। भए [1]निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥१२७॥
रमावला ॥ [2]मिले बीर भट्टं, सुरंग सुथट्टं। हवी हथ्थ छुट्टं, नरं सूर लुट्टं॥
छं० ॥ १२८ ॥
मनों लागि नट्टं, झरैं हड्ड फट्टं। मनों कढ [3]कंठ, बहै तेग तट्टं ॥
छं० ॥ १२९ ॥
मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दद्धि मट्टं, षगं गे उहट्टं ॥
छं० ॥ १३० ॥
परै मीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं ॥
छं० ॥ १३१ ॥
अगी ज्यों लपट्टं, परै बट्ट बट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत झट्टं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
मनों कंद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल बट्टं। मनों चट्ट अट्टं, लगौ तीर तट्टं ॥
छं० ॥ १३४ ॥
उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगै गैन घट्टं, बहै सुर्ग वट्टं ॥
छं० ॥ १३६ ॥
मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती म लुट्टं। [6]रिनं पत्त फटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा ॥ पट्टे छुट्टत कन्ह चष। पल धारा धर बज्जि ॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥
कवित्त ॥ इत सु कन्ह चहुआन। उतह मारंग मकवाना ॥
बल बढ्ढे बल बंड। जानि कंठीर लोहाना ॥

(१) मा.-तिचित्त। (२) मो.-जुरे। (३) ए. रू. को. कढ्ढं।
(४) को.-वरं, मो.-रतं। (५) मो.-हट्ट। (६) मो.-रिपं।

कर कट्टे करिवारि। भार ठिल्लिय भर भारी॥
स्वामिधर्म सुइरै। बार इत्तो सु करारी॥
लिष्पे जु अंक विधि कंक जिहि। आनि सपत्तिय सो घरिय॥
अद्भूत रुद्र रस विस्तर्यो। सु कविचंद छंदह धरिय॥छं०॥१३९॥

मकवान का मारा जाना।

दूहा॥ पत फट्टे सारंग ने। रस जम कन्ता वंत॥
[1]झुक्कि पर्‌यौ मकवान रिन। गल गज्जे सामंत॥ छं०॥ १४०॥

सामंतों का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा।

रंडरि धर [2]सारंग की। परत पहुमि मकवान॥
सूर सु गज्जै जंगली। भै भग्गौ अरियान॥ छं०॥ १४१॥
सिद्धि न लभ्भै सिद्धि जै। ते लड्डी सामंत॥
छाया माया मोह बिन। विमन सुमन धावंत॥ छं०॥ १४२॥

कवित्त॥ द्रुमति तजत बर अंत। रत्त चच्चर सी झारन॥
अप्प अप्प संग्रहै। पार दुज्जनन उतारन॥
सार सुगति संग्रहै। जियन सुपनौ करि जानै॥
राति दिष्पि जंजाल। प्रात पीछै न पछानैं॥
यों जानि सूर सज्जत रनह। बन सु अग्गि जनु वाय बसि॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन। दोष न लग्गे जोर जस॥छं०॥१४३॥

गाथा॥ उठ्ठय आवत झारं। धारं पाहार पंति सुभटायं॥
घहर घोष घन भट्टं। यों रयंत वीर बंकायं॥ छं०॥ १४४॥

दूहा॥ बहुरि न हंसा पंजरह। जे पंजर तुटि धार॥
हंस उड़ा जब [3]नट्ठथी। पंजर सार असार॥ छं०॥ १४५॥

कवित्त॥ पहर एक भर भरह। टोप अमिवर वर बज्जिय॥
बपर पषर जिन साल। सूर सामंत न भज्जिय॥

---

(१) मो.-झुक्किझ। (२) ए. कृ. को.-चालूक।
(३) ए. कृ. को.-लट्ठथी।

हय हय हय उच्चार । घाय घायल घट गज्जिय ॥
चह चह चवंक बजिय । तुट्टि पाइक बिन तज्जिय ॥
रोस रसि वसिय सामंत रसिय । अयुत युद्ध उद्धह गतिय ॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत । कहत धन्य राजन रतिय ॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन ।

गाथा ॥ साभर मती सरित्तं । गुज्जर पंडेव धार धारायं ॥
दुअ तद रुधिर उपट्टं । वहै प्रवाह हथ्थियं बाजं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
दूहा ॥ हथ्थि बाजि नर भर बहत । सिंघनि धुनि गरजंत ॥
एक घरी अदभूत रस । रुद्र भयो विसमंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥
मोतीदाम ॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर । तजै भव मोह भजै पग श्रीर॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह । परें रन में ज्युं मदंध गवार ॥
छं० ॥ १४९ ॥
उठै धर श्रोनिय छिंछ उतंग । सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग ॥
उड़ै घन सार झलंकत पग्ग । मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग ॥
छं० ॥ १५० ॥
भनंत कि भोंर कि तीरन तार । विठं तजि पंकज फुट्टत फार ॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन । लियौ तिन तात सुबैर बलेन ॥
छं० ॥ १५१ ॥
इमे रन रंग सुभैत सुढार । मनों मय मत्त परे बिकरार ॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार । उड़ै जनु भिंगन भद्दव पार ॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि । रहै रन राज फवज्ज सु सज्ज ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

प्रमंगराय खीची का पराक्रम वर्णन ।

कवित्त ॥ पिछि पीचो परसंग । समुद अरि ग्रहन कि गस्सिय ॥
बड़वानल वलिबंड । पग्ग पोहनि दल घस्सिय ॥
बढ़त सेन तेद जरहि । पढ़त जनु भस्म कुढ़ी हुय ॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकत ।

जहं तहं जंगल सूर। कट्टि मुष सकै न आन कय ॥
कर पच मंच जुग्गिनि जगहि। रजि पलहारिय षुद्द विन ॥
चमरैत बैत जनु किंसु बन। इम तन रज्जिय सोभ तिन ॥छं०॥१५४॥
षिझि नरिंद हय नंपि। बज्जि षुरतार कंपि भुअ ॥
अष्ट सु चल [1]दम विचल। कंपि संपात पात हुअ ॥
उठिय [2]मुष्प मुछ बंक। सीस लग्यौ असमानं ॥
पंपि जान पावै न। करहि कुंडल कंमानं ॥
घरि एक घावि बिभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्यौ कलह ॥
तिन सद्द सिंभ सिंभासनह। उघरि बीर दिष्यौ पलह ॥छं०॥१५५॥

गाथा ॥ यों कुट्टे सुर मारं। घावं घड़्य घन सु लोहारं ॥
भट्टं सूर प्रकारं। आभट्टं द्रुज्जनो ग्रेहं ॥ छं० ॥ १५६ ॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक ॥ आभट्टं बर ग्रेह दुज्जन वरं, भट्टं न्रपं राजयं।
जे भग्गा सामंत बीर बसुधा, तत्तेव जीवंतयं ॥
भग्गा सनेय बीर चालुक रनं, मुक्की वरं मुक्कयं ॥
अंती अंत सु अंत अंतरु [3]रतं, जुत्तौ तुमंतं करी ॥ छं० ॥ १५७ ॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा ॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्थ ॥
दिव देवासुर उच्चरैं। धन्न सु छचिय हथ्थ ॥ छं० ॥ १५८ ॥
सूर हथ्थ हथ्थिय ग्रहिग। चरत भान आनंद ॥
सूरज मंडल [4]भेदिते। जोति जगत्ति न इंद ॥ छं० ॥ १५९ ॥
घट [5]घट्टै त्रुट्टै मुगति। छिति छुट्टै रति चाव ॥
यों मत मत्ते रत्त रन। ज्यों बलि वावन पाव ॥ छं० ॥ १६० ॥

गाथा ॥ वामन दिट्ठ सु पावं। ईसं जद्दि सुवीर्यं सहयं ॥
एकक पाइक सूरं। सो जित्तं तीनयं लोकं ॥ छं० ॥ १६१ ॥

(१) ए. कृ. को.-दल। (२) ए. कृ. को.-मुछछ पुव। (३) मो.-रन।
(४) मो.-भेदिकै। (५) मो.-घुटै।

स्वामिधम्म सुध मत्तं । सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मौ ॥
धीरं धीर अधीरं । धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिघ्घं ॥ छं० ॥ १६२ ॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन ।

चोटक ॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी । जु [1]बजे जनु देवय दिव्य धुनी ॥
रनकावत पग्गत हथ्थ करैं । मनु बीर जगावत बीर उरैं ॥
छं० ॥ १६३ ॥

गहि चच्चरसी चवरंग रजं । मनों भद्दव बद्दल मद्द गजं ॥
सपरै गज कंक करंन भरं । सु उड़ै जनु पंतिय पंष भरं ॥
छं० ॥ ॥ १६४ ॥

भननंकय बीरति बीर सयं । स नचै जनु रुद्रय बीर हयं ॥
ततथे ततथुंगय सार रजी । उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी ॥
छं० ॥ १६५ ॥

पल में पल वित्तय पंच उड़ै । बहुय्यौ नन कालय बीर बुड़ै ॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रमी । सु उड़ै जनु सार सपत्ति बमी ॥
छं० ॥ १६६ ॥

मय मंत सु मंति न दंति यता । भजि बीर डरावन माज हिता ॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं । झननंकहि पग्ग सुमग्ग घनं ॥
छं० ॥ १६७ ॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं । सु बढ़ै तनु विज्जुल हथ्थ कढ़ै ॥
॥ छं० ॥ १६८ ॥

दूहा ॥ बढ़ि विज्जल सथ हत्ति कर । गुर घर घंमति वाउ ॥
देव दिषै देवत रिझै । धनि सामंत सु घाउ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अधोगति होती है ।

गाथा ॥ तब कैमास सु जुद्धं । बुधं किन्न तीनयो वारं ॥
आहत्त हत्तिय चायं । न चायं नेह नारियं बीरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
बंचै मुगत्ति [2]न बंचै । बंचै स्वामित्त जुद्धनो बरयं ॥
सा घट घट भौ थिरयं । जंगम जुक्काय थावरं बीरं ॥छं०॥१७१॥

(१) मो.-बने । (२) मो.-सु ।

चौपाइ ॥ [illegible] थावर जंगम नह बीरं। बज्रंगी धर बज्र सरीरं॥
बज्र घाइ आघात न छुट्टै। फिरि फिरि मुक्त रास करि लुट्टै॥
छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालूक बर। घटिय सेन चहुआन॥
दुहूं मझ्झै कोविद्द ज्यौं। धर छंडै नह थान॥ छं० ॥ १७३ ॥

चौपाइ ॥ धूअ धूअ थानय नन छंडै। भान संझ संझया गुन पंडै॥
कैवर रत्त अरुतन चाई। कैवर सूर परे घन घाई॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ बजहि घाव घरियार जिम। राइन दोऊ सेंन॥
चालुक्करु चोहान रिन। भयौ भयानक गैंन॥ छं० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का सामहना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ। बजी कल कूह सु बज्जन हाथ॥
ढहै गज गुंजत रास चिकार। परें हय तुट्टि अदभ्भुत रारि॥
छं० ॥ १७६ ॥

जहां तहां संग फुटै धर पार। बहै मर ओन कि जावक धार॥
भई सिर छाह कमानन तीर। फुटै धर पंजर धुक्कि गहीर॥
छं० ॥ १७७ ॥

भयानक भेष भयं असकंक। थलप्पल रुद्दि मची जनु पंक॥
अदभ्भुत कंक विरच्चिय बीर। कढ़ी अस कोह भरक्किय भीर॥
छं० ॥ १७८ ॥

उतें नृप भीम इतें [1]चहुआन। गही कर नागनि सी असि [2]पान॥
[3]घनद्दिन भीम रह्यौ घट जंत। सु आनि कें आज [4]पहूंचिय अंत॥
छं० ॥ १७९ ॥

करौं धर रंडरि गुज्जर देस। हकारिय भीम भयानक भेस॥
हहंकिय भीम न पावहि जानि। [5]बिठाउन सोमह सुर्ग ढिगान॥
छं० ॥ १८० ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रथिराज। (२) ए. कृ. को.-साज।
(३) ए. कृ.को--घनहन। (४) मो--सिधंत। (५) मो.-बैठे ऊत।

पचारिय कन्ह सु पिष्थ पछाय। हनै किन सूरन निक्करि जाइ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही अस कंध जनेउ उतारि॥
छं० ॥ १८१ ॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम। सु रेंघसि सेप बही असि हीम॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही घर अच्छरि अच्छ विमान॥
छं० ॥ १८२ ॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह झूलि॥
जितं तित उट्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत॥
छं० ॥ १८३ ॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेष बकंत बरन्न॥
कमंध करंत जितंतित घाइ। हनंत फरंत कि भूत विलाइ॥
छं० ॥ १८४ ॥

जितं तित घाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छक्कि कि छक्कि गमार॥
जितं तित तर्फत लुथ्थि चिहार। [3]जलं मछि डारि कै मीन कहार॥
छं० ॥ १८५ ॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि॥
जितं तित घाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत करी कल रीस॥
छं० ॥ १८६ ॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव द्यावं मझाइ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत॥
छं० ॥ १८७ ॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनयंच सबद्दय बाज॥
जपै सुर चारन गंधब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट॥
छं० ॥ १८८ ॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर केव॥
॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-ललं।

कन्ह की तलवार की प्रशंसा।

कवित्त ॥ सिलह मझ्झ षग धार। बीय उग्यौ ससि सोभै ॥
कै नव बधु नष पित्त। काम आकार अलोभै ॥
मरम बीर कत्तरी। दिसा वर तिलक पुब्ब बर ॥
कै कंची शृंगार। बहुरि सोभै ओपम. धर ॥
सोभंत चंद की कला नभ। कल कलंक सोभै न तन ॥
ढुंढ्यौ जु षेत सामंत नैं। बुझ्यौ राज तामंस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना।

दूहा ॥ लियौ बैर चहुआन नृप। बजि निरघोष सु घाव ॥
चावहिसि सेना फिरी। बर बीरां रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों की प्रशंसा।

बीरां रस बर बढ़िय भर। घट्टिय घट तन पंत ॥
जंम तजत जोगिनि सुजस। धनि सामंत सु मंति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जी कज्ज मरिज्जैं। उदरं दृत्त घाव घन घड़यं ॥
कठिन क्रष्प कलहंतं। मरनं पच्छ निपज्जै साइं ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तबै वेतालं। रन रंगेव रच्चियं काली ॥
पलहारी पल पूरं। क्रूरं सूर बरन बरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का बंद होना।

संझ सपत्तय सूरं। भेषं भयान भंतियं क्रूरं ॥
करून बीर रस पूरं। नूरं दुअ सेन दिष्पाइं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं। सब सामंत [1]घट सूर ॥
धाइ रहे घट घाइ सों। भयौ प्रात बर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच। मुक्कि अलि [2]भ्रम तक सारस ॥
[3]गय तारक फटि तिमर। चंद भग्यौ गुन पारस ॥

(१) ए. कृ. को.-सत। (२) ए. कृ. को. भूमन। (३) ए. कृ. को.-गत।

देव क्रम्म उघघरहि। बीर बर क्रम्म सुनिज्जह ॥
सोर चक्र तिय तजिय। नयन घुघ्घू रस भिज्जह ॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नभ। बजिग देव धुनि संप धुर ॥
भय भान पनान न उघऱ्यौ। करहि [1]रोर द्रुम पष्प तर ॥छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तोरन किरनिय तम ॥
उग्गि किरन वर भान। देव बंदहि सु सेव क्रम ॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन संभारति रथ्थै ॥
जमुन तात जम तात। करन कंचन कर बरषै ॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद। अरुन बरुन तारक चर्महि ॥
सामंत सूर दरसन दिषिय। पाप धरम तन बसि लसहि ॥छं०॥१९८॥
मुरिछ्ल ॥ के विगया महि मंडल सूरं। पग पंडे बर बीर सपूरं ॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं। बढ्ढी कित्ति जित्ति मनमथ्थं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं।

कवित्त ॥ भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुटिय ॥
सघन घाव पम्मार। बीर बीरां रस जुटिय ॥
[2]बढ़वि सेन दोउ बीर। षेत तंड्यौ न बीर दुहं ॥
उतर भुम्मि भारथ्थ। मार नंथ्यौति सार मुह ॥
बय ध्यान मान सम स्याम दिप। किय कीरत्ति अचल कलह ॥
सामंत सूर सम सूरतन। कवि सु चंद जंपै बलह ॥ छं० ॥ २०० ॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ों की संख्या।

डेढ हजार तुरंग। परे रन बीर बीर भट ॥
अड्ड सहस हथ्थी प्रमान। आरुहिय मेघ घट ॥
पंच सहस परि लुथ्थि। दंत सों अंत अलुझिझय ॥
दइय काल संग्रहै। लिषे बिन कोइ न झुझिझय ॥
दै घरी स्रोन बरषंत धर। पति पहार घर डोलयौ ॥
सामंत सूर स्वामित्त पति। जीभ चंद जस बोलयौ ॥ छं० ॥ २०१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रोम। (२) ए. कृ. को.-चढ़वि।

संसार की असारता का वर्णन।

है संसार प्रमान। सुपन सोभै सु बस्त सब॥
दिष्टमान बिनसिहै। मोह बंध्यौ सु काल अब॥
काल छत्य षट्टीक। आज बंध्यौ नर ग्रेही॥
दया देह संभवै। दया बंधै तिन देही॥
सामंत सूर साधम्म धनि। सज्जिय भज्जिय जानियै॥
संसार असत आसत्त गति। इहै तत्त करि मानियै॥ छं०॥ २०२॥

दूहा॥ बंध्यौ भीम जब राज प्रथि। बैर लियौ पगबाहि॥
दोहित संजम सूर कौ। कीनौ कचरा राइ॥ छं०॥ २०३॥
दस बंदर कचरा दिये। दियौ चमर छत्र साज॥
चौरासी बंदर महै। और रपै प्रथिराज॥ छं०॥ २०४॥
भोम दई दीनों तिलक। लीनो कचरा संग॥
*प्रथीराज दिल्ली चले। काढ़ि बैर अनभंग॥ छं०॥ २०५॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना।

कवित्त॥ सात बैर संग्रह्यौ। जीति जैपत्त सु लिन्नौ॥
ढीली पत्तौ राज। किति संसार स भिन्नौ॥
न्रिप संधव [1]मो उदर। सोइ सामंतनि रष्पिय॥
एक [2]मग्ग उग्गहै। एक मग्गह रस भष्पिय॥
पंचमी दिवस रवि वार बर। इंद्र जोग तहां बरति तिथ॥
दिन चढ़ै राज प्रथिराज जय। जै हय गय नर भर समथ॥ छं०॥ २०६॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग बधो नाम चौंवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४४॥

---

*छन्द २०३ से २०५ तक मो.-प्रति में नहीं है।

(१) मो.-जो। (२) ए. क्र. को.-मग्ग।

अथसंयोगिता पूर्व जन्मप्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैंतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चंडि सुरपति सुनहि ; धरनि [1]अघावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्थ [2]छुध । रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति बर चवै । सुनहु बर चंड दंड सुर ॥
रामायन रन वह । राम रावेन भान [4]भुर ॥
[5]धर मुष्यै क्यों [6]रहै । कहन हर हार तार गर ॥
सूर समर सुर धष्पि । अष्पि जन पष्पि तष्पि कर ॥
धक धार सार करिवार कर । मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अचंभ चव मंस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥छं०॥२॥

दूहा ॥ कर जोरैं सुर राज सों । कहत असंभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कौन स्रोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचन अलग । घोरन अनि जग घोर ॥
बरषि बीर रस बहुल सर । सोसि सार रत धोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतंक ।

हनूफाल ॥ हक हक्कि देव अदेव । धर कंपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कट्ठ करूर । अत कजत काइर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-अघावहि । (२) मो.-वृध । (३) मो.-सच्च सुमति ।
(४) मो.-सुर । (५) मो.- तुम । (६) मो.-रहौं ।

बलि मथ्थ बीर करूर । जग पग्ग लग्गि [1]गरूर ॥
पथ पथ्थ अंमर सूर । दह दिग्ग सुष्पम [2]नूर ॥ छं० ॥ ६ ॥
चवअंत अंत नमंत । छुय लोक चामर जंत ॥
विम्मान [3]मानिय रूढ़ । [4]अंबरन रचिय गूढ़ ॥ छं० ॥ ७ ॥
छत [5]विछति [6]रघु लछिराय । रथ निगछ सुर हय चाय ॥
भाल भयंक जाम अतंक । सेन सु भूमि सेन पतंक ॥ छं० ॥ ८ ॥
बातन तात तेज अपान । उपट उपट्टि दोन सु घान ॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग । गो परिवान दग्गि पतंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
सुर सुर राज सोच दिवांन । जय जय अच्छि कच्छि विमान ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

मुरिल्ल ॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर । रेनि रेनि अक बद्दिय संमर ॥
संमर अंमर [7]कोतिक जच्छिन । छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि ॥
छं० ॥ ११ ॥

गीता मालची ॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धक्कयं ॥
*किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किल्लय कल्लयं ॥
बक [8]बकय डोंरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं ॥
झलमलत भाल विसाल विधु बर अंब रालक अंमरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
जट बिकट तट जल उछल हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं ॥
[9]चव अग्ग सट्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं ॥
भुअ इंद जोति सभीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं ॥
उड़ि अस्त्र अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरधर छाइयं ॥छं०॥१३॥
बिनि रंग अच्छरि व्योम व्योमनि ताल बाल बितालयं ॥
सुर श्रवत श्रम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं ॥
छं० ॥ १४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फरूर । (२) ए. कृ. को.-तूर । (३) मों.-मानिन ।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन । (५) ए. कृ. को.-विछकि ।
(६) ए.-रघु । (७) ए. कृ. को.-कोतक ।
*मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किल्लयति कल्लयं ।
(८) ए. कृ. को.-बहुय । (९) ए..अव ।

कवित्त ॥ पजलिंदग चवरंग । छत्त रत छिंछ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ । चाइ नक कोप रंग बर ॥
निसचर बन चर चमर । अरिन लग्गे अरि [1]घाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस । पाइ कर कंजन छाइन ॥
अरि इंद्रजीत भय भीत ह्वै । भूत भंति तंडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अंजुल पहुय । लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढ़ि [2]चढ़ि गूढ़ मंच अमंच । हक्कि सु हूक चक्किय वंत ॥
नत नुत्त चाप सु इष्प । मरसाइ भू भरतिष्प ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिसूल सेल [3]सबान । बलि मुप उरवि सेज सजान ॥
वेम निमंक स्यंदन रूढ़ । वंकवि कूल रासिव सूढ़ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कंपिय कोपि कंप करूर । नागति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत । किंनर नाद नारद केत ॥छं०॥१८॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव । चिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप । निकट निकंठ काटत जाप ॥छं०॥१९॥
आसन असन अनल [4]गरूत । रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत । सोपन करहु घोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राघव धरन [5]प्रपन प्रचाल । पग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि अहि गन बान । जय जय चवत सेवग थान ॥छं०॥२१॥

दूहा ॥ तजी तूझ भजि भजि सरै । भजि भजि रघुपति रूढ़ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि । छिन इक गुनपति गूढ़ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसंक स्यंदन सु । वंक कल कंक तंग लुपि ॥
चढ़िय देव मंडल मरुत्त । आवन्न धूप धुपि ॥
कृष्प गोप गहि गोप । डारि ऊरन्न अंग लगि ॥

---

(१) ए. को.-धाइय, छाइय। (२) मो.-वढ़ि। (३) ए. कृ. को.-तिवान।
(४) मो. गत रूत। (५) ए. कृ. को.-प्रसंन।
(६) ए. कृ. को.-भति। (७) मो.-सिरनि।
(८) मो.-निकसि संक।

भाष साष म्रग मंकु। सेन भुमि सेन प्रान दगि॥
जय जयति सद्द नारद चवत। कर किन्नर तारच्छि भजि॥
तजि पासि पास तन दर बिकर। कहि रघुपति [1]जम भ्रित्त रजि॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन।

दूहा॥ भज्जि ताप तन मानि मन। बाल व्याल उड़ि सेन॥
सोषि स्रोन तद्दिन सरनि। रह्यौ राज बिनु चेन॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि [2]राद्द भर पंच मिलि। मंडि सरस धनुबान॥
इंद्रजीत भर अवनि परि। छयौ अमर असमान॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्जी दस मुष दरनि। भय मंदोदरि बाम॥
जाद्द जगावहु कुंभ कहुं। हनै रिपुन घन जाम॥ छं० ॥ २६ ॥
उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर। करि जग्गत घन रीस॥
सुर किंनर धुनि सबद बर। पिष्यहु पग्गन सीस॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथा॥ दानं प्रमद प्रमादं। परयं भर कुंभ बद्धि लासायं॥
सम गुच्छन धर धारं। चढ़ि चढ़ि अटन रटन [2]रित जेयं॥
छं० ॥ २८ ॥

विज्जुमाल॥ किलकि किलकि कूक। बज्ज दनु गन भूक॥
तजि बद्द बथ्थन थूर। भज्जि सुरगन भूर॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कनंक। चिहूं दिग्ग बर नंक॥
मुरि [3]मुरि मेर पंड। जुर छरि जूर मंडि॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय सूर। मिल कहक वित्तूर॥
दह दिग्ग जगि अग्य। बर मंस रम लग्य॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत। रमत सुरेस सूत॥
चव चव [4]सद्दि ताल। भवति भल कराल॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुम। (२) ए. कृ. को.-जित।
(३) ए. कृ. को.-मर। (४) ए. कृ. को.-सद्धि।

[1]कुपित कुंभक रष्पि। गरुअ गढ़ गरषि॥
थेइ थेइ पुर नाद। वितल उच्चित माद॥ छं० ॥ ३३ ॥
प्रगटि [2]दानव दल। प्रलय सम अस मल॥
गहबर धुन पान। रौस रघु असमान॥ छं० ॥ ३४ ॥
रिन तत निन्त पंच। तनकि तनकि रंच॥
उड़ि भर भुज भूर। तरसि [3]मष वतूर॥ छं० ॥ ३५ ॥
पच्छ छिन छिनकंन। करि रघुराय रंन॥
ऊरध भूरध षंड। मरि कुंभ राइ दंड॥ छं० ॥ ३६ ॥
समर अंमर ऐन। अवत चवत चैन॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा॥ पर्‌यौ कुंभ धरनी सु धर। षंड षंड तन तेह॥
मानों प्रबल सनूर ढरि। चढ़ि पंछी नल छेह॥ छं० ॥ ३८ ॥
सजि डंबर घन सौस पर। सज स्यंदन [4]पर षेह॥
चढ़ि दससिर रघुपति विहसि। रहसि बढ़ी रन केह॥ छं० ॥ ३९ ॥
हल हल सेनन चर चरन। उड़ि आडंबर धूरि॥
बजे तूर बनचर चमू। देव पंचजन पूर॥ छं० ॥ ४० ॥

राम रावण का युद्ध।

गीतामालची॥ मीसह नहि निमान स्यंदन सेन अंकुरि सेनयं॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनयं॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी॥
[5]नग नाग नागिनि पच पचन मत्त मत्तन [6]वच्छनी॥ छं० ॥ ४१ ॥
किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तंडवं॥
डव डवरू डोरुँअ करह किन्नर करत कुंडल पंडवं॥
मिलि दैत्य वंस अदैत्य अंसह संधि सिंधुर नद्दयं॥
गन गिद्धि अंबर छाइ पच्छिन डंकि डंकि नरद्दयं॥ छं० ॥ ४२ ॥
तन तुनकि चामर चाप चंपिय ताप कंपिय तिप्पुरं॥

(१) मो.-कुपित। (२) ए. कृ. को.-दानव। (३) मो.-सम चख नूर।
(४) ए. कृ. को.-पन। (५) ए. कृ. को.-गन।
(६) ए. कृ. को.-चच्छनी।

तर तरकि चिक्कुट चक्र चक्रिय धक्क पंकिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्र स्यंदन चूर चामर षेर चच्चर षंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर घन बर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातक ओन नील अकासयं ॥
जनु जून दृज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि सूर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल पित्त पंचर बट्टि बर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोपि सर सिग रह्यौ राज अभष्पयं ॥
सुरपत्ति मुष अग मंडि जंपिय राम रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा ॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल ब्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लागी बार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से सांई सिरह। तूं किम रही अधप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र बर मंच ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढबि ढुरि ढुंढि भ्रमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली बयर। दलन दुअन बड़ि षेद ॥
रुंड मुंड षंडन पलन। विधि बंधी बदि बेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिप। मंडि मुंड डर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय बयर। भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त ॥ मति प्रधान गंधर्ब। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनौ बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह कित्तिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को.-सायक। (२) ए. कृ. को.-धीमरं।

चाहुआन कमधज्ज। बीर बिग्रह जग्गारौ ॥
करि कौर रुप कनवज गयौ। उभय दिवस दिष्पिय पुरिय ॥
बंभनिय मदन अंगन सु तरु। निसि निवास तहां उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन।

श्लोक ॥ सतयुगे काम्पिकादुर्गे। त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावासं। कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गंधर्व की स्त्री का उससे संयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना।

दूहा ॥ गंधव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]बर। नाथ कथा समुझाय ॥
मंजोगिय अवतार कहि। न्रप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है।

राज पुत्रि उतपत्त सुनि। इह अप्छरि अवतार ॥
[3]सुमन आप भ्रत लोक महिं। सूरन करन संहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचंद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना।

सुकी सुनै सुक उच्चरै। पुत्र [4]संजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छ=यौ। जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन।

चोपाई ॥ जटा बीर शंकर सिव थानं। गिरिजा गहिर गंग परिमानं॥
साधत रिष्पि तहां जर नाम। गइ दस इंद्र हन्यौ तिन काम ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जंघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रमं ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-रस। (१) प्र. कृ. को.-जम।
(३) प्र. कृ. को. सुमत। (४) मो.-संजोग।

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्तौ यह भम्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं० ॥ ५८ ॥

कवित्त ॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तडाग। भ्रम भए कटाच्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ बर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता लोंग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं० ॥ ६० ॥

जीवनि सु मुत्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
पंचन कितक्कि कुचि दृष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं० ॥ ६१ ॥

दिठि दिठ्ठ टरिय नह नेन चास। चक्कोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नेन नह चेन अंग। विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग॥
छं० ॥ ६२ ॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पब्बय समान मन नेन भिंटि। फुट्यौ सु दूध मनु छाछ छंठि॥
छं० ॥ ६३ ॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं० ॥ ६४ ॥

(१) मो.-तहां। (२) ए. कृ. को.-सुप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

साटक ॥ जा जीवंत पसार पार सुमती, रत्तं हरी ध्यानयं ॥
षिमया कामय चित्त सित्त षिमया, षिमया रसं [1]दृढ्यं ॥
सा सुपनंतर दीह रत्ते मुषं, प्रानंपि षिमया रुषं ॥
ना सुझै बिय ध्यान [2]पन्नर [3]रुषं, षिमयाय षिमया मुषं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

परंतु ऋषि का पुनः अपने मन को साधकर बदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना।

गाथा ॥ षिमया सुष मय भ्रमियं। रमयाइ भ्रंग कीटयो मनयं ॥
चित्त न जिन लषि भुअंगं। सो भिद्दे व काम वामाइं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥ प्रथम तिष्ठ्य अड़सट्ठि। न्हाय बद्री [4]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि चपत। छुधा निद्रा चस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि। पंचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
बरषा काल प्रचंड। [5]मेघ धारह बपु [6]बहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि। कर अंगुष्ठ नर देव हरि ॥
सत बरष ध्यान लग्गै भयौ। जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना।

दूहा ॥ तप बल कंपत सुभर भुअ। रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुस्त तेज द्रिग सिथल हुअ। लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तब चिंतिय सुरराज मन। का विचिच वर वाम ॥
आदि अंत सोधिय सकल। अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सारओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भ्रष्ट करें।

(१) मो.-वृज्जयं। (२) कृ.-पडर।
(३) ए. कृ. को.-दृग। (४) ए. कृ. को.-पति।
(५) ए. कृ. को.-मेय। (६) ए. कृ. को.-सहयौ।

बोलि घृताची मेनिका। रंभ उरबसी रूप॥
जानि सुकेस तिलोत्तमा। मंजुघोष सुनि भूप॥ छं० ॥ ७०॥
अति आदर आदर कियौ। कह्यौ आप इह बैन॥
छलह सुमंतन जाइ के। रहै राज सुष चैन॥ छं० ॥ ७१॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन।

गाथा॥ नयनं नलिन नवीनं। गवनं गयं मत्त तुलायं॥
बैनं पर अत दीनं। झीनं कटि अगं राजेसं॥ छं० ॥ ७२॥
अर्य्या॥ *सपत सुर गान निपुना। नृत्य कला कोटि आलया मानं॥
तार तरलेव अमरी। अमरी अमरी सय सयसं॥ छं० ॥ ७३॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना।

कवित्त॥ भो आयसि सुरराज। मंजुघोषा सुनि बत्तिय॥
मृत्य लोक में जाहु। सुमति छल छलौ तुरत्तिय॥
दुसह तेज को सहै। मोहि आसन डर डुल्लिय॥
सेस संकि कलमलिय। नेन तिय तालिय घुल्लिय॥
जल पंचि सुरन हिय दुष्य धरि। नहिन सु रस उड़गन भुअन॥
तप ताप देव सब कलमलत। सुकज काज रष्यहि दुअन॥
छं० ॥ ७४॥
दूहा॥ पग पगपति आसन ग्रह्यौ। गए बित्ति बहु काल॥
रंभ पिमा सम रूप धरि। आय [1]सपत्ती ताल॥ छं० ॥ ७५॥
मानि बैन सुरराज लिय। नरपुर पत्तिय आइ॥
जहं तालौ लग्गौ सुमति। तहं नूपुर बज्जाइ॥ छं० ॥ ७६॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन।

अप्छरि अठ्ठ विमान [2]बनि। कुसुम समान सरीर॥
नग जगमग अंग अंग सुबनि। कनक प्रभा दुति चीर॥ छं० ॥७७॥

---

*छन्द ७३ मा.-प्रति में नहीं है।

(१) ए. कृ. को.-संपतो। (२) ए. कृ. को.-रचि।

नराज ॥ बनी विमान कामिनी। मनों दिपंत दामिनी ॥
दुती उपंम लोभयं। कि इंद्र चाप सोभयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरंबसी सु केसयं। तिलोत्तमा सुदेसयं ॥
सु मंजघोष रंभयं। घृताचि मेनका सुयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी। मनों कि अष्ट मोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासयं। विगास कौल भासयं ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भोंरही। कि कौंल भौंर झौरही ॥
तिहाइ भाइ ठानही। जुगिंद चित्त [1]भानही ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहीं। सकेलि सुद्ध सारहीं ॥
विलास नेन लग्गवै। तिमुंछ काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी। सु कौंल माल सोहनी ॥
चवंत बेन माधुरी। न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलयं। कुकी कुकेकि केलयं ॥
सुभाय वास अंग की। सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी। मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत मुष्प ठट्ठियं। प्रवान पान [3]पट्ठियं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिपत मेंन लग्गयं। जिहाज जोग भग्गयं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर। ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उघ्घरिय। अप्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हसै। [4]रहैं रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय। फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौं न छरौं तौ देव डर। रिषि तप जप्प प्रचंड ॥
[5]दुहुं विधि संकत कामिनी। आप ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-तानहीं। (२) ए. कृ. को.-भग।
(३) ए. कृ..को.-ठट्ठिय।
(४) मो. रह रिषि भाय रिसाय। (५) मो.-दादु विधि संक न सामिंन।

उलटि गई सुर धरनि घर। देवन देव बुलाइ ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। आप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंभ प्रगट्टिय आन ॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति ॥
मूल पवन द्रिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति ॥
बंक नाल जल षंचि। [1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय ॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम समूलिय ॥
तब मारग सुज्यौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन ॥
सुनि तार सु बज्जै करन बिन। सद्द स्वाद छंडिय त्रिगुन ॥छं०॥९२॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि ॥
कमल अमल उघ्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि ॥
चिकुटिय ताटंक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय ॥
रिष्पि सवद्द अवन्न। नद्द अनहद्द सु बज्जिय ॥
अधमुष ऊरध चरन करि। गति पत्तिय मंडल गगन ॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रह्यौ सु धुनि मझझह गगन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

वाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा ॥ जंच मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार ॥
करत राग श्रीराग सुर। कर बर बज्जत तार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टु वात माठा धुआ। गीत प्रवंध प्रवीन ॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन ॥छं०॥९५॥

---

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कमर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर। (३) ए. कृ. को.-उघटन।

श्लोक ॥ [1]मृदंगी दंडिका ताली। धुरधुरी स्तुति काहली ॥
गीत राग प्रबंधं च। अष्टांगं नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९९ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना।

दूहा ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ। भग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चक्रित करि सोच मन। इह अपुब्ब कहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत। भई ध्यानगति पंग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय। घुलिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कहिय रिष्य सुर अप्छरी। कन्या गंधव जक्ष ॥
कै नागिनि जनमी कुंअरि। तो सिव [2]रच्या रक्ष ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना।

कमातुर चिय कर ग्रह्यौ। तप जप छंडिय आस ॥
[3]हँमि छुड़ाइ कर तड़ित मन। गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मूर्छित हो जाना, परंतु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना।

छिन इक धर मूरछि पर्यौ। चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ग्यान मन आनि कै। मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धर्यौ। हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन। बरष सित कियौ तेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति। नींद निसि नसिय इंद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ। बंधि दृढ़ पवन उरध बस ॥
पीवंत वाम दक्षिन मुचै। कुंभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ। गह्यौ पंथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मो.-मृदंकी। (२) मो.-रछ्या।
(३) ए. कृ. को.-सहि। (४) ए. कृ. को.-अधीर।

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष मिष बरनह ताहि ॥
जा दिष्पन मुनि मन टर्‌यौ। रह्यौ टगट्टग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक ॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्रानने ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मध्यं छीन म्रगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए ॥
सिंभे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने मसी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए ॥
नष पंति कंतिय मुत्तए। जनु चंद अभ्रत जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरति नूपुर बज्जए। कलहंम सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरव गयंदए। छबि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक विमानयं। रग रंग बंदन मानयं ॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं ॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं ॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं ॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥
सलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥११०॥
उर उरज जलज बिराजही। कलधूत ओफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं। इक होत जोजन वासियं ॥छं०॥१११॥
गर लजति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनुं कमल बसि अलि धामए ॥छं०॥११२॥

---

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।

बलि पुहप तिलक सु नासिका। जनु कीर [1]चुंच प्रहासिका ॥
तिन मुत्ति बेसर सोभए। ससि सुक्र मिलि रवि लोभए ॥छं०॥११३॥
तस नयन पंजन कंजए। सुरराज सुर मन रंजए ॥
चाटंक नग जर जगमगै। विय चक्र करि ससि पर जगै ॥छं० ॥११४॥
बिय भौंह बंकित अंकुरी। जनु धनुक कामति [2]संकुरी ॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ। [3]रविचंद मिलि रस आइ कौ ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन बेनियं। जनु ग्रसित अहि ससि ऐनयं ॥
सित दिव्य अंबर अंबरं। नह मलिन होत अडंबरं ॥ छं० ॥ ११६ ॥
अंगवास [4]आस सुगंधयं। संग चलत मधुव्रत संगयं ॥
सम उदधि मथि कीनौ हरी। फटि फेन प्रगटित सुंदरी ॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य्य की प्रशंसा।

मालिनी ॥ हरित कनक कांतिं कापि चंपेव गोरी।
रसित पदम गंधा फुल्ल राजीव नेचा ॥
उरज जलज सोभा [5]नभिकोसं सरोजं।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहंसी ॥ छं० ॥ ११८ ॥

दूहा ॥ कामालय सो संदरी। जिम अरि अग्गि अनंग ॥
विधि विधान मति चुक्कयौ। कियै मेन रन अंग ॥ छं० ॥ ११९ ॥

मालिनी ॥ अधर मधुर बिंबं, कंठ कलयंठ रावे।
दलित दलक भ्रमरे, भ्रिंग भ्रकुटीय भावे ॥
तिल सुमन समानं, नासिका सोभयंती।
कलित दसन कुंदं, पूर्न चद्राननं च ॥ छं० ॥ १२० ॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है।

दूहा ॥ न्याय छुट्यौ मुनि रूप इन। सुरति प्रीय चिय आहि ॥
जा मोहै सुर नर असुर। रहै ब्रह्म [6]सुष चाहि ॥ छं० ॥ १२१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-हंस। (२) ए. कृ. को.-संहरी। (३) ए. कृ. को.-रचि।
(४) ए. कृ. को.-सास। (५) ए. कृ. को.-नासिका। (६) मो.-मुष।

कवित्त ॥ इनह काज सुर धरत । सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध । पर हनत स्वामि रन ॥
भरत पच्च जुग्गिनि समत्त । रति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्प पल भ्रवत । पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरच्चि करतें समर । तव लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय । बरत बरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि । मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत । उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना।

कवित्त ॥ तीय धर्‌यौ तन जोग । श्रवन मुद्रा सु [1]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति । न्हाय जनु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंध । दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ । जोग जंगम सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै । बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै । रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि । निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डॅवरू डहडह्यौ । अंवर सव सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग । गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास । [2]मयन नह चतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म । [3]पहरि अॅग अंग दिगंवर ॥
नह गनेस पट बदन । पुत्र गननंदि भृंग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक समि । व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन चिशूल चिपुरारि पल । नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

(१) ए. कृ. को.-फारिक। (२) ए. कृ को.-नयन। (३) मो. पहिर अंग अगानि वर।

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना।

बहु आदर आदरिय। [1]अरघ आतिथि तिहि दिन्नौ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट। कष्ट बहु तप करि किन्नौ॥
डुलिग इंद्र रबि चंद्र। इंद्र सुर लोकह मानिय॥
मो अगै कर जोरि। देव सब तजत गुमानिय॥
तुहु सु ग्यान मन उप्पन्नौ। देव दुषौ करि सुष लह्यौ॥
चिदनंद ब्रह्मपद अनुसरिय। धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन।

दूहा॥ मात गरभ आवागमन। मेटि [3]भ्रमन संसार॥
ज्यों कंचन कंचन मिलै। पय पय मझ संचार॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सों कहौं। निरगुन गुन विस्तार॥
बरन्यौ वपु बैराट हरि। जा मुनि लहै न पार॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी॥ कहौं ग्यान मंतं सुमंतं विचारौ। गहौं अद्ध मूलं उरद्धं संचारौ॥
धरौं ध्यान नासा चिदानंद रुपं। चिकुट्टी [4]चिलोकी स्वयं जोतिरुपं॥
छं० ॥ १३० ॥
पियों बंकनालं चढ़ै दंड मेरें। सुनै सद्द अनहद्द अनट्टत्त टेरें॥
धुनी अंतरं जोति जानौ गियानी। जपै मंच हंसं सु सोहंविनानी॥
छं० ॥ १३१ ॥
सरं नाभि मूलं सरोजं प्रकासै। दलं अष्ट [5]पद्मं तहां सो उहासै॥
तपत्तं कनक्कं चरन्नं [6]झलक्कै। दसं अंगुलं नालि हिरदै ढलक्कै॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिमं पुप्फ कल्ली तिमं कंज फूलै। करै जोग उद्धं धरै वाय मूलै॥
तहां देव अंगुष्ट मानंत वासै। धरै अष्ट वाहं बसै देव बासै॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.-अरघ। (२) मो.-गगनं। (३) ए. कृ. को.-विभूमन।
(४) मो.-त्रलोकं। (५) मो.-संत। (६) ए.-चलक्कै।

दलं अष्ट कंजं सु रुद्रान देवं। रहै मध्य भानं अलष्यं अछेवं ॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं। ससी मध्य अग्नी रहै रूप रत्तं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामें विराजै। तहां पिष्ठ सिंघासनं देव साजै ॥
रतन्नं जरे बज्र [1]कोटीस कोटी। तहां देव नाराइनो जोति मोटी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]भ्रगुं लच्छिनं वक्ष कौस्तुभ्भ सोहै। धरै चक्र पद्मं गदा कंबु रोहै ॥
धरै [3]पानि पग्गं धनुं [4]बान सल्लं। इसो ध्यान दिष्यौ महा जोग बल्लं॥
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासो। महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासो ॥
तहां सूर कोटी ससी [5]कोटि सीतं। वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं॥
छं० ॥ १३७ ॥

[6]क्रितं सेत ब्रनं [7]अरक्तं सु चेता। जुगं द्वापरं पीत कलि कृष्ण [8]नेता ॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं। रहै आप आपं गुरं पच्छि थानं ॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं। अकासं न वासं न जानं पुरानं ॥
न रूपं निरूपं अरूपं समथ्थं। रहै [9]सास मैवास करिदेह रुथ्थं ॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप बैराट गुर जो बतायो। जिसो अरजुनं कृष्ण भारथ [10]सुनायौ॥
महाकास सीसं चरंनं पतालं। कढ़ी नाभि सुर्ग दिसा बाहु पालं ॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इभ्भं। गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी। कहै देव बेदं [12]न जानंत जानी॥
छं० ॥ १४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सूरं। (२) ए. कृ. को. श्रिय। (३) ए. कृ. को.-सांग।
(४) ए. कृ. को.-मुसल्लं। (५) ए. कृ. को.-प्रभा।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अस्तु। (७) मो -त्रेता।
(८) ए. कृ. को.-साम। (९) ए. कृ. को.-बनायौ।
(१०) ए. कृ. को. रूर। (११) ए. कृ. को.-बाहु। (१२) ए. कृ. को.-जनानं न।

जगै रैंनि दीहं महा जोग जोगी। विराटं सरूपं कहै भोग्य भोगी॥
निराकार आकार दोऊ विमायो। कहै देव औतार गुर जो बतायौ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु। कष्ट तजहु तुम देह॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै। उर भेटहु संदेह॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि धर बसै। मनो ग्यान मन ईस॥
गरभ दोष मेटहु प्रबल। उर धरि ध्यान जगीस॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

दूहा ॥ कहै ब्रह्म अवतार दस। धरे भगत हित काज॥
रूप रूप अति दैत्य दलि। द्रुपद सुता रषि लाज॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ मच्छ कच्छ बाराह। अध्य नरसिंह रूप किय॥
वामन बलि छलि दान। राम छिति छत्र छौन लिय॥
लंकपती संहर्‌यौ। उभय बलदेव हलायुध॥
दयापाल प्रभु बुद्ध। रहे धरि ध्यान निरायुध॥
कलि अंत कलंकी अवतरहि। सत्य धम्म रष्यन सकल॥
करि सरस राम राधा रमन। मवन ग्यान ब्रह्महु अकल॥छं०॥१४६॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो।

दूहा ॥ कपट ग्यान मुष उच्चरे। मन छल धूत अधूत॥
कपट रूप कंठौर कर। चरन चित्त अवधूत॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल संध्यौ तिनह। भै बिन प्रीति न होइ॥
हर छल तजि हर रूप करि। मान प्रगट्टिय सोइ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत बरन कजलीय। छोह आरोह सरप जनु॥
दसन सु तिष्य कुदाल। नयन बिय वज्र धर्‌यौ तनु॥
बज्र बंक अंकुस गयंद। नष कुंभ विदारन॥

उर्द्धकेस कग सद्द। गरब दंतौ [1]दल गारन ॥
धर पटकि पुंछ मुंछाल छल। पौठ दिट्ठ अवधू पर्‍यौ ॥
भय भीति कपि कामिनि कुटिल। धाय विप्र अंकह भर्‍यौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना।

दूहा ॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि। सर सरोज हति काम ॥
रामंचित अंग अंग सिथल। मन मोह्यो सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥
दिप्पत अप्छरि अष्ट उन। रह्यौ नैन मन लाइ ॥
देह भुलानौ नेह कै। और न सूझै काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥
भ्रमन भयानक सुपन छल। सिंघन अवधू संग ॥
जानिक पंष परेवना। करि डंवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥
कामजारि सिव भसम किय। कर विभूत रति सोक ॥
भोग भुगति रति सुंदरी। दिढ़ नह जोग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं।

गाथा ॥ वनिता वदंत विप्पं। जागं जुगति [2]केन कम्मायं ॥
स्यामा सनेह रमनं। जनमं फल पुन्न दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना।

दूहा ॥ चित्त चल्यो मन डगमग्यो। रच्यो रूप रस रंग ॥
आनि पहुंतो जरज रिषि। दही भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना।

अरिल्ल ॥ पहर एक पर निट्ठ। जगाइय अप्प गुर ॥
भौ लज्जा लवलीन। विचारत अप्प उर ॥
जाइ सु पत्तो तात। सु नेनन भेद्यौ ॥
भेद्यो अंगन अंग। अनंगह षेद्यो ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दूहा ॥ देषि तात परदच्छ फिरि। भय लज्जा लवलीन ॥
पिमा अरथ तप रंभ कै। काम कामना भीन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो.-लग्गरन। (२) मो.-कवन।

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।

पहचानी रिषि सुंदरी। कुस गहि कीनौ दाप ॥
भ्रगुटि बंक रिस नैन रत। दिय अप्छरी सराप ॥ छं० ॥ १५८ ॥
हम रिष्यीसर बन बसत। रसह न जाने एक ॥
कंद भषत तन कष्ट करि। लेइ आप इक मेक ॥ छं० ॥ १५९ ॥

सुमंत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना ।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल। भाल भ्रकुटी दिषि तातह ॥
गयौ बदन कुमिलाइ। जानि दीपक लषि प्रातह ॥
पुच कवन तप तप्यौ। भयौ बसि काम वाम रत ॥
इनहि आप करौं भस्म। कवन छंडैप तोहि हित ॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि। रंभ अरंभ न कछु रह्यौ ॥
सम अग्नि रूप दिष्यौस रिषि। तबह आप रंभह कह्यौ ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन ।

कलह [1]करतहो डहि कुबुधि। कलहंतर कहि एह ॥
पुहचौ भार उतारनह। जनमि पंग कै ग्रेह ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कवित्त ॥ [2]एम छल्यौ चयवार। रोस करि आप आप दिय ॥
मृत्य लोक अवतार। नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
इन अवधू मन छल्यौ। सुष्प नन लहहि चीय तन ॥
पित पति कुल संहरहि। पीय तो हथ्थ रहै जिन ॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल। उअर जुन्नाइय पुच छल ॥
संजोग नाम प्रथिराज बर। दुअ सुमार अनभंग दल ॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।

दूहा ॥ अवन सुने रंभह डरिय। रही जोर कर दोइ ॥

(१) ए. कृ. को.-करनहि। (२) ए.-एक।

अब सांई अपराध मुहि। मुगति कहो कब होइ ॥ छं० ॥ १६३ ॥

पद्धरी ॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म ॥
संसार रूप सायर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज ॥
छं० ॥ १६४ ॥

[2]पालै सु ब्रम्ह रिषि क्रम्म जोग। चै काल क्रम्म षट रहत जोग ॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं० ॥ १६५ ॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव ॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह। अवतार लेहु पहुपंग गेह ॥
छं० ॥ १६६ ॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]ब्यार ॥
छं० ॥ १६७ ॥

इह कहि रु रिष भय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान ॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं० ॥ १६८ ॥

अप्सरा के स्वर्ग से पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त ॥ एक दीह बर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय ॥
ता देषन चयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय ॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै ॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै ॥

---

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ।
(२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ।
(४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि घात सुर उच्चरिय॥
जानेन काल त्रिमान गति। तिन विधान विधि संचरिय॥छं०॥१६८॥

विष्णु का सनत्कुमारों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जंपि आभ्रम्म। इंद्र दरवान न जानिय॥
सुक सनकादि सनक्क। सनंद सनातन [1]न्यानिय॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय॥
सनत सनंदन देव। [2]मुनौ व्रत आदि भिमानिय॥
ए कुंअर पंच पंचौ हटकि। पंच बाल पंचौ प्रकृति॥
रिषि बर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति॥
छं०॥१७०॥

गाथा॥ हटकि सु अग्र प्रमानं। अग्यानं साध दारूनो बरयं॥
ज्यों रिषि नाम समथ्थौ। तामसयं द्वार पालक्कं॥ छं०॥१७१॥

माटक॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उद्यापितं बुदबुदौ॥
नारेषं नासेष उच्चत ननं, दीर्घ न रूपं [3]वरं॥
नंमाया चलयं बलति किरिया, एकस्य जोती तइं॥
बैकुंठं गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं॥ छं०॥१७२॥

दूहा॥ मापत्ते रिषि थान तिन। दै सराप तिन वार॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सथ्थौ करतार॥॥ छं०॥१७३॥

पद्धरी॥ पाधरी छंद बरनंत मुभ्भ। [4]बस्वरन बीर कल बरन रुभ्भ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दंत [5]बक्रह विधार॥
छं०॥१७४॥

अवतार दुतिय जौ कहूं मंडि। अवतार किष्ण गोकुलह छंडि॥
तिन काज किष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन॥
छं०॥१७५॥

---

(१) ए. कृ. को.-न्यारी। (२) ए. कृ. को.-मुनि। (३) मो.-परं।
(४) ए. कृ. को.-बलबीर वीर कल बलन रुझ्झ। (५) मो.-चक्रह।

अवतार दुतिय चयबर विरोध। राजसू जग्य सुत ब्रम्म सोध ॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसस्स। हरिमेव कुस्स विय बंध [1]गस्स ॥
छं० ॥ १७६ ॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न ॥
छायान घाम [2]नन सस्त्र [3]घाय। सिव को प्रसाद लीनों [4]सुचाय ॥
छं० ॥ १७७ ॥

भरभरिय भार वर पच काज। रामहति राम जंपै विराज ॥
छं० ॥ १७८ ॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा ॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुअ [5]विजुद्ध किय देव ॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक थंभ प्रति सेव ॥ छं० ॥ १७९ ॥

गाथा ॥ सो षिझियं प्रहलादं। किं थंभं मझझयौ भनई ॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं भारं ॥ छं० ॥ १८० ॥

दूहा ॥ थंभ भार फुट्यौ सुबर। नष हति घाम न छाह ॥
बर सिंघासन बैठि कै। बर बैकुंठह जांह ॥ छं० ॥ १८१ ॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक ॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हुत्तौ कर्नयं ॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं ॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं ॥
जंहल्ली धर धार उप्पम कवी, चक्कीय चक्कं फिरं ॥ छं० ॥ १८२ ॥

गाथा ॥ यों उद्धा कपि कंक। प्रब तर गाम प्रस्थरं लोयं ॥
जिम घर सराय थानं। उड्डै सा भाजनं मुक्ति ॥ छं० ॥ १८३ ॥

दूहा ॥ यों उड्डी लंका सुधर। चिया बैर प्रतिपाल ॥
हर बंदे गोबिंद कथ। बर बैकुंठह हाल ॥ छं० ॥ १८४ ॥

---

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु।
(६) मो.-विधं। (७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसंगिनं।

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना।

चौपाई ॥ सो बोलिय इंद्रह परदारं। हरि रुक्यौ तिय देव सँसारं॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति बर कीनिय। चरन सुरज बर सीस सु दीनिय॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुहीं देवता देवतं विष्णु रूपं। किते इंद्र कोटं नचै कोटि रूपं॥
नचें कोटि ब्रह्मं रबिं कोटि तेजं। ससी कोटि सीतं सुधा राज सेजं॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि जं कोटि से दुष्ट ढाहे। किते कोटि कंदर्प्प लावन्य लाहे॥
किते कोठि सामुद्र मज्जाद दिद्धिं। किते कोटि कप्पं तरं मुक्ति सिद्धिं॥
छं० ॥ १८७ ॥

वलं कोटि पोनं द्रिगं कोति भारी। तुहीं तारनं तेज संसार सारी॥
तुही विष्णु माया अमायात तूहीं। तुहीं रात्ति दीहं तुही तेज जूही॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुहीं तू तुही सर्व भूतं। तुहीं आदि अंतं तुहीं मध्य हूतं॥
जहां हूं न हूं तूं तहां तूं न नाहीं। गनों हूं न देही रहै तूं समाहीं॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुंही ताप संताप [1]आत्ताप तूंही। कह्यौ इंद्र लग्यौ चरंनं समूंही॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्राणी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सों। पय लग्यौ चय देव॥
हरिचरनन छुंडै नहीं। लोहरु चंमक भेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥
स्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य। कोटि देव महावरं॥
इंद्र ध्यान समो सिंघो। [2]पंचाननस्य राजयं॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना।

(१) ए. कृ. को.-अत्तातु, अतात। (२) मो.-पजाननस्य।

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन । अद्ध परी संग साज ॥
हाहा हूहू संग सजि । ए गुन गंधव गाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥
चोटक ॥ गुन गंधव गंधव लीन गुनं । इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं । नचै गुन अप्छरि अप्छरि काजं ॥
छं० ॥ १९४ ॥
रचै बर इंद्रति इंद्रह [1]साज । .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार । जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १९५ ॥
धिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार । तजै चय देव कह्यौ इंद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार । भयौ तहं शंकर आप सु सार ॥
छं० ॥ १९६ ॥
पतंन पतंन कह्यौ तियवार । परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १९७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन मुक्कै न हरि । रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ । छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १९८ ॥
गाथा ॥ कहु कव मुज उद्धारं । सुद्धारं कस्सयं होई ॥
तो पत्ती प्राकारं । इद्रं चरन कस्स सेवाइं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनौज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग । पुचि बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कनवज्ज प्रमान । गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई । गँग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय । आप सुध्यौ गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तद्दिन । तिय सराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न । तद्दिन मछरत बर लइग ॥छं०॥ २००॥

(१) ए. कृ. को.-काज।

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना।

कनवज्जह कमधज्ज। राज विजपाल राज बर ॥
इय गय नर बर भीर। सकल किय सेन जित्त पर ॥
बीर धीर बर सगुन। भार उद्धार महामति ॥
मत्तिराम चितविद्य। बीय [1]रंमाधि राज रति ॥
संचन्यौ सेन सजि विजै नग। सकल जीति भर राज धर ॥
मुरवस्य दिस्य न्रप संग किय। क्रम्यौ [2]देस दच्छिन सुधर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम बंस राजाधिराज। मुकंद देव प्रभु ॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक मय मग्गि न्हयन नभु ॥
तीस लष्ष तोषार। लष्ष गेंवर गल गज्जहिं ॥
दसह लष्ष पयदलह। पुलत दस छचति रज्जहिं ॥
दिव दिवस रीति मंचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह ॥
दिगविजय करन विजपाल न्रप। सपत कोस भिष्यौ तिनह॥
छं० ॥ २०२ ॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयंदह ॥
धन असंष घन मुत्ति। [3]रतन घट समुनि मन्नदह ॥
सौ प्रजंक रजकंति। कोटि दस पाट पटंबर ॥
दिय पुची सु विसाल। दासि सें [4]सत्त अडंबर ॥
परषौ सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग ॥
बर सबर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग ॥
छं० ॥ २०३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रमादि। (२) मो.-देह स दच्छिन।
(३) ए. कृ. को.-रतन समुनि धन मनिंदह। (४) ए. कृ. को.-सपत।

दूहा ॥ अति सु ललित्त सरूप विय । रमहित राजन संग ॥
दुक्क थार भोजन करहिं । अति सुष न्वपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलंगति बंधि न्वप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्वप । सेत समुद्र सओट ॥ छं० ॥ २०६ ॥
नराज । करन्न नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥
समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरेंग जीति संघिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गँभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नट्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं [1]मवल्ल मुष्प चंद्रकास नट्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पट्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुप्रच्छते प्रकार साध काम कग्गलं मिलं ।
अधंम भ्रम्म सद्ध भूमि पंग राज संघिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥
कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोव्रन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्रित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । तट्ट लग्गे भग्गे षल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थी मद सव्वल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुबर । मोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना।

(१) ए. कृ. को.-मवील।

दूहा ॥ सेचुंजा डेरा सु पहु । लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुक्तिय दिव्य [1]नग । लै पैलगि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुआब संजाबरी । दस षट बानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सौपकिय । रिध दीनी नव निद्ध ॥ छं० ॥ २१२ ॥

कवित्त ॥ भोरा कु अर सुं भेट । सिंघ लग्यौ तट सागर ॥
साष दोय बाजौ वितंड । नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्प तोषार । पंति कनवज्ज प्रमानं ॥
लष सत्तरि गय गुरहि । तपै ग्रीषम जिम भानं ॥
जलथान जाइ धूलग्गि रह । रह्यौ एक बड़वानलह ॥
चहुआन देस तष्पह सुधर । पंच षंड कनवज्ज पह ॥ छं० ॥ २१३ ॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना ।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहारं । जित्तवि सकल राइ किय संगे ॥
पुर कनवज्ज संपत्ते । बज्जन बहुल बज्जि आनंदं ॥ छं० ॥ २१४ ॥

दूहा ॥ मंडि जग्य विजपाल न्रप । भूपन तुंग विनास ॥
जय जयचदं विरद्द, बर । हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचंद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना ।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि । चंद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुष बरस दुअट्ठ प्रमानं । ता उर आनि संजोगिन थानं ॥
छं० ॥ २१६ ॥

दूहा ॥ घटि बढ़ि कलह न अनुसरै । पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति । चंद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥

कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति । राज गवरी गुर बंध्यौ ॥
जिनं जुन्हाइय चंद । अष्ट पर्वत वित नंध्यौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गन ।
(२) ए. कृ. को.-अतिहास । (३) मो.-सौति ।

जिनं जुन्हाइय चंद । तुंग तिरुहन विप्रानय ॥
जिनं जुन्हाइय चंद्र । कंठ कंठेर सु बानय ॥
जयचंद जुन्हाइय पँगुरै । असी लष्प हैवर [1]परिग ॥
जयचंद जुन्हाइय राज बर । बरनिय अरधंगह धरिग ॥छं०॥२१८॥

दूहा ॥ पुब्बकथा संजोग की । कही चंद बरदाइ ॥
पंग धरह जुन्हाइ उर । आनि प्रगट्टिय खाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥



(१) ए. कृ. को.-परिग ।

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन ।

दूहा ॥ पुब्ब कथा संजोग की । कहत चंद बरदाइ ॥
सुनत सुगंध्रव गंध्रवी । अति आनंद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम संयोग संजोग विधि । कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ । तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना ।

चौपाई ॥ एक सराप षिमा अवतारं । जरित रिष्य हरद्वार सुधारं ॥
तिन सिष सिष्यि छिमाइत लिन्नौ । मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* संवत ११३६ में संयोगिता का जन्म वर्णन ।

दूहा ॥ ग्यारह सै च्यालीस चव । पंग राज सू मंडि ॥
बर पंचम ससि तीय ग्रह । जनम संयोग विषंड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्विमल पूरन उग्यौ । निसि निरमल अति रूप ।
न्विप न्विप कन्या व्याहता । मरन अदब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जंजं बालत पढ़ै गुन । तंतं बढ़ति काम ॥
सिद्ध [2]विभंतर तिय सहज । लछि लच्छिन विश्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-तत्त रस लिन्नौ । (२) ए. कृ. को.-विपंतर ।

* छन्द ४ के अंत में विखण्ड शब्द "संवत ११३६" की सूचना देता है—यथा (वि = दो+ खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग-विखण्ड = संयोगता की आयु के आधेआध समय मे अर्थात् संवत् ११४४ में राजा पंग ने राजसूययज्ञ आरम्भ किया ।

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना। और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह। धरिय सो बढ़ै स सुंदरि॥
और बढ़ै इक मास। पाष बढ़ै रस गुंदरि॥
मास बढ़ै षटमास। रित्त बढ़ै सु बरष बर॥
बरष बढ़ै सुंदरी। होइ षट मध्य बरष भर॥
पूरंन बाल षट विय बरष। नव मासह दिन पंच बर॥
ता दिनह बाल संजोग उर। मदन दुष्ट मंडिय [1]सुधर॥ छं० ॥ ७॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना।

इह संजोइय राज। पुत्ति बत्तीसह लच्छिन॥
रची विधाता काम। धाम कर अप्प विचच्छिन्न॥
छाजै छचिय गौष। [2]गुमट कलसा छबि छाजिय॥
करिय रास आवास। सरस रस रंग विराजिय॥
तिन चिचसाल चिचत सुरंग। मनसिज आगम अंग अंग॥
मन आस वास बसि मंदिरह। प्रथम दीप दीनौ सुरंग॥ छं० ॥ ८॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई।

दूहा॥ उड़गन सम सहचरि सकल। उड़पति राजकुमारि॥
नव रस आए देह धरि। कोन चिया अनुहारि॥ छं० ॥ ९॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन।

इनूफाल॥ संजोगि नाम सुजान। जिन तात बिजय किआनि॥
इह लच्छिनेव बतीस। इह पच्छ छत्त विदीस॥ छं० ॥ १०॥
इह उंच ग्रेह समान। भुअ राइनी इत आनि॥
इन पानि बर चहुआन। जिन बंधिलिय सुरतान॥ छं० ॥ ११॥

(१) मो.-सुघर। (२) ए.-मुगट।

इन काज राजसू जग्ग। मिलि राइ सहस विभग्ग ॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति स्रोनित भूप ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप राचत देव। इन इंद्र वधु अह मेव ॥
इन सुरन घोड़स दीन। इकतीस लच्छन भीन ॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ रुद्र माल विसेष। पर कलह कामिनि लेष ॥
इन संबन्यौ बह राज। भिरि सहस छचिय [1]छाज ॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान। रवि कोटि उग्गिय जान ॥
मिलि छच छचन धाइ। सोइ छांह मंडय बाइ ॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि साति [2]सत्तत काज। रन पानि बर भूत आज ॥
इन कलह कामिनि नाम। संसार समनह वाम ॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र। [3]ज्यों रुषमिनी रु गोविंद ॥
दुज दुजन दुर्जन लाग। सुक सुनत श्रवन विभाग ॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छच विभंग। रुधि भिन्न षोनिय अंग ॥
परि लष्प छचिय जुद्ध। इन बरह कित्ति असुद्ध ॥ छं० ॥१८॥
छिति छच बंधन व्याह। तिहि सुचर मंडल धाह ॥
वर मिलन बेस विरूप। चढ़ि चलन मनमथ भूप ॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह। दुअ नयर मंगल [5]धाह ॥
षट भाष भाषन जान। संजोग जोवन पान ॥ छं० ॥ २० ॥
बंधि षंड राज सुराज। कनवज्ज राजन साज ॥
धम्मारि काम विलास। संजोग रूप प्रहास ॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग। सुनि श्रवन भव अनुराग ॥
चित विलषि उलषि कुमारि। लगि पढ़न केलि धमारि ॥ छं० ॥२२॥
अस ससिर रिति अत्तीति। पति तात ग्रह छिति जीति ॥
संजोगि वारिय मंडि। दुज दुजन गंध्रव छंडि ॥ छं० ॥ २३ ॥
उअ मेह [6]मोर मराल। पष्पीप सह मराल ॥
उअ दष्प अंबर मंडि। मधु माधुरी सुव छंडि ॥ छं० ॥ २४ ॥

---

(१) मो.-काज। (२) ए.-संतन।
(३) ए. कृ. को.-ज्यों रुषमनी रू गुविन्द। (४) ए. कृ. को.-लार।
(५) ए. कृ. को.-धार। (६) ए. कृ. को. मोह।

इह लग्गि केलि अहार। तिय ताल तेह सहार॥
इह केतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिन षंडि॥ छं० ॥ २५ ॥
इय चंद एह प्रहास। घट एह मध्य दुवास॥
कनवज्ज राजन मभ्भिऊ। दिस षंड राइ सु मभ्भिऊ॥ छं० ॥ २६ ॥

श्लोक ॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तच गच्छति॥ छं० ॥ २७ ॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा ॥ सुअ संयोग [1]समुष्प सुष। दिष्प सभोजन राइ॥
अति हित नित नित्तह करै। तिय रयनी न विहाइ॥ छं० ॥ २८॥
सुअठ आरि अपनी करै। सरै न सोअह तात॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात॥ छं० ॥ २९ ॥
नेवज पुप्फ सुगंध रस। बज्जन सहु सुढार॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार॥ छं० ॥ ३० ॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी ॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धन्यौ देव पंचमि संजोग॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धन्यौ देव राजन सु मत्ति॥
छं० ॥ ३१ ॥

दूहा ॥ अति विचिच मंडप सुरँग। अंगन [2]सस सहकार॥
अध सु लाल कूंअरि पढ़त। सद्रिम प्रतंम सु मारि॥ छं० ॥ ३२ ॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप॥ छं० ॥ ३३ ॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप॥
जिन जिन भेद अभेद गति। अं जं मंडहि धूप॥ छं० ॥ ३४ ॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।

(१) को.-संमुष्प सुख। (२) ए.-तस।

अरिल्ल ॥ ए लज्जा सों लज्जहि बाल। दिगंबरह वस्त्रं गुन चाल ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग। वस्त्र रचै नहिं राचै जोग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन।

दूहा ॥ सो रष्यौ सुंदरि सु बिधि। मदन वृद्धि दिय हथ्थ ॥
सो कीनौ मदनं सुवृद्धि। अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्थ। मदन कीनी भंति वृद्धह ॥
जोग जिहाजन जाइ। ताहि जल मज्जित [1]सद्धह ॥
अति भय मित्तिय बाल। रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन घट धरै। देव वड्ढू दिषि लाजति ॥
आरंभ अंबता धाम मधि। अति विसुद्ध चिहु पास सषि ॥
संजीव जोग जंगम [2]सवै। तप सुतप्प मध्या सु लिषि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना।

दूहा ॥ लय लग्गिय भग्गीय गुन। अति सुंदर तिन साथ ॥
एक मत्त दस अग्गरिय। विनय पढ़ावत गाथ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पंचत अग्गरी। राज कन्य रज रूप ॥
तिन मध्ये मध्यात में। काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें दै दुजन बर। पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि। आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना।

आय सपत्तिय बाल बर। बेदिषि चष सह बाल ॥
मानौ रस अलि अलिनि कौ। लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सद्धिय। (२) ए. कृ.-वसे।

पढ़ि संजोग सजोग इत। विजय सु देवह दाव॥
चक्कइ चक्क सु बेन बस। दिषि संजोग अनहाव॥ छं०॥ ४२
जाम एक निसि पच्छिली। दुजनिय दुजबर पुच्छि॥
प्रात अप्प धर दिसि उड़ै। जे लच्छिन कहि अच्छि॥ छं०॥ ४३॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना।

कवित्त॥ इन लच्छिन सुनि बाल। न्रिपति करि रुधिर प्रकारह॥
बहु छत्रिय झुझिहैं। रुंड हरि हार अधारह॥
गिद्ध सिद्ध वेताल। करै छत्यह कोलाहल॥
इह लच्छिन सुनि सद्ध। बाल लच्छित जिन चाहल॥
संजोग फूल फल नन दियन। ए कन्या जिम प्रथम तिम॥
कलहंत राज छची सुबर। भविस बात होवै सु तिम॥ छं०॥ ४४॥

दूहा॥ तिन कारनहों जक्ष गुन। भुगति मुगति सह देन॥
सो कन्या पहुपग कै। आय सपत्तिय मेन॥ छं०॥ ४५॥
जयति जग्य संजोग बर। दिषि अंगन लष चार॥
एक अलष्यन भिन्नहै। सो कलहंतर साल॥ छं०॥ ४६॥
कलहंतरि सुंदरिय बर। अति उतंग छिति रूप॥
तिन समान दुज पिष्प कै। मदन लभ्भ तन [1]भूप॥ छं०॥ ४७॥

गीतामालची॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं।
लहु गुरु सुमंडित. अगन छंडित, दूह गाह, समुद्धरं॥
सक [2]सगन संचित, अगन बंचित, जगन मगन, प्रबंधयं॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहचल, छंदयं॥ छं०॥ ४८॥
छिति छच बंधति, चित्त बित्त, सु नगन निंधति, अंभयं॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष घटक सु संचयं॥छं०॥४९॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, थप्पि जोगय, भोगयं॥
इन काल विद्धं सद्ध सिद्धं, एक दोष संजोगयं॥

(१) को.-सूल। (२) को.-लगन।

मय मंत मंतिय, कांम कंतिय, विज्ज जंतिय उच्चयं ॥
जं कहै अच्छरि, पढ़ै तच्छिर, लिषै नच्छिर, मंडियं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पाषान लीहं, दीह तीहं, काम सीहं, विच्छुरै ॥
कवि करै कित्तिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय, उच्चरै ॥
छं० ॥ ५१ ॥

संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय। ग्रेह हिंडोल संजोगिय ॥
कनक डंड परचंड। इंद्र इंद्रिय बर जोइय ॥
परहि लत्त हिंडोल। दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक षंभ पर काम। चंद चकडोल फिराइय ॥
लगें नितंब बेनिउ [1]बढ़ि। सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही। कामय [2]वग्गी कर गही ॥ छं० ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥ पुत्ते अंब कदंब कुरंगा। तै किरपल पछै अनभंगा ॥
चक्रित बत्त सुनि बाल प्रकारं। सह सुंदरि सोभत सिरदारं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पंग बर व्याह क्रत। बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन। त्यों समुझै गुन चाह ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पंग। देव दक्षिन देवग्रह ॥
मेनहीन माननी। हीन उपजै अरंभ कह ॥
मनमोहन मोहनी। निगम करि बत्त प्रकारं ॥
आसमान इष्पियै। नाग नर सुर नहिं [3]भारं ॥
अष्पौ उमाह मंगलविनय। ध्रम्म सकल जिम सुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तिय सुबर। विधि विधान निरमान गति ॥
छं० ॥ ५५ ॥

(१) ए. कृ.-वेनी उवटि। (२) ए. को.-काम अवंगी। (३) ए.-नार।

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ।

वचनिका ॥ मदन दृष्ट बंभनी संजोगिता कों बिनय मंगल
पढ़ावति है। सु कैसो बिनय मंगल ॥

दूहा ॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल। सुकल सु जुवति चरित्त ॥
बिनय बिनय बंभनि कहै। बिनय सु मंगल वृत्त ॥छं०॥५६॥
*मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति। सुबर बसौकर चित्त ॥
सुनि बिचित्त बाला बिनय। श्रवन सवहिन चित्त ॥ छं० ॥ ५७ ॥

विनय मंगल की भूमिका।

चोटका ॥ प्रथमं उठि प्रात मुषं दरसं। उतमंग सुअंग पयं परसं ॥
बिनया गुन तुच्छ बिभच्छ मनं। हरहं जय काम सु ताम मनं ॥
छं० ॥ ५८ ॥
ग्रह गामिय रेनि परप्परसं। प्रगटी तय भावन ताम रसं ॥
द्रिग द्रप्पन लैह बदन्न [2]हसं। प्रति प्रीतय चारु चयं दरसं ॥
छं० ॥ ५९ ॥
भय कामिनि काम मनं वृतलौ। सिषि नासिष पानि कुअवृत जौ ॥
मन वृत्ति सु गत्ति मनं गहनं। रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं ॥
छं० ॥ ६० ॥
जियय जिय रस्स रसं रसनं। भय भौर उवृत्त पयं बसनं ॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं। जह ईजह दिट्ठित हीय [3]ससं ॥
छं० ॥ ६१ ॥
भुगतं बर अंन वरं विनयं। प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं ॥
भव रूप चिरूप तनं लहनं। अनि ईस नसीस समं वहनं ॥छं०॥६२॥
अनि पूज न जाप न ईसगनं। पति पूज मनोरथ लभ्भि मनं ॥
पिय दिष्पहि दिष्पि मुगद्ध मनं। वय बद्धिय ताम सुकाम बनं ॥
छं० ॥ ६३ ॥
बसनं रुचि पीय सुकीय घरं। तन मंडन भूषत ताम करं ॥

---

(१) ए.-सुद्ध। * यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है।
(२) ए. कृ. को.-इसं। (३) मो.-सरस।

गहनं रस सार शृंगार बनं । गति गंठिय ग्रंथ सु काम मनं ॥
छं० ॥ ६४ ॥
इति गत्ति चरित्त सुधाम धरं । सु जितै चिय कंत अधीन करं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन ।

दूहा ॥ जो बनाय बनिताहि बनिय । सषी न मंगल माल ॥
सषि आग्रह मानै नहीं । पिय छंडै ततकाल ॥ छं० ॥ ६६ ॥
उव निस बस दूती ग्रहन । [1]सषिन विलंब न बग्ग ॥
पियन पियहि अंतह करन । करहित सुभग [2]अभग्ग ॥ छं० ॥ ६७ ॥
धं धीरज विरहै बनह । आतमेछ अप सिद्ध ॥
तं तन मन मान न धरहि । करै सु कामह विद्ध ॥ छं० ॥ ६८ ॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना ।

मुरिल्ल ॥ तूं धनयं मनयं तुअ [3]मत्तिय । तूं हियय जियय तुअ गत्तिय ॥
तू बरयं धरयं तुअ तत्तिय । तू पिययं नियय निज रत्तिय ॥छं०॥६९॥
तूं ग्रहयं नरयं नय नत्तिय । तूं गनयं जपयं जक जत्तिय ॥
तूं सहयं वसयं घन घत्तिय । तूं दियय छियय छवि छत्तिय ॥
छं० ॥ ७० ॥
तूं सहयं दुहयं दुह कत्तिय । तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय ॥
तूं तपयं अपयं अप नत्तिय । तूं सयय नयय सथ सत्तिय ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना ।

कवित्त ॥ विलसि माइ भामिनिय । जाम जामनिय प्रमानहि ॥
विलसि काम कामिनिय । ताम तामिनिय प्रमानहि ॥
हों सुबंभ बंभनिय । रंभ रंभान सिषावन ॥
अवन मूढ़ मन मूढ़ । रूढ़ रंजन गहि दावन ॥

(१) मो.-सखिय । (२) मो.-अभंग । (३) ए. कृ. को. मुत्तिय ।

तन तुंग द्रुग्ग उग्गह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [1]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन चिषान चिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल बिना। भुगति बिन शंकर धारी ॥
मुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल दृथारी ॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि न्हिमान ग्यान बिन ॥
कित्ति न कर बिन लहिय। छित्ति बिन सस्त्र लहिय किन ॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष ग्रसिन तन ॥
[2]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा ॥ [3]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार ॥
मवरिय अंब [4]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [5]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार ॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार ॥ छं० ॥ ७५ ॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक ॥ मानं भंजन नेहमान [6]न्हगुना, सज्जन्न सा दुर्ज्जनं ॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं ॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नरुयं बुरं ॥
इक्कं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लघुं ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल ॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [7]स्थूल ॥ छं० ॥ ७७ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनइ। (२) ए. कृ. को.-सारसा।
(३) ए. कृ. को. निकर। (४) ए. कृ. को.-त।
(५) मो.-विनय सार सुक्कीय दिषि। (६) मो.-त्रगुना। (७) मो.-मूल।

विनय का गौरव।

एक विनय गरुअंत गुन। अब्बह विनयति सार॥
सीतल मान सु जंपियै। तौ बन दझै [1]तुसार॥ छं० ॥ ७८ ॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन।

विनय महा रस भंतिगुन। अवगुन विनय न कोइ॥
जोगीसर विनय जु पढ़ै। सुगति सलभ्भै सोइ॥ छं० ॥ ७९ ॥
विनय नहीं जौ पंषियन। तरु नहिं दोष दियंत॥
फल चष्पै पत्तइ हतें। मानय गुनय गहंत॥ छं० ॥ ८० ॥
एकै विनय सभग्ग गुन। तजत न विनय अरिष्ट॥
जाने घर सूना हुआ। भोइ नता करि मिष्ट॥ छं० ॥ ८१ ॥
मो पुच्छै जौ सुंदरी। तौ जिन तजै सुरंग॥
जिम जिम विनय आयासिहै। तिम तिम पिय मनपंग॥छं० ॥८२॥

कवित्त॥ विनय देव रंजिये। बिनय वह विद्य देइ गुर॥
विनय द्रव्य लहि सेव। विनय विष तजै अष्प सुर॥
विनय दत्त अदतार। विनय भरतार हार उर॥
विनय करह करतार। विनै संसार सार सुर॥
वय चढ़त चढ़ै विनया सुबर। सव शृंगारति भार वपु॥
बंभनिय भनै संजोग सुनि। विनय बिना सब आर तपु॥छं०॥८३॥

चौपाई॥ बंभनियं भनियं संजोई। वयसंध्या सु सुधा बुधि भोई॥
तूं सक सौतिन पिय बसि होई। विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही॥
छं० ॥ ८४ ॥

दूहा॥ विनय उचारन चाचु मुष। दिष्षिय सारन सार॥
कामत्तन सुद्धै सगुन। कंत करै उरहार॥ छं० ॥ ८५ ॥

चंद्रायन॥ काम धरा धरकंत सुरत्तौ। तब संजोगिनी बोल अहित्तौ॥
[2]अच्छिर छंद सु चंद विरत्तौ। सक्करया पय मुष्पह पित्तौ॥छं०॥८६॥

(१) ए. कृ. को.-तुषार। (२) ए. कृ. को.-अछिर छंद सुछन्द सु वित्तौ।

गाथा ॥ मुष पित्तौ पति रोगै । लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
जंतुर पये सुबाले । कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान ।

कवित्त ॥ एक काल सुंदरी । दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सड्डयौ । एक वनिया विचारी ॥
जिन चय किन्नौ मान । सुष्प तिन देह न लद्धौ ॥
अंतकाल संग्रहै । चित्त तन मोह विरुद्धौ ॥
जामंति अंति सा गत्ति हुई । ता मत्ती सारन [1]सुबर ॥
जरड्ड नरक बहु मोगि कै । जम्म लभ्भ पसु पंषि [2]तर ॥छं०॥८८॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता ।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस । सुष लद्धौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसौ । बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥
कवित्त ॥ ज्यों बिन दीपक ग्रेह । जीव बिन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिहून । कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्या बिन रजपूत । बुद्धि बिनु भोग न जानिय ॥
बेद बिना बर विप्र । करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [3]सुंदरि अधम । कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विनयौ बड़ौ । लहै विनयमंगल सुसुष ॥छं०॥९०॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती ।

गाथा ॥ [4]बेदयौ बंचितं विप्रं । भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब जंजार सु जानं । जुन्हाई नेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तं तू विनय बिहूंनी । युं दिट्ठाइ सुंदरी तनयं ॥
यो [5]वासंतति काल । पचं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनर । (२) ए. कृ. को.-तन ।
(३) ए. कृ. को.-सुभर । (४) ए. कृ. को.-वेदया वंचित विप्पो ।
(५) मो.-यौ बासंत सुकालं ।

दूहा ॥ बहु लज्जा कहि जात चिय । तन मंडन अवलान ॥
[1]काल बंसंत रु बाल ग्रह । सो मनिमंत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन ।

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय बंध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निक्काल । विनय संसार सूर [2]अब ॥
विनय बिना संसार । पलक लम्भै न सुष्य तनु ॥
जहां जाइ सो रिप्प । ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
नृप रीति विनय लग्गी रवनि । विनय उचारन चार रस ॥
विनय बिना सुंदरि इसी । सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥
सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुव्वन दिनन ॥
तौ पल्लै प्रतिपाल । विनय सु दृढ्य बंधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥
दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाष जस साष ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै । तिम लभ्भै अभिलाष ॥ छं० ॥ ९६ ॥
कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार । मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति । विनय बिन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उद्धार । पार कहुन रस होई ॥
गुनवंत निगुन सग्गुन अगुन । विनय बिना तन बालयौ ॥
गुन बिना धनुष क्रम बिन सुफल । [4]उभ्भर मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥
दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी । तिन पंनन प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥
गाथा ॥ बाले विनयति सारं । देहं मध्य तत्त ज्यौ जीवं ॥
त्यों जीवं सुष देही । विनय बिना बालयं नेहं ॥ छं० ॥ ९९ ॥
दूहा ॥ विनय सुरस बंभनि कहै । पढ़न सुपंग कुंआरि ॥
बलह बसि दूजैं सुबल । तौ बसि बलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

---

(१) मो.-काल वसै तरु बालग्रह । (२) मो.-रस, कृ. को.-सब ।
(३) मो.-तस । (४) ए. कृ. को.-उज्जर मढ़ ।

प्रथम सुरस हथ्थै अपन। तो हथ्थै अप पीव ॥
सुनि संजोग सजोग है। जोव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्य संजोग। पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय सजोग। तौय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय सजोग। अप्प छाडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग। दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी। बढ़ी मत्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडि मान क्रिमबीय चिय। तो ग्रह जोवन संचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कौनी कंत। विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै। सुष्य तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल। सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अमृत संग्रहौ। मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय विना नारीन क्यौं। बिनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय। विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं। अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
षट नवरस दुअ सद्दें। गारुड़ विना मंच साझरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सथ्थ जस जीव। विनय भोगवन सुष्य वर ॥
विनय देन रसषान। विनय आचरन अमृत धर ॥
अद्ध रयनि अंतरै। विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै। मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुक्कै न तूं। सुनहिं सुकी सुक अवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन। दिपित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पक्यौ संजोग सुभ। तन में विनय सुभंत ॥
ज्यों जल बलि जलहीं जियै। विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

इति विनय मंगल कांड समाप्त।

चंद्रायन ॥ सुनि संजोग सिधावन सावन संभरिय।
हीय हितानिय पीर न पावै बंझरिय॥
गुर [1]गुज्झं नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ।
अच्छिर अथ्थ प्रमान विराजत मभ्भ धुअ॥ छं० ॥ १०७ ॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना।

मुरिल्ल ॥ सुंधरता तर रत्तिर रत्तिय। दुज्ज दुजानौ वत्तर मत्तिय॥
प्रेाग प्रियं रज राजन मंडिय। जोहा जाम उभै षट [2]षंडिय॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना।

कवित्त ॥ मदन दृढ्ढ बंभनिय। मार माननिय मनोवसि॥
कामपाल संजोग। विनय मंगलति पढ़ति रस॥
तहां सहारंतर एक। अंग अंगन घन मौरिय॥
सुक पिक पंषि असंष। बसहि वासर निसि घोरिय॥
इक वार दुजी दुज सौं कहै। सुनहि न पुब्ब अपुब्ब कथ॥
उतकंठ बधै मन उल्लसै। रहहि नींद आवै [3]सुनत॥ छं० ॥ १०९ ॥

दुज का उत्तर।

दूहा ॥ दुज फुनि दुजि सों उच्चरिग। कहि राजन बर बत्त॥
जाग भोग जुद्धह जुरन। करन सु कारन हित्त॥ छं० ॥ ११० ॥

पृथ्वीराज का वर्णन।

कवित्त ॥ एक राव संभरीय। दुतिय जोगिनि पुर भूपति॥
तेज मौज अजमेर। उअर उदारति मूरति॥
बान मथ्थ वय मथ्थ। मथ्थ मह महि तन मोचन॥

(१) ए. कृ. को.-गुझ्झनन।
(२) मो.-घट पंडिय। (३) ए. कृ. को. सुनत।

छिति छितान धर भ्रम्म । भ्राम धर छिय रति रोचन ॥
छचि देव देव मंडल सभा । इक इक अष्पि अषंडलिय ॥
सुरतान बंधि षुरसान रति । मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना ।

दूहा ॥ सुनत कथा अछिवत्तरी । गइ रत्तरी बिहाय ॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभल्यौ । जिहि सुष अवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२ ॥
होत प्रात तब पठन तजि । धाइ हिंडोरन आइ ॥
इह चरित्त दुज देषि कै । पछ जुग्गिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४६ ॥



अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैंतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन दृष्ट ग्रह बंभनिय । पढ़न कुँआरिक इंद ॥
बार बार लोकन करहि । जिम नछित्र विच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्पन अप्पान सुष । सुष्प कि जुव्वन मेंन ॥
सुभर श्रवन साधिन करहि । ढुरि ढुरि पुच्छत नैंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]श्लोक ॥ प्राप्तं च पंग ग्रेहं । जग्य [2]जापय होमनं ॥
तच बंधं दंड देहा । राजा मध्य महावत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उड़ि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थइ ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित संभरी हतथान । वर मंच इष्ट संमान ॥
पते सुदिल्लिय थान । अपभेद किय परिमांन ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज सुक्कौ सार ॥
दिषि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्ध अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उड़ि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

---

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए.-जायं । (३) को.-कू.-पिथ्थिह ।

कवित्त ॥ कहैं सु दुज दुजनीय । सुनौ संभरि न्रप राजं ॥
तीन लोक हम गवन । भवन दिष्पे हम साजं ॥
जं हम दिष्पय एक । तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन बंभनिय ग्रेह । नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव । अवर सोभ तिन समुद बन ॥
आकास मद्धि जिम उडगनिन । चंद विराजै मनों भुवन ॥छं०॥८॥
दूहा ॥ मदन चरिच सु बंभनिय । मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बस्त कनवज्ज पुर । पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्पं । सिष्पं भेदाइ दुष्पनो जीवी ॥
दुष्पं संभरि राइं । कहियं आज आगमं नीरं ॥ छं० ॥ १० ॥
दूहा ॥ अप्पन तन छवि देषि कै । सुष भरि दिष्पी नाहि ॥
दुष्प संभरिय अनूरँग । वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥
कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ट । मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
मिलि नषत्र भंजनं । नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार । कह्यौ रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाह । होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति । विधि अनेक दूनंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट । संत सुमंत सु विस्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन ।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्रप । जनम पत्रिका बाल ॥
जन्म सुषादी उद्धरिय । को यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ । दुज्ज दुजराज कवथ्थै ॥
मंगल बुध गुरु सक्र । सन्नि सोमार चवथ्थै ॥
केइंद्री गुर केत । राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन लछिच दुज कहै । देव जगि पंगह ढारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि । काम गनं गुन विस्तरिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग महि । वर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥
श्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो चैव । राहकेतं नक्षचया ॥
पंगानी च जया पुत्री । मूल भारथ्थ मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना।

दूहा ॥ इह कहंत षट मास गय। लिषि अंकूरा बाल ॥
पच्छ दीय बर काढ़ि कै। लिषि जनमोति रसाल ॥ छं० ॥ १६ ॥

विनय मंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना।

पद्धरी ॥ लिषि छंद बंध जनमोति ताम। तिहि दीह धर्यौ बर वाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज। जानियै वीर बाला विराज ॥
छं० ॥ १७ ॥

तन चिगुन भए देवत्त लाज। आवंत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढ़न जंपन सुबाल। मंगलति विनय मंगल विसाल ॥
छं० ॥ १८ ॥

अनंगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन।

इह पढ़हि बाल अप ग्रेह थान। ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
बरजै न कोइ मंची प्रमान। जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छं० ॥ १९ ॥

सिंगार संग अनगेस राज। पायौ न पुच्च फल नीठ साज ॥
सत्तरिरू सत्त वर्षह रसाल। पयौ सुदीह अन्नं सु काल ॥छं०॥२०॥
आना नरिंद तस वंस राज। चिंत्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चिंतिय अचिंत मनि मित्त मित्त। जंघार भीम ओड़न विअत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥

अनगेस ईस अनगेत पुज्ज। लिषि भोज बंध प्रारंभ कज्ज ॥
छं० ॥ २२ ॥

दूहा ॥ अनग सपत्ता कथ्थ कथि। सोधि सु बंधव बीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन। को साधंन सरीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना।

चोटक ॥ मय मंत गुरू दस हार पयौ। सह कंकन चामर तीन नयौ ॥
षट हाटक चोटक छंद बली। सु कही कविचंद उपंग भली ॥छं०॥२४॥

जिन ठौर बरंजत मंच पयं। नन मानिय राज कथा न कथं॥
भिरि भंजय रंजय प्रज्ज सबै। जिन जाइ सु तिथ्थ अनंग अबै॥
छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लच्छि सुमंत मनं। उपजै तिम मद्धि विकार सनं॥
क्रत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ देवतयं॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई। कागद लिषि प्रोहित्त बधाई॥
तब राजंन सुनत लै लग्गी। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गी॥छं०॥२७॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देंदना।

भुजंगी ॥ लवं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी। ननं मंच मानै गुरं धीर कारी॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं बीर बीरं लघू दिव्य पानं॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं वंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं॥
झलक्के झँगूरं लिषे षेषि हथ्थं। हितं राज अंगं अनंगेस पुत्तं॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरब्बर काज॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगन बाज॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सोच सुवृत्त। राज पत्तौ सु धाम नृप॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिष्पयौ रजक अप॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्कि चल्ल्यौ सु तिथ्थ भ्रम॥
हेवर चीर रतंन। गयो बदरी सुवृत्त क्रम॥
यों मिले सब्ब परिगह नृपति। ज्यों जल झर बोहिथ्थ फटि॥
दिसि दिसा च्यार अचरिज्ज बर। बजि निसान नीसान घटि॥
छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ ऐरापति फनिगंगं । चामर मराल मालती पहुयं ॥
ता अंबीय प्रमानं । उज्जल कित्तीय सोमजा हूरं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं में सुविस्तिरत पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना।

अति कित्ती अति उज्जली । बरने वा चंद्रयो कव्वी ॥
जानिज्जै परिमानं । राजानं संमयो नथ्थिं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मंडल नृप देषि कै । चंद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चंद सरद कौ । संग उड़गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दै दुज्जनि दुज उत्तरह । दुहू रूप चमकंत ॥
कोइ कहै प्रतिब्यंब है । को कहै प्रीति अनंत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन।

कवित्त ॥ चंद बदनि म्रगनयनि । भौंह असित को वंड बनि ॥
गंग मंग तरलति तरंग । बैनी भुअंग बनि ॥
कीर नास ध्रगु दिपति । दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लंक श्रीफल अपीन । चंपक बरनं तन ॥
इच्छति भ्रतार प्रथिराज तुहि । अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह बरष पदंमिनी । हंस गमनि पिष्पहु न्रपति ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयःसंधि अवस्था होती है उसका वर्णन।

दूहा ॥ तिहि तन बन न्रप सों कहै । दुहुं अंतर सिसु बेस ॥
जुव्वन तन उहिम कियौ । बालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥

बालप्पन तन मध्य वय । गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों बसंत तरु पल्लवन । इछ उठ्ठन अंकूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥

बय बालप्पन मध्य इम । प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह । आभा उदित जोर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उण्हह हिम संधि॥
यों सिस जुव्वन अंकुरिय। कछु जुव्वन गुन बंधि॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर मैं। राति दिवस संक्रांति।
यों जुव्वन सैसव समय। आनि सपत्तिय कांति॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर॥
त्यौं सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्रम क्रम बनिता सु वय। सैसव मध्य रहंत॥
सौतकाल रबि तेज ससि। घामरु छांह सुहंत॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कबिचंद॥
पाव उठै तर छांह छबि। घोज न नीच रहंत॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति जंग सैसव सुबय। इह दिष्पिय उनमान॥
मानों बाल बिदेस पिय। आगम सुनि फुलिकाम॥ छं० ॥ ४५ ॥

गाथा॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्ये य सोभियं सारं॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उच्चयं होइ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दूहा॥ यों सैसव जुव्वन समय। विधि बर कीन प्रकार॥
ज्यों इथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राह रेह बल ताम॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अह संधि जिसें निसि संधि पाइ॥
जुव्वनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै निडर ताइ॥ छं०॥४८॥
सैसव सुससिर रितुराज थान। मानहिँ बसंत जुव्वन न आन॥
अनमंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कटक्ष सिसिरह बसंत॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नैन नचै नवाय। आवंत जुवन जनु करि बधाय॥
जिम सीत मंद सुगंध वाय। कछु सकुच एम बर करहि पाइ॥
छं० ॥ ५१ ॥

जुव्वन नवत्त सिसु सरिर मंद। विरही सँजोग रस दुअनि छंद॥
मौन मन मंत महि सुनि बसंत। जुव्वन उछाह सिसु सिसर जंत॥
छं० ॥ ५२ ॥
अंकुरिन पत्त गहुरित डार। सिसु मध्य स्याम ज्यों सोमि सार॥
पिय ओर पिया जिम दिष्पि लुक्कि। सिसु मध्य वेस इम आइ ढुक्कि॥
छं० ॥ ५३ ॥
उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ। जिम मैंन मोज जुव्वन सउट्ठ॥
कलयंठ कंठ रष्पै संवारि। मिलिहै बसंत करिहै धमारि॥छं०॥५४॥
चिय तरस पुच्छ उट्ठीय कोर। जल मीन जाल ज्यों इलत डोर॥
मुक्कलित वाय तरु इलत छीन। त्यों काम तेज चलि नेन मीन॥
छं० ॥ ५५ ॥
संजोगि अंग जोबन चढ़ंत। तहं उट्ठि ससिर आयौ बसंत॥
वयभोग बुद्धि सुंदरि सहज्ज। रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज॥
छं० ॥ ५६ ॥

दूहा ॥ जनम सुष्प जोबन जई। उई सु सैसव ठार॥
संभरि न्रप संभरि धनी। तनह सु भौ रति मार॥ छं० ॥ ५७ ॥
सजि सुपंग राजा सुभर। दिसि दिसि जित्तन वान॥
उभै दिसा बर मंच जित। अठ्ठदिसा भर षान॥ छं० ॥ ५८ ॥

संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त ॥ एक सु पुचिय पंग। दीय दच्छिन सु देव ग्रह॥
मान हीन माननिय। रूप उप्पम रंभा कहि॥
सुबर काम रति बाम। मनों फेरिय सो आनिय॥
कमल अनूपम काज। कछू ओपम मन मानिय॥
लच्छन बतीस वयसंधि इह। सो ओपम अग कथ्ययौ॥
चढ़नह सुमनमय चित्त रथ। चढ़न मत्ति चित रथ्ययौ॥
छं० ॥ ५९ ॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी ॥ संजोग संधि जोबन प्रवेस। चितमंडि सुनौ संभरि नरेस॥

श्रीषंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु करी कर मरदि लंग ॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नष्प आवै न कब्बि। तिन पड़ी होड़ मयुषन सरब्ब ॥
इक अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकन तेज द्रप्पन सु मुत्ति ॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग झलकत सु रूर। मनुं रत्त रंग कंचन कि चूर ॥
ओपम्म नष्प फिरि कहि उपाइ। कन्नैर कली फूलंत राइ ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत बाम। अँभ ओन षंभ सोवन्न बाम ॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै ओन रंग ॥
छं० ॥ ६३ ॥

निस्तंब तुंग इन भाइ कब्बि। धरि चक्र सँवारि दुज बाम रब्बि ॥
निस्तंब भाग उत्तंग छंड। मनुं तुलत काम धरि जंक दंड ॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान मुट्ठीत घट्टि। बैनी ढलक्क दीसंत पुट्ठि ॥
चिंतै सुकब्बि ओपंम ओर। नागिनि सु हेम षंभह सुजोर ॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विसार ॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार ॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग ॥
जोवन प्रसंग इह रूप हद्द। छुर करी हरी मुक्कै मसद्द ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान मत्ति। जब लग्गि आन सैसव किरत्ति ॥
अधबीच बात हम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे चिवलीय चाह। बैठोति चंद आसनति राह ॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद अंग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनुं अगर चंद मिलि संग कीन॥
मधु मधुर बानि सद सहति रंग। कलयंठ कंठ केकीन लंघ॥
छं० ॥ ७० ॥
बर दसन पंति दुति यों सुभाइ। मोइक चंद जुन्नन बनाइ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवन न्विघ्घात पाइ॥
छं० ॥ ७१ ॥
सुंदरि बदन दुनौ बनाइ। मानों रथ्थरवि दीपह मनाइ॥
कहां लगि कहों चहुआन बाम। सैसव सुबाल कंपैति काम॥
छं० ॥ ७२ ॥
अंबुज नयन्न मधुकर सहित्त। पंजन चकोर चमकंत चित्त॥
बैनौति साल सोभै बिसाल। मनों अरध उरग चढ़ि कनक साल॥
छं० ॥ ७३ ॥
दूहा॥ इह सुनि न्वपति नरिंद दिन। भय श्रोतान सुराग॥
तब लगि पंग नरिंद कै। बाजे बाजन लाग॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्कै राज॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरिच चिंतै मनह। सोई रूपक [1]राइ॥
न्विप अग्गै हर बंधि कै। कल कनवज्जह जाइ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त॥ भय अनंग न्वप अंग। श्रवन श्रोतान सु बद्धिय॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दद्धिय॥
मध्य हिय न छिन टरहि। श्रवन मन नैंन निरष्पै॥
चित्त गयंदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्पै॥
संभरि सुवत्त संभरि न्वपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। बढ़िय ओतान कस न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रष्योति मद्धि मन॥
फिरै संजोगिय पास। और रस मुक्किलि राजं॥
देउं द्रव्य मन बंछि। जाइ प्रमुधै चिय आजं॥
दुज चलै उड्डि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्त बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुनिय॥छं०॥७८॥

सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सबद उच्चै कहै। कब कहि नीचं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तब करि उंचे नैन॥ छं०॥ ७९॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंग कुमारि॥
कोन देस को भेस बनि। क्यों आवन सु विचार॥ छं०॥ ८०॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। घुरसान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं०॥ ८१॥
बर तेज ओज जमजोर जोर। अरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन हद्द॥
छं०॥ ८२॥
इह जोग बीर सुवीं न बीर। बेधत्त सत्त बर एक तीर॥
कनवज्ज रीति बजि जेय कंध। इह धक्कि राज सह होइ [1]निंध॥
छं०॥ ८३॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए.-निंद।

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मो सुतं ॥
बाने पार्थिव भूपति समुद्दिता, मानेषु दुर्योधनं ॥
तेजे हूर समं ससी अमिगुनं, सत् विक्रमो विक्रमं ॥
इंद्रो दान सुशोभनो सुरतरूं। कामी रमावल्लभं ॥ छं० ॥ ८५ ॥

दूहा ॥ दुज्ज सुकही उप्पम भली। कथा सु उत्तम रीति ॥
बढ़ि आनंद सु छंद नन। सुनिग रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा अलिय जु श्रवन। द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोबन बिचै। बाल बसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना।

जिमि जिमि सुंदरि दुजि बयन। कही जु कथ्थ सँवारि ॥
बरनन सुनि प्रथिराज कौ। भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥

असन सेन सोभा तजी। सुनित श्रवन्न कुंआरि ॥
मन मिलिबे की रुचि बढ़ी। और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

गाथा। अमिए अंमिय बचने। रचने बाल ध्यान प्रथिराजं
गोलक डुलै न थानं। जानै लिष्पि चिचयं चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान। सुनौ सुनि मान कथा चहुआन॥
इकं इक बत्त सबै न्रप पाइ। सबै चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥

सकंबिय विक्रम ज्यों परमान। सतं सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
बलह्यै बाह सहस्रयराज। प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥

विधिं विधि भागति पूरन तेज। ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचंद समान। बलबुद्धि साइर ज्यों उनमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥

रसं रज राजत जोति प्रकार। भयंकर भीषम ज्यों करसार ॥

सयंक्रत पालग पंचव जोति । तिनं मति एक अमंतिय कोति ॥
छं० ॥ ९४ ॥

प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज । करौ कविचंद सु ओपम साज ॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर । तिनै बर विद्र बरष्यत नीर ॥
छं० ॥ ९५ ॥

धराधर हिंम सुतं लछिराज । उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय काज ॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा ॥ या समान जौ राज होय । तौ कहियै प्रति जोति ॥
ना समान चहुआन कौ । तौ कहि ओपम कोति ॥ छं० ॥ ९७ ॥

कंत सुकंति सु दिष्पि इम । दुहु ओतान बढ़ाय ॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल । वृत्त अवृत्त समाय ॥ छं० ॥ ९८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ सीय लीय वृत राम । सुवृत नलराज दमंती ॥
सिव वृत लीनौ सिवा । छष्ण वृत रुकमनि कंती ॥
वृत ज्यों कालौ धर्‌यौ । बीर बाहन शंकर बर ॥
ज्यौं वृत लिय वृतभान । भान पत्तौ सुमंत वर ॥
वृत लियौ देव देवत नृपत । वृत सँयोगि चहुआन वर ॥
बर बरौं एक एकह सु वृत । कै चहुआन बिसान नर ॥छं०॥९९॥

मन अभिलाष सु राज । बरन सुंदरी भइय मति ॥
जौ तन मध्यें सास । मोहि संभरिय नाथ पति ॥
कै कुआंर पन मरौं । धरौं फिरि अंग पहुमि पर ॥
तौ राजा प्रथिराज । आन मन इंछ नहीं बर ॥
इम चिंत चित्त कुंअरी सु वृत । रही भोइ मन मोन अहि ॥
कलहंत बीज महि मंडि दुज । अप्प सपत्ते ग्रेह कहि ॥छं०॥१००॥

दूहा ॥ यों वृत लीनौ सुंदरी । ज्यों दमयंती पुन्न ॥
कै इयलेवौ पिय करौं । कै जल मध्यें दुन्न ॥ छं० ॥ १०१ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ बिय पंगानि कुमारि सुमार सुमार तजि ।
घरी पहर दिन राति रहै गुन पिष्थ भजि ॥
भेदं भंजै और जोर मन में लजिहि ।
लषि पुच्छहि चिय वत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत। मधु माधव वल मंडि ॥
भार अष्टदस बेल तरु। पच पुरातन छंडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मंजरि धरिय। परिमल प्रगटि सुवास ॥
छच रुचिर छवि काम जनु। अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥
पद्धरी ॥ आगम बसंत तरु पच डार। उठि किसल नद्दय रँग रत्त धार ॥
अंकुरित पच गहरति डार। लहलहति जंग अट्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥

मधुपुंज गुंज कमलनि अधीन। जनु काम कोक संगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार। विरहिनी दीन दंपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥

कलरव करंत षग द्रुमति रोर। निसि बीति सिसिर रतिराज भोर ॥
चिय पुरुष चषनि रुचि अनँग बड्ढि। दंपति अनंग विरहिनी जड्ढि ॥
छं० ॥ १०७ ॥

द्रुम अवनि राजरित गवन कीन। नव मुग्ध मध्य कंतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायंत नारि। मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥

तन भरति रत्त रंग पीत पानि। हिय मोद प्रगट तन धरत जानि ॥
द्रुम द्रुअ वसंत आगम अवद्धि। मदमत्त करिय जनु गवन वद्धि ॥
छं० ॥ १०९ ॥

मसि भौंज दिननि पिअ तन बनंग। अवतार अवनि जनु धरि अनंग ॥

मुष हर्ष गंड मंडल प्रकास । फरकंत अधर मधु रस विलास ॥
छं० ॥ ११० ॥
विगसंत कमल छवि नयन मंडि । बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि ॥
मधुमास सुक्ल निसि रुचिर चंद । बहि गंधपवन छवि सीत मंद ॥
छं० ॥ १११ ॥
हुअ रोम पंचसर अंच देह । कलमलिय ज्वलिय बनिता सनेह ॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन । सुभ सोभ बाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥
सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ । जल्लैव इक्क अँग पवन पाइ ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल । निरषंत नयन सोभा बिसाल ॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन ।

दूहा ॥ उपबन घन बहुल बरन । सीत पवन द्रुम जाल ॥
चिचरेष बल्लिय बिटप । अवलंबि ताल तमाल ॥ छं० ॥ ११४ ॥
तरु तल जल उज्जल अमल । टपकत फल रस भार ॥
कुंज कुंज विगसत बसन । तन बढ़ि धात अपार ॥ छं० ॥ ११५ ॥
पतत पच नहिं धर रहत । बानक बान उजास ॥
चंद जोति जल बानि बनि । होड़ होत रस भास ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ फलन भार नमि साष । जीभ रस स्वाद विवस षट ॥
सुमन सघन बरषंत । गीत संगीत कोक रट ॥
बँधि चहबच्चनि नीर । छब्बि छचन रंग धानिय ॥
मंडित मंडप गौष । सुभग सालनि छवि ग्यारिय ॥
संभरिय राव बैठक बनक । कनक अलक कंचन पुरिय ॥
प्रथिराज मुदित मादक तनह । बाज राज नंष्यौ तुरिय ॥ छं० ॥११७॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना ।

कट्टि धरनि षुरतार । भार भर सेस ससंकिय ॥
उड्डि नाल असमान । उग्गि आकास चंद विय ॥
पत पंषिय भर हरिग । अंग थर हरिग रष्षि कन ॥

इक्क अवन झंझरिग। कठिन कवियान अष्प तन ॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि। विफरि अंग तूरिय सु रहिय ॥
सोमेस हूर चहुआन सुष। तास कित्ति चंदह कहिय ॥छं०॥११८॥

बाग गिरद बर कोट। तास दरवान हुकम किय ॥
एकाकी हम रमत। कोइ न आवंन लहै बिय ॥
बैठि दरह दरवान। आनि जमदंड हथ्थ धरि ॥
पिथ्थ करह कम्मान। टंक पचीस जीर जुर ॥
लग्गे सु फिरन द्रुम द्रुम निकट। जपनौ जष दरसन भयौ ॥
देषंत सोभ भुल्लिय नयन। मेंन रत्ति आनँग ठयौ ॥ छं० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप।

दिष्पि जष्प प्रथ्वनाथ। हाथ जुग जोरि नवनि किय ॥
कवन काज इत अवन। नाम तुम कवन पुरुष चिय ॥
जष्प नाम दुष दवन। नाम रवनौ रस वल्लिय ॥
नाटिक विविध विचिच। करन आगम रस रल्लिय ॥
सिर नाइ पिथ्थ कौनिय नवनि। कछू मोहि अग्या कहौ ॥
सुह गंध धूप मिष्टान फल। करौं प्रगट बन पुर लहौ ॥ छं० ॥ १२० ।

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हौ।

दूहा ॥ कहिय जष्प प्रथिराज सम। बानक इक्क अनूप ॥
दुरि पिथ्थो द्रुम सघन तर। तुम कोइ भूप अनूप ॥ छं० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना।

पद्धरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन। सुगंध धूप रस कल रसीन ॥
आवत्त वस्त लग्गै न वार। जहं तहँति आनि कीजै अमार ॥
छं० ॥ १२२ ॥

सुष होत हुकम सेवक प्रवीन। सब वस्त आनि अम्मार कीन ॥
भरि कनक कुंड बर कासमीर। स्रिगमद जवादि अनपार भीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥

कर्पूर कलस तहं धरिय आनि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान॥
केतकि कमल्ल केवर कुसुम्म। मालती बेल जाती सुरम्म॥छं०॥१२४॥

चपक्क फूल पड्डुर अपार। जहं तहँति आनि किंखे अमार॥
तंबोल तच बानक अनंत। वुध विविध आहि भूलत गनंत॥
छं० ॥ १२५ ॥

दारिम्म दाष केला रसीन। अषरोट नासपाती नवीन॥
नारियर पिंड पज्जूर आनि। विज्जौर और फल विविध बानि॥
छं० ॥ १२६ ॥

घृत दुग्ध मिश्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि। दुरि बैठि पिष्थ इक दृष्ठ ओर॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा॥ निमष होत गंधव्व इक। सँग नाटिक आरंभ॥
तंतिताल बीना मृदंग। सँग अच्छरि लिए रंभ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी॥ कुमकुमनि नीर कर मुष पषारि। अचवंत अमिय बर गंगधार॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तंबोल बरनि कर्पूरषंड। फुनि कले न्वित्य नाटक मंडि॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच हथ्थन धरंत॥
छं० ॥ १३० ॥

कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म षंडि॥
छं० ॥ १३१ ॥

जब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारद नाद तंती अधीन॥
रस सरस हास बरन्यौ न जाइ। सुभ कर्म्म धर्म्म सुअ सोम पाइ॥
छं० ॥ १३२ ॥

नाटक्क उट्ठि फुनि बैठि देव। करि भोग भोज मिष्टान सेव॥
हुअ चपति अंन कर्पूर मंडि। तंबोल तच कर बिरा षंडि॥
छं० ॥ १३३ ॥

सब सथ्थ बहुरि इक रह्यौ जथ्थि। तिहि सथ्थ इक गंधब्ब इथ्थ॥
तिहि कह्यौ जथ्थ रस रह्यौ आज। इह कवन आनि सब सँचिय साज॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जथ्थ जिहि कत्त काम। सोमेस पुत्त प्रथिराज नाम॥
गंधब्ब कही मुष प्रसन होइ। इक देउ मंच तन अभय सोइ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जथ्थ लीन प्रथिराज ताहि। मन मुदित अंग मुष रहे चाहि॥
गंधब्ब मंच दीनौ स धीस। सिर धारि हथ्थ दीनौ असीस॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जथ्थ बहुरे अकास। तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४७ ॥



अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अड़तालिसवां समय।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजे जाना।

कवित्त ॥ राज राज सब काम। करें राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु जंच। अब्ब कामह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म। बाज गज क्रम परिहारं ॥
देस देस फुरमान। दिए पहुपंग अपारं ॥
मंची सुमंत मति बंधि कै। सबै देस फौजें फटी ॥
बर किति करन जुग जुग लगै। दूह कमंध जैचँद यटी ॥छं०॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन।

नराज ॥ छियंत सोधि राजह्ह जुराज जग्गि जोगयं।
सवस्स राज सामदंड भेदि बंध भोगयं ॥
सु दान मान अप्पि पान दैवयं न बोधयं ॥
सवर्त्त वत्तमान रे अनेक निद्धि सोधयं ॥ छं० ॥ २ ॥
सुवन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठयं।
रजक्क भार कोटि एक धातु भार नाठयं ॥
तुरंग भार लाषए गजेंद्र ग्रेह लष्पयं।
कपूर कासमीरयं अनेक भार सष्पयं ॥ छं० ॥ ३ ॥
पटंबरं स अंबरं सुगंध धूप डंबरं।
सवत्त लाष च्यारि वा सदासि [1]नेस अंतरं ॥
सुमंत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न संतरं ॥
.... ॥ छं० ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए.-नेम।

षटानु अंस भाग विप्र संभने सुपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दोंन वेद वान अप्पयं ।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
विचारि वीर राजसू जयंति [1]जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेंबर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय । जहां विविध विधि [2]भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छ सेा ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्रप डंच मति । रहै सु रष्यौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥
गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । बज्जाए दीह दसहांइं ॥
विपफुरें जास कित्ती । तेगया न विगया छूंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल । चढ़वि हैं वै अभंग भर ॥
सुगत माल द्रगपाल । जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग । जग्य करनह अधिकारे ॥
चिहुं तेज चक्क ससि काल ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार मान न्रप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥
गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि। (२) ए.-जोग।

पद्धरी ॥ उच्चरै वीर पहु पंगराइ । हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
मुक्कलै दूत बर मंच काज । मातुलह बंस प्रथिराज राज ॥छं०१२॥
हिंदू न जानि गुरु गुरुअ पत्ति । चिचंग राइ साहसह हत्त ॥
धर धरनि बंटि बिभ्भाइ लच्छि । जानै सु राज जिन तजो गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
बंधौ समेत जिन बलह भूमि । बरषै सुराज तामस [1]अनूमि ॥
बर मिलै आइ पहुपंग पाइ । ढिल्ली समेत सोरों लगाइ ॥छं०॥१४॥
अप्पै ज भूमि तुम सेव जाइ । .... ॥
जिम जिम सु बमौ तुम चित चढ़ंत । तिम तिम सु दान पंगहु बढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर षेद जिन करौ चित्त । अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त ॥
को करै पंग सों बल प्रमान । दिष्यौ न तीन लोकह निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अब अमित मंत दूह तत्त जानि । गुरूबत्त तत्त मंची सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि रु परधान तब्ब । पहुपंग राइ बर हुकम सब्ब॥छं०॥१७॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा ।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क । इक्कि बंसह निरधारिय ॥
आदि बंस कमधज्ज । बरन छत्रिय अधिकारिय ॥
तुम संभरि चहुआन । बसौ अजमेरति बीरं ॥
पंग देस सब भूमि । मँगै सो अब्ब उरीरं ॥
यों कियौ मंत ग्रह अप्प बर । सुमति बोलि परधान न्रप ॥
छिति मत्ति छित्ति जीपन धरा । सुबर ह्वर साहस सु तप ॥छं०॥१८॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना ।

(१) ए. अनूमि ।

पद्धरी ॥ थप्पै सुभट्ट राजह्न पंग । नर हरै पाप करवत्त गंग ॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलैति वेद । तन करै त्रिमल अघ करै छेद ॥
छं० ॥ १९ ॥

ग्रह ग्रहन हेम कसि कसि सु नारि । मानों कि ह्वर ससि छिन्न तार॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत बसि बरुन आइ ॥
छं० ॥ २० ॥

ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान । कैलास सिषर प्रतपै सुभान ॥
ग्रह ग्रहन गौष रथ्यत बनाइ । कैलास डरह ससि अस्त पाइ ॥
छं० ॥ २१ ॥

ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ । कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ ॥
*कलि अंत पथ्थ कनवज्ज राइ । .... छं० ॥ २२ ॥

सतपती सील धर धम्म चाय । सुनि रोस कियौ पहु पंग राय ॥
मागधहु ह्वत बंदनि बुलाय । .... छं० ॥ २३ ॥

पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब । इम बंस जग्ग किहि कियौ पुब्ब ॥
जिहि बंस जग्ग नन होइ राज । भुगतौ न भूप सुष सर समाज ॥
छं० ॥ २४ ॥

तुम बंस भए कमधज्ज ह्वर । कीनौ सु राज राजस्स भूर ॥
तब बंस भयौ बाहन नरिंद । अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद ॥
छं० ॥ २५ ॥

तुम बंस भयौ पूरूर 'रूर । रथ चारि चक्क जिहि जीति ह्वर ॥
सतसिंधु ह्वर जिह रथ्थ चील्ह । तुम बंस भयौ ह्वप राज नील॥
छं० ॥ २६ ॥

तुम बंस भयौ नलराइ अंद । नैषद्ध हार हौं धर्‌यौ बंध ॥
पट चक्क भए कमधज्ज आदि । किन्नौ नरिंद जिह बरुन बाद ॥
छं० ॥ २७ ॥

जीमूत धर्‌यौ जिहि चक्क सीस । संसार कित्ति कीनी जगीस ॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अंश खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है।

को कहै पंग सों दुष्ट आय। मंडै सुजग्ग निहचैत राय॥
छं० ॥ २८ ॥
बारुन्न भूमि हय गय अनग्ग। परठंत पुन्न राजसू जग्ग॥
सोधिग पुरान बलि बंस बीर। भूगोल लिषित दिष्पित सहीर॥
छं० ॥ २९ ॥
छिति छत्र बंध राजन समान। जित्तेति सकल हय गय प्रमान॥
पुच्छै सुमंत परधान तब्ब। अब करहु, जग्ग जिम चलहि कब्ब॥
छं० ॥ ३० ॥
उत्तर स,दीन मंची सुजानि। कलिजुग्ग नाहि विय जुग प्रमान॥
करि ध्रम्म देव देवल अनेव। षोडसा दान दिन देहु, देव॥
छं० ॥ ३१ ॥
म्रो सीष मानि नृप पंग जीव। कलिजुग्ग नहीं अर्जुन सु भीव॥
झुकि पंगराव मंची समान। लहु, लोह अब्ब बोलहु अयान॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना।

दूहा ॥ पंग वचन मंचीस उर। मन भिट्यौ न प्रमान॥
ज्यौं सायक फुट्टै नहीं। गुरु पथ्थर परजान॥ छं० ॥ ३३ ॥
पंग परठ्ठिय जग्ग जब। बत्त विविध धर बज्जि॥
बर बंभन दिन धरहु, सुभ। लगन महूरत रज्जि॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना।

मानि हुकम पहुपंग कौ। चलि मंची बुधि बीर॥
कै साधै चहुआन कों। कै धर बंटै धीर॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज बचन सेवक सुध्रम। तुत्व बचन करि जानि॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा। संभरि वै परिमान॥ छं० ॥ ३६ ॥
भुजंगी॥ संभारियं राज चित्तं पुनीतं। जहा साधियं मंच मंची अनीतं॥

मनं दत्त जान्यौ व्रितं बक्क सूरं। मनौं साधनं दत्त संसार चूरं॥
छं० ॥ ३७ ॥
न्विपं ध्रम्म जानैं इसे सूर पांचौ। मनौं पंग देही दुती अंग सांचौ॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना।

दूहा ॥ मुक्कलि धर पत्ते न्हपति। दूत सु ध्रम्म सुचार॥
मनौं पंग देही दुती। सुबरि बुद्धि उद्धार॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना।

कवित्त ॥ मिलत राज प्रथिराज। करिय आदर अधिकारिय॥
देव भगति परमान। देव जिम जचत सु चारिय॥
बर मिष्टान सु पान। मध्य अम्रत फल धारिय॥
रंग रंग घनसार। अंग मृगमद अधिकारिय॥
मतवंत दृत्ति छोड़ें नहीं। डर न चित्त नन उच्चरहि॥
षट द्योंस गए बित्तें सुभर। दै कग्गद गुन विस्तरिय॥छं०॥४०॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना।

कवित्त ॥ हरन दच्छ ज्यों जग्य। सेव कीनी कुवेर वर॥
यों सेवा प्रथिराज। जानि पहुपंग करै नर॥
भगति भाव विश्राम। ताप जप जाप देव सम॥
षट सुदीह कग्गर प्रमान। उच्चर्यौ बीर धम॥
जं कह्यौ जुद्ध जैचंद बर। विधि विधान निरमान गति॥
जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ। कह्यौ राज राजन सुगति॥ छं० ॥ ४१ ॥
साटक ॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुभ्भवै गंधव गुरं॥
सोयं ता परचंड देवि बलयं, पंचे छठं [1]बंधवं।
नायं भीम द्रुयोध भूमित बलं, एवा किता अग्गजं॥
सोयं मंगय राज राजन बरं, मातुल्ल मातुल वरं॥ छं०॥ ४२ ॥

(१) ए.-बंधकं।

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना।

पद्धरी ॥ तिहि मंत काज प्रथिराज राज। बोले सु बीर भर बर विराज ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सत्त। इक अंग अंग पंचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा धम्म सूर। देषत नरिंद बल करि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज। आहुट्ठ मभ्भ सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद। आरंभ सलष पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारौति भुम्मि। साइरह मद्धि नमनद्धि घुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि। भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छच्च छित्ति निद्दुर नरिंद। जैचंद बंध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू पट धम पवित्त। बोलए अवर जैमंत सत्त ॥
इहि विधि प्रमान सामंत रत्त। बोलै न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब। अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्प बर। लष्प लष्प सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजसू जग्य। आरंभ रंभ कीनौ अचग्ग ॥
जित्तए राज सब सिंघ बार। मिल्लए कंठ जनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद। आवहि न माल मभ्भह अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ। असमथ्थ सेस किम भूमि षाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

बंधो समेत सामंत सथ्थ। उत्तरहि आनि दरबार अथ्थ ॥
सुनि दूत चले दिल्लिय सु थान। आजानबाहं जहं चाहुआन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

पहुंचे सु इंद्र पथ्थह सु थान। गुदराइ बत्त जैचंद नाम ॥
हज्जूर बोलि पठाय राज। क्यों आइ इत्त सो जंपि काज ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द का संदेसा कहना।

तब दूत कहिय दिल्ली नरेस। आएस जंपि जैचंद नरेस ॥
राजसू जग्ग आरंभ कीन। दस दिसन भूप फुरमान दीन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

छिति छत्र बंध आए सु सब्ब। तुम चलहु बेगि नह बिरम अब्ब ॥
फुरमान दीन चहुआन तोहि। कर छरिय दाबि दरबान होहि ॥
छं० ॥ ५४ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह। संकरै सिंघ गुर जननि चाह ॥
उच्चरे गरुअ गोयंद राज। कलि मभ्भ जग्ग को करै आज ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सतजुग्ग कहहि बलिराय कीन। तिहि कित्ति काज चिहु लोक दीन ॥
चेता सु कीन रघुवंसराइ। कुब्बेर कनक बरष्यौ सु आइ ॥
छं० ॥ ५६ ॥

धर भ्रम्म पुच द्वापर सु नाइ। तिहि पथ्थ बीर अरु हरि सहाइ ॥
[1]इस दर्व गर्व तुम अप्रमान। बोलहुत बोल देवन समान ॥
छं० ॥ ५७ ॥

(१) कु. दल।

जानौव तुम्ह षची न कोइ। निरबीर पहुमि कबहूं न होइ॥
जंगलह वास कालिंद कूल। जानै न राज जैचंद भूल॥
छं० ॥ ५८ ॥
जानहित देस जोगिन पुरेस। आनल्ल बंस प्रथ्थिय नरेस॥
कै बार साह बंधयौ जेन। भंजिय सु भूप भिरि भीमसेन॥
छं० ॥ ५९ ॥
संभरि सकोप सोमेस पूत। दामित्त रूप अवतार भूत॥
तिहि कंध सीस किम जग्य होइ। जो प्रथिय नहीं चहुआन कोइ॥
छं० ॥ ६० ॥
देषी सु सभा तिन सिंघ रूप। मानै न जग्य मन अन्य भूप॥
आदरहु मंद उठि चलि बसीठ। ग्रामिनौ सभा बुधजन बईठ॥
छं० ॥ ६१ ॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना।

कवित्त ॥ मन विचारि बस्सीठ। आप आयन दै तारी॥
बंछै जंबुक मरन। बथ्थ पंचानन भारी॥
मरन लोइ बंछैत। हथ्थ जमदथ्थह षोलै॥
अजा मरन बंछैत। बार दीपौ संग डोलै॥
बंछई मरन कातर वितर। सूर हक्क पच्चारई॥
गामौ गमार घर बैठि कै। पंग राइ बक्कारई॥ छं० ॥ ६२ ॥
दूहा ॥ जौ बरपंग नरिंद है। हौं जानू बर जोर॥
ज्यौं अगस्ति सायर पियौ। त्यौं ढिल्ली धर तोर॥ छं० ॥ ६३ ॥
जोवन वैबर बिनै बर। कहै पंग सों अज्ज॥
मंत अवैठौ गैठ है। आन मान कमधज्ज॥ छं० ॥ ६४ ॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना।

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज मंझ । भय मलिन मुष्प जनु कमल संझ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन । अति रोस कौन रग तैत नैन ॥

छं० ॥ ६५ ॥

बुल्यौ सुमंत परधान तब्ब । कनवज्ज नाथ करि जग्य अब्ब ॥
बोलै सुमंच मंची प्रमान । उद्धरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥

छं० ॥ ६६ ॥

बालुका राइ बोल्यौ हकारि । साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
घुरसानघान बंदेति मीर । सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥छं०॥६७॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार । अप्पैति मेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार बज्जेति चंग । बज्जी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥

छं० ॥ ६८ ॥

घोषंद बाद बालुकाराज । रप्पियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन बाहि । तब लग्गि ताहि टरि काल जाहि॥

छं० ॥ ६९ ॥

ए आसमंद न्रप करहि सेव । उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि । थप्पियै पवरि दरबार बानि ॥

छं० ॥ ७० ॥

सेंवर सँजोग अरु जग्य काज। बुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंचौन राव परमोधि जामि। घुम्मे सबार नीसान ताम ॥

छं० ॥ ७१ ॥

सब सदन बंधि बंदरनि बार । काटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अचार । आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥

छं० ॥ ७२ ॥

धवलियै धाम देवल सु चीय । तम हरन कलस रविबंब बीय ॥
धज मगन रोर जनु मधु अछीय । जनु रचिय बंभ कैलास बीय ॥

छं० ॥ ७३ ॥

इक बार संजोइय सषिन प्रत्ति । मुसकाय मंद इह कहिय बत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति । बदलीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥

छं० ॥ ७४ ॥

संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का संचार होना।

गाथा ॥ बंबूरे मलय मरुतं। जगुरे पिक पराग पर पंचं ॥
उतकंठं भार तस्सा। मन मान संके मथं मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह बाले। पुत्तलिका पानि ग्रहनायं ॥
एकंत सेज सहव्वं। लज्जा विया बिनया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चंद्रायन ॥ कंचन ग्रेह सु मोतिय बंदर बार हुअ।
ता ओपम बर भट्ट विचार सु एम जुअ ॥
मेर चरंनन गंग तरंगनि जानकी।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान की ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत संजोगी सोभई।
रति कौ रूप न होइ काम तन लोभई ॥
मनों मधुक मन मंधि मनं मधि ही करी।
कोटि रत्ति कौ तेज रत्ति वह उन्हरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अंकुर पान चरावत वच्छं। मनों माननि मिस दिष्पि अनुच्छं ॥
सहचरि चरित परस पर वत्तय। मनों सजोइ सँजोग मनमथ्थय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ बज्जाइ गाह श्रवनं। नयनं चित्तेहि दिट्ठ लग्गाहं ॥
ग्रामान ग्राम लज्जा। आनंगा अंकुरी बाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुचीति संग। षटवीय बरष नन लसति अंग ॥
के जुबति संग हासद सुरंग। मिल खिषहि भाम नव नव अनंग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
संजोगि संग जुवती प्रबीन। आनंद गान तिन कंठ कीन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछंग चिबुकी। आलोली दुछं संजोगी ॥
बरनीय पानि पत्तो। दीहास तामि अट्ठ मंझामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग । अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर । अंकुरहि मान मनमथ्थ जोर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुव्वन जुवति रचि कहहि बत्त । अवनन्नि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोह लज्जा सुरत्त । निरधनिय मनहुँ धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सषिन्ना । या सुंदरि कथ बर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना । संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग बसंतह जोग । कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्ध, मधुं धुनि होइ । बिना रस जोबन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिन लीन बसंतत राज । सु इच्छत सैसब जोबन बाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि । तहां बिन सैसव जोबन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज । भई न्रप बार बसंतह राज ॥
तहां बजि घुंघर जोबन भाइ । जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥८९॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ । कछु वसंत धरि भाव ॥
मानों अलि दूतनि भई । नौदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास । मंजरिय तिलक पंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत । संयोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत । परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
कुटुहित भोर सुग्गंध वास । मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

बन बग्ग मग्ग हलि अंब मोर । सिर ढरत जानि मनमथ्थ चोर ॥
चलि सीत मंद सुगंध बात । पावक्क मनों बिरहनी पात ॥
छं० ॥ ९३ ॥

कुह कुह करंत कलयंठ जोट । दल मिलहि जानि आनंग कोट ॥
तरु पलव पीत अरु रत्त नील । हरि चलहि जानि मनमथ्थ पील ॥
छं० ॥ ९४ ॥

कुसमेष कुसुम नवधनुक साज । मंगी सुपंति गुन गरुअ गाज ॥
संजर सुवान सो मनहु नेह । विद्धारि जानि जुअ जननि देह ॥
छं० ॥ ९५ ॥

ऊषलिय चलिय चंपक सरूप । प्रज्जरहि प्रगट कंद्रप्प कूप ॥
कर वत्त पत्त केलुकि सुकंति । विहरंत रत्त विछुरंत छत्ति ॥
छं० ॥ ९६ ॥

परिरंभ अनिल कंदलि छपान । सिर धुनहि सरस धुनि जान तान ॥
झंकुरि झमूर अभिराम रम्म । नन करहिं पीय परदेस गम्म ॥
छं० ॥ ९७ ॥

फूलिग पलास तजि पत रत्त । रन रंग ससिर जीतौ वसंत ॥
दिष्पहि तपंत जिहि कंत दूर । थकि बोलि बोलि जल रहिय पूरि ॥
छं० ॥ ९८ ॥

संजोग भोग जुवती प्रवीन । पै कंठ नट्टि दुह भगिअ लीन ॥
रवि जोग भोग ससि नीय थान । दिन धर्यौ देव पंचमि प्रमान ॥
छं० ॥ ९९ ॥

सोय जग्य उदीपन बाल काज । विलसन विलास मंद्यौज साज ॥
पर उछव दषिन दीनौ मिलान । विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १०० ॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

श्लोक ॥ अन्यथा नैव पिष्यंति । दुज वाक्यं न मुंचते ।
प्रापतं जोगिनी नाथो । संजोगौ तच गच्छति ॥ छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ जगत बत्त जोगिन पुरह । सुनिय किति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विध्वंम मन । नमि सामंत सुरज्ज ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । थप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन नृप । तमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्लौ नृपति । थप्पो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ नृपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उभ्भै पहुपंग । जग्य मंडै अबुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥
कच करवत पाषान । हथ्थ छुट्टै बर भग्गै ॥
प्रजा पंग आरुहौ । बहुरि हथ्था नन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि धर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल । करौ सूर एकट्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
लाष बीर मथ्थियै । गयन कंकन प्रति साजन ॥
बनसी मथ्थ समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
परधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कही चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर । पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥

पंच सूर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
घाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरु दुजराम । राज रप्पन बल राघन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब सूर एक मन ॥
सामंत सूर घोषंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुक्कराव निंदह कढ़िय । पग्ग मग्ग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

जयचन्द के भाई बालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना।

दूहा ॥ काज बीर बालक सु छत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भंजन सु जगि। बाजि बीर अनभंग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतो का कहना कि कन्नोज पर ही चढ़ाई की जाय।

पद्धरी ॥ सुनि मंत तंत जुग्गिनि पुरेस। मंनेव भेव मन मंडि तेस ॥
कज मंत संत जोगीय थान। सब बळ्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

बुल्लाइ सबें भर राज काज। पंमार सलष सम जैत भ्राज ॥
निद्दुरह राव जामानि जाद। चंदेल भूप भोंहा सु वाद ॥छं०॥११०
कैमास भासई तेज रासि। दाहिम्म बोलि अग्गैं उहासि ॥
पुंडीर चंद लंगा अभंग। बग्गरी देव घीची प्रसंग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामंत सूर मिलि एक थान। मंतेव मंत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुंम .... । ...., ... ॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज। तुम रचिय बुद्धि सो कृत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयंद तब्ब। भंजों निकट्ट कनवज्ज सब्ब ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन। सजि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मच्चाइ कूह कनवज्ज थाह। षंडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उच्चरिग वत्त जामानि जद्द। सजि चढ़ौ जूह कजि कूह नद्द ॥
भंजियै देस कमधज्ज राज। उज्जारि थान ऊचान राज ॥छं०॥११५॥
पुकार कूह उट्ठे करार। भंजहि सु जेन भय जग्य भार ॥
उच्चयौ चंद पुंडीर ताम। कैमास मंत पुच्छौ सु ठाम ॥छं०॥११६॥
मति सिंधु सद्द गुन अग्गरेस। बुद्धंत बुद्ध मनजा असेस ॥

आनंद सुनिय सामंत सब्ब । भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम अंपै सभेस । कमधज्ज सुबल दल अस्स हेस ॥
बालुकाराय घोषंद थान । भंजियै तास इनि जूह जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दग्गियै धाम पुर नैर नेस । पुक्कार भार फुट्टै असेस ॥
बिग्गरै जग्ग जैचंद राज । जस होइ कित्ति सुअ सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास । मन्नेव मंत सो धंनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम । थपि मंत पत्त निज निज्ज धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कपित्त ॥ रष्पि थान घोषंद । राइ बालुक्क प्रमानं ॥
दिय अट्ठौ चहुआन । जग्ग मूलं रषि वानं ॥
रष्पि सेन समरथ्थ । गरू आदर भर मन्निय ॥
सो संभरि चहुआन । बीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत हूर बर बोलि बर । मंति बैठ ढीलीम पहु ॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि । बीर बीर लग्गे सु पहु ॥छं०॥१२१॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाओ । पत्तौ धाम राज सा भृत्तं ॥
अंतर महल उहासौ । आस्रंमेस तथ्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल ॥ बोलि तथ्थ मंची कयमासं । राजा मानिय दू आभासं ॥
और सबै सामंत सुरेसं । दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥छं०॥१२३॥

गाथा ॥ सिंघासने सुरेसं । सम अरोहि धीर ढीलीसं ॥
मत्त पयान विचारं । .... ॥ छं० ॥ १२४ ॥

दूहा ॥ बोल्यौ बंभन सूर तहां । कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि हम । जिन दिन चलै संघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना ।

दूहा ॥ तब बंभन कर जोर कहि । सुनौ सु बात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है । तिन दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना ।

पद्धरी ॥ रबि जोग्य पुष्य ससि तीय थान । दिन धन्यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिषन कीनौ मिलान । विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥
छं० ॥ १२७ ॥

माहनिय ताम सद्यौ सुरेस । बिलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट अैराक बंस । चहुआन कन्ह अप्पौ उतंस ॥
छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उंच जति पंषराव । समपौ सु राव गोयंद ताव ॥
मानिक्क महोदधि मध्य जात । निरषंत नैन थक्कै न गात ॥
छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत षुरिय विज्जल विभास । समयौ सु राव निद्दुरह तास ॥
लहराक तेज अग्गाध भाल । मापंत छोनि पुज्जै न ताल ॥
छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअंत भेस । समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति षंधार मभ्भ । समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीस मानै न मग्ग । कूदंत मंत पय धर अलग्ग ॥
हथरोह सोह मन्नै सु भेस । बिलहान जैत अप्पौ जु हेस ॥
छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरबाह बंस । कैमास तास अप्पौ सु हंस ॥

चेटकी चिचरूपी रसाल । समयौ सु जद्द जामान ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोभाल मंझ नाचंत थाल । गति रंभ जेम रच्चंत ताल ॥
न्रप जोह जोह जंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुबर भ्रमर मद्दरेस ताजि । समदेहु राज पाद्दार गाजि ॥
रंगेस उंच लष्यन सु भेस । समपौ सु राव लंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदनेस साजि । माधुरद्द सरस कनकूय मांझि ॥
पटद्धूत पटे परसंग राव । परमार सिंघ कंकन सुभाव ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बग्गरी देव दै तेजधाम । सिंघली सिंघ पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । मद्दनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुरेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बद्धत कुरंगगति कुरँगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोभाल फाल कनकू सु देव । रंगाल राव विंझह बिरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

मद्दरीस जाति मद्दरेस थान । आजानबाह अप्पौ लुहान ॥
कनकू कनक्क रूपी सु तेव । पद्दमीस पाय मनों दक्षभदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात । पाद्दार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकत्ति साज सब्बै सुभाइ । चद्दुआन समप्पौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी सूर रथ किन्नि कीम । किंगन समप्पि लोद्दान धीम ॥
हैअवरद्द अवर भ्रत देहु जाम । बोले समंझ गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

आएस दीन सा साहनेस। विलहान देहु भत अवर जेस॥
सहदेव अप्प सुप सिलह दार। समदेहु सिलह भत गात सार॥
छं० ॥ १४३ ॥

अंदर प्रवेस पावक्क पुज्जि। आसीस मंच दिय गरुअ गज्जि॥
दिय अतिथ दान हय मंगि राज। आनयौ ताम साकम्भि साज॥
छं० ॥ १४४ ॥

बर पाच जेम परठंत पाइ। मंडैति थाल जिम तत्त थाइ॥
कलमोर जेम मंडै कराल। मझंमि पीठ मनु कठ्ठताल॥
छं० ॥ १४५ ॥

विस्साल उअर अच्छौ पड़च्छि। निरषंत रथ्थ सूरिज्ज सच्छि॥
मानिक्क मनोहर छब्बि लाल। हर बास भास गौसम विसाल॥
छं० ॥ १४६ ॥

बिन चसम चसम समकंति दीस। लालप्पि लोह चंपैति रीस॥
अचवंत सुच्छ अंजुलिय अप्प। चमकंत छाह भय तेज वप्प॥
छं० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग बाग। बर नद्द जेम लेयंत लाग॥
मंडंत उद्ध तंडव सु उंच। परसंत पाइ मनु ध्यान रुंच॥
छं० ॥ १४८ ॥

अति उंच वृद्ध भर घुरासान। पित मात विमल कुल संभवान॥
अंनिय सु साजि सिंगार पाट। विंजंति चोर जिम पुंछ राट॥
छं० ॥ १४९ ॥

चमकंत घुरिय दामिनि दमंकि। पटतार तार धरनिय धमंकि॥
मंगेव चल्यौ चहुआन जाम। जै जया सबद आयास ताम॥
छं० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा॥ चढ़ि चल्यौ प्रथिराज हय। जै मुष बंदी जंपि॥
बिकसे सूर सुभट्ट तन। कलच सु कातर कंपि॥ छं० ॥ १५१ ॥

जग्य विध्वंसे पंग कौ। धर लुट्टैं परवान॥
मंति स्नूर सामंत सह। चढ़ि चल्लौ चहुआन॥ छं० ॥ १५२॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा॥ इक तौ सहबलयं। एक तौ होइ सहसयं बरयं॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्यं॥ छं० ॥ १५३॥
कवित्त॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजी रंजन बर॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर॥
मनों स्नूर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल॥
षोषंद काज जीपन प्रथम। बालुक्कां भंजन सुभर॥
निडुर नरिंद पुंडीर भर। करन राज अग्गें सगुर॥ छं० ॥ १५४॥

सैना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा॥ गोडंडा थल मित्तरी। धर जंगली बिहान॥
यों बंधे सह स्नूर बर। चढ़ि चल्लौ चहुआन॥ छं० ॥ १५५॥
है गै बधि बंधन विविध। धन सब्बी ग्रह बीर॥
चावहिसि धर पंग कौ। ज्यों कलपंतर तीर॥ छं० ॥ १५६॥
गथा॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे स्नूरयं धीरं॥
ज्यों गुर स्नलत अंगं। सो लग्गे सिंधयं पानं॥ छं० ॥ १५७॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल॥ संबर काम चल्यौ चहुआनं। बालुक्का परदेस प्रमानं॥
है गै दल चतुरंगी पानं। भ्रम भंजन मन उग्यौ भानं॥
छं० ॥ १५८॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

हनूफाल ॥ चढ़ि चल्यौ राज चुहान। बोलेव सूर समान ॥
गिन लिए सूर सु श्चित्त। भर सहस सजि दह सत्त ॥ छं० ॥१५८॥
नीसान दून समान। भेरीय साद सुरान ॥
बल बढ़िय राजस बीर। जनु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए सकल एकत जाम। गुन सकल ग्रह विदु राम ॥
अग्गै सु कन्ह चहुआन। ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उलंग अंग सनाह। सथ लिए सूर सबाह ॥
मड्डेस जंगल देस। चढ़ि चलिय दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसि सज्यौ जानि कराल। दाहंत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग घोषंद पास। बढ़ि बीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३॥
मन मुष्प साजहि जुद्ध। हनि ताहि क्रम्महि मुद्ध ॥
कलि कूह मंचि करार। धर अरिन कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
घिनि घेह लोपिय व्योम। दिसि बिदिसि धुंधरि धोम ॥
रिधि मंधि लुट्टहि अष्प। वर सस्त्र सस्त्र सुदष्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक। मधि हनहि आप अनेक ॥
बहु मोल वस्त्र समोच। सम हरहि सद्ध हि सोच ॥ छं० ॥ १६६ ॥
संचरिय घाइ विधाइ। दुद्धाय दिसि दिसि राइ ॥
दुख सैल व्योम संपूर। कलि कूह हत्ति करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सब नैर भंगर कूक। सद्धियै अंतस जक ॥
घोषंद नर सुर थान। समपत्त अत्ति उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

बालुका राय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना।

मुरिख ॥ छुट्टे दिमा दिसा चहुआनं। संमर काम समावर जानं ॥
परजा मिलिय करै बुंबानं। [1]संभरि भारथ रह रिसवानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ दिसि पहु उट्ठिय धोम। भोम लग्गिय आयासह ॥

(१) ए. कृ.-"समरित भर थर हरि सवान"

निधि खुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसह ॥
निधि पति निधि घट्टिय। सु रंक बड्डिय लच्छिय पन ॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुष्पन ॥
घरियार घरिय बड्डय घटै। सो ओपम परमानियै ॥
निधि पत्ति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर जानियै ॥
छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति घोषंद। सुनिय बालुकाराय बर ॥
धर धामह कमधज्ज। भुज्ज मंडिय कपाट भर ॥
अरि भय किम औसेर। बड़िय अग्गर नृप दीनिय ॥
राज तेज यों लग्ग। जोग माया क्रम चीनिय ॥
जद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय ॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगत्ति रूप होइ अनुसरिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

धोम अंषि देषीय। कान संभरि पुकार बर ॥
समै जागि लषि कलँक। जीव अरु रहै नहीं धर ॥
रबि नट्ठौ ससि छिप्पौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर ॥
पवन गवन नन करै। सीत पालै न अग्नि बर ॥
जो चलै मेर धूवह चलै। भिलै सात जोगी तट्प ॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक बय ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुनकर बालुका राय का आश्चर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाइ धाइ घो षंद। सुनिय बालुक राव रव ॥
लघु बंधव जैचंद। राइ मंकेस असंभव ॥
सो संभलि कलि कूह। जक हुविय दिसि दिसि दर ॥
नह सुनियै अस्तुत्ति। नयर सब गाजि गहब्बर ॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ वत्त कारन सु कल ॥

मम करहु धाइ थिर होइ करि। कवन तेग बंधी सु कल ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना।

किन रुद्धौ सुअ तरनि। कहै नैरीपति संजम ॥
आज राज जैचंद। कवन उद्दंग करै दम ॥
तबै आइ धाइन। सुनहि मंकेस राउ सुअ ॥
दीलीवै चहुआन। तेन उज्जारि जारि भुअ ॥
सुनि बाद वादि नीसान किय। अप्प बोलि सज्जे 'सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बढ़ौ सिलह। अनी बंधि आषाढ़ बर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना।

चढ़ि आयौ चहुआन। देस विध्वंसिय अग्गिय ॥
बर बालुका राइ। बीर बाजे रन जग्गिय ॥
अवित ढीठ चहुआन। बरै बीरं सुअ आनौ ॥
धर धूसे धन धुट्टि। जग्ग धूसें पंगानौ ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि। बालुकराव सु झुक्किया ॥
प्रथिराज सेन संम्हौ विहर। ताजी तुंग सु नष्षिया ॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन।

चढ़त राव बालुक। आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचंद। देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यों नव बल्लभ प्रीति। काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुबंध। प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुकार सथ्थ साथें चल्यौ। कल सथ्थें गोली चलै ॥
रोर चमक साथें उठै। त्यों बर कवि ओपम पुलै ॥ छं० ॥ १७६ ॥

(१) ए. को. सुनर।

चहुआना संमुहौ । राव बालुक उठि धायौ ॥
छीन लगन पथ दूरि । बरन बरसें बर आयौ ॥
तुच्छ दिवस क्रम बहुत । क्रत्य आतुर चित चाइय ॥
सबैं सेन संमूह । बीर रोसह बरलाइय ॥
लागयौ रोस सामंत सथ । अप्प थान नन तज्यौ किहुं ॥
दिठ परत राइ चहुआन बर । बालुक बर साज्यौ समहुँ ॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या ।

दूहा ॥ सेन सहस बनीस भर । चढ्यौ स जंगल जूह ॥
नैर छंडि बाहिर चले । तब रज इष्पिय जूह ॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना ।

कवित्त ॥ षंधे षेत करसनी । सूर धावै चावहिसि ॥
धन लूटत ज्यों रंक । लज्ज लग्गै न बरं तस ॥
अंबरीष ग्रभ आप । जेम दुर्वास चक्र कस ॥
जिम देवासुर देव । सबद जिम तरै कब्बि रस ॥
अट्टत जुद्ध हिंदू दुहन । सुबर बीर लग्गे बिरद ॥
संग्रत्ति बीर बाराह बर । सुथिर भए त्रिंमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥

वाघा ॥ रन डंबर अंबर उत्तानं । देषे डहर सेन समरानं ॥
सज्ज किय सेन अप्प परसंसे । आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
छं० ॥ १८० ॥

सुनियं तामं नाद निसानं । आयौ सेन समुष चहुआनं ॥
दल दुअ ताम हुअंदे ठालं । बज्जे नद्द सद्द झूझालं ॥ छं० ॥ १८१ ॥

गाथा ॥ दल दुअ हुअ देठालं । गज्जे नाद बीर बिसरालं ॥
सज्जे सेन सु चालं । बंधे फौज कमध फसि कालं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना ।

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देषी चहुआनं। सज किय सेन आप सवानं ॥
बंधे सिलह सूर सूरानं। गज्जै सीस सुभर असमानं ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर बर। गज्जे गेन सु लग्गि महाभर ॥
बंधे गरट चले गति मंदं। मानि सूर सामंत अनंद ॥छं०॥१८४॥

दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ जीवंतह कीरति सु लभ। मरन अपच्छर सूर ॥
दो इथान लहु मिलै। न्याय करै बर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनों सयन। दिट्ठे दिट्ठ करूर ॥
सामिधम्म सा क्रंम गुर। सो संभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिरं। काल हत्त सुरं ॥
एक एका गरं। बीर डक्कं करं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार बाजे हरं। गेनं लग्गा नरं ॥
अंत दंती जरं। नाल कड्ढै सरं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हंस चीहं चरं। घात सोभै सरं ॥
झार वडप्फरं। लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवती सेन रं। वज्ज नालो करं ॥
पंग वीरं छरं। सूर मत्ते जुरं ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिंघ छुट्टै पलं। बीर मत्ते दलं ॥
ढाल ढालं ढलं। बीर चंपे मिलं ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बालुकाराय का युद्ध करना।

कवित्त ॥ बर बालुका विसाल। सस्त्र बाहंत उचारिय ॥
पंग भूमि रतनंन। स हथ घाए अधिकारिय ॥
मद्धि समुद बालुका। पुन्न हीरा गल लग्गा ॥
रतन षटू सत छंडि। जिरह लय लरने लग्गा ॥
दल मद्धि एम घोषंद पति। ज्यों ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त बन बायतें। चल पत्तन कर करनवै ॥छं०॥१९२ ॥

बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन।

अँग चतेन बहि इथ्थ। सस्त्र लागत जड़ धारिय॥
लोह लगत सिलहान। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करै। लाज संका न दिसा करि॥
छच भ्रम्म चूकंत। छूर संकै न पग्ग धर॥
नव वधुअ संक रत्ता गरुअ। कुल संकै कुल वधु सकल॥
कमधज्ज जुद्ध चहुआन सों। सुवर बीर घरि पंच छल॥छं०॥१८३॥
घरिय पंच साधंत। छूर साधै असि मर. नर॥
बालुका अरि राज। सवै भगा जु क्रम्म धर॥
पग पुच्छानन दियै। षेल असिवार परिमानं॥
मोष मह असि रेष। परज रज बंने धानं॥
अति बीर सुग्रह तजि रोस वर। इम उकंस चहुआन रिन॥
न्रिप जैत बीर विभ्भर भगति। सुवर बीर आरत्त धन॥छं०॥१८४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत मंच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल लाल रसि॥
कमल विमल विछुरंत। कमल नंचत बर बरतन॥
इक्क ष्यारि सिर ष्यारि। नीर किन्नौ जु बीर गुन॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बालुकाराव चहुआन सों। दुतयि बीर भारथ्थ सजि॥छं०॥१८५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। भान चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक्क न चलंत छूर भुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति जैसे गतिमानं॥
कुटिल चिया चंचल सु। बीज चाव हिसि धानं॥
जिन मुष सु बीर न्रिम्मल सु वर। सार झलै ते अलझली॥
में मंत पंथ रूकै सुवर। मुगति पंथ पंथा घुली॥छं०॥१८६॥

दूहा॥ मुगति मग्ग पंथा घुली। सवर थापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिग सूर॥छं०॥१८७॥

बालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ बीर कुंड मंडलिय। परिय बालुकाराय फुनि ॥
चंद मंडि ओपंम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भए। तेज बडवानल तुंगं ॥
हेम मभिन्न नग धरिय। खूर फिरि मेर सुरंगं ॥
जयपत्त जुद्ध बोलिय सुभर। जं बोल्यौ तं कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गे गिलन। [1]चर अगस्ति मंतह नयौ ॥
छं० ॥ १९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

चोटक ॥ घरिएक भयानक बीर हुअं। बर बज्ज निसान निसान धुअं ॥
अमयं अम षेद कटंत बरं। मिटि गाबर सीस नवाइ गुरं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दुहु बीरन बीरह हथ्थ धकं। सु मनौ कर तोर निसान डकं ॥
दुहु बीर बिरोधत हथ्थन हो। दुहु दीनह जानि गुमान गहो ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परे रुधि सीस कनंछ धरे। सुमनों गिर तिंदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि खूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा [2]कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनार परै। निकसी जनु मध्य झलंग तिरै ॥
सु किधों ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो बल लागत फूल झरी ॥
घन घाव कियें सिर खूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए.-चम्र। (२) को. मति।

कवित्त ॥ भौर परौ प्रथिराज। देषि बालुका मंत गज ॥
चंपि मुट्ठि दिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
टुट्टि सीस मुति बरसि। रुधिर भीजै लग्गे असि॥
सुमनों मग्ग षुति पान। चंपि निकलिय ओपम तम ॥
जुद्धं स एह भंजौ जलह। आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
दैवत्त बलह प्रथिराज दुति। छंद चँदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ मँभारे सबै स्वामि भ्रम्ममिंति सूरं। बरं बंस रस्सं असं संस नूरं॥
तबै उच्चर्यौ .... दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं ॥
छं० ॥ २०४ ॥
समं साजियं फौजं सु औजं कमंधं। करौं साज धाजं अनी अन्न मंधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दप्पौ। नरंनाह कंधं तुमं काम थप्पौ ॥
छं० ॥ २०५ ॥
मुषं अग्ग कन्हं सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं ॥
बरं सज्जियं बाइयं निद्दुरेसं। मध्यं रच्चियं अप्प राजगं तेसं ॥
छं० ॥ २०६ ॥
सचे सब्ब राषे सु सामंत सूरं। गुरं बीर वाजिच बज्जे करूरं ॥
चलं फौल सज्जे समं भट्ट थट्टं। गहारं भरं सेन देषे गिरट्टं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चर्यौ जंच बालुक्क रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्प इष्पै अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्राम थानं ॥
छं० ॥ २०८ ॥
भयौ काम काजं जपं चंद आजं। निजं भ्रम्म मन्ने कुलं कृत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दट्ठ जुद्धं सनट्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन बट्ठं ॥छं०॥२०९॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

मिल्यौ बालुकाराइ गज्जं नरिंदं। समं सेल चहुआन करि पग्ग दंदं॥
सजी सेन चतुरंग तारंग रुष्यं। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुष्यं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमानं। भिरें सेंन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
बले दून सेनं मिलं बान बानं। मनों बूंद भद्दं मद्दं मेघ जानं॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूरं लगे हथ्थ बथ्थं। दुअं उच्चरें आन ईसं दुअथ्थं॥
बजी सार धारं समं सार सारं। मुषं उच्चरे मार मारं करारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

समं बीर बाजिच बाजिच बाजे। धरक्कें धरारं सु गो गेंन गाजे॥
तुटैं सीस दीसं रुरें रुंड मुंडं। परें गज्ज भाजें सु तुट्टैं भुसुंडं॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जठुरं सठुरं सं विहारं। फरं फेफरं डिंभरू तुट्टि भारं॥
विछुट्टें डरं डिल्लरं अंतरेसं। भभक्कंत श्रोनं सश्रोनं अनेसं॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटें कट्ट बाजंत पग्गं करारं। मनों कट्ट कम्मारि कूटे कुहारं॥
उरा फार फूटंत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थवथ्थं समं भट्ट चट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दट्टं सनट्टं प्रहारं। जरादं जरं तुट्टि उट्ठंत सारं॥
तटक्कंत टोपं गुरज्जं प्रहारं। फटै सीस दीसें विकट्टं विहारं॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कंत कंधं कडक्कंत हड्डं। फडक्कंत फेफं सरे फंस मड्डं॥
दडक्कंत श्रोनं प्रहारे सपूरं। गडक्कंत कंधं सु घायंति जरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धरं सीस हक्कंत धक्कंक जोहं। नचै पग्ग कंमंध धप्पंत दीहं॥
हहक्कंत हक्कंत नाचंत बीरं। पलं चारु गोमाय गाजंत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

घहं राइ चौसट्ठि उपट्ठि मद्दं। नचै ईस सीसं डकै डक्क नद्दं ॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं ॥
छं० ॥ २१९ ॥

प्रसारं प्रवारं घनं ओन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं ॥
थलं मंस हड्डं सुथट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं ॥
छं० ॥ २२० ॥

हहक्कार हंकार हक्कार हक्कं। हवक्कं हवक्का धरे धीर धक्कं ॥
गहै केस केसं प्रहारै परेसं। हने छंडि आवड्ड आवड्डनेसं ॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं सूर बथ्थं लरै सूर सथ्थं। बिनानं सु मल्लं पयं ढीक पच्छं ॥
कुलं अप्प ईषे बरै आन ईसं। उक्रसंत क्रंसं रजे बीर रीसं ॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै षग्ग टेकं। हुये षंड षंडं विहडं विसेकं ॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सा सूर भारं ॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे दृष्टि थोरष्प नीवीर दंदं। रसं बीर नारद्द नंचै अनंदं ॥
इसो जुद्ध हूतें दुअं जाम वित्ते। मिरें मंत माहिष्प ज्यों मंस चित्ते ॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिट्ठ सोकी समं सज्जि घायं ॥
तबै बालुकाराइ उभ्भारीय षग्गं। करै कन्ह हेलं सहेलं चिभंगं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कट्यौ कन्ह झल्लं सु सेलं नि हट्टं ॥
हयौ सेल षंडं कमंडं सजरं। सिल्है फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं ॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं झारियं कन्ह सेलं जु नंषे। पर्‍यौ बालुका राइ सो भूमि धष्पे ॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं ॥
छं० ॥ २२७ ॥

भगी फौज कमधज्ज सा छंडि षंतं। हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पर्‍यौ राव सारंग। बीर सज्जौ बड़गुज्जर ॥
ईस सीस संभर्‍यौ। सोइ लीनौ स बंधि उर ॥
गंग दुचित नदि कंपि। उमा भै दीन प्रमानं ॥
सीस ईस ससिकंठ। हथ्थ बड़गुज्जर थानं ॥
रुंधेव पंच पंचौ मिलिय। सबर बीर तत्तौ सँगति ॥
षोषंद राव झुझ्यौ सरस। स बर बीर भारथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

बालुकाराय के मारे जाने पर उसके बीर योद्धाओं का जूझ जाना।

परतन नर भर भीर। सिंधु बज्यौ चहुआनं ॥
जे हरुए उत्तरे। गयौ बहु हथ्थ निधानं ॥
कुल भारें रजपूत। रहे पथ्थर परिमानं ॥
.... । राज चळ्यौ चहुआनं ॥
बालुकाराइ भारे कुलह। पथ्थर ज्यों मंडे रह्यौ ॥
चहुआन बार बज्जी विषम। तंत बेर उड्डि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

बालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना।

चाहुआन भय राज। सुभर बालुका राज बर ॥
अब लुट्टौं घर धेन। अबहि दभ्भिअयै परद्धर ॥
धर किपाट बालुका। हूर अंतर संपन्ने ॥
पूरन आहुति दीय। पंग जग्यह आहुत्ते ॥
बालुकाराइ पंजर पर्‍यौ। देषि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भंजि दोइ बंधि धरि। चर नट्ठा कासी बहर ॥ छं० ॥ २३१ ॥

तजि सु नारि भजि पीय। विसरि आतुर भय पंजर ॥
पिय कोमल सुंदरी। परत पिच्छल सहूर धर ॥
कंचन पत्त परास। हूर कल मोती धारे ॥
नूत पत्र परिहार। चंद श्रीपंम बिचारे ॥
तारक्क बाल मंगलति ग्रह। कै नष सुंदरि पारियै ॥

ओपम चंद बरदाइ कवि। जातें बालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ परत सु बालुक राय रन। सहस पंच सम सथ्थ ॥
उभय घटी मध्यान उध। धनि सामँत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त सत। परे सु कटि रन थान ॥
सबे सत्त सामँत कुसल। जै लब्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुक्काराय। सेन सध्यौ चहुआनं ॥
पंग जग्य बिगरंत। अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर। सेन धुंसै दुज्जन पै ॥
प्रथम रारि परि कन्ह। बलि बारुन बंभन वै ॥
सामंत सेन एकट्ठ हुअ। संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर। चंपि चुहान बजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पय्यौ जुद्ध बालुका। मीर बद्धा षंधारं ॥
ते सम पंग कुमार। षग्ग बज्ज्यौ बर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस। रीठ बज्जी झाराहर ॥
मनों मेघ मद्धि बीज। बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस मंझ्झै मिलिय। धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
भारथ्थ पथ्थ दुत्तौ विषम। चंद छंद बत्ते कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥

चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं। गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं। सजियं पति दंती विमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुस्लमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनों पंक्तियां तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनों पंक्तियां छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

भुजंगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआनं । बजी सार सारं सु धारं प्रमानं ॥
लगी डंबरी रज्ज आयास छायं । निसा पंति गिद्धी रुधिंहन्न पायं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहां चंद बरदाय ओपंम तब्बी । मनों बाद गंठी परे जगि रब्बी ॥
मिले जोध हथ्थं तिबथ्थं बकारे । परे चंद भट्टीन छुट्टे पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

बजे घाद्द आघाय घायं घुरक्की । मनों नीर मभ्भें तिरंजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगं सु तूटतं दीसै । मनो मुक्कि छुच्छू छुटे बीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

घरी अद्ध दीहं रह्यौ ता प्रमानं । तबै बाहुन्यौ पंग पाइक्क मानं ॥
सबै मीर बंदा तुरक्काम थानं । कहैं पक्करौ चाहते चाहुआनं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

धन्यौ पंग मोरी सु षंधार सारौ । निनें रोकियं कन्ह चहुआन भारौ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स बौंट बर । मिलि रोक्यौ प्रथिराज ॥
पंति पंग हय जंग परि । तिहु पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भूत पंग घन । लाग निसानति बान ॥
विंटि सेन प्रथिराज बर । जानि समुंद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । चल्यौ सामंत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिष्य । पन्यौ चिंता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै बार । मरत इन बार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजूं सु जूझ । उतकंठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अंदेह मनि । मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रचि फेर न परें । सुगति बंध बंधे सघन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

घरिय अद्धदिन चढ़त। ह्वर छुटि जुरन सु बद्धे ॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोज सद्धे ॥
अनी मुष्प जरि मुष्प। सोइ उच्चाय सु डारिय ॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि घरियार सु मारिय ॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर थट्ट नट षिल्लयौ ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जन भर ढिल्लयौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और मुस्लमान सेना का घोर युद्ध।

भुजंग प्रयात ॥ करी ठेलि दूनौ अनी एकमेकं। घटं लष्प दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुदीनं। उतं उच्चलै भेजि ग्रज्जानि धीनं ॥
छं० ॥ २४७ ॥

गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसत्त लोई ॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ थग्गे अघं कन्न छुट्टै ॥
छं० ॥ २४८ ॥

परें बथ्थ बथ्थं विरुझाय छुट्टें। मनों मुक्ति सारी दुअं हथ्थ लुट्टें ॥
बहें बान कंमान जंबूर गोरं। सकें उट्ठि नाहीं तहां पंषि तोरं ॥
छं० ॥ २४९ ॥

महाबीर धीरं लरें ते तरपफैं। मनों पंग जंगी बली पंष अप्पैं ॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उषारं ॥
छं० ॥ २५० ॥

हयं अस्सवारं समेतं उठायौ। मनों ताघरी ताप माते उचायौ ॥
घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चैवेर जित्यौ ॥
छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना।

कवित्त ॥ भगिय सेन सा पंग। भगिय चतुरँग भुज मोरिय ॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढँढोरिय ॥
बर शृँगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं ॥
कायर हथिय प्रमान। समुद उत्तरि चहुआनं ॥

बालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रह्यौ ॥
दोहित्त पंग कमधज्ज कौ । संभरि वै हथ्थह ग्रह्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥
दूहा ॥ बर बालुका सु राय नृप । निधि लुट्टिय चतुरंग ॥
विय सुदेस बर भंजनह । बज्जा बज्जि सु जंग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भीलं गत हुंत । सोइ कौनिय करतारं ॥
जंघ गत्ति धरि लंक । लंक जंघा मति सारं ॥
नेनह दिट्ठ सरोज । केस अहि विंध सु किन्निय ॥
परबत संभ चढ़ंत । मेलि सांई सुध बन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज बर । गामनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस बास सासन सु पिय । सुबर बीर बीराधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजंगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंदं । लगी धूम आयास सो भंजि चंदं ॥
तुरी बारजं राय षोषंद बहं । तहा बालुकाराय संग्राम सहं ॥
छं० ॥ २५५ ॥
तहां बालुकाराय दानै सु मानै । तिने भंजिया भूप घटि चाहुआन
घगं घग्ग घट्टे सु धक्का हलाई । जहां पारसीराव सूरं गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥
छतेरी छनेरी भंडेरी बरारी । तिनं चंद चंदेरि नैरी निहारी ॥
जिने तारिया कालपी कन्दरायं । जिने मंडिया जुद्ध प्रथिराज सायं ॥
छं० ॥ २५७ ॥
जिने आल पिंडाइ राचक्क चक्के । बरं रोरिया दाइ संग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गंग पारे । जिने संभरी थाट तंडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥
जिने भंजियं भीम पुर भीम भंजे । जिने भंजिया जाय गोधंग हंजे ॥
जिने भंजियं जाय प्रथमं सु कासी । भए सूर सामंत उत्तं उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

जिने भंजियं जाय मेवात ग्रामं। जिने बैर सों सेन सज्जे समानं॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सबें पाय पारी॥
छं० ॥ २६० ॥

जिने आलगी जोग षंडे षषेली। जिने माथुरी मोह मोहंत लेली॥
जि सोरीपुरं रोरि पारा जगायं। .... छं० ॥ २६१ ॥

कियं दोन बंबारि प्रथिराज तोरी। षगं षीच षंगार बक्कोच मोरी॥
तहां ग्रीव बंबारि अग्रीव फूटी। तहां गोधनं धेन चौनान लूटी॥
छं० ॥ २६२ ॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी। ते तजें पो पीय कंठं सु गोरी॥
तिनं तीर नह चालहं चाल झंषे। तहां झं परहि जेम गज झंप लष्पे॥
छं० ॥ २६३ ॥

तिनं चीर संमीर झारंत तुट्टे। मनों रक्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै। .... ॥ छं० ॥ २६४ ॥

तमंचे सिषर जमदाह लग्गे। .... ॥
तिनं ध्रम्म प्रज्जारि मिटी अग्गएनी। तहां चलहि तिन तेज मुषचंद रेनी॥
छं० ॥ २६५ ॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धाए। तहां दसन बालमे दसनं छिपाए॥
तिनं सह सहरोस सहरोस संकी। तहां थर हरे थकि रही हीन लंकी॥
छं० ॥ २६६ ॥

कव्वि रटि रटति पिय पीउ जंपै। एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै॥
॥ छं० ॥ २६७ ॥

वाघा॥ सेंवर काम चढ्यौ चहुआनं। कंपै भै चिय दुज्जन वानं॥
बर छुट्टत नीवी न सम्हारै। लेहिं उसास प्रहार प्रहारै॥छं०॥२६८॥

अंगुरि एक ग्रहै कर बालं। दूजै कीर निवारति जालं॥
थान थान विहवल भइ बालं। मुक्तिन उर बर तुट्टित मालं॥
छं० ॥ २६९ ॥

सो ओपम कविचंद सु पाई। मनों हंस कटि पंछ चिलाइ॥
छं० ॥ २७० ॥

न हो सकेगा। शास्त्र का बचन है कि निद्राग्रस्त, मल मोचन करते हुए, शौच स्नान पूजना दि करते हुए, मंत्र का जाप करते हुए इत्यादि मनुष्यों को कपट से मारना महापाप और क्रूरता है; इसलिये मरे किए तो यह न हो सकेगा। राजा के ऐसे बचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि राजनीति की आज्ञानुसार राजा को समयोचित कार्य्य करना चाहिए। क्या त्रेता में चक्रवर्ती राजा रामचन्द्र ने समुद्र को बाँधते और बलि को मारते समय छल नहीं किया? क्या नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को विदारते समय छल नहीं किया? कृष्ण ने कंस को पछारते समय क्या छल नहीं किया? यह सुन कर सोमेश्वर चुप होरहे और सूरवीर योद्धाओं ने युद्ध के लिये अताने बताने बाँधने शुरू किए। यह देख कर सोमेश्वर ने भी अपने रणबाँकुरे बीरों का साथ देने के लिये अस्त्र शस्त्र धारण किए। सब रावत योद्धाओं ने शौचादि से निश्चित होकर गंगाजल और तुलसीपत्र पान किए, तदनन्तर जिरहबख्तर से विभूषित होकर तन्न, त्रस, तुन, तोमर, सेक, सर, सारंग, शूल, शक्ति, सेल, सावल्ल, कत्ती, कञ्ज, चक्र, कृपान, वक्री, अशनी, दंड, भिडमाल, मुग्दर, मूसल, हल, द्विसकोट, परिघ, पाश, परश छरिका, नाराज, नसी, नालिका अर्थात् बन्दूक आदि शूरवीरों के छत्तीसों बाने बाँधे।

मालव के राजा यादवराय ने चंबल पार करके बरवाम नगर के पास डेरा डाला। राजा सोमेश्वर अपने रणोन्मत्त शूर सामंतों सहित धावा मार कर आधी रात्रि के समय बरवाम पहुच गया। सोमेश्वर ने जाते ही चढ़ीसवारी यादव राज्य की सेना पर आक्रमण किया। यादव सेना को सोमेश्वर के आने की अब तक खबर भी न थी। जब चहुआन सेना यादव के सैनिकों को काट काट कर लोथों से पड़ाव पाटने लगी तब वे भी सचेत होकर युद्ध करने लगे, परन्तु सोते जागते में बड़ा फ़र्क होता है। सोमेश्वर की सेना ने पहिले से अच्छे नाके बाँध कर हथियार छेड़ा था, इस लिये घरी रात रहते रहते यादव सेना भाग उठी और मालव नरेश राजा यादवराय अत्यन्त घायल होकर सोमेश्वर जी के सिपाहियों से पकड़ लिया गया। सोमेश्वर जी ने बड़े आदर भाव से यादवराय को अजमेर में लाकर रक्खा और उसकी दवा भी करवाई। एक महीने बाद जिस दिन यादवराय ने स्नान किया सोमेश्वर जी ने बड़ा दान पुण्य करवाया और फिर सादर उसे उसकी राजधानी को भेज दिया।

पृथ्वीराज के पक्षपातमय राज्य शासन से दुखित दिल्ली के प्रतिष्ठित पुरुषों और राज्यकर्म्मचारियों ने अनंगपाल की शरण में जा पुकारा। उन्हों ने कहा कि हे महाराज! जिस समय से पृथ्वीराज दिल्ली का राजा हुआ उस समय से आपकी प्यारी प्रजा अनाथ एवं भिखारी की भांति मारी मारी फिर रही है। अनगपाल के प्रधान मन्त्री ने कहा, हे महाराज! आपने उस समय हमारी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया, आपने व्यास जी की बातों में आकर पृथ्वीराज को राज्य सौंप दिया। यदि आप को राज्य देकर देव सेवा करना ही अभिप्रेत था तो आप उसे अपने किसी निज भाई भतीजे को दे दिए होते। आपकी प्रजा असहाय की भांति कलपती फिरती है और आप तप करते हैं इससे आपको क्या फल होगा। कौरव पांडवों के बीच भूप्रहयात् भारत का युद्ध इसी भूभाग के लिये हुआ। रावण ने इसी भूमि के लिये भाई विभीषण को मार कर निकाल दिया, और सपरिवार अपना प्राण दिया। इसी भूमि के लिये बलि बंधन में पड़ा, मुंज ने भोज के मारने की आज्ञा दी और कन्ह तोमर ने अपने देखते पुत्र को विष दिया। हे राजन् आपने सदैव भूल की। पहिले तो दिल्ली दिल्ली करके अपने अखंड राज्य को खंडित किया तिस पर भी पृथ्वीराज को राज्य दिया। राजा को उचित है कि वह जिसे चाहे धन धान्य हाथी घोड़ा और जो चाहे सो दे दे परन्तु अपने राज्य की तिल भर भी भूमि कदापि न दे।

मंत्री की इन बातों ने अनंगपाल के दिल पर ऐसा असर किया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज के पास एक दूत प्रेरित करके कहला भेजा कि मैं

तुम्हारे व्यवहारों से अप्रसन्न हूं इस लिये तुम दिल्ली का राज्य छोड़ कर इसी समय अजमेर को चले जाओ। दूत के ऐसे बचन सुनते ही पृथ्वीराज क्रोध मे जलकर आग बबूला हो गया। उसने दूत को दपट कर कहा रे मूढ़ यदि उन्हें ऐसा ही करना था तो पहिले ही सोच विचार कर राठौरों को क्यों न गोद ले लिया। मेरे रहते अब वे दिल्ली नगर का द्वार देखने की इच्छा न करें। यह सुनते ही उक्त दूत उठ कर खड़ा हो गया और बोला, हा! यह एक आश्चर्य्य की बात है कि जिसका धन धाम लिया जाय उसीको धता बताया जाय? तब पृथ्वीराज पुनः बोला रे मूढ़ बसीठ, राज्य कौन किसको देता है। जैसे दूध में माधुर्य्य स्वाभाविक ही होता है उसी भांति पृथ्वी पुरुषार्थी पुरुषों के पास आप आ जाती है, फिर उससे वह भूमि लेने की जो मूर्ख इच्छा करता है वह आप नाश को प्राप्त होता है। मैं उन्हें क्या कहूं, उनकी तो जरा रूपी ज्वर से जर्जरित जीर्ण बुद्धि सठिया गई है, परन्तु यह प्रसंग तुम लोगों के लिये विषमूल होगा। पृथ्वीराज की ऐसी बातें सुनकर वह दूत तनचीरण मनमलीन होकर अनंगपाल के पास उलटा फिर गया। उसने अनंगपाल से कहा कि मैने तो पहिलेही कहा था कि आप वृद्ध हुए अब इस प्रपंच में पैर न दीजिए परन्तु आपने न माना। वह राज्यमद मतवारा दैत्यवंशी बलवान चहुआन सुई के अग्रभाग भर भूमि देना भी स्वीकार नहीं करता। प्रथम तो आपने राज्य खोकर देश देशान्तरों में बात फैलाई, मालूम होता है कि आप को अब भी अपनी प्रतिष्ठा प्यारी नहीं है और हँसी करांने की इच्छा है।

यह सुनते ही अनगपाल के अंग अंग में आग सी लग गई उसने उसी समय बिना सोचे विचारे कुछ फौज लेकर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। जब यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने कैमास से कहा कि इस समय मेरा मन विचित्र विपत्ति में फँसा हुआ है। यद्यपि वे (अनंगपाल) मुझपर चढ़ करके आगए हैं परन्तु मेरी इच्छा नहीं होती कि मैं उनका मुकाबला करू, इधर दिल्ली छोड़ कर जाते भी नहीं बनता। तब कैमास बोला कि आप उनसे लड़िए न, केवल अपने किले का प्रबन्ध कर लीजिए। निदान पृथ्वीराज ने ऐसाही किया। उधर से अनंगपाल सेना सहित दिल्ली के किले की दीवारों के पास आजमका और दनादन आग बरसाने लगा। अनंगपाल चार दिन तक बराबर लड़ाई करता रहा परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी रक्षा करने के सिवाय और कुछ भी न किया। अस्तु जब अनंगपाल ने देख लिया कि वह अभेद्य दुर्ग उसके काबू का नहीं है तो वह चुपके से उलटा फिर गया और अपनी सेना को अजमेर के सिवाने छोड़ता हुआ आप फिर से बदरिकाश्रम को चला गया।

अनगपाल दिल्ली से लौट कर बदरिकाश्रम न जाकर हरिद्वार में पड़ा रहा। वहां से उसने अपने मंत्री के मतानुसार पृथ्वीराज के पास फिर एक दूत भेजा। उसे पृथ्वीराज ने फिर भी वही उत्तर दिया। उसने कहा कि आपने जो भूमि संकल्प कर के दे दी उसे लेकर अब आप क्या करेंगे। आप वृद्ध हैं और जब आपने स्वय राज्य त्याग कर के तापसीवृत्ति धारण करली तब आपसे और राज्य से प्रयोजन ही क्या? जैसे मेवों से वर्षा हुआ जल पुनः आकाश में नहीं जाता, पेड़ से पतन हुआ पत्ता फिर डाल में नहीं लगता, टूटा हुआ तारा फिर आकाश में नहीं जाता, सिंह जिस प्रकार लांघी हुई वस्तु को नहीं मारता और न भक्षण करता है वैसेही आप अपना दिया हुआ दिल्ली का राज्य अब नहीं पासकते। मैं जानता हूं कि आप शहाबुद्दीन के कान लग कर ऐसा कर रहे हैं। आप उस निर्लज्ज यवनराज के कहने में आकर क्यों वृथा अपने सत् धर्म्म और साहस को चौपट करने पर उतारू हुए हैं। वह जैसा आप है वैसा ही आप को करना चाहता है। स्मरण रखिए वह वही सुल्तान है जिसे मेरे सामन्तों ने कई बार कैद कर कर के छोड़ दिया है। जब ये बाते अनंगपाल ने सुनी तो

उसने उसी समय एक दूत गजनी को रवाना किया। उधर लाहौर से नीतिराय खत्री ने पहिलेही सब समाचार शाहबुद्दीन को लिख भेजा था इधर अनंगपाल के दूत ने भी अनंगपाल का समचार कह सुनाया।

शहाबुद्दीन तो सदैव इसी टोह में लगा रहता था कि कब समय हाथ आवे और कब मैं दिल्ली पर धावा करूं। अनंगपाल का प्रार्थना पत्र पाते ही वह तत्तार खां, खानखाना, खुरासान खां, मारुफखां, कमाल खां, कमान खां, नौशेर खां, आदि मुसाहिबों को साथ लेकर हिन्दुस्तान की तरफ़ चल पड़ा। अपनी चतुरंगिनी सेना सहित जब शहाबुद्दीन सिन्धु नदी पार हो आया तब उसने अपने मंत्री तत्तार खा को अनंगपाल के पास हरिद्वार भेज कर कह पठाया कि मैं आगया, अब आप भी आकर सोनपुर के पड़ाव पर मुझ से मिलिए। इधर अनंगपाल तो पहिले से तय्यार बैठा था उसने दिल्ली की प्रजा की सहायता से धन पाकर बहुतेरे हाथी घोड़े लेकर नवीन सेना तय्यार कर रक्खी थी। तत्तार खा के पहुंचतेही अनंगपाल अपने उन सब सूरवीर सिपाहियों सहित जो कि उसके साथ ही वैरागी हो गए थे, दिल्ली की तरफ़ चला और सोनपुर के पड़ाव से दस कोस आगे शहाबुद्दीन से जा मिला। अनंगपाल के आने का समाचार पाकर शहाबुद्दीन ने उसे चार कोस आगे बढ़कर बड़े भावभगत से लिया और अपने बराबर बैठाल कर बड़ी खातिरदारी और तवाजा की।

शहाबुद्दीन को अनंगपाल ने पांच हाथी पचास घोड़े और बहुत सा जवाहिरात नजर किया जिसके बदले में बादशाह ने उसे एक तलवार एक तीर कमान और एक अमूल्य सिरोपाव दिया। तदनन्तर अनंगपाल ने कहा कि मैंने आपको जिस लिये इतना कष्ट दिया सो तो आपको भली भांति सूचित कियाही जा चुका है अब मेरी यह प्रार्थना है कि कल्लही दिल्ली पर चढ़ाई करके पृथ्वीराज का दर्प चूर्ण किया जाय। इस का शहाबुद्दीन ने तो कुछ भी उत्तर न दिया परन्तु उसका मंत्री तत्तार खां बोला कि पहिले एक परवाना पृथ्वीराज के नाम लिख भेजिए यदि वह उसीसे मान जाय तो वृथा सहस्रों मनुष्यों का नाश क्यों हो और यदि न माने तो फिर देखा जायगा। उसका यह मत शहाबुद्दीन तथा अनंगपाल दोनों ने स्वीकार किया और उसी समय एक परवाना दिल्ली को रवाना किया गया।

जिस समय यह परवाना पृथ्वीराज के साम्हने पढ़ा गया तो उसमें शहाबुद्दीन की तरफ़ से लिखा था कि हे पृथ्वीराज! अनगपाल ने तप करने को जाते समय अपना राज्य आपकी रक्षा में छोड़ दिया था, कुछ आपको दे नहीं दिया था; अब वे तप करके अपना राज्य आप भोग करना चाहते हैं अतएव आपको उचित है कि उनका राज्य उन्हें सौंप दीजिए। सनातन की रीति है कि चरवाहा जो गाएं चराता है वे उसकी नहीं होजातीं। राजा अपने घोड़े पर जिस मनुष्य को मालदारी करने के लिये रखता है वह घोड़ा उस सईस का नहीं समझा जाता। इसी भांति दिल्ली राज्य पर आपका कुछ अधिकार नहीं है। मैं आपको मित्र की भांति यह सलाह देता हूं कि आप घर में वृथा विग्रह की जड़ न जमाइए नहीं तो अच्छा न होगा। ये बातें सुनतेही पृथ्वीराज ने कहा कि अनंगपाल ऐसे ऐसे एक क्या कई शहाबुद्दीन की सहायता लेकर क्यों न आवे परन्तु वह इस तरह से तिल भर भूमि न पा सकेगा।

पृथ्वीराज का ऐसा सूखा जवाब सुन कर उधर तो दूत ने पीठ फेरी इधर पृथ्वीराज ने अपने मंत्री को युद्ध के लिये तय्यारी करने का हुक्म दिया। वहां क्या था, केवल हुक्म की देर थी; पृथ्वीराज के वीर वर सामत तथा अन्यान्य सैनिक सूरवीर राजपूत तो सदा युद्धक्षेत्र में प्राण देकर स्वर्ग के सोपान पर पैर देने को उद्यत रहते थे। बात की बात में दस हजार सेना तय्यार होगई और पृथ्वीराज उसके साथ होकर सोनपुर की तरफ़ चला। इधर शहाबुद्दीन को भी इस बात का समाचार मिल गया कि पृथ्वीराज लड़ाई का निशाना उठाए हुए

आ रहा है, अस्तु उसने भी अपने सिपाहियों और सिंहसालारों को सचेत होने की सूचना दी। पृथ्वीराज के आते आते मुसल्मान सेना सन्नद्ध हो रही। उस सेना के बाम पक्ष में मारूफ खां; दाहिने में खुरासान खां, हरावल में तत्तार खां और अनंगपाल और पीछे शहाबुद्दीन थे। इधर पृथ्वीराज की सेना सर्पव्यूहाकार थी, जिसके मुख भाग पर कैमास, मध्य में पृथ्वीराज और पूछ पर चामड राय था। रणमदोन्मत्त सेना के मध्य मे स्थित पृथ्वीराज ने हाथ उठा कर कहा, हे वीरो, आपकी बहादुरी इसीमें है कि अनंगपाल मारे न जावें उन्हें जीतेही पकड़ लेना। इतने मे दोनों सेनाओं की देखा देखी हुई और कैमास ने अपने घोड़े की बाग उठाई। पश्चिम दिशा से आए हुए यवन दल बदल पर सपूत राजपूत वीर ऐसे टूटे जैसे भेड़ पर भूखा मृगराज टूटता है। वे नमकहलाल मुसलमान भी अल्लाह अल्लाह का हल्ला करते हुए अस्त्र शस्त्र चलाने लगे; दोनों ओर से ढोल, भेरी, रब्बी, नगारे, शृंगी, शंख, सहनाई आदि रणवाद्य बजने लगे। इन रणवाद्यों की भीषण ध्वनि और बीरौटी की तानें सुन सुन कर वीरों के दिल दूने होने लगे। दोनों ओर के सूर सिपाही लोग वीररस मदमाते मतंग की भांति एक दूसरे से भिड़ रहे थे। उनकी बिकट मारा मार से सोनपुर का मैदान रक्त का सरोवर बन गया, सहस्रों हाथी, घोड़े ऊंटों के सर धर टांग पैर कटे पड़े नजर आते थे। इसी समय अवसर पाकर कैमास ने अनगपाल को जा घेरा और बड़ी मार काट के बाद उसे जीता पकड़ लिया। यह देख कर शहाबुद्दीन को बड़ी ईर्षा उत्पन्न हुई और वह अपनी अनी को उत्साह देता हुआ आगे बढ़ा तब उसे चामंडराय ने धर दबाया। मुसल्मान सैनिक बड़ी देर लों ठहरे परन्तु अन्त में चामडराय ने शहाबुद्दीन को पकड़ कर बाध लिया और अपने घोड़े के कंधे पर डाल कर पृथ्वीराज के साम्हने ले गया। इस युद्ध में सात हजार मुसल्मान और पांच सौ राजपूत काम आए। इस प्रकर युद्ध जीत कर पृथ्वीराज ने मैदान साफ किए जाने की आज्ञा दी। इस युद्ध में जो मुसल्मान मारे गए थे उन्हें मिट्टी दिलाई गई और हिन्दू बीरों की यथोचित रीति से दाह क्रिया करवाई गई।

पृथ्वीराज ने अपने शिविर में आकर शहाबुद्दीन को सम्मुख लाए जाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा पाते ही राज्यमंत्री कैमास ने शहाबुद्दीन को दरबार में लाकर हाजिर किया। उस समय शहाबुद्दीन का भय एवं संकोच के कारण मुख सूख रहा था आखें नीची हो रही थीं और उसकी जबान से बात भी न निकलती थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर शहाबुद्दीन नीचा सिर किए बैठ गया; तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल से कहा कि आप तो बुद्धिमान है आप इस निर्लज्ज शहाबुद्दीन के कहने में क्यों आगए। तब तक गोइन्दराय गहलौत बोला कि हे सब सामन्तो सुनो इसमें राजा अनंगपाल का कुछ दोष नहीं है इन सब प्रपंचों का रचायिता यही शहाबुद्दीन है। इसके सिवाय अन्यान्य सामन्तों ने भी जो जिसके मुँह आया सो कहा; परन्तु उस का न तो शहाबुद्दीन ने न अनगपाल ने ही कुछ उत्तर दिया। तब पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन से बीस हाथी सौ घोड़े और दो लक्ष मुद्रा दण्ड लेकर और उसे अपनी तरफ से एक पाग सिरोपाव देकर गजनी को बिदा किया और आप अनगपाल को साथ लिवाकर वह दिल्ली को आया।

जब अनंगपाल दिल्ली में एक साल रह चुके तब उन्होंने एक दिन अपने मंत्री से पूछा कि हे मित्र तूं मुझे ऐसी सलाह दे जिसमें मेरे धर्म कर्म दोनों की पति रहे, तब वह बुद्धिमान मंत्री बोला कि मैं क्या कहूं आप तो स्वय सब जानते है। हे राजन् अब आपका शरीर जरावस्था के कारण जीर्ण हो गया है, आप अपने जीवन के तीन आश्रमों का सम्पूर्ण भोग कर चुके है अस्तु अब आप को चतुर्थ आश्रम सन्यस्त के अनुसार बन में रहकर तप करना ही उचित है क्योंकि राजपाट धन धान्य विषय सुखादि जो कुछ है सब यावत् रूप में

विद्यमान रहेगा परन्तु अपने शरीर के नाश होने पर अपने लिये कुछ भी नहीं है, जिसके भाग का होगा सो भोगेगा। तदनन्तर अनंगपाल ने रानी का मत पूछा। स्त्रियों का चित तो हमेशा विषयलोलुप होता ही है, अस्तु रानी ने कहा कि आप पृथ्वीराज से पंजाब देश का आधा भूभाग लेकर उसी पर राज्य करते हुए शेष दिन बिताइए; मेरी तो यही सलाह है आगे जो आपके व्यास जी कहें सो कीजिए। रानी के ऐसे बचन सुन कर राजा ने व्यास जी को बुलाया और यही प्रश्न उनसे भी किया। तब व्यास जी बोले हे राजन् आपको अन्तिम समय में यह क्या प्रपंच सूझा है, आपकी राज्यगद्दी पर पृथ्वीराज ऐसा प्रतापी पुरुष राज्य शासन करता है। इससे आपको भी प्रसन्न होना चाहिए। आप राज्य का लोभ छोड़ कर बदरिकाश्रम में जा ईश्वर का स्मरण करो, जिससे आपका परलोक बने। आप इस वित्त के लोभ की अत्त करके चित्त को दुबिधा में डालकर अन्त में सत्त को न डिगाइए, इसी वित्त के लोभ की अत्त से पुत्त पित्त और मित्त भी शत्रु हो जाते है।

व्यास जी के ऐसे बचन अनंगपाल ने बे आनाकानी स्वीकार कर लिए और उसी समय पृथ्वीराज के पास कहला भेजा कि मैं बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल के पास आकर कहा कि आपको जप, तप, धर्म, कर्म, ध्यानादि जो कुछ करना हो यहीं रहकर करिए, मैं सब तरह आपकी सेवा करने को प्रस्तुत हूं। पृथ्वीराज ने बहुत कहा पर अनंगपाल ने एक भी न मानी। तब पृथ्वीराज ने दस लाख मुद्रा सौ दास दासी साथ में देकर उन्हें बदरिकाश्रम को बिदा किया और आप स्वय हरिद्वार तक पहुंचाने गया।

घघर नदी का युद्ध।

[उन्तीसवां समय।]

गजनी में शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के भूत पूर्व्व पेशकार धर्मायन द्वारा समाचार मिला कि पृथ्वीराज सब सामंत और ६० हजार सवारों सहित अहेर के फेर में फिर रहा है और दिल्ली का राज्य सिंहासन थोड़े से सैनिकों सहित केवल कैमास से रक्षित है। शहाबुद्दीन ने यह समाचार पाकर अपना दूत भेज कर जब सब पूरा पूरा भेद मंगा लिया तब इस अवसर पर दिल्ली को विजय करने की इच्छा से वह सब सरदारों के बीच पण कर के बोला कि अब तो जब मैं पृथ्वीराज पर विजय प्राप्त कर लूंगा तभी तसबी (माला) हाथ में लूंगा और तब तक के लिये समस्त राजसी व्यसनों का भी त्याग करता हूं। यह कह कर खुरासान, रूम, हबस, और बलष आदि देशों के बादशाहों को सहायतार्थ पत्र भेजे जाने की आज्ञा देकर आप अपनी सेना की तय्यारी करने में रत हुआ। तब शहाबुद्दीन यथासंभव शीघ्रही बड़ी भारी सेना इकट्ठी करके दस दस कोस का पड़ाव करता हुआ भारत और अफगान की पहाड़ी सीमा तक आगया। तब दिल्ली के राज्य दूतों ने पृथ्वीराज के पास दौड़ कर यह खबर दी जिसे सुन कर वह वीर पुंगव पृथ्वीराज भी मृगया त्याग चैत्र सुदी ३ रविवार को शाह का रास्ता रोकने के लिये चल दिया और समयानुसार मोरचा बांधकर घोघर (घघर) नदी के तीर पर आडटा। उधर से शहाबुद्दीन भी अपनी सेना को पान ब्यूहाकार रचकर चला आता था। उसकी सेना में आगे हथनाल तिस पीछे उँटनाल और तिस के पीछे एक लाख धनुर्धारी और तिस पीछे एक लाख गष्पर और खुरासानी, सात सौ बलखी सरदार निसुरत्त खां के ताबे में और हबशी रूमी इत्यादि सरदारों की कतारें सुशोभित थीं। इस प्रकार साज बाज से चल कर जब वह घनघोर घटा की नाईं नदी के उसी तीर पर आडटा तब इधर से पृथ्वीराज ने भी चामुंड राय को हरावल का सेनापति नियत करके अपनी सेना को गरुड़ ब्यूहाकार रचा, जिसमें चामुंड राय चुंच, पृथ्वीराज पंख, अत्तातई धड़, गोइन्दराय पर, जैत पँवार पेट और कन्ह चौहान पूँछ की रचा पर नियत हुए। उधर से शहाबुद्दीन नदी के इस पार आने के लिये बढ़ा और इधर से राजपूत सेना ने उसे रोकने की चेष्टा की। निदान बीच नदी में दोनों दलों का मुठ भेड़ हो गया। पहिली चोट चामुंड राय और तत्तार खां की हुई जिसमें एक हजार मुसलमान मरे और तत्तार खां पीछे हट गया। इस पर उधर से आठ हजार गष्परों ने धावा किया और उनसे घिर कर जब चामुंड क्षत विक्षत हो कर मूर्छित होने लगा तब वहां पर जैत राव जा पहुंचा और उसने ऐसी मार की कि मुसलमानी सेना के पैर उखड़ने लगे तब उधर से खुरासान खां ने बढ़ कर जैतराव का साम्हना किया। इन दोनों में जब जी जान से छिड़ रहा थी कि इधर से पज्जून राय ने धावा किया और उसके मुकाबिले में उधर से निसुरत्त खां उतर पड़ा। इस तरफ जबतक उक्त सरदार सरदारों और सैनिक सैनिकों का परस्पर द्वंद युद्ध हो रहा था, कि इधर नरसिंह वीर काका कन्ह चहुआन की पट्टी खोल दी गई। पट्टी के खुलते ही वह सूर्य्य के समान तेजधारी वीर अपनी किरण रूपी तेज तलवार द्वारा एक लाख काले कुंजिरों में धस कर उन्हें काई सा काटने में प्रवृत्त हुआ। इधर चामुड राय पज्जून जैतराव इत्यादि सामन्तों ने मुसलमानी हरावल को तोड़ा। उस वक्त इधर अकेले कन्ह ने बादशाह को जा दबाया। जिस कन्ह चहुआन का नाम सुनकर उस समय रसातल के वीर कांपते थे, उसके साम्हने भला ठहरे कौन? ऐसा विचार कर बादशाह ने स्वयं भागना चाहा, किन्तु कन्ह ने उसके गले में कमान डाल दी और सहस्रों मुसलमानी सेना के देखते देखते उस शाह शहाबुद्दीन को अनाथ की स्त्री

(१) मुसलमानी एक जाति—शहाबुद्दीन इसी सेना के बीच में रक्षित था।

सा बांध लिया। बादशाह के बँधते ही मुसलमानी सेना प्रबल वयार से पीड़ित बद्दलों की भांति छिन्न भिन्न होकर भाग उठी। राजपूत सेना ने उसे कुछ दूर खदेड़ कर जो कुछ माल असबाब पाया अपने हाथ किया। इधर कन्ह ने बादशाह को लाकर पृथ्वीराज के साम्हने पेश किया और तब उनकी आज्ञानुसार ही उसे अपने साथ अजमेर में ले जाकर बड़े आदर भाव से रक्खा।

इधर जब पृथ्वीराज मृगया से संतुष्ट होगया तब उसने दिल्ली में आकर कैमास गोइन्द राय निहटुर सलष, कन्ह, पज्जून राय, प्रसंग राय खीची, हाहुलि राय, हम्मीर इत्यादि सामंतों की अंतरग सभा की जिसमें शहाबुद्दीन के विषय में विचार किए जाने का प्रस्ताव पेश हुआ। इस पर अन्य सब सामन्तों ने यह मत प्रगट किया कि अब की बार इस दुष्ट का बध करना ही उचित है। इस नीच को न लज्जा है, न भय, न क्षमा और शील का व्यवहार सज्जनों के साथ किया जाता है, न कि ऐसे धृष्ट और कुटिल के साथ। राजन्! दुष्ट को दण्ड न देना ही पाप की वृद्धि करना है। यह सुनकर कन्ह ने कहा कि आप लोगों का कहना वास्तव में यथार्थ है किन्तु मेरे कहने से उसे अब की एक बार और छोड़ दीजिए। जो अब भी न मानेगा तो अबकी मैं स्वय उसका सिर अपने ही हाथ से काटूंगा। निदान कन्ह की बात राजा ने भी स्वीकार की। फिर सब ने कहा कि एक गज़नी को छोड़ कर कन्धार और पश्चिम के अपने सब देश जो अब की दण्ड में दे तो छोड़ा जाय नहीं तो नहीं। इस पर पुनः कन्ह ने कहा कि नहीं अब की बार भारतवर्षान्तर्गत पंजाब का ही प्रदेश उसके हाथ से लेकर उसे छोड़ दिया जाय तो अच्छा है। निदान यह बात भी राजा ने मान ली। तब कन्ह ने अजमेर पहुंच कर शहाबुद्दीन से सब हाल कहा। उसने एक मणि कन्ह को नजर की। कन्ह शहाबुद्दीन को साथ ले कर फिर दिल्ली जा पहुंचे। वहां पर शहाबुद्दीन ने दो घोड़े और अपनी तलवार पृथ्वीराज को नजर करके बड़े विनीत भाव से कहा कि मैं अब की बार अपने दीन (इसलाम) की कसम करके कहता हूं कि अब फिर कभी भी आपके विरुद्ध आचरण करने की चेष्टा न करूंगा और अब से मै और आप सदैव मित्र भाव से रहेंगे। उसके ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज ने दो हजार सवारों की सेना साथ देकर लोहाना आजानबाहु को साथ करके उसे सहर्ष विदा किया। जब शहाबुद्दीन अटक के किनारे पहुंचा तो रयमल जो कि शहाबुद्दीन का जानी दुश्मन था तेंतीस हज़ार सवार लेकर आ पहुंचा। तब लोहाना ने बादशाह को तो ५०० सवारों सहित आगे रवाना कर दिया और आप रयमल का मुकाबिला करके उसे मार गिराया। तब आगे बादशाह से जा मिला। तब तक तातार खां निसुरत्त खां आदि वीर भी गजनी से दो लाख सेना सहित बादशाह से आमिले और बड़े गाजे बाजे से आनन्द मनाते हुए उसे गजनी ले गए। शहाबुद्दीन ने गज़नी पहुचकर १० दिन लोहाना को अपना मेहमान रक्खा और चलते समय १०० हाथी १००० घोड़े और अपना मणिजटित राज्यमुकुट और ७००००० नगद द्रव्य देकर बिदा उसे किया।

लोहाना ने दिल्ली में आकर वह सब द्रव्य पृथ्वीराज के चरणों में रक्खा और वहां का सब समाचार और राजा प्रजा का व्यवहार कह सुनाया। पृथ्वीराज ने उन घोड़े हाथियों में से एक एक घोड़े और एक एक हाथी क्रम से सब सामंतों को बाटँ दिए और वह उक्त राजमुकुट और सब द्रव्य कविचंद के हवाले करके उसे रावल जी के पास चित्तौर को भेजा। चद ने चित्तौर में जाकर उक्त लड़ाई का सब समाचार कहा और वह सब द्रव्य पृथ्वीराज की ओर से सौगात की तरह रावल जी को नजर किया, जिसे उन्होंने भी प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार किया और कविचंद को बहुत सा धन द्रव्य देकर सादर विदा किया॥

———:o:———

कर्नाटी पात्र समय।

[तीसवां समय।]

कन्नौज राज्य के गुप्त दूतों ने जयचन्द के दरबार में समाचार दिया कि दिल्लीपति पृथ्वीराज ने (उक्त) घघर नदी के युद्ध में शहाबुद्दीन को परास्त करके कर्नाट देश पर चढ़ाई की। उस समय पृथ्वीराज के प्रबल दलबल के आतंक से दब कर दक्षिण देशीय सब राजा उससे नम्रता पूर्व्वक मिले और उन्होंने कर्नाट देशीय एक परम सुंदरी वेश्या पृथ्वीराज को समर्पण की जिसे लेकर संवत् ११४१में पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया और अल्पवयस्का वेश्या को नाट्य और संगीत विषय में शिक्षा देने के निमित्त तद्विषय सम्बन्धी परम विद्वान कल्हण नाम नट को उसे सौंप दिया।

कल्हण की उत्तम शिक्षा के कारण वह कर्नाटी वेश्या थोड़े समय में नृत्य गान विद्या में दक्ष होगई उधर उसके अंग अंग में अनग राज के उमंग की प्रतिभा पड़ने लगी। स्वाभाविक हावभाव कटाक्षादि से परिपूर्ण होकर चतुरों का चित्त चुरानेवाली वह विचित्र बामा बन गई। जब यह समाचार पृथ्वीराज के कानों तक पहुंचा तब उसका सहज रसलोलुप मन मलिन्द, कर्नाटी के आनन्द मय छबि मकरंद को पान करने के लिये उनमत्त सा हो उठा। इसलिये उसने उसी दिन अपने अंतरंग सभा मंडप को नाना प्रकार की सुखकर सामिग्रियों से सजवाया और कविचंद रामराय, जइत्र, निड्डुराय, बलभद्र, क्रूरभराय लोहाना आजानबाहु आदि समवयस्क सामंतों सहित वहां स्वर्ण सिंहासन पर आन बैठा और कल्हण सहित कर्नाटी को बुलाए जाने की उसने आज्ञा दी। जब कल्हण कर्नाटी सहित सभा में आ उपस्थित हुआ और राजा की आज्ञानुसार साज सम्हाल कर नाटक खेलने को उद्यत हुआ, तब कविचंद बोला कि हे नटवर ऐसा नाट्य कौशल दिखलाओ जिसमें संगीत विद्या के परम प्रवीण राजा के पास बैठे हुए बीर निड्डुर राय का भी चित्त प्रसन्न हो। कविचंद के ऐसे बचन सुन कर नट बोला कि राजा के पास बैठें हुए ये सुभट कौन हैं? तब कविचंद ने उत्तर दिया कि ये बीर निड्डुर राय कन्नौज के महाराज जयचंद के भाई हैं। यह सुन कर नट ने पुनः प्रश्न किया कि हे कवि वर अब कृपापूर्व्वक यह भी बतलाइए कि आपका आना यहां क्यों कर हुआ?

नट की ऐसी बात सुनकर कविचंद बोला कि एक समय जयचंद, निड्डुर राय और विजय सिंह राजमंत्री महल में एकान्त बैठे हुए थे। यथासमय विजय सिंह ने बदशाह से मित्रता के विषय में बात छेड़ी जिस पर निड्डुर राय ने सर्व्वथा असम्मति प्रकाश की। उसके दूसरे ही दिन निड्डुर राय ने अपने मित्रवर्ग सहित नगर के बाहर राज्य मंत्री के पुत्र सारंग देव के बाग में जलसा रचा। यह समाचार पाकर सारंगदेव दौड़ता हुआ आया और इनके रंग में भंग करने लगा, बीर निड्डुर राय ने उससे तो कुछ न कहा परन्तु वे क्रोध भरे जयचंद के पास आए और उससे सब हाल निवेदन किया। इस पर जयचंद ने सारंग के ही पक्ष का समर्थन किया। निदान जयचंद का यह अविचार और अपमान निड्डुर राय से सहन न हो सका, इस लिये वे उसी समय कन्नौज को त्याग कर दिल्ली चले आए। अतएव यहां महाराज पृथ्वीराज ने आप का यथायोग्य सम्मान करके आपको अपने ही भाई के समान दर्बार में रक्खा है।

कविचंद के निड्डुर राय की कथा कह चुकने पश्चात नट ने मंगलाचरण गान करके राजाओं के लक्षण वर्णन किए और फिर पर्य्यायक्रम से रसमय अभिनय प्रारंभ करके महाराज और वहां उपस्थित सब सभासदों का चित्त प्रसन्न कर दिया। राजा ने स्वयं अपने मुख से कर्नाटी के नृत्य गान की प्रशंसा करते हुए कहा कि हे नट तुझे इस परिश्रम के लिये क्या पारितोषिक दिया जाय। तब नट नम्र भाव से बोला कि भला मैं श्रीमान् से क्या निवेदन करूं। निदान राजा ने उन नट को १० मन स्वर्ण प्रदान करके कर्नाटकी को महल में रक्खे जाने की आज्ञा दी। महल में उस कर्नाटी के सहस्रों दास दासी सेवा में रहते और राजा स्वयं रात्रि दिवस उसी के प्रेमालाप और काम कृत केलि क्रीड़ा में रत रहता॥

पीपा युद्ध।

[एकतीसवां समय।]

एक समय पृथ्वीराज शौचादि नित्य क्रिया से निश्चिन्त हो, स्नान संध्या वंदनादि कर, रत्न जटित सुन्दर आभूषण स्वच्छ वस्त्र, अस्त्र शस्त्रादि धारण कर, मस्तक पर राजमुकुट पहिन सभा में आ विराजे। उधर से राज्य मंत्री कैमास ने आकर अपना आसन ग्रहण किया। थोड़ी देर में चामुंड राय, कन्ह, पुंडीरादि, चंद कवि सहित सब सामंत लोग यथानियमित स्थान पर बैठ कर सभा को सुशोभित करने लगे। संपूर्ण सभासदों के जुट जाने पर यह चर्चा चली कि कन्नौज राज्य के सीमा-स्थित उज्जैन, धार, देवास आदि नगरों पर चढ़ाई कर के उन्हें विजय किया जाय अथवा नहीं? धीर वीर जैमत्त के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज ने कहा कि इस तुच्छ जीवन में एक मात्र कीर्ति ही सार है। मरने के पश्चात यह पंचभौतिक शरीर जहां तहां अपने अपने अंशों में विभक्त हो जाता है। जीव से और इस संसार से जो संबन्ध है वह शरीर के ही रहते तक है इस लिये एक मात्र कीर्ति संपादन के हेतु राजा दधीचि ने अपनी अस्थि (हड्डी) भी देवताओं को दे दी और दुर्योधन ने कीर्ति के ही लिये अपने प्राण दिए पर हाथ से पण न जाने दिया। अतएव मेरा मत यही है कि जयचंद के विरुद्ध सेना सजी जाय। इस प्रकार राजा की प्रतिज्ञा सुन कर सब सामन्तों ने उसे स्वीकार किया। कन्ह, पर्व्वत राय, केहरि कठैर हरसिंह, वीरसिंह, जाम राय जदव, नाहरराय, तोंअरराय, जैतराव, निड्डुर राय इत्यादि सामन्तों ने अपने अपने तहत की सब सेना बात की बात में सुसज्जित कर ली। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार वह सब चतुरंगिणी सेना छ भागों में बाट कर निड्डुरराय, कन्ह चहुआन, जैतसिंह प्रमार, जामदेव जदव, रामराय रघुवंसी और कैमास की हुकूमत में बाँटी गई और पृथ्वीराज आप स्वय सब सेना का मुख्य सेनापति बना। इस प्रकार सब तरह से सेना की पूरी तय्यारी हो चुकने पर सब सामंतों ने आग्रहपूर्व्वक गुरुराम प्रोहित से चढ़ाई करने के लिये शुभ मुहूर्त साधन करने की प्रार्थना की। निदान गुरु राम ने भी राजा का रुख पा 'वैशाष शुक्ल ५' का सुदिन निश्चय करके कह सुनाया। पृथ्वीराज और सब सामंत यद्यपि प्रथक प्रथक देहधारी थे किन्तु वास्तव में वे सब सामन्तों का प्रतिबिंब स्वरूप थे या यदि इन सब सामन्तों को किरण मान लें तो पृथ्वीराज को भास्कर स्वरूप मानना ही युक्तिसयुत होगा। गुरुराम के मुख से रणमुहूर्त का शुभागम सुनते ही वे सब वीर सामंत आनन्द में उन-मत्त से हो उठे और उनका वह दिन बड़े ही चाव और आनन्द में व्यतीत हुआ।

यात्रा के लिये नियत उपरोक्त तिथि के प्रात. काल अरुणोदय के समय से ही सब सामंत लोग काले काले दीर्घकाय मतवाले हाथियों पर बैठ बैठ कर राजमहल के सम्मुख आ आ कर घुँवाधार बहल से जुटने लगे। उनके पीछे पीछे रंग विरंगी अनी कनी चतुरंगिनी सेना भी पावस के बहुरंग मेघों के समान आच्छादित होती चली आती थी। हाथियों के दांत वगपात और चमचमाते हुए उज्वल शस्त्र साक्षात सौदामिनी से भान होते थे। उस समय सब सामंत लोग क्रोध, उमंग और उत्साह से भरे हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे विषैला काल सर्प बामी की ओर शुद्ध रहता है किन्तु उसके बाहर चलता हुआ सदैव वक्रगामी होता है। सब सेना के जुट जाने पर सहकारी सेनाध्यक्ष निड्डुर राय ने सब सेना को यथा वर्ण प्रथक प्रथक श्रेणी-बद्ध किया और आप स्वयं सब सेना के बीच में खड़ा होकर कहने लगा कि हे भाइयो, यह जो हम तुम इस समय मिले हुए खड़े एक दूसरे को देख रहे है, यह सब कुछ भी नहीं है। मरने के पश्चात् यह पंच-भौतिक शरीर निज निज अंशों से पंचतत्वों में और आत्मा आत्मा में लीन हो जायगा। मरने के पश्चात् न कोई कर्म है न उसका भोग है। जैसे तप्त तवे

पर जल की बूंद का और बहर की छाह का कोई समय निश्चित नहीं है इसी प्रकार इस भस्मीभूत शरीर की स्थिरता का भी कोई निश्चय नहीं। परन्तु यह बात विषयासक्त कायर पुरुषों को केवल उसी समय स्मरण आती है जब कि वे अपने किसी आत्मीय जन का दाह करने स्मशान को जाते हैं या स्त्री संभोग के अन्त में अथवा कथापुराणादि को सुनते समय भी उन्हें इसका स्मरण होता है। परन्तु भाइयो, बीरलोगों को इस क्षण भंगुर शरीर की अनित्यता और स्वामिसेवा का गौरव सदैव स्मरण रखना उचित है क्योंकि अन्तिम समय में जैसा ध्यान बँधा रहता है उसीके अनुसार पुनर्जन्म होता है अतएव अब इस समय जीवन की आशा सर्वथा त्याग करके ही युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाओ। निड्डुर राय के ऐसे वचन सुन कर सब सूर वीरों ने अपने प्रधान अस्त्रों से सलामी लेकर जैजैकार ध्वनि करके आकाश को प्रतिध्वनित कर दिया और सेनापति की आज्ञानुसार यथारीति श्रेणीबद्ध हो कर वे प्रस्थान करने लगे।

उधर तो शहाबुद्दीन सदैव इसी टोह में रहता था कि कब समय पाऊं और कब पृथ्वीराज को धर दबाऊं। उसने बड़े बड़े राजनैतिक चुटकलों द्वारा लक्षों रुपया व्यय करके पृथ्वीराज की तरफ के सैकड़ों मनुष्य इसीलिये अपना रक्खे थे कि वे समय पर केवल सही सही समाचार दिया करें जैसा कि पाठकों को अभी कई बार पढ़ने में आचुका है। निदान इस प्रस्थान की खबर भी शहाबुद्दीन तक पहुंच गई और वह अपने विचार से मोरचेबन्दी के उत्तम स्थान छांट कर रास्ते में आ डटा। इधर से राजपूत सेना मुकाम पर मुकाम कूच करती चली जाती थी और दो दो चार चार पड़ाव आगे गुप्त चर भी चलते थे। उन गुप्तचरों ने अपने अधिपति चामुंडराय को बादशाह के राह रोकने की खबर दी। तब वह वीर चामुंडराय कुछ थोड़ी सेना लेकर पृथ्वीराज के बिना जाने ही आगे बढ़गया और रातोंरात चलकर तत्तारखां की अग्रगामिनी सेना पर उसने छापा जा मारा। इस राजपूत सेना के आक्रमण कर देने पर मुसलमान लोग अपने अपने आने बाने सम्हाल कर साम्हने हो गए। निदान इधर जब तक चामुंडराय और तत्तारखां की परस्पर हाथा बांही हो रही थी, तबतक पृथ्वीराज सब दल बल सहित देवास की तरफ आगे बढ़े जाते थे। मनुष्य आशा के वशीभूत होकर मनमाना हाथ पैर मरता है परन्तु होता वही है जो कुछ होनहारस्वरूप ईश्वरेच्छा होती है। निदान आगे जयचंद की बड़ी भारी कुमक लिये हुए शहाबुद्दीन अखम रूप से डँटा हुआ था। जब पृथ्वीराज की सेना मुठभेर में जा पहुंची तब उधर से मुसल्मान सेना जो पहिले से ही इसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर तैयार होगई। इधर से पृथ्वीराज ने भी हल्ला बोल दिया। अपने अपने सेनापति सरदारों की आज्ञा पाते ही दोनों सेना के सूरवीर योद्धागण स्वर्ग के मग पर पदार्पण करने को उत्सुक होते हुए शत्रुओं को प्रचार प्रचार कर मारने में रत हुए। शहाबुद्दीन के दृढ़ मन्तव्य के अनुसार मुसल्मान योद्धाओं का यही मत था कि जिस तरह बने पृथ्वीराज को पकड़ लेना है और इसीलिये जान हथेली पर रख कर वे युद्ध कर रहे थे। उनकी ऐसी प्रबलता देखकर कन्ह, गोइन्दराय, लंगरीराय और अत्ताताई क्रोध से अधर कपाते हुए मतवाले मतंग की भांति यवन सेना में धँस पड़े और उधर के बड़े बड़े बीरों को सहज ही सिवार की नांई नाश करने लगे। इस प्रकार उक्त चार बीरों के कोप के कारण जब हसबखां और खुरासानखां दो मुख्य सर्दार धराशायी हो गए तब मुसल्मानों के पांव उखड़ने लगे। यह देख कर शहाबुद्दीन ने सभों को बड़े उत्कर्ष से ललकारा और आप स्वयं उस कठिन मारामार के समय में घोड़े की बाग उठाता हुआ वह आगे बढ़ा। तब इधर से पृथ्वीराज ने भी राजपूत वीरों को उत्तेजक वाक्यों से संबोधन करते हुए उस समर क्षेत्र में पग किया कि अब की बार इस म्लेच्छ को पकड़ कर अवश्य ही इसे इसकी निर्लज्जता और शठता का पुरस्कार

देना है। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर एक ओर से चालुक्य राय, और दूसरी ओर से जामदेव जदव ने आध आध कोस का रुख दे कर शाही सेना को बीचों बीच दबाया और पृथ्वीराज ने शेष सेना को स्वयं मयूरव्यूहाकार रचकर सम्मुख से आक्रमण किया। इस पर शहाबुद्दीन की तरफ से न्याजीखां तथा तत्तारखां ने सेना की बाग सम्हारी। पृथ्वीराज की ओर से पीप (पीपा) पड़िहार हरावल में था अतएव शहाबुद्दीन से ही उसका मुकाबला पड़ा। दोनों ओर खचा खच होते होते रात्रि होगई सेना नायकों की अनिच्छा होने पर भी सिपाहियों ने लड़ाई से मुंह न मोड़ा। तब छ हजार मसालें जला कर युद्धभूमि में उपस्थित की गईं और युद्ध बराबर होता ही रहा। जब आधी रात्रि हो गई तब पीप पड़िहार और कीर्तिसिंह तोंअर ने बादशाह को घेर लिया। जिसके ऊपर दार मदार था जब उसी के प्राण सकट में पड़गए तब सिपाही और साधारण सेना नायकों की कौन पूछे। जिधर जिसका जी चाहा सब तीनतेरह हो उठे और पीपा पडिहार ने शहाबुद्दीन को बदी कर लिया।

इस प्रकार शहाबुद्दीन को बंदी करके पृथ्वीराज ने दिल्ली में आकर पीपा पड़िहार को बहुतसा धन पारितोषिक में दिया और बादशाह को बिना दण्ड लिए ही मुक्त कर दिया। इस युद्ध में प्रसंगराय खींची पज्जूनराय का पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन का भाई हुजाब खां इत्यादि सरदार मारे गए।

करहरा युद्ध।

(बत्तीसवां समय।)

एक बार पृथ्वीराज केवल ६४ सामतो के साथ मालवा देश की भूमि में शिकार खेलने के लिये पधारे। मालवपति उज्जैन के राजा भीमदेव ने सादर पृथ्वीराज को अपना स्वामी स्वीकार किया और अपनी बेटी इन्द्रावती का पाणिग्रहण भी पृथ्वीराज के साथ कर देने की प्रतिज्ञा की।

जिस समय पृथ्वीराज के डेरे मालवे के जंगलों ही में पडे हुए थे, भीमदेव ने अपने कुल प्रोहित के हाथ पचमी मंगलवार को इन्द्रावती का टीका पृथ्वीराज के पास भेज दिया, जिसे पृथ्वीराज ने सादर स्वीकार किया और टीके के पश्चात् विधित्रत नेगचार होजाने पर पृथ्वीराज ने उज्जैन से टीका लैकर आए हुए ब्राह्मण को बुलाकर पूछा कि हे विप्र उस कुमारी इन्द्रावती की क्या अवस्था है अथवा और भी जो तुम उसके सौन्दर्य्य और स्वरूप के विषय मे जानते हो सो कहो। राजा के ऐसे बचन सुन कर वह ब्राह्मण बोला कि अन्नदाता,मैं किस मुख से उस सुकुमारी कुमारी के रूप गुण की प्रशसा करूं। घणीचमा! उसकी शैशव अवस्था का ह्रास और यौवन का दिनप्रति शरद चंद के समान प्रकाश हो रहा है। उसके स्याम सचक्कन सटकारे कारे कच मकरन्द की स्यामता को मंद करते है, उसके चन्द्रमा समानतेजोमय उज्वल ललाट में लाल बिन्दी ऐसी सुशोभित होती है मानो चन्दमण्डल में मगल विराजमान है। उसके धनुषाकार वक्र भृकुटियों के नीचे सुन्दर सूक्ष्म वरौनी प्रत्यंचा स्वरूप हैं और उनके मध्य में स्यामता सहित स्वच्छ और बड़े बड़े नेत्र मीन दीन एवं खंजन इत्यादि को लज्जित करने वाले साक्षात् पंचबाण के बाण से भी प्रखर हैं। उस की नासिका दीपशिखा को, कपोल गुलाब पुष्पों को, ओष्ठ विद्रुम को, दंतपंक्ति कुंदकली को मंद दुति करते हुए देखने वालों के मन को सहज मोहित करते हैं। उसकी उठती हुई सूक्ष्म रोमराजि सर्प के समान सरकती सी जाती है। और कोमल वक्षस्थल पर कमल कली के समान युग यौवन अभी उसकते आरहे हैं। हे अन्नदाता, और मैं कहां तक कहूं वह सर्वांग सुन्दरी नवेली नवला साक्षात् कामदेव की स्त्री रतिरानी का प्रतिविम्ब स्वरूप है।

इस प्रकार टीका चढ़ाकर प्रोहित ने ब्याह की पक्कायत का समाचर उज्जैन में दिया तो वहां क्या राजा क्या प्रजा सबके घर घर आनन्द बधाई होने लगी और राज्यहर्म्य में नित नव मंगल गान होते हुए इन्द्रावती के ब्याह की तैय्यारी होने लगी। इधर पृथ्वीराज को समाचर मिला कि गुर्ज्जर नरेश भीम देव चालुक्य ने चित्तौर पर आक्रमण किया है इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने रस रास छोड़ रावल जी की सहायता के लिये चित्तौर की तरफ जाने का विचार निश्चय किया, पज्जून राय को अपना खड्ग * बँधा कर उज्जैन की तरफ भेजा और अन्य सब सामन्तों को ले कर वह आप स्वयं चित्तौर की तरफ चलदिया। पृथ्वीराज अपने सूर सामन्त और सुसज्जित सेना सहित दिनदून पड़ाव करता हुआ चित्तौर की तरफ़ जाने लगा। इस प्रकार चलते हुए जब वह आधी दूर गया होगा कि उधर से रावल जी का प्रधान इधर को आता हुआ मिला। पृथ्वीराज ने पहिले तो उससे रावल जी का कुशल समाचार पूछा और फिर पूछा कि भीमदेव की सेना कहां पर है और रावल जी इस समय सेना सहित क्या उद्योग कर रहे हैं। पृथ्वीराज के प्रश्नों का उत्तर प्रधान ने संक्षेप में देकर कहा कि भीमदेव की सेना इस समय चित्रकोट से दस कोस के अन्तर पर है परन्तु शीघ्र ही मुठभेड़ हुआ चाहता है।

* राजपूत राजाओं में पहिले यह रिवाज थी कि यदि किसी कारण वश वर बरात में स्वयं न जा सके तो उस का कोई आमात्य उसका खड्ग या कटार लेकर वर के स्थान में ब्याहने जाया करता था। अन्यान्य सब नेग तो वहीं पुरुष संपादन करता था केवल भाँवरी उसी कटार के साथ पड़ती थी और इस रीति से हुआ ब्याह उसीका ब्याह माना जाता था जिसकी कि वह कटार होती थी।

और इसी विचार से रावल जी की आज्ञानुसार मैं आपको ही यह समाचार देने के लिये दिल्ली जा रहा था। पृथ्वीराज बोला कि वह वही तो भीमदेव है जिसे मैंने अगनित बार गैल की धूलि चटाई है। मेरे इन्हीं समन्तों के साम्हने उसने कई बार पीठ दिखाई है और अब भी वह अपने किए पर पछतावेगा।

उधर भीमदेव जबतक चित्रकूट गढ़ पर आक्रमण करने को था कि पृथ्वीराज जी भी वहां,पहुँच गए। पृथ्वीराज ने उक्त प्रधान को तो रावल जी के पास भेजा और उसने आप स्वयं चढ़ीसवारी चालुक्य सेना पर हल्ला बोल दिया। पारधी के समान पृथ्वीराज की सेना से सताए जाने पर वह सर्प रूपी चालुक्य सेना समूह अपना खड्ग रूपी फन उठा कर इस तरफ बदल पड़ा। तब तक उधर से रावल जी ने भी आक्रमण कर दिया। दोनों तरफ से दो प्रबल सेनाओं से दबाए जाने पर भी वीर भीमदेव जरा न हिचका और जी खोलकर तलवार चलाने लगा। पृथ्वीराज के अधिसेनानायक हुसैनखां * ने अपनी सेना को गजव्यूहाकार रचा जिसमें आप और भ्रातीई दन्त स्थान पर रहे, गोइन्दराज को सुंड और राजा को कुम्भस्थल स्थान पर नियत किया। उसने महनासिंह मोरी और कन्ह को वाम और चित्तौर के सबल सामन्तों को दक्षिण पक्ष पर प्रेरित किया। निदान इस प्रकार व्यूहबध्य दोनों विकट सेनाओं से अकेले भीमदेव ने ५ प्रहर युद्ध किया। इस युद्ध में उसके १००० योधा काम आए।

दूसरे दिवस तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध आरम्भ हुआ। इस दिन भीमदेव ने नदी पार करके स्वयं रावल की सेना पर आक्रमण किया किन्तु वह मेवाड़ी बीर प्रथमही सचेत था; इसलिये उसने हरावल का छापा सम्हाल कर तिरछा रुख देकर ऐसे जोर से धावा मारा कि चालुक्क सेना के छक्के छूट गए। इधर से पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी मार का सिलसिला जारी कर दिया, और जब दिनभर घनघोर युद्ध होते होते भीमदेव के १०बड़े सेनानायक भी मारे जा चुके पर तौभी भीमदेव ने हिम्मत न हारी; तब आधी घड़ी दिन रहते हुसेनखां ने प्राणों का मोह छोड़कर आक्रमण किया और पृथ्वीराज के सूर्य्य-रूपी प्रखर प्रताप से हुसेनखा ने चालुक (सोलंकी) सेना को परास्त करके मार भगाया।

भीमदेव तो हार मानकर गुजरात की तरफ चलदिया परन्तु पृथ्वीराज चित्रकूटगढ़ में न जाकर बराबर अपने शिविर में ही डटा रहा। दूसरे दिन, रात्रि को स्वप्न में क्या देखता है कि उसकी कीर्ति दिव्य रूप धारण किए हुए उत्तमोत्तम वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित उसके पास आई और बोली कि क्षत्रियों में श्रेष्ठ पृथ्वीराज! मैं तेरी दिगदिगन्तर व्यापिनी उज्ज्वल कीर्तिदेवी हूं और तुझपर प्रसन्न होकर तुझे दर्शन देने आई हूं। इतना कहकर कीर्ति देवी तो अन्तर्ध्यान होगई किन्तु राजा की निद्रा उसी समय भंग हो गई तब राजा ने गुरुराम को बुलाकर उक्त कीर्ति के दर्शन का वृत्तान्त कह कर उसका कारण पूछा? गुरुराम ने कहा कि हे राजन् यह स्वप्न भोलाराय भीमदेव के पराजय का स्वरूप था। इसके पश्चात् पृथ्वीराज पुनः निद्रादेवी की सुखमय गोद मे शीश रखकर सोने लगा। रात्रि के पिछले पहर में जब कि पृथ्वीराज के शिविर में सिवाय पहरेदार सिपाहियों के और कोई भी नें जागता था भोलाराय भीमदेव ने ५००० शूरबीरों सहित पृथ्वीराज के निज शिविर पर सहसा आक्रमण कर दिया। इस अकस्मात घटना से सब सेना में कूह मच उठी जो जहा सोते जागते नंघे उघारे पड़े थे जिसे जो हथियार मिला लेकर दौड़ पड़े और भीमदेव के आक्रमण को रोकने में तत्पर हुए। इस रात्रि की लड़ाई में पृथ्वीराज की तरफ के रूपधन प्रमार (जैतप्रमार का छोटा भाई) किल्ह और सिंध नामक उसका हजूरी, बीर बागरी, जैसिंह, मोरी रक्खीसिंह, खेजबान इत्यादि नामी नामी सर्दार काम आए। दोनों

* नवम समय में वर्णन किए हुए शहाबुद्दीन के भाई खिज रेखा के प्रेमपात्र मीरहूसैन का पुत्र 'हुसेनखा।" दसवां समय देखो।

सेना के १५०० वीर सिपाही खेत रहे। भीमदेव का नामी सेनापति मेरपहाड़ इस युद्ध में काम आया। यह रात्रि का युद्ध कृष्ण १० को हुआ था। चन्द्रमा निकलते निकलते उस दिन का युद्ध बन्द होगया।

दूसरे दिन प्रातःकाल से पुनः लोहा झड़ना आरम्भ हुआ। उधर से चालुक्य इधर से पृथ्वीराज दोनों ओर के शूर वीर दिल तोड़कर एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर मारने लगे। दो घड़ी में समस्त रण भूमि रक्त से परिपूर्ण होगई। जहां तहां पड़े हुए मनुष्य और पशुओं के शव उस रक्त सागर में जल जन्तु से तैरते भान होते थे। कहीं कहीं मांसाहारी पशु रक्त मांस पान करने में मस्त थे। कहीं जम्बुक गृद्धादि एक एक लोथड़े पर लड़ कर मरे जाते थे। उस समय बीर लोग आनन्द के मारे फूले नहीं समाते, परंतु कायर और क्लीव जहां तहां भागे जाते थे। निदान इस प्रकार लत्थपत्थ युद्ध होते हुए दो प्रहर दिन व्यतीत होगया और भीमदेव की तरफ़ ५००० सपूत सैनिक खेत रहे। तब भीमदेव भाग उठा। कुछ सेना तो पहिलेही खप चुकी थी। शेष इस भाग भगोड में पृथ्वीराज के क्रुद्ध योधाओं की शिकार बनी। तात्पर्य्य यह कि गुजरात तक भीमदेव के ३०००० सिपाहियों में से तीस भी साथ न पहुंचे।

इस प्रकार भीमदेव को भगाकर पृथ्वीराज ने रणक्षेत्र में से अपने सैनिकों की लाशें उठवाईं और उनका यथाविधि मृतक संस्कार करवाया। तब वह विजय के बाजे बजाता मेघस्पर्शी रंग बिरंगे निशान उड़ाता दिल्ली को आया।

आगे अब पृथ्वीराज के साथ इन्द्रावती के विवाह की कथा वर्णन की जायगी।



इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवाँ समय।)

पृथ्वीराज के भेजे हुए कविचन्द, चन्दपुंडीर, जैतराव आदिक सामंत जब उज्जैन पहुँचे और भीमदेव से मिलकर उन्होंने पृथ्वीराज के चित्रकूट को चले जाने का समाचार कहा और अपने आने का अभिप्राय भी बर्णन किया तब भीमदेव बहुत बिगड़ा और बोला कि हे चन्दबर्दाई, समान वस्तुओं का ही परस्पर मेल, सम्बन्ध व व्यवहार होता है जो पुरुष ऐसा निष्ठुरहृदय है कि ठीक विवाह का अवसर छोड़ अन्यत्र युद्ध के लिये चला गया और उसने तुम लोगों को मेरे पास भेजा ऐसे पुरुष को मैं अपनी कन्या कदापि न ब्याहूंगा। यह सुनकर कविचन्द बोला कि पृथ्वीराज यदि गाढ़े समय पर सगे की सहायता करने को कटिबद्ध हुआ तो क्या बुरा किया! आपके सम्मान और मर्य्यादा के विचार से इन्होंने हम लोगों को तो आपके पास भेज दिया है। तब भीमदेव ने यह पण किया कि जो पृथ्वीराज ५ दिन में न आवेगा तो फिर मैं व्याह न करूंगा, चाहे जो हो।

यह समाचार जब इन्द्रावती के कान तक पहुँचा कि भीमदेव पांच दिन की अवधि टर जाने पश्चात् उस का विवाह फिर पृथ्वीराज के साथ न करेगा तब उसने भी पण किया कि यदि मेरा विवाह होगा तो शहाबुद्दीन को बार बार बंधन और मोक्ष करनेवाले पृथ्वीराज से ही होगा अथवा मैं प्राण परित्याग करूंगी। इसी प्रकार इन्द्रावती नाना प्रकार के संकल्प विकल्प करती हुई शोक से अधीर हो उठी। यह देखकर उसकी सखियां उसे सान्त्वना देने के लिये बोलीं कि उस दानव कुल में उत्पन्न पृथ्वीराज के लिये इतना मोह क्यों करती हो। तुम्हारे पिता उससे कहीं सर्वोत्तम रूप गुण सम्पन्न वर ढूंढेंगे और भला कहो तो मृगमद की गन्ध से सुवासित शरीरवाली यदि चन्दन की चाह और चर्चा करे तो हेउ सकां तक बुद्धिमान समझा जाय। उनकी ऐसी बातें सुनकर इन्द्रावती बोली कि हम राजकुल उत्पन्न राजकुमारी हैं हमारे दृढ़ विचार कल्पनामात्र असंगत और क्षणिक नहीं होते।

अवधि बीत जाने पर भी जब पृथ्वीराज की ओर से कोई संदेसा भी न आया तब भीमदेव ने सामन्तों से कहला भेजा कि तुमलोग यहां क्यों पड़े हुए हो, क्या मेरा बल प्रताप तुम्हें नहीं मालूम है। इसके उत्तर में कविचन्द ने अपने साथियों सहित स्वयं भीमदेव के दरबार में जाकर कहा कि श्रीमान्, समय को देखकर कार्य्य करना चाहिए, शास्त्रों में समयानुसार कार्य्य करनेवाले को ही बुद्धिमान कहा गया है। तब भीमदेव पज्जूनराय की तरफ इशारा करके बोला कि तुमने बादशाह को पकड़ लिया बस इसी धुन में फूले नहीं समाते हो और दूसरे को क्षत्री ही नहीं गिनते। तब तो जैतराव से न रहागया और वह क्रोध से रक्त नेत्र करके ओष्ठ फड़काता हुआ बोला कि भीमदेव यह क्या कह रहे हो, सम्हल कर बात करो। इस पर भीमदेव ने शान्त स्वभाव से गुरुराम से कहा कि थोड़े से स्वार्थ के लिये परस्पर व्यर्थ विग्रह करना भला कौनसी बुद्धिमत्ता है। तब गुरुराम बोले कि सुग्रीव और रामचन्द्रजी की मित्रता, बलि और रावण का बध इत्यादि ऐतिहासिक घटनाओं का कारण एक मात्र स्त्री ही है। यह सुन कर भीमदेव चिढ़कर बोला कि तुम तो निरे ब्राह्मण ही हो, आशीर्वाद देना और पुस्तक पढ़ना जानते हो। इन राजनैतिक विषयों को क्या जानो। तब कविचन्द बोला कि हे राजन् कंस और शिशुपाल का वध, रुक्मकेश का बन्धन एक मात्र रुक्मिणी के कारण हुआ। यह क्या संसार में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो प्राणप्यारी प्रिया के प्रेम के लिये प्राण का परित्याग करने में पीछे पड़े। निदान भीमदेव ने बात बढ़ती देखकर उन्हें तो युक्तिपूर्वक बिदा किया और मंत्री को बुलाकर पूछा कि अब क्या करना चाहिए? अस्तु मंत्री ने भी यही बचन कहा कि इस व्याह का कर देना ही कल्याणकर है; परन्तु भीमदेव के मन में यह बात न आई।

इधर सामन्त लोग बिचारने लगे कि यदि हमलोग परस्पर विग्रह न करके चले भी जांय, तौभी पृथ्वीराज कब मानने वाले हैं। निदान रघुवंस राम ने कहा कि एक दिन ऐसे भी मरना वैसे भी मरना, फिर ऐसा सुअवसर कठिनता से मिलता है इसलिये और सब सोच बिचार छोड़कर इस समय बल से ही कार्य्य लेना ठीक है। यह सलाह पक्की होजाने पर प्रातःकाल होतेही सामन्तों ने उज्जैनगढ़ के द्वार द्वार पर मोरचेबन्दी कर ली। क्षणमात्र में सारे उज्जैन नगर में कूह मच गई। जब यह समाचार भीमदेव तक पहुँचा तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सजकर आ पहुँचा। निदान इधर से रघुवंश राम तो नाकेबंदी की देख भाल पर रहा, पज्जूनराय ने उज्जैन के हरावल पर हमला किया और जैतराव स्वयं भीमदेव से युद्ध करने लगा। दोनों ओर से खूब लोहा झड़ा परन्तु सायंकाल तक किसी की हार जीत न हुई; इसलिये दूसरे दिन फिर लड़ाई ठनी और दोपहर तक बराबर खचाखच तलवार चलती रही दोपहर तक लड़ते लड़ते सामन्तों ने भीमदेव को घेरकर बेदाग पकड़ लिया और युद्धाग्नि शान्त हुई। निदान कविचन्द ने भीमदेव को बहुत कुछ समझा बुझाकर इन्द्रावती का व्याह पृथ्वीराज से करदेना स्वीकार कराके उसे छोड़ दिया।

तब तो भीमदेव की भी आँखें खुल गईं। उसने पिछली सब बातें भुला कर सैन सहित सामंतों का आतिथ्य स्वीकार किया और चहुआन के घायलों को भी बड़े आदर से रख कर उनकी दवा दारू का प्रबन्ध करा दिया।

इधर उज्जैन नगर में घर घर इन्द्रावती के विवाह का उत्सव होने लगा, उधर सामन्तों ने इस बात की सूचना देने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिख भेजा। विवाह की तिथि आ जाने पर सोलहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरी इन्द्रावती सखियों सहित शुभ स्थान सूचक नव पल्लवाच्छादित विवाह मंडप में लाई गई। वेदपाठी ब्राह्मणों ने वेद मत्रों का उच्चारण करते हुए पृथ्वीराज के खड्ग के साथ इन्द्रावती का गठबंधन कर दिया। और उसी खड्ग के साथ विधिवत भांवरी पड़ी। भीमदेव ने भांवरी के समय १०० हाथी, एक हजार घोड़े, सौ पीनसें और बहुत से दास दासी दान किए।

इस प्रकार विवाह के नेगचार समाप्त हो जाने पर जब इन्द्रावती दिल्ली को बिदा होने लगी तब उसकी माता ने कहा कि हे पुत्री, स्त्रियों का मुख्य धर्म पति की सेवा करना ही है, उसकी इच्छा तथा आज्ञा के विरुद्ध कोई भी कार्य न करे। स्त्री का पति के जीवन से जीवन, पति की मृत्यु से मृत्यु होती है।

इस प्रकार सब सामंत लोग पृथ्वीराज के न होते भी उज्जैनपति भीमदेव को युद्ध में परास्त करके और इन्द्रावती को विवाह कर गाजे बाजे से विजय के निशान उड़ाते दिल्ली की तरफ़ चले। जब दिल्ली से आठ कोस इधर रह गए तब उन्होंने अपने आने का समाचार भेजा। निदान उधर से लोहाना ने आकर अगवानी की और तब सबने सानन्द नगर में प्रवेश किया। शुभ लग्न आने पर दुलहिन ने भी राजमहल में प्रवेश किया। राजमहल का दक्षिण भाग इन्द्रावती के रहने के लिये दिया गया और १०० दासियां उसकी सेवा में नियत की गईं।

सुहाग रात्रि की रात को, इन्द्रावती का निवासस्थान भीमदेव के दिए हुए नाना प्रकार के नवीन नवीन साज बाजों से सुसज्जित करके सजाया गया। जहां तहां मृगमद, अगर, अरगजा, केसर, कुंकुम आदि के गंध से समस्त महल महक रहा था। उस आनन्द आगार में स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ पृथ्वीराज इन्द्रावती की प्रतीक्षा कर रहा था। तब तक सहेलियों में मिली हुई इन्द्रावती भी आगई और कामातुर पृथ्वीराज ने अधीर हो कर उसे तुरंत ही अपने हिए का हार बना लिया। यह चरित्र देख कर आड़ में से देखती हुई अन्यान्य रानियां हँस पड़ीं और किलक कर तालियां देने लगीं। निदान उस रात्रि को उस सुहाग स्थान में शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, बीर, भयानक, बीभत्स और अद्भुत शान्ति नवो रसों ने बारी बारी प्रवेश किया।

जैतराव युद्ध।

[चौतीसवां समय।]

इन्द्रावती को व्याहने पश्चात, पृथ्वीराज ढाई वर्ष पर्य्यन्त निश्चिंत भाव से दिल्ली की राजश्री का भोग और राज्य का निरीक्षण परीक्षण करता रहा। उसके अनन्तर एक दिन पृथ्वीराज ने आज्ञा दी कि शिकारी सामान तय्यार किया जाय और षट्टू बन में भी सब प्रकार बन्दोवस्त मुनासिब होजाय। इधर जबतक यह सब तय्यारियाँ होने लगीं तब तक नीतराव कुतवाल ने उक्त समाचार की सूचना शहाबुद्दीन के पास भेज दी। जब यहां सब साज समाज तैय्यार होगया तब पृथ्वीराज ७ चीते, १२०कुत्ते, ४२ श्रीघोस, १०० मृग और और भी नाना प्रकार के शिकारी जानवरों और कुही जुर्रा बाज इत्यादि बहुतसी शिकारी चिड़ियों को लिवाकर सब सामन्तों सहित षट्टूबन की तरफ चला। षट्टू बन में जाकर पृथ्वीराज ने डेरा डाला ही था कि शहाबुद्दीन का भेजा हुआ दूत राजा के शिविर के द्वार पर आ उपस्थित हुआ। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार उस दूत ने राजसभा में जाकर शहाबुद्दीन का दिया हुआ एक पत्र पेश किया और कहा कि शहाबुद्दीन ने कहा है कि समस्त पंजाब देश और हमारा अपराधी हुसेनखां हमको दे दिया जाय अन्यथा अच्छा न होगा। अतएव तदनुसार मैं भी अर्ज करता हूं कि शहाबुद्दीन का कहना मानकर आप उससे मेल करलें, इसीमें भला है, क्योंकि समय की गति कोई जानता नहीं, आगे पीछे न जाने क्या हो। उस दूत के ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध से मुख लाल होगया। वह बोला कि रे मूर्ख बसीठ! रे शठ!! तूं नहीं जानता कि अबतक कौन जीता और कौन हारा। क्या इस पर भी हम शहाबुद्दीन ऐसे अधम मनुष्य से डरें। वह तो मनुष्यही है। एक बार साक्षात् यम भी क्यों न साम्हने आजाय किन्तु हम (क्षत्री लोग) राज्यसुख की लालसा से कर्तव्य का त्याग न करेंगे। भला तू विचार भी तो कर कि कहां गजनी और कहां दिल्ली और मैंने कितनी बार उसे कैद कर कर के सहजही जाने दिया। निदान इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह दूत चुपके चला गया और यथातथ्य समाचार शहाबुद्दीन के सम्मुख उसने कह सुनाया।

दूत का कहा हुआ समाचार सुनकर, शहाबुद्दीन ने क्रुद्ध हो युद्ध के लिये तय्यारी बोल दी और असंख्य यवन दल सहित वह दिल्ली की तरफ़ आने लगा। जब शहाबुद्दीन सिन्ध नदी तक आगया और यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने भी इधर से अपनी राजपूत सैना तय्यार कर के शहाबुद्दीन से आगे चलकर मिलने के लिये कूच किया। मुसल्मानों से युद्ध करने के लिये जाते हुए राजपूत उत्साह के मारे फूले अंग न समाते थे। साथही उसके जो कहीं कोई कपूत कायर थे उनके सहजही प्राण सूखे जाते थे। इसी प्रकार उधर से मुसल्मान सेना भी ढाई वर्ष का अवकाश पाकर फिर से निर्लज्ज कदलीवृक्ष की तरह लहलहा उठी थी, तिस पर शहाबुद्दीन दिनप्रति पडाव से कूच करते समय नाना प्रकार की उत्कर्षजनक वक्तृताएं देता हुआ सिपाहियों को उत्साहित किया करता था। उसे बात बात में पृथ्वीराज को पकड़ लेने की ही धुन सवार थी। निदान जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे के साम्हने आगईं तब शहाबुद्दीन की तरफ़ से जमशोजखां और नवरोज़खां सेनानायक बनाए गए। इधर से जैतराव प्रमार सेनानायक हुआ। जैतराव की आज्ञानुसार राजपूत सेना भी सन्नद्ध होकर श्रेणीबद्ध खड़ी हो गई। धौंसें की धुकार तुरही की पुकार से दिशाएँ गूंज उठीं। उस समय युद्ध के लिये उपस्थित दोनों सेनाओं में बजते हुए रणवाद्यों को सुनकर कपूत कायरों के कलेजे काँपते थे। घोड़े, हाथी, ऊंट जहां तहां तड़फड़ाते हुए आगे बढ़ने को उत्साह दिखाते थे। निदान सेनानायकों की आज्ञा पाते ही दोनों सेनाएँ शौर्य्य के वेग से भरी हुई यह इधर से और वह उधर से एक दूसरे पर टूट पड़ीं। झनाझन तलवार झड़ी, रुधिर की धारा चलने और लोथ पर लोथ पड़ने लगी। इस प्रकार घोर घमासान युद्ध

होते होते तीसरे पहर पर शहाबुद्दीन ने "साम्हने का दबाव देकर" बाईं तरफ से स्वयं पृथ्वीराज पर आक्रमण किया। परन्तु पृथ्वीराज की तेज तलवार के साम्हने डँटने की हिम्मत न पड़ी और अन्त को आँख मींच कर उसे स्वयं हटना पड़ा। युद्ध होते होते सायंकाल होगया परन्तु हार जीत किसी की न हुई। शहाबुद्दीन की तरफ के मारुफ़ ख़ां और उस्मान ख़ां लोहानी आजान बाहु के हाथ से और पृथ्वीराज की तरफ़ के वरसिंह और सांखलासूर दो नामी सर्दार पंचत्व को प्राप्त हुए।

युद्ध श्रम से श्रान्त दोनों सेनाओं ने रात्रिभर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिन सवेरे से फिर कमरें कसीं और अरुणोदय होते दोनों दल रणक्षेत्र में जा जमे। बाल सूर्य्य की कोमल किरणों की प्रभा से विद्युत समान चमचमाते हुए अस्त्र शस्त्रों को चमकाते हुए वेएक दूसरे को मारने लगे। जिस रणक्षेत्र में रात्रिभर गीदड़ गीध आदि पशुओं ने खमच मचा रक्खा था उसी भूमि में फिर से ताजे रक्त के फ़ौआरे छूटने तथा मनुष्य और हाथी घोड़ों की खोपड़ियों के फूटने का शब्द होने लगा। अन्त में चहुआन सेना ने ऐसा जोर पकड़ा कि मुसल्मानों की हिम्मत हारने लगी। ऐसेही समय में अवसर देख कर जैतराव ने शहाबुद्दीन को जाकर घेर लिया और स्वयं अपनी तलवार के वार से शहाबुद्दीन के हाथी का जबरदस्त तंग काट दिया। तंग के कटते ही हाथी तो भाग उठा और शहाबुद्दीन हौदे सहित भहराकर पृथ्वी पर आ गिरा। बस फिर क्या था। जैतराव ने स्वयं मुस्कराते हुए जाकर शहाबुद्दीन का हाथ थाम लिया और कैदी की भांति लाकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत किया।



कांगुरा युद्ध प्रस्ताव।

(पैंतीसवां समय।)

एक समय जालंधरी रानी ने पृथ्वीराज से कहा कि आपने कांगड़े के भोटी राजा को परास्त करके वह किला मेरे लिये खाली करा देने के लिये कहा था सो कृपा कर अब वह बचन पूरा कीजिए। इसके दूसरे ही दिन इधर तो फौजी तय्यारी होने लगी उधर कांगुरे को एक दूत यह कह कर भेजा गया कि भोटी राजा भान या तो शरण में आकर सेवा स्वीकार करे अथवा युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाय।

पृथ्वीराज के भेजे हुए दूत को भोटी राजा भान ने यह कह कर उलटा फेर दिया कि मुझे उससे युद्ध करने में कोई भय नहीं है। जब उसकी इच्छा हो चला आवे। पृथ्वीराज दूत के ऐसे बचन सुन कर मारे क्रोध के लाल हो उठा। उसने उसी समय कांगुरा गढ पर आक्रमण करने के लिये कूच कर दिया। उधर भान देव पहिले ही से रास्ता रोके हुए पड़ा हुआ था। इस लिये रास्ते ही में दोनों सेनाओं का साम्हना हो गया, जिसमें पांच पहर पर्यन्त घोर युद्ध होने के पश्चात् भीमदेव को परास्त हो कर भागना पड़ा। हारी हुई सेना सहित आगे आगे भोटी राजा भागता जाता था और पीछे पीछे पृथ्वीराज की सेना बढ़ती जाती थी। भीमराय भोटी पहाड़ी जंगलों में हिलविलान हो कर कांगुरे के सुरक्षित किले में जा छिपा। परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी सेना का पड़ाव जंगलों के बाहर ही रक्खा। इस स्थान पर एक चोट और हुई जिसमें दिन भर काट मार होती रही किन्तु परिणाम फिर भी वही हुआ।

कांगुरे के दुर्ग में जाकर भोटी राज ने नाना प्रकार से देवी की पूजा करके पृथ्वीराज के साथ जय पाने का बरदान चाहा किन्तु देवी ने यही उत्तर दिया कि मैं तेरी रक्षा करूंगी परन्तु होन हार को सर्वथा मेटना मेरी शक्ति के बाहर है। उसी रात्रि को भोटी राज ने स्वप्न में देखा कि पृथ्वीराज ने एक बड़ी भारी सेना सहित उसको घेर लिया है। इस स्वप्न से घबड़ा कर उसने अपने मंत्री कन्ह को बुलाकर उसे स्वप्न का हाल सुना कर कहा कि इस स्वप्न से मेरा चित्त तो अत्यन्त व्याकुल हो रहा है इस लिये अब तुम जो कुछ उचित जानो सो करो। इस पर भोटी राज के मंत्री कन्ह ने बड़ी बीरता से उत्तर दिया कि मेरे रहते आप कोई चिन्ता न करें। इस प्रकार कह कर कन्ह गढ़ की रक्षा का उचित प्रबन्ध करने लगा।

इधर पृथ्वीराज के सब सामन्तों ने परस्पर मिल कर यह मंत्र निश्चय किया कि आधी सेना सहित पृथ्वीराज तो उसी स्थान पर खेमाज़न रहें और रघुवंसराय प्रमार और हाहुलीराय हमीर जो कि पहाड़ी युद्ध विद्या में विशारद हैं आधी सेना सहित गढ़ कांगुरे पर पर आक्रमण करें। इस प्रकार मन्तव्य निश्चय हो जाने पर हाहुलीराय हम्मीर केवल पैदल सेना लेकर दुर्गम पहाड़ी मार्ग पर से हो कर कांगुरे दुर्ग की तरफ़ बढ़ने लगा। जिस समय हाहुलीराय हम्मीर किले पर आक्रमण करने को था उसी समय * हुसेन खां कुछ घुड़चढ़ी सेना लेकर सहायता के लिये जा पहुंचा। रास्ता साफ़ हो ही चुका था इस लिये नारेन और नीतिराव कुटवार दो बीर और भी कुछ घुड़सवारों सहित जा पहुंचे। इस तरह धीरे धीरे पृथ्वीराज की एक बड़ी भारी सेना एकत्रित हो गई। तब पैदल सेना की बाग रामरेन प्रमार ने अपने हाथ में ली और दो तरफ़ से किले पर इस प्रकार रणचातुर्य्य से आक्रमण किया कि गढ़ रक्षक सैनिक इनकी वार को जरा भी न सह सके जो जहां थे सब तीन तेरह होकर भाग निकले और किले के ऊपर रामरेन ने पृथ्वीराज के नाम का निशान रोप दिया।

इस प्रकार गढ़ पर विजय प्राप्त करके सब सामन्तों के मतानुसार कुछ फौज सहित रामरेन

* मीर हुसेन का लड़का।

प्रमार गढ़ रंथा पर रहा बाकी कुछ लोग पृथ्वीराज के पास विजय की बधाई का समाचार देने आए। उसी समय भोटी राज भीम ने भी अपना एक दूत पृथ्वीराज के पास भेजकर कहला भेजा कि अब मैं सब प्रकार से श्रीमान् की सेवा करने को तैय्यार हूं साथ ही इसके मेरी इतनी इच्छा है कि आप मेरी पुत्री का पाणिग्रहण स्वीकार कीजिए। भोटी राज का ऐसा संदेसा पाकर पृथ्वीराज शीघ्र ही अपनी सब सेना सहित कांगुरे गढ़ में जा पहुंचे। और भोटी राज की कन्या के साथ व्याह करके नव दुलहिन सहित विजय के वाद्य बजाते हुए दिल्ली को चले आए।

हंसावती नाम प्रस्ताव ।

[छत्तीसवां समय ।]

एक तो स्वदेशी शत्रु कन्नौजराज जैचन्द ही सदैव पृथ्वीराज के ग्रास करने की चिन्ता और चेष्टा में दत्तचित्त रहता था, दूसरे विदेशी शत्रु शहाबुद्दीन के अनायास आक्रमण की आशङ्का भी रहा करती थी। इस लिये पृथ्वीराज ने दिल्ली से कूच कर के शिकार के बहाने षट्टपुर के जंगल में डेरा जा डाला।

उस समय रणथंभ के किले में यादववंशी राजा भान और चन्देरी में शिशुपालवंशी राजा पंचाइन राज्य करते थे। राजा भान की हंसावती नाम एक बेटी थी जोकि उस समय पृथ्वीतल पर आद्वितीय सुन्दरी और स्त्रियोचित सब गुणों से सम्पन्न साक्षात् रतिरानी का अवतार मानने योग्य थी। उस सुकुमारी कुमारी की नागिन के समान वेणी, विद्युतप्रभावत् दन्तदुति, पंकज पांखुरी के समाम नेत्र, अष्टमी के अर्द्धचन्द्र के समान उज्वल ललाट, दीपशिखा सी नासिका, एवं रोम राजि, अमृत कुण्ड के समान नाभि स्थल, सिंह की सी क्षीण कमर, कन्दलीखंभ के समान सुढार जंघा, गज के समान चाल, सरसिज समूह के समान सुवासित स्वेद गंध और पूर्ण शशि के समान मुख कान्ति देखने वाले चतुरों के चित्त को सहज बेहाल करती थी।

चन्देरीपति शिशुपाल वंशी राजा पंचाइन हंसावती के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर उस पर जी जान से मोहित हो गया। इस लिये उसने हसावती के पिता राजा भानराय को एक पत्र लिखकर, दूत के द्वारा कहला भेजा कि हंसावती का व्याह मेरे साथ कर दो और किला भी छोड़ दो। यह समाचार पाकर भानुराय गुस्से के मारे लाला हो गया। उसने उसी समय अपने सगे सरदारों से सलाह करके दूत को उत्तर दिया कि मेरे तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते चन्देरी पति का ऐसा साहस करना वृथा है। रणथंभ के रणक्षेत्र में मर कर मुझे अलभ्य मोक्ष मार्ग की यात्रा करना स्वीकार है परन्तु चन्देरीपति का प्रस्ताव स्वीकार नहीं है। यह सुनकर दूत चलता हुआ और उसने ज्यों का त्यों सब हाल अपने स्वामी से कह सुनाया, जिसे सुनते ही वह क्रोध और कामना की ज्वाला से ज्वलित होकर मदान्ध हाथी की तरह अधीर हो उठा। उसने उसी समय अपनी समस्त चतुरंगिणी सेना सजकर हंसावती को बरबस व्याह लेने की इच्छा से रणथंभ की तरफ कूच किया और उधर एक पत्र शहाबुद्दीन की सेना में इस अभिप्राय से भेजा कि रणथंभ के विजय करने में वह भी उसे सहायता दे।

राजा पंचाइन ने एक दूत और भी भानराय के पास भेजा जिसने आकर भानुराय से कहा कि संसार में जितने बड़े बड़े सामाजिक विग्रह हुए हैं वे सब स्त्री के ही कारण हुए हैं और आज इसी कारणवश चन्देरीपति आप पर आक्रमण करने आया है। संसार में धर्म कर्म सब कुछ इस जीवन की रक्षा के लिये किया जाता है। सुर नर नाग असुर गन्धर्व आदि सब जीवन रक्षा के लिये यत्न करते है। फिर आप क्यों वृथा जरा सी बात के लिये मरने मारने पर उतारू हैं। इस पर राजा भान ने फिर भी वैसा ही कड़ाचूर उत्तर दिया और अपनी सेना में जंगी तय्यारी होने का हुक्म दिया। निदान दूत फिर भी उलटा फिर गया और तीस कोस चल कर राजा पंचाइन के पास पहुँच कर उसने सब हाल कह सुनाया। तब तक उधर शहाबुद्दीन के भेजे हुए शाह का धा-भाई उजबक खां, साहब खां तुर्की, नूरी हुजाब, केली खां कुलाह आदि यवन सरदार एक अच्छी रणकुशल सेना लिए हुए पंचाइन की सहायता के लिये आपहुंचे।

जब यह समाचार भानराय के पास पहुंचा तो उसने इस युक्त सेना को अजेय और प्रबल जान कर स्वयं भी पृथ्वीराज का सहारा लेना चाहा। बसं उसने फौरन दिल्ली को एक दूत रवाना कर के लिख भेजा कि पचास हजार सेना के साथ चन्देरीपति ने रणथंभ को धूलिधूसित करने के लिये आक्रमण किया है। अस्तु इस गाढ़े समय पर मुझे आपही

का आसरा है। यह पत्र पाकर पृथ्वीराज ने फौरन रणथंभ की तरफ कूच कर दिया और इधर काका कन्ह को रावल जी के पास भेजा। कन्ह ने चित्तौर में जाकर रावल समरासिंह जी से सब हाल कह सुनाया और यथासंभव शीघ्रही रणथंभ की रक्षा करने की प्रार्थना की जिसे रावल जी ने स्वीकार कर लिया और कहा कि तुम चलो हम पृथ्वीराज से पहिले ही वहां आ पहुंचते हैं। यहां से रणथंभ ६५ कोस का मार्ग कुछ अधिक नहीं है। इस पर कन्ह ने कहा कि पृथ्वीराज १३ को चल चुके। रणथंभपति भानराय पर बड़ी बिपत्ति पड़ी है। फिर आगे आप जानें? कन्ह के ऐसे बचन सुन कर रावल जी ने सगर्ब प्रत्युत्तर दिया कि हे कन्ह हम वणाबंशी लोगों की जबान नहीं टलती। क्षत्रियों का यही धर्म है कि संग्राम की सूचना पाकर हर्षित होना, शरणागत की रक्षा करना, वेद धर्म से विहित बचन न बोलना, और सुकीर्ति के लिये सर्वस्व आहुति कर देना। निदान यह कह कर कि तेरस के दिन डंका बजेगा कन्ह तो रवाना हुआ, इधर रावल जी ने जंगी फौज के सजे जाने की आज्ञा दी। दसमी सोमवार के दिन पांच घडी दिन चढ़े शुभ मुहूर्त में रावल समरसिंह जी ने रणथंभ की तरफ यात्रा की। जिस समय रावल जी की सेना चलती थी तो आकाश में आच्छादित धूलि के मारे सूर्य्य नहीं देख पड़ता था। लालिमामय कोमल किरणों की आभा से उज्वल अस्त्र शस्त्र चंचला से चमचमाते थे। ढोल धौंसा आदि के गंभीर गड़ गड़ शब्द से पावस के बहर की गर्जना का भाव भासित होता था, बीच बीच में नफेरी, वीणा, सहनाई आदि उच्चस्वर वाद्यों की ध्वनि पावस के पक्षी सी बोलती जान पड़ती थी। जहां तहां रंग विरंगी उत्तंग ध्वजाएं फहराती हुई ऐसी जान पड़ती थीं मानों सैनिक ओज उड़ कर आकाश को स्पर्श करने की चेष्टा कर रहा हो। इस प्रकार पावस के समान ओजमान रण कुशल सेना को लिये रावल समरसिंह जी रणथंभ जा पहुंचे। वहां किले के बाएँ तरफ तो पृथ्वीराज के डेरे पड़े थे और दाहिने तरफ रावल समरसिंह जी के शिविर स्थापित हुए।

एक तरफ से रावल समरसिंह जी की सेना व्यूह बद्ध हुई दूसरी तरफ से चंदेरीपति पंचाइन की और दोनों किले के मैदान में एक दूसरे से जुट पड़े। दोनों सेनाएँ एक दूसरे पर इस प्रकार से टूटीं जैसे क्षुधित सिंह मृगसमूह पर टूटता है। दोनों सेनाओं के वीर योद्धा अपने अपने प्रतिपक्षियों पर प्रचार प्रचार कर वार करते और मरने से जरा नहीं डरते थे। यदि एक दूसरे पर तलवार का वार करता तो वह उसके कलेजे में सेल पेल देता। कोई किसी के पंजर में खंजर खोंसता तो दूसरा उसके पेट को कटार से विदारता। इस प्रकार मारामार होते होते वह साधारण भूमि रक्त से भर गई। जहां तहां रुंड फड़फड़ाते और मुंड भडभड़ाते नजर आने लगे, बड़े बड़े हाथियों के जो शिथिल होकर मृत प्रायः पड़े थे घावों से बहते हुए रुधिर के पनारे पावस के पहाड़ी झरने से भासित होते थे। योगिनी और वीर वेताल रुधिर मांस मज्जा को पान कर आनन्द में उन्मत्त हो कर गान करते थे और घायलों के प्यास की चटक से गले घुटे मरते थे।

निदान इसी प्रकार युद्ध होते होते एक तरफ से चन्देरी पति पंचाइन और दूसरी तरफ से रूस्तमखां ने रावल जी को बीच में दे कर घेर लिया तब तक पृथ्वीराज ने अपने निज सामन्तों सहित आकर शत्रु दल को छिन्न भिन्न कर दिया। उधर किले से राजा भान भी आ पहुंचा और तब तीनों सेनाओं ने एकत्रित व्यूहबद्ध हो कर युद्ध आरम्भ किया। राजा पृथ्वीराज हरावल में, राजा भान बाएँ और रावल जी दाहिने पक्ष पर थे। पृथ्वीराज को हरावल में देख कर वीर पंचाइन और उसके सहकारी यवन सरदारों ने बड़े बेग से तेगा चलाते हुए धावा किया। परन्तु इधर से सामन्तों ने भी अच्छे हाथ किए। ये लोग जिस वीर बन्दे की खोपड़ी पर हाथ मारते थे वह मय टोप और जिरहबख्तर खीरे की तरह चिर कर दो हो जाता था, इस युद्ध के अन्त में सोलह सूर वीर

चहुआन के, तेरह रावल समरसिंह जी के और पांच हजार सैनिक चंदेरीपति के खेत रहे।

दूसरे दिन प्रातः काल फिर से जंगी निशान उठे। पृथ्वीराज ने अब की बार अपनी सेना को पांच टुकड़ों में विभक्त किया। शत्रु के सम्मुख संग्राम के लिये सुसज्जित सन्नद्ध सामन्त और सैनिक परस्पर कहते थे "भाइयो, यह पंचतत्त्वमय शरीर सदैव रहने का नहीं है। एक न एक दिन मृत्यु होनी अवश्य है और मरने पर प्राकृतिक अंश अपने अपने मूल स्वरूप में लीन हो जांयगे, केवल कीर्ति ही संसार में स्थिर रहती है। इस लिये इस समय शत्रु के सम्मुख शूरता से मरना ही श्रेयस्कर है और जो हम तुम चार आदमी इस समय इकट्ठे हैं फिर भी ऐसे जुड़ेंगे, इस बात की कदापि सम्भावना नहीं। प्यारे भाइयो, इस असार संसार सागर से जीवन रूपी घड़े में कर्तव्यरूपी जल भर कर अखंड कीर्ति की बेलि को सींच दो, जिसमें अक्षय आनन्द रूपी मोक्ष फल लग कर सदैव के लिये अपने संतोष का कारण हो।

सुसज्जित पंचअनी सेना के बीच रावल समरसिंह जी इस प्रकार सुशोभि होते थे जैसे सत्ताइस नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा। अकाश में अरुण देव की आभा का भास होते ही रावल जी ने आज्ञा देकर समस्त सेना को चक्रव्यूहाकार रच कर शत्रु को चारों ओर से घेरा। यह व्यूह इस क्रम से रचा गया था—प्यादों की कतार के बीच बीच एक एक घुड़ सवार, तिसके अग्रभाग में हाथी और बीच में तीरन्दाजों की भरमार थी। शत्रुसेना को चतुर्दिक से घेर कर जब शस्त्रों की वर्षा होने लगी और उसी के बीच बीच में तोमर, तबल, तेगा, तलवार आदि उज्वल शस्त्र भी चमचमा उठे उस समय ऐसी शोभा भासित होती थी मानों पावस ऋतु के तलातल भरे हुए तालाब में सरजिस समूह के ऊपर हंसों के बच्चे नाच रहे हों। सेना नायकों की आज्ञा होते ही सहज स्वभाव क्रोधी सैनिक योद्धा परस्पर भिड़ पड़े। क्षण मात्र में उनके चन्द्रमा की किरण से उज्वल शस्त्र रिपु रक्त से सराबोर हो कर लाल लाल देख पड़ने लगे। इधर तलवार लगने से सर दूर जा खड़कता रुंड फड़फड़ाता हुआ लोटने लगता, उधर गृद्धादि पक्षी और शृगालादि पशु एक एक मांस के लोथरे के लिये झगड़ कर और ही अभिनय दिखाते थे। इसी समय रावल जी के इशारे से राजा भान ने हरावल की अनी पर जोर देकर साम्हने का बल बाँधा। यह देख कर चन्देरी की फौज एक दम हरावल के मौके पर जुट पड़ी। तब तक राजा पृथ्वीराज ने तिरछे रुख से धावा कर के क्रम बद्ध व्यूह को विडार दिया। समरसिंह जी स्वयं चन्देरी की फौज की मार काट करने लगे। समरसिंह जी के भाई अमरसिंह ने चन्देरीपति राजा पंचाइन का साम्हना किया और उसे एक ही हाथ में मार गिराया बस फिर क्या था, उसी दम सब फौज तीन तेरह हो कर भाग उठी और खेत पृथ्वीराज के हाथ रहा। खेत की देख भाल होने पर मीरहुसैन और नरनाह कन्ह अगनित घाओं के कारण क्षत विक्षत शरीर घायल पड़े पाए गए। निदान इन दोनों वीरों को डोलियों में लिख कर सब सेना सहित पृथ्वीराज पानीपत को गए।

वहां एक रात पृथ्वीराज ने स्वप्न देखा कि एक गजगामिनी, मृगनयनी, चन्दवदनी स्त्री जिस की शोभा का समूह साक्षात् बाल सूर्य की किरणों सहित प्रस्फुटित कमल बन की शोभा समूह का तिरस्कार करता था, उसके पास आई। पृथ्वीराज ने उस सुन्दरी के यौवन का आनन्द भी लिया। परन्तु ज्योंही नींद खुली त्योंही न तो वह सुन्दरी थी न वह हास विलास। निदान पृथ्वीराज ने उसी समय अपने सच्चे सखा कविचन्द को बुलाकर सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि वह स्त्री आप की भविष्य प्रिय पत्नी हंसावती है। हे राजन् यदि मेरी बात का आपको विश्वास न हो तो सुनिए मैं उस नव यौवना के सौन्दर्य्य का मानचित्र वर्णन करता हूं। यह कह कर कविचन्द बोला कि वह वयःसन्धि सुन्दरी

साक्षात कामदेव की सी कमान है, उसका प्रशस्त ललाट अनंग अंगन, भौंह प्रत्यंचा और चक्षु बाण के सामन पैने हैं। उसके सब अंग सुढार यथा-स्थान पीन क्षीण, हंस की सी चाल, गुलाब से गाल और मनोज के मद से भरे हुए उसके मुख मंडल की आभा अरुणोदय के समान लालिमामय है। वह निष्कपट लज्जाशील बाला मधुर मधुर वचन उच्चार कर मानों अमृत के प्याले पिलाती है।

इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक राजा भान के भेजे हुए प्रोहित के आने का समाचार मिला। निदान प्रोहित भी सभा में बुलाया गया उसने विवाह के लग्न तिथि की सूचना देकर विदा मांगी। तब तक इधर पृथ्वीराज ने शिकार खेलने की इच्छा से बारूबन की तरफ कूच किया।

पृथ्वीराज के बारूबन में शिकार खलने की खबर पाकर भीमदेव के पुत्र सारंग ने अपने मंत्रियों से कहा कि इस समय मुझे अपने पितृवैर लेने का अच्छा मौका हाथ आ गया है। उसने कहा कि बैर का बदला लेने के लिये राम ने रावण पर चढ़ाई की, सुग्रीव ने भाईचारे का विचार न करके बालि का बध करवाया, वैर का बदला लेने के लिये इन्द्र दैत्यों पर चढ़ाई किया करता है इत्यादि और क्षत्रियों का तो यह मुख्य धर्म है कि पिता का बैर लेवें। आज हम पृथ्वीराज रूपी सूर्य्य को समय पाकर राहु के समान ग्रास कर अनुपम कीर्ति लाभ कर सकते हैं। भाइयो ! संसार में मनुष्य शरीर पाकर कीर्ति का संपादन करना ही मुख्य कर्तव्य है, कीर्ति के लिये विक्रमादित्य ने देश विदेश पर चढ़ाई की और राजा जगदेव ने अपने हाथों से अपना माथा काट कर देवी को समर्पण किया। अस्तु, इस समय मेरा तो यही विचार है कि या तो पृथ्वीराज को मार कर पिता का बदला लेकर कीर्ति सम्पादन करूं या इसी प्रयत्न में मारा जाऊं। इस पर उसके मंत्रियों ने भी हां में हां मिला दी। निदान उसी समय नागोद के पास मंगलगढ़ का हाड़ा राजा मारीचि की भांति कूटचक्र रचने पर पक्का किया गया।

इधर तो मंगलगढ़ में सारंग स्वयं ज्यौनार के लिये भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करने लगा। उधर हाड़ा सरदार ने पृथ्वीराज के पास जा कर सविनय निवेदन किया, "आज आप और रावल जी मेरे घर को पवित्र कीजिए। पृथ्वीराज ने उस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और रावल जी के सहित वे मंडल गढ़ को चले। ज्योंही नगर के सिवाने पहुंचे कि सिंह के गर्जन करने का भयानक अपशकुन हुआ। इससे रावल जी के दिल में एक प्रकार का खुटका पैदा हो गया। जब सब लोग किले के अन्दर हो गए और जहां तहां सब अपने अपने कांसे पर बैठ कर भोजन करने लगे कि धड़ धड़ चारों तरफ से किले के दरवाजे बंद कर दिए गए और प्रत्येक मकान के कोने में जो पांच पांच सिपाही पहलेही से सन्नद्ध रक्खे गए थे, सारंगदेव का इशारा पाते ही धरो मरो पकड़ो का शब्द करते हुए रावल जी और पृथ्वीराज पर चारों तरफ से टूट पड़े। यह अनयास द्वंद देख कर ये दोनों वीर भी अपने कतिपय साथियों सहित म्यान से तलवारें निकाल कर खड़े हो गए और संघटित शत्रु दल को काई सा काटने लगे। रावल जी और पृथ्वीराज तो जिस किसी पर वार करते वह ककड़ी सा कट कर दो हो जाता, परन्तु इनके शरीर पर किसी का भी वार इस प्रकार कारगर न होता जैसे मिट्टी के चिकने घड़े पर जल के कण नहीं ठहरते।

इधर ये लोग उद्दंड स्वरूप से आत्मरक्षा में प्रवृत्त थे ही उधर यह समाचार किसी तरह किले के बाहर पड़ी हुई सेना में जा पहुंचा। निदान वहां से रामाराय बड़गुज्जर ने किले पर आक्रमण किया। इधर किले वालों ने उन्हें रोकने के लिये बाणों की वर्षा करनी आरम्भ की, परन्तु वे कर्तव्यनिष्ठ धर्मरत स्वामिसेवा में प्रवृत्त साहसी सामंत लोग मार काट करते किले की दीवार तक जुमक आए और दीवार के पास हाथी लगा कर पहिले पहल रामराय बड़

गुज्जर किले के भीतर कूदा, उसके पीछे एक के बाद दूसरे सूरवीर किले में धस पड़े। किले के भीतर संकीर्ण मैदान में खूब मार मची। दीवार, द्वार, देहरी, छत सर्वत्र लाल लाल लोहू के छींटे नजर आने लगे। जहा तहां खून के कुंड भर गए और रूंड मुंडों के ढेर के ढेर अटे गए। इस युद्ध में पज्जूनराय के पुत्र ने बड़ा पराक्रम दिखलाया। वह वीर पुरुष सहस्रों शत्रुओं को काटता हुआ धज्जी धज्जी हो कर कट मरा। इस युद्ध मे एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पन्द्रह बड़े बड़े योद्धा काम आए। चालुक सारंगदेव की तरफ के तेरह तुरुक योद्धा खेत रहे। अन्त में रामरेन पँवार ने सारंग देव को और प्रसगराय खीची ने हम्मीरहाड़ा को पकड़ लिया। निदान उन्हें पृथ्वीराज ने छुड़ा दिया। इसी धर पकड़ के समय मीरहुसैन ने सारंगदेव की बहिन को घर लिया, यह देख कर रावल जी ने उसे ललकारा और चालुका सुदरी को अभयदान दिया। इससे सारंगदेव के मन में रावल जी के गौरव की बड़ी ही श्रद्धा हो गई, उसने वह कुमारी रावल जी को विवाह दी और वह भूमि भी रावल जी को देदी। रावल समरसिंह जी ने नवीन सुन्दरी को चौडोल में बिठा कर चित्तौर को भेज दिया।

इधर आधी रात को एक दिन पृथ्वीराज के पास खबर पहुंची कि रणथंभ के किले पर चन्देल राजा ने फिर भी आक्रमण किया है और पश्चिम का मोरचा तोड़ भी लिया है, परन्तु पूर्व के मोरचे ने उसे परास्त किया। गूड़ राय और सत्रसाल दो वीर काम आए। चन्देल पकड़ा गया और राजा भान की जीत हुई।

कुछ दिन के बाद रणथंभ के राजा का कुलप्रोहित भी आ पहुंचा और नारियल, पुष्प, दूब, रोली, अक्षत आदि मागलीक सामग्री सहित पृथ्वीराज को लग्न का टीका चढ़ा कर चलता हुआ। विवाह की लग्न तिथि भी जब निकट आई तब चहुआन पृथ्वीराज ने हसावती को ब्याहने के लिये पुनः रणथंभ को जाने की तय्यारी की। सर्वाङ्गसुन्दर, कमल नेत्र, बंकमुच्छ, रमणी मात्र का मन हरण करने वाला, रीति नीति का ज्ञाता, शहाबुद्दीन को बार बार पकड़ कर छोड़ देने वाला, पृथ्वीराज जिस समय रणथंभ में पहुंचा तो वहां नाना प्रकार के गान वाद्य और उत्सव होने लगे। इस अमित आनन्द उल्लास का सुकुमारी हंसावती के हृदय पर कुछ और ही असर पड़ा। वह अपने अद्वितीय पति की झांकी लेने के लिये झरोखे से झाका करती थी। अपनी निज सखी सहेलियों सहित उत्तंग अट्टालिका पर बैठी हुई हंसावती इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारों की कांति को कुचल कर कलाधर गिरि के शिखर पर विराज रहा हो। उस मनोजमय मन वारी रतिमूर्ति सुन्दरी के सुढार सरोज ऐसे नेत्र स्वाभाविक लज्जाशीलता और सखियों के कटाक्ष से सकुचित होकर सेनों से ताकते हुए साक्षात् चंचला के चापल्य को चूर्ण करते थे। हंसावती की स्वाभाविक भावमय मद मंद मुसकान देख कर ऐसा भासित होता था मानो पूर्णबिंब चंद मंडली में चचला विराजमान हो रही हो। सहजसुन्दर सुन्दरी हंसावती की वह अवस्था थी कि जिसे हम पूर्णतया वयःसन्धि भी नहीं कह सकते, क्योंकि उसके अगों में शैशव का आभास केवल उतनाही था जितना कि अस्तप्राय दुतिया के चन्द्रमा का उजेला होता है।

जब स्वयंवर का समय निकठ उपस्थित हुआ तब सखी सहेलियो ने हसावती को वस्त्र विहीन कर के उपटन करना आरम्भ किया। उस समय उसके अनंग के रग से भरे हुए सुकोमल अंग प्रत्यंगों से इस प्रकार शोभा प्रस्फुटित होती जैसे रजनी के अवसान समय जुन्हैया के बूड़ने और सूर्य्य के प्रकाशमान होने से प्रकृति की शोभा होती है। हंसावती के गोरे गोरे गात पर भींग कर लिपटी हुई लटें ऐसी शोभा देती थीं मानों चन्द्रमण्डल पर सर्प चढ़ रहे हों और उन केसर समान सूक्ष्म केशों से बहता हुआ जल ऐसा भासित होता था मानों राहु के भय से चन्द्रमा विष पान करता हो और भूमि उसे कर्षन कर रही हो। इस प्रकार स्नान कराकर जब सखियों ने

उसे, सीस में सुगंध लगा कर, नवीन वस्त्र पहिनाए तथा सोलहो शृंगार, बारहों आभूषणों से सुसज्जित कर विवाह मंडप में प्रस्तुत किया उस समय उसकी शोभा अकथनीय थी। हंसावती के सँवारे हुए केशपास के ऊपर दोहरी मोतियों की लड़ी ऐसी भली मालूम देती थी जैसे दो चन्द्रमाओं ने राहु का ग्रास किया हो। सीस पर नगजटित सीसफूल कालिया के फन पर गोविंद के पद पद्म से ज्ञात होते थे ललित ललाट पर रोली की बिन्दी गंगा जमुना के संगम पर तीर्थराज सी आसीन हुई जान पड़ती थी। उसके अनियारे नैन मीनकेतु के से तीर, लालिमामय गोल गोल कपोल गुलाब कैसे फूल, चिबुक पर स्याम बुन्दा चन्द्रमण्डल पर पग रोप कर अड़ा हुआ राहु सा प्रतीत होता था। उसकी जीभ कमल पुष्प की पांखुरी सी और उसके सुढार कंबु-वत कण्ठ की त्रिवली पर काली पोत का छूटा ऐसा मालूम होता था मानों चन्द्रमा का ग्रास छोड़ राहु आसन मार कर बैठा हो। तदुपरान्त हृदय पर रुरती हुई दोहरी मोतियों की लड़ी चन्द्रमण्डल से निकली हुई अमृत की सी धार, उसके युग उरोज शिव से और सूक्ष्म रोमराजि दीपशिखा सी भासित होती थी। क्षुद्र घण्टिका से सुसज्जित उसकी पतली कमर यौवन के तौलने की तराजू सी जान पड़ती थी। उसके पीन नितंब आधे तुंबा से, जंघा हाथी की सी सुंड और पिंडुलीं मनोज की चारपाई के पाये सी सुशोभित होती थीं। उसकी केसरकलित जावक रलित, एड़ियां कुसुम कैसे फूल और पांवों में पहिने हुए पाजेब वा घुँघरुं से होता हुआ मन्द मन्द शब्द भौंरे की सी गुंजार मालूम होता था। उसकी कोमल कलाई पर नौरत्नी पहुँची ऐसी मालूम होती थी जैसे चन्द्रमण्डल के चतुर्दिक नवग्रह परिक्रमा कर रहे हों। निदान सोलहों श्रृंगार, बारहों आभूषणों से सजबज कर जब वह चन्दवदनी मृगलोचनी कोकिलबैनी, गजगामिनी कामिनी सर्वांगसुन्दरी हंसावती सखियों के सहित तरुण तरुलता पल्लवों से आच्छादित विवाहमंडप में आई उस समय ऐसा भान होता था मानों बदरी के बीच एक दम सूर्य्य का प्रकाश हो उठा हो।

नटनागर चहुआन पृथ्वीराज ने मंडप में प्रवेश किया। पृथ्वीराज के शीश पर नवरत्न जटित मुकुट ऐसा सुशोभित होता था जैसे समस्त ग्रहों ने परस्पर का द्वेषभाव छोड़ कर चन्द्र मंडल पर एकत्र आसन आ जमाया हो। पृथ्वीराज आकर पटे पर बैठे ही थे कि सखियां हंसावती को लेकर आईं। जिस समय दोनों आमने सामने हुए और दोनों की आखें चार हुईं कि बस दोनों तब ही मन घुल गए। दोनों के लालची लोचन परस्पर के छविसुधा को पीकर इस प्रकार मस्त हो गए जैसे कमलकली के अन्दर मकरन्द को बटोर कर भौंरा स्तम्भित होकर रह जाता है। इधर चहुआन का चित्त हंसावती ने अंचल में बाँध लिया और उधर चहुआन ने हंसावती के मन को मुट्ठी में ले लिया। जो पृथ्वीराज सहस्रों शत्रुओं से अजेय था उसे सुकुमारी कुमारी अबला नामधारी हंसावती ने मनसिज की सुसज्जित सेना स्वरूप निज स्वाभाविक सौन्दर्य्य की सहायता से सहज ही जीत लिया।

इधर तो ये विवाह के सुखसारे हो रहे थे उधर शहाबुद्दीन ने दिल्ली को खाली जान कर सुरतान खां के तहत में एक बड़ी भारी सेना वहां भेजी। जब यह यवन-सेना-समूह दिल्ली के पास आकर ठहरा और यह समाचार सामंतों को मिला तो उधर से केवल साठ सामन्तों ने रात्रि को धावा किया और सुसुप्त शत्रु सेना को मार काट करके एक प्रकार से बिल्कुल बलहीन कर दिया। और जब तक वे लोग धरो पकड़ो कहते कटते मरते अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हुए तबतक ये लोग पुनः किले को लौट आए। दूसरे दिन प्रातःकाल सुरतान खां ने अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र व्यूहाकार रच कर किले पर आक्रमण किया। इधर से रावल जी के भाई अमरसिंह जी ने मैदान का मुहासरा लिया। दोनों दलों में खूब लोहा बरसा। दोनों तरफ के बहुत से

सूरवीर सिपाही खेत रहे। अन्त में अमर सिंह जी की जीत हुई और यवन सेना भाग निकली। इस लड़ाई में यवन सेना का एक नामी सरदार पीरोज खां खेत रहा और सब एक लाख का रखत बखत सामंतों के हाथ लगा।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज तक पहुंचा कि वह स्वाभाविक वीर समस्त प्रस्तुत रसरंग की सामग्रियों से विरक्त सा हो उठा और उसने उसी समय दिल्ली की तय्यारी कर दी, परन्तु जब तक वह *दिल्ली पहुंचे पहुंचे, तब तक सामन्तों ने स्वयं शत्रु का हटा दिया था। पृथ्वीराज ने सब सामंतों को एक एक कर के गले लगाया और कहा "हे मेरे भाइयो, मैं तुम्हारी क्या प्रशंसा करूं और तुम्हें क्या कहूं। यह दिल्ली का राज्य तो सर्वथा तुम्हारे ही बल भरोसे पर है।" पृथ्वीराज ने अमरसिंह जी की भी बड़ी खातिर की और स्वयं अपने हाथ से उनके सिर पर पाग बाँधी।

पृथ्वीराज ने अपने भाँजे, समरसिंह जी के पुत्र कुंभा जी के नाम संभर की जागीर का पट्ट लिखा कर उन्हें अर्पण करना चाहा, परन्तु रावल जी ने उसे यह कह कर फेर दिया कि असुर वंश में अवतीर्ण तुम स्वयं जैसे लालचीचित्त हो वैसे ही औरों को भी विचारते हो। हम अहुट वंशी किसी के सामने हाथ फैलाना नहीं जानते, दूसरों को दान देना जानते हैं! इस पर चतुर चहुआन कुछ उत्तर न देकर चुप हो गया॥

तदन्तर दिल्लीपति पृथ्वीराज के मुकुटमणि, छत्रछाया स्वरूप रावल समरसिंह जी तो चितौर को चले गए। और पृथ्वीराज चपल नव बघूटी, नवोढ़ा प्रियतमा राजहंसी हंसावती के साथ कामान्ध वृषभ की भांति काम क्रीड़ा में प्रवृत्त हुआ॥

प्रथम समागम की रात्रि को जिस समय सखियां हंसावती को शयनागार में ले गईं और वह शैय्या के पास पहुंची उस समय उसकी विचित्र ही दशा थी। यद्यपि उठते हुए यौवन का उमंग उसे प्रियतम पृथ्वीराज के गले से लगने के लिये उत्तेजित करता था परन्तु स्त्रियोचित स्वाभाविक लज्जा भी तो मानो उसके पैर पकड़ कर पीछे को खींचती थी। इसी ठेलम ठेल में सखियों ने ढकेल कर उसे पलंग पर पधार दिया और आप किवाड़ देकर द्वार पर से कहकहा मार कर हँसने लगीं। उधर नटनागर पृथ्वीराज ने संकुचित प्रिया हंसावती को उछँग में उठा लिया और प्यार से पुचकारता हुआ वह आमोद प्रमोद की बातें कर अभिप्राय सिद्धि की घातें करने लगा। उस समय हंसावती तो कमल कली की भाँति संकुचित होती हुई सी सी कर आहां और ना ना की पुकार करती थी और पृथ्वीराज मदकलित कपोल कामान्ध कुंजर की तरह बेकसक होकर काम कलाओं के कृत्य में दत्तचित्त था। निदान इसी प्रकार ज्यों ज्यो दिन व्यतीत होने लगे त्यों त्यों हंसावती के चित्त में लज्जा का ह्रास और कामेच्छा का प्रकास होने लगा। तमाम दिन तो वह सखियों के साथ इधर उधर की कथा कहानी और पोथी पुराण में बिताती और रात्रि होते ही कंत के हिये का हार हो जाती। पृथ्वीराज और हंसावती का प्रेम यदि पावस में तमाल और बल्लरी की भाँति था तो शरद में शशि और चकोर की भाँति हो गया परन्तु इसके उपरान्त जब शीतकाल आया तब तो वे दोनों परस्पर कस्तूरी और कज्जल की तरह एकमय होकर दिन बिताने लगे।

---

* मूल पुस्तक में इस बात का कुछ भी स्पष्ट लेख नहीं है कि यवन सेना ने किस स्थान पर चढ़ाई की, परन्तु छन्द २१७ के दूसरे चरण "सुनि बरनी सों रत्त दिन सत छुट्ट वर थान" और छन्द २२० के ५ वें पद "रध्धवो गांम रति वाह वे तुम कधे दिल्ली नयर" से यही अर्थ निकलता है। दूसरे दो लड़ाइयां होने पर भी पृथ्वीराज का शामिल होना नहीं बतलाया गया है, न राना मान का। इससे स्पष्ट है कि सुलतान खां का यह आक्रमण दिल्ली पर था।

(१) तेज सिंह सुत समर सों, तेहि सुत कुंभ नरेस।
संभरि सभरि बार दे दीहसो सोमेस॥
"तब खिचंग नरेस : विक्रह नव्वा पर पट्टो" ।२२९॥

पहाड़राय समय।

[सैंतीसवां समय।]

एक दिन कविचंद की स्त्री ने कहा कि हे पति पहाड़ राय तूँअर ने यवन बादशाह शहाबुद्दीन को कब, किस प्रकार और क्योंकर पकड़ा सो कृपा कर सब कथा कहिए ?

तब कविचन्द बोला कि संवत्११४०में[1] चैत्र मास शुक्ल पक्ष की तृतिया के प्रातःकाल की बात है। बसंत ऋतु की शीतल मद सुगंधित त्रिविध बयार बह रही थी, भाँति भाँति के तरु लता पल्लव और उनमें रंगबिरंगे प्रस्फुटित पुष्प शोभा दे रहे थे। रसालवृक्ष की मंजरियों पर मलिन्द गुंजार करते थे। उसी समय शहाबुद्दीन ने निज महलों से निकल कर सदर दरबार मे पदार्पण किया। उधर उसके सब दरबारी लोग आ आ कर यथास्थान आसन पर आसीन होने लगे। निदान शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खा और खुरासान खां से कहा कि कहो तो पृथ्वीराज का क्या समाचार है ? इस पर तत्तार खां ने उत्तर दिया कि वह सहजोर शत्रु अपने समस्त शूरवीर सामन्तों सहित सकुशल राज्य शासन कर रहा है। यह सुनते ही शहाबुद्दीन बोला कि यथासंभव शीघ्र ही एक सभा की जाय और उस में विचार करके पृथ्वीराज पर आक्रमण करने का उचित मन्तव्य निर्धारित किया जाय। शाह का इस प्रकार हुक्म पाकर तत्तार खां ने उसी समय सेना मे समाचार जाहिर कर दिया और दूसरे दिन प्रातःकाल ही सुसज्जित सेना राजद्वार पर एकट्ठी होने लगी। समस्त सेना के एकत्रित हो जाने पर शहाबुद्दीन भी एक दीर्घकाय हाथी पर सवार होकर पूर्व्व दिशा को यात्रा करने के लिये तय्यार हुआ। उस दल बल के बीच स्वर्ण के आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर जवाहिरात जटित वस्त्र और गहने पहिने हुए शहाबुद्दीन ऐसा सुशोभित होता था जैसे समुद्र के बीच मेरुाचल पर अचलरूप से सूर्य्य विराजमान हो। सेना के आगे आगे मेघस्पर्शी राते राते निशान वायु वेग से डगमगाते चलते हुए ऐसे सुहाते थे मानो हवा के झोंक से बाधित बड़ी बड़ी दीप शिखाएं हिल रही हो और उनके पीछे पीछे चलते हुए सिपाही उन पर प्रान पवारने वाले पतिंगे तो थे ही।

गजनी से चलकर दस कोस के ऊपर पड़ाव डाल दिया गया और वहां पर खुरासान खां, रुस्तम खां, वाजीद खां, मनसुर सेर हुजाब खां, महमूद खां, कम्मन खां, जम्मन खां, निसुरत्त खा, ममरेज खां, रनसिंह, सुलतान खां, मारूफ खां, सुरतान खां, इत्यादि मीरों की मंडली एकत्र करके शहाबुद्दीन ने आगत युद्धप्रबन्ध पर वाद विवाद होकर मुनासिब राय तै की जाने की आज्ञा दी। ज्योंही तत्तार खां शाह का उक्त अभिप्राय कह कर चुप हुआ त्योंही मीर वितड खां अकड़ता हुआ कड़क कर बोला "जहापनाह के इकवाल से सारी हिन्दू सेना को धूलि धूसित करके पृथ्वीराज को मै सहज ही बाँध कर बेधुआ बना सकता हूं। प्रबल दल को विदार कर दुश्मन को मार कर नमक को बजाना ही बहादुरों का काम है। अगर ऐसे वक्त पर वह मारा भी जाय तो बिहिस्त का तख्त मिलता है और दुनियां मे नाम होता है।" यह सुन कर निमुरत्त खा ने तत्तार खा से कहा कि अगर मुझ से सच पूछिए तो यही कहूगा कि हिन्दू सेना बड़ी ही बलवान और पराक्रमशाली है। इस पर वितंड खा गुस्सी से लाल होकर मूछों पर ताव देता हुआ फिर बोला कि यह क्या कहते हो, मैं सब हिन्दू सेना को मारूंगा और पृथ्वीराज को पछाड़ूगा। तब तो बुद्धिमान निसुरत्त खा से न रहा गया और वह बोला कि तुम्हारा यह गुरूर फुजूल है। रावण और सहस्रबाहु ऐसे योद्धा अपनी मगरूरी के ही कारण मारे गए। और क्या कहूं जिन हिन्दूओं ने काल ऐसे रणबांकुरे बहादुर को मार डाला उनके साम्हने तुम

---

१ संवत्सर व्याळीस, मास मधु पक्ष धर्म्मधुर ॥

क्या शै हो। वह फिर भी बोला कि तुम्हारी इस कपोलकल्पना की उस समय सब कलई खुल जायगी जब रणबांकुरे हिन्दू सामंतों का साम्हना होगा। परन्तु इससे हमारा यह भी अभिप्राय नहीं है कि भयभीत हो कर डर जांय। जो परवरदिगार राई का पर्वत कर सकता है वही हमारे हुजूर की टेक रक्खेगा। इसलिये उसी का आसरा भरोसा और गुमान करना मुनासिब है। लिहाजा हलकारा भेज कर चहुआन को लड़ाई का पैगाम दे दिया जाय और तब यहां से कूंच किया जाय।

अस्तु यह बात शहाबुद्दीन तथा उसके समस्त उपस्थित सभ्यों ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार कर ली और तदनुसार एक खत्री दूत एक पत्री के साथ उसी समय दिल्ली को रवाना किया गया। दूत ने दिल्ली पहुच कर वह पत्र धर्म्मायन को दिया और सब जबानी हाल भी कह सुनाया, जिसे सुनते ही धर्म्मायन अधमरा सा हो गया और बोला "बस मैंने जान लिया कि अब शहाबुद्दीन का आयुर्बल क्षीण हुआ"। निदान धर्म्मायन ने दूत को तो वहीं छोड़ा और आप शाह का खरीता लेकर दर्बार में दाखिल हुआ और मौका पाकर उसने वह पत्र कैमास को देकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख पेश करने को कहा; राजा की आज्ञा पाकर कैमास ने वह पत्र पढ़ सुनाया जिसमें लिखा था "हमारा तुम्हारा देवासुर सग्राम का पुरातन अवशिष्ट वैर इस समय प्रचण्ड रूप से जाग्रित हो रहा है। हम तुम सग्राम मे जैसे वीरता के काम करेंगे वैसे ही कवि लोग हमारा तुम्हारा सुयश गावेंगे। और आखिर को दुनियां मे नामही रह जाता है। मरने पर यह पच भौतिक शरीर पच महाभूतों में लीन हो जाता है हमारे तुम्हारे दोनों के हृदय में सनातन गौरवशाली आत्म-अभिमान का बीज बोया जा चुका है। आत्म-अभिमान ही मर्दों की निशानी है। दुनिया मे अगर कोई कुछ कर सकता है तो इसी आत्म-अभिमान के सहारे से। जो मर्द आत्माभिमानी पीछे मर गए व अपना नाम अमर कर गए। हमारे तरफ पैगंबर और आपके तरफ महाभारत के वीरों का यश अमर है। इसी से हमारा ऐसा हठ है।"

शहाबुद्दीन को ऐसा पत्र पाकर पृथ्वीराज ने सामन्तों से कहा, "हे सामन्तो, सुनो! गजनीपति शहाबुद्दीन चतुरगिनी सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ाई करने को आ रहा है और वह सिंध नदी के इस पार आ गया है। अस्तु अब तुम लोग भी आने बाने से दुरुस्त होकर वायुवेग स्वरूप धारण कर यवन दल बदल को छिन्न भिन्न कर दो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि यदि वह आता है तो आने दीजिए हमें क्या? जैसे अगाध उदधि को अगस्त एक अजुली से अचै गए, जैसे गरुड ने सर्प समूह को भच्छण कर लिया, वैसे ही हम भी शत्रुओं का नाश करने के लिये सन्नद्ध है।

निदान इधर से पृथ्वीराज भी पच्चीस हजार सेना के सहित शहाबुद्दीन का वार बचाने के लिये दिल्ली से चल पड़ा। जिस समय राजपूत वीरों का विकट दलबल चलता था उस समय मेदनी कॉपती थी और आकाश मे आच्छादित सघन धूलि के कारण सूर्य्य अदृष्ट सा हो जाता था। इसी प्रकार कूच दर कूच चलते पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन की सेना से दस कोस के फासिले पर पड़ाव डाल दिया। उधर शहाबुद्दीन को भी चहुआन के आ पहुचने का समाचार पहुंचा और इस लिये वह भी सचेत हो बैठा। दूतों द्वारा बातचीत तै होकर दूसरे दिन प्रातःकाल ही दोनो दलों मे द्वन्द होना निर्द्धारित हुआ।

दूसरे दिन दिशाओं में लालिमा की झाँई पड़ते ही दोनो दलों में नगाड़ों के गड़ गड़ शब्द होने लगे। दोनों सेनाओं के अग्रभाग मे फहराते हुए मेघस्पर्शी रंगबिरंगे निशान ऐसे भान होते थे जैसे पावस के बहुरग बहर धरा पर घूम करने के लिये आकाश से अवतीर्ण हो रहे हों। बीच बीच में तुरही की तान लगती और उच्च स्वर से कड़खेत कड़खे गा गा कर जवानों के जी को दूना करते थे। दोनो सेनाएँ अपने अपने शिविर छोड़ कर

१ दानव देव आदि भी लग्गो। तोत बैर पुरातन जाग्गा॥

देखादेखी के मेल में आ उपस्थित हुई। उस समय दोनों सेनाओं के सूर लोग तो आनन्द के मारे फूले अंग नहीं समाते थे पर कायरों का हृदय-सरोवर नीरस होने से उनका तो हंसा हिराना जाता था। शहाबुद्दीन की चतुरंगिनी सेना बराबर चार हिस्सों में विभाजित थी। अग्रभाग पर खुरसान खां और चिम्मन खां, बाएँ मारूफ खां; दहिने पीराज़ खां और चिम्मन जमराज खां थे। ये सब फौजें दो दो अनी करके अग्गा पिच्छी दो कतारों में थीं। पृथ्वीराज चहुआन ने अपनी सेना को पांच भागों में विभाजित किया। बीच में आप और चारों तरफ चार अनी थीं। प्रत्येक अनी के अग्र भाग में नंगे खांडे तलवार, पट्टे, बाने, फरसे, कटारी आदि लिए हुए कट्टर जवान थे, बीचोंबीच नंजेबाज घुड़सारों की भरती थी और तिसके पीछे हथनार तोपों की कतारें थीं। कैमास और चामुंडराय आठ हजार सेना के साथ हरावल पर—हरावल में घुड़सवार और हाथियों की भरती अधिक थी—सात सामन्तों के सहित काका कन्ह दाहने बाजू पर, जैतराव प्रमार चार हजार सेना सहित बाएँ पक्ष पर, और पीछे पीठि सेना अर्थात् चँदावल का स्वामी जामसिंह जदव था, जिसके साथ में पांच पांच सौ कमनेत और साढ़े तीन हजार अग्नि बान चलाने वाले थे। एक दूसरे के विपक्ष में सन्नद्ध दोनों सेनाएँ ऐसी मालूम होती थीं मानों कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव पांडवों का दल इकट्ठा हो। जिससमय पारथ के पंचजन की भांति दोनों सेनाओं में उच्च स्वर मारू की आवाज हो कर स्वामी आज्ञा की सूचना दी गई उस समय दोनों दलों के योद्धा इधर से अवधूत राजपूत और उधर से मजबूत म्लेच्छ अपने अपने घोड़ों को एड़ें देते और हाथियों को धतकारते मार मार पुकारते एक दूसरे से जुट पड़े। उस अरुणोदय के समय बड़े बड़े दँतारे दुरद पावस के बदर से और उन पर से बजते हुए गजनार नगारे और कर्नाट घनघोर वन से गर्जते थे। दोनों ओर से बरसते हुए छुरें और बानों की बौछार वारिधारा सी और रुधिर के फौवारे झरने से जान पड़ते थे। कुछ देर के बाद बारूद वाले अग्न्यास्त्र और बाण बन्द हो गए और बगमेल की मार वाले अनयारे तथा तीक्ष्ण धार वाले करारे शस्त्र चल पड़े। उधर से चिम्मन खां और इधर से चामुँडराय का मुकाबला हुआ। दोनों ने द्वन्द युद्ध करने की इच्छा से अपनी अपनी सवारी छोड़ दी और पैदल होकर परस्पर एक दूसरे को अपना अपना बल और युद्धकौशल दिखाने लगे। वे दोनों बांकुरे वीर बरनी से बराबर तलवार और कटार के वार करते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे लंका के मैदान में मेघनाद और लक्ष्मण युद्ध कर रहे हों। जहां पर नायकों का ऐसा उत्साह हो वहां सहायकों और पायकों का तो कहना ही क्या है। घड़ी भर में वह सुन्दर शोभामयी भूमि रक्त से तराबोर होकर रसातल का सोपान समुद्र सी हो गई। जहां तहां मुंड लुढ़कते और रुंड अंधाधुन्ध मार करते थे। तलवार कटार बरछी आदि के लगने से जो जोरावर जवानों का खून फौवारे की तरह ऊपर को उछलता था वह हेलामेल फगुआ का गुलाल सा नजर आता था। कहीं योगिनी ताल देकर नाचतीं, कहीं बेताल भीषण स्वर कर गाते और मांस मज्जा खा कर और ताजे रुधिर की धार पी पी कर अमित प्रसन्नता प्रगट करते थे। सूर वीरों की इस आमोदस्थली युद्ध भूमि में जिस समय कन्ह, चामुंडराय, जैतसी, पज्जून आदि सामंत बिजुली के समान चमकती हुई तलवारों से तमक तमक कर वार करने लगे उस समय मीर बन्दों के मुरदों के अटंब लग गए। इधर तो ये वीर पुरुष अपने पराक्रम मय कर्तव्य साधन में दत्तचित्त थे उधर विमानों में विराजमान आकाश से अप्सराएँ और सुरसमूह उन पर पुष्पों की वर्षा करते थे।

इस प्रकार युद्ध होते होते चहुआन सेना के चन्देल चौकसी में से बाहर राय और बीरम देव दो वीर विशेष काम आए और शहाबुद्दीन की तरफ से पुत्र सहित पीरोज खां,

मफदर ख़ां, हाजम खां, सहवाज खां, आदि सरदार काम आए। दोनों तरफ के पन्द्रह हजार सिपाही खेत रहे। तब तक सूर्य्य भगवान अस्ताचलगामी हुए और दिशाओं में अंधेरा छा गया। तब पृथ्वीराज की तरफ से पहाड़राय तूँअर हराबल का नायक नियत हुआ। पहाड़राय तूँअर ने सवारों की सेना लेकर साम्हने धावा किया। नेजे और तलवारों की मार करते हुए वह अगनित यवन योद्धाओं को यमपुर पठाने लगा। वीर पहाड़राय तूँअर स्वयं तलवार के वार कर अगनित शत्रुओं को काट काट कर डारने लगा। वह जिस किसी हाथी पर वार करता उस का भसुंड दाँतों के सहित कट कर दो हो जाता, जिस सवार पर तलवार चलाता वह मय घोड़े के चार हो जाता। पहाड़राय के इस पराक्रम से मुसल्मानों के पैर उखड़ पड़े। तब तक आकाश में जो दुतिया के चन्द्रमा की आभा से कुछ उजेला था वह भी अस्तमित होने लगा। इसलिये दोनों सेनाओं में फरहरा फिर गया और उस दिन के युद्ध की इति हुई।

दूसरे दिन तृतिया को भी पहाड़राय की सवार सेना ने अतुल पराक्रम दिखाया और यवनों को खूब छकाया। तीसरे दिन चतुर्थी को फिर भी दोनों सेनाओं में घोर सग्राम होने लगा। अनयारे नेजों की अनी मदान्ध कुंजरों के कलेजे पार होने लगी, युद्धरँगराते मदमाते योद्धा परस्पर एक दूसरे को खण्ड खण्ड करने लगे, जिनके श्रोनप्रवाह से रसातल पर रक्त के कुंड भरने लगे। उस रक्त सरोवर में तैरते हुए नव युवक योद्धाओं के सीस कमल कली से और उनपर उड़ते हुए कौवे मधुकर से मालूम होते थे। इसी प्रकार मार करते करते पहाड़राय ने अपना घोड़ा शहाबुद्दीन के हाथी के सम्मुख जा अड़ाया और उसके कुंभ पर तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे वह भहरा कर ज़मीन पर लोट गया हाथी के गिरते ही पहाड़राय ने शहाबुद्दीन को पकड़ लिया और मुश्कें बाँध कर उसे घोड़े के कंधे पर डाल लिया। उधर शहाबुद्दीन के बन्दी होते ही तमाम मीर बन्दे जिधर तिधर तीन तेरह होकर चलदिए।

शहाबुद्दीन को बन्दी करके पृथ्वीराज सेना सहित दिल्ली को आया। वहां कुछ दिन रहकर माघ सुदी ५ बृहस्पति वार को ६ हजार घोड़े, ६ हाथी और एक करोड़ का स्वर्ण दण्ड में लेकर उसने शहाबुद्दीन को सुखपाल में बैठा कर गजनी को भेज दिया।

वरूण कथा।

(अड़तीसवां समय।)

चहुआन वंश में सरनाम राजा सोमेश्वर तलवार की धार और घोड़े की टाप के बल से शत्रुओं को पराजित करके नित नव देशों को दबाता समस्त राजसी सुखों से परिपूर्ण स्वतंत्रता पूर्वक अजमेर का राज्य करता था।

एक समय चन्द्रग्रहण का पर्व्व आया। यह जानकर सोमेश्वर ने अपने साथी सरदारों और माननीय पण्डितों को बुलाकर ग्रहण के समय यमुना स्नान करने की इच्छा प्रगट की। राजा की आज्ञा होते ही विधिवत दान का सामान जुटाया गया। सब सामत सरदार लोग यथास्थान आ आकर बैठ गए उस समय राजा के पास में बैठा हुआ गुरू राम प्रोहित इस प्रकार से सुशोभित होता था जैसे रामचन्द्र के समय में वशिष्ट।

शायंकाल होतेही एक ओर से पूर्णबिम्ब चन्द्रमा का प्रकाश हुआ। ग्रहण की छाया का बेध होते ही प्रफुलित कुमोदिनी मंद दुति होकर सकुचित और चक्रवाक चाकित चित्त होने लगे। विरही जनों के हृदय को विदीर्ण करने वाले चन्द्रमा की कलाएँ कुंठित होने लगीं। उस समय सारे संसार में ऐसा सन्नाटा छा गया मानो प्राणी मात्र गहरी नींद के ग्रास हो गए हों। केवल कामी पुरुष कामना की सिद्धि के लिये होम जाप यज्ञ करने में और भक्त जन भगवान के भजन में लवलीन थे। ठीक आधी रात के समय जब ग्रहण के बेध की संधि का समय आया तब राजा सोमेश्वर स्नान करने के लिये यमुना के किनारे गए। सोमेश्वर सहित सब सर्दारों ने ज्योंही वस्त्र विहीन हो कर और हाथों मे तिल, यव, तंदुल, पुष्प, स्वर्ण, कुसा और दूब लेकर स्नान करने के लिये जल मे पैर दिया त्योंही विशाल काय श्यामवरण वरुण के जलरक्षक रणधीर वीर विकट गर्जना करते हुए उनके साम्हने आ उपस्थित हुए। उन विकराल आकृति वीरों की आंखों में अग्नि ज्वाला के समान जाज्वल्यमान ज्योति प्रज्वलित हो रही थी। उनके नख और ओष्ठ लाल थे और उनके सर के बाल बड़े बड़े कड़े और खड़े थे। उनके शरीर पर कोई भी वस्त्र नहीं था। ऐसे विशाल और बलवान वीरों के साम्हने किस की सामर्थ थी जो खड़ा भी हो सके।

सामन्त लोग इन वरुण वीरों को अपने पर आक्रमण करते हुए देख कर शास्त्रहीन होने के कारण जल से निकल कर ग्रावस्थल पर चले गए। निदान वे वीर उस ग्रावस्थल पर उलीच उलीच कर पानी के झला बर्साने लगे। ग्राव की मुलायम बालू पर पड़ते हुए जल के बड़े बड़े छींटों से ऐसा शब्द होता था मानो ग्रीष्म का पतझाड़ होने पर झाड़ो से पके फल भूपातित हो रहे हों। परन्तु जब सामन्त लोग इससे न डरे तब वीर लोग परस्पर द्वन्द युद्ध करके अनेक प्रकार की आसुरी माया करने लगे। वीर करंत[1] य। तलवार कटा[illegible] भीर जल में कभी[illegible] लगने से जो जोरावर जवानों का आग की चिन[illegible] तरह ऊपर को उछलता था वह और कभी बरफ़ का गुलाल सा नजर आता था। करके हृदय को[illegible] देकर नाचतीं, कहीं बेताल करत, कभी [illegible]र गाते और मांस मज्जा खा रते और पछाड़[illegible] परन्तु वीर स[illegible] कर अमित डर। तब वे बोले कि [illegible] वान है कि बड़ बड़े प[illegible] कर फेंक सकते है स[illegible] संसार को बहा सकते [illegible] नपी काम कर सकते [illegible] देखे सुने भी न हो! हे [illegible] छोड़ कर क्यों यहां नाहक मरने आए हो। हम लोग जलपति वरुण के दूत हैं, रात्रि के समय गभीर जल में यथेच्छ विचरना ही हमारा व्यवसाय है। यह हमारा घर है, हमारा स्वराज्य है। तुम यहां से चले जाओ। यह कह कर वे मायावी फिर पुनः उत्पात करने लगे। इसी प्रकार होते होते दिशाओं में लालिमा की झांई

(१) करिष्ठ।

सूचना।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डाकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
गद्यकाव्यमीमांसा-(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	=)	) ॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र- (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
बिसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
भाषादुर्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	) ॥
उथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	=)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य ले भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हीरा और)	-)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, सहित	॥=)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती भी पहाड़	।-)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र या औ	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी..	।=)	) ॥
प्राचीन-लेख-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
रिपु जानत ...र सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
चप चंचल ग... नारायण पांडे लिखित)	।-)	) ॥
पावर सुगक्ति (समय १-११)	४)	।)
विचारि बल (समय १२-२८)	४)	।)
बालकारा... महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	=)	॥
धम्मपद (...कुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	) ॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणेश जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	) ॥

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित) ...	...	१) -)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित) ...	...	३॥) =)॥
दादूदयाल की बानी	...	१॥) =)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	...	१।) =)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित) ...	...	॥) -)
प्रबोधचन्द्रिका	...	॥।) -)
विरहलीला-आनन्दघन कृत	...	=))॥
वनिताविनोद "...	...	१) =)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	...	१) -)
गीतावली	...	।))॥
योगदर्शन	...	२) -)
गुरु गीता	...	।))॥
रामचरितमानस	...	८) ॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।

दूहा ॥ गय मंदा चष चंचला । गुर जंघा कटि रंच ॥
पिय प्रथिराज सु रिपु कियौ । विपरित करन विरंच ॥छं०॥२७१॥

कवित्त ॥ सुभट सतें सङ्गए । घरिनि तिन पुलिय सुरन बल ॥
कुसुम कंप घन उम्मर । भमर भर करय जु अलि तन ॥
कंपि करग तारंन । अंब पल्लव कि कीर मति ॥
धाह सबद उच्छलीय । कग्ग कलाठ कंठगति ॥
सिर चिहर मोर विसहर गिलिय । भनिस चंद कवियन वयन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ । प्रथियराज इम तुअ दुअन ॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना ।

हनिग राव बालुका । भंजि घोघंद महापुर ॥
लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि । कनक पट कूल नंग धुर ॥
करत सास उद्दास । छोहि जोरी बर दंपति ॥
फिर्‌यौ राज चहुआन । प्रान देषे हरि संपति ॥
बाजंत नह नीसान बर । धाह प्रकास हिलोर घर ॥
भंजेव जग्य जैचंद नृप । थान बयठ्ठौ कंपि पर ॥ छं० ॥ २७३ ॥

गत घटना का परिणाम वर्णन ।

सुनि विधात अब दुष्प । जायषे मानव दुष्पं ॥
चंद दुट्ठ अजङ्कं दहै । विरहिन अप रुष्पं ॥
रिपु जानत चहुआन । मंत इह गत्त न कित्तौ ॥
चष चंचल गति मंद । गुरन जंघा फिरि धत्तौ ॥
पावर सुगत्ति धरतौ तनह । मन अंगम गिरि चढ़न कौं ॥
विचारि बत्त भवषित्त मन । तौ बैठति हम गढ़न कौं ॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना ।

दूहा ॥ रन हारी पुक्कार पुनि । गई पंग पंधाहि ॥
जग्य विध्वंसिय नृप दुलह । पति जुग्गिनिपुर प्राहि ॥ छं० ॥ २७५ ॥

इति कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके बालुकाराय बधनो नाम अड़तालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४८ ॥

अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव।

(उंचासवां समय।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना।

दूहा ॥ जग्य उजाये अट्ठ दिन। अट्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माघह पुन्न पष। सुंदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना।

पद्धरी ॥ तिन समय ताम कनवज नरेस। कृत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँबर सँजोग सम जग्य काज। विथ्थुरिय रिद्धि गति विविध राज॥
छं० ॥ २ ॥
शृंगारि सहर विविधं बिनान। आनंद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजैं सु भाइ। जगमगत षंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥
वासन विचिच उत्तान ताम। मंडप्प उंच सज्जे सु धाम ॥
बासनह अेन विधि बंधि बान। सोभंत धज्ज बंधे सु थान ॥
छं० ॥ ४ ॥
क्षोनी पविच सद्धी सवारि। द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावंत थानथानह सु गेव। मंगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥
जलजात माल तोरन कुसुम्म। बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्रपति अनेक थान। उद्दार मत्ति षिति आसमान ॥
छं० ॥ ६ ॥

संभर संजोग लष्षे सु भूप। संपत्त लाज इय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तान थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान ॥ छं० ॥ ७ ॥
चिंतै सु चित्त कमधज्ज राइ। केहरि कँठेर बर मुत्ति काय ॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सम करह साज इय गय सुभार ॥
छं० ॥ ८ ॥
बाजे अनंत बज्जे विवान। बहु नृत्य करत रंजंत तान ॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। कृतयंत कंठ सा दिट्ठ रूप ॥
छं० ॥ ९ ॥
भूलंत नेन देषत विनान। मझंम चित्त साकृत्य जान ॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक्क कोटि नाचंत भेव ॥ छं० ॥ १० ॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव ॥
इहि विद्धि सत्त अह वित्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर दार ताम ॥
छं० ॥ ११ ॥
कर पंग मग्ग आगें सु बीर। सर सुक्कि मुक्कि सुमनं प्रसीर ॥
सुनियै न सद्द नीसान भार। दरबार भइय इत्तौ पुकार ॥
छं० ॥ १२ ॥
तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अधम्म किन करिय काज ॥
उच्चंत ताम धाइ सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त ॥ छं० ॥ १३ ॥
सब देस भंजि षोषंद थान। बालुकाराय हनि देषि प्रान ॥
छं० ॥ १४ ॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा ॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि ममुद लवन्न ॥
दून सत्तन सम जफने। बोलिय कमध वचन्न ॥ छं० ॥ १५ ॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त ॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्नि कूँनह अगिनेयं ॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैर्कृत्ति सुनेयं ॥

(१) ए.-माय।

पच्छिम अधिपति वरुन । वाय कूँनं वहवानं ॥
उत्तर हेरि कुबेर । कून ईसह ईसानं ॥
जरद्व ब्रह्म पाताल नग । मान षंडि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज काल्हि आनो पकरि । तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमंत उपारिय । अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय । सायक षँचि भारथ बग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना ।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ । बुल्लो सरोस कमधज्ज राइ ॥
धन भरौ लष्य वे सरस वाउ । करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयंद सत्तरि हजार । अरु असीलष्य तिष्पे तुषार ॥
पाइक्क कोरि धानुष्य धार । स्वाकोरि सजौ बंके झुझार ॥छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स बाज । इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पक्करों दुअन जिन जाइ भाजि । पूनौ सु भ्रात को ठोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥

गहिलेउ पिसुन पारो बिपत्ति । जैचंद कोपि बोल्यौ नृपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय । दिसि मुरधर उपदेस ॥
छिति रष्यन छिति परस बर । सुनि पंगुरें नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना ।

पद्धरी ॥ थकि वेद वेन बिप्रान गान । आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास । बिग्गय्यौ जग्ग मंचौ विसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

बंधों सु चंपि अब चाहुआन। विग्गय्यौ जग्ग निहचै प्रमान॥
जोगिनी राज चिचंग जोइ। बंधों समेत प्रथिराज दोइ॥ छं० ॥ २४॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर। निर्वार करों चहुआन श्रीर॥
आहुठ्ठराज प्रथिराज साहि। पीलों जु तेल जिम तिल प्रवाहि॥
छं० ॥ २५॥
संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ। इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ॥
सुनियै न पुन्य सभ मध्य राज। जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं० ॥ २६॥
पुच्छीस ताम संजोगि बत्त। कहि धाइ कोन मोपित विरत्त॥
उच्चरी ताम सहचरी एक। बंधी सु राज प्रथिराज तेक॥छं०॥२७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त। चहुआन पान देषे सउत्त॥
बालुकाराव सध्यौ सु तेन। घोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन॥छं०॥२८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्थ। चितां सुचित्त गंधर्व कथ्थ॥
संजोगि जोग बर तुम्ह आज। व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज॥
छं० ॥ २९॥
द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति। पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम। मानों सु मुझ्झ इह द्रढ़ नेम॥
छं० ॥ ३०॥
चहुआन सुबर मोसत्ति मत्ति। छंडौ सु अवर लालिच्च अत्ति॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम। छंडेव अव्व विधि व्याह काम॥
छं० ॥ ३१॥

दूहा॥ गंठि जुन्हाइ उन्हाइ निजु। राइ बरन निज दान॥
श्रुति अनुराग संजोगि कौ। करहु न प्रभू प्रमान॥ छं० ॥ ३२॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना।

कवित्त ॥ बालवेस बय चढ़त । भ्रम्म रष्षें न पुचि ग्रह ॥
भूमि भूमि न्रिप मिले । जानि वातूल तूल तहं ॥
बर संजोगि प्रनाइ । राज बंध्यौ चहुआनं ॥
बंधि बीर प्रथिराज । जग्य मंडौ परवानं ॥
सज्जै जु काइ भंजै कवन । का जानै किम होइ फिरि ॥
पुचीय स्वयंबर मंडिकै । फिरि बंधौं दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमंत न्रप चिंति मन । वजी अवाजन साज ॥
सुनि संजोगि कुमारि ने । हृत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना।

कवित्त ॥ जग्य विध्वंसिय पंग । दुआन ओतान बढ़ाइय ॥
सुनि सुनि रह संजोगि । चित्त हृत लीय प्रवाहिय ॥
बरों कि बर चहुआन । वार षोऊं भ्रम्म सारिय ॥
कै कृष्णों देंउ प्रान । बरों मनमथ्थ विचारिय ॥
मन मंझ बत्त इत्ती करी । प्रगट न वल बालह करी ॥
पहुपंग मंत बहु मानि कै । राज राज उच्चित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पंग सुयंबर थप्पि तहं । सुनिय जुन्हाइय बत्त ॥
बर कमोद जिम सुंदरी । रचि वचननि सुनि गत्ति ॥ छं० ॥ ३६ ॥

मा मुरछी धुक्किय धरनि । सुनिय संजोइय बाल ॥
सुहन सुहंदी बत्तरी । भुआन परहौ झाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥

अप्प स्वयंबर की जरहि । सथ मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए । रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥

हालाहल की कौज रत । तुंतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई । धर जंगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना।

कवित्त ॥ गय जंगल जगलियं । राज निरवास देस करि ॥
राजा रैबन जुथ्थ । गयौ प्रथिराज मंत करि ॥
प्रजा पुलिंद नरिंद । समर रावर धर राषी ॥
चीय चीय माविच । थान थानं नृप पाषी ॥
सम हथ्थ जुथ्थ कौ कथ्थ गै । सुबर कथ्थ कविचंद कहि ॥
प्रथिराज राज अरु वीर गति । विपन मझ्झ आषेट गहि ॥
छं० ॥ ४० ॥

सब सेना का भाग जाना।

काइर मुक्यौ नरिंद । पुहप परजंत मधुप तजि ॥
सुक सर तजिहति हंस । दझ्झ बन मृगन पत्ति भजि ॥
ज्यों कलहौत सु पंषि । तजै तरवर नन सेवं ॥
द्रव्य हीन कौं गनिक । तजत पथ्थर करि देवं ॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज । जग्य पविच न मानइय ॥
भजि थान थान अरि भ्रत गयं । बर लालचि सु प्रानइय ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दूहा ॥ मानि प्रान की लालसा । तजि साई सों हेत ॥
छंडि गए कायर सबै । रहै सूर बधि नेत ॥ छं० ॥ ४२ ॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया ॥ पालिज्जै लहु पुच लौं । मानिज्जै गुरु जेन ॥
वर संकट सो भृत्त ने । साई मुक्यो तेन ॥
साई मुक्यो तेन । सिंघ नन होइ न भिल्लं ॥
सौ समंत इह सूर । समं प्रथिराज इकल्लं ॥
धर धूंसे वर पंग । कोस पंचौ माल्हिज्जै ॥
मिल्यौ जग्य कमधज्ज । धज्ज बंधे पालिज्जै छं० ॥ ४३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४९ ॥

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आषेटक रमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्यनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुगिनि पुरैं । गय कनवज फिरि दिष्पि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहैं पंग सों सिष्य ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानी घत्त । बैर कहै चहुआनं ॥
मद्दि प्रात अरु संझ । भयति कंपै [1]पंगानं ॥
पंच अंग पंचास । सोर ढिल्लिय रचि गढ्ढे ॥
यों कहंत दुत बीय । आय बन बीर सु ठढ्ढे ॥
दुममन दुरंग दैवान गति । अब कुरंग जम्मी ततरि ॥
गज फुंक जेम पूजो जु इम । चढ़ि अरि संमुह न्रप्प भिरि ॥छं०॥३॥
सिंघ वचन [2]चर मानि । पान असि लष्प सु फेरं ॥
सुबर तप्प चहुआन । कोइ संमुह नन हेरं ॥
भेद न्रपति करिपान । कन्ह लिन्नौ उर भानं ॥
मिलि ततार कमधज्ज । तारि कढ्ढे चहुआनं ॥
बर हंस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलहो वज्ज कर वज्ज बर । सठ्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-गंगानं । (२) ए. वर ।
* मो.-प्रति का पाठ यहां से पुनः आरम्भ होता है ।

सिलह्ह अगें करि लीन। गाम मभ्भें उत्तारिय॥
सोदागिर ईसब्ब। [1]बीर बड्ढिउ जस भारिय॥
अंधारी नव भार। अप्प दूनों संपत्ते॥
अठ्ठ पारि बर चळ्यौ। [2]भेस जू जू बर मत्ते॥
संजुरन बेन कारन्न सब। भाग चवथ्थै चढ्ढयौ॥
बाजीद षान खूंषे मनों। चूक [3]चोंक बर बढ्ढयौ॥ छं० ॥ ५ ॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिड़ार देना।

पार पार बाजीद। धाइ अप्पौ भर कोई॥
चूक चूक चिंतयौ। सब्ब सामंत जगोई॥
चूक बीर मानि कै। बीर [4]कैमास जु आइय॥
सूर सूर आहुट्टि। [5]सब्ब हंसीरह धाइय॥
बर दीन एक अदीन जुध। निसि सयूह कलहंत बजि॥
बर जम्म दट्ठ बट्ठह परे। [6]जहां तहां हिंदू सु भजि॥ छं० ॥ ६ ॥
फिर कहंत बन बीर। चरित दिल्ली चहुआनं॥
अप्पन न्रप आषेट। सूर सम्हौ सुलतानं॥
बर दाहिम कैमास। सिंघ चौकौ बर घल्ली॥
आय अब्ब सामंत। बंध प्रथिराज सु चल्ली॥
बर साम दान अरु भेद दंड। कंक बंक न्रप किज्जियै॥
सामंत मंत बंधि सु मति गति। सामि संग्राम न छिज्जियै॥छं०॥७॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकहेह पहुपंग। बंधि [7]निभ्भर निसंक भरि॥
दुतिय देह पज्जून। सुरभ कूरंभदेव बर॥
चतिय देह तूंअर। प्रहार पांवार सलष्पी॥
चतुर देह दाहिम्म। धरन नरसिंह सु रष्पौ॥

---

(१) ए. कृ. को.-वीर वढ़ी जस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेद।
(३) मो.-चूक। (४) मा.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हंसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह नह हिजन सु भज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

पंचमी देह कैमास मति। बर रघुवंस कनक्क बिय॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लंगुरि सविय॥ छं० ॥ ८॥

जयचन्द का अपने मन्त्री से संयोगिता का स्वयंवर करने की सलाह करना।

तब सुमंत परधान। पंग सब सेन बुलाइय॥
जु कछु मंत मंतियै। मंत चहुआन सु घाइय॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याल आवै कै नावै॥
जिनहि नाहि दिज्जियै। लाभ [1]सुंदरि अकरावै॥
मोमंत मंत चिंतै नृपति। बाल स्वयंबर किज्जियै॥
तापच्छ सिंघ एकट्ठई। फिरि दुज्जन भिरि भंजियै॥ छं० ॥ ९॥

दूहा॥ इतनी बत जैचंद सों। कही सुमंत प्रधान॥
बत मन्नी जैचंद नें। अंतर मत भए आन॥ छं० ॥ १०॥
मानि मंत पहुपंग ने। महल कहल उठि जाइ॥
बर संबर संजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ॥ छं० ॥ ११॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना।

चौपाई॥ सुनी जंत बर बैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरंग बुलाई॥
कहि बर बर उतकंठ सु बाला। चिंते पुच्छि [2]विविरि बर माला॥
छं० ॥ १२॥

सहचरि चरित [3]वरन मोकल्ली। मनों हरि कामन हरी इकल्ली॥
छं० ॥ १३॥

संति करन चित हरन। संतिका नाक तिहि।
*बर सुमंतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि॥ छं० ॥ १४॥

दूहा॥ सुस्थ सु राजन सुस्थ चित। सुस्थ विलंब न धीर॥
पुरुष जु क्रम क्रम संचरै। नेन सुता पन पीर॥ छं० ॥ १५॥

(१) ए. कृ. को-सुन्दर। (२) ए. कृ. को.-विवर। (३) ए. कृ. को. चरन।

* मालूम होता है कि ऊपर की चौपाई के दो अन्तिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं।

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ। महचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ। 'संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन।

नाराच ॥ परट्ठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुक्कनं।
तिसाम दाम दंड भेद मारसी विचष्पनं ॥
बचन्न चित्त चातुरी न ताहि कोइ पुज्जई।
हरंत मान मेनका मनोहरंन सुभ्भई। छं० ॥ १६ ॥
अवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई।
अनेक विद्वि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई।
छिनेक में प्रसन्नवै जु जेम मेन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्ककलं अलाप जाप ताप भृत्त संसई ॥
अखंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब मुच्छि काम जग्गवै।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथंममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही।
विषंम जोग भोप तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हठ्ठ सों छंडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै समुझ्झवै।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न 'सुझ्झवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥
गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारौ। चंचल नैनीय चंचला बेनी ॥
थावर चित संजोई। थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से बचन।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रप्प किय।
किम बुद्धिय मो तात सकिल्लिय एक हिय ॥

(१) ए. रु. को.-संजे गि। (२) मो.-परात्ति।

तब बोले बर तात सयंबर मंडइय।
कहि बर उतकंठाइ माल उर छंडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥

चौपाई ॥ मिलि मंडल राजान्न सु बरई। सो उच्छव बंधे संकरई ॥
देषि वाम भोली तजि अंगं। ते ऊभे दरबारह पंगं ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की बातों पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै बर सेन सँजोग। सषि सहचरि सम बुल्लिय ॥
अबुझ घात वज्रपात। काम वेमो दुष भुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै किति। ताहि गंगा गुन गावै ॥
बंभि पूत रस पढ़त। क्रंन हीनह समझावै ॥
सहचरिय बतनि सुन्निय सुवर। चित चल चित बत्त न बकिय ॥
बर भई समझि संजोगि पैं। फिरि उत्तर तिन तब्ब दिय ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे बंधे पित संकरह। जे पढ़े पित लोन ॥
ते बढ़ी जन बापुरे। बरै सँजोगी कान ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सह सहचरिय गुन। का जानौ कुल बत्त ॥
जे मो पित बापह कहै। तेमो बंधव अत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुचौ सुनि गुन इतौ। तात बचन तजि [2]काज ॥
कै वहि गंगहि संचरौं। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हिये मन्नि अनराव ॥
हौं बरि अवरहिं देउंबर। दैवै अवर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तब पंगुरि मन पंगु करि। धाइ सबुझी बत्त ॥
तुम पुचौ गुन जानि हौ। करहु दूरि हठ इत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का बचन।

चंद्रायना ॥ मो मन मंझ गुरू जनं गुझ्झ सु तुम कहौं।
जंपत लाजों जीह सु उत्तर लहु लहौं ॥

(१) मो. मुझ्झवै। (२) ए. कृ. को. परम। (३) मो.-काहु।

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोहिय हंति अषंडलिय ॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन।

दूहा ॥ अन दिषि इत लीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्त ॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्त ॥ छं० ॥ ३१ ॥
कवित्त ॥ बचन समुह संजोगि। बाल उत्तर उच्चारिय ॥
अजहूं कनक समूह। तुच्छ जानै नर नारिय ॥
मलया [3]पाम पुलिंद। करै इंधन बर चंदन ॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन ॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय ॥
संयोगि क्रम्म बर पुब्ब गति। तैंत अली अलि व्रत्त लिय ॥छं० ॥३०॥

सहचरी का वचन।

सहचरी वाक्य ॥ गाथा ॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि ॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन।

संजोगिता का वाक्य।

कवित्त ॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ ॥
जिहि लुहार सांडसी। भीम चालुक अहि साहिय ॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय ॥
पावक सबर बर नैरि सह। अरनि मंडि जिहिं बारयौ ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ ॥ छं०॥३४॥
दूहा ॥ अथवा राजन राज ग्रह। अथवा माय लुहानि ॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंधव जानि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२) ए. कृ. को.-मन्न।
(३) ए. पर मर कृ. को.-पमर।

साटक ॥ आरन्नौ अजमेर धुम्मि धमनौ, कर मंडि मंडोवरं ॥
मोरीरा मर सुंड दंड दमनो, अग्गिं उचिष्टा करी ॥
रनथंभं थिर थंभ सीस [1]अहिनं, ज्वलदिष्ट कारुंजरं ॥
कृष्यानं चहुआनं जान रहियं, घड़नोपि गोरी घड़ा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुची मरहट्ट थट्ट सबले, नौमंच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निमीवे हथलेव मालव धरा, मेवार मंडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव नृपती, तत्वान्यनं किं वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

श्लोक ॥ नमे राजन संबादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरमेक स्वयं देहे । नान्यथा प्रथिराजयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन संभारिय ॥
रसन वचन चाहंत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाष गंधब्ब । भयौ किल किंचित नारिय ॥
नयन उमड़ि जल बिंद । बदन अंसू परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचंद कहि । बाल जदिन मुर संभयौ ॥
उफफेन अमी मझझह रह्यौ । ससि कलंक उफफनि गयौ ॥ छं० ॥ ३९ ॥
द्रिग रत्ते करि बाल । भोंह बंकी करि षिझिझय ॥
सो ओपम बरदाइ । चंद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुबन नरिंद । परसपर लरत बिआनं ॥
मनु संम रष्यत बाल । दुहुन सों षीझत आनं ॥
भोहन्नि तीर जानै छुरी । दुहुन बीच अड्डो करी ॥
सो रूप देषि संजोगि कौ । उठि सहचरि मंतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वंतह वयन । बयन गये मृत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हौं पूछूं तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) मो.-अहितं ।

सखी का बचन।

थिरु बाले वल्लव मिलनु। जौ जुड्डनु दिन होइ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं। रति मंझै घट लोइ॥ छं०॥ ४२॥

संजोगिता का बचन।

रति आग्रह तिन सों करहु। जो तुम सषी समान॥
ज्वाब ज्वाब लजा करौं। मौं तुम तात प्रमान॥ छं०॥ ४३॥

सखी का बचन।

तोसों मात न तात तन। गात सुरंगरि याह॥
यों जोवन अथ्थिर रहै। अंब कि अंजुरियाह॥ छं०॥ ४४॥

साटक॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं॥
जाती फुल्लय [1]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा॥
झंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया॥
सायं तोय संजोय भोग समया, प्राप्ते वसंते छबी॥ छं०॥ ४५॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन)।

कुंडलिया॥ कहि सजोगि सुनि बत्त इह। मरन सरन मुहि एक॥
किम अनि रावह लभ्भिहै। दुल्हह जनम बिसेष॥
दुल्हह जनम बिसेष। लज्ज सिंगारम थक्की॥
बाहिथवत चहुआन। आस सासा जिय रुक्की॥
बर गुरुजन बिसाहनौ। हिंदु हह बहह हियौ॥
सुक जाई सवरीस। उभै पच्छै श्रुति कहियौ॥ छं०॥ ४६॥

साटक॥ इंद्रो किं अलि अन्यर्थ्य अनयो, चक्की भुजंगा सुरं॥
चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचोनि बंका करे॥
तस्यानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे॥ छं०॥ ४७॥

दूहा॥ ग्रभ्भ आइ पहुपंग कै। बर चहुआन सु लेषि॥
सुद्धि नहीं किर बोलु तुहि। रन पत्तह करि देषि॥ छं०॥४८॥

---

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (१) मो.-चम्पकस्य।

श्लोक ॥ संबादेव विनोदेव । देव देवान रंच्छितं ।
अनुप्राने प्रयाने वा । प्रानेस दिल्लीश्वरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दूहा ॥ देहि सखी संजोगि दै । निकटति पंग कुमारि ॥
अगिनिवै जीवन मरन । लै अलि अब्ब विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । बिनसच पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय । पंग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय । बुद्धि बंध परमान ॥
नृप आगे बढ्ढिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छ० ॥ ५२ ॥

संयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना।

सहचरि पंग नरिंद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥
बर संजोगि न मानई । चित्त करहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तब झुकि पंग नरिंद ने । तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै बुड्डवि जल मज्झि परै । कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान समान करि । दीने दुजवर पंग ॥
घनं अनष चहुआन कै । रष्षि सुरी तट गंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश।

झुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥
चहति गही चहुआन कौ । मिटै बाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ किए गंग तट्टं अवासं संजोगी । रही सातपन्ने रु छंडी सभोगी ॥
वसंतारिवासं दई सत्त दासी । बीयं बंभनी मह नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तियं पान पानी सयं दुद्ध धारै । करै दंत बाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेषं अलेषं । सोइ सुप्पनं चित्त चौहान देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

फिरै पंथिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं घट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं॥
दलं पुब्ब सेतं अवं वृन्न राजै। जदं ताव द्वार सिंघारेज साजै॥

छं० ॥ ५९ ॥

दलं रत्त तायं गुनं होइ जब्बं। तबे नीद आलस्य आवै जु सब्बं॥
दलं दष्पिनं रूप हब्बी प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं॥

छं० ॥ ६० ॥

दलं ता बनै रत्ति नीलं बरानं। तहां पत्त उग्गं मनं जंम रानं॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै। तहां हास उग्गै विनोदंत साजै॥

छं० ॥ ६१ ॥

दलं बाय कोनं नभं रंग साजी। तहां चिंति चितं उचाटं विचारी॥
दलं उत्तरं पीत वृन्नक लज्जी। तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी॥

छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर वृन्नं इसानं जु होई। तहां लज्ज संका सु संगी सजोई॥
संधी संधि वृन्नं मनं मद्द होई। तहां रोग चिंता चिदोषं सलोई॥

छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं बनाई। तहां मर्द अंसौ सुअं लोक पाई॥
कहै बंभनी भोग संजोग सिष्पी। तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्पी॥

छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना ।

चौपाई ॥ तब इक दिन इम बंभनि बोलिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोलिय॥
कै चहुआन ग्रहौं कर झल्लिय। ना तरु वृत संजोग सु हल्लिय॥

छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राज बचन इम जंपै। थर हर धर दिल्लिय पुर कंपै॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मोनह। पंग भयं दुज्जन भय छोनह॥

छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५० ॥

अथ हांसीपुर प्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय ।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुंढि फौज जैचंद फिरि । बर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर जाहि बर । रहै ठठुक्कि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपंग । फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढौली तें पच कोस । रंक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए नृप पास । देस दोऊ अरि बस्से ॥
राह रूप प्रथिराज । जग्गि पंगह गहि गच्छे ॥
त्रिमान भान कूरंभ भुज । हांसीपुर न्रप रष्यिये ॥
सामंत सबै कैमास बिन । दुज्जन मुष्य सु दिष्यिये ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हांसी गढ़ की रक्षा के लिये सामंतों को भेजना।

हांसीपुर सामंत । कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यो भीम पुंडीर । सलष रष्यौ सुत भानं ॥
रष्यौ जैत पंवार । कनक रष्यौ रघुबंसी ॥
रष्यौ देवह क्रन्न । रष्यि उद्दिग क्रन गंसी ॥
वग्गरी राव रष्यौ न्रपति । रा चामंड सु रष्यिये ॥
सामंत सूर तेरह चिगढ़ । गोरी मुष दह दिष्यिये ॥ छं० ॥ ३ ॥

हांसीपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आषेटक मंडि कै । ढिल्ली रषि कैमास ॥
पंच पंच सामंत सह । जुग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आषेट वर । पहुपंगनौ जु चास ॥
नैर सु रष्यौ सेन सह । न्रिप हांसी पुर पास ॥ छं० ॥ ५ ॥

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस। भंजि मेवास सबै बर ॥
गुज्जर गोरी पंग। देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाप ज्यों तूल। मूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती। बीर रस बीर अघाइय ॥
चामंड राव गोरी दिसा। भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत सूर असिवर बलह। हांसीपुर अग्रह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआना समसूर। सबै सामँत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज। समै सामँत पुव धारं ॥
आदर बर चहुआन। हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम राज। राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह। बर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच सूर संग्राम रवि। सो नतु दै देही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत। सुनिय बालोच पहारी ॥
हैं मारू पतिसाह। तेन बेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच। भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान। देस अरि मिट्ठ सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करौं। अरु बेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै। तौ कहुँ हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम भुमिया भुमवट करहिं। तुम सहाय हम भीर ॥
सब पंधार बलोच मिलि। धनि कहुँ ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक्क बरष प्रथिराज बर। रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावहिसि धर भुगवै। बर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
घर बीतिय मत्तिय छुरी। घर नागौर निधान ॥
जिन भुज्जन ढिल्ली धरा। ते रथ्थे परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना।

कवित्त ॥ यों चाहैं नृप सूर। चंद चाहै चकोर मुष ॥
बूड़त नाव सु कौर। इथ्थ वोहिथ्थ बीर रुष ॥
सूकत नाजह मेघ। प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आइत तत्त अंतरे। बाल संमृत गुन चाषै ॥
देषियै दुनी चहुआन मुष। लज्ज पत्ति परवत सु गुर ॥
मक्का चलाइ बेगम नृपति। तत्त कथा आइत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना।

भुजंगी ॥ सयं सत्त वेगंम दीनी नरिंदं। तिनं लज्ज पानी मुषं मेछ इंदं ॥
महं बड्ढि डड्ढी लजं मुष्प राची। दियौ षान निसुरत्ति जा मुक्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मियानेति पत्नी किरं रान भट्टी। जुलाची चिकत्ते विराजी सु घट्टी ॥
महं माइ मंती सु सामंत ध्रम्मं। दिये साहि गोरी सकं बीर ब्रम्मं ॥
छं० ॥ १४ ॥
घने हेम हूनं विभूती निनारी। तिनं देषि दुब्बेर ग्रब्बं प्रहारी ॥
मयं मोह मक्का तिनी जात मत्ती। वियं ग्रेह ब्रम्मं क्रमं जात छित्ती ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन।

मोतीदाम ॥ मयं इत मथ्थ महा रस वान। उयौ जनु चंद कलानि पिछान ॥
इस्यौ नर वाहन नाग नरिंद। सु मोतीयदाम पयं पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥

रहे बर सूर कलानिधि राज। मनों नृप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय आसय सूर। मनों पवनंसुत पव्वय मूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ बर बीर सु चामँडराइ। मनों सत पुच तिनं धृम चाय ॥
रह्यौ बर बीर चंदेलति सूर। अरी घन वाहन ज्यों नद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

रह्यौ रजि सारंग सारँग गौर। सु रष्पन कों छिति पचन मौर॥
महं गुर जादव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान॥
छं० ॥ १९ ॥
सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरो दल चंपन कौ ससि राह॥
वरं वृत दाहिम देव प्रमान। .... पारथ के उनमान॥
छं० ॥ २० ॥
धनौ धर धार धराहर पान। सु विक्रम भोज तनें उनमान॥
षिची वट षौचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

बलोच पहार का संक्षिप्त वर्णन।

बली वृत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज॥
त्रनाइन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अवत्तय तेक॥
छं० ॥ २२ ॥
सतं बर सामँत मध्य सु टारि। रहे बर आसिय साहन च्यार॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सहूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर॥
छं० ॥ २३ ॥
उभै सुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अष्थि न लिंग्रह चीर॥
तिनें नृप टारिय तेसम अष्पि। सु रष्पिय राजन आसिय पष्पि॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक॥ राजं जा नृप राज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्धंतयं जोवनं॥
निर्जेयं च चिकाल वधनं वधं, गोरेनि भा [2]सेसयं॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सषं॥ छं० ॥ २५ ॥

वलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त॥ तिन तुरंग गज भंजि। जंग संभरि उद्धारं॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं॥
ते रष्पे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) कृ.-निभा संसय।

विधि विधिना परिमान । देव देवा दिसि संगे ॥
सुध मध्य विषम धियपत्ति न्रप । परषि रह्यौ दिल्ली नृपति ॥
अगर सु सकल सुरतान कौ । दिपति दीप दिव लोक पति ॥छं०॥२६॥

बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाही करना ।

मध्य पंथ संभरिय । चलन वेगक अधिकारिय ॥
मिलि बलोच पाहार । राव चामंड सु धारिय ॥
जु कछु भेद संग्रह्यौ । दियौ तिन मेद प्रमानं ॥
विन अग्या सामंत । जग्गि लग्गिय आपानं ॥
बरजए राम रघुबंस गुर । गामी बल लग्गा विहसि ॥
पज्जूनराव पावस पहर । अमर मोह भूले रहसि ॥ छं० ॥ २७ ॥
दूहा ॥ सो नागौर सु रष्पि न्रप । अप दिल्ली पुर पास ॥
न्रप अग्या बिन सूर भर । करिग अवत्त सु वास ॥ छं० ॥ २८ ॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ चढ़ि मक्कां बेगंम । साहि जननी अधिकारिय ॥
अति सु भ्रम्म माया न । क्रंम विग्यान विचारिय ॥
अट्ठ लष्प हाछून । पट्ट विय द्रव्य रजंकिय ॥
सो हथ्थी बंर बाज । जाइ पंथह सा थक्किय ॥
संभरि सुकान चामंड न्रप । लच्छि लोभ षल मत्त सुनि ॥
बरजयौ बीर रघुबंस नर । तौ पनि चढ़्यौ अभ्भ गनि ॥ छं० ॥२९॥

बेगम के पड़ाव का वर्णन ।

साटक ॥ पासं साइर भार मध्य सघनं, पानीय मिष्टिं गुनं ॥
एकं रूपय रेष साहस विधिं, रम्यं हरम्यं तलं ॥

जानिज्जै बन हंस मग्ग चकितौ, नोरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्त अंग समयं, त्रैयं सु वेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपन्नौ ॥
माष धम्म सुरतान। भेद करि भेद सु दिन्नौ ॥
है आमिष्ट सुवास। तमकि सब बीर सु हल्लिय ॥
भर गोरी सुरतान। संग घुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हों षंधार अगियान बर ॥
सोधीर कोन चहुआन कौ। लोइ लंक लुट्टे सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धाए ॥
अद्ध रयनि परि सोइ। जोर हिंदू भर आए ॥
ग्रहि बेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय षास षजीना ॥
भजि बल्लोच केइ झुझ्झि। सु बर रन्नौ वह दीना ॥
बुंबार सह दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त इय ॥
दैवत्त गत्त त्रैसी हुइय। लहिय [1]घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार वर। पाहारिय सौं षेद ॥
वेगम लुट्टि नरिंद भर। लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥

कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि बन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बल्लोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग बंधौ विषम। अद्ध सेन उप्पर परिग ॥
वेगंम लुट्टि बंधिप सयन। लच्छि अमग्गत सह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दूहा ॥ अचरज सब सामंत कौं। कहि अब गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान की। अद्ध भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए.- पत्त।

बिन पुच्छै बड़ गुज्जरह। चूक कय्यौ सामंत ॥
तिन सों ए बत्ती कही। गुन में दोस दियंत ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामंतों से प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ भग्गा बर सब सथ्थ। रहो बेगम अधिकारिय ॥
मृतक अंग संग्रह्यौ। सस्त्र किन ग्रहि न हकारिय ॥
बार बार दिषि समुष। चौर द्रपदि ज्यों षंचत ॥
उहित सह गोव्यंद। इहित पुहाय सु उच्चत ॥
अल्लह रु राम इक्कै निजरि। विपष बंध बंधे चलहि ॥
साध्यंम पंथ जू जू कियौ। मुगति पंथ एकें घुलहि ॥ छं० ॥ ३७ ॥
मुगति पंथ नह भिन्न। एक पंथं अधिकारिय ॥
एक नरक संग्रहै। एक मुक्तिय सु विचारिय ॥
अंत हरुअ ह्वै तिरै। कम्म भारो सो बुड्डै ॥
इक्क अंस संग्रहै। अहक सा पुरिसह छुड्डै ॥
संसार सकल बुड्यौ फिरै। कहै बंध बंध्यो न किहि ॥
बुड्डे सु इक्क सारंग सुक। सु बुधि बुड्ढ तत्तह लहहि ॥ छं० ॥ ३८ ॥

चौपाई ॥ असु सारंग पत्तियै बंधि। उड्डै साष ह्वै राषै संधि ॥
यों न विचारि सु चामंड राइ। मेछ कम्म लग्गे गुन चाइ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना।

कवित्त ॥ लूटि सबर चतुरंग। लइय चामंडराय सधि ॥
मुक्कै कै संग्रहै। के विषंडें के विधि विधि ॥
के अहृत किय लच्छि। केन लच्छीति समप्पिय ॥
फिरें सब्ब पुरसान। दिसा गज्जनीं स रप्पिय ॥
साबित्त मत्त कोनी नहीं। हैगै विधि लग्गे विषम ॥
चामंडराइ दाहरतनौ। मत मंचौ कोनों सुषम ॥ छं० ॥ ४० ॥

चौपाई ॥ तज्जि गाम लुट्टिग बर संगी। हय मिट्टन सब सस्त्र सुरंगी ॥
हांसियपुर फेरिय सुरयानं। पुक्कारी गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां। जहँ गज्जनी सहाब ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल। विवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना।

साटक ॥ ऐ गोरी सुरतान साहिब बरं। साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक वृत्तं। मानस्य मर्द्द जगं ॥
बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो। धन पोपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं। ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं। अग्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्रप मृत्यक मृत्य समानं। आन सुनत सेवक्क न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ बिप्प सु षंडन वेद बर। नर षंडन निर ग्यान ॥
चिय षंडन इह में सुन्यौ। धिग जोवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनौ। जंपी मात निधान ॥
में ग्रभ्भह झुझ्यौ धय्यौ। सुंठिन षड्डी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कवित्त ॥ धरत ग्रभ्भ दस मास। उदर भोगवै दुष्य तन ॥
सीत जाल बर उष्ण। सवर बरिषा सुमत्त मन ॥
ता जननी दुष देइ। पुच ग्रभ्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुच कौं गति। न साहि निहचै धिच्चारिय ॥
सामृत्य काल बंधेति न्रक। कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु बचन आवै नहीं। दिन विवान देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥
दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सौं। करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ। भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतानं। सुनि साहाब हूर सब्बानं ॥
जा जीवत धरवानं। भुग्गै को तास अप्रमानं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

अति आतुर अप्पानं। घानन पान घाइयं पानं ॥
हियै धकि धक्कि लग्गि कंपानं। दीय पबरि सबै फुरमानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन हूर साहब साहि। धकधकी लग्गि रस बीर छाहि ॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कौन। सींची कि अग्गि घृत होम दीन ॥
छं० ॥ ५१ ॥

तमतमे तेज वर भर करूर। बद्दरन फट्टि किरनें कि हूर ॥
विफुरैं हथ्थ रस बीर पग्ग। लंघने सीह हथवार तग्ग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

फुरमान फट्टि घुरसान घान। बज्जे व सोर सुरवर निसान ॥
रत्तरे रषत उट्ठे प्रमान। भद्दव कि मेघ घन रंग आन ॥
छं० ॥ ५३ ॥

तत्तारषान सुविहानं मीर। इहि रत्ति मंड बैरंम तीर ॥
मंची जु मंच जेमंत रूप। बोलियै सही सुविहान भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दरबार भीर गजवाज लोइ। पावै न मग्ग भर सुभर कोइ ॥
घोलिथहि घग्ग हयगय पलान। किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बंधो समेत सामंत हूर। सुविहानं साहि बोल्यौ करूर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तैयारी का हुक्म देना।

कवित्त ॥ हिरनंकुस पाताल। जाय घग जग मंडाइय ॥
सोवनपुर सुर लूटि। पकरि चिय काया धाइय ॥

नारद आइ छंडाय। भयौ प्रहलाद पुत्र तस ॥
तिहि जननी संग्रहन। सुने उर मद्धि रष्पि गस ॥
मघवान सहित दिगपाल दस। मात वयर कज भंजि जिम ॥
सुरतान कहत चहुआन भर। हौं पनि गंजहु अज्ज इम ॥ छं० ॥ ५७ ॥

थान थान फुरमान। फट्टि बंधन हिंदू दिय ॥
विधिना सो निम्मयौ। मेटि सक्कै न दिषौ दिय ॥
इला नाम धरि हियै। मेछ षुरसानह जोरिय ॥
ज्यों बराम उच्चरै। सेन वोरन गढ़ तोरिय ॥
इक इलाल बोलै न मुष। काफर एधर बर भई ॥
दह बड़े सूर हम साहि कर। तो सलाम कर सुभ्भई ॥ छं० ॥ ५८ ॥

तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना।

दिष ततार दह करि। सलाम उच्चार वरज्जिय ॥
रहि न बोल ज्यों साहि। दिया उच्चार जु इक्किय ॥
षां ततार वरजे निसान। आसन उर पानं ॥
जु कछ मत्त मत्तियै। हुकम दीना सुरतानं ॥
मक्का मुकाम पीरान की। करिव आन बल बंधियै ॥
मादरं पिदर मानें न दर। निमक इलाल न संधियै ॥ छं० ॥ ५९ ॥

दूहा ॥ थान थान फुरमान फटि। बंधन हिंदु नरिंद ॥
दै दुवाह सों न्हिम्मयौ। को कहै कविचंद ॥ छं० ॥ ६० ॥

कोक कढ़ै विधिना लिषी। आज साह बल तेज ॥
मानों सात समुंद ने। तज्जि मजाद अमेज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

मरजादा सत्तों समुद। अमित उलंघी आज ॥
मानों घन के देव दुति। नाग विरोधन पाज ॥ छं० ॥ ६२ ॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान।

कवित्त ॥ नाग भूमि सिर तजै। चंद छंडै सुचंद कल ॥
कलिन भान उग्गई। पथ्थ मुक्कै सु वान छल ॥

रघु सुग्यान छंडई। भीम छंडै बल बंधै ॥
रूप छंडि मारद्द। कंद छंडै हर संधै ॥
मुक्कै जु जोग जोगिंद ज। कर फिरस्त छंडै गुनह ॥
इत्तने धीर छंडै जदपि। साहि न कस मुक्कै मनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुक्कै सुक्कै सुद्दत। इत गोरी सुरतान ॥
सकल सेन सज्जे न्वपति। सुनहुं तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन।

सुनिय मीर मीरन चवै। देषि सष्पिरह मीर ॥
जितौ कस्स सुरतान कौ। तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पद्धरी ॥ देष्यो न जाइ आलम अदब्ब। थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब ॥
कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ठ। उच्चरै सेन बोलंत गट्ठ ॥
छं० ॥ ६६ ॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल। बोलै न मुष्प सनमुष्प काल ॥
सुरतान निजरि बर भई ताम। दह बेर सूर बर करि सलाम ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अंगुरी टेकि इस षां ततार। दह करि सलाम वोलयति बार ॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ। उच्चरों मंत सोजीव हेउ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना।

दूहा ॥ चौसठि बेर सुद्दत्त बर। फेरि फेरि सुरतान ॥
सो पहराए मत्त गुर। दै किताब परिमान ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दै किताब पहिराइ चर। नर नरपति मन साहि ॥
आसी पुर जो भंजई। इहै तत्त गुन आहि ॥ छं० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना।

सुन्यौ मंच मंची सुमत। कहत मंच सुरतान ॥

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ पति प्रमान हक्करिय। करिय जंगम सु सत गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। काल चंपै सु काल मन ॥
अरि निल्लुर साहरी। सबल मंची दुष्टप्पन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सक्ति मझूरति बोलि बर ॥
तत्तार षान षुरसान पति। करौं मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज बर ॥
चपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान तत्त नर ॥
बेरं कोबिद अछरि। काम अचपतिय स सुंदरि ॥
इत्ते न्रपति जो होइ। भए न्रप तौर समुंदरि ॥
तिहि कहे षान तत्तार बर। आसीपुर भंजन बलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ला धरा। बैर वत्त बुझ्झै पलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ षां ततार जंपै सुबर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें बनें हम्मान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार बच। चिंदवान लै जाइ ॥
मात रीस बेगम मिटै। सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर वेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करै सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

तत्तार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

जवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ सैमुह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मौर। सज्जि चतुरंग सेन बर ॥
मौर बँदा षुरसान। मुक्कि रहै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि बर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

सो मंति मंत बंधै नृपति। किम्मि बोलि [1]भर तर पढ़ै॥ छं० ॥७७॥

हांसीपुर पर पढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना।

षां हुसेन आइत्त मन। सुमति कियौ परिमान॥
आसी पुर भंजन भरै। इह करि मंत निधान॥ छं० ॥ ७८॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा।

कवित्त॥ रे अमंत तत्तार। मतौ जानै न प्रमानं॥
ए हिंदू हम बंधि। सीस लग्गै असमानं॥
हम दल भज्जत देषि। तुम्म गिनियै तिन मानं॥
अब हम बंचि कुरान। फतेनामा धरि पानं॥
पाषंड सस्त्र अग्गें छिपै। मैं भंजों दुज्जन अरी॥
चहुआन सेन हांसीपुरह। लुट्टि गाम उभ्भा भरी॥ छं० ॥ ७९॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा।

हांसीपुर पुर विपुर। करों सु विहान तेज बर॥
तो गज्जानिय सुद्ध। हांसि मंडौ जु अप्प धर॥
अरि भंजे तन भंजि। मार मारह करि मोरों॥
जौ बंधों सामंत। साहि तसलीम सु जोरों॥
ता दिवस षान तत्तार हौं। धार धार चढ़ि उत्तरों॥
सुविहान आन चहुआन सों। जौन जुद्ध इत्तौ करों॥ छं० ॥८०॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना।

दूहा॥ पाहारी बल्लोच तहँ। करि सलाम सुरतान॥
हम बंदे हाजुर निजरि। दै हांसीपुर थान॥ छं० ॥ ८१॥
कवित्त॥ सत्त बेर पाहरी। तेग बंधी जु अप्प कर॥
सब बल्लों सामंत। बौंटि षुरसान देउ धर॥
बान साहि साहाब। बीय सन मज्जिय अप्पिय॥
षां षुरसान ततार। षान विय सरद सु धप्पिय॥

---

(१) ए. को.-भरत।

चतुरंग अनीं हिंदू दिसा। बर गोरी सज्जिय सुबर ॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं० ॥ ८२ ॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा ॥ सिंधु मुक्कि गए दूत बर। तजि गोरी सुरतान ॥
कै बिधि पवर्त चंपई। अवनी उनमी भान ॥ छं० ॥ ८३ ॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे। षान षुरसान ततारी ॥
हसम हयगय सूर। दुसह दुज्जन मक्कारी ॥
दल बद्दल सु विहान। सूर पच्छिम दिसि उट्ठे ॥
लज संका गल बंधि। सिंघ मद नद्द सु छट्टे ॥
दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह। सजिय सेन संमुह धवै ॥
धर दहन बीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै ॥ छं० ॥ ८४ ॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

चोटक ॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। दिगपाल चमक्कि निसान धुनी ॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै। जनु भांवरि भान सुमेर लसै ॥
छं० ॥ ८५ ॥

दिसि रत्त रषत्त उठंत बरं। मनों बद्दर भद्दव के दुसरं ॥
गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी ॥
छं० ॥ ८६ ॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनों जमकें जमजोति जिसा ॥
षल की षल संकर अंदनता। सुमनों सुर दादर के जमिता ॥
छं० ॥ ८७ ॥

रत रत्त मयूष इला चमकै। मनु इंदवधू नभ तें दमकै ॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। बढ़ि आज अवाज सुराज रसं ॥
छं० ॥ ८८ ॥

जिनके गुन वीर सुमंत चवै । तिनके बल देवन तत्त भ्रमै ॥
जमसे दरसे जम ते गरुअं । सुरतान तिपाम रहे धुरयं ॥छं०॥८८॥
घुरमानय पानति अग्ग अनी । तिनके बर पासन राज यनी ॥
ढलकें ढल ढाल ढलक्कि लता । तिर साइर काइर तं कलिता ॥
छं० ॥ ९० ॥
अब कै न्रप गोरिय साहि बरं । सुमनों घन भूमि उतार उरं ॥
चढ़ि चल्लिय उग्गि कला दुसरी । न्रिप राज नरिंद सु जुद्ध हरी ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सब सेन गरिट्ठ इतौ बलयं । नृप राजन राजन सो कलयं ॥
रन मुच्छ उट्ठें वर कंक लसी । दिसि बक विराजत पच्छ ससी॥
छं० ॥ ९२ ॥
इतने गुन चार चरंत करं । उतरे जमरोज नरिंद घरं ॥
जम रोज तजै ग्रह सिंह बरं । चहुआन सुनी रन राज उरं ॥
छं० ॥ ९३ ॥

तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना ।

कवित्त ॥ कूंच कूंच उप्परे । राज अग्या नन मानै ॥
सुबर जूह सुरतान । सैन चावहिसि बानै ॥
उगन हार ज्यों प्रात । लेन उग्यौ बर गोरी ॥
तिमरलिंग जुलिक्कन्न । राज रजक्कन्न सु जोरी ॥
धनि धंनि धंनि गोरी सु बर । बलभग्गा भग्गौ न बल ॥
आसीस भंजि ढिल्ली पुरां । नब लग्गों मेवात घल ॥ छं० ॥ ९४ ॥

दूहा ॥ जानि सकल गोरी सुबर । गरुअ मत्ति तत्तार ॥
ते भारथ्थ सु इत्त पति । पत्ति ना लभ्यौ पार ॥ छं० ॥ ९५ ॥
षां तत्तार सुरतान बर । नर नाइक सुरतान ॥
दस कोसे आसौ हुतें । आय सपत्ते थान ॥ छं० ॥ ९६ ॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पड़ाव डालना ।

कवित्त ॥ आय सपत्ते थान । बीर आसी गिरद करि ॥
सरद काल ससि मित्त । परी पारस सुमंत धर ॥

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कस धारिय॥
चावहिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रुक्कि सज्यौ साहस बली। सेन सजत लग्गी घरी।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूली सुरी॥ छं० ॥ ९७ ॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चक्यौ षान तत्तार। सोर इल्लें द्रिगपालं॥
घुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों अषाढ़ रति भान। धुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयस्स कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यों पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥९८॥

मुस्लमानी जातियों का वर्णन।

षां घुरसान ततार। बीय तत्तार पंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इलचि घूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बौर भट्टी मेदानी॥
चौगत्ता चि मनोर। पीरआदा लोहानी॥
अन्नेक जात जानैति कुल। विरह नेज अमि ग्रहि करद॥
तुरकाम बीच बल्लोच बर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार घुरसान॥
वे रज गुर सम्हे सजिग। मचिग जुद्ध विरुझान॥ छं० ॥ १०० ॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार रुस्तम। वाम दष्षिन पष पंषी॥
षां निसुरत्ति पहार। उभै सेना पग खष्षी॥
षान षान घुरसान। चंच चछु रचि कसानी॥
कंगुरेस गष्परह। जंघ मंडे दल भानी॥
षिलची घुरेस भट्टी विहर। पुंछ सु इन पच्छह सुबर॥
महनंग अंग मारुफ षां। छच सीस धारिय सुभर॥ छं० ॥ १०१ ॥

युद्ध वर्णन।

हनूफाल ॥ परिधाय सूर प्रकार। पांवार वज्र सु भार ॥
कढ़ि षोलि षग्ग विहथ्थ। भारथ्थ ज्यों सुनि पथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षग षगन वाहै पंति। मनों बाज सेन कि पंति ॥
भारथ्थ कथ्थै जोति। असि अंग विद्धि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बजि गुरज बीर प्रहार। सँग देहि चौसठि तार ॥
दुहुं पास अंत रुरंत। गिध गिधी गिद्ध गहंत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
तर बेलि चढ़ि म्रनाल। मनु गहिय संस सिवाल ॥
तुटि मुंड तुंड सुभट्ट। मनु भग्गरं रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
रुधि छच्छ धर बर रुंड। पावक्क झर उठि कुंड ॥
कहि लेहु लेहु सु सूर। भारथ्थ बित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
षग झूर उट्ठिक बार। झर गिद्धि सी पति पार ॥
परिरंभ रंभ स आइ। तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
मुकि मुक्कि माननि जाइ। फिरि पियन दिष्पिन आइ ॥
मिस हारि रंभ स अग्गि। इन सब मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
किं अगनि दझ्झै ताइ। तन धार धार सुलाइ ॥
बर बीर रोस सुगत्ति। तहां सोष इष्पि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दल सुभर अल्हन मझ्झि। जुरिभोम कन्ह अलुझ्झि ॥
उच्छरि अरी अरि भीर। चानूर मुष्टक बीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
घरि पंच भिरि भारथ्थ। दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत। बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
नंषि कोट गढ़ ओट। कोट किप्पाट ढहाए ॥
सत छुट्यौ सामंत। राम बुल्यौ रघुवंसी ॥
रे अभंग सामंत। साहि बंधों बल गंसी ॥
बिना नृपति जो बंध। कित्ति चावहिसि चल्लै ॥
सार धार तन षंडि। बीर भारथ्थ न डुल्लै ॥

[1]नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गरुअ ग्रब्ब षंडोति षग ॥
उच्चरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। पग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेन भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर मारू मरद्द। सरद तेज ससि मुष घुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां धर डुल्यौ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना ॥

भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि आहुट्टि लुथ्थि पर ॥
सघन घाइ आहत्त। भेर तत्तार होइ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत दुल्यौ न दीन दुहु ॥
उतरि मेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
बहु षग्ग सूर सामंत रन। झोरी घान घुरेस पर ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्टे विहर ॥ छं० ॥ ११४ ॥
समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन [2]विच्छुरहि। रुद्द भूमिअ सु बीर बहि ॥
निसचर वीर [3]उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद नद्द नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निसा बर मुद्दरी। बर हर हर बज्जे ससुर ॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। सुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह लोहान महा भर। रा बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर ॥ छं० ॥ ११६ ॥

---

(१) ए.-मन। (२) ए.-विछुर नहिं। (३) ए.-उभारी।

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम ।

कवित्त ॥ बर पीचो अचलेस । गरुअ गोयंद महनसी ॥
उद्दिग बाह पगार । नरा नरसिंघ समरसी ॥
उभै बंध मोरीय । राव रानिंग गिरेसं ॥
देव क्रन्न माधुली । जुद्ध पारथ्थ बिसेसं ॥
सलषान भीम पुंडीर भर । जैत पवार सु वग्गरी ॥
चामंड राइ कनकू सुभर । रघुबंसी सिर पघ्घरी ॥छं०॥११७॥

दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना ।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले । प्रात घाइ घरियार ॥
रास लगे हिंदू तुरक । मनुं बज्जत कठतार ॥ छं० ॥ ११८ ॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना ।

भुजंगप्रयात ॥ असी अस्सि सस्त्रं बधी पान बल्लं ।
सु षग्गं पिती पान सो बीर चल्लं ॥
चवै चल्लि चारं सबै रंग बीरं ।
तजी गाम बारं चढ़ी धार धीरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥

अए अस्स अस्सं उपंमा प्रमानं ॥
मनो षेत षड्डै किसानं रिसानं ॥
मिलें सूर धारं दलं मेल सानं ॥
परी जानि बुंदं समुद्रेन पानं ॥ छं० ॥ १२० ॥

तजे कोट घानं सबै सूर घेरी ॥
मनों भाव रंभान सुम्मेर फेरी ॥
परें षग्ग जहीं उजत्तीत सारी ॥
मनों देवलं बज्जि कल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥

घयं भेदि घायं अघायंत रासी ॥
निकस्सी परै अद्ध सा सूर कासी ॥
कटे बंध कावंध सो बधं पारी ॥

मनो बद्दि विभ्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भज्जि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों वामना रूप भै भीम भारी ॥
रूधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥
तिनंकी उपंम्मा कबीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।
जलं जावकं सोभ पत्तार पारी ॥
हयं छिंछ उट्ठी रुधी छिंछ तारी ।
हथं वक्क जरद्द दूअद्द पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥
तिनंकी उपम्मा कबी तं कहाई ।
जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥
ग्रही केस उड्ढे उतंमंग पंजी ।
तिनंकी उपम्मा कवीचंद अष्पी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं ।
चली नभ्भ तें चंदनं सुद्धि धारं ॥
भगी घायन भूमि भा प्रान पारं ।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
बजी घाय अघ्घाइनं ग्रीव पानं ।
फिरें केत रक्की जलं मभ्भिक्ष मानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बै दलं रुद्धि जस्सी ।
मनो दीपतो हिंदुनं इद्द कस्सी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
षटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बस्सी ।
फिरी फौज तत्तार की घाइ गस्सी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या ।

कवित्त ॥ अद्ध सेन अध परिग । परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग । पयद्द को गनै असेकं ॥
दसत दून बानेत । घाय झोरी करि खिन्ने ॥
पंच पेंड़ पंचास । सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

पछ पुंछ षान आलील तब । अति आतुर असिवर षरिय ॥
भग्गौ न मीर मो भीर सुनि । अब भंजो हिंदू रारिय ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना ।

सुनि सामंत निसान । षान अलील उभं भरि ॥
मनंह अग्गि घन वृत्त । आय डंडूर समंधरि ॥
हुंगोरी धर कोट । राज [1]अड्डो चहआनी ॥
मो उभ्भै कुन सूर । भोमि विलसै सुरतानी ॥
इह कहिरु सेन अग्गें धरिय । जाय सूर मुष षग्गयौ ॥
तिन सार मार सामंत दल । पंच डोरि पच्छो गल्यौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना ।

दूहा ॥ तमकि सूर सामंत तब । झुकि लग्गे फिरि षग्ग ॥
लपट झपट ऐसी बहै । ज्यों [2]जज्जर बन अग्गि ॥ छं० ॥ १३१ ॥

लड़ाई का वाक्‌चित्र वर्णन ।

विराज ॥ छुटे अग्गिबाजं, मनों नभ्भ गाजं । चढ़े सूर सूरं, नमे रंक नूरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

बहै बान भारी, मनों टिड्ड चारी । दुती सोभ आनं, कबीका बषानं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

दिसायं नृमल्लं, मनो नाग इल्लं । परै वप्प घायं, मनों वज्ज लायं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

करै कूह कैकं, हुअं एकमेकं । वहै षग्ग धारी, अभूतं सरारी ॥
छं० ॥ १३५ ॥

होवै षंड षंडं, धरं रुंड मुंडं । बकै मार मारं, मनों प्रेत चारं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जुटै सूर इथ्थं, मनों मल्ल बथ्थं । परै भूमि सारं, मनों मत्तवारं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

---

(१) को.-कृ.-अड्डी । (२) ए.-वज्जर ।

अए कान्ह षेतं, बधे बंध नेतं। छुटी अंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥
षगे मग्ग चाहं, अरी वत्त दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट जानं॥
छं० ॥ १३९ ॥
रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। लोहानों अजानं, दुढ़े षान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥
वहै संग भारी, निकस्से करारी। तिनं घाव सहं, करै कुंभ नहं॥
छं० ॥ १४१ ॥
जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥
दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं। पर्‍यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥
भगे साहि ठट्ठं, गए दस्स वट्टं। भद्री षित्ति ताजं, दियं जित्ति बाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भद्दय जित्ति सामंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसल। षित्ति रष्पी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि बर गानं॥
जै जया सद्द आयास हुअ। घाव सूर झोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छ० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५१ ॥

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयगय लुट्टि । लुट्टि पष्पर रषतानं ॥
तत्तारी घुरमान । हाम भग्गौ सुरतानं ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाथ करि पट्टि सु हथ्थं ॥
पुच्छि पबरि बर दूत । कहिय भारथ बत कथ्थं ॥
रगतैत नेन साहाब सजि । पैगंबर महमंद भजि ॥
फिरि सज्यो सेन भसुचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअप्परी ॥ सज्जिय सत मंतं सुरतानं । दस दिसि धर दिन्ने फुरमानं ॥
रुम्म हरेव परेव पराररिय । भर भंभर भप्पर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकंद कसकंद समानं । बलक बलोच तकी मकरानं ॥
कंदल वास अधम्म इलासं । रोही सोह उजब्बक रासं ॥ छं० ॥ ३ ॥
षूनकार ऐराक षंधारं । साहबदौन मिले दल सारं ॥
धुम्मर वुन्न सिरै तुछ रोमं । जाति अनंत गिनै वुन भोमं ॥छं०॥४॥
घोरमुहा केइ सुप्पर क्रंनं । चष्प करूर मुषं रत ब्रंनं ॥
इन सर कंध विवाह अजानं । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमानं ॥
छं० ॥ ५ ॥

जानै धार अनी बथ मल्लं । जानि गिरब्बर सिप्पर चल्लं ॥
तानै सिनि गिनि जोर विभारं । गोंन चढ़ै जिन टंक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

बंधे दो दो तोन जुआनं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं ॥
सावद बेधिय लाघव सारं। पंष इनै षह दिष्ट प्रहारं ॥ छं० ॥ ७ ॥
टारैं अनी अनी साइक्कं। मुंठि अभूल रमै चित किक्कं ॥
मंद अहार सबै फल आसं। पारसि मभ्भ विवानि प्रहासं ॥छं०॥८॥
करै रगब्ब सरब्बर वानं। जानि कि वच्छ विहंग बुलानं ॥
बंधिय जूसन सारषि गातं। जानि जुरी नव नाथ जमातं ॥
छं० ॥ ९ ॥
सजि पष्पर लष्पर है साजं। पंषधरी बर उड्डन काजं ॥
गज घुंमर धज नेजर बानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं ॥छं०॥१०॥
करिय टमंक चळ्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद अजादं ॥
तर झंगर गिरि पड्डर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं ॥छं०॥११॥
धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं ॥
है गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि हस्सिय सुविहानं ॥
छं० ॥ १२ ॥

वरन वरन की व्यूहवद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त ॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूहं रचि धाइय ॥
अष्ट सेन रचि अष्ट। ईष्ट करि सेन बनाइय ॥
एक लष्प सारद्ध। सुभर असवारति साजं ॥
दंती पंति विसाल। अग्ग सज्जे अगिबाजं ॥
पावस्स थान मानों प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय ॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय ॥
छं० ॥ १३ ॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा ॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चारु ॥
कै झुझ्झहु बुझ्झह सपरि। कै निकरौ भ्रम्म दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामंतों का परस्पर सलाह और बादविवाद करना।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत। बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
बड़गुज्जर रा राम। राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरंग सो सीस। बीर लोकिग असमानं ॥
कित्ति मुकति भर सुभर। बीर बीरं बिरुझानं ॥
कूरंभ राव पज्जून दे। गयौ इरष सामंत बर ॥
तम पषै मरन दीजै नहीं। मरहु तुम्ह जिन पर सु धर ॥छं०॥१५॥
सुनिय मंत कूरंभ। मतौ जानहि सु मरन बर ॥
जीवन मत जानंत। सामभ्रमजाइ भ्रम्म नर ॥
इम बीरा रस धज्ज। जोग जीतन सिर बंधी ॥
इम अभंज अरि भंज। मंत जानै जस संधी ॥
रुक्कयौ हंस पंजर सु पष। सो पंजर भंजहिति भिर ॥
जानियै जगत तनु तिनुक वर। अरि बंधन बंधेति फिरि ॥छं०॥१६॥
सुबर बीर सामंत। मज्ज लग्गे बिरुझानं ॥
रा चामंड जैतसी। राम बड़गुज्जर दानं ॥
उदिगबाह पग्गार। कनक कूरंभ पजूनं ॥
षीची रा परसंग। चंद पुंडीर स कन्हं ॥
महनंग मेर मोरी मनह। दोऊ बीर बग्गरि सलष ॥
देवक्रन कुँअर अल्हन सुबर। लषिय सोभ भुज बर विलष ॥
छं० ॥ १७ ॥

सामंतों का भगवती का ध्यान करना।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत सह। उदिग बाह पग्गार ॥
मात बीर अस्तुति करै। सत्त सु मंगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय। अंब कि बंधै पालि ॥
तेमन संत पयान किय। इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हांसी के किले में स्थित सामंतों के नाम और उनका वर्णन।

कवित्त ॥ निडुर बर हरसिंघ। बीर भोंहा भर रूपं ॥
बरसिंहरु हरसिंघ। गरुअ गोयंद अनूपं ॥
राज गुरू रा राम। बली बंभन रस बीरं ॥
दाहिमो नरसिंघ। गौर सग्गर रनधीरं ॥
चालुक्क बीर सारंगदे। दई देव दुज्जन दहन ॥
सुलतान सेन संमुह भिलै। गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥

चोपाई ॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कोनी। बीय खूर सम्हैं अपु लीनी ॥
चक्की चवसठि जोगिनिकारी। दिसि दच्छिन उर सम्हौ भारी ॥
छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त ॥ उदिग गयौ निक्करै। सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
समर खूर निक्करै। सु फुनि अलँगे उत्तरयौ ॥
चावंड रा निक्करे। सुहड सांवला सहित्तौ ॥
गोयँद रा गहिलौत। सु फुनि निक्करै विगुत्तौ ॥
साषुलौ खूर भोंहा सुतन। कल कथ्था भारथ करै ॥
इत्तने राव गए निक्करे। देवराव क्यों निक्करै ॥ छं० ॥ २२ ॥

ए सामंत अभंग। मेर धुअ मंडल जामं ॥
सेस सीस रवि चंद। सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
एउ टरें कोउ बेर। जोग जुग अंतर आयौ ॥
अटल एक सामंत। जुद्ध जोगा रस पायौ ॥
दैवान देव गति अलंघ है। नन गुमान कोइ कर सकै ॥
एकैक मत्त चूकै सबै। जित्ति कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक्क म्रग हत्यौ। सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
हनुअ बत्त नारद। भरथ चुक्कवि सर मुक्क्यौ ॥

विक्रम जीव जतन्न । कग्ग आमिष मुष मंडिय ॥
इंद्र अहल्ला काज । सहस्र भग काया मंडिय ॥
नल राय दमंती कारनें । और नाम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । मतौ एक चुक्कौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय बग्गरी का वचन ।

साहि मलिक साहाब । दीन जिहि द्वारैं बद्दिय ॥
जेन द्वार निक्करौ । जेन निक्करैं न कद्दिय ॥
सिर तुरक्क झर पड़िह । सहित धर जाह सरीरह ॥
हुं सभीछ पहचेंन । तनों निकलंक सरीरह ॥
सांघुलौ सूर सामित्त छल । देवराव कटि बटि मरै ॥
ता नथ्थि पुत्त बापह तनौ । ध्रम्म द्वार होइ निक्करै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का बग्गरीराव के बचनों का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयंद । सत्त सामंतन छुट्यौ ॥
बर पौचौ अचलस । धार धारह तन तुट्यौ ॥
सत छुट्यौ उद्दिग्ग । मरन डर डर्‌यौ अबाद्दिय ॥
सत छुट्टत नरसिंघ । लंग उत्तरि पति नाद्दिय ॥
मुक्या न सत्त कमधज्ज ने । नाम बीर कल्हन नृपति ॥
बरि कनकराव परसंग भर । दीपंतन रवि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसी गढ़ पर आक्रमण करना ।

मुक्कत सत तत्तार । तेग बंधी सत बंध्यौ ॥
मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह संध्यौ ॥
आनि साहि साहाब । नैर हांसीपुर चल्यौ ॥
सुन्या सूर सामंत । कोन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छौ सुमंति आमत्त बर । बार बार बर बंधियै ॥
असि पच्छ कट्टि बंधौ सुबर । पढ़ि कुरान क्रत संधियै ॥ छं० ॥ २७ ॥

*चन्दायन ॥ भषे पडुली मंस सस्त्र बल मुक्कई। काजी क्रत्य कुरान भ्रम्म नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ मुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे सीस गयनंग। रह्यौ रुप्पे रन मांडी ॥
सवल सेन सुरतान। परिय पारस परछांडी ॥
हक्क धक्क किलकार। करै आसुर असमानं ॥
गोर नार जंबूर। बान रुक्के रह भानं ॥
पावें न मभ्भ पंषी पसर। विसर नह बज्जे सबल ॥
सांपुली सुभर जुद्धौ समर। उदधि मभ्भ लग्गौ अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिघ संग तत्तार ॥
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं बार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ पां ततार गढ़ घेरि। ढोह बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत। झूझ बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन सूरन पाइय ॥
गयौ बीर पाहार। नाम किन सूरन साइय ॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ सह। गोपिन रषि अपुबल तिया ॥
हथ धनुष आइ बंनर बली। सीय कज्ज अपुसह किया ॥छं०॥३१॥

अस्सपूर तत्तार। झंझ बज्जी मग सुद्धी ॥
ईकल्लो देव क्रंन। बान अर्जुन मग बुद्धी ॥
और सबै सामंत। माहि बिस्सह आलुद्धी ॥
मरन भार उल्लिग। विहार बीरा रस बंधी ॥
सांघलौ सूर सारंगदे। तिन बंधी लज्जी जगत ॥
उचरै सूर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

*मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है।

देवराव धग्गरी की बीरता।

अनल मद्धि देवराज। परे पारस दधि गोरी॥
लहरि सेन बाजंत। धार धारा झकझोरी॥
बज्जि धार विभ्भार। मार मारह मुष जंपहि॥
सूर मत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि॥
लगि सार धार रुधि छंछ घुटि। सहस सूर उट्ठहि सरन॥
आवट्टि सेन अद्धों सु अध। अद्ध अद्ध लग्गौ भिरन॥ छं० ॥ ३३ ॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी॥ परे अद्ध अद्धं सु अद्धं अधानं। भिरै अद्ध अद्धं रहै साह थानं॥
अगे दंत पंती चले साह सूरं। प्रलै काल मानो हलै दद्धि पूरं॥
छं० ॥ ३४ ॥

उतै पारसी मीर बोलै करारं। इतै सीस हक्कै धरं मार मारं॥
बहै सूर सूरं लगै धार धारं। मनों झालरी बज्जि देवं सुधारं॥
छं० ॥ ३५ ॥

गहैं दंत दंती उघारंत सूरं। मनों भीस कट्टै गिरं कंद मूरं॥
परै पीलवानं निसानं सु पीलं। हन्यौ वज्जि सैलं सवष्पं कपीलं॥
छं० ॥ ३६ ॥

बहै षग्ग धारं धरंगे निनारं। मनों चक्क षिंडं कुलालं उतारं॥
उठे स्रोन बिंदं रतं धार लग्गी मनों लग्गि तिंदू प्रलै काल अग्गी॥
छं० ॥ ३७ ॥

बहै रत्त धारं अपारं सु दीसं। मनों भद्द मभ्भै बहै नद्दि ईसं॥
बिहूं बाह बाहै लगै सूर सूरं। मनों प्रीति हेतं मिले आय दूरं॥
छं० ॥ ३८ ॥

बहैं जम्मदट्ठं बहै पारवारं। मनों मोष मग्गं किवारं उघारं॥
परै लुथ्थि पथ्थं उलथ्थंति पानं। मनो मीन कुद्दै जलं तुच्छ मानं॥
छं० ॥ ३९ ॥

रजै ईस सीसं करै रुंडमालं। रमै भूत प्रेतं किलक्कंत नारं॥

ग्रहै अंत गिद्धी चढ़ै गेन मग्गं। मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द सद्दं विहंगं सुनानं। रजै ईस मानं सुरं सत्त पानं॥
भरै षेचरी पत्र चौसट्ठि चारी। भ्रवै भोमि ओनं पलं पल्लहारी॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं। परे सूर सेनं कहै कोन पारं॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना।

दूहा॥ देवकन्न सुरलोक बसि। हय नर धर गज भानि॥
नाग असुर सुर नर सुरभ। बढ़ि भारथ्थ बषान॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना।

कवित्त॥ जौति समर देवकन। धार पति चढ्ढिय धारं॥
निगम ध्रम्म अजमेघ। द्रभ्भ थल दुज्ज अचारं॥
रथ रंभन भर थक्कि। रबि थक्यौ रथ लोचन॥
बंध इंद्र सर बंध। मंदु बारा रहि सोचत॥
शिव बंध सथ्थ रथ जुर चढ़ि। भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर॥
इह करिन काइ करिहै नहीं। करौ सु को रजपूत धर॥छं०॥४४॥

देव कन्न बर बीर। धीर भर भीर अहीरं॥
चौच्यालीस प्रमाण। तुट्टि तन धार सु धीरं॥
थुति सदेव उच्चार। करै अस्तुति दै तारी॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि। भिरन कट्टी कट्टारी॥
अरि मुष्प गयौ चढ़ि चिंत अरि। तनु धारा हर बिंटयौ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन। करि कुट्टा जिम कुट्टयौ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।

भुजंगी॥ पर्‍यौ देव कन्नं सु भूनिंग जायं। जिनें वास लोकं सयं बंभ पायं॥
पर्‍यौ बीर मारू नवं काट रायं। जिनें जूह लग्गे भुजं काम पायं॥
छं० ॥ ४६ ॥

पऱ्यौ रानि गिरि राव बीरं पताई। जिने षान जहाँ दृहायौ षताई॥
पऱ्यौ बीर मोरी उभै बंध सथ्थं। भजे जूह संषं घली हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ ४७ ॥
पऱ्यौ पंच भाई सपंचं अभंगं। ढहे जूह बैरी लगै जूह अंगं॥
पऱ्यौ सांषुला सूर नारेन इंदं। जिन जाम षेद्यौ करी दूरि दंदं॥
छं० ॥ ४८ ॥
परे राव कूरंभ पञ्जून जायं। जिने लोक में लोक संलोक पायं॥
पऱ्यौ पंच पंचायनं पुंज राजं। जिने चंपि वैरी कुलिंगंति बाजं॥
छं० ॥ ४९ ॥
पऱ्यौ बग्गरी रूप नर रूप नाहं। भगी जानि मोरी तुटी जू सनाहं॥
पऱ्यौ बैर बाराह वैरी पचारं। जिने सार झारं दुझारं हकारं॥
छं० ॥ ५० ॥
पऱ्यौ गुज्जरीराव रघुबंसरायं। हयं अस्ति सस्त्रं किनं काल पायं॥
पऱ्यौ षग्ग षिची सु मंची नरिंदं। मरंतं सजी पौमरं किन्ति कंदं॥
छं० ॥ ५१ ॥
परे इम्मने सूर भारथ्थ वित्ते। डरे सूर ते वार किन मुंकि पत्ते॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामंतों का किला न छोड़ना।

दूहा॥ रा देवंग रहंत रन। सहस एक बर बीर॥
तामे एक कमंध षिल्लि। तिन संघारिग मीर॥ छं० ॥ ५३ ॥
बाने विरद बको वहै। बंको षान अलीख॥
दस सहस्र सम मीर बर। तिन लीनो गढ़ कीख॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मद्धि रजपूत सौ। तिन सज्जी दरबार॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना।

हांसीपुर प्रथिराज पै। चंद सुपन बरदाइ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुक्कारिव न्रप राइ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन।

हांसीपुर उच्चार बर। बीट सेन सुलितान॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं। करि उप्पर चहुआन॥ छं० ॥५७॥

कवित्त॥ उभै दीह गढ़ ओट। सस्त्र बज्जै सु बान अग॥
अग्गबान कम्मान। सार सिंधुर अभंग जग॥
ता पच्छै सामंत। मंत कौनौ परमानं॥
नंषि कोट गढ़ ओट। सस्त्र लग्गे असमानं॥
न्रिप राज अग्यौ आसी सुन्यौ। सुपनंतर आसी कहिय॥
ढिल्ली न्रपत्ति ढीली धरा। ढीली हूं अग्गें रहिय॥ छं० ॥ ५८॥

हांसी पुच्छै पहुमि। राय तुं काइन भग्गिय॥
मो बभौष पम्मारि। तेन भू दंड विलग्गिय॥
तिन ए रस उच्चरै। चिया छल अ्रब्ब गमिज्जै॥
जै सिर पड़ै तो जाहु। कज्ज साहूं छल किज्जै॥
सहसा परि झुझ्झै मांषुलौ। एह अचिज्ज पिष्पन रहिय॥
देवरावं सूर षंडे परिग। ताम तुरक्के संग्रहिय॥ छं० ॥ ५९॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना।

दूहा॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने। हांसी भारथ वित्त॥
भ्रम दुवारि निक्करि सुभर। देवराव परि षित्त॥ छं० ॥ ६०॥
इह भविष्य चिंतै न्रपति। भयो करुना रस चित्त॥
रुद्र बीर अरु हास रस। ए अपुब्ब कथ वित्त॥ छं० ॥ ६१॥

कवित्त॥ सुनत राज प्रथिराज। बोलि कैमास महाभार॥
तम मंची मंचंग। मंच रष्पन सामंत बर॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ। नट्ठि रधि वासह नट्ठी॥
सोच सु नट्ठि सनेह। नट्ठ गुन विद्य अनुट्ठी॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह। मंत उप्पजै सो करौ॥
कैमास मंत मंती सुमत। मति उच्चारन विच्चरौ॥ छं० ॥ ६२॥

दूहा ॥ मंचि मंत कैमास कहि । राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत । कोइ देवान प्रकार ॥ छं ॥ ६३ ॥ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना।

कवित्त ॥ कहै मंचि कैमास । पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस । बाहि बिन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज । और मिलिहै चिचंगी ॥
जनु प्रजलंती अग्गि । मद्धि घ्रत संचि तरंगी ॥
इस मंचि मंच गिर राज दिसि । दिय पची संमर विगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहिय । दिसि हांसी आवन सु गति॥छं०॥६४॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना ।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर थ्यौ । पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन । लषि घर विरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना।

कवित्त ॥ मुक्कि राज दुज दोइ । बेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि । मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी । राव बड़गुज्जर कन्हं ॥
षीची राव प्रसंग । चंद पुंडीर महन्हं ॥
पज्जून कनक उद्दग पगर । दोऊ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ क्रन्न कुंअर अल्हन सुबर । मिले आय राजान भर ॥छं०॥६६॥
मिलिग आय गोयंद । नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उद्दिग्ग । विरदपागार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम । समर सामल अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज । दिये आदर बर भारिय ॥
इम कज्ज लज्ज तुम सीस पर । एह बत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति त्रिम्मान मति । भइय बत्त चित्त न धरहु ॥छं०॥६७॥

दूहा ॥ कहिय सूर राजन सुनहु । तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै । तौ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझा बुझा कर सांत्वना देना।

कवित्त ॥ इक्क वार सुग्रीव । चिया तारा नन रष्पिय ॥
इक्क वार पारथ्थ । चीर षंचत चष दिष्पिय ॥
इक्क वार श्रियपत्ति । जमन अग्गौं धर छंडिय ॥
इक्क वार सुत पंड । भोमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल । कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान पान मोषन ग्रहन । महनरंभ बंछहु मरन ॥छं०॥६९॥
बोलि राज सामंत । कहिय तुम जुद्धनि अज्जर ॥
चंद्रसेन पुंडीर । राइ रामह बड़गुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह । बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ । बोलि बरनं बर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम । लोहानौ आजांन बर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि नृपति । उदधि जानि हल्लिय गहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना।

कोलाहल कलकलिय । रत्त द्रिग बयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत । मंत नीसान सह दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध । राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत । होइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि । करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि । मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि।

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढ़ि। अति आतुर बर बीर ॥
बर प्रधान षावास बर। इह सह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज। मानहुँ कि राम कपि सीय काज॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि। मानो कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥

रगतैत नैन भ्रकुटी कराल। मानो कि ईस चयनेच झाल ॥
बंकुरिय मुंछ लगि भौंह आनि। मानो कि चंद बिय किरन बानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥

चिहफेर सूर विच चाहुआन। मानो निषच परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अँग अंग थान। मानो कि मुकुर प्रतिब्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥

करि करी अग्ग रज रजत दंत। मानो कि जलद षँग बग्ग पंति ॥
उभ्भारि सुंड गज लैहि बौर। मानो कि ब्यंब अहि मरुत मौर ॥
छं० ॥ ७६ ॥

मद झरहि पाट बरषंत दान। मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मचत कीच इय कलत लार। मानो कि भद्र कद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥

धर स्याम सेत रत पीतवंत। मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चमकंति अनिय दामिनि समान। बाजंत वज्ज घनघोर बान ॥
छं० ॥ ७८ ॥

उच्चरहि वृंद कवि मोर सोर। पप्पीह चीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घंट सादुरनि नद्द। मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥

दिसि विदिसि धुंध मुंदियग भानि। तिथ्थंम इंद्र बिय इंद्र जानि ॥
बरषंत धार चढ़ि व्योम मंत। तिन उड़िग रेन विच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

तिन कलहि पंषि पावै न ठौर। उप्पमा कौन जंपौस और॥
कलमलिय नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार॥
छं०॥ ८१॥

रथ घरहि खूर अप अप्प मान। मानो छयल्ल कुलटा मिलान॥
सिर लग्गि व्योम हय घरहि राज। मानो कि कंपिय गिरि द्रोन काज॥
छं०॥ ८२॥

पत्तौ जु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान॥
छं०॥ ८३॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा॥ चल्यौ राज प्रथिराज बर। सुनि चिचंगी भीर॥
बर हांसी सामंत सह। बौटि थान बर बीर॥ छं०॥ ८४॥

कवित्त॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ॥
रन रत्तौ रन सु। भ्रम्म आधम्म विरत्तौ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ॥
कूंच कूंच उप्पार। दीह चौ पंच सु जत्तौ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत॥
आवाज बढ़ी तब मीर बर। सेन संभ्रं हांसी बिरत॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचते ही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पत्तीय। मेर लजपत्ति सु धारी॥
सबर सत्त जंपन सु। वीर किति सम बर चारी॥
ब्रह्म रूप जीति न सु। ब्रह्म आहुठ्ठ सपन्नौ॥
लष्यौ रूप तत्तार। रंक लभ्भै वित मन्नौ॥
लगि ऊक सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस॥
बर भिरन थान घुरसान दल। बल प्रमान षोलीति अस॥
छं०॥ ८६॥

डिट्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन॥
बंधि फवज्ज सुबीर। बीर उचरंत मंत मन॥
हरवल थान ततार। करै करवलति घुरेसी॥

तुंड समर लगि नहीं। आनि बंधी बल गंसी ॥
मुष रुक्क मेलि मारु महन। नाहर राव नरिंद तन ॥
सावंग समर दिसि दिसि षिनह। सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलोपन का वर्णन।

महन रंभ आरंभ। समर बंधीत समर बर ॥
अमर नाम बर अमर। मुंकि सामंत सलैभर
पुर हांसी बर पत्त। पूर दच्छिन दच्छिन बर ॥
मिले सूर कर वर करूर। बंधीति सिरी सर ॥
बंधि सनाह विलगे समर। करि भर घाइ अपुव्व भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय। वज्ज मेर बज्जे सुभर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चिचंग। बाज उप्पर बर नंषिय ॥
मनहु कंस सिर वज्र। चिल्ह उप्पर धर पंषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत। हथ्थ किरवान उभारिय ॥
मनहुँ चंद विय व्योम। परिग रारिय चमरारिय ॥
घरि च्यार धार धारह रुरिय। भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस क्रम। कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ दोऊ [1]रूर वहं, उडीरेन जहं। निसी जानि भहं, वहै वान सहं॥
छं० ॥ ९० ॥
सुकै गज्ज महं, वहै षग्ग जहं। सुभै रथ्थ हहं, नचै वीर बहं ॥
छं० ॥ ९१ ॥
बजै षग्ग सहं, घटा बज्जि भहं। घमंजाल घहं, प्रलै अग्गि नहं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को०-सूर।

चिमूली अनहं, बजै धाय रहं। जनौं घट्ट बहं, कहं जोग सहं ॥
छं० ॥ ९३ ॥
मगी मुत्ति हहं, षगं सोर षहं। उभं ताप उहं, कवीचंद चंदं ॥
छं० ॥ ९४ ॥
सुभै रथ्थ हथ्थं, ... । रसं रोस भानी, अमं सेन दानी ॥
छं० ॥ ९५ ॥
जकी जोग माया, चितं जोग पाया। ...., ... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

समरसी जी की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष। सिंघ छुट्टा पल काजं ॥
कै तुट्टा बयवाज। बीच कोलिंग बिराजै ॥
कै रस संका छुट्टि। हषभ दोइ छुट्टि विलुद्धा ॥
लज्ज रतन विषरंत। उभै रंकहु आलुद्धा ॥
बर सेन उररि निसुरत्ति षां। दइ दुवाह उप्पर परी ॥
चिचंगराव रावर समर। सुबर जुद्ध एतौ करी ॥ छं० ॥ ९७ ॥

समरसी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिलिग घाइ अघघाइ। समर धायौ जु समर बँध ॥
धार धार तन उघरि। गयौ सुर लोक रंभ कँध ॥
षठ सु पंच अरि ढाहि। पंच मिलि पंच प्रपत्ते ॥
दइ दुवाह रन अमर। अमर भौ बोलन जत्ते ॥
हर हार कंठ आनंद मध। सुनि सँग्राम दुभार बस ॥
दुअ हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों। रह्यो पिष्पि तं चिय नयन ॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम ॥ जु रुप्यौ रन रावल मंझ अनी। सु मनौं ससि मंडल भ्रू अधनी ॥

---

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दों एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

बजि षग्ग उनंगत षंग बजै। घरियारन के सुर मंझ लजै॥
छं० ॥ ९९ ॥
गज षग्ग उड्डंतह मुत्ति झरै। तिनकी उपमा कविचंद करै॥
मनि मै ग्रह रत्ति प्रनार चली। जल जावक नागिनि पौरि हली॥
छं० ॥ १०० ॥
कढ़ि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी। तिनकी उपमा कविचंद धरी॥
मुष से सहँते जल धार धसी। निकसी जुद्ध एक प्रबाह गसी॥
छं० ॥ १०१ ॥
छित रावर भारथ राज धनी। कहि भग्गिय षान ततार अनी॥
छं० ॥ १०२ ॥
अरिल्ल* ॥ षां ततार सुनि बेन नेन सोयं। लल्ले करी बर भग्गा जे भानं॥
ओटं जिन कोटह सुद्धर। लै दस्तिक कर चुंमि तुंड डड्ढी बड्ढी कर॥
षां षुरसान ततारं। भंजि भंजे सुर सुभ्भर॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना।

कवित्त ॥ बाज नंषि तत्तार। बाजि षुरतार बज्जि षग॥
पंच अग्ग सौ मीर। संग धाए पयान मग॥
जुद्ध कथ्थ कर हिंदु। तूल जिम बाय उड़ाइय॥
मेर लाज पज्जून। सत्त साइर वर धाइय॥
घरि एक झिंझ बज्जी सकल। बर उप्पर पावार करि॥
निठ्ठ करि षान तत्तार कढ़ि। हिंदुमेअ सहिये अपरि॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन।

पद्धरी ॥ बर लुथ्थ लुथ्थि आलुथि पलथ्थ। नचि प्रेत नाद वीरं ततथ्थि॥
नारद्द नद्द निस सुनि सभीर। सारद्द सिद्ध तिन तत्त बीर॥
छं० ॥ १०५ ॥
चौसठ्ठि घाइ सह सूर संचि। पंचं पचीस कावंध नंचि॥

---

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है। इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की वृत्ति के समान है। दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है। इस से मालूम होता है कि यहा के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषाश मात्र रह गया है।

बजि घाइ सद्द सद्दौन इद्द । सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द ॥
छं० ॥ १०६ ॥
सत पंच मुक्कि तरवार बूव । तत्तार गात अरवार छूव ॥
बँधि चाल चाल उच्चाल पाव । पगवाह विहथ्थन खूर लाव ॥
छं० ॥ १०७ ॥
तन बंधि संग सो लोह कट्टि । मानो कि समुह जल मीन चट्टि ॥
उठि छिंछ रकत तीरत्त भाइ । मानो पलास बन फुल्लि नाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥
बर बुक्किअ साहि कर वज्ज वाय । रुधि पियत [1]भीम सामन्न काय ॥
उतमंग हक्क धर नच्चि धाव । झम वद्दै पग्ग की विज्ज लाव ॥
छं० ॥ १०९ ॥
दूहा ॥ अनुध जुद्ध हिंदू तुरक । भय अनादि जमनूत ॥
दून तत्तार संमुष अनी । उतै समर अवधूत ॥ छं० ॥ ११० ॥
रसावला ॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी। पग्ग [2]झालं जढ़ी, लोह दूनो कढ़ी॥
छं० ॥ १११ ॥
दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। खथ्थि खुथ्थं बढ़ी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२ ॥
जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी । देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी ॥
छं० ॥ ११३ ॥
उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी । ईस देषै ननं, [3]पुत्तनं रंजनं ॥
छं० ॥ ११४ ॥
खूर कट्टै इसं, बान कट्टी जिसं । .... छं० ॥ ११५ ॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना ।

दूहा ॥ सोड़स इक पंचह सुभर । समर परिग संग्राम ॥
नव घट्टी अंतर परिग । सुत सोमेस सु ताम ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ मद्धि पहर विप्पहर । समर सामंत जुद्ध मिलि ॥

---

(१) ए.-भूमि । (२) ए.-जालं ।
(३) को. कृ.-पुत्तनं ।

नवनि नीच करि नीच । जुद्ध संग्राम सार झिलि ॥
विमुष न भौ परि बंध । जुद्ध सामंत सूर मिलि ॥
अनी एक करि मेर । धाइ अरि जुट्टि पग्ग घुलि ॥
पुरसान घान दल ठेलि बर । चक्कर सी चौरंग बजि ॥
थिर भए सूर रथ दिषत पर । कायर चलि जंगम प्रहजि ॥
छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी ॥ कढ़े लोह सूरं करूरंति तायं । चले सस्त्र हथ्थं न चालंत पायं ॥
मिली हंस हंसं चली अस्व कैसें । जनों नीधनी नार पिय अग्ग जैसें ॥
छं० ॥ ११८ ॥

ननं डोलि चित्तं मरंनंति सूरं । चिया कुंभ चितं चली हथ्थ जूरं ॥
प्रतंग्या प्रमानं समानं न सूरं । बुझै पंच पंचं ननं दीप दूरं ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्परं टूक सा टूक सथ्थ । कला चंद्र राहे उभै भूप तथ्थै ॥
कलै निक्कयो बार सन्नाह फुट्टै । तिनंकी उपम्मा कवीचंद जुट्टै ॥
छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लवं वृत्त जुट्टी । रयी राह भेदं दुहुं अंग फुट्टी ॥
लगे धार धारं दुधारं प्रहारं । बरं काइरं भास चित्तं विचारं ॥
छं० ॥ १२१ ॥

करं मीडि दूनों सिरं धुन्नि जत्तौ । मनों मष्पिका जाति पच्छै सुरत्तौ ॥
सुमिचं कपी जानि लंबालिजायं । उपंमा इनं की ननं भूलि पायं ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बजी झंझ लग्गे असम्मान सीसं । उठे पंच दह दून धावंत दीसं ॥
नहीं मानवे दानवे नाग लोयं । कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोयं ॥
छं० ॥ १२३ ॥

परे संमरं सूर षट्टंति पंचं । लगे धार धारं भए रंचरंचं ॥
सबै धाव सामंत सूरं प्रकारं । पर्‍यो बग्गरी रा चढ्यौ धार धारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए-अग्ग ।

भरं राज प्रथिराज पंचास पूंछं। गयौ राव चावंड रंछौरि अंचं ॥
॥ छं० १२५ ॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त ॥ पऱ्यौ अमर षावास। ग्रिद्ध संमुह उड्डावै ॥
बल घट्टै तन घट्टि। किर्त्ति घट्टी नर जावै ॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गी ॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गी ॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु ध्रम। गयौ मोह माया सु पथ ॥
जग इथ्थ राइ सुर लोक बसि। सखी जुग्ग भारथ्थ कथ ॥
छं० ॥ १२६ ॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि ॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर ॥
बर बरु करि झग्गरी। सौ कि रानी पुक्कारी ॥
धूप दीप साषा सु। पुहप दुट्ठह उच्छारी ॥
तन पवित्र ध्रम ध्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह ॥
अघ रोकि न्रपति जोवन्न वर। षग्ग मग्ग घुरसान लह ॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया ॥ जै किन्नौ रत्ती उमा। मुगत सुरत्ती पान ॥
चाहुआन बल बढ़त बर। बल घट्यौ सुरतान ॥
बल घट्यौ सुरतान। साहि भौ पूरन चंदं ॥
राज न्रपति बियचंद। बीर बीरं रस मंदं ॥
विधि विधान निरमान। पान दिष्षिय तिहि बतहय ॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतिजय ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा ॥ जै बढ़ी जै जै सकल। पौलि तन धरि ढाल ॥
बल गौरी बल संग्रहै। ज्यों चंपै बर काल ॥ छं० ॥ १२९ ॥

ज्यों चंपै बर काल गुन। हर चंपै विष कंद॥
रवि चंपै किरनावली। ज्यों चंपैत नरिंद॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन।

अरिल्ल॥ बर संभरि चहुआन निवासं। उत चिचंग नरिंदह सासं॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी। मनो चंद बद्दर बिच सारी॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा॥ राजत बीर शरीर गति। छिति मिच्छिति बर राज॥
मनहु भूप भूआल कौ। बर बसंत रितराज॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ बर बसंत बर साज। सूर लग्गा चावहिसि॥
रत्त रुधिर समरंग। छित्त राजै अवत्त बसि॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान। चंद बध्यौ उड़गन बर॥
निस नछित्र ज्यों प्रात। सेन दिष्यौ जुमंच बर॥
नर गिरहि भिरहि उट्ठहि लरत। घट घट्टंति न सुभट घट॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ। दाहिम्मै चावंड थट॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा॥ सु चिय हार सम परि सुथिर। यों सुबरे संमेत॥
सार धार बर देषियै। सार प्रहारन प्रेत॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना।

कवित्त॥ गुरज उभ्भ तिय तेग। तोन बिय सत्त सुरगं॥
छह कमान सर सहस। लोह सौ बीर अभंगं॥
ए तुट्टै बर अंग। तोन थक्का सुर थानं॥
अंग अंग निरमलौ। कित्ति सारथी सु आनं॥
तिहि परत गयौ गोगी न्निपति। परत षान चौसट्ठि धर॥
तिन जंपि चंद बरदाइ बर। नाम जु जू ए सब विबरि॥ छं०॥१३५॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम।

चिभंगी॥ वर षांन ततारं, झोरिय डारं, मेछ उधारं, परिषानं॥
.... ॥

हबसी षट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुढं ॥
असि बर बर झारी, षान प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं ॥ १३६ ॥

गोरी घर काले, शस्त्र न झाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
महनंसिय मेरं, परि धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं. चौसठि थानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥छं०॥१३७॥

उन रंग अट्टं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि देनं।
.... ॥
उड़ि साइक सूरं, नभ तक रूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
.... ॥ छं० ॥ १३८ ॥

झल्लारे गग्गं, ओडन तग्गं. मन मत पग्गं, पै नग्गं।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
प्रारथ्थ मुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कँद षुत्ती, रन षुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं० ॥ १३९ ॥

झोरी परि लीनं, छित रस भीनं. रन दुहु दैनं, करि हैनं ॥
.... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मन करि गत्तं, कर हित सतं, रन गत्तं ॥
.... छं० ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहट्टै, मति घुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सन मानं, बर फुट्टै ॥
इन सूर समानं, देवन जानं. रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहन्नी भग्गा, तन षग लग्गा, जुगति सु जग्गा. प्रति लग्गा ॥
छं० ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान आकूब। षूब मारू षिति मारू ॥
षूब बेर तत्तार। षूब मंडी षिति तारू ॥

घूब षान घुरमान। घूब जा भारथ पंडै॥
घूबर गोरिय सेन। जेन भग्गापग मंडै॥
अदिहार साह गोरी सुबर। सुदिन राज प्रथिराज बर॥
तित्तने परे झोरी धरे। सुबर बीर बीरं सु रर॥ छं॰॥ १४२॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा।

बलि भट्टी महनंग। गरूअ गब्बह गज्जिय धर॥
इन लरंत सामंत। साहि चक्यौ दिल्लिय पर॥
जोगिन पुर जोगिंद। आदि चच्चर चौरंगी॥
इंद्र जोग जुध इंद्र। इंद्र कल इंद्र अभंगी॥
नग नग नरिंद नग बर सजहि। रजहि सेन सामंत सह॥
नंषयौ कोट आसी पुरह। सुबर बीर लग्गे मगह॥ छं॰॥ १४३॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना।

लगे मग्ग सामंत। अंग नंचे चच्चर रन॥
इक्क मंत आमंत। इक्क देषै धावत घन॥
महन मंत आरंभ। रंभ लग्गा चावहिसि॥
एक सस्त्र बरषंत। एक बरषंत बीर असि॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुअ। सुबर बीर उप्पर करन॥
कललंकराव कप्पन विरद। महन रंभ मच्चौ सुरन॥ छं॰॥ १४४॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन।

भुजंगी॥ महं रंभ आरंभ सारं प्रकारं। नचै रंग भैरूं ततथ्थे करारं॥
तहां पत्तयौ तत्त चिचंग राजं। मनों गज्जियं देव देवाधि साजं॥
छं॰॥ १४५॥

महा मंत मंतं सु तंतं हकारे। मनों बीर भद्रं सु भद्रं डकारे॥
झनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी। मनो बीज कोटी कलासी पसारी॥
छं॰॥ १४६॥

दुहुं बाह बीरं सहस्रं भुजानं। कहै कौन कब्बी बलं जा प्रमानं॥

रसं तार तारं जिते तार वग्गे। मनो मानही देव मा देव भग्गे॥
छं० ॥ १४७ ॥

बहै बाह वाहं करारेति तथ्थं। परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं॥
नचै बीर पायं झनक्कंत पग्गं। मनो तार बज्जे सु देवाल अग्गं॥
छं० ॥ १४८ ॥

करें कंस कंसी बजे जानि नैनं। इसे सार सों सार बज्जै स घैनं॥
उनंके उनाही गुमानं न भग्गें। करी षान षुरसान षुरसान मग्गें॥
छं० ॥ १४९ ॥

बहै बान कम्मान आहत्त तेजं। लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं। मनो चच्चरी जानि आहत्त नग्गं॥
छं० ॥ १५० ॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे। मनों लग्गियं च्यार ज्यों मत्तवारे॥
उभै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै। सहै अंग अंगं दुधारे दुधारै॥
छं० ॥ १५१ ॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै। चल्यौ सूर सूर मध्यान मझारे॥
छं० ॥ १५२ ॥

घोर युद्ध उपस्थित होना।

गाथा ॥ मध्यानं बर भानं भानं। तेजाय सूरयो [1]मुष्यं॥
चच्चर सी चवरंगं। उच्चारं मत्तयो बेनं॥ छं० ॥ १५३ ॥

भुजंगी ॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं। नमो डंबर्यो भान उग्यौ करूरं॥
दुअं बीर धाए सु चौहान मोरी। मनों षेत षड्डें किसानंत झोरी॥
छं० ॥ १५४ ॥

कहें हक्क बाजी विराजंत लल्ले। सुभें दंग लग्गे जु पावक्क प्रल्ले॥
दुअं सेन हक्कें विहक्कंत ग्यारैं। बकै जानि दंदं सु बंदी पुकारैं॥
छं० ॥ १५५ ॥

---

(१) ए.-सुष्यं।

रनं रंग रत्तं विराजै सु भूमी। मनों मंगलं पुत्त की आनि रूमी॥
उडै हंस हंसं द्रुमं डाल ढालं। मनों नाग मथ्थं बरें अग्गि चालं॥
छं० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्गे मुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नमं देवदत्ते॥
भए नेन ऐसें द्रिगं देव जैसे। .... ॥ छं० ॥ १५७ ॥

परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीनं। महा मंत मत्ती लगे लोह पीनं॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग बंकी सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चंद। बीर उज्जली सुधारिय॥
सेन चमर सम भिंजि। रही लट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अंग अंगन छत दग्गिय॥
कज्जलन कूट तें उत्तरहि। चिय नंदी संग्राम तिथ॥
चिचंग राव रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ कथ॥ छं० ॥ १५९ ॥

भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
विध विधान निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथथां पारथ्थ। समर रावर प्रथिराजं॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बद्धे गिरि राजं॥
जित्ति कित्ति पन सांइ सों। भिरन करन बीरत्त गुर॥
चामंडराइ दाहर तनौ। भारथ्थां लीनी सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजंगी ॥ धरा धम्म भारी सु लीनी नरिंदं। मनों मेनिका देव जुद्धं सुकंदं॥
कमद्ध हँकारे हकें हाक बज्जी। कहै सीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनद्धंत बानं भनद्धंत षग्गं। मनो बीज के बाल अभ्यास जग्गं॥
दुहुं दीन दीनं चहुव्वान गोरी। हडूडूत षेलंत बालद्ध जोरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

नियं ध्रम्म देहं इकं अंग जान्यौ। जिनें मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत कट्टे करै सस्त्र भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं० ॥ १६३ ॥

उदै इंद कट्टै रवी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं भमक्कै प्रमानं॥
पटे हथ्थ ग्यारे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं० ॥ १६४ ॥

उड़ै सद्द बानं विवानंत रक्कै। तिनं मारुतं सद्दगं मद्द सुक्कै॥
छवी छब्बि रत्तं उड़ै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं बरष्पै करारी॥
छं० ॥ १६५ ॥

परं नाग नागं इसै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं० ॥ १६६ ॥

युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमट्ठ सुधि॥
मननि सीस मुक्कयौ। इहै दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हकारै॥
घरि एक भयौ विश्रमत मन। बहु रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकथ। राज उट्ठि संग्राम खिय॥छं०॥१६७॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन।

सोइ सँग्राम सोइ साम। सोई विश्राम मुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। ताह अच्छरि रस मत्ती॥
जु कुछ मुकति तिन ग्रसिय। सार बज्जे नह अंगं॥
ग्रसिय जनं किय अग्गि। जोग जुट्टे घन जंगं॥
विन जोग विरह भारथ्थ विन। सूर भेद भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंचौ सुबर। गयौ सूर भेदेव सोइ॥ छं० ॥ १६८ ॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी॥ चढ़े श्वान अष्पं नषं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मभ्भके सुरंगं॥

चढ़े कोतरं कोक कोकं पुरानं। रबी तेज भग्गी सची चार पानं॥
१६९॥ छं०॥
मुदे सूर ससिं सरोजं पुहप्पं। गयं मुद्दितं पच आरद्ध अप्पं॥
कमोदंत मोदं घरं वै प्रमानं। तहां कादरं सो सदिष्पं तथानं॥
छं०॥ १७०॥
प्रफुल्लंत बीरं चकं चक्क थानं। इकं मुक्ति बंछै इकं सामि पानं॥
चिया कंत बंछै वियोगी सँजोगं। रनं सूर बंछै अछी अच्छ भोगं॥
छं०॥ १७१॥
भई सिंदूरेनी बरं दीह ऐसें। मनो संधि बालं विराजंत जैसें॥
दुहुं सेन बज्जे निसानं दुरत्ते। तहां पंष पंषी रहे थान जत्ते॥
छं०॥ १७२॥
दुवं सेन बेनं निबंती प्रकारं। दोऊ बीर छेड़े तजे बाज सारं॥
बिना नींद पानी बिना अन्न धारं। रहे एक हिंदू सहिंदान सारं॥
छं०॥ १७३॥
भषै मेच्छ बाजी रनं जे करारे। तके बीर कज्जी बिना अग्गि सारे॥
भषैं मंस चोरं थिगं जा प्रकारं। इसी रैंन बित्ती दुहुं दीन भारं॥
छं०॥ १७४॥
उरब्बीति मीरंत वारंति षानं। हसे रंग रंगं रसं बीर पानं॥
इसी रेन दोऊ गई नट्ठि नट्ठी। गई कायरं कट्टु सूरंत मिट्ठी॥
छं०॥ १७५॥

कवित्त॥ रही रत्ति आरत्ति। तत्त लग्गी परिमानं॥
जुद्ध जूह सुरतान। मंच कीने परिमानं॥
भान पयानन होइ। लोह जित्ते पायानं॥
सार धार निरधार। सार उद्धार समानं॥
पुरसान षान तत्तार रन। दिसि रत्ती रत्तीत अप॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुबर बीर वीरंत जप॥ छं०॥ १७६॥

प्रातःकाल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना।

दूहा॥ बर भग्गी जग्गीति निसि। दोऊ दीन परमान॥
बंचि सिपारे तीसचव। करि निवाज सुरतान॥ छं०॥ १७७॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहि। उघरि सत पच मत्त जनु ॥
भ्रंग भृंगि सम भ्रमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उड़गन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
सेंविधि सुरंग व्यापार घन। रवि रत्तौ मुष दिष्पयौ ॥
भासकर सहसकर क्रंमकर। नवकर कमुद विसष्पयौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकासय। वारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अठ्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥छं०॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुन्नय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥

तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कमोदनि को मत सूरय ॥
वंध जवासुर ग्रीषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥

कौ सुनि तात सनी सर सूरय। भास करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्त्रति भाष प्रकारय। तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥

हैवर ओष करं गिर पारय। मानहुं देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज असूव्रत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचंरय ॥
छं० ॥ १८३ ॥

एक घरी धरि ध्यान स दिष्पिय। मुक्ति स लच्छिय संपन अष्पिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तारन गयंद घर ॥
ब्रह्म विष्णु अंजुल। उदंत आनंद नंद हर ॥
इक्क चक्क चिहुं दिसै। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

कमल पानि सारी अरुन। संसार जियन जन ॥
उड्डंग बीर छक्कव पवन। निरारंभ सन्नह सुमुष ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। हरो मित्त दोइ दीन दुष ॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन।

दूहा ॥ सो जगत मंगी सु कर। कढ़े लोह करि छोह ॥
दै दिवान देवत्त गति। हाइ हाइ रति रोह ॥ छं० ॥ १८६ ॥
कवित्त ॥ हाइ हाइ .... । .... अरिष्ट गरिष्टं ॥
चाहुआन सुरतान। बीर भारथ्थ वरिष्टं ॥
दै दुवाह अति धाह। षग्ग षोलै छिति तोलै ॥
सस्त्र बीर बाजंत। देव देवासुर डोलै ॥
डक्कनि डहक्कि जोगनि लसय। लसै लोह देवर धसै ॥
चामंडराय दाहरतनौ। राज-धम्म चित्तं बसै ॥ छं० ॥१८७॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन।

उद्धू दिसा सामंत। अड्ड उभ्भै दुहुं पासं ॥
रा चामंड जैतसी। सलष सूरिवा सुवासं ॥
लोहानौ आजान। बलिय पँवार सभारिय ॥
दै दिवान दैवत्त। वर्ज लैहै अधिकारिय ॥
महनसी मेर पच्छै नृपति। मुगति इच्छ कट्टी निजरि ॥
दैवत्त वाह दैवत्त गति। सुबर बीर ठट्टे उसरि ॥ छं० ॥ १८८ ॥

यवन सैनिकों का उत्साह।

* सौ मीरन संगमति। वज्जि नीसान षेत रहि ॥

---

* मालूम होता है कि या तो यहां के कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है। छन्द १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिएं। तिस के बाद मृतकों की संख्या या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए। परन्तु छन्दों के खंडित होने के सिवाय हमारे विचार से छन्दों का लौट फेर भी हुआ है। छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उधर बेसिलसिले पड़ता है। इसलिये संभव है बज कि प्राचीन समय में खुले पत्र पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो। परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतियां समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है। पाठक स्वयं विचार कर देखें।

हय गय नर विच्छुरै। रुद्र भौ बीर बीर नह ॥
निस वर वर उभ्भरहि। भूत प्रेतन उच्छव सिर ॥
बज्जि घाव हक्के। त्रिघाव चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारह नह सद्दह सुभर। बीरभद्र आनंद भर ॥
इहि भंति निसा सुर सुंदरी। भर हर हर बज्यौ सुभर ॥छं०॥१८६॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन।

भय विभात लगि गात। रत्त रत्तं रन मत्यौं ॥
हिंदवान तुरकान। जुद्ध अंबर अंगत्यौं ॥
अगति मग्ग पाइन। सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ ॥
अस्वमेद बहु दान सस्त्र। सम एक न पुल्ल्यौ ॥
स्वामित्त धरम कौनौ जु इम। मन उछाह अच्छे रहसि ॥
ना करी कोइ करिहै न को। करौ सु कौ रवि चक्क गसि ॥छं०॥१९०॥

दूहा ॥ चक्क चरित सोमंत ग्रसि। निज निवर्त नग नाम ॥
चाहुआन सुरतान सौं। बजि ऐसी असि ठाम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम।

कवित्त ॥ गयौ षान तत्तार। पर्‍यौ षुर सानति षानं ॥
पर्‍यौ हिंदु बर रूप। भीम परि परि रन भानं ॥
पर्‍यौ भट्टि बलिभद्र। मान परिमान न मुक्यौ ॥
पर्‍यौ जंगलीराव। बीर दहिमा दल रुक्यौ ॥
अजमेर जोध जोधा परिग। पर किल्हन बन बीर बँध ॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय। चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध ॥
छं० ॥ १९२ ॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना।

दूहा ॥ इन परंत तत्तार गौ। ग्रब्ब सु नंष्यौ साहि ॥
लज्ज ग्रब्ब भै मै दुर्‍यौ। जस सु जोति बल नांहि ॥छं०॥१९३॥

खेत झरना होना और लाशों का उठवाया जाना।

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार ढुंक्यौति समर बर ॥
बजि निसान आवृत्त । जौति घुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामंत । बीस तिय डोल्ल प्रमानं ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समानं ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा किति उड्डी फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि घुरसान दल । होइ फकीर छुट्टे ति फिरि ॥
छं० ॥ १९४ ॥

युद्ध में मृत वीरों के नाम।

परिग षान षावास । गौर हांसीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर विभारी ॥
पर्‍यौ कहै चंद्रेल । पर्‍यौ राजा नव भानं ॥
परि मोरी महनंग । जंग जीते जुग जानं ॥
पँवार परिग पूरन्न पह्र । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर बलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १९५ ॥

दूहा ॥ जौति समर भारथ्थ बर । न्विप सम करि जुध ताम ॥
ढुंढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥छं०॥१९६॥

कवित्त ॥ जंगलवै बर मग्गि । भग्गि तत्तार सपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बंधव सलषन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ नाहर नाहर हर ॥
कन्ह पुत्त दुति कन्ह । चंद रघुबंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
बीरम्म बीर माल्हन परिग । मल्हन वास विरास मन ॥
छं० ॥ १९७ ॥

हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन।

हांसीपुर दिन सत्त । तीय बासर अग्या बर ॥
घाव बांधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
वार सोम सप्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

भर रष्यवि अरि भंजि । मिलिय रावल रन रत्तौ ॥
सामंत रष्यि भारथ्थ जिति । गवन रष्यि नन राज अंग ॥
बर मिलि समंद सलिता सुबर । जलन देषि एकह सुमग ॥
छं० ॥ १९८ ॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना ।

जीति षान तत्तार । पारि हांसीपुर नीरं ॥
जीति समर भिरि समर । रुधिर रत लत्त सरीरं ॥
प्रथु सामत प्रथिराज । सुने सामंत सु कथ्थं ॥
जथ्थ कथ्थ अरि करिय । डोलि नन ह्वर सु रथ्थं ॥
छलि कै अमंत मुक्कै न बल । तजि हांसी सम्हौ भिरिय ॥
रुंधयौ चक्क जुग्गिनि सु बर । बीर बीय संमुह फिरिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली सह सामंत सथ । अमर सुक्कत ढिग थान ॥
समरसिंघ रावर सुभर । ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं० ॥ २०० ॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना ।

भावभगति बहु विद्धि करि । इम लज्जा तुम भोर ॥
इक अरी कमधज्ज गिनि । इक सहाबदी मीर ॥ छं० ॥ २०१ ॥

बालुक्का सज्जौ समर । और विध्वंस्यौ जग्ग ॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत । फेरि उन्हाई अग्गि ॥ छं० ॥ २०२ ॥

दिवस पंच मनुहारि करि । पहुँचायो चिचंग ॥
बीस अश्व गज पंच सजि । दै पहुँचाए रंग ॥ छं० ॥ २०३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५२ ॥



अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ ।

दूहा ॥ सुक सुकी सुक संभरिय । बालुक कुरंभ जुद्ध ॥
कोट महुव्वा साह दल । कहौ आनि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै । हारि कूरंभ षग झट्टिय ॥
सब लुट्टे गजबाजि । हेम मानिक नग बट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह । हारि कूरंभ सम लद्धिय ॥
सह बालूक कमंध । उभय पज्जून सकिद्धिय ॥
अध्यैव ताम तत्तार बर । करौ कूंच उत्तं गहर ॥
महुवा दिसान चंपै धरा । बीर पजून सु बंधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर । कोट महूवा थान ॥
षा निसुरति रुमों नदी । बर कीनों अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥

कियो कूंच गोरी गहर । सहर महुव्वा थान ॥
षां षुरसान षुरेस षां । पाइल लष्य प्रमान ॥ छं० ॥ ४

शाही सेना का वर्णन ।

कवित्त ॥ चढ्यौ साह सुरतान । पान पोयौ फिर ढूंढ़न ॥
सम कूरंभ चहुआन । धरा मोह अब मंडि रन ॥
लष्य एक असवार । सहै बानह सम बारुन ॥
पाइक अयुत चिपंच । संग तत्तार सु धारन ॥

बलिराइ जेम दानव बलिय। तेम प्रकारन मद्धि मढ़ ॥
उड़गन कि चंद तत्तार दल। इम घेऱ्यौ मोहब्ब गढ़ ॥ छं० ॥ ५ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ रष्यन गढ़ थानौ नृपति। बहु दिन बीर पजून ॥
पठये इत्त सु राज पै। निढ्ढुर मन साजन ॥ छं० ॥ ६ ॥
दूत कहिय दारुन षबर। फौज साह सुरतान ॥
पारस राका दल प्रबल। कोट महूवा थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल लरन सुरतान ॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध महूवा थान ॥ छं० ॥ ८ ॥
फौज दिष्पि चहुआन की। सबै सूर रनधीर ॥
मद्धि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराव हमीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

नेज बाज नीसान सजि। चढ़े सकल सामंत ॥
कूरँभ बिन को अंग में। अनी लष्य हैमंत ॥ छं० ॥ १० ॥
कवित्त ॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय ॥
को ढुंढारह राइ। षग्ग मग्गह संभारिय ॥
मोसें बोलि नरिंद। सैन दै नेन मिलाइय ॥
ए कूरंभ नरिंद। साह सम राह सु ग्राहिय ॥
बोलयो जाम जद्दौं सुबर। चिचंगी रावर सुभर ॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर न को रबिचक्क तर ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
बह्म पुच कै वार। जुद्ध अरियन सिर झारिय ॥

---

(१) कृ. को.-'सेन दै नेनानि लाहय'।

इन भेहरा पै जाय। षेदि कयौ बालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ। लियौ छोंगा चालुक्की ॥
इन नंषि षोदि आबू सिषर। अजै बीर अजपाल हित ॥
केवरा बीर केवर हतिग। करै बीर आनंद षिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पंगानों बीर। बाद षोषंद पहारिय ॥
इन देवगिरि जुरिग। बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन जालौरय जाय। दई भाटी महनंसिय ॥
बंधि जोध अजमेर। बैर भंज्यौ मलअंसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय। ढिल्लिय धर अविचल धरा ॥
संग्राम सूर कूरंम ढिग। नको बीर बीरंमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर। समर मिलिग पज्जून ॥
बर हांसी छिंसार दिय। गढ़ दीने दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥
कवित्त ॥ दीने छच मुजीक। सत्त नीसान चोर बर ॥
रतन हेम हय गय। समूह आदर अनंत भर ॥
सुधर बीर अति धीर। कन्ह कल्हन बुल्लायौ ॥
अप्पि मछूवा लाज। बाजि बर बीर चढ़ायौ ॥
सुरतान साह गोरी चढ़िग। षां ततार अगिवान करि ॥
उतर्‌यौ सिंधु अरु विहय बिच। मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सगुन सरभ्भर सुभ असुभ। जिन्ह जहर मुनिंद ॥
चले साह कारन करन। नह पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर बीर। तोन बंध्यौ गोरीय झुकि ॥
दैवकाल उपज्जयौ। छित्ति छचीन रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह। हम स हिंदु सामंता ॥
ज्यौ रोजा सों झुक्कि। वहथ छंडै जुधवंता ॥

कूरंभ सकल बरबंधि कैं। हौं बंधन गोरी करौं ॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा। सुबर बीर कित्ती धरौं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा ॥ परिग सहाब महुव्व धर। दिल्ली दच्छिन छंडि ॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै। आनि सु भारथ मंडि ॥ छं० ॥ १८ ॥

युद्ध वर्णन।

विराज ॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी। पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं ॥
छं० ॥ १९ ॥

भिरै बीर बीरं, बजे सद्द तीरं। भजै कोटि धारी, बयन्नं करारी ॥
छं० ॥ २० ॥

करं कुंत हल्लैं, महाबीर बुल्लै। मलैसिंह हथ्थं, दिषै कोटि सथ्थं ॥
छं० ॥ २१ ॥

रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं। स्वयं बीर बीरं, महामत्त तीरं ॥
छं० ॥ २२ ॥

जिनै मुष्प पानी, झुलै षग्ग बानी। उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त भावै॥
छं० ॥ २३ ॥

छुटै बीर वीरं, रुलंते सरीरं। कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी ॥
छं० ॥ २४ ॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा ॥ भीर सु भंजत बीर बर। च्यौ भान मध्यान ॥
जे कूरंभ करै सु झर। देव मनुष्प प्रमान ॥ छं० ॥ २५ ॥

धंनि सुकृत पज्जून कौ। मलयसिंह बलिभद्र ॥
स्वामि सद्द बंधन हसहि। कट्टन भीर नरिंद ॥ छं० ॥ २६ ॥

चिभंगी ॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर झाले, झुझझाले ॥
षानं मुलतानं, से घुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं ॥
गजदंत सु कट्टैं दै पग चट्टैं, कंद उकट्टैं, भिल्लानं ॥

*नरजे बल कारी, सुर बर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छं० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना।

कवित्त ॥ भग्गौ दल घुरसांन। घान पौरोज उपारे ॥
घूब घान आकूब। घूब सिर तेग प्रहारे ॥
मारूराव नरिंद। पारि पष्पर परिहारी ॥
दुवै अंग बलिभद्र। घाव दुअ अंग विचारी ॥
घट वार चढ़ायौ षित्त में। जै बज्जा घन बज्जया ॥
प्रथिराज भाग जं जं जियै। कूरंभराव सु रज्जया ॥ छं० ॥ २८ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

प्रथीराज साहन समूह। दल मिलिग मुहल्लै ॥
तिनह दलह रावत्त। डरै डगमगैं न डुल्लै ॥
संभरि राव नरेस। फिरे पिछवाह न दिष्यौ ॥
नलह बंस नल बर। नरेस दस दिसि दल रष्यौ ॥
गहि सेल सकुंजर सिर हयौ। भर भंजन जग डग सुअ ॥
पज्जून महुव्वै जीति रन। जैत पच कूरंभ तुअ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना।

दूहा ॥ जीति महुव्वा लीय बर। ढिल्ली आनि सु पष्य ॥
जं जं कित्ति कला वढ़ी। मलै सिंह जस कथ्य ॥ छं० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गज्जने। बहु दल रिन में कट्टि ॥
उभै हारि असि पति लही। उर अति रोस अचट्टि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून महुवा जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

* इस छन्द का बहुत कुछ अंश लोप हो गया मालूम देता है पाठ में भी बहुत भेद पड़ता है।

अथ पजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(चौवनवां समय।)

और सामतों को महुवा में छोड़ कर पज्जून का नागौर जाना।

कवित्त ॥ रष्पे कन्ह नरिंद। सलष रष्पे बड़ गुज्जर ॥
उदिग बाह पग्गार। साह साईं भुज पंजर ॥
रष्प निड्डुर बीर। बीर रष्पे सु पवारं ॥
किल्हन दे तूंअर। उतंग किल्लन सिर सारं ॥
पज्जून महौबे जीति बर। पुच रष्पि वलिभद्र बर ॥
तिय बंध मलैसी पल्हसी। सुबर चित्त चिंता सुभर ॥ छं० ॥ १ ॥
दूहा ॥ ए सब रष्पि पजून संग। दै साँई सिर भार ॥
बर नागौर सु रष्पिया। झिल्लन सार प्रहार ॥ छं० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै। तज्जि मौहब महत्त सम ॥
उभै हारि सिर धार। छंडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बढ़िय दुःष घटि सुष्ष। संझ छायारु प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन एम। पाग बंधों कूरंभ हनि ॥
पठ्ठये दूत नागौर दिसि। संभरि आषेटक स पुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ़। दिसि जुग्गिनिपुर गंम तह ॥
छं० ॥ ३ ॥

धर्म्मायन का गजनी को समाचार देना।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा। मुर धर सुभर सु रष्पि ॥
धम्माइन काइथ कुटिल। कग्गद गोरी लिष्पि ॥ छं० ॥ ४ ॥

गोरी पै गय दूत बर। षान 'साहि सुरतान ॥
बर कूरंभ चरिच दिषि। धर नागौर प्रमान ॥ छं० ॥ ५ ॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त ॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि ॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्पि फुनि ॥
संभरिवै जहों दिसान। आसेर सु हिंडिय ॥
व्याह विनोद सुरंग। नृपति देवास समंडिय ॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कहिहौं ॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु वपु षंडिहौं ॥ छं० ॥ ६ ॥

पद्धरी ॥ लष तीन मीर अवसान सद्धि। चहुआन धरा कामना किद्धि ॥
दस सहस करी मत्ते प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि ॥
छं० ॥ ७ ॥

पाइक्क सहस चौसह चिअच्छ। दह घाव इक्क टारंत स्वच्छ ॥
साबद्द वेध साइक्क मग्ग। दिष्पेव साइ बंधंत षग्ग ॥ छं० ॥ ८ ॥

साइक्क साइ बर हने तीर। असि वरहु पंच कटि बाज बीर ॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस ॥
छं० ॥ ९ ॥

कूरंभ दीसा फुरमान लष्पि। सिर ताव भाव बहु बैन अष्पि ॥
फुरमान लिष्पि सुरतान बीर। मुक्कले दूत नागौर तीर ॥ छं० ॥ १० ॥
पज्जून तेगबर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्थ ॥
छं० ॥ ११ ॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा ॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर ॥
सम सहाब संमर करन। आयो जोजन तीर ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

कवित्त ॥ हँसि पज्जून नरिंद। कहै सुरतान साह बर ॥
जीव डरै खल्लवै। सो न कूरंभ होहि नर ॥
सो न होहि रघुबंस। तेग छंडैं मरनं डर ॥
इम छंडैं जब तेग। छूर उग्गै न दीह पर ॥
चल्लै न पवन गंगा थकै। गवरि तजै बर ईस बर ॥
पज्जून नाम कूरंभ मो। साहि जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १३ ॥

कहै राज पज्जून। बीर कूरम्भ चेत बर ॥
इम सलाह सुरतान। इम सु रष्षें ढिल्लिय धर ॥
इम रवि मंडल भेदि। आम लगि सत्त न छंडैं ॥
षंड षंड धर ढारि। सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिव चिंता न करि। मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर। मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कहना।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह। दिय दुवाह सुरतान ॥
भग्गि अवर चक्रित सुभर। कूरंभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान। षान तत्तार बुलायौ ॥
इम सुषान जंगली। जुद्ध चहुआन चलायौ ॥
षोषंदा बर बाद। मारि गम्मार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी साहाबदीन। लोकह परि लित्तौ ॥
पज्जून सुनवि सामंत सम। आय पाय सुरतान परि ॥
कै अप्पि कोट नागौर तजि। कै सु साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ।

इधर नागौर में किलेबन्दी होना।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र बर। मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहिं साह संमुह लरन। लज्जह काँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
बर पज्जून बरज्जिया। नृपतिन ढिल्ली ढाह ॥

को रष्पै ढुंढा रहा। उभै पूत सँग लाइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
तात सु अग्गा मानि बर। साजि कोट नागौर ॥
सकल सूर सामंत मनि। मरन सरन किय और ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय की बीर ब्यारूया।

कवित्त ॥ सकल सूर सों कही। बीर कूरंभ उचारिय ॥
न रहै तन धन तरुनि। किरनि वेताइन चारिय ॥
वापी कूप दृषम्म। सरित सर वर गिरि जैहैं ॥
मठ मंडप बर कोट। कोटि पाषंड सचै हैं ॥
अप कित्ति कित्ति जैहै न जग। रहै मग्ग षिची सुवर ॥
पज्जून द्रढ़ नागौर गहि। साधन सार समग्ग कर ॥ छं० ॥ २० ॥

यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नोल चलाना।

पद्धरी ॥ सुरतान घेरि नागौर गढ़। मानो कि मद्धि प्रकार मढ़ ॥
भर बाज करिय पावस पमान। मानो नषिच मधि एम जान ॥
छं० ॥ २१ ॥
सावाति भांति चिहुं दिसा लग्गि। अंजनी सुतन दै लंक अग्गि ॥
गोला अवाज दस दिसा घोरि। बंधनह पाज कपि करिय सोर ॥
छं० ॥ २२ ॥
दस दिसा थान गढ़ बंटि दीन। अप अप्प ठौर चौकीस कीन ॥
चय लष्प मीर नाषित प्रमान। घेऱ्यौ सु मद्धि पज्जून भान ॥
छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर। पंति मंडी सु पंति पर ॥
दैव काल सामंत। सत्त छूटंत बीर बर ॥
पथ गोपी लुट्टई। बहित बारह सत छुट्टौ ॥
दुर्जोधन बल बंधि। सिंधु बंधी जल लुट्टौ ॥

जानयौ सत्त सुरतान बर। सकल सूर सामंत डर ॥
जंपै सु चंद कूरंभ जस। प्रथीराज जित्तौ सु भर ॥ छं० ॥ २४ ॥
पज्जून रु बलिभद्र। बोलि कूरंभ करारो ॥
सत छुट्यौ नहि साह। सत्त मो सत्तह सारो ॥
उदिग बांह पग्गार। सुनह सामंत सबाहौ ॥
सक्क फौज गोरी। नरिंद पंती गज गाहौ ॥
पंचीस पंच नह अग्गरौ। फेरि काल फुनि फुनि परौ ॥
जं करो सब्ब सामंत मिलि। बोल रहै जुग उब्बरौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना।

तेग तमकि पक्करिग। सकल सामंत सूर बर ॥
पंच बंध कूरंभ। कोटि रष्षे पहार भर ॥
उघ्घारिय गढ़ पौरि। अद्ध निसि बीर सु तत्ते ॥
रत्तिवाह करि चाह। कूर करि सूर सपत्ते ॥
राजाधिराज सामंत सर। तमकि तमकि तेगं कसी ॥
ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि। कूरंभ आनन में बसी ॥
छं० ॥ २६ ॥

मुसल्मान सेना के पहरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना।

विराज ॥ बसी मुष्य लज्जौ, सिला धूर रज्जी। दिसा उत्तरायं, सु बीरं पठायं ॥
छं० ॥ २७ ॥
कियं कूच मंचं, हलालं अनंतं। लगे लोइ चौकी, मनो नारि सौकी॥
छं० ॥ २८ ॥
दुअं इक्क थीयं, भजे पुट्ठि दीयं। चढ़े पान षानं, समंझी गुरानं ॥
छं० ॥ २९ ॥
सबै सेन धायौ, धषं जैति नायौ। मजूनं सपूतं, मिलै सिंह जूतं ॥
छं० ॥ ३० ॥

नषे कोट पाटं, हुआ जोट थाटं। कटे कोट डेरा, कियं साह घेरा॥
छं० ॥ ३१ ॥
मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं। सुरत्तान पायौ, सनंमुष्प धायौ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सबै सूर सज्जी, मँडे जानि पज्जी। घुले षग्ग राजी, बलीभद्र साजी॥
छं० ॥ ३३ ॥
भुजं ओट कोटं, पहारंति जोटं। मुषं सुष्प आई, सहस्सा दिषाई॥
छं० ॥ ३४ ॥
जकौ जोग माया, हरी रूप पाया। तुटै अंग अंगं, विभंगं विभंगं॥
छं० ॥ ३५ ॥
छनंकेति तोरं, परं वज्ज ओरं। पयं पल्ह धायौ, सुरत्तान आयौ॥
छं० ॥ ३६ ॥
मिलै सिंह साहं, विवंधो विवाहं। उड़ै चाल टोपं, ति कूरंभ कोपं॥
छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक ओर बीरम्म बर। कियौ गहम्मह सूर॥
परि सुरतानह उप्परै। अति आतुर गति कूर॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का युद्ध।

षा घुरमान ततार तब। सुनिय कूह दल सथ्थ॥
सहस बीस गथ्थर लियें। आयो बीर समथ्थ॥ छं० ॥ ३९ ॥
नंषि पाट पक्कून रिन। पत्ते गथ्थर कोट॥
सहस बीस गथ्थर मसँद। लग्गि करी जम जोट॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना।

कवित्त ॥ सहस बीस गथ्थर गुराय। तत्तार षान रहि॥
नव दूनं कटि बाज। बीर बलिभद्र इथ्थ बहि॥
मुररि मुररि मारूफ। बान कम्मानति [1]नग्गी॥
मुक्कि बान कम्मान। तेग कट्टी साखग्गी॥

(१) कृ. को.-भग्गी।

बजि घाइ निघाइ अघाय घट। बर बसंत जिम दिष्पि भर॥
फुल्लै सु जानि केहू सुरंग। यौ दीसै बर बीर नर॥ छं० ॥ ४१ ॥

दूहा॥ खरत पिष्पि बलिभद्र कौं। हरषि पज्जून सुचित्त॥
को रष्पै कविचंद इह। इम समान तुम मित्त॥ छं० ॥ ४२ ॥
परे दौरि हिंदू सुभर। उसर साह साहाब॥
औसरि लगि आसुर सयन। मद्यति बेर किताब॥ छं० ॥ ४३ ॥

पज्जून राय के पुत्रों का पराक्रम।

भुजंगी॥ पर्‍यो घान जल्लाल सें तीन जामं। भई बारहूं फौज सौ एक ठामं॥
खरंतं सु बीरं प्रमानं प्रमानं। बजे बंस नंसं करष्पे कमानं॥
छं० ॥ ४४ ॥

मिलै सिंह धायौ लषें बीर धीरं। गही बग्ग बलिभद्र आनुज्ज बीरं॥
दुअं बीर तेगं हुड़ा होड़ वाहै। मनों चचरी चक्क डंकेस गाहै॥
छं० ॥ ४५ ॥

नियं भ्रम्म रष्पे सदा वत्त ग्रेहं। हडूडूह षेलंत बालक्क जेहं॥
मुरी धार धारं मुरै इथ्थ नाहीं। गहीदंत बग्गं कटारी समाहीं॥
छं० ॥ ४६ ॥

झरे षग्ग षग्गं चिनंगीत उट्ठै। मनों झिंगनं भद्दवं रेनि चट्ठै॥
इलाहं इलाहं कहैं घान जादे। इसे बीर बीरं महो माह वादे॥
छं० ॥ ४७ ॥

करै मुष्प पूतं पज्जूनं दुहाई। प्रलै काल मानों उभै सेस धाई॥
दुअं बाह बीरं बहै बीर भग्गे। इसे सूर कूरंभ के इथ्थ लग्गे॥
छं० ॥ ४८ ॥

कहै मेछ रुष्पं सरुष्पं प्रमानं। किधौं मानवं लोह लै देव जानं॥
द्रुमं ढाल ढालं दुवं संकरक्के। लग्यौ अंस बंसं सु बंसं धरक्के॥
छं० ॥ ४९ ॥

बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै तथ्थ गिद्धं सु पावै न जानं॥
मलै सिंह इथ्थं पर्‍यौ बथ्थ गोरी। मनों फूल माला लई इथ्थ जोरी॥
छं० ॥ ५० ॥

लगे लोह अंगं परे जंग घानं। पर्‍यौ घान पुरसान तह षेत पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंष्यौ सु भर। मलै सिंह कूरंभ ॥
दस हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तन तरंग सूरंभ ॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जित्तें भग्गौ सु अरि। बर बंध्यौ सुरतान ॥
दुअ सु लष्ष कों अंग मै। धनि कूरंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त ॥ पूव घान मारुफ। घूव दल मलिय मलैसी ॥
बंध्यौ गोरी साहि। भांति करिकें जु प्रलै सी ॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं ॥
सुबर भाग प्रथिराज। बीर कूरम्भ सु गावैं ॥
लै गयौ साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया ॥
कूरंभ वंस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया ॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ घान तत्तार। साहि गहि कीट पयट्ठौ ॥
सुरतानह सब सेन। संकि आतुर वर नट्ठौ ॥
छंडि करी सें सत्त। बुगर आतुर अध हैं बर ॥
हसम हेम डेरा। जरीन बरभर दर कज्जर ॥
दुअ प्रात आइ पज्जून भर। करि हसम्म हैवर गिरद ॥
कविचंद कित्ति उज्जल उदित। राका निसि चंदह सरद ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरंभ धारिय ॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकरारिय ॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु ॥

[1]वार वार प्रौढा प्रमान। दंड करि घर जावहु॥
कोरान करीम करम्म तजि। इम सु पैज पौरान किय॥
कूरंभ समह मुर षेत षसि। षोय लज्ज पुरसान किय॥छं०॥५६॥

दूहा॥ दंड मंडि सुरतान सिर। छंडि दयौ चहुआन॥
औ सु भ्रम हिंदवान कुल। करिग चंद बष्यान॥ छं०॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछावाहा पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौं प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५४॥



(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और "दंड" शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्रति में पाठभेद नहीं है।

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

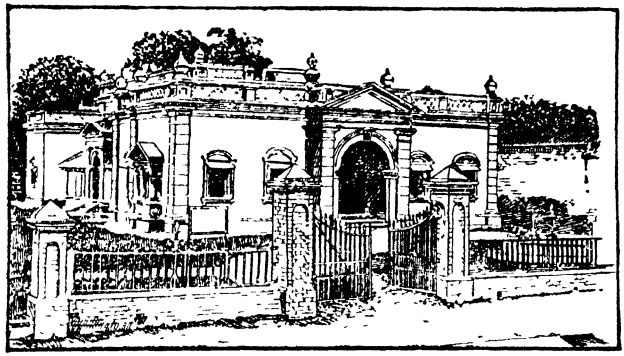
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुंअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) रु०] [*Price Rs 4/.*

सूचीपत्र ।

(२९) घघर की लड़ाई समय ।

(पृष्ठ ९४९ से ९९८ तक)

१ पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार ग़ज़नी में पहुचा । ९४५

२ दूतों ने आकर ग़ज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूम धाम के साथ शिकार खेलने को निकला है । ,,

३ शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया । ९४६

४ सुल्तान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा । ,,

५ खुरासान, रूम, हबश और बलख़ आदि देशों में सुल्तान का सहायता के लिये पत्र भेजना । ,,

६ पांच लाख सेना लिये सुल्तान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना । ९४७

७ चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दोपहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघ्घर नदी पर पहुँचा । ,,

८ शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन । ,,

९ सेना का वर्णन । ९४८

१० मुसल्मान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना । ,,

११ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्ड राव को आगे किया । ९४९

१२ पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़ व्यूहाकार रचना की । ,,

१३ दोनो सेनाओं का साम्हना होना । एक हजार मीरों का कैमास को घेरना । ,,

१४ तत्तार खां का घायल होना । मीरों की वीरता । ,,

१५ कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना । ९५०

१६ चावंडराय ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुल्तान की सेना में कहर मच गया । ,,

१७ जैतराव के युद्ध का वर्णन । ,,

१८ युद्ध का रग देख कर सुल्तान सिर धुनने लगा । जैतराव और खुरासान खा का तुमुल युद्ध हुआ । ९५१

१९ घोर युद्ध हुआ, निसुरत्तखा मारा गया, दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई । ,,

२० एक लाख कालंजरों का धावा, कन्ह चौहान के आख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना । ९५२

२१ कालंजर के टूटतेही सुल्तान की सेना का भागना । कन्ह चौहान का

कमान डाल कर सुल्तान को पकड़ लेना। ६५२
२२ पज्जून राव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुल्तान को पकड़ कर अपने घर ले आना। ६५३
२३ कन्ह का सुल्तान को अजमेर ले जाना और उसे वहा क़िले में रखना। ,,
२४ पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या। ,,
२५ पृथ्वीराज को सब सामन्तों का सलाह देना कि अब की बार शहाबुद्दीन को प्राण दण्ड दिया जाय। ६५४
२६ कन्ह का कहना कि अब की पंजाब देश लेकर इसे छोड़ दिया जाय। ,,
२७ पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ देकर शाह को घर भेज देना। ,,
२८ कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक माणि और राजा को अपनी तलवार नजर देकर घर जाना। ६५५
२९ सुल्तान का कुरान बीच में देकर कसम खाना कि अब कभी आपसे विग्रह न करूंगा। ,,
३० सुल्तान के अटक पार पहुँचने पर उधर से तत्तारखां का आकर मिलना। ,,
३१ रयसल को दूतों का समाचार देना। उसका सेना लेकर अटक उतर रास्ते में रोकना। ६५६
३२ लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना। ,,
३३ सबेरा होते ही रयसल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा। ,,
३४ रयसल का मारा जाना, सुल्तान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना। ६५७
३५ तत्तारखां, खुरासानखां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुल्तान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्यौछावर करना। ,,
३६ दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दराड दिया। ,,
३७ लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सर्दार को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दिया। ,,
३८ चंद कवि ने चित्तौर में आकर सब सोना आदि रावल की भेंट किया, रावल ने चंद का बड़ा सम्मान किया। ६५८

---

(३०) करनाटी पत्र समय।

(पृष्ठ ९५९ से ९६६ तक)

१ दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना। ६५९
२ यदव की सेना सहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वैश्या को पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना।
३ कर्नाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना। ,,
४ संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीत कला में अत्यन्त विद्वान कल्हन नायक को सौंप देना। ,,
५ करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा

सुन कर पृथ्वीराज का उसके लिये कामातुर होना। ९९०
९ पृथ्वीराज की अंतरग सभा का वर्णन। ,,
७ पृथ्वीराज के सभा मंडप की प्रशंसा वर्णन। ,,
८ पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम। ९९१
९ कल्हन नट का करनाटकी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटकी की शिक्षा के विषय मे पूछना। ९९२
१० कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिसमे निहुरराय प्रसन्न हों। ,,
११ नायक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं। ,,
१२ कविचंद का निहुरराय का इतिहास कहना। ,,
१३ निहुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारग के बगीचे में गोठ रचना। ९९३
१४ यह खबर सुनकर उसी समय सारग का वहा आकर निहुर के रंग में भंग करना। ,,
१५ निहुर का जैचद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारग का पक्ष करना। ९९४
१६ यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मै ऐसा ही नाट्य कौशल करूगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो। ,,
१७ राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन। ,,
१८ राजा का कनराटकी को आने की आज्ञा देना। ९९५
१९ करनाटकी का सुर अलाप करना और बाजे बजना। ९९५
२० नाटक का क्रम वर्णन। ,,
२१ करनाटकी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नायक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहू। ९९६
२२ पृथ्वीराज का नायक को दस मन स्वर्ण दे कर वेश्या को महलों में रखना। ,,
२३ पृथ्वीराज का करनाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना। ,,

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९७ से ९९३ तक।)

१ प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामन्तों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना। ९९७
२ सभा जम जाने पर राज्य कार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना। ,,
३ पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है। ९९८
४ राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए। ,,
५ राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामन्तो का सिरोधार्य्य करना। ९९९

६ सभा में उपस्थित सब सामन्तों का बल पराक्रम वर्णन। ६६६

७ पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये तय्यारी करने को कहना। ६७२

८ सामन्तों का राजाज्ञा मानना। ,,

९ जैचन्द के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना। ६७३

१० कमधज्ज पर चढ़ाई करने वाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी का वर्णन। ,,

११ उन छः सामंतों के नाम जो सब सामन्तों में सब से अधिक मान्य थे। ६७४

१२ उक्त छः समन्तों का पराक्रम वर्णन। ६७५

१३ सामतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना। ,,

१४ प्रत्येक सामन्त पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था। ,,

१५ पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मत ठहरा। ६७६

१६ चढ़ाई के लिये बैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना। ,,

१७ मरने के लिये महूर्त साध कर सब वीरों का आनन्द में मतवाला होना। ,,

१८ प्रातःकाल सामन्तों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना। ,,

१९ पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन। ,,

२० सामन्तों की सर्प से उपमा वर्णन। ६७७

२१ सामन्तों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन। ,,

२२ शूर वीर सामन्तों का उत्साह वर्णन। ६७८

२३ फौज की शोभा वर्णन। ,,

२४ पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणी वृद्ध करना। ६७९

२५ सामन्तों की वीरता वर्णन। ,,

२६ युद्ध के लिये प्रस्तुत सूरवीर सामन्तों के बीच में स्थित निढूढुर का बीर मत वर्णन। ६८०

२७ घुड़ सवार शूरबीरों की चाल वर्णन। ६८१

२८ राजा का सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना। ,,

२९ घोड़े की शोभा वर्णन। ९८२

३० शहाबुद्दीन से निस्स्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशसा। ,,

३१ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना। ,,

३२ राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना। ६८३

३३ चावंडराय, जैतसी, लोहाना आजान बाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार खां खुरसान खा पर आक्रमण करना। ,,

३४ उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना। ,,

३५ पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जैचन्द की सहायता लेकर शहाबुद्दीन का राह छेकना। ६८४

३६ मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है। ,,

३७ पृथ्वीराज की राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन। ६८५

३८ युद्ध आरंभ होना। ,,

३९ स्वामि धर्म रत शूरवीर मुक्ति के पथ पर पाव देने को उद्यत थे। ,,

४० दोनों ओर के शूरबीर सामन्तों का पराक्रम और बल वर्णन। ९८९
४१ कन्ह, गोइन्दराय, लंगरीराय, और अत्तताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुसल्मानों की फौज का विचलाना। हासब खां खुरसान खां का मारा जाना। ,,
४२ शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना, शदाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना। ९८७
४३ युद्ध की पावस से उपमा वर्णन। ,,
४४ घोर युद्ध वर्णन। ,,
४५ चालुक्य की प्रशंसा वर्णन। ९८८
४६ जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन। ,,
४७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोर व्यूह रचना। ९८९
४८ न्याजी खां, तत्तार खां, और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना। ,,
४९ युद्ध होते होते रात हो जाना। ९९०
५० छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना। ,,
५१ आधी रात हो जाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसल्मान फौज का पैर उखड़ना। ,,
५२ पीप (पड़िहार) का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना। ९९१
५३ प्रसंगराय खीची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना। ,,
५४ शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना। ९९१
५५ पीपा युद्ध का परिणाम, और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन। ९९२
५६ सुल्तान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन। ,,

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९९ से १०१३ तक)

१ पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना। ९९५
२ पृथ्वीराज का ६४ सामन्तों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना। ,,
३ इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना। ,,
४ इन्द्रावती की छवि वर्णन। ,,
५ पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना। ९९६
६ पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना। ,,
७ ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना। ,,
८ ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना। ,,
९ इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन। ,,
१० उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तय्यारी हो रही थी उसी समय गुज्जरराय का चित्तौर गढ़ घेर लेना। ९९७
११ पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना। ९९८
१२ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को अपना

खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना। ९९८

१३ ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन। ,,

१४ पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना। १०००

१५ प्रधान का उत्तर देना। ,,

१६ पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुडते ही परास्त करूंगा। ,,

१७ पृथ्वीराज का आगे बढ़ना। १००१

१८ रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन। ,,

१९ चालुक्य सेना की सर्प से उपमा वर्णन। ,,

२० पृथ्वीराज की सेवा की पारधि से उपमा वर्णन। ,,

२१ चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना। १००२

२२ दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारम्भ होना। ,,

२३ इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समरसी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना। १००३

२४ पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गजव्यूह रचना रचना। ,,

२५ युद्ध वर्णन। ,,

२६ चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ प्रहर संग्राम करना और उनके १००० वीरों का मारा जाना। १००४

२७ दूसरे दिन तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना। ,,

२८ भोरा राय का नदी उतर कर लड़ाई करना। ,,

२९ घमासान युद्ध वर्णन। १००४

३० समय पाकर रावल समरसिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना। १००५

३१ युद्ध लीला कथन। ,,

३२ सामन्तों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना। १००६

३३ भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उनका नाम ग्राम कथन। ,,

३४ आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैनखां का चालुक्य पर आक्रमण करना। ,,

३५ एक दिन रात और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना। १००७

३६ गुरजर राय भीमदेव का भागना। ,,

३७ कविचद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई। ,,

३८ पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्ज्वल वेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना। ,,

३९ कीर्ति का कहना कि हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं। ,,

४० कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन। १००८

४१ प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना। ,,

४२ गुरुराम का कहना कि वह भोला राय को परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी। ,,

४३ रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना। १००९

४४ रात का युद्ध वर्णन। ,,

४५ पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम। ,,

४६ दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों

का मारा जाना। १००६
४७ पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक्क पर आक्रमण करना। १०१०
४८ प्रभात होते ही युद्ध आरम्भ होना। ,,
४९ दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना। ,,
५० दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते पांच हजार सैनिकों का मारा जाना। १०११
५१ पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक्क का भागना। १०१२
५२ चालुक्क की सब सेना का मारा जाना। ,,
५३ पृथ्वीराज का रण क्षेत्र दृढ़वा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना। ,,
५४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना। ,,
५५ इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना। १०१३

---

(३३) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१९ से १०२९ तक)

१ उज्जैन के राजा भीम का चंद से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा। १०१५
२ कविचंद का कहना कि समय पाय सर्गों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया। ,,
३ भीमदेव का प्रत्युत्तर देना। ,,
४ यह समाचार सुनकर इन्द्रावती का शोकातुर होना। १०१६
५ सखियों का इन्द्रावती को समझाना। ,,
६ इन्द्रावती का उत्तर देना कि मैं राजकुमारी हू मेरा कहा बचन कदापि पलट नहीं सकता। १०१६
७ भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पडे हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते। ,,
८ कविचंद का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है। १०१७
९ भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकडने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरवीर ही नहीं जानते। ,,
१० जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो। ,,
११ भीम का गुरु राम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है। १०१८
१२ गुरु राम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण देकर उत्तर देना। ,,
१३ भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ। ,,
१४ कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना। ,,
१५ भीम का अपने प्रधान से मत्र पूछना। १०१९
१६ मत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए। पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना। ,,
१७ सामन्तों का परस्पर विचार बाँधना। ,,
१८ रघुबस राम पँवार का बचन। ,,
१९ चहुआन की फौज के भीमदेव के गौओं को घेर लेने पर पट्टन पुर में खलभली पड़ना। १०२०
२० चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम

का उसका साम्हना करना। १०२०
२१ भीम का चतुरंगिनी सेना सज कर सन्नद्ध होना। १०२१
२२ रघुवंस का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना। ,,
२३ जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन। ,,
२४ युद्ध विषयक उपमा और अलकारादि। १०२२
२५ सायकाल के समय युद्ध बन्द होना। १०२३
२६ दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामन्तों का पान व्यूह रच कर युद्ध करना। ,,
२७ युद्ध वर्णन। ,,
२८ युद्ध होते होते उत्तरार्ध के सामन्तों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना। १०२४
२९ भीम का सब सामन्तों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों की औषधि करना। ,,
३० इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामन्तों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना की भीमदेव ने विवाह स्वीकार कर लिया है। १०२५
३१ इन्द्रावती का शृंगार वर्णन। ,,
३२ इन्द्रावती का मडप में सखियो सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठ-बंधन होना। १०२६
३३ भीम का चहुआन को भावरी दान वर्णन। ,,
३४ गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा। ,,
३५ पृथ्वीराज का बदियों को दान देना। १०२७
३६ सामन्तों की प्रशसा वर्णन। ,,
३७ विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन। १०२७
३८ दहेज वर्णन। ,,
३९ शुक्ला अष्टमी को सामन्तों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना। ,,
४० उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना। १०२८
४१ लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर, दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है। ,,
४२ पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना। ,,
४३ इन्द्रावती की रहाइस। ,,
४४ सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना। ,,
४५ इन्द्रावती की लज्जामय मद चाल का वर्णन। १०२९
४६ सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना। ,,

---

(३४) जैतराव युद्ध समय।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक।)

१ पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना। १०३१
२ ढाई वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज का खटटू बन म शिकार खेलने को जाना और नीतराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना। ,,
३ पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जन्तुओ की गणना और खटटू बन मे शहाबुद्दीन के दूत का आना। ,,
४ पृथ्वीराज का सामन्तों से सलाह लेना। १०३२

५ शहाबुद्दीन के दूत का बचन। १०३२
६ पृथ्वीराज का कहना की ऐ दीठ वसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राजसुख के लिये कर्तव्य छोड़ना परे है। ,,
७ कहां गजनी है और कहा दिल्ली और कै बार मैंने उसे बदी किया। १०३३
८ ऋतु से उपमा वर्णन। ,,
९ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना १०३४
१० इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना। ,,
११ शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना। १०३५
१२ पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना। ,,
१३ चहुआन सेना में शूर वीरों का उत्साह करना और कायरों का भयभीत होना। ,,
१४ चलते समय सेना का आतंक वर्णन। ,,
१५ शाही सेना की सजावट का वर्णन। १०३६
१६ शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय। ,,
१७ प्रातःकाल होते ही जमसोज खां और नवरोज खां का युद्ध के लिये सेना तयार करना। १०३८
१८ चहुआन का सेना तयार करना। ,,
१९ दोनों सेनाओं का मुहजोड़ होना। ,,
२० युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन। ,,
२१ दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न हो कर सिंहनाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना। १०३९
२२ लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का सामने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। १०४०
२३ पृथ्वीराज का अपनी वीरता से शत्रु सेना को विदार देना। ,,
२४ इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सर्दारों के नाम। ,,
२५ सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन। १०४१
२६ दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तय्यारी होना। ,,
२७ दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन। ,,
२८ शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना। १०४२
२९ शहाबुद्दीन के गिरने पर मलख राज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।
३० जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना। १०४३

---

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०४५ से १०५४ तक।)

१ पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मै कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हू और आप इसका बचन भी दे चुके है। १०४५
२ पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना। ,

३ दूत के वचन सुन कर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को दपटना। १०४५
४ दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना। १०४६
५ इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भान राज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना। ,,
६ युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना। ,,
७ युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना। १०४७
८ पृथ्वीराज का जय पाना। ,,
९ सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना। ,,
१० राजा भान का सोच वश होकर कगुर देवी का ध्यान करना और देवी का आकर कहना कि मै होनहार नहीं मेट सकती। ,,
११ सवेरा होते ही भोटी राजा का मत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना। १०४८
१२ प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिन्ता न करें मै शत्रु का मान मर्दन करूगा। ,,
१३ भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना। ,,
१४ पृथ्वीराज का रघुवशराय और हाहुलीराय हम्मीर को कगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना। १०४९
१५ हाहुलीराय का कहना कि इस दुर्गम वन प्रान्त को सहज ही जीतू गा। ,,
१६ कगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकट पन का वर्णन। ,,
१७ उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां को सुपुर्द करके आप पैदल सेना साहित किले पर चढ़ाई करना। १०५०
१८ नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चाढ़ई करना। ,,
१९ कगुरा दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन। ,,
२० नारेन (पीठ सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना। १०५१
२१ सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना। ,,
२२ युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन। ,,
२३ अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना। १०५३
२४ सब सामन्तों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सबका गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना। ,,
२५ सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवश का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री ब्याहना। ,,
२६ नियत तिथि पर ब्याह होना। ,,
२७ भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन। १०५४
२८ भोटी राज की तरफ़ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना। ,,

—o—

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक।)

१ पृथ्वीराज का शिकार के लिये पट्टनपुर को जाना। १०५५

२ रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चन्देरी में शिशुपाल वंशी पंचाइन नाम राजा राज्य करता था। १०५५
३ हंसावती की शोभा का वर्णन। ,,
४ चन्देरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ के दूत भेजना। १०५६
३ चन्देरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना। ,,
५ रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चन्देरीपति से युद्ध करूंगा, उसके घुड़कने से नहीं डरता। ,,
६ चन्देरी पति का कुपति होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना। १०५७
७ चन्देरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदद के लिये। ,,
८ स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया। ,,
९ जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं। ,,
१० भानुराय जदव का वसीठ की बात न मानना। १०५८
११ वसीठ का लौट कर चन्देरीपति की फौज में जा पहुंचना। ,,
१२ पचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरी खां हुजाब खां आदि सर्दारों का आना। ,,
१३ दोनों घन घोर सेनाओं सहित चन्देरी के राजा का आगे बढ़ना। ,,
१४ चन्देरीराज की चढ़ाई का वर्णन। ,,
१५ रणथंभ पति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना। १०५९
१६ भानराय को पृथ्वीराज का पत्र लिखना। १०५९
१७ उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समरसिंह जी के पास कन्ह को भेजना। ,,
१८ कन्ह का समर सिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना। ,,
१९ समर सिंह जी का सेना तय्यार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे। १०६०
२० तथा यहां से रणथंभ केवल ६५ कोस है इस लिये तुमसे आगे जा पहुंचेंगे। ,,
२१ कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली से १३ को चले हैं और राजा भान पर बड़ी विपत्ति है। ,,
२२ समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कहके पलटें। ,,
२३ समर सिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना। १०६१
२४ कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा। ,,
२५ दसमी सोमवार को समरसिंह जी की यात्रा का मुहूर्त वर्णन। ,,
२६ यात्रा के समय समरसिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन। ,,
२७ सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समरसिंह जी का आना। १०६२
२८ पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पडाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी। १०६३
२९ किले और आस पास की रणभूमि की पत्ती से उपमा वर्णन। १०६४

३० उस युद्धि भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन। १०६४
३१ चन्देरी की सेना और रुस्तम खां के बीच में रावल समरसिंह जी का घिर जाना। १०६५
३२ पृथ्वीराज का रावल की मदद करना। "
३३ रणथभ के राजा भान का समरसिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छू कर भेंट करना। "
३४ समरसिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिलकर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना। "
३५ चन्देरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के वीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन। १०६६
३६ युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना। १०६७
३७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना। "
३८ युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप। "
३९ हसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन। १०६८
४० सेना के बीच में समरसिंह की शोभा वर्णन। "
४१ प्रातःकाल होते ही समरसिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना। "
४२ समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन। "
४३ युद्ध वर्णन। १०६९
४४ समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना। १०६६
४५ चन्देरी की सेना का तुमुल युद्ध करना। "
४६ रावल समरसिंह जी और चन्देरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पचाइन) का मारा जाना। १०७०
४७ युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़का मुक्त होना। हुसेन खां और कन्हराय का घायल होना। "
४८ पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द-वदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना। १०७१
४९ पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आप की भविष्य स्त्री हसावती है, कहिए तो मै उसका स्वरूप रंग कह डालू। "
५० हसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि अवस्था की सुषमा और उसके लालित्य का वर्णन। "
५१ पृथ्वीराज उक्त बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना। १०७२
५२ और उक्त रणथभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन। १०७३
५३ लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वी-राज का बारु बन को शिकार खेलने के लिये जाना। "
५४ पृथ्वीराज के बारूबन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना। "

५५ सारंगदेव का कहना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है। १०७३
५६ सारंगराय का नागौद के पास मगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिलकर उसे अपने कपट मत में बाँधना। १०७४
५७ सारंगराय का पृथ्वीराज और समर सिंह जी के पास न्योता भेजना। १०७५
५८ यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट चक्र रचना। ,,
५९ हाडाराव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिलकर शिष्टाचार करना। ,,
६० कवि का हाड़ा राव पर कटाक्ष। ,,
६१ पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अशकुन होना। ,,
६२ ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना। १०७६
६३ उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ। ,,
६४ सारंगदेव के सिपाहियों का सब को घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका सामना करना। ,,
६५ रावल जी और भीम भकुटी का द्वन्द युद्ध। ,,
६६ पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना। १०७७
६७ घोर घमासान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना। ,,
६८ रामराय बडगूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना। १०७८
६९ कविचन्द द्वारा युद्ध एवं सारंगदेव के कुकृत्य का परिणाम कथन। ,,
७० पज्जूनराय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना। १०७९
७१ इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत, और पन्द्रह भारी योद्धा काम आए। ,,
७२ रेन पंवार (सामत) की प्रशंसा। ,,
७३ रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्रभाव से पेश आना। १०८०
७४ तेरह तोमर, सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए। ,,
७५ हुसेन खां का अमर सिंह की बहिन को पकड लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना। ,,
७६ रावल समर सिंह जी की प्रशंसा और सारंगदेव का उनको अपनी बहिन व्याह देना। १०८१
७७ आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है। ,,
७८ पुमान और 'प्रसगराय' खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना। ,,
७९ पृथ्वीराज का रणथंभ व्याहने जाना। १०८२
८० पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन। ,,
८१ पृथ्वीराज का आगमन सुन कर उन्हें देखने की इच्छा से हसावती का झरोखे से झांकना। ,,
८२ गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन। १०८३
८३ हसावती के शृंगार की तय्यारी। ,,
८४ हसावती की अवस्था की सूक्ष्मता का वर्णन। ,,
८५ हसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन। ,,

८६ नेत्रों की शोभा वर्णन। १०८४
८७ हंशावती के स्नान समय की शोभा। ,,
८८ हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।
८९ हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन। १०८७
९० हंसावती के केशर कलित हाथ पावों की शोभा वर्णन। ,,
९१ पृथ्वीराज का विवाह मंडप में प्रवेश। ,,
९२ पृथ्वीराज के रत्न जटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन। १०८८
९३ हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना। ,,
९४ पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुल्लित होना। ,,
९५ पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठ-बन्धन होना। ,,
९६ हसावती के अंग प्रत्यग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन। ,,
९७ इसी समय दिल्ली पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना और ५० सामन्तों का उस आक्रमण को रोकना। १०८९
९८ पृथ्वीराज के सामन्तों और मुस-ल्मान सेना का युद्ध वर्णन। ,,
९९ दूसरे दिवस प्रातःकाल सुरतान खां का आक्रमण करना। १०९०
१०० हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन। ,,
१०१ तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तय्यार होना। १०९१
१०२ थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुस-ल्मान सेना के पैर उखड़ गए। ,,
१०३ युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असबाब हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना। ,,
१०४ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आप का बहुत ही अनुगृहीत हूं। १०९२
१०५ पृथ्वीराज का रावल समरसिंह के पुत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना। ,,
१०६ समर सिंह का उस पट्टे को अस्वी-कार लौटा देना। ,,
१०७ समर सिंह का चित्तौर जाना। १०९३
१०८ पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त होजाना। ,,
१०९ हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन। ,,
११० मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना। १०९४
१११ हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना। ,,
११२ शनैः शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना। ,,
११३ हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना। ,,
११४ दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये। १०९५
११५ पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना। ,,

११६ शीतकाल की बढती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना। १०९५
११७ हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निशि मस्त रहते थे। १०९६
११८ इस समय की कथा का अन्तिम परिणाम वर्णन। ,,
११९ समरसिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन। १०९७

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

१ कविचन्द की स्त्री का पूछना कि पहाड राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा। १०९९
२ शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है। ,,
३ तत्तार खां का उत्तर देना। ,,
४ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना। ,,
५ दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्त्रों मुसल्मान सेना का सज कर इकट्ठा होना। ११००
६ समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पडाव डालना। ,,
७ शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम। ,,
८ सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य्य के लिये प्रस्ताव करना। ११
९ विनेड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना। ,,
१० खुरसान खां का राजनीति कथन। ११०२
११ बादशाह का (लोरकराय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना। ,,
१२ दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तय्यारी होना। ११०४
१३ दूत का दिल्ली पहुचना। ,,
१४ दूत का धर्म्मायन से मिलना। ,,
१५ धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना। ,,
१६ धर्म्मायन का दर्बार में जाकर वह पत्री कैमास को देना। ,,
१७ शहाबुद्दीन की पत्री का लेख। ११०५
१८ धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना। ,,
१९ कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना। ,,
२० पत्री सुन कर पृथ्वीराज का सामन्तों की सभा करना। ,,
२१ पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामन्तों को समझाना। ,,
२२ सामन्तों का उत्तर देना। ११०६
२३ पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ युद्ध चलना। ,,
२४ कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन। ,,
२५ पृथ्वीराज का पडाव डालना। ११०७
२६ अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना। ,,
२७ हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना। ,,
२८ शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना। ,,
२९ सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना। ,,

३० दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना। ११०७
३१ दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन। ११०८
३२ हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उसके अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन। ,,
३३ दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना। ११०९
३४ युद्ध का दृश्य वर्णन। १११०
३५ सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना। ,,
३६ प्रातःकाल होते ही इधर से जैसाम का और शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना। ,,
३७ सूर्य्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जै जैकार शब्द करना। १११९
३८ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना। ,,
३९ दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना। ,,
४० युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन। १११२
४१ योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूर वीरों का वीरता के साथ प्राण देना। ,,
४२ युद्ध रूपी समुद्र मथन की उक्ति वर्णन। १२१४
४३ इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन। १११४
४४ युद्ध होते होते रात्रि हो गई। १११५
४५ उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोंमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना। १११५
४६ पहाड़ राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन। ,,
४७ दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना। १११६
४८ तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ। ,,
४९ चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन। ,,
५० मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के ऊपर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना। १११७
५१ मुसल्मान सेना का घबरा कर भाग उठना। ,,
५२ अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना। १११८
५३ सुल्तान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दण्ड लेकर उसे छोड़ देना। ,,

---

(३८) वरुण कथा।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक।)

१ सोमेश्वर सामारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे। १११९
२ चन्द्रग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित जमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना। ,,

३ सोमेश्वर जी के साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन। ११११६
४ उक्त समय पर पूर्णिमा की शोभा वर्णन। ११२०
५ अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना। ११२१
६ वरुण के वीरों का जागृत होना। ,,
७ इधर सामत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे। ,,
८ वीरों का गहरे जल में शब्द करना। ,,
९ जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन। ,,
१० सामन्तों का ग्राव पर चला जाना। ११२२
११ जल वीरों के उछालने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन। ,,
१२ जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन। ,,
१३ जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामतों का भयभीत न होना। ११२३
१४ वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामतों का भय दिखाना। ,,
१५ वीरों का राजा सहित सामतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना। ,,
१६ सामतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना। ,,
१७ इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरों का बल कम होना और सामतों का जोर बढ़ना। ११२४
१८ प्रातःकाल के बालसूर्य की प्रतिभा वर्णन। ,,
१९ सूर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामन्तों का मूर्छित होना। ११२५
२० सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना। ,,
२१ निज पिता एवं सामन्तों की ऐसी दशा देखकर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना। ,,
२२ यमुना के सम्मुख हाथ बांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना। ,,
२३ यमुना जी की स्तुति। ,,
२४ स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना। ११२६
२५ सोमेश की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्म ज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना। ११२७
२६ इस प्रकार मूर्छा जागने पर पृथ्वीराज का गंधर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना। ,,
२७ पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना। ११२८
२८ सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज जी का राजमहल में आना। ,,

---

[३९] सोमवध समय।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

१ भीमदेव की इच्छा ११२९
२ भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ,,
३ सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए। ११३०
४ भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा। ,,
५ भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

६ भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य। ११३०
७ भोलाराय भीम का साम दाम दण्ड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना। ११३२
८ मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए। ,,
९ राज्य प्राप्त करने की लालसा में गत भीषण घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण। ११३३
१० पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना। ,,
११ भोलाराय का सेन सजकर तय्यारी करना। ,,
१२ सेना के जुड़ाव का वर्णन। ,,
१३ भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना। ११३४
१४ कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मत देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते। ,,
१५ सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना। ,,
१६ सेना समूह का क्रम वर्णन ,,
१७ उक्त सेना समूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन। ,,
१८ इसी अवसर में मुख्य सामन्तों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामन्तों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना। ११३५
१९ पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामन्तों का भी चला जाना जिनके भुज बल के आश्रित दिल्ली नगर था। ,,
२० उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तय्यारी का वर्णन। १३३६
२१ इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना। ,,
२२ सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन। ,,
२३ सैनिकों का उत्साह, सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन। ११३७
२४ युद्ध आरम्भ होना। ,,
२५ कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति का व्याख्यान। ,,
२६ कन्ह की आखों की पट्टी खुलना। ११३८
२७ दोनों हिन्दू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन। ,,
२८ कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन। ,,
२९ कन्हराय का कोप। ११३९
३० अपनी सेना को छितर बितर देखकर भीमदेव का रोष में आकर स्वयं युद्ध करना। ११४०
३१ कन्ह और भीमदेव का परस्पर घोर युद्ध होना। ,,
३२ कवि की उक्ति। ,,
३३ युद्ध स्थल की उपमा वर्णन। ११४१
३४ कन्हराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना। ,,
३५ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध। ,,
३६ जामराय यादव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन। ११४२
३७ उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैलों से उपमा वर्णन। ,,
३८ इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं

का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना ११४३
३६ सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन। ,,
४० भीमदेव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना। ,,
४१ सोमेश्वर जी की तरफ से कछवाहे वीरों का मारा जाना। ,,
४२ भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना। ११४४
४३ उस समय चहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड कर युद्ध करना। ,,
४४ सोमेश्वर और भीमदेव का साम्हना होना। ,,
४५ भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना। ११४५
४६ अपना मरण निश्चय जानकर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना। ११४६
४७ सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोडे पदाती एव रावत सामन्तों की सख्या कथन। ११४७
४८ सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना। ,,
४६ सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली। ,,
५० पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुनकर भूमि शय्या धारण करना और पोडसी आदि मृत्यु कर्म करना।
५१ पृथ्वीराज का भूमि, गो, स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा। ११४८
५२ पृथ्वीराज का भोराराय पर चढाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठने का मंत्र देना। ११४८
५३ पृथ्वीराज का राज्याभिषेक। ,,
५४ पृथ्वीराज का दर्बार मे बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना। ११४६
५५ पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दर्बार में नृत्य गान होना। ,,
५६ दर्बार में सब सामन्तों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन। ११५०
५७ इच्छनी से गठबधन होकर पृथ्वीराज का कुलाचार सम्बन्धी पूजन विधान करना। ११५१
५८ पृथ्वीराज का राजगद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामन्तों का टीका करना। ,,
५६ पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन। ११५२

---

[४०] पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मत्यु पर दिल्ली आना। ११५३
२ पज्जूनराय कछवाहे की पट्टन के सग्राम में बीरता वर्णन। ,,
३ पृथ्वीराज का पज्जूनराय के सिर पर छोंगा बाँध कर लडाई पर जाने की आज्ञा देना। ,,
४ दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिगर के किले मे है और यहां पर पज्जूनराय का चढाई करना। ११५४
५ पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन। ,,

६ पज्जूनराय का घेरा डालना। मलयसिंह का मुकाबला करना। ११५५
७ पज्जूनराय का चाबुक भूल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जाना। ,,
८ चालुक सेना का पीछा करना और पज्जूनराय का उसे परास्त करना। ,,
९ छोंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलयसिंह और पज्जूनराय की कीर्ति का स्थापित होना। ११५६
१० पज्जूनराय का पृथ्वीराज को छोंगा नजर करना। ,,
११ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को ही छोंगा दे देना और एक घोडा और देना। ,,
१२ चन्द कवि की उक्ति से पज्जूनराय के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा। ,,

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

१ जैचंद के उभाडने से बालुकाराय सौलकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना। ११५७
२ दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना। ,,
३ पृथ्वीराज का विचार करना कि पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है। ,,
४ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना ११५८
५ पृथ्वीराज का सभा में बीडा रखना और किसी का बीडा न उठाना सब का पज्जूनराय की प्रशंसा करना। ,,
६ पज्जूनराय का भरी सभा में बीडा उठा कर दोनों शत्रुओं के ध्वस करने की प्रतिज्ञा करना। ,,
७ सुल्तान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊंट से उपमा वर्णन। ११५८
८ पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना। ११५९
९ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना। ,,
१० चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचो भाइयों का साथ होना। ,,
११ पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन। ,,
१२ पज्जूनराय के कूच की तिथि वर्णन। ११६०
१३ पज्जूनराय की कृत बीरताओं का वर्णन। ,,
१४ पज्जूनराय की चढ़ाई का आतंक वर्णन। ,,
१५ पज्जूनराय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुचना। ,,
१६ कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून का सामना होना। ११६१
१७ दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक वर्णन। ,,
१८ पज्जून सेना के व्यूह बध्य होने का स्पष्टीकरण। ,,
१९ युद्ध की तिथि। ,,
२० पज्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना। ११६२
२१ इस युद्ध मे पज्जूनराय के भाइयो का मारा जाना। ,,
२२ पज्जूनराय की जीत होना, और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना। ,,
२३ पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा। ११६३

२४ पज्जूनराय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना। ११६३

[४२] चंद द्वारिका समयौ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

१ कविचंद का द्वारिका को जाना। ११६५
२ कविचंद का यात्रा समय का साज सामान और उसके साथियों का वर्णन। ,,
३ चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना। ,,
४ चित्तौरगढ की स्थापना का वर्णन। ११६६
५ चित्रकोट गढ की पूर्व कथा। ,,
६ उक्त मोरी का गोमुप कुंड बनवाना। ,,
७ एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खा लेना। ,,
८ सिंहनी की पूर्व कथा। ,,
९ कविचंद का आना सुनकर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना। ११६७
१० कवि का चित्तौर जाना। ११६८
११ कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना। ,,
१२ कन्ह अमरसिंहादि सामन्तों का पृथा कुमारी को उपहार देना। ११६९
१३ चन्द का चित्तौर से चलना। ,,
१४ द्वारिकापुरी में पहुच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना। ,,
१५ कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति। ११७०
१६ देवी की स्तुति। ,,
१७ कवि का होम करके ब्राह्मण भोजनादि कराना। ११७१
१८ द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का माहात्म्य। ,,
१९ द्वारिकापुरी से लौटकर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना। ११७२
२० पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन। ,,
२१ पट्टनपुर के आनन्द मय नगर और वहा की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन। ११७३
२२ राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना। ,,
२३ भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना। ११७४
२४ जगदेव का कविचन्द से मिलना। ,,
२५ जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशसा करना। ,,
२६ कविचंद का पृथ्वीराज की कीर्त्ति का उच्चार करना। ११७५
२७ जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ। ,,
२८ भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना। ११७६
२९ कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना। ,,
३० कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना। ,,
३१ कविचन्द और अमरसिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना। ११७७
३२ भीमदेव का अपने महल को लौट जाना। ,,
३३ कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना। ,,

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

१ एक समय शहाबुद्दीन का तत्तारखां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना । ११७९

२ तत्तार खां का बचन । ,,

३ कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन । ,,

४ शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना । ११८०

५ दिल्ली से गुप्तचर का आना । ,,

६ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना । ,,

७ शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना । ,,

८ शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुचना । ११८१

९ पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना । ,,

१० पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतों के नाम कथन । ११८२

११ शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम । ,,

१२ दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना । ११८३

१३ पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन । ,,

१४ शहाबुद्दीन की सेना का पृथूदवन की तरफ कूच करना । ११८४

१५ शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना । ,,

१६ पृथ्वीराज का चाबंडराय की प्रशंसा करना और प्रातःकाल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना ,,

१७ शाह का मुकाम, लाड़न में सुनकर पृथ्वीराज का पंचासर में डेरा डालना । ११८५

१८ कैमास को शाह के प्रातःकाल पहुचने की खबर मिलना । ,,

१९ पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बांधना । ,,

२० पृथ्वीराज की पंच अनी सेना का वर्णन । ,,

२१ शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी मे सजे जाने की आज्ञा देना । ११८६

२२ रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना । ११८७

२३ युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन । ,,

२४ अनीपति योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध । ११८८

२५ द्वादसी का युद्ध । ,,

२६ पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामड राय का पराक्रम । ११८९

२७ चार यवन सर्दारों का मिलकर चामडराय पर आक्रमण करना । ,,

२८ कैमास का चामडराय की सहायता करना । ११९०

२९ चामडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना । ,,

३० लाल खां का वर्णन । ,,

३१ लाल खां का मारा जाना । ११९१

३२ कैमास और चामडराय का वार्तालाप । ,,

३३ कैमास का युद्ध वर्णन । ११९२

३४ मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में

घमासान युद्ध होना। ११९२
३५ द्वादशी का युद्ध वर्णन। ११९३
३६ दोनों सेनाओं के मुखिया सर्दारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन। ११९४
३७ अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढाना। "
३८ शाह के आगे बढने पर यवन सेना का उत्साह बढना। ११९५
३९ शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामतों को घायल करना। "
४० कैमास और चामडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सर्दारों का रक्षा करना। ११९६
४१ चक्रसेन का मारा जाना। "
४२ चक्रसेन का वश और उसका यश वर्णन। "
४३ त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना। "
४४ कैमास और चामडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना। ११९७
४५ दोनों भाइयों का शाह को पकड कर पृथ्वीराज के पास लेजाना। "
४६ कैमास का रणक्षेत्र में से घायल और मृतकवतों को हटवाना। ११९८
४७ रण में मृत्यु होने की प्रशसा। "
४८ पृथ्वीराज का दण्ड लेकर मुल्तान को छोड देना और वह दड सामन्तों को बाट देना। "

— o —

[४४] भीम बध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंव प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य देना। ११९९
२ पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के वचन। "
३ पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना। १२००
४ प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामन्त और सैनिकों की सभा करके अपने वैर लेने का पण उनसे कहना। "
५ ज्योतिषी का गुजरात पर चढाई के लिये मुहूर्त साधन करना। १२०१
६ ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना। "
७ पृथ्वीराज का लग्न साधकर अपना तय्यारी करना। १२०२
८ पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिशा को कूच करना। १२०३
९ राजा के साथ सैन्य सहित निटुरराय का आन मिलना। "
१० पृथ्वीराज की तय्यारी का जान, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तय्यारी करना। "
११ भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज का मिलना। १२०४
१२ पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा। १२०५
१३ पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढना। "
१४ पृथ्वीराज का गहन वन में पडाव पडना। "
१५ कैमासादि सब सामन्तों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना। १२०६
१६ एक प्रहर रात्रि रहने में शिकार किए जाने की सलाह। "
१७ कवि का रात्रि को स्वप्न देखना

और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा। १२०६
१८ स्वप्न का फल। १२०७
१९ सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन। ,,
२० राजा के स्वप्न का फल। १२०८
२१ कन्ह के ज्ञानमय बचन। ,,
२२ पृथ्वीराज का मेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना। ,,
२३ बन में खबर भर होतेही एक भूखे सिंह का निकलना। १२०९
२४ सिंह का वर्णन। ,,
२५ सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना। ,,
२६ कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना। १२१०
२७ कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा। ,,
२८ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामन्तों सहित राजा का आगे कूच करना। ,,
२९ कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन। १२११
३० पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक चुल्ल भेजना। १२१२
३१ चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्तिपूर्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है। ,,
३२ भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे सम्मुख आवे। १२१३
३३ चन्द का भीमदेव के दर्बार से कुपित होकर चला आना। १२१४
३४ भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चन्द के पास भेजकर अपनी तय्यारी की सूचना देना। १२१४
३५ जगदेव बचन। ,,
३६ चन्द बचन। ,,
३७ जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुनकर भीमदेव के पास फिर जाना। १२१५
३८ पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना। ,,
३९ निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना। ,,
४० निढ्ढुर का कन्हराय की प्रशंसा करना। ,,
४१ पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना। १२१६
४२ निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना। ,,
४३ पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना। ,,
४४ कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना। ,,
४५ निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना। ,,
४६ सेना का सज कर आगे बढ़ना। १२१७
४७ चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठ भेड होना। ,,
४८ भीमदेव के घोड़े की चचलता का वर्णन। ,,
४९ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिडना और उनका विषम युद्ध। ,,
५० कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना। १२१८
५१ मकवाना का मारा जाना। १२१९

५२ सामन्तों का पराक्रम और शूर वीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा। १२१९
५३ रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन। १२२०
५४ प्रमगराय खींची का पराक्रम वर्णन। ,,
५५ भीमदेव की फौज का विचलना। १२२१
५६ शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा। ,,
५७ परस्पर घमासान युद्ध का दृश्य वर्णन १२२२
५८ कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अधगति होती है। ,,
५९ पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना। १२२३
६० कन्ह की तलवार की प्रशंसा। १२२५
६१ चहुआन के पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना। ,,
६२ पृथ्वीराज के सामंतों की प्रशंसा। ,,
६३ सायंकाल के समय युद्ध का बन्द होना। ,,
६४ प्रभात समय की शोभा वर्णन। ,,
६५ रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें हटी गई। १२२६
६६ युद्ध में मरे हुए शूर वीर और हाथी घोड़ों की संख्या। ,,
६७ संसार की असारता का वर्णन। १२२७
६८ गुजरात पर चढ़ाई करके एक साल में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना। ,,

(४५) संयोगिता पूर्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

१ पृथ्वीराज का इन्द्र प्रति वचन। १२२९
२ इन्द्र का उत्तर देना। ,,
३ तदनुसार राम रावण युद्ध। १२२९
४ राम रावण युद्ध का आतंक। ,,
५ मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन। १२३२
६ राम रावण का युद्ध। १२३३
७ रामचन्द्र जी की उदारता। १२३४
८ इन्द्र का वचन। ,,
९ इन्द्र का एक गन्धर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले। ,,
१० कन्नौज की शोभा वर्णन। १२३५
११ गन्धर्व की स्त्री का उसमें संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा पूछना।
१२ गन्धर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है। ,,
१३ कविचन्द का अपनी स्त्री में संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना। ,,
१४ शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन। ,,
१५ एक सुन्दर स्त्री को देखकर ऋषि का चित्त चंचल होना। १२३६
१६ उक्त स्त्री का सौन्दर्य वर्णन। ,,
१७ परन्तु ऋषि का अपने मन को साध कर बदरिकाश्रम पर्य्यन्त पर्य्यटन करके घोर तप करना। १२३७
१८ ऋषि के तप का तेज वर्णन और इससे इन्द्र का भयभीत होना। ,,
१९ इन्द्र का अप्सराओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भंग करें। ,,
२० अप्सराओं का सौन्दर्य्य वर्णन। १२३८
२१ मंजुघोषा का सुमन्त ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना। ,,

५६ इन्द्राणी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना। १२५३
५७ अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना। ,,
५८ अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना। १२५४
५९ उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कन्नौज के राजा के घर जन्म लेना। ,,
६० कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना। १२५५
६१ समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोमवंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना। ,,
६२ मुकुंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना। ,,
६३ विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना। १२५६
६४ सेतबन्दरामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना। ,,
६५ दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना। १२५७
६६ विजयपाल की दिग्विजय में पाई हुई जयचन्द की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना। ,,

---

४६] विनय मंगल प्रस्ताव।

पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

अप्सरा के संयोगिता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन। १२५९
२ शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना। ,,
३ संवत् ११३३ में संयोगिता का जन्म वर्णन। ,,
४ संयोगिता का दिन प्रति दिन बढ़ना और आयु के तेरहवें वर्ष में उस के शरीर में कामोद्दीपन होना। १२६०
५ संयोगिता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना। ,,
६ संयोगिता के सौन्दर्य्य की बड़ाई। ,,
७ संयोगिता का भविष्य होनहार वर्णन। ,,
८ संयोगिता प्रति जयचन्द का स्नेह। १२६२
९ संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि। ,,
१० संयोगिता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना। ,,
११ योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन। १२६३
१२ संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना। ,,
१३ एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना। ,,
१४ ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना। १२६४
१५ संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना। १२६५

२२ मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन। १२३८
२३ अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि चणेक के लिये डगमगाई। १२३६
२४ अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्तव्य विचारना। ,,
२५ तब तक से पुनः ऋषि का अखंड रूप से ध्यानमग्न होना। १२४०
२६ मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन। ,,
२७ वाद्य बजना और अप्सरा का गाना। ,,
२८ मुनि का समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना। १२४१
२९ अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना। ,,
३० मुनि का मूर्छित हो जाना, परन्तु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना। ,,
३१ कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौन्दर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना। १२४२
३२ अप्सरा का नख सिख वर्णन। ,,
३३ अप्सरा के सर्वाङ्ग सौन्दर्य्य की प्रशंसा। १२४३
३४ कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है। ,,
३५ अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमन्त ऋषि के पास आना। १२४४
३६ अप्सरा के योगिनी वेष की शोभा वर्णन। ,,
३७ मुनि का छद्म वेष धारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना। १२४५
३८ तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन। १२४५
३९ अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना। १२४७
४० इसी अवतारों का संक्षिप्त वर्णन। ,,
४१ अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो। ,,
४२ नृसिंहावतार का वर्णन। ,,
४३ मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना। १२४८
४४ अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझ से नहीं। ,,
४५ उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना। ,,
४६ मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना। ,,
४७ जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना। १२४९
४८ सुमंत का लज्जित होना और जरज मुनि का उसे धिक्कारना। ,,
४९ जरज मुनि के शाप का वर्णन। ,,
५० अप्सरा का भयभीत होकर जरज मुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना। ,,
५१ अप्सरा के स्वर्ग से पात होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दर्बार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना। १२
५२ विष्णु का सनत्कुमारों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।
५३ हिरणाक्ष हिरनाकुश बध। १
५४ रावण और कुम्भकर्ण बध।
५५ त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना।

१६ अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ । १२६६
१७ विनय मगल की भूमिका । ,,
१८ पति का गौरव कथन । १२६७
१९ स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना । ,,
२० पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना । ,,
२१ विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा । ,,
२२ सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते है । १२९८
२३ मान एव गर्व की अयोग्यता और निन्दा । ,,
२४ विनय का गौरव । १२६९
२५ विनय की प्रशसा उस के द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन । ,,
२६ उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक सक्षेप आख्यान । १२७०
२७ स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता । ,,
२८ विनय हीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती । ,,
२९ एक मात्र विनय की प्रशसा और उपयोगिता वर्णन । १२७१
३० इति विनय मगल काड समाप्त । १२७३
३१ ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से सयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना । ,,
३२ दुर्जा का दुज से कथा कहने को कहना । ,,
३३ दुज का उत्तर । ,,
३४ पृथ्वीराज का वर्णन । ,,
३५ कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रा मग्न हो जाना । १२७४

[४६] सुक वर्णन ।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

१ सयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश । १२७५
२ शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना । ,,
३ शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना । ,,
४ ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना । ,,
५ दुज का पृथ्वीराज से सयोगिता के विषय में चर्चा करना । ,,
६ सयोगिता के जन्म पत्र के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन । १२७६
७ छः महीने में विनय मगल प्रकरण का समाप्त होना । १२७७
८ विनयमगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का सयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना । ,,
९ अनगपाल के हृदय में वैराग उत्पन्न होने का वर्णन । ,,
१० मत्रियों का अनगपाल को राज्य देने के लिये मना करना । ,,
११ अनगपाल का पृथ्वीराज को राज्य दे देना । १२७८
१२ पृथ्वीराज की कूट नीति से प्रजा का दुखित होकर अनगपाल के पास जाना । ,,
१३ अनगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना । ,,
१४ दसों दिशाओं में सुविस्तित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना । १२७९
१५ सयोगिता का वर्णन । ,,

१६ बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयः सन्धि अवस्था होती है उसका वर्णन। १२७६
१७ स्त्रियों के यौवन से वसन्त ऋतु की उपमा वर्णन। १२८०
१८ सयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता। १२८१
१६ सयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन ,,
२० ब्राह्मण के मुख से सयोगिता के सौन्दर्य्य की कथा सुन कर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना। १२८३
२१ पृथ्वीराज की कामवेदना और सयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन। १२८४
२२ सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुचना। ,,
२३ यहा पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशसा करना। ,,
२४ पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन। ,,
२५ उक्त वर्णन सुन कर सयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना। १२८५
२६ पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन। ,,
२७ ब्राह्मण का कहना कि चहुआन अद्वितीय पुरुष है। १२८६
२८ सयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना। ,,
२६ सयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना। १२८७
३० वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन। ,,
३१ निर्जन बन में यज्ञों के एक उपवन का वर्णन। ,,
३२ पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना। १२८७
३३ यज्ञ यज्ञिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप। १२८६
३४ यज्ञ का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हो। ,,
३५ पृथ्वीराज का वहा पर नाना भाति की सुख सामग्री मगवा कर प्रस्तुत करना। ,,
३६ गन्धर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना १२६०
३७ अप्सराओं का दिव्य रूप और शृगार वर्णन। ,,
३८ पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गधर्व का उन्हें एक सर्व सिद्धि कवच देना। १२६१

—:o:—

[४८] बालुकाराय समय।

(पृष्ठ १२६३ से पृष्ठ १३२६ तक)

१ राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्य्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमत्रण भेजा जाना। १२६३
२ यज्ञ की सामग्री का वर्णन। ,,
३ यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना। १२६४
४ जयचन्द का प्रताप वर्णन। ,,
५ जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य देने के लिये सदेसा भेजने की इच्छा करना। ,,
६ जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये सदेसा। १२६५
७ जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढना और

मन्त्री सुमन्त का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना। ,,
८ जयचन्द का मन्त्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना। १२९७
९ मन्त्री का स्वामी की आज्ञा मान कर दिल्ली को जाना। ,,
१० सुमन्त का दिल्ली पहुचना। १२९८
११ पृथ्वीराज का सुमन्त का यथोचित सत्कार और सम्मान करना। ,,
१२ मन्त्री सुमत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना। ,,
१३ सुमन्त की बातें सुनकर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना। १२९९
१४ सामन्तों की सत्कीर्ति। ,,
१५ जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना। ,,
१६ कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिलकर जयचन्द का संदेसा कहना। १३००
१७ पृथ्वीराज के सामन्तों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नाहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना। ,,
१८ कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना। १३०१
१९ दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और बालुकाराय को उसे समझाकर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना। ,,
२० संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का सचार होना। १३०३
२१ संयोगिता का सखियों सहित क्रीडा करते हुए उसकी मानसिक एव दैहिक अवस्था का वर्णन। ,,
२२ संयोगिता का वय और उसके स्वाभाविक सौन्दर्य्य का वर्णन। १३०४
२३ संयोगिता के यौवन काल की वसन्त ऋतु से उपमा वर्णन। ,,
२४ पृथ्वीराज का अपमान हुआ जानकर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही विवाह करने का पण करना। १३०५
२५ अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुन कर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामन्तों से सलाह करना १३०६
२६ सब सामन्तों का अपना अपना मत प्रकाशित करना। ,,
२७ जयचन्द के भाई बालुकाराय को मारने के लिये तैय्यारी होना। १३०७
२८ कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामतों का कहना कि कन्नौज पर ही चढाई की जाय। ,,
२९ कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वस किया जा सकता है। १३०८
३० दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना। ,,
३१ ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना। १३०९
३२ उक्त नियत तिथि पर तय्यारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोडे देना। ,,
३३ पृथ्वीराज के कूच के समय की ओजस्व और शोभा वर्णन। १३११
३४ तय्यारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन। १३१२

३५ सेना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना। १३१२
३६ बालुकाराय का परदेश की तरफ यात्रा करना। ,,
३७ पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जानेवाले योद्धाओं का वर्णन। ,,
३८ बालुकाराय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना। १३१३
३९ चहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन। ,,
४० पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना। १३१४
४१ पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुन कर बालुकाराय का आश्चर्यान्वित और कुपित होना। ,,
४२ पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुकाराय का सेना सजना। १३१५
४३ बालुकाराय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना। ,,
४४ चहुआन से युद्ध करने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन। ,,
४५ चहुआन राय की सेनसंख्या। १३१६
४६ दोनों सेनाओं की परस्पर देखा देखी होना। ,,
४७ बालुकाराय की सुसज्जित सेना को देख कर चहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना। ,,
४८ दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन। १३१७
४९ बालुकाराय का युद्ध करना। ,,
५० बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन। ,,
५१ बालुकाराय का रणकौशल। १३१८
५२ सूरता की प्रशंसा। ,,
५३ बालुकाराय का विराजना और उसका पराक्रम। १३१९
५४ युद्ध स्थल का चित्र दर्शन। ,,
५५ बालुकाराय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना। ,,
५६ पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन। १३२०
५७ बालुकाराय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना। ,,
५८ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। १३२१
५९ कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना। १३२२
६० बालुकाराय के मारे जाने पर उसके वीर योद्धाओं का जूझजाना। १३२३
६१ बालुकाराय की राजधानी का लूटा जाना। ,,
६२ बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन। १३२४
६३ बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन। ,,
६४ बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन। ,,
६५ जयचन्द की सेना और मुसल्मानी सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना। ,,
६६ पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति। १३२५
६७ दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना। ,,
६८ चहुआन और मुसल्मान सेना का घोर युद्ध। १३२६
६९ कन्नौज की सेना का भागना और

पृथ्वीराज की जीत होना। १३२६
७० बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न। १३२७
७१ बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता। ,,
७२ पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना। १३२६
७३ गत घटना का परिणाम वर्णन। ,,
७४ बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना। ,,

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(पंचामवां समय।)

१ यज्ञ के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुचना। १३३१
२ यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना। ,,
३ सात समुद्रों के नाम। १३३२
४ दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम। ,,
५ बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना। १३३३
६ यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैयारी करना। ,,
७ यह सब सुनकर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना। १३३४
८ समय उपयुक्त देखकर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना। ,,
९ यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना। १३३५
१० पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज में घिर जाना। १३३५
११ सब सेना का भाग जाना। १३३६
१२ केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना। ,,

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव।

(पचामवां समय।)

१ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना। १३३७
२ पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और साफ होते ही साठ हजार शत्रु सेना को उसे आ घेरना। ,,
३ सब सामन्तों का शत्रु सेना को मार कर विदार देना। १३३८
४ सामन्तों की स्वामिभक्ति का वर्णन। ,,
५ जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंवर करने की सलाह करना। १३३९
६ जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना। ,,
७ दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन। १३४०
८ दूती का संयोगिता से वचन। ,,
९ दूती की बातों पर कुपित होकर संयोगिता का उत्तर देना। १३४१
१० पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार। ,,
११ संयोगिता का वचन। ,,
१२ धा का वचन। १३४२
१३ सहचरी का वचन। ,,

१४ पृथ्वीराज के वीरत्व का सर्कीर्तन। संयोगिता का वाक्य। ,,
१५ सखी का वाक्य। १३४३
१६ संयोगिता की सकोच दशा का वर्णन। ,,
१७ सखी का वचन। १३४४
१८ संयोगिता का वचन। ,,
१९ सखी का वचन। ,,
२० संयोगिता वचन(निज पण वर्णन)। ,,
२१ दूती का निराश होकर जयचद मे संयोगिता का सब हाल कह सुनाना। १३४५
२२ संयोगिता के हठ पर चिढ कर जयचन्द का उसे गगा किनारे निवास देना। ,,
२३ गगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश। ,,
२४ संयोगिता का अपना हठ न छोडना। १३४६

(५१) हांसीपुर युद्ध।

(इक्यावनवां समय।)

१ दिल्ली राज्य की सरहद मे कन्नौज की फौज का उपद्रव करना। १३४७
२ पृथ्वीराज का हांसीगढ की रक्षा के लिये सामन्तो का भेजना ,,
३ हांसीपुर का मोरचा पक्का कर के पृथ्वीराज के शिकार खेलने को जाना। ,,
४ बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसीगढ पर चढाई करने का षड्यत्र रचना। १३४८
५ पृथ्वीराज का उक्त वर्ष अजमेर मे रहना। ,,
६ बलोच पहार का पत्र पाकर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना। १३४९
७ शहाबुद्दीन का अपनी बेगमो को मक्के भेजना ,,
८ हांसीपुर मे उपस्थित पृथ्वीराज के सामन्तों का वर्णन। ,,
९ बलोच पहार का सचिप्त वर्णन। १३५०
१० बलोच पहार का हांसीपुर मे स्थानापन्न होना।
११ बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रास्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवशराम का उसमे नाही करना। १३५१
१२ बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामडराय का उसे लूटने की तय्यारी करना। ,,
१३ बेगम के पड़ाव का वर्णन। ,,
१४ बलोच पहारी का सामन्तों के पास जाकर शाह का वर्णन करना। १३५-
१५ सामन्तों का रात को धावा करके बेगम को लूटना। ,,
१६ बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामन्तो से प्रार्थना करना। १३५३
१७ धन द्रव्य लूटकर चामडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमो का शहाबुद्दीन के यहा जा पुकारना। १३५३
१८ बेगम का शाह के मुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना। १३५४
१९ माता के विलाप वाक्य सुनकर शाह का सकुचित और क्रोधित होना। ,,
२० शहाबुद्दीन का अपने दर्बारियों से सब हाल कहना। १३५५
२१ शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्यादा कथन कर के दिल्ली पर चढाई के लिये तय्यारी का हुक्म देना। ,,

२२ तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना। १३५६
२३ शहाबुद्दीन की दृढता का वर्णन। ,,
२४ शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन। १३५७
२५ शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की ख़ातिर करना। ,,
२६ शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना। ,,
२७ राजमंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना। १३५८
२८ शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना। ,,
२९ तत्तार खां का हांसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना। ,,
३० हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना। १३५९
३१ शहाबुद्दीन की आशा। ,,
३२ तत्तार खां की प्रतिज्ञा। ,,
३३ शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना। ,,
३४ गजनी के राजदूतों का सिन्ध पार होना। १३६०
३५ यवन सेना का हिन्दुस्तान की हद में बढ़ना। ,,
३६ तत्तार खां और खुरमान खा की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन। ,,
३७ तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना। १३६१
३८ शाही सेना का हांसीपुर के पास पड़ाव डालना। ,,
३९ शाही सेना का हासीपुर को घेरना। १३६२
४० मुसल्मानी जातियों का वर्णन। ,,
४१ यवन सेना की व्यूह रचना का वर्णन। ,,
४२ युद्ध वर्णन। १३६३
४३ शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना। १३६३
४४ चामुंडराय के उत्कर्ष वचन। १३६४
४५ युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बन्द होना। ,,
४६ प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना। ,,
४७ गढ़ में उपस्थित सामन्तों के नाम। १३६५
४८ दोनों सेनाओं मे युद्ध आरम्भ होना। ,,
४९ युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना। ,,
५० इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या। १३६६
५१ अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना। १३६७
५२ दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना। ,,
५३ लड़ाई का वाकचित्र वर्णन। ,,
५४ सामन्तों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना। १३६८

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

१ तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना। १३६९
२ वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना। १३७०
३ शहाबुद्दीन का सामन्तों को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना। ,,
४ शहाबुद्दीन का संदेसा पाकर साम-

न्तों का परस्पर सलाह और बाद विवाद करना। १३७१

५ सामन्तों का भगवती का ध्यान करना। ,,

६ हांसी के किले में स्थित सामन्तों के नाम और उनका वर्णन। ,,

७ कुछ सामन्तों का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना। १३७२

८ कवि का कहना कि समयानुसार सामन्त लोग चूक गए तो क्या। ,,

९ देवराव बग्गरी का वचन। १३७३

१० कल्हन और कमधुज्ज का बग्गरी राय के बचनों का अनुमोदन करना। ,,

११ सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसीगढ़ पर आक्रमण करना। ,,

१२ अन्यान्य सामन्तों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन। १३७४

१३ देवराय बग्गरी की बीरता। १३७५

१४ युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन। ,,

१५ देवकर्ण बग्गरी का बीरता के साथ मारा जाना। १३७६

१६ बीर बग्गरी का मोक्ष पाना। ,,

१७ इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली। १३७७

१८ एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामन्तों का किला न छोड़ना।

१९ पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना। ,,

२० पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन। १३७८

२१ हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना। ,,

२२ कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना। १३७९

२३ रावत समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना ,,

२४ हांसीपुर को छोड़कर आए हुए सामन्तों का पृथ्वीराज से मिलना। ,,

२५ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को समझा बुझा कर सांत्वना देना। १३८०

२६ पृथ्वीराज का सामन्तों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना। ,,

२७ पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि। ,,

२८ सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन। १३८१

२९ रावल का चहुआन के पहलेही हांसीपुर पहुच जाना। १३८२

३० समरसीजी के पहुंचतेही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना। ,,

३१ समरसिंह जी की सिपाहगीरी और फुर्तीलिपन का वर्णन। १३८३

३२ यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन। ,,

३३ समरसीजी की वीरता का बखान। १३८४

३४ समरसीजी के भाई अमरासिंह का मरण। ,,

३५ युद्धस्थल का चित्र वर्णन। ,,

३६ यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना। १३८५

३७ घोर युद्ध वर्णन। ,,

३८ इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुचना। १३८६

३९ अमर की धीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना। १३८८

४० पृथ्वीराज के पहुंचतेही शाही सेना का बल ह्रास होना। ,,

४१ पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना। ,,

४२ रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन। १३८६
४३ रणास्थल की बसंत ऋतु से उपमा वर्णन। "
४४ मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना। "
४५ यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम। "
४६ यवन वीरों की प्रशंसा। १३९०
४७ हिन्दू पक्ष की प्रशंसा। ३३९१
४८ सामन्तों का वीरता मय युद्ध करना। "
४९ युद्धस्थल का वाकचित्र दर्शन। "
५० घोर युद्ध उपस्थित होना। १३९२
५१ पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशसा। १३९३
५२ पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन। "
५३ युद्ध का आतंक वर्णन। १३९४
५४ कविकृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन। "
५५ वीर रस प्रभात वर्णन। "
५६ प्रातःकाल होतेही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना। १३९५
५७ प्रभात वर्णन। १९९६
५८ सूर्य्य की स्तुति। "
५९ सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन। १३९७
६० सामन्तों की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन। "
६१ यवन सैनिकों का उत्साह।
६२ युद्ध का अत्तम आनन्द कथन। १३९८
६३ युद्ध में मारे गए वीरों के नाम। "
६४ तत्तार खां का मनहार होकर भागना। "
६५ खेत झरना होना और लाशों का उठवाया जाना। "
६६ युद्ध में मृत वीरों के नाम। १३९९
६७ हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन। "
६८ रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना। १४००
६९ रायल का दिल्ली में बीस दिन रहना। "

---

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

१ कविचंद की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ। १४०१
२ कविचद का उत्तर देना। "
३ खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना। "
४ शाही सेना का वर्णन। "
५ निद्दुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना। १४०२
६ राजा का दरबार में कहना कि महुवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय। "
७ सब लोगों का पज्जूनराय के लिये राय देना। "
८ पज्जून राय की प्रशंसा। "
९ पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना १४०३
१० पज्जून की प्रतिज्ञा। "
११ पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना। १४०४
१२ युद्ध वर्णन। "
१३ पज्जूनराय की वीरता। "
१४ यवन सेना का भाग उठना। १४०५

१५ पज्जूनराय की प्रशंसा। १४०५
१६ पज्जूनराय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना। ,,

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय।)

१ और सामन्तों को छोड़कर पज्जून का नागौर जाना। १४०७
२ मनहीन शाह का गजनी को जाना और पज्जून राय को परास्त करने की चिंता करना। ,,
३ धर्म्मायन का गजनी को समाचार देना। ,,
४ शहाबुद्दीन का मत्री से पज्जूनराय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना। १४०८
५ यवनदूत का नागौर पहुचना। ,,
६ पज्जून राय का हँस कर निधड़क उत्तर देना। ,,
७ दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जूनराय का संदेसा कहना। १४०६
८ शहाबुद्दीन का कुपित होना। ,,
९ इधर नागौर में किलेबन्दी होना। ,,
१० पज्जून राय की वीर व्याख्या। १४१०
११ यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर रोल चलाना। ,,
१२ राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना। ,,
१३ पज्जूनराय का यवन सेना पर रात को धावा मारना। १४११
१४ मुसल्मा न सेना के पहुरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना। ,,
१५ हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का युद्ध। १४१२
१६ दोनों में तलवार का युद्ध होना। ,,
१७ पज्जूनराय के पुत्रों का पराक्रम। १४१३
१८ पज्जूनराय का शहाबुद्दीन को पकड़ना और किले में चला जाना। १४१४
१९ यवन सेना का भागना। ,,
२० पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना। ,,



झनकने लगी तब तो वे निश्चर बलहीन होन लगे और राजपूत वीरों का हियाव बढ़न लगा निदान उन वीरों न अपना अद्वितीय तेज प्रगट करके कुछ ऐसी माया की कि जिससे सब सामन्त लोग मूर्छित होकर मंर से गिर पड़े और वरुणवीर अन्तर्ध्यान हो गए।

ज्योंही पूर्व दिशा में प्रभाकर का पूर्ण दर्शन हुआ त्योंही पृथ्वीराज वहां पर आ पहुंचा तो देखता क्या है कि राजा सोमेश्वर सकल सामन्तों सहित मृत-प्राय मूर्छित पड़े है यह देख कर पृथ्वीराज के मन में बड़ी ग्लानि और क्रोध उत्पन्न हुए । पृथ्वीराज ने यमुना जी के सम्मुख हाथ जोड़ कर स्तुति करना आरम्भ किया। उसने कहा—हे सूर्य्य भगवान की पुत्री, यम की बहिन, बलवीर के वीर श्री कृष्ण को सुखकर, त्रैतापहारिणी, मायामोहविदारिणी सब सुखकारिणी अधमउधारिणी कालिन्दी, तेरे तट के सेवन मात्र से सब दुःख दूर होते है। इस प्रकार संसार में ब्रह्मा स्वरूप सरस्वती विष्णु रूप गंगा और शिव स्वरूप (यमुना) तू है—शिव संसार के पालनकर्ता हैं—इसलिये हे माता कृपाकर मेरे पिता की मूर्छा भंग कर के उसे सचेत कर दे—पृथ्वीराज के ऐसी स्तुति करने पर सब सामन्तों सहित सोमेश्वर सचेत हो गए—तब पृथ्वीराज पुनः बोला कि हे माते! यह पंच तत्व मय तनपिंजर आप ही मय है पूर्व्व कर्म्म रूपी अग्नि की ज्वाला के जोर से यह स्थूल शरीर बनता है, यम, नियम और योग से वेष्टित जीव रूपी जल ही मे चंचल बुद्धि की तरल तरंगें उठा ही करती हैं जहां तहा गभीर जल के गुरुतर आशा रूपी दौहले भरे पड़े हैं और उनके किनार पर हेतु रूपी पक्षी कल्लोल किया करते है। तेरी सुख दुःख रूपी दोनों कंगारों के तीर पर जो त्रिगुण रूपी वृक्ष आच्छादित है उनमें मोह रूपी पत्ते और तज्जनित विकार उनके फलफूल है। उन सबका समय समय पर संतोष रूपी बाढ के आने से नाश भी हुआ करता है, केवल निर्गुण के आश्रय पर दृढ़स्थिति पुरुष बचते है। इस संसार मे ऐसे जीव बिरले ही हैं जो सौ वर्ष तक जीवित रहते है। इसी के बीच में शायं प्रातः होते हुए बालापन यौवन और वृद्धपन आदि अवस्थाओं और शारीरिक और मानसिक नाना प्रकार की आधि व्याधियों मे पीड़ित होना पड़ता है सो ऐसे संसार सागर से तारने वाली हे माता तुम्हीं हो। इसके बाद सम्पूर्ण मूर्छित मण्डली के लोग अच्छी तरह से चैतन्य और सावधान हो गए। तब पृथ्वीराज ने गधर्व की आराधना की जिससे उन लोगों के शारीरिक ताप का भी नाश हो गया। निदान सोमेश्वर सहित सब लोग राजमहलों को चले गए।

महलों में पहुँच कर पृथ्वीराज ने पिता से कहा कि आप नहीं जानते कि ऐसे पर्व्व के समय जल थल सब जगह दैवी जीवों का अधिकार हुआ करता है? फिर आप क्यों गए! ऐसी अवस्था में विघ्न होने से अपना कृत्य भी भंग होता है और व्यर्थ का कष्ट उठाना पड़ता है। प्रतापी पुत्र के ऐसे बचन सुनकर सोमेश्वर मन ही मन प्रसन्न होते हुए चुप हो गए।



सोमवध।

(उन्तालीसवां समय।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव सौलंकी गुजरात देश पर राज्य करता था। उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतंक चारों ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को चापने का साहस न कर सकता था। यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और संतुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनों पिता पुत्र उसके अंतस में सालते थे। चहुआन वंश पर बदला लेने की चिंता में व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ जुआरी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेसब्र रहते हैं।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिंगदेव मकवाना, कान्ह कंठीरू, जयसिंह चौरा, वीर धवलंग देव, भानसिंह चौरा, राजा स्यामास्याम विरसिंह चहुआन आदि सरदारों को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर में अकटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर काँटे से चुभते हैं। उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारंगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया। उसीके कारण जूनागढ़ में मुझे तत्तार खां के साम्हने नीचा देखना पड़ा। अधिक क्या कहूं। सोमछत्री की लड़ाई में तो जो कुछ बीतक बीता सो सभी को मालूम है। बस येही सब बातें मेरे मर्म पर खटकती हैं और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुंआँ न देख लूंगा तब तक मुझे चैन पड़ने का नहीं। इसलिये अजमेर पर चढ़ाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूसित किया जाय और तब दिल्ली पर चढ़ाई करके पृथ्वीराज को पछाड़ा जाय।

जैसे सायंकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पड़ते हैं, नदी की बाढ़ के साथ साथ अगनित रेल कण आगे को ढकिलते हैं तैसे ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगनित सेना समूह अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा। उधर भिन्न भिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि शासक और अधीनस्थ उमराओं को भी परवाने भेजे गए, और वे भी नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड़ कर आने लगे। भादों के प्रबल दल बदल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजरातीं जवानों के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे। कई कतारें विशाल काय काले कोर सिन्धी जवानों की थी, वे जँघिया पहने बटी हुई पगड़ी सर पर बाँधे और ललाट पर लाल चन्दन की धारें लगाए हुए थे। उनके सीने पर तलवार की धार और बरछे की अनी चाहे मुड़जाय परन्तु वे मुड़कर पीछे देखने वाले नहीं थे। अच्छे अच्छे चंचल कच्छी घोड़ों को कुदाते हुए सवारों के चेहरे पर सूर्य्य का सा तेज विराजमान था। उन घोड़ों के आयाल आसमान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढ़ी भौंहे और लाल लाल आंखे बड़ी भयावनी मालूम देती थीं। वीर लोग सांसारिक माया मोह के सनेह एवं देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे। वे सदैव परब्रह्म के चिंतवन में दत्तचित्त, स्वामिसेवा में मरना ही श्रेयस्कर समझते थे। वे मरने से न डरकर सदैव स्वामिसेवा में इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुहागिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति से स्पष्ट प्रीति करने लगती है। वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रकार से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार से मिलने के लिये आतुर रहती है। वे स्वाभाविक वीर जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बख्तर आदि से सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लंका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हों।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए हैं। अस्तु भीमदेव के दरबार में इन

चारो शखाओं मे सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से अमरसिंह सेवरा, भैरों भट, लीला लच्छिन ब्राह्मण और देवक्रम चारण चार मंत्री थे। इन सब में अमरसिंह की बात को भीमदेव अधिक मानता था। भीमदेव ने उक्त मंत्रियों से कहा कि भाइयो, वास्तव में मेरा बल तुम्ही लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो। तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! जिस भूमि के लिये पांडवों ने भाइयों को मारा, दधीच मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, कैकेयी ने दशरथ से वचन लेकर राम को बनवास दिया, उस भूमि को पाने के उपाय में कृतकार्य्य होना सहज नहीं है। जिस जीवन की रक्षा के लिये संसार के सब रस रग की सामग्री एकत्रित की जाती है, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा सुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा के लिये और सुकीर्ति के लिये ही संपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते है उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है।

बस फिर क्या था "करैला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डका बजाए जाने की आज्ञा दी। जैसे भिन्न भिन्न चिनगारियां एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती है उसी प्रकार भीमदेव की चतुरंगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई। उधर सोमेश्वर के वैर का बदला लेने का दृढविचार बाँधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया। सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते है; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता। मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रियां और पराक्रम इन पाच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियम, यह पांचों सुकृत जो करता हो "तत्व ज्ञान में जो पारङ्गत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है। भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियों की भीड़ तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बानैत पैदल चलते थे। ये मदश्रवित गंडस्थल दंतार दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे। उनके कुम्भ पर दुरती हुई ढालें और तिन पर छोटी छोटी जरकसी वैरखे[2] और फुल्लीं[3] ऐसी सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड़ कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघो की मस्ती मंद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हो। भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहां हो कर जाती थी वहां की रय्यत बर्बाद और देश दो कौड़ी का होता जाता था।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तो वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ। पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पहिलेही उत्तर की तरफ चला गया था केवल प्रसगराय पीची, जामराय यदुवं, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोड़े से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड गया था। जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुंचे। जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुंचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

आकाश मे सूक्ष्म लालिमा की झलक मरते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा। बड़े बड़े बानैत क्षत्री वीर वरण वरण के बताने बताने से सजकर आ जुटे, भेरी नफेरी बजनें लगे, कड़खैत उच्च स्वर से कड़खों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगें। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो

(१) हाँहा॥ पच सहस पचो सुकृत पंचो पंच प्रकृत्त॥
पच बुद्धि पंचो महे सो भारथ सुजित्त॥

(२) छोटी छोटी सजावट की झाँडिओं का वैरख कहते है।
(३) ढाल के ऊपर ये चार फूल से लग रहते हैं।

साक्षात् ऋतुराज बसंत का सेनासमूह इकट्ठा हुआ हो और तिरपट नृत्य करते हुए तत्ते तुषार साक्षात उसके सहचर चंचरीक से सुशोभित होते थे। जैसिंह का पुत्र जैसिंहदेव और कन्ह सेना नायक नियत हुए। इस सन्नद्ध सेना के बीच में स्थित नरनाह कन्ह बोला— हे भाइयो! जिस दिन जन्म होता है इस जीवन के भविष्य का निबटेरा उसी दिन हो चुकता है, परन्तु मोह रूपी आवरण के कारण मुक्ति का मार्ग "निज कर्तव्य" नहीं सूझता। निश्चय ज्ञानी को कोई कर्म इस प्रकार से नहीं व्यापता जैसे जल मे जल का प्रतिबिंब नही पड़ता और हे भाइयो क्षत्रियों का धर्म युद्ध में मरना और मारना ही है।

जिस समय दोनों दल अजमेर में उपस्थित हुए, और दोनों सेनाओं के राजपूत एक दूसरे पर झपटने को उद्यत हुए त्योंही इधर से नरनाह कन्ह की आंखो पर से पट्टा हटाया गया। दिखादाव होते ही कन्ह काल की खीस ऐसी तीक्ष्ण तलवार से शत्रु दल को काई सा फाड़ने एवं कड़बी सा काटने लगा। कन्ह की बिकट काट कपट के कारण काली कपाली और भूत बैतालो की भूख भाग गई, हजारों हाथी सुंड भसुड बिन होकर ढोल से ढलकने लगे अश्व असवार बिन होकर पड़े पड़े पैर पटकने लगे, सूर वीरों के कटे हुए सर मार मार बकते और रुड रण खेत में हथयार करते थे। कट कर पड़े हुए अगनित जीवों के खंडित अवयव और मास मेदा मज्जा से मांसाहारी पशुओं की क्षुधा शान्त होगई। कन्ह के ऐसे पराक्रम के कारण भीमदेव की सेना छिन्न भिन्न होकर पीछे पछलने लगी तब तो भीमदेव ने कुपित होकर स्वय अपना हाथी आगे को बढ़ाया। भीमदेव के साथ साथ उसके सैनिक भी जान हथेली पर रख कर आगे को झुके। वे गुजराती वीर अपनी टेक पर डटे पीछे हटना मानो जानते ही न थे। और इधर कन्ह उन्हे काट काट कर पाटता जाता था। उस समय वह रणभूमि सुन्दर सरोवर सी भासित होती थी। खून पानी सा, कटे हुए हाथ पैर मगर मच्छ से, बार सिवार से, मांस मज्जा कीचड़ सा, उतराते हुए नव युवकों के मुंड कमल पुष्प से, और उनके अधखुले चक्षु चातक एवं चंचरीक से जान पड़ते थे। जैसे द्वापर युग में नन्द के कन्हैया ने यमलार्जुन को नारद के शाप से मुक्त किया था वैसे ही कलियुग में कन्ह ने कई वीरों को जीवन मोक्ष कर दिया। कवि कहता है कि खेत में खड़े होकर जब दो भिड़ते हैं तब एक गिरता ही है परन्तु सच्चे सूरवीरों का पराक्रम सदा सराहनीय होता है।

उधर भीमदेव की तरफ से जामराय यादव ने जोर किया और उसे इधर से खेते खँगार ने आड़े हाथों लिया। पहिले तो वे दोनों परस्पर के अधीनस्थ सैनिकों को काट काट कर रक्त के कुंड भरते रहे अन्त म दोनों मदान्ध बैल की भाँति भिर कर द्वन्दयुद्ध करने लगे। सोमेश्वरजी की तरफ से बली बलभद्र भी भारी पराक्रम दिखा रहा था। बली बलभद्र स्वेत पोशाक पहने था उसका हाथी भी स्वेत था यहा तक कि घोड़े टट्टू जो कुछ था सब स्वेत स्वेत था। गुजराती सेना ने पहिले बलभद्र को घेरा। बलभद्र ने अपने वशभर खूब मोरचा छेड़ा परन्तु अन्त में अमावस की रात्रि के समान संघटित सिन्धी सेना सीमा पार करने लगी और सोमेश्वर के पास तक जा धमकी। भीमदेव की सेना ने सोमेश्वर को चारों ओर से घेर लिया। यह देख कर चहुआन सैनिक भी डंके की चोब पर रणतूर की आवाज करके बड़े पराक्रम करते हुए आगे झुके। किंचितू काल के उपरान्त चहुआन और चालुक्य का परस्पर चौनजरा होगया। उस समय दोनों के प्रज्वलित अग्नि ज्वाला से नेत्र खासे खून भरे कटोरे से देख पड़ते थे। वे दोनों वीर साक्षात् देवगुरु वृहस्पति और दैत्यगुरु शुक्र से सुशोभित होते थे। दोनों ओर के फौजी जवान हथेली पर प्राण रख कर अपने अपने नमक की बजाने में दत्तचित थे। ज्यों ज्यों घोर गर्जना कर रणवाद्य बजते और भूत बैताल नाचते थे, त्यों त्यों सिपाहियों का चित्त चौगुना चग

सा चढ़ता जाता था। कुछ देर खूब लोह झड़ा, हजारों सिपाही और हाथी घोड़े कट कर लोथों के अटंब लग गए, आखिरकार गुजराती फौज ने सोमेश्वर को बुरी तरह से घेर लिया। निदान जब सोमेश्वर ने जान लिया कि अब यहां से जीते जागते निकलना कठिन है तब वह भी घोड़े को फटकार कर आंख मीचे वार करने लगा। सोमेश्वर केवल पचास अश्वारोहियों के साथ भीमदेव के पांच हजार सवारों में घिर गया था। उनमें से ३०० सिपाही सोमेश्वर ने स्वयं मार गिराए और अन्त में आप भी पंच तत्व को प्राप्त हुआ। परन्तु चलते चलते चालुक्य को भी इस योग्य न छोड़ गया कि फिर वह खेत में खड़ा हो सके। जैसे ही एक तरफ सोमेश्वर गिरा वैसे ही उधर भीमदेव भी नीमजां होकर पृथ्वीतल पर पतित हुआ। बस उसके साथी भी उसे डोली मे रख कर खेत से हटे और इसी पर कलह का भी अन्त हुआ।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुंचा तो वह क्रोध और शोक से विह्वल सा हो गया। परन्तु उसने अपने को सम्हाला और सोमेश्वर का पिंडदान एवं श्राद्ध कर्म करने लगा। पृथ्वीराज ने भूमिशैय्या व्रत धारण करके अन्यान्य ब्रह्मचर्य नियमों को पालन करते हुये १२ दिन बिताए और इतने मे अतुलित धन स्वर्ण का दान किया। उसने आठ सौ गौवे दान की जिनमें प्रत्येक के सींग और खुरों पर बारह बारह भार सोना मढा हुआ था। इसके सिवाय उसने शास्त्रोक्त और भी षोड़स दान दिए और श्राद्ध कर्म समाप्त करके प्रतिज्ञा की कि जब तक भीमदेव को मार कर पिता का बैर न भँजा लूगा तब तक न तो घी खाऊंगा और न सिर पर पगड़ी बाँधूगा। ऐसा विषम व्रत करके पृथ्वीराज की तो इच्छा थी कि इसी समय गुजरात पर चढ़ाई की जाय परन्तु मंत्रियों के मत से यह निश्चय हुआ कि पहिले अजमेर का राज्यतिलक हो जाय।

इसलिये तमाम प्रजा में इस बात की सूचना दे दी गई। इधर महल में जहां तहां यज्ञ जप तप दान पुण्यादि होने लगे। उत्तम ज्योतिषियों के संशोधित और निश्चित मुहूर्त के आने पर दर्बार की तय्यारी की गई। सब तरह के राजसी साज समानों से सभा मंडप सजाया गया। उस समय उस स्थान की ऐसी शोभा थी जैसे साक्षात् इन्द्र का अखाड़ा पृथ्वी पर उतर आया हो। जहां तहां जड़े हुए जरकसी वस्त्र और उनमें लगे हुए सब किस्म के जवाहिरात ऐसे जान पड़ते थे जैसे आसमान में नवग्रह प्रकाशित हो रहे हों। कहीं कहीं लटकते हुए अच्छे अच्छे स्वच्छ मोतियों के गुच्छे उड़गनसमूह से ज्ञात होते थे। इस प्रकार के सुसज्जित सभामंडप के बीच में स्थापित राजगद्दी पर विराजित राजा पृथ्वीराज साक्षात् सूर्य्य का सा अंश सुशोभित होता था। एक तरफ दधि, दूब, तंदुल, गोरोचन, केसर, कपूर और रोली आदि आवश्यक शुभ सूचक सामग्री और पंडितों की मंडली उपस्थित थी और दूसरी तरफ सोलहो शृंगार और बारहो आभूषणों से सुसज्जित मंगला मुखी महिलाए ताल स्वर सहित कलकण्ठ से गान कर रही थीं। उनके रंग बिरंगे वस्त्रों पर पड़ी हुई पुष्पो की मालाएँ तो मानो देखने वालों के मन मोल लेती थीं। समय आने पर सखियों सहित रानी इच्छनी भी रनिवास से निकल कर सभा मंडप मे आई। उसकी अवाई ऐसी मालूम होती थी मानो अन्यान्य अप्सराओं सहित अखाड़े पर आ रही हों। इच्छनी रानी भी पृथ्वीराज के पास बाएँ आसन पर आबैठी और दोनों की गाठ जोड़ी गई। उस समय सब लोग यथावित्त न्योछावरें करने लगे। लग्न का ठीक बेध होने पर पहिले कन्ह ने उसके पीछे निडुर राठौर और तिसके बाद अन्यान्य सामन्तों ने बारी बारी से पृथ्वीराज का तिलक किया। उस समय पृथ्वीराज के शीश पर ढुरता हुआ श्वेत चँवर ऐसा सुशोभित होता था जैसे चन्द्रमा ने चिढ कर रीस सें अपनी किरणों को सूर्य्य मण्डल पर जा डटाया हो और सोने की डांडी पर आरोपित रत्नजटित छत्र ऐसा मालूम होता था मानो अन्य पंच ग्रह मंगल के मंडल पर एकत्र आ विराज रहे हों॥

पज्जून छोंगा नाम।

(चालीसवां समय।)

जब पृथ्वीराज ने सुना कि भीमदेव ने अजमेर पर चढ़ाई करके सोमेश्वर को मार डाला, तब वह तुरन्त उलटे पैर दिल्ली को चला आया। पृथ्वीराज ने पज्जूनराज कछवाहे को निज में बुला कर उसके सिर पर छौंगा बाँधा और छत्र दिया और कहा कि हे भाइ! भीमदेव ने घर बैठे उपद्रव उठाया है, यह बात मुझे बहुत ही खटकती है, इसलिये तुम और मलयसिंह अपनी सेना लेकर जाओ और भीम को समझाओ।

भीमदेव उस समय पट्टनपुर न जाकर सोनिगरा के किले में पड़ा हुआ था। अतएव पृथ्वीराज को दूत द्वारा इस बात का भी पता लग चुका था। इसलिये उसने पज्जूनराय को वहीं पर जा जुड़ने की आज्ञा दी। निदान पज्जून राय भी चुने हुए योधाओं की फौज लेकर मलयसिंह के सहित भीमदेव पर चढ़ चला। पज्जूनराय और मलयसिंह दोनों कछवाहे बीर सब हथियारों से सजे बजे तूणीर बाँधे कमान काँध अच्छे अच्छे काच्छियों पर सवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे उत्तरापति अभिमन्यु और अर्जुन कौरव दल का ब्यूह भेदने के लिये प्रस्तुत हों। वे दोनों पिता पुत्र बराबर पडाव पर पड़ाव डालते और शत्रु की सीमा में हलचल मचाते जाते थे। जब उन्हों ने भीमदेव की सरहद के नगरों पर घेरा डालना और राजसी चौकियों को लूटाना शुरू किया तब यह सब समाचार भीमदेव के दरबार में सुनाया गया। इस खबर के सुनते ही भीमदेव पूँछ दबे हुए सर्प की भाँति कुपित होकर सेना सहित चढ़ दौड़ा, आते ही रणबाँकुरे मलयसिंह ने उसका मुकाबला किया अभी सिपाहियों की परस्पर चार चोटें भी न होने पाई थीं कि पज्जूनराय ने भीमदेव का सिरमंडन छौंगा ले लिया और चलता हुआ। पज्जूनराय जब सात कोस निकल आया तब उसे मालूम हुआ कि उसकी चाबुक रह गई है, इसलिये वह फिर उलटा फिरा और चौंप से चढ़ी आती हुई चालुक चमू में से चाबुक लेने के लिये पैठ पड़ा। पज्जूनराय के पहुँचते ही चालुक्क सेना ने घर मार करना शुरू किया। पज्जून के योधा भी खूब बार बचाने चले। मलयसिंह के मुकाबले में गुजराती सेना मनहार होकर ठिठक गई और वे दोनों बाप बेटे भीमदेव का सिर छत्र छौंगा लेकर सकुशल दिल्ली आ उपस्थित हुए।

जिस समय पज्जूनराय ने वह छौंगा पृथ्वीराज के साम्हने उपस्थित किया तो पृथ्वीराज बड़ा प्रसन्न हुआ उसने कहा धन्य है कूरंभ! तू बडा पराक्रमी है तू भीमदेव से कहीं सहस्र गुना अधिक बलवान है—यों कह कर वह छौंगा निसानी की तरह उसी को वापस दिया और अपनी तरफ से एक घोड़ा भी दिया।

कवि कहता है कि पृथ्वीराज ने बड़ी बड़ी लडाइयाँ की और उसके यहां एक से एक चढ़ बढ़ कर अच्छे अच्छे पराक्रमी सामन्त थे परन्तु पज्जूनराय उन सब का सरताज था क्योंकि उसने जैसा यह पराक्रम किया वैसा और किसी ने नहीं किया।



पज्जून चालुक।

(इकतालीसवाँ समय।)

जब जैचन्द ने देखा कि अब मैं सम्मुख चाल करके चहुआँन को नहीं दबा सकता तब उसने सामनीति का आश्रय लिया और अपने भाई बालुका राय को सहायक देकर शहाबुद्दीन की सेना को दिल्ली पर चढ़ाई करने के लिये उसकाया।

निदान बालुका राय और ततारखां दो लाख सेना के साथ दिल्ली पति पृथ्वीराज को दमन करने के लिये चले। जब वे पड़ाव पर पड़ाव आगे बढ़ते हुए दिल्ली की सरहद दबाने लगे तो दिल्ली के राज दूत ने यह समाचार पृथ्वीराज के दबार में निवेदन किया।

उस समय पृथ्वीराज पिता का मृतकर्म करते हुए अशौच में था। इसलिये उसने विचार किया कि इस समय अपने एवज पर किस को भेजूं? अन्त में उसका विचार पज्जूनराय कछवाहे पर स्थिर हुआ क्योंकि पृथ्वीराज भली भांति जानता था कि वह सच्चा स्वामिधर्म्मधारी वीर तन धन त्रिया आदि किसी सांसारिक वस्तु का लालची नहीं है वह केवल मेरे काम पर मरना जानता है, इसलिये उसी को भेजना उचित होगा—परन्तु पृथ्वीराज ने एकदम ऐसा करना उचित न समझा, सामन्तों के मन की थाह लेने तथा अपने पर से पीछे कहने सुनने का छप्पर उतारने के लिये पृथ्वीराज ने सब सामन्त एव सैनिकों को एकत्र किया और भरे दरबार में पान रख कर उपरोक्त चढ़ाई के समाचार की सूचना देते हुए कहा कि जो पुरुष उक्त आक्रमण को रोकने के लिये सन्नद्ध हो वह इस बीड़े को उठावे और संसार में सुयश पावे। उस समय रामराय बड़गुज्जर, जैत प्रमार, दाहमा चामंड, भाटी, कमधुज्ज, आदि सब वीर उपस्थित थे, परन्तु बीड़ा उठाने का ह्याव किसी का भी न पड़ा। तब रणबांकुरे कूरम्भराय पज्जून ने अपने आसन से उठ कर बीरा उठा लिया। पज्जूनराय के बीड़ा उठाते ही सारी सभा में आनन्द ध्वनि और पज्जून बीर की वाह वाह होने लगी। सब लोग कहने लगे धन्य है वही तो पज्जूनराय है जिसने भीमदेव की भरी सेना में से उसका छोंगा उतार लिया। पज्जूनराय के पान लेते ही पृथ्वीराज ने अपनी तलवार भी उसे बगस दी। पज्जूनराय दरबार से तलवार बाँध कर वैसा ही अपने घर को चला आया और उसने सब समाचार अपने भाइयों से कह सुनाया। निदान बालिभद्र, कन्ह, वीरसिंह, पल्हन आदि उसके सब भाई और निज की फौज सहित मलयसिंह भी उसका साथ देने को सन्नद्ध हुए।

इस प्रकार पंचमी रविवार को पज्जूनराय दिल्ली राज्य की समस्त सेना और सामन्तों का सरताज बन कर शहाबुद्दीन और चालुक्य की संगठित सेना का आक्रमण रोकने के लिये चल पड़ा। उस सुसज्जित सेना के बीच में पांचो भाइयों सहित पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे भारथ के युद्ध में पांडवों के बीच उनके रक्षक श्री कृष्ण हों। ज्योंही पज्जूनराय की जोर दार सेना समुद्र के ज्वार की तरह दिल्ली के सिवाने से आगे बढ़ी त्योंही भारत के शुभ सूचक शकुन दिखाई दिए। मृग सहित मृगियों का झुण्ड दाहिने तरफ आता हुआ देख पड़ा। बाएँ तरफ सारस का जोडा बोलता था. उत्तर की तरफ योगिनी शब्द करती थी, और सम्मुख मुँह खोले मृगराज देख पड़ा जिसे पज्जूनराय ने प्रणाम किया॥

इधर से पज्जूनराय बढ़ता जाता था। उधर से बालुका राय चला आता था। जब हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ तो तत्तार खां और खुरसानखां ने अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार विरचा और पज्जूनराय ने राजपूत सेना को गरुड़ व्यूह बनाया। इस व्यूहाकार के जामराय यादव और मदनसिंह पड़िहार पैर, जैत प्रमार पूछ, भीम भटी पिंड और पाव, चन्द पुराडीर जांघ, चौच

१ इस समय का आखिरी छन्द ३५- 'उभय बीस अरु पच दिन न्हाय दान दिये बीर"॥

मुख और जीभ भाइयों सहित पज्जून, गरदन आजान बाहु लोहाना और सकी चोटी बली बलभद्रराय थे। तिथि नौमी शुक्रवार को पांच घड़ी दिन चढ़ा था जिस समय पज्जूनराय गिद्ध एवं ऊट रूप होकर कमधुज्ज और शहाबुद्दीन के सेना रूपी सर्प एवं पोस्ते के पुष्प को भक्षण करने लगा। दोनों तरफ के योद्धा लोग म्यान से तलवारें निकाल कर मार मार करते हुए परस्पर जुट पड़े। झनाझन लोहे की लपेट से आग की चिनगारियां झरने लगी। मय टोप और जिरह बख्तर के कट कट कर ज्वान जमीन पर लोटने लगे। यों ही होते होते बलभद्र ने ऐसा जोर पकड़ा कि शत्रु सेना में खलबली पड़ गई। यवन दल को दलन करता हुआ पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे गहरे सरोवर में केल क्रीडा करता हुआ मदान्ध कुंजर सघन सरसिज समूह का सत्यानाश कर रहा हो।

अन्त में मुसल्मानी सेना ने पीठ दिखाई और पज्जूनराय के हाथ खेत रहा। इस युद्ध में बालुकाराय के चार भाई काम आए और पज्जूनराय के पांचो भाई अत्यंत घायल होकर अचेत हुए। बलभद्र, कन्ह पंचाइन जैतसिंह आदि तो साधारण ही घायल हुए थे परंतु पल्हन के शरीर में साठ घाव आए थे। पज्जूनराय ने पहिले तो दोनों तरफ के सब घायलों को मरहम पट्टी का बन्दोबस्त कर वाया फिर मुसल्मान मुर्दों की मिट्टी विलवाई और हिन्दुओं की दाह क्रिया करवाई। तदनन्तर शाही सेना के भगेड़ों का सब सामान सग्गड़ों पर लदवा कर वह दिल्ली को रवाना हुआ।

जिस समय शत्रु दल को विदार कर पज्जूनराय दिल्ली पहुँचा और पृथ्वीराज से मिला उस दिन राजा प्रजा सब ने बड़ी खुशी मनाई।

चन्द द्वारिका गमन।

(चालीसवाँ समय।)

एक समय कवि चन्द की द्वारिकापुरी को यात्रा करने की इच्छा हुई। इसलिये उसने पृथ्वीराज से छुट्टी लेकर अपना यात्रा सम्बन्धी सब साज सामान दुरुस्त किया कविचन्द के साथ में जाने के लिये सात हाथी दो हजार घोड़े सात रथ और आठ सौ धनुर्धारी तैयार हुए। साथ ही इसके राजा पृथ्वीराज और सौ सामन्तों ने भी अपनी तरफ से बहुत से घोड़े हाथी और साज सामान कविचन्द को भेट किए। ऐसे सब लावलश्कर के साथ कवि चंद आनन्द की दुन्दुभी बजाता हुआ चित्रकोट अर्थात् चित्तौर के पास पहुंचा। दो योजन की दूरी से जब चित्तौर का अति उतंग दुर्ग दृष्टिगोचर होने लगा तो कविचन्द ने अपने डेरे वहीं पर डाल दिए।

जिस स्थान पर चित्तौर का किला है वह किसी समय उतग पर्वतों से परिवेष्टित सुन्दर झरनों के निर्मल नीरमय सरोवरों सहित सघन बन आच्छादित सुरम्य स्थल था। चित्रांगद नामक एक मौरि वंशीय राजा ने उस स्थान की रमणीकता से प्रसन्न होकर चित्तौर के "वर्तमान" किले की नीव डलवाई थी और चित्रांगद नाम का एक तालाब भी खुदवाया था। कुछ दिनों के बाद जब चित्तौर का किला, बुर्ज, कोट, कंगूरा, अटा, अटारी, महल, दुमहला, ओख, गोख, झारी, झरोखा, चित्रसारी, आदि से सुसज्जित हो चुका और जहां तहां हाट, बाट, चौहटे बाग, बाजार, चावच्चे आदि भी यथा स्थान बनठन कर दुरुस्त होगए तब वहां पर छत्तीसों वंश के क्षत्री, उन के परिकर के लोग और व्यापारी आदि आ आ कर निवास करने लगे। तब मोरी राजा ने वहां पर गोमुख कुण्ड और आनन्द कानन के समान एक आनन्द मय उपवन भी बनवाया। इसी काम के होते समय, एक पहाड़ की कन्दरा के खोदन पर वहां एक तपसी निकला जिसके सम्मुख उसके शिष्य को एक सिंहनी भक्षण कर रही थी। इस घटना की पूर्व्व कथा इस प्रकार है कि– अयोध्यापुरी में एक कीर्ति धवल नाम का राजा राज्य करता था। वह एक समय शिकार खेलने गया और उसने एक गर्भवती मृगी को बाण मारा। बाण के लगते ही वह मृगी विकल होकर तरफराने लगी। यह देखकर राजा के हृदय में ऐसा वैराग्य उत्पन्न हुआ कि फिर वह लौट कर राजधानी को न गया, अपने पुत्र के साथ वहीं से तीर्थ यात्रा करता हुआ चित्तौर में आकर तप करने लगा। दैवात उसके महल की एक दासी वहां से आ निकली। उसने राजा को पहचान लिया और यह समाचार रानी को जा सुनाया। रानी इस समाचार को सुनकर ऐसी प्रसन्न हुई कि मारे उत्कंठा के जैसी बैठी थी वैसी ही उठ कर चल दी। उसे यह भी ध्यान न रहा कि वह कहां जा रही है। वह ज्योंही गोख की खिड़की से आगे बढ़ी कि सैकड़ों हाथ ऊंचे से ज़मीन पर गिर कर चकनाचूर हो गई–सच है जप, तप, पूजा, पाठ, स्नान, ध्यान, तिलक, छापा, पोथी, पुरान आदि से कुछ भी नहीं होता, ये सब चित्त शुद्धि के साधन मात्र हैं, मरते समय चित्त में जो बासना स्थित हो उसी के अनुसार पुनर्जन्म होता है निदान उस रानी ने सिंहनी का जन्म पाया और भूलते भटकते उसी स्थान पर आ पहुँची जहां राजा कीर्तिपाल मय अपने सुकुमार कुँवर के तपस्या करता था। वह स्वाभाविक भीषणवेष सिंहनी क्षुधा से तो पीड़ित थी ही बस उसने आते ही राजकुमार पर हाथ साफ किया, परन्तु ज्योंही उसका मांस खाया चाहती थी कि उसे पूर्व्व जन्म की सुधि आ गई, बस वह उसी अवस्था में पाषाण की सी मूर्ति स्थिर रह गई और एक महीने पर्यन्त बिना जल–पान के आंसू मोचन करते करते उसके प्राण पखेरू पंचभूत पंजर से बिदा हुए।

जब कीर्तिपाल ने सिंहनी को कुमार को मारते हुए देखा तो वह साहस करके कुमार के पास दौड़ गया और उसने उसके कान में राम नाम जा

सुनाया परन्तु राजा को इससे बड़ा दुख हुआ तब उसके गुरु ने समझाया कि तुमने जो गर्भवती हरिनी मारी थी—यह सब उसीका फल है।

'जब किसी स्त्री को नैहर से आए हुए एक साधारण पायक का समाचार मिलता है तो वह उसे पिता के समान प्यार करती है" जब कविचन्द के आने का समाचार पृथाकुमारी के कर्णगोचर हुआ तो वह अगणित दास दासियों को लेकर पालकी में सवार होकर कविचन्द के डेरे पर आई और कविचन्द को भेट देने के लिये एक सहस्र सीतारामी स्वर्ण की थारियों में जरकसी वस्त्र पान अगर और मोतियों की मालाएं लाई। कविचन्द ने पृथाकुमारी के सम्मान को स्वीकार करके उसे आशीर्वाद दिया और किले को विदा किया। पीछे से आप भी नीलकंठ महादेव और भवानी के दर्शन करता हुआ चित्तौर में पहुंच कर रावल जी से मिला। अवाईजवाई हो जाने के बाद रावल समर सिंह जी ने कविचन्द को भोजन करने के लिये बुलाया। सब सर्दारों सहित रावल जी और कविचन्द जेवने को बैठे और भांति भांति के षटरस भोजन परोसे गए। भोजन हो चुकने के बाद टीका और पान सुपारी हुआ। तिसके बाद रावल जी ने कविचन्द को बहुतसा धन रत्न और मोतियों की माला दी। जब चन्द चलने लगा तो सजे हुए घोड़े, एक गजमुक्ता और एक रत्नजटित सुखपाल देकर रावल जी ने उसे विदा किया।

कविचन्द चित्तौर से विदा होकर पट्टनपुर होता हुआ पश्चिम पयोनिधि के किनारे पर जा पहुंचा। ज्यों ही कविचन्द को रणछोड़जी के देवालय की ध्वजा देख पड़ी त्योंही उसने साथियों सहित सवारी से उतर कर पैदल चलना शुरू किया। और मंगनों को दान देता हुआ पहिले गोमती के दर्शन करने गया, वहां से चल कर भगवान रणछोड़ जी के मन्दिर पर पहुचा। वहां देखता क्या है कि मन्दिर का छत्र सर्वाङ्ग सोने से मढ़ा हुआ है और उसमें लगी हुई जहां तहां मोतियों की लड़ी ऐसी सुशोभित होती है जैसे अनन्त सूर्य्यमंडल के मध्य में चन्द्रमा की किरणें अपनी कलंक कालिमा के काटने को आडटी हों। कविचन्द ने पहिले परिक्रमा करके इस प्रकार स्तुति की। हे गोविन्द तू ही देह है, तू ही मन है, तूही दिगपाल है, तू ही यम है, तू ही द्रौपदी की रक्षा करने वाला है, तू ही त्रिदेव है, तूही ब्रह्माण्ड है, तू ही तीन कूंड है. तू ही ब्रह्माण्ड के खण्ड है, तू ही ज्ञान समूह है, तूही अप्सराओं का जूह है। हे प्रभू तेरी ही दी हुई शक्ति से शेष पृथ्वी को सिर पर रक्खे है और हर अर्थात् शिव संसार की रक्षा करते हैं। इसके बाद कवि ने देवी की स्तुति की। उसने कहाः— हे ऋषि वरों द्वारा पूजित संसार की सार एवं बीज स्वरूप शक्ति तेरा भजन करने से संसार मात्र को सिद्धि प्राप्त हो सकती है- शिशुपाल और कालयमन को नाश करने वाली। हे एक भग्नी और पाँच पतिवाली तुझे नमस्कार है। संसार में ऋद्धि, सिद्धि, काल, कीर्ति, गति आदि, अन्त, स्वर्ग, नर्क, जीव, जन्तु, चारों युग, भूमि, धूम, जल, वायु, तप, ताप, तुषार, भान, मान, मुक्ति, बाल, वृद्ध, युवा, व्याघ्र, सार, बाग, मुंड, कुंड, छत्र, छत्रधारी, रूप, रंग, राग, भृत्त, वृत्त, बागवानी आदि जो कुछ है सो हे माता चंडिके तुही है।

इसके पश्चात् कवि ने शास्त्रोक्त विधिवत् हवन करके तुलादान किया और हाथी, घोड़े, रथ, अन्न, वस्त्र, स्वर्ण, माणिक, मोती आदि दिव्य पदार्थ दान किए,—कवि कहता है कि जो मनुष्य द्वारिकापुरी में जाकर छापे नहीं लगवाते वे दूसरे जन्म में घोड़े होते हैं और उनके बाजू और पीठ दागे जाते हैं * जो भगवान का दर्शन और बन्दना नहीं करते वे जरायुज जन्म पाते हैं और जो प्रदक्षिणा नहीं करते वे कोल्हू के बैल होते हैं अथवा रहँट में जोते जाते हैं। जो मनुष्य गोमती में स्नान

* ले दरबार चढ़ि न्याय हय पिछ दगवाहं- यह पद इस बात का एक अच्छा प्रमाण है कि उस समय भी राजाओं के घुड़सार के घोड़े दागे जाते थे।

करके अपने को शुद्ध नहीं करता वह दूसरे जन्म में [1]जैनयोगी होता है, जिनके केश नोचे जाते हैं जो कभी मुँह नहीं धोते, स्नान नहीं करते, आंख में आंसू आने से अनेक [2]उपवास करते हैं, गंगा, गया प्रयाग आदि किसी को नहीं मानते– 'फिर काहिए ऐसे अनिस्थिर–मत जीव की क्या गति हो गी।"

द्वारिकापुरी से चलकर चन्द ने भोला–भीमदेव के आचार्य्य अमर सिंह सेवरा से मिलना विचार कर पट्टनपुर के उपकंठ में आकर बसेरा लिया। कविचन्द ने देखा कि पट्टनपुर की बस्ती बड़ी ही विस्तीर्ण, सब प्रकार के राजसी और व्यापारी सामानों से परिपूर्ण एक अति उत्तम और रमणीक स्थान है। प्रत्येक नगर निवासी मनुष्य के गले में सोने के गुंज गोफ और मोतियों की मालाएं पड़ी हुई हैं। स्वर्ण का दान कोई देने से भी नहीं लेता। कुत्तों के गले में चाँदी के पट्ट पड़े हैं। हाथियों के दाँतों में जड़ाऊ मुहाले जड़ा है। शहर के एक ओर समुद्र की मेघास्पर्श लहरों का शोर होता है दूसरी तरफ छोटी छोटी पहाड़ी और उनके बीचों बीच अच्छे अच्छे बाग बगीचे है जिनमें सब प्रकार के फल फूलदार छोटे बड़े बिरवा लहलहा रहे है, बीच बीच में कुड कुएँ और तालाब है जिनमें पुरैन खिल रही हैं और हंस, सारस, बतक आदि जलचर पक्षी कल्लोल करते हुए क्रीड़ा कर रहे हैं और उन्ही के तीर तीर सुन्दर सोरहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरी स्त्रीयां कलसों एवं झारियों में जल भर भर कर आती जाती हैं। इस प्रकार गुलजार नगरी देखकर कविचंद का चित्त प्रसन्न हो गया।

कविचन्द ने भी एक हरेभरे स्थान पर अपने सुनहले जरकसी तम्बू तनवा दिए–जो शहाबुद्दीन से मे छीने गए थे—जहां तहां घोड़े हाथी बँध गए और कवि के डेरों का विस्तार आध कोस में हो गया। जब यह समाचार भीमदेव के पास पहुंचा तो उसने अपने भाट जगदेव को कविचन्द के पास भेजा और एक हाथी सात घोड़े एक ऊट और बहुत सा धन रत्न भी कवि को भेंट देने के लिये भेजा। जब कविचन्द ने जगदेव की अवाई का समाचार पाया तो वह एक अजब स्वांग बनाकर बैठ रहा– उसके आस पास दिया, जाल, कुदाली, रक्खे थे और हाथ में पैरी और अकुश था। जगदेव ने आतेही कविचन्द से पूछा—

यह क्या ?

चन्द—सोमेश्वर को किसने मारा ?

जगदेव—क्या तुम नही जानते ?

चन्द—आबूगढ़ किस ने लिया ?

जगदेव—भीमदेव ने। वह पट्टनपुर का राजा एक असीम सेना का स्वामी और समर में स्वयं असीम पराक्रमशाली है।

चन्द—अच्छा तुम हमारा अभिप्राय तो समझ गए न ? यदि नहीं समझे तो दस रोज में आप ही समझ जाओगे।

यह एक स्वाभाविक बात है कि समूह बद्ध होकर भेड़े रहती है सिंह नही। उस पृथ्वीराज को धन्य है जिसने जीता हुआ साज सामान फिर से फेर दिया।

कविचन्द बोला कि यदि यह गुर्जरनरेश है तो वह दिल्लीपति है। उस तेजस्वी पृथ्वीराज ने शत्रुओं का संहार करने के लिये ही पृथ्वी पर अवतार लिया है, पृथ्वी माता ने मानों पृथ्वीराज के लिय चार हाड़ी राँध कर चार जगह रक्खी हैं जिन में से एक शहाबुद्दीन दूसरा प्रमार और तीसरा

[1] जैन [जीत लिया है जिसने काम क्रोध लोभ मोहादि अजेय शत्रुओं को उस का नाम है जिन 'भगवान उस जिन की उपासना करने वालो को जैन कहते है] जैनियों के वैसे तो बहुत फिर्के है परन्तु श्वेताम्बर, दिगम्बर और सेवरा ये तीन मुख्य है। श्वेताम्बर वे है जो श्वेत वस्त्र पहिनते है और उसी शुद्धाचारों का आचरण करते हैं। दिगम्बर वे है जो बिना वस्त्र के रहते है और तप को मुख्य मानते है। तीसरे सेवरे वे है जो मुख पर पट्टी बांधे रहते है और हमेशा मोरपक्ष पास में रखते है जिससे जमीन झाड कर बैठते है।

[2] जैन जातियो मे शिष्य होने के समय जब गुरू चांदी के बाल उखाड़ता है यदि उस समय आंसू आवे तो तीन दिन अनशन व्रत कर के प्रायश्चित करना पड़ता है।

तुम्हारा स्वामी है *' सो हे जगदेव दो तो पृथ्वाराज पा चुका,तीसरा भोराराय शेष है। ध्यान रक्खो। तुम्हारे राज्य के दस लाख योधा भी पृथ्वीराज के दस सामन्तों का सामना नहीं कर सकते। तब जगदेव बोला कि अच्छा तो जाओ अब तुम अपने पृथ्वीराज को ही लेकर आओ तभी हम तुमसे मिलेंगे। उस समय सब निबटेरा हो जायगा। यह कह कर जगदेव चलागया।

दूसरे दिन भोरा भीमदेव स्वयं कविचन्द के पास आया। कवि अगवानी देकर भीमदेव से मिला और उसका यश वर्णन करके उसने यथोचित आशीर्वाद दिया। तब भीमदेव ने कविचन्द का और अमरसिंह सेवरा का विद्यावाद देखने की इच्छा प्रगट की। यह जान कर कविचन्द ने ज्योंही अपने इष्टदेव की आराधना की त्योंही अमरसिंह रथ सहित आसमान को उड़ गया और एक वृक्ष के शिखर पर जा बैठा और वहां पत्ते पत्ते पर नाचते हुए चहुआन की जै जै कार बोलने लगा। इधर पट्टनपुर की सारी जमीन हिलेनलगी और अँधाधुंध आँधी आने के लक्षण देख पड़ने लगे। यह देख कर भीमदेव रथ पर चढ़ कर महलों को चलता हुआ।

तब तक इधर कविचन्द के पास पृथ्वीराज का परवाना पहुंचा कि शहाबुद्दीन चढ़ाई करके चला आरहा है सो जहां तक हो सके जल्द आओ। यह समाचार पाते ही कविचन्द वहां से उसी समय कूच दर कूच चलता हुआ दिल्ली आ पहुँचा।

---

* मूल पुस्तक में पहिले तो चार हांडी लिखी है परन्तु नाम उनके तीनों दिए हैं। इस से अनुमान होता है कि चौथे से कवि का अभिप्राय जैचन्द से था। परन्तु उसका नाम स्पष्ट नहीं दिया। संभव है कि छन्द का कोई अंश किसी प्रकार छूट गया हो।

कैमास युद्ध।

(तेतालीसवाँ समय।)

एक दिन शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां और खुरसान खां से पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने के विषय में पूछा। तब तत्तार खां बोला कि एक तो पृथ्वीराज स्वयं एक बलवान शत्रु है तिस पर भी उसका वजीर कैमास तो बिलकुल अकल का पुतला है।

अतएव जब कि पृथ्वीराज शिकार खेलने के लिये षट्टूट्ट बन में पड़ा हुआ था शहाबुद्दीन ने कैमास के पास एक परवाना लिख भेजा और इधर आप अपनी फौज तैय्यार करके संवत् ११४० चैत्र वदि ११ रविवार पुष्य नक्षत्र में दिल्ली की तरफ चल पड़ा। इस बार शहाबुद्दीन के साथ में तीन लाख सवार चार हजार धनुर्धारी एक लाख पैदल सिपाही और तीन हजार हाथी थे। शहाबुद्दीन ने इतनी सेना के साथ कूच करके गजनी से दस कोस के ऊपर आकर पड़ाव डाला। पारसपुर के घाट पर सिन्धु नदी को पार करके इस पार डेरे डट जाने पर शहाबुद्दीन तत्तार खां. मारूफ खां, खुरसान खां, लाल खां, याकूब खां, तेजम खां और ममरेज खां आदि सरदारों सहित दरबार में बैठा। तब तक केदार भाट ने भी आकर आशीर्वाद दिया। शहाबुद्दीन ने केदार से कहा ही था कि अर्थ और गुणों के विषय में कुछ कहो कि तब तक शाही दो दूत जटा जूट बाँधे विभूत रमाए शृंगीनाद करते हुए आ पहुँचे। उन्होंने अरदास और ध्रम्मायन की दी हुई चिट्ठियाँ पेश कीं जिनमें लिखा था कि पृथ्वीराज षट्टूट्ट बन के पास शिकार खेल रहा है और वहां उसके साथ इतना लाव लश्कर है कि मालवा और गुजरात तक उसकी धाँक बँध गई है। गांव के भूमियाँ थर थर कांपते और जहां तहां भागते जाते हैं।

ऐसे समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन का दिल दहल गया। उसने सब मुसाहबों की एक अंतरंग सभा करके उनसे कहा कि चहुआन की सेना और कैमास के बुद्धिबल के साम्हने इस समय चढ़ाई करने से मेरा जी तो हिचकता है। और चढ़ कर आए हैं यदि योंही लौट जाते हैं तो भी बड़े शरम की बात है अब करें तो क्या करें? शाह की ऐसी बातें सुन कर याकूब खां बोला कि हम लाल खां,हुसेन खां, मारूफ खां आदि चार भाई हैं हमारे चार कालिब मगर एक जान हैं। हम चारों भाई इस वक्त क़सम करके कहते हैं कि यातो अब की बार दुश्मन पर फतह पावेंगे या हम चारो योंही मक्के को चले जावेंगे, हारकर हूजूर को मुँह न दिखावेंगे। हमारी भारी फौज के साम्हने हिन्दुओं के सामन्त आटे का लोन है। याद रखिए, हम अब की बार पृथ्वीराज को जीता ही पकड़ कर हुजूर की कदमबोसी में हाजिर करेंगे। यह सुनते ही शहाबुद्दीन का चोला चंगा हो गया और उसने अपनी सेना सहित उसी समय आगे को कूच किया।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुँचा तो उसने उसी समय कैमास और चामंडराय को बुलाकर सब हाल कह सुनाया। तब कैमास ने उत्तर दिया कि तो अब देर किस बात की है। यथासम्भव शीघ्र ही सेना तय्यार कर के उस यवन शत्रु का सामना किया जाय और अब की बार कलेजे के कंटक को नष्ट ही करदिया जाय। इस पर पृथ्वीराज ने उसी समय दस हाथी और सात सौ घोड़े कैमास को और तीन सौ घोड़े चामुंडराय को दिए। बात की बात में सारी फौज की तय्यारी हो गई और संभरीनाथ पृथ्वीराज की सेना के कैमास, चामंडराय, लंगरीराय, गोइन्दराय, काका कन्ह, जैत प्रमार, वीर नरसिंह, हरसिंह, रामराय बड़गुज्जर, कनकराय सोलंकी, निड्डुर कमधुज्ज, और वीर बघेला इत्यादि सामन्त शत्रु पर शस्त्र प्रहार करने के लिये सन्नद्ध हुए।

उधर से शहाबुद्दीन अपने मंत्री तत्तार खां को साथ लिए हुए चढ़ा चला आता था। उसके साथ में रुस्तम खां, आखूब खां (याकूब खां), दरयाव खान

(दरिया खां), कन्दहार खां (जिसके साथ के सिपाही सिंगिनी चलाने में दक्ष थे), मलिकखां, मम्मार खां, आलू खां, कम्माल खां, गक्खर मारूफ खां, पहलवान खां पठान, हबीब खां हबसी, समसुद्दीन खां रूमी, गयासुद्दीन चिश्ती और चित्रखान गुरखी आदि सरदार थे। उसकी सेना पांच भागों में विभाजित थी। प्रत्येक अनी के आगे चौसठ हाथी लाल ढाल वाले थे, शेष हाथियों पर हथनार तोपें थी, बीच बीच में कमनैत जवानों की भरती और प्रत्येक अनी में सात सात सरदार थे। पृथ्वीराज सेना सहित आकर गोइन्दपुर में पड़ा था। जब शहाबुद्दीन सारुंडे के पड़ाव से मुड़ कर पट्टूपुर की तरफ चला तब इधर चहुआन सेना भी सचेत हुई। उस समय कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि आप पट्टूपुर में रहकर शिकार खेलिए हम लोग जाकर शत्रु को परास्त करेंगे। इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि हे कुलीन लज्जाशील वीरो, मै जानता हूं कि मेरा सर्वस्व तुम्ही हो परन्तु मेरा यहा बैठे रहना उचित नहीं, तुम्हारा साथ देना ही उचित है। इस पर कैमास ने यह प्रत्युत्तर दिया कि तो आप यहा से सायत से कूच कीजिएगा और उसने अपनी सब सेना सहित उसी दम बम् बोलदी।

शहाबुद्दीन का मुकाम लाडून में था, इस लिये कैमास ने अपना पड़ाव पंचोसर के पास डाला। एक प्रहर रात्रि रहते ही एक दूत ने खबर दी कि शहाबुद्दीन सबेरे ही यहां आजावेगा। निदान कैमास ने तो उसी दूत को सीधा राजा पृथ्वीराज के पास भेजा और यहां फौज की तय्यारी बोल दी। कैमास ने सब सेना को पाच भागों में विभाजित किया। सब अनीपत सर्दार और सामन्तों के कार्य्य विभाग एवं मोरचे लिख लिए गए और कन्ह हरावल का स्वामी नियत हुआ। दूसरी अनी का नेता कैमास हुआ जिसमें पांच हजार कमनैत (तीरदाज) और पांच हाथी थे, तीसरी फौज कैन्ह के तहत में थी जिसमें पांच हजार सवार बखतरिया और एक हजार हाथी थे, चौथी अनी का शासक गोइन्दराइ गहलौत था जिसमें पाच हजार नेजबाज और पांच सौ हाथी थे। पांचवीं फौज जैतराव प्रमार के ताबे में थी जिसमें पांच हजार सवार पांच हजार पैदल और पांच सौ हाथी थे। उधर यवन सेना का मुख्य नेता स्वयं शहाबुद्दीन था। शहाबुद्दीन की अनी में दो लाख सवार और दो लाख पैदल थे। दूसरे ढाई हजार हाथी और डेढ़ लाख फौज तत्तार खां के साथ था। तीसरे खुरसान खा के साथ दो लाख सवार और दो लाख में कमनैत पैदल और हथनार तोपें थी। चौथे खंदार खा के साथ दो लाख सवार ढाई हजार हाथी और एक लाख कमनैत (तीरंदाज) थे। लाल खोल के साथ में ढाई हजार बखतरिए सवार थे। पांचवीं फौज का मालिक कम्माल खां था जिसके साथ में गोर गग्धर तुर्की आदि की सब मिला कर दो लाख फौज की भरती थी और पाच हजार हाथी थे।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुंचा त्योंही वह हथियार बाँधकर चन्द्रसेन चहुआन को साथ लिए हुए चलपड़ा और शहाबुद्दीन की सेना केवल दो कोस की दूरी पर थी, कि वह उसी समय अपनी सेना में आमिला। कवि कहता है कि अपार यवन सेना के साम्हने पृथ्वीराज के साठ हजार सैनिकों को सजा हुआ देख कर मनुष्य की तो बात ही क्या है योगनी भी हँसती थीं।

संवत् ११४० चैत वदी ११ सोमवार को एक पहर दिन चढ़न पर दोनों सेनाओं का मुकाबला हुआ। कैमास और तत्तार खां की, कन्ह और खुरसान खां की, गोइन्द और खन्दहार खा की, जैत प्रमार और कम्माल खा की बरनी हुई। दोनों तरफ से हथनार कुहुकबान, बान, तेगा, तलवार, कत्ती, कटारी, गुरज, नेजा, फरसा आदि हथियार चलने लगे और खूब खचाखच मार होते होते शायंकाल हो जाने पर उस दिन का युद्ध खतम हुआ।

द्वादसी के दिन पुनः प्रातःकालही से सार बजने

(१) कन्ह एक तो सब सेना का स्वामी था इसलिये पहिली और तीसरी सेना अनी इसके तहत में थीं।

लगा, सूर लड़ने लगे, कूर डरने लगे, रुंड तरफरने लगे, मुंड लुढकने लगे, लोथें पटने लगीं, खून झरने लगा। युद्ध का आनन्द देखने के लिये देवता और देवाङ्गनाएँ आकाश मार्ग से आने लगीं, और वीर लोग तिनके की तरह तन तज तज स्वर्ग को जाने लगे। इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो पहर हो गया और चहुआन सेना यवन सेना का हृदय विदीर्ण करती हुई शहाबुद्दीन के पास जा पहुंची तब पृथ्वीराज एक जगह अकेला घिर गया। यह देख कर वहां चामंडराय जा पहुंचा। उसने संघटित यवन सेना समूह को बिदार कर अपने स्वामी को तो निकाल दिया परन्तु आप स्वय फँस गया। यद्यपि चामंड राय बड़े बड़े गयदों के गरे एक ही बार में गड़ेरी से उतार देता था, उनके खीसे पकड़ कर कंधे से उखाड़ लेता था और मय अश्व के असवार को पछार देता था, उसका तलवार चलाने का दृश्य मात्र कायरों के कलेजे पर चाबुक का काम करता था; परन्तु करै तो क्या करं सौ की सत्ती भी तो बुरी होती है। अन्त में चामड राय को लाल खां, मारूफ खा, हसन खां, याकूब खां, चार यवन सर्दारों ने घेर लिया और चारों ने एक साथ वार किए। लाल खां ने दो बान मारे जिनमें से एक घोड़े को और दूसरा चामंडराय के सीने पर लगा, मारुफ खां ने शक्ति चलाई जो चामंड की जांघ बेधती हुई घोड़े का पंजर फोर गई। हसन खां ने तलवार के दो वार चेहरे पर किए और याकूब खां ने गरदन पर कटार चलाई। परन्तु वा हरे चामंड! ये उस पर वार क्या हुए मानो उसके क्रोध रूपी हुताशन में आहुति दी गई। उस ने जो तमक कर तलवार का वार किया तो एक एक हाथ में तीन मार गिराए, केवल लाल खां बच निकला। लाल खां अपने ढंग का एकही आदमी था। उसका टोप तलवार बाने बख्तर घोड़ा आदि सब तो लाल लाल था ही तिस पर भी सर के ऊपर एक लाल ध्वजा फहराती थी। लाल खां ने जो पुनः तमक कर तेग का वार किया उसे चामंड राय ने खाली दिया और एक हाथ ऐसा मारा कि उसके घोड़े क सर कट गया जिससे लाल खां जमीन पर लोट गया। इसपर चामंड राय ने उसे पछारा, इस प्रचार पर ज्योंही उसने वार करना चाहा कि चामंडराय ने उसकी घंटी पकड़ जमीन पर पछार दिया और आप छाती पर पैर रख कर खड़ा हो गया। यह रहस्य देख कर दोनों दल के वीर दंग हो गए अन्त में रनधीर वीर चामंड ने तलवार से उसका भी सर धड़ से अलग कर दिया।

तब तक कैमास भी वहां आ पहुंचा। उसने चामंडराय को गले से लगा लिया और कहा आहा भाइ तू मेरा छोटा भाई है! आज तेरे बिना मुझे संसार सूना होता। अहा तू सर से पैर तक रक्त में भींग रहा है। परन्तु धन्य है, तूने अपने शत्रुओं को आप मार लिया। अच्छा अब इस घोड़े पर चढ़ कर यहां खड़ा रह और दो हाथ मेरे देख। यह सुन कर चामंडराय बोला आप मेरे बड़े भाई है आप का मुझ पर एसा वात्सल्य उचित है परन्तु क्षत्री होकर क्या मुझे भी यह उचित है कि आप लड़ें और मै तमाशा देखूं? आइए हम आप दोनों अपने अपने घोड़े बढा कर शत्रु का मुँह मोड़ते हुए शहाबुद्दीन को पकड़ ले तब देखिए दोनों दलों हम दोनो की कैसी वाह वाह करते है।

इतने में खुरसान खां की अनी के ताज खां, बाज सहबाज खा, जाज खां और महबूब खां इन चार सरदारों ने कैमास पर चार तरफ से चार बान चलाए और चारों बान कैमास को लगे भी परन्तु कैमास ने जो बाण चलाए उनसे जाज खां तो घायल होकर गिर पड़ा शेष तीनों वार बचा गए। निदान ताज खां और सहबाज खा तो तलवार लेकर कैमास के साम्हने हुए और महबूब खां का चामड से मुकाबला हो गया। दुपहर लौटने पर ज्यों ज्यों सूर्य्य का तेज कम होता जाता था त्यो त्यो जवानो का जोर बढता जाता था। दोनो तरफ के योद्धा अपने अपने स्वामियों की आन कर कर एक दूसरे पर शस्त्र चलाते थे। कोई तो पूरा वार खा कर ककड़ी

से कट कर दो हो जाते थे, कोई कोई एक घाव लगने पर भी निरस्त्र हो कर खड़े खड़े मतवारे हाथी से झूमते थे। इधर तो दोनों भाई दाहमा थे उधर चार मीरजादे थे। इन में बराबर के दांव पेच हो रहे थे इतने में जो महबूब खां ने कैमास के सीने पर तलवार चलाई तो तलवार टूट गई और करीब था कि कैमास उसे पकड़ कर पछाड़ दे परन्तु ताज खां ने आड़े कर उसे बचा लिया। उधर सेना के सिपाही सिपाही से, सवार सवार से और पैदल पैदलों से जुटे हुए थे। तमाम रण भूमि में रक्त के कुण्ड और लोथों के अटंब लगे देख पड़ते थे। कहीं मुंड और दांत रहित हाथी पड़े हुए चट्टानों से देख पड़ते थे। कहीं कहीं रक्त में उतराते हुए हाथ पैर मगर मच्छ से जान पड़ते थे। सूर वीरों के कर कमल पुरैन के पत्र से, नेत्र भ्रमर से और सीस चक्रवाक से शोभित होते थे।

इस चैत्र वदी १२ मंगलवार को इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो घड़ी दिन शेष रह गया तब कैमास ने महबूब खां का सर धड़ से अलग किया और ताज खां को भी गरदन पकड़ करके पछाड़ दिया। इतने में सहबाज खां ने चामंडराय पर गहरा वार किया। तब तक जाग पड़िहार और चक्रसेन चहुआन दो सामन्त और भी वहां आ उपस्थित हुए, जिस से कैमास की बाजी मजबूत हो गई और मुसल्मानों के पैर पीछे पड़ने लगे,। यह देख कर शहाबुद्दीन ने स्वय अपना हाथी आगे बढ़ाया और उसका मंत्री तत्तार खां, और मीरमंगोल भी सिपाहियों को बांढ़ देते हुए आगे बढ़े और इस अनी को रोकने के लिये इधर से चक्रसेन की चमकदार तलवार आगे हुई। चक्रसेन की चमकदार तलवार के सान्हने मुसल्मान सिपाहियों की आंखें तलमलाते हुए देखकर शहाबुद्दीन ने अपने धनुष पर सर संधानाही था कि तब तक आलू खां ने एक हाथ ऐसा मारा जिस से चक्रसेन की खोपड़ी बीच से चिर गई तब शाह का एक बाण तो चामंड राय के बाजू पर लगा और दूसरे ने चक्रसेन का सर बेध लिया, परन्तु इस से हानि पहुंचने के बदले उसकी चिरी हुई खोपड़ी जुट गई। इसी बीच में चक्रसेन ने फुर्ती से बाण निकाल कर फेंक दिया और साफे कस कर सर बाँध लिया। उसने यही धराबांधी करते करते बिजल खां बगसी पर एक हाथ ऐसा मारा कि वह जहां था वहीं समाप्त हो गया। इतने में आलू खां ने कैमास और चामंड के सिर पर एक घाव कर दिया। यह देख कर चक्रसेन ने एक हाथ ऐसा मारा कि आलूखां का सर तुंबा सा टूट गया। तब उसके बदले उधर से कासिम खां आया परन्तु चक्रसेन ने उसे भी समाप्त किया। आलूखां का सर तो गिर गया परन्तु कबंध मार करने लग सेकड़ों असवार और पैदलों को काटते हुए अन्त में उसने चक्रसेन का भी काम तमाम किया। धन्य है इस तलवार रूपी सरोवर में सच्चे वीर पुरुषों की ही नैया पार लगती है. इधर से चक्रसेन का भी कबंध उठा और यवन सेना को काटते हुए शाह के हाथी के पास जा पहुंचा। पासही था कि वह शाह के हाथी पर चढ़ जावे परन्तु मीर हिंगोल ने आड़ लिया। चक्रसेन के कबन्ध ने शान्त होते होते जहब मलिक को फिर भी मार ही लिया यह चक्रसेन वाहरराय का पुत्र था। इस समय उसकी अवस्था केवल सत्रह वर्ष की थी। उस दिन के युद्ध का अन्त यहीं हुआ।

तीसरे दिन त्रियोदसी बुधवार को प्रातःकाल होते होते पुनः सार कटने लगा। दोनों तरफ से मारू बाजा बजने लगा, जिसकी ध्वनि सुन कर कायरों के कलेजे कांपते और सूरों के चेहरे पर नूर चढ़ता है। दोनों दलों का मुकाबला होते ही शहाबुद्दीन ने फिर से अपना हाथी बढ़ा कर हिन्दू सेना को एक दम से दबाना चाहा, शाह का ऐसा साहस देख कर इधर से कैमास और चामुंडराय दोनों भाइयों ने घोड़े बढ़ाए दोनों भाई मार काट करते हुए शाह के हाथी तक जा जुमके और चामुंडराय ने तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे हाथी की भसुंड से सुंड अलग होगई और वह भहरा कर गिर पड़ा। हाथी

के गिरतेही कैमास ने शहाबुद्दीन का बाजू जा पकड़ा और मुश्कें बाँधकर उसे घोड़े के कन्धे पर डालालिया

जिस समय कैमास शाह को पृथ्वीराज के सम्मुख लाया उस समय मारे भय और लज्जा के शहाबुद्दीन का मुख सूख रहा था, कलेजा कांप रहा था, परन्तु पृथ्वीराज ने सुखपाल (तामजाम) में बिठा कर उसे दिल्ली को भेजे जाने की आज्ञा दी।

इस युद्ध में पृथ्वीराज का भाई चक्रधर रामकृष्ण गहलौत, रावल समरसी का भाई नरसिंह, कैमास का भाजा, सामल और सेखा टाका (चौहान) इतने सामन्त खेत रहे। जो लड़कर मरते हैं वे भी मरते हैं और जो कायर भागते हैं वे भी एक दिन मरते है परन्तु करनी करके मरने वालों का संसार में सुयश विख्यित होता है और उनकी आत्मा अमरपुर में वास करती है।

दिल्ली पहुंच कर पृथ्वीराज ने शाह से १२ हाथी और एक हजार घोड़े दण्ड लेकर उसे छोड़ दिया। पृथ्वीराज ने उक्त दण्ड में से आधा कैमास को दिया और आधा युद्ध में उपस्थित अन्यान्य सामन्तों को वितरण किया। शहाबुद्दीन छूट कर गजनी पहुचा, इस लिये बड़ा बधाई बजने लगी और इधर समान्त लोग जीत की खुशी का आनन्द मनाने लगे।



भीम बध।

[चौंवालीसवां समय।]

जिस दिन से सोमेश्वर की मृत्यु हुई उस दिन से पृथ्वीराज को पल भर भी चैन नहीं पड़ता था। भीमदेव उसके कलेजे में काँटा सा खटकता था। इर्षा एवं क्रोध रुपी अग्नि से उसका उरअंतर हमेशा जला करता था। पृथ्वीराज रह रह कर हाय की सांस लेता था और हर हर कह कर चुप हो जाता था। उसे इस प्रकार दुखित देख कर जैत प्रमार ने कहा, हे राजन! क्षत्रियों का यह धर्म नहीं है कि पिता की मृत्यु पर शोकग्रस्त हों। क्षत्रियों का यही धर्म है कि शत्रु को मारकर ससार में सुयश कमावें। हे चहुआन चित्त की चिन्ता दूर कर यह निश्चय रखिए कि हम लोग सारे गुजरात देश को उजाड़ कर और पट्टनपुर को जला कर छार कर देंगे। भीमदेव की सामर्थ्य ही क्या है कि वह आपके साम्हने ठहर सके! हमारा विचार है कि कुछ फौज तो शहाबुद्दीन के नाके पर रख दी जाय और हम लोग छरीदा चल कर भीमदेव से समझें।

जब पृथ्वीराज सोमेश्वर की श्राद्ध-क्रिया से निश्चिन्त हो चुका तो वह अपने सामन्तों से बोला कि भाइयो भीमदेव तो उसी दिन मर चुका जिस दिन उसने सोमेश्वर पर सेना सजी थी, अब आप लोगों को केवल योगिनीगण को सन्तुष्ट करना शेष है। पृथ्वीराज को भूमि शैय्या पर सयन करते हुए एक ही रात्रि बीती थी दूसरे दिन अरुणोदय से ही दरबार की तय्यारी हुई। खास पास परिकर के लोग और मुत्सद्दी मुसाहिब लोग यथास्थान बैठे ही थे कि नरनाह कन्ह आ उपस्थित हुआ, सब लोगों ने नरनाह की पूरी ताजिम की। उसके बाद जामराय जद्दव, बलिभद्र, पज्जूनराय, अत्ताताई, लँगरीराय, गोइन्दराय गहलौत, तथा और सब छोटे बड़े सामन्त लोग यथाक्रम आने और यथा स्थान बैठने लगे, अन्त में चन्द बरदाई भी आया।

पृथ्वीराज पर तो सोते जागते अहर्निशि वही धुन सवार थी। बस उसने कहा "हे सामन्तो गुजरात पर चढ़ाई करके भीमदेव को अनभूत करने के लिये सन्नद्ध हो जाओ। यह सुन कर सामन्तों ने उत्तर दिया कि महाराज ज्योतिषी को बुलाकर चढ़ाई के लिये उत्तम मुहूर्त साधन करवाया जाय। राजा का हुक्म होते ही ज्योतिषी बुलाया गया और उसने प्रश्न के समय के ग्रहों का विचार करके कहा कि हे राजन एक तो यह मुहूर्त ही बड़ा अच्छा है जिसमें सम्मुख योगिनी चक्र होने से मानो सोने में सुगन्ध बनगई है। इसलिये आप इसी समय चढ़ाई कीजिए, आपकी अवश्य ही जीत होगी और भीमदेव मारा जायगा। मै शपथ करके कहता हूं कि यदि ऐसा न हो तो मै आज से पत्रा हाथ से न छुऊं। (१)

बस फिर क्या था, बात की बात में सारी सेना अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर सन्नद्ध हो गई चारों तरफ चाहुआन की जयध्वनि होने लगी। रानी इच्छनी अक्षत छोड़ने लगी तेजोरूप पृथ्वीराज अस्व पर सवार होकर चलने को ही था कि इतने में अपनी सेना सहित निड्डरराय भी आ उपस्थित हुआ और यथानियम प्रणाम करके साथ में हो गया। फौज में अबतक यह किसी को न मालूम था कि कहा जाना होगा। इसलिये पृथ्वीराज ने शिकार पर चलने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज के घोड़े की बाग उठाते ही सब कटक पच्छिम दिशा को इस प्रकार से चल पड़ा जैसे पहाड़ से टिड्डी निकलें अथवा लंका पर आक्रमण करने के लिये कपि सेना समूह जा रहा हो।

जब पृथ्वीराज का सेना समूह समुद्र सा उमड़ता हुआ भीमदेव का मेंड़ा दबाने लगा तब गुजरात के राजदूतों ने भीमदेव के पास जा कर कहा कि महाराज पृथ्वीराज चौसठ हजार सेना लिए हुए

(१) केन्द्रीय सासिसाम। भीम पचम अधिकारिय॥
राह वीर अष्टमो। वक्र सप्तम सुद्धारिय॥
जगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सर भर॥
कहै विम प्रथिराज। राज पंचम पचम गुर॥

इधर ही आ रहा है। उसने पिता का बैर बदलने की प्रतिज्ञा करके घी खाना और पाग बांधना छोड़ दिया है। इसके सिवाय उसके सामन्तों ने भी देवार्चन कर कर के प्रतिज्ञाएं की हैं। इसलिये आप यथासंभव शीघ्र ही संभाल रखिए। यह सुनते ही भीमदेव के लिलाट में त्रिबली पड़ गई, भौंह चढ़ गई, मुख लाल हो गया और भुजाएं फड़कने लगीं। उसने उसी समय अपनी सब वैतनिक सेना को सजने और शासनाधीन नरेशों को परवाने भेजे जाने की आज्ञा दी। परवाने पाते ही दो हजार पठान जो कि कुहकबान और हथनाले चालने में कुशल थे, तीन हजार कच्छी सवार, डेढ़ हजार सोरठी, कई हजार बान कमान धारी, काकरेची, करूर कोल, भालावार का भाला, कावा नरेश मकुंद, काठियावाड़ का राजा कंठीर और और भी छोटे बड़े सब जागीरदार यथासमय हाजिर हुए।

इधर पृथ्वीराज के दूत भी गुप्त रूप से आगे आगे चला करते थे। वे लोग पट्टनपुर में पहुंच कर, सब हाल चाल देख भाल कर चले आए और पृथ्वीराज से बोले कि भीमदेव एक लाख सेना और एक हजार हाथी सजकर मुकाबला करने को तय्यार है। यह सुन कर पृथ्वीराज बोला कि भीमदेव के सेना समूह रूपी सघन बन को मैं प्रचंड दावाग्नि के समान दहन कर डालूंगा। यदि भीमदेव स्वयं मेरे साम्हने पड़ जाय तो उसे इस प्रकार से पछाड़ूं जैसे भीमसेन ने दुर्योधन को और शक्ति ने महिषासुर को पछाड़ा था और उसका पेट फाड़कर आंतों में से पिता का बैर निकालूं। यह कहकर शिकार करने की आज्ञा दी। और यमुना के कूल कूल जघन्य क्रीड़ा करता हुआ सघन बन में जा पहुंचा। शायंकाल हो जाने के कारण सब फौज के डेरे पड़गए और सरदारों से लेकर सिपाहियों तक सब के डेरे डेरे कलेऊ जल और पान पत्ते पहुंचाए गए। सब सेना तो जमुना के पार उतर गई थी परन्तु पृथ्वीराज कन्ह, कैमास, जैतराव, सलष, चन्द पुरडीर, चामुंडराय, हम्मीर, सारंगदेव, पज्जूनराय, पहाड़राय तंअर, लंगरीराय और आजानबाह लोहाना इन सामन्तों के साथ इसी पार रहा। रात्रि को कन्ह और कैमास पलंग के पहरे पर रहा। सब सेना तो ऐसी गाढ निद्रा में निमग्न थी जैसे मोह के बलवान होने से ज्ञान और विज्ञान सब दब जाते हैं, परन्तु पृथ्वीराज जागता था "कन्ह से यह कह कर कि प्रातःकाल प्रहर रात्रि रहने से हँकाई की जाय" वह भी निद्राग्रस्त हुआ। अभी कुछ भी समय न बीतने पाया था कि सहसा तीन शब्द हुए जिन्हें कन्ह ने भली भांति सुना और समझा भी। उसी समय भूकंप भी हुआ। प्रातःकाल होतेही सारे लश्कर में इस बात की खबरदी पड़ गई। जहां तहां लोग ज्योतिषियों से भविष्य पूछने लगे। कोई कोई कहने लगे कि जिस शकुन से भीमदेव अजमेर पर चढ़ा था यह वही सब शकुन हैं। तबतक अरुणोदय हुआ, पृथ्वीराज भी जाग उठा और कविचन्द ने जाकर उसे आशीर्वाद दिया। पृथ्वीराज आंख मीड़ता हुआ अपने सपने का हाल कहने लगा। वह बोला मैंने रात्रि में तलातल भरे हुए तालाबों में कमल के पुष्प खिलते, कुमोदनि को सकुचते और प्रकाशमान सूर्य्य का उदय होते हुए, रसाल वृक्षों पर बेली चढ़ती और उनके टौन पर बैठे हुए पक्षी समूहों को कलोल करते हुए देखा है। इस स्वप्न का फल जानने के लिये सब सामन्त लोग भी उत्सुक हो उठे। तबतक कन्ह बोल उठे भाइ मैंने भी कुछ रात्रि में सुना है और वह यह है "न जाने, सो क्या माने, होनी होगी सो क्यों न होगी"। इस पर कविचन्द बोला कि यह सब शीघ्रही घोर घमासान युद्ध होने और सहस्रों मनुष्यों की प्राणहानि होने के लक्षण हैं पर इतना अवश्य है कि अपने लिये शुभ है।

यह सुनकर नरनाह काका कन्ह बोला "लोग मरना जीना कहते है" परन्तु किसी ने किसी को मरते जीते आज तक नहीं देखा, केवल कृत-कर्म-बद्ध जीव माता के गर्भ का आवागवन भोग करता है, शरीर नष्ट हुआ और सब झगड़ा

ते हुआ। मरने के बाद का हानि लाभ केवल यश अपयश है। जिस दुर्योधन के लिये लाखों मनुष्य चलबसे आज उसका नाम ही नाम शेष है। भूमि भोगी योद्धाओं में दुर्योधन ही श्रेष्ठ है क्योंकि उस ने भारत के युद्ध में सगे सम्बन्धी भाई बन्धु सब गँवा दिए पर सुई के अग्रभाग पर भूमि न दी। युग युगान्तर व्यतीत होते जाते है, बड़े बड़े युद्ध और सन्धि होते जाते हैं पर इस विराट जगत का अन्त किसी ने नहीं पाया। समराग्नि में शत्रु के सम्मुख शरीर को होम करनेवाले शूर पुरुषों का अन्तिम सिद्धान्त तो यह है कि जैसे सूर्य्य की किरणें प्रखर होकर मंद पड़ जाती हैं, यमुना का जलप्रवाह बढ़ कर घट जाता है उसी प्रकार नश्वर शरीर की गति है। यह शरीर चाहे जब नाश हो हम तो इस तन पिंजर से निकल कर स्वर्ग की सीढी पर चढ़ेंही गे। कन्ह का ऐसा आध्यात्मिक स्वर सुनकर सब प्रसन्न हो गए और पृथ्वीराज ने उसी समय हँकाई होने की आज्ञा दी। तब तूर तुरही तबल आदि बाजों की वाद्यध्वनि, हाथी के घंटे और घोडों की ठिंयों से सारा बन गूंज उठा। राजा की अज्ञानुसार पछेला हँकाई शुरू हुई, चारों तरफ बाग वर्छे आदि के वार होने लगे और अगनित पशु मारे जाने लगे। यह विषम कोलाहल सुन कर अपने चुल में सोता हुआ एक सिंह जाग उठा, उसके साथ में सिंहनी और उसके दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। एक तो परमेश्वर ने इस जीव को स्वभावही से शोख बनाया है, दूसरे भूखा, तीसरे यह कर्णकटु कोलाहल, चौथे अपने सबसे स्वादिष्ट भक्ष्य मनुष्यों की वास पाकर वह सिंह पूंछ के गुच्छे को शीश पर छहरा कर गंभीर बद्दर की तरह गर्जना करता हुआ बबकार कर उठ बैठा। उसकी दोनों आँखों से आग की सी ज्वाला निकल रही थी और उसके विकराल नख बूंदी की कटार कैसे थे। दोनों बच्चों समेत सिंहनी को तो अन्य सामन्तों ने घेर लिया। परन्तु सिंह दावाग्नि की ज्वाला के समान कन्ह पर आझपटा। उस समय मय पृथ्वीराज के सब लोग हक्काबक्का से होकर हाय हाय करने लगे। सिंह ने कंधे पर पड़ी हुई कमान के सहित घोड़े को चाप लिया परन्तु कन्ह दूर जा छटका। सिंह दूसरा बार करने न पाया कि तब तक कन्ह ने उसे पकड़ कर कांख में दबा लिया और कटार से उसका पेट चाक कर, दोनों पैर पकड़ कर उसे पृथ्वी पर पछार दिया, जिससें उस मृगराज की भेजी निकल पड़ी और हड्डी पसली चूर चूर होगई।

कन्ह का सिंह को पछाड़ देना ही सब के मन में शुभ भविष्य सूचक शकुन निश्चय हुआ। इसलिये उसी समय चढ़ी सवारी पट्टनपुर की तरफ कूच किया गया। इस समय पृथ्वीराज के साथ चौसठ हजार सेना थी। पृथ्वीराज ने कन्ह को सब फौज का सेनानायक नियत किया और आप बीच में रहा। निड्डुरराय को चंदावल का सेनानायक बनाया और जैत प्रमार को पीठि सेना का स्वामी नियत किया। चाहुआन सेना इस प्रकार क्रमबद्ध होकर चलने लगी। आगे बढ़ते हुए ज्यों ज्यों पट्टनपुर निकट होता जाता था त्यों त्यों सूरवीरों के हृदय से सांसारिक माया मोह कोसों दूर होता जाता था।

जब पट्टनपुर कुछ थोड़ी दूर पर रह गया तब पृथ्वीराज ने कविचन्द को भीमदेव के पास चिन्नू[1] के चिन्ह स्वरूप एक चोली और एक लाल पगड़ी देकर भेजा और कहला भेजा कि इन दो में से जो तुम्हारी रानी आवें सो अंगीकार करो, अर्थात् या तो चोली पहन कर स्त्री बनो; तो प्राण बचेंगे, नहीं तो लाल पाग बांधकर साम्हने आओ तो हम भी तुम्हारे सहायकों सहित तुम्हारे खून की नदी बहाकर उससे पिता के नाम तर्पण करें। जैसे रामचन्द्र ने रावण को कुल साहित नाश किया, पार्थ ने पाताल में पैठ कर अपनी पति रक्खी उसी प्रकार मैं भी "हे भीमदेव!" तुम्हारे घर आया हूं। अब तुम्हारा बचाने वाला कौन है? कविचन्द ने चलते समय इस पर एक और तुर्रा लगाया। उसने गले में जाली और नसेनी डाली, एक हाथ में कुदाली, और दीया

१ चिन्नू, चुल्हू = Challange.

लिया और दूसरे में अंकुश और त्रिसूल। जब कवि पट्टनपुर में पहुंचा तो वहां सैकड़ों दर्शक इसके पीछे हो लिए राजद्वारे पर हज़ारों आदमियों का हुजूम जुट गया। भीमदेव ने भी जुड़ते ही पूछा "कवि ये क्या स्वांग रचा है? तब कविचन्द ने पृथ्वीराज का संदेसा पूरा करके कहा, हे राजन् पृथ्वीराज कहता है कि यदि भीमदेव मुझ से भाग कर जल में जावे तो मैं उसे इस जाल से जा जकडूं, यदि वह आकाश पर चढ़े तो इस नसेनी से काम लूं, पाताल में पैठे तो कुदाल से खोद निकालूं और अंधेरे में लुके तो दीपक से देख मारूं। इस प्रकार उसे पकड़ कर अंकुश से वश में करूं और तब त्रिसूल से उसका हृदय बिदार डालूं,। इस पर भीमदेव बोला। जाल को जला दूंगा, नसेनी तोड़ डालूंगा, कुदाल को घन से कुचल दूंगा, दीये को हाथ से बुझा दूंगा, अंकुश को मोड़ दूंगा, त्रिशूल को सिकोड़ दूंगा, और जो मुझे मारने को कहेगा उलटा उसीको मारूंगा। अब यह गर्व करते लज्जा नहीं आती। पहिली बात भूल गए? रे कवि! आज चूहा बिलार से लड़ना चाहता है, गीध हंस के सिर चढ़ना चाहता है, शृगाल शेर से युद्ध करना चाहता है। भला कहीं मेढक ने भी सर्प पर विजय पाई है? बड़े आश्चर्य की बात है!! तुझे बार बार क्या सिखावन दूं, तू मुझ गुर्जर नरेश रूपी प्रज्वलित अग्नि ज्वाला के साम्हने अपने पति के प्रताप रूपी दीपशिखा को क्या दिखाने आया है। तुझ से बात वह करे जो भाट पुत्र हो, जा अपने राजा से कह देना कि मैं इन ढोंग ढकोसलों से डरने वाला नहीं हूं, उसे जो भरी हो सो करे। भीमदेव की ऐसी बाते सुनकर कविचन्द वहां से फौरन उठकर चला आया और पृथ्वीराज से सब हाल ज्यों का त्यों उसने कह सुनाया।

कवि चन्द के पीठ फेरतेही भीमदेव ने उधर से अपने कवि जगदेव भाट को रवाना किया और कहला भेजा कि मैंने जो कुछ कहला भेजा है उसका क्या उत्तर है। निदान जगदेव ने कवि चन्द के पास आकर, कहा भाई सोते हुए सर्प की पूंछ दबाने से क्या लाभ? तुम दीया जाल कुदाल आदि का आडंमबर कर के गए थे, कैमास चामंड राय कन्ह इन में से कोई अथवा पृथ्वीराज स्वयं जाते तो मजा पाते! यह सुनकर कविचन्द गुस्से होकर बोला। बस तुम्हारे राजा ने बहुत सी कोंस (छीमी) खाई हैं, मिर्च चबाने का मजा अब मालूम होगा. यह पृथ्वीराज उन राजाओं में नहीं हैं जिन्हें उसने सहजही जीत लिया। बिच्छी का मंत्र न जान कर सांप के बिल में हाथ डालना आसान नहीं होता। ऐसा सुन कर जगदेव भीमदेव के पास आकर बोला कि अब आप अपनी तैय्यारी कीजिए चहुआन को आ पहुंचा समझिए।

इधर पृथ्वीराज ने निड्डर को बुलाकर अपने बराबर बैठाला और उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा कि वैसे तो सब सामन्त हैं परन्तु इस समय मुझे विशेष भरोसा तुम्हारा ही है। दैवयोग से आज यह दूसरा भारथ आ उपस्थित हुआ है। बस सब सामन्तों को साथ लेकर ऐसा करो कि बात भी रहे और संसार में सुयश बिस्तृत हो। तब निड्डुरराय बोला कि आपके सब सामन्त सच्चे स्वामिसेवी हैं। वे समर के समय तन को तिनके के बराबर समझते हैं। हे राजन् आप किसी प्रकार से चिन्ता न कीजिए। तिस में नरनाह कन्ह का पराक्रम तो अकथनीय है। वे इस समय ऐसे वीर हैं जैसे भारथ के समय भीष्म थे। इतने में पृथ्वीराज ने एक मोतियों की माला जो एक लाख की थी अपने गले से उतार कर निड्डुर को पहना दी। वह द्युतिदार मोतियों की माला तेजस्वी कमधुज्ज के गले में ऐसी सुशोभित होती थी मानो सूर्य्य मण्डल के गिर्द गंगधारा प्रवाहित हो रही हो। पृथ्वीराज ने कन्ह को भी बुला कर उसके पैर में पर्वाई[1] पन्हाई। उसे अंगीकार करते समय कन्ह ने अत्यन्त लज्जित हो कर कहा। हा! मेरा जीवन वृथा है, मेरे रहते सोमेश्वर को शत्रु ने मार लिया परन्तु मेरे प्राणों ने

१ पर्वाई पैर के एक गहने का नाम है।

शरीर न छोड़ा, तब निड्डुरराय बोला इससे क्या तीरंदाजही निशाना चूकते हैं। शैसवार ही जमीन चूमते हैं। सुग्रीव अपनी स्त्री की रक्षा न कर सका, दुर्योधन के देखतेही कर्ण मारा गया, रामचन्द्र के रहते ही सीता हरण हो गई। पाण्डवों के सामने द्रोपदी का चीर खींचा गया इत्यादि। इसी प्रकार सैकड़ों प्रमाण उपस्थित हैं 'अतएव इससे, हे कन्ह! तुम्हारा बल या तुम कलंकित नहीं कहे जा सकते। तुम्हारा तेज रूपी मयूर अब भी शत्रु समूह रूपी सर्पों को भक्षण करने में समर्थ है।

तब तक खबर लगी कि भीमदेव सेना सहित इधर को आ रहा है। इस लिये इधर से निड्डुरराय भी डंके पर चोट देकर आगे बढ़ा। परस्पर देखादेखी होतेही दोनों सेनाओं से पहिले हथनार उठनार और कुहकवान आदि अग्न्यास्त्र चलाए गए। दोनों तरफ हरावल और बाजुओं की व्यूह में आगे घुड़सवारों की भरती थी। अग्न्यास्त्रों की एक बाढ़ चलते ही दोनों तरफ से सवार नंगी तलवारें लेकर एक दूसरे से भिड़ पड़े। तब तक कन्ह के पट्टे भी हटा दिए गए। वह वीर अपनी सेना में से शत्रु समूह पर इस प्रकार से तड़पा जैसे घनघने बादलों के बीच बिजली तड़पती है। कन्ह के मुकाबिले में उधर से सारंग मकवान उतरा। इधर से कन्ह की सहायता पर केहर कंठीर और लोहाना आजानबाह जा पहुंचे। बहुत कुछ पराक्रम करने के बाद मकवाना कन्ह के हाथ से मारा गया। मकवान के मरते ही चालुक्य सेना कुछ मनहार सी होगई। सामन्तों का जोर बढ़ उठा, परन्तु सच्चे सूर हार जीत का कब विचार करते हैं उन्हें तो मर कर स्वर्ग जाना सूझता है। जीवन के दिन तो वे सपना समझते हैं। सूर वीरों को ऐसे जघन्य कर्तव्य का कुछ दोष भी नहीं लगता क्योंकि जैसे दावाग्नि वायु के वशीभूत होकर जंगल को जरा-

२ सारंग मकवान से यहां उसी मकवान के पुत्र से अभिप्राय है जो मकवान शहाबुद्दीन के हाथों से मारा गया था सारंग सोलंकी और मकवाना उसका पुत्र जैसे मीरहुसैन।

देती है उसी प्रकार वे भी स्वामी सेवा के धर्म को धारण कर शत्रु का विनाश करना विचारते हैं। जब तक चोले में दम है तब तक काम करते हैं और हंस के चल बसने पर सदा आराम करते हैं। दोनों दलों में मार मार होते पहर दिन चढ़ आया और सामन्त सेना के पराक्रम रूपी कगारों के बीच में शत्रु सेना की रुधिर धारा बह निकली। अधमरे घायल हा हा और शक्ति सम्पन्न सूरवीर बंब बोलते थे। खून के बने घने फव्वारे, अग्नि शिखा से, उज्वल शस्त्र बिजली से, बाणों की बौछार वर्षा सी, और उनसे उत्पन्न सन् सन् शब्द भ्रंगस्वर सा भासित होता था।

इसी समय उधर से सारंगराय खीची ने इस जोर से धावा किया कि चहुआन सेना के दांत खट्टे होने लगे। अच्छे अच्छे हट्टे कट्टे सिपाही जुट्ट बाँध कर भी आगे बढ़ने से हिचकने लगे। यह देखकर पृथ्वीराज ने स्वय घोड़े को एड़ लगाई। उस टेढ़ी टेढ़ी मूंछ वाले बलवान जवान चहुआन ने बाणों की वर्षा करके कुंडलाकार चक्र बाँध दिया। एक क्षण मात्र में शत्रु सेना में हाय हाय होने लगी। दशों दिशाएँ और आठो वसु थर्रा उठे और थोड़ी देर में चालुक्य सेना के भी पैर पीछे पड़ने लगे, लड़ने से हटना और डटना तो हुआ ही करता है पर सच्चे शूरवीर पुरुष सदा प्रशंसा के पात्र होते हैं। शूर पुरुषों से सूर्य्य भी भयातुर रहता है क्योंकि वे सूर्य्यमण्डल को भेदकर ब्रह्म में लीन होते हैं। और क्या कहें, युद्ध में शूर पुरुष उस वामन स्वरूप से भी बड़े हैं; क्योंकि बावन ने तीन पग में तीन लोक नाप थे और शूर पुरुष एक पग में तीन लोक लांघकर चिन्मय ब्रह्म में मिलकर तन्मय होजाते हैं। जिस समय सच्चे स्वामिसेवी सुपूत शूर पुरुष ऊंची बांह करके तलवार की वार करते थे उस समय उसे देखकर देवता भी वाह वाह करते थे। ओज मय बाजों के स्वर के साथ परस्पर तलवारों की झना झन चाँचर का सा स्वर जान पड़ता था उसी लय में योगिनी तथेइ तथेइ के ताल पर नाचती थीं

किसी शव को शृगाल घसीटते और किसी को गृद्ध नोचते थे। दाँत और सुंड कटे हुए हाथी बड़े भयावने जान पड़ते थे। हय हींस हींस कर चौकड़ी भरते और सवार सम्हल सम्हल कर वार करते थे। वह सहस्रों विज्जुछटा की छवि देख कर देवता प्रसन्न होते और देवाङ्गनाओं के मन लुभित होते थे।

चहुआन सचिव सच्चे वीर कैमास के तीन वार खाली गए। क्योंकि इधर से ये उधर से वे-दोनों दल के वीर अपनी अपनी बाजी पर बज्र से डटे थे। आखिरकार मार होते होते जब सन्ध्या होने को हुई और बहुत कुछ सैनिकोंके मरजाने पर मैदान में कुछ उकास पड़ा तब पृथ्वीराज स्वयं मार काट करता हुआ बढ़ कर भीमदेव के साम्हने जा पहुंचा और बोला हे भीमदेव आ, अब तेरा अन्त आगया। इस पर भीमदेव नागिन सी कृपाण खींचता हुआ बोला, अच्छा देख मैं तुझे भी सोमेश्वर के पास भेजता हूं। इतने में पृथ्वीराज के पीछे से कन्ह ने लपक कर कहा (इधर देख) और एक ऐसा जनेऊ-उतार हाथ मारा कि भीमदेव कटकर दो होगया। वाह, वाह, कन्ह की बांकी तलवार क्या थी मानो दूज का इन्दु, निष्कलक चन्द किरण, या दिशाओं का सौरभ समूह था।

भीमदेव के मरतेही चाहुआन सेना में जैजैकार होने लगा। तब तक दिशाओं में अंधेरा भी छा गया और स्वामी विहीन परास्त गुरजर सेना भी पट्टनपुर को लौट गई। इधर उक्त मर्मशाली शत्रु के शमन हो जाने से चहुआन का चोला भी चंगा हो उठा। परन्तु थके मादे होने के कारण सब लोग जहां तहां आराम करने लगे। रणक्षेत्र में रात्रि भर करुणा तथा वीर रस का प्रभाव रहा। अहा धन्य है क्षत्रीवर्ण, जिसे पेट की रोटी और जाति की लज्जा के लिये जान देनी पड़ती है। परन्तु यह कैसी विचित्र खेती है कि मरने के पीछे ही फसल हाथ आती है। इधर अपनी मिट्टी को भूत बैताल काली कपाली कौवे गीध खाते हैं और उधर आप स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने जाते हैं।

ज्यों त्यों करके वह भयानक करुणा और वीभत्स रसमय रात्रि व्यतीत हुई। तिमिर फट गया, आसमान में उजेला आगया, देव कर्म होने लगे, चकवी ने विलाप करना छोड़ा, उल्लू अन्ध हुआ, देवालयों में शंखध्वनि हुई, और वृक्षों पर पक्षी कलरव करने लगे। ज्यों ज्यों सूर्य की किरणें तेज होने लगीं त्यों त्यों कमल खिलने लगे और यमुना के कंचन से स्वच्छ जल में सूर्य की किरणों की आभा विचित्र ही छवि छाने लगी। इस समय सब सामन्तों ने अपने समर विजयी स्वामी को प्रणाम किया। पृथ्वीराज की आज्ञा से उसी समय खेत साफ किया गया। इस युद्ध में पृथ्वीराज की तरफ के डेढ़ हजार घोड़े पांच सौ हाथी और पांच हजार सिपाही काम आए और जैतराव प्रमार अधिक घायल हुआ। सच है यह संसार स्वप्ने का वस्त्र है। यावत् दृश्यमान पदार्थ एक न एक दिन नाश होते ही हैं। फिर मनुष्य तो काल रूपी खटीक (१) के घर का बकरा है। वह निर्दयी दयावान और अदय किसी को भी नहीं छोड़ता। इस लिये सूर वीर सामन्तों का यह मत यथार्थ तत्वमय सत्य और माननीय है कि समय आ पड़ने पर मारने मरने से न चूकना चाहिए।

इसके बाद पृथ्वीराज ने संजमाराय के दोहित्र कचरारोय को राजा बनाकर दस बंदरगाह देकर चौर छत्र भी दिया। शेष ८४ बदरगाह खालसे में रक्खे और भीमदेव के पुत्र को पट्टन राज्य पर तिलक करके कचरारोय को साथ लेकर दिल्ली की तय्यारी की। उस दिन पचमी रविवार इन्द्र योग को कोई व्रत था इसलिये सूर्य्योदय होते ही पाल-परताल खाने कर दिए गए और दूसरे दिन पृथ्वीराज ने भी वहां से कूच किया।

(१) खटीक = हिन्दू कसाई

(१) बन्दरगाहों के लेन देने की बात जिन दोहों में है वे दोहे मो० प्रति में नहीं हैं। मो०:०प्रति का पाठ अधिक प्रामाणिक है।

विनय मंगल नाम प्रस्ताव।

(पैंतालीसवां समय।)

एक समय चंडी देवी ने इन्द्र से कहा कि हे देवपति धरनि पर रुधिर धारा बहाइए क्योंकि मेरी रामायण और महाभारत आदि युद्धों के समय की तुष्टिन्त्रुटि के आपही के द्वारा पूर्ण होने की आशा है। यह सुन कर इन्द्र ने उत्तर दिया कि हे चण्डिके! सुनो, राम और रावण का ऐसा घोर घमासान युद्ध हो गया है कि जैसा पृथ्वी पर और पहिले कभी भी नहीं हुआ था। इस युद्ध में शूर वीरों ने निज तन को तिनका समान जान मार मार कहते हुए प्रतिपक्षियो पर ऐसे करारे वार किए कि जिनकी करनी ससार में अचल हो गई। मृतकों के मास से थलचर मात्र पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो गए, शूरवीरों के सिरों से शिव की रुडमाल भर गई परन्तु आश्चर्य्य है कि तू और भूदेवी दोनों की क्षुधा शान्त न हुई।

जिस समय राम ने लका पर आक्रमण करके त्रिकूट पर स्थित रावण के किले को घेर लिया उस समय निशिचर समूह आत्मरक्षा के लिये उद्यत हो उनसे लड़ने आया। वे राक्षस लोग ऐसे दीर्घकाय थे कि जिनका सिर आकाश को स्पर्श करता था। उनके अत्याचार मय आतंक से तीनों लोक कपित होते थे। जिस समय वे मायावी नाना भाति के अस्त्र शस्त्र धारण कर युद्ध करने में प्रवृत्त हुए तब दसो दिशाओं मे हलचल मचगया। परन्तु प्रतापी राम और लक्ष्मण ने प्रचड वाणों की वर्षा करके उन सब को स्वर्ग मार्ग बतलाया। उन सब राक्षसों में रावण का पुत्र मेघनाद अत्यन्त बलवान था। उसकी लक्ष्मण जी से बरनी हुई। मेघनाद ने अपनी अद्भुत माया से सुर नर असुर सब को चकितचित कर दिया परन्तु ब्रह्मचर्य व्रतधारी लक्ष्मण ने अन्त में उसे भी मारडाला। तब रावण ने अपने भाई कुभकर्ण को जगाया जो कि छः महीने तक बराबर सोता रहता था। वह लका की राक्षस मडली में सब से अधिक बलवान दीर्घकाय और भयानकमूर्ति था। वह जैसेही सो कर उठा तैसेही सीधा युद्धभूमि में जा उपस्थित हुआ। जब वह राम पर अस्त्र शस्त्र की वर्षा करता और अपनी माया फैलाता था तो आकाश में स्थित सुर समूह मे हाहाकार मच जाता था। अन्त में भगवान रामचन्द्र ने अपने तीव्र वाणों से काट कर उसे खड खड कर दिया। तब दशशीश रावण स्वय गर्वों के रथ पर सवार होकर लड़ने आया और उसने भी खूबही पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में बन्दरों ने पत्थर पहाड़ों की वर्षा करके उसके रथ को चकनाचूर कर दिया और रामचन्द्र ने इकतीस वाण सधान कर उसके नाभिकुड में स्थित अमृतबिन्दु को भी सोख लिया जिससे वह भी धराशायी हुआ।

अन्त मे उन उदारचरित राजा रामचन्द्र ने इस प्रकार परिश्रम से जीते हुए लका के राज्य को उसी रावण के भाई विभीषण को दे दिया। पुरुषों में श्रेष्ठ राजा रामचन्द्र के इस प्रकार अतुलित पराक्रम मे ऐसा अद्वितीय रक्त प्रवाहित हुआ परन्तु तू तौ भी सन्तुष्ट न हुई। अब तक ढेढी सास भरभरी फिरती है तो अच्छा कन्नौज और दिल्ली के राजाओं में वैर हो जाने के कारण अब जो उन दोनों में परस्पर युद्ध होगा उसमें सब की आशाए पूर्ण होंगी, चडिका की क्षुधा शान्त होगी, योगिनियों के खप्पर भर गे, शिव रुडमाल नवीन करें गे और पृथ्वी पर रक्त के नदी नारे भरें गे।

निदान देवेन्द्र ने मतिप्रधान गन्धर्व को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम मृत्युलोक मे जाकर पृथ्वीराज चहुआन और कनवज्ज राज जैचन्द में परस्पर विग्रह का बीज बोकर उन दोनों में युद्ध करवाओ जिससे ससार में उनकी कीर्ति का विस्तार हो। यह सुनकर वह गन्धर्व सुवा का स्वरूप धर कर कन्नौज मे जा पहुचा, वह दो दिन पर्य्यन्त दिन भर तो

१ शक्ति की उस कला की उपाधि चडी है जो कपाली प्रेत और यागिनी आदि की स्वामिनी और रुधिर मांसादि पदार्थों की भक्षण करने वाली मानी जाती है।

कन्नौज नगर की शोभा निरीक्षण करता और रात्रि को मैदनिका ब्राह्मणी के घर के आँगन में एक वृक्ष पर बसेरा लेता था।

उस गंधर्व ने वहाँ से आकर अपनी स्त्री से कहा कि जैसे सतयुग में काशी, तेत्रा में अयोध्या और द्वापर में हस्तिनापुर सब भांति से श्रीसम्पन्न थे वैसे ही आजकल कलियुग में कन्नौज है। यह सुनकर उसकी स्त्री बोली कि हे स्वामी कृपा कर मुझे संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा और उसके कन्नौज में जन्म लेने का कारण कह सुनाइए। तब गन्धर्व बोला—

एक समय जेटाशंकर नाम शिव स्थान पर एक जरज नाम ऋषि तपस्या करता था। उसने ऐसी कठिन तपस्या की कि उसके नेत्र नाक कान जिह्वा हृदय जघा त्वचा आदि दसों इन्द्रियां पराक्रमहीन हो सूखकर लंकड़ी होगई। उक्त शिवजी के प्रसाद से जिस तपस्वी की आत्मा शिवमय हो रही थी और जो सीधा मुक्तिमार्ग पर चल रहा था वह क्षिमा नामक एक सुंदरी पर मोहित होकर तप के तारतम्य से पतित हो गया। सुन्दरी स्त्रियों के अंग का लावण्य अनंगरूपी अगनेनुमा है, जिसमें रूप के किनारों से सुरक्षित मोहरूपी जल का ताल भरा हुआ है, उसमें कटाक्षों की भौंर पड़ती है और मानसिक योग को भी विध्वंस करने वाली प्रेमविस्तार की लहरें उठा करती हैं, और फिर भी कान्ता की कान्तिरूपी गभीरता में पुरुषों के चित्त को खींचने की ऐसी विलक्षण शक्ति विद्यमान है कि जिसके कारण अच्छे अच्छे विशुद्धमन योगियों की भी जीवननौका पार नहीं तरने पाती। वे मतवारे हाथी की तरह बह कर मछली की तरह तरफराते है। अस्तु वह तपस्वी ऋषि उस विषय रस की मूर्ति लवंगलता सी सुन्दरी के प्रेमपाश में बँधकर बवस होगया। उसे देखते ही उसका कंठ गद्गद होगया। सारा शरीर कांपने लगा और उसकी नजर से नजर मिला कर वह अपने पूर्व सुकृतों से ऐसा बेसुध होगया जैसे फटा हुआ दूध छांछ को छोड़ देता है; परन्तु जब वह सुन्दरी अन्तर्ध्यान होगई तब तो जरज ऋषि तुषार ताडित वृक्ष की नाई विकल होकर गिर पड़ा। उसे उसी समय से अपना जप जाग तप सब भूल गया और उसका सर्वस्व क्षिमामय होगया। सोते जागते उठते बैठते खाते पीते सर्वत्र उसे क्षिमा की मोहनी मूर्ति सूझ पड़ती थी इसलिये वह निरन्तर प्यास पपीहा की भांति क्षिमा, क्षिमा रटा करता था।

कुछ दिन तो जरज ऋषि का चित्त योंही मृगी का कीट बना रहा; परन्तु फिर वह आपही आप सम्हल गया इसलिये उसने उस कुत्सित वासना को त्याग कर सत्कर्म में मन लगाया। पहिले समस्त तीर्थों में भ्रमण करके क्षुधा तृषा निद्रा आदि उपाधियों को उसने जीता और सिसिर ग्रीष्म पावस इन तीनों ऋतुओं में तन को तपइया देकर नीरस बनाया और केवल धूम्रपान करके पैर के अंगूठे से उलटे टँगे सच्चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान करते हुए सौ वर्ष बिता दिए। उसके इस प्रकार कठिन तप के कारण तीनों लोक कांप उठे और इन्द्र का इन्द्रासन डुल पड़ा।

इसलिये इन्द्र ने रंभा उर्वसी तिलोत्तमा घृताची मेनिका सुकेशी मंजुघोषा आदि प्रधान अप्सराओं

(१) मूल पुस्तक में "बंमनिय मदन" पाठ है।

(१) मूल पुस्तक में "जटा वीरशंकर शिवथान" पाठ है। मुल्क बुन्देलखण्ड रियासत छतरपुर अन्तर्गत खजुराहा एक स्थान है जहां कि किसी समय चन्देल राजाओं की राजधानी थी वहां पर अब भी कुछ समूचे कुछ टूटे फूटे मन्दिर उस स्थान की प्राचीन श्री की सूचना देते है। खजुराहे में एक शिवलिंग है जिसे महोबे के राजा परिमाल का स्थापित किया हुआ अनुमान किया जाता है। उस "मैलगेश्वर" के अग्निकोण में दो मील के फासिले पर एक पहाड़ी है जिसके आधो आध में एक शिवलिङ्ग स्थापित है। उस शिवलिङ्ग को आजकल 'जटाशंकर" कह कर पुकारते है। उसी पहाड़ी के पास एक गांव भी है जो कि जटंकरा कहलाता है। इन शिव जी का शिवालय जीर्ण होकर गिर गया है। यह स्थान बड़ा प्राचीन मालूम होता है। मेरा अनुमान है कि भूल ग्रन्थ में कथित 'जटा वीर शंकर शिवथान' यही स्थान है क्योंकि मूलपाठ "जटा वीर शंकर" में से केवल वीर निकाल लेने से उक्त शिव लिङ्ग का प्रचलित नाम "जटा शंकर" होता है।

को बुलाकर उनसे कहा "हे कमल नयनी, गजगामिनी, पिकबयनी, सिंहलंकी, ताल स्वर ग्राम कला विकलादि सहित सर्गीत विद्या और नृत्यादि कलाओं में निपुण अप्सराओ! तुम में से एक कोई मृत्यु लोक मे जाओ और तेजस्वी तापस सुमन्त ऋषि को छल से तपभ्रष्ट करो क्योंकि उसके तप के तेज से मेरा आसन डोल रहा है! शिव की ताली खुल गई है, शेष सकित है, स्वर्गस्वामी सुरेंद्र को शका है और उड़गन समूह नीरस हो रहे है। इन्द्र के ऐसे बचन सुनकर वे आठों पुष्पवत कोमल शरीरवाली स्वर्ग वारागनाएं विमानों पर बैठ कर भूलोक मे आ उपस्थित हुई। वे दशों दिशाओं की सौदामिनी की द्युतिवत् देदीप्यमान दिव्याङ्गनाएँ दिव्य शृगार धारण किए हुए साक्षात् तन धारी मोहनी मत्र सी ज्ञात होती थीं। उनके स्वाभाविक रसमय सहज हास विलास हाव भाव कटाक्षादि की छाया से जटिल योगीश्वरों का मूर्छित कामदेव जागृत हो उठना सभव है। वे सब अप्सराएं कलकठ से गान करती, दशो दिशाओं की वायु को अपने शरीर की गध से सुवासित करती हुई उस स्थान पर आई जहां सुमत ऋषि तपस्या करता था। उनमें से रम्भा त्रिमा का वेष धारण कर आगे हुई और अन्य अप्सराएं विविध विधि के गान वाद्य करने मे प्रवृत्त हुई। इससे सुमन्त की समाधि कुछ खुली और पलक भी उघरे परन्तु अप्सरी इससे स्वयं लज्जित हो सकुचित सी हो रही, वह विचारने लगी कि यदि अब हमलोग आगे साहस करती हैं तो तापस का शाप शिरोधार्य्य करना पड़ेगा और जो यहा से योंही लौट जाती है तो सुरराज का कुपित होना सभव है, क्या करें किसी तरह गति नहीं है? अन्त मे रम्भा ने साहस किया और वह पुनः उसी वेष में सुमन्त के पास में आई।

तब तक यहा सुमन्त गाढ़ी योगनिद्रा की ताली में निमग्न था। वह उलटा टँगा हुआ आंख बन्द किए मूल पवन को रोके बंक नालियों मे जल चढ़ा कर हृदय कमल को तल कर रहा था और ब्रह्म तेज स्वरूपी अग्नि की ज्वाला से पापों को जड़ से जला रहा था। उसके अन्य सब अंग निश्चेष्ट थे उसे केवल कानों से अनहद शब्द सुनाई देता था। ऐसे ध्यानावस्थित तपस्वी की ताली तोड़ने के लिये झांझ, वीणा, मृदंग, मुरचंग आदि वाद्यों को झनकार करके अप्सराओं ने उच्चस्वर से श्री राग गाना आरंभ किया और तदनुसार वे हाव भाव कटाक्षादि सहित लावण्यमय ललित लीलाएँ कर अदाएँ बताने और अष्टाङ्ग प्रबन्धबद्ध नृत्यों के क्रम से छुटक छुटक कर नाचने लगीं। इन सब स्वरों का शोर सुनकर सुमन्त की समाधि का शमन हुआ, वह चकित चित्त होकर सोचने लगा, क्या मै स्वप्न देख रहा हूं? तब तक नूपुर की धुन सुनकर तो उसकी ध्यान गति का ही अवरोध होगया बस उसकी ताली टूट गई और पलक खुल गए। निदान वह अप्सरी से कहने लगा, हे बाले तू कौन है? कोई अप्सरी है? यक्ष कन्या है? या नाग कन्या है! यह कहकर वह कामातुर हो तप छोड कर उस स्त्री का करकमल पकडने के लिये झपटा परन्तु यह तो न जाने कहा समा गई और सुमन्त मूर्छित होकर गिर पड़ा, परन्तु कुछ देर मे वह आपही आप चैतन्य हुआ। सौभाग्य वश उसकी ज्ञान दृष्टि भी सजीव हो उठी और इसलिये वह पुनः पहिले की भांति तन मन से तपस्या करने में रत हुआ। उसने इन्द्रियों के उत्तेजक क्षुधा पिपासा निद्रा आदि को जीत कर इन्द्रियों को वश में किया। नाना प्रकार की योग क्रियाओं के द्वारा उसने ऊर्द्ध पवन को बोधा और स्वास को बराबर बाए स्वर से पीते हुए और दाहिने से छोड़ते हुए उसने कुभक पूरक नाडिया सिद्ध करते हुए पुनः ऊर्द्ध मुख हो ध्यानावस्थित रहना आरम्भ किया।

कविचन्द की स्त्री ने पूछा कि हे पति वह अप्सरा कैसी सुन्दर थी। इसपर कविचन्द बोला कि हे प्रिये! उसके चरण तल की अरुणाई बसन्त ऋतु के कमल पुष्प की लालिमा को मात करती थी। उसके नखों से अमृतमय चन्द्रमा एवं

मौतियों की आभा प्रस्फुटित होती थी, उसके पैरों में नगजटित नूपुरों का स्वर कलहंस के कलरव को मात करता था और उसकी मंद मंद चाल गयंद एवं हंसों के हौसले हराती थी। उसके स्फटिक के समान जंघा, अर्द्ध तुंबाकार बडे बड़े नितम्ब, मृगराज की सी पतली कमर और उसकी गंभीर नाभी साक्षात् काम की सी बावली थी। कमर में रुरती हुई कटि किंकिड़ियों से होता हुआ शब्द मणिहारे सर्प की फुंकार का काम करता था। उसका एकसा सुडार त्रिवली सहित सुन्दर पेट, वक्षस्थल पर उठते हुए अनियारे उरोज और बीचों बीच सूक्ष्म रोम राजी ऐसी मालूम होती थी मानो पीठ पर लटकती हुई वेणी की छाया की छटा छूट रही हो। उसके कलद्योत और श्रीफल को लज्जित करने वाले कमल कली से उन्नत उरोजों पर रुरते हुए पुहुपहार की योजन पर्य्यन्त सुवास फैलती थी। उसका कठस्वर कोकिला के समान और चिबुक पर रक्खा हुआ काला नुकता कमल कली पर बैठा हुआ भ्रमर सा भासित होता था। उसकी तिल प्रसून एवं कीर की चोंच सी नासिका में मोतियों मय बेसर ऐसी सुशोभित होती थी मानो शुक्र और शशि इस जड रूप में परिणित होकर शृंगार रस का आस्वादन कर रहे हों, उसके सित कमल स्वरूप नेत्रों के कारे कारे तारे भ्रमर से, टेढी भौहें, पंचबाण के धनुष सी ललाट पट अर्द्धचन्द्रमण्डल सा और उसपर केसर का तिलक चन्द्रमा सूर्य्य का सा सगम ज्ञात होता था। उसकी वेणी सर्प सी और अंग सुवास ऐसी सुखद थी कि उसके आस पास सदैव भ्रमर मंडराया करते थे। हे प्रिये अधिक क्या कहूं उस चंपक वरनी, सरमिज सुवासिनी, राजीवनेत्री, बिम्बोष्ठी, कलकंठी, कुंद, कली सी दंत पंक्ति वाली मनहरणी अप्सरा के सारे शृंगार आडम्बर स्वरूप थे क्योंकि जिसे देवता और दैत्यों ने गाढ़े परिश्रम से समुद्र का उदर विदार कर निकाला उसके लिये एक श्वेत सारी ही वस्त्र है। हे प्रिये जिन अप्सराओं के लिये संसार में बड़े बड़े समर होते है सूर वीर पुरुष सब नाता नेह तोड़ कर तन को धज्जी धज्जी उड़ा देते है उसके ऊपर यदि सुमत मोहित हो गया तो क्या बड़ी बात थी।

अस्तु जब वह इस प्रकार से ऋषि के चित्त को चंचल कर चुकी तब उसने योगिनी वेष धारण किया। कानों में स्फटिक मुद्रा पहने सर्वांङ्ग विभूत रमाए जटा जूट बाँधे कंठ में शृंगी पहिने हाथ में डमरू लेकर योग साधनाओं का आडम्बर रचकर बम करती और डमरू बजाती हुई सुमत के पास जा पहुंची। ये सुखमय स्वर सुनते ही सुमत की तालीं टूट गई और वह चकित चित्त होकर सोचने लगा है ये कौन है? क्या साक्षात् शिव ने ही मुझपर कृपा की है? तब तक योगिनी सामने आ उपस्थित हुई, उसे देखते ही सुमन्त ने अर्घ पाद्य देकर आसन दिया और उसका ग्राम नाम पूछा। तब वह बोली कि वैसे सुर नर सभी मेरी मोहिनी मूर्ति पर मोहित थे परन्तु जब मैंने सांसारिक व्यसनों से विरक्त होकर घोर तप किया तो इन्द्रासन डोल उठा और सब देवता दुखित होकर मेरी शरण आए, अतएव मैंने फिर देवताओं को दुखी न करना विचार कर तप जप तज दिया और अब चिदानन्द ईश्वर के ध्यान में मग्न रहती हूं।

वह पुनः बोली कि हे ऋषीश्वर। इस संसार चक्र के चरखे की चकाचौंध से जो अपना पराया सूझता है यह सब कुछ भी नहीं है। शुद्ध ब्रह्म की उपासना से मरण जीवन का झंझट छूट जाने पर जीव ज्योति उस अनन्त आनन्दमय स्वरूप में इस प्रकार से मिल जाती है जैसे सोने का कोई गहना तोड़ कर सोने के एक बड़े ढेले में मिला देने से फिर उन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता, हे योगीवर उस उपासना की विधि यों है—अर्द्ध मूल को ग्रहण कर ऊर्द्ध स्वासा का संचार करे और नासा के अग्रभाग में उस ज्योति स्वरूप ईश्वर का ध्यान करे, बंक नालियों से वायु खींचकर मेरु दंड (१) को उत्थान दे। तब अनहद शब्द सुन पड़ता है, ज्ञानी पुरुष उसी

(१) मेरुदंड—अन्य योग ग्रन्थों में कुंडलनी या सर्पिणी करके लिखा है।

स्वर की ध्वनि में सोऽहं मंत्र का जाप करे। ऐसा करने से नाभि स्थान का आठ दल वाला कमल विकसित होता है और उससे दस अंगुल पर उलटा लटकता हुआ हृदय कमल है जिसकी कान्ति तप्त स्वर्ण के समान है। यह कमल कमल-कली की बनावट का है और शरीरान्तरगत वायु के संचालन की कुंजी स्वरूप है। वायुमूल ऊर्द्ध योग की सिद्धि से यह भी कमल के पुष्प की तरह खिलने लगता है। इसके अन्तर्गत अंगुष्ट प्रमाण आठ भुजा वाले देवता का निवास है। तीसरा अष्ट दल कमल कंठ स्थान पर स्थित है। इसका देवता रुद्र और इसमें सूर्य्य और अग्नि की तेज शक्ति विद्यमान है। इस अग्नि ज्वाला समान तेजोमय कमल के पिष्ट भाग में नारायण का रत्न जटित सिंहासन है जिसमें वह भृगुलता और कौस्तुभमणी सुख चक्र गदा पद्मधारी स्वयं विराजमान है। वह ध्यानावस्थित योगियों को दर्शन देता है। अन्त में हजार दल वाला पद्मकोष नाम का कमल मस्तक में है। इसका स्फटिक के समान श्वेत रंग है और इसमें सहस्र सूर्य्य का प्रकाश और सहस्र चन्द्रमा की शीतलता विद्यमान है इसके समस्त दल श्वेत, लाल, पीले, काले इन चारो रंगों में विभाजित हैं और वे क्रम से सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग इन चारों युगों से सम्बन्ध रखते है। उस कमल के पिष्ट भाग के मूल पर स्वयं गुरु निराकार देव परमात्मा का वास है। उसी का ध्यान करने से योगी मुक्ति पाते है। हे मुनि! योगी लोग इस प्रकार ध्यान धर कर गीता में कृष्ण के कहे अनुसार विराट रूप की उपासना करें और दिन रात बराबर जागें। इसलिये हे मुनि तुम तपस्या का कष्ट तज कर या उक्त निर्गुण ब्रह्म या विराट रूप सगुण प्रभु का ध्यान धरो और यदि सच पूछो तो दस अवतार उसी भक्तवत्सल ब्रह्म के है जो कि उसने समय समय पर भक्तों के उद्धार के लिये धारण किए है। कच्छ, मच्छ, वाराह, नृसिंह, वावन, परशुराम, राम और बुद्ध वे अवतार तो गत हैं अन्तिम अवतार कृष्णावतार है जिसमें भगवान ने गोपियों के साथ विहार किया इसलिये उस कृष्ण भगवान को प्रसन्न करने के लिये स्वयं रसमय होना आवश्यक है। हे मुनि, इधर उधर की भ्रमना में न पड़ो, सब छल छोड़ कर हर मय हो जाओ।

यह कपट वेष धारिणी अवधूतनी इस प्रकार छल बल की बातें कर ही रही थी कि तब तक उसके पीछे एक विकराल काय सिंह गर्जन, करता हुआ आता देख पड़ा। उसे देख कर अवधूतनी भय से कंपित होती हुई, सुमत की गोद में बैठ कर उसके हृदय से लपट गई। बस वह छल रूपी सिंह तो न जाने कहां विलीन हो गया परन्तु काम रूपी सिंह ने सुमत का कलेजा धर लिया। उस कामिनी के कुच कमलों का स्पर्श होते ही सुमन्त का सब वैराग्य भूल गया। कामान्धता के कारण उसका सर्वांग रोमांचित और शिथिल हो उठा। तब वह अप्सरी पुनः बोली रे ब्राह्मण इस रूखी जोग जुगति में क्या रक्खा हुआ है। सचक्कन सनेह का आनन्द लेकर अपने पूर्व संचित सुकर्मों का फल भोग क्यों नहीं करता। बस फिर क्या था सुमन्त का मन अत्यन्त ही अधीर होकर काम क्रीड़ा मे रत हुआ। इतने में सुमन्त का पिता जरज ऋषि आ गया। जब सुमन्त ने पिता को आया हुआ जाना तो वह भयभीत और लज्जित होता हुआ जरज के पास आया और प्रदक्षिणा करके उसके पैरों पर गिर पड़ा। उधर रंभा इस समय अपने असली स्वरूप मे थी। इसलिये जरज ऋषि ने उसे पहचान लिया और उससे कहा। हम ऋषि लोग जगल मे रहते और कंदमूल खा कर गुजारा करते है, तुम लोग हम को वृथा सताया करती हो, इसलिये तू हमारा यह शाप ले। यह कह कर जरज ने हाथ में कुशा लेकर इस प्रकार शाप दिया "मेरे शिष्य पर यह तेरा तीसरा वार है। जा तू मृत्युलोक में जन्म ले. तेरे कारण जिस प्रकार सुमत का चित्त व्याकुल हुआ उसी प्रकार तू भी आजन्म बेकल रहेगी, तेरे ही कारण तेरे पति और

(१) अंगुष्ट प्रमाण देव सुचह् तत्वां सं रंचित शरीर भूतं भवं। है।

पिता दोनों के वंशों का नाश होगा और अन्त में पति से भी तेरा विछोह होगा" इस शाप से रम्भा ने अत्यन्त डर कर जरज से करबद्ध होकर निवेदन किया कि हे सहज ही सरल हृदय कृपालु महात्मा अब कृपा कर मेरे उद्धार की भी युक्ति बतलाइए। तब जरज ने उत्तर दिया कि तू कन्नौज के राजा जैचन्द के घर जन्मेगी और जब वह यज्ञ करेगा तब दिल्ली के चहुआन राजा पृथ्वीराज से घोर संग्राम होगा। इस प्रकार भूमि का भार उतार कर तू पुनः स्वर्गलोक में आ सकेगी। यह सुन कर मलिन मन रूखे बदन रम्भा विमान पर बैठ कर स्वर्ग को प्रस्थानित हुई। इधर तपस्वी फिर तप करने लगे।

इसके कुछ दिनों बाद की बात है कि एक बार इन्द्र ने अपने यहां कोई बड़ा भारी उत्सव किया जिसके देखने के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश ये तीनों देवता भी आए। परन्तु द्वारपालों ने उन्हें अन्दर जाने से रोका। ब्रह्मा बोले, रे मदान्ध द्वारपालो। तुम्हें उस जन्म की खबर भूल गई जब कि सनक सनंदन सनत् कुमारों के शाप से तुम लोग तीन जन्म पर्य्यन्त राक्षस योनि भोग करते रहे हो। पहिले जन्म में हिरणाकुश और हिरणाक्ष्य हुए जिन्हे विष्णु ने नरसिंह रूप धर कर मारा। फिर रावण और कुंभकर्ण हुए जिनके लिये रामावतार हुआ और अन्त में कंस शिशुपाल हुए जिन्हें आनन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र ने पछारा। इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक सची सहित इन्द्र स्वय वहां आ उपस्थित हुआ और विनीत भाव से सस्तुति प्रणाम करके तीनों देवताओं को सादर रंगशाला में ले गया।

इनके आसनों पर आसीन होते ही रंभा हा हा हू हू आदि बजूधारी गंधर्वों को लेकर अष्ट अप्सराओं के समाज सहित सभा मंडप में आ उपस्थित हुई। गंधर्वों ने साज मिलाकर गत बजाई अप्सरी लुटक लुदक कर नाचने लगीं। इसके बाद रंभा ने प्रारम्भ में स्वर साधते ही इन्द्र के गुणानुवादों का गीत गाना आरम्भ किया। यह सुनते ही सदाशिव अप्रसन्न हो गए। आप यह कह कर कि तू ने श्रेष्ठ तीन देवताओं को छोड़ कर पहिले इन्द्र की बन्दना की इस लिये तू हमारा यह शाप सिरोधार्य्य कर 'जा तेरा पतन हो तू मृत्युलोक में जन्म ले और तेरे कारण भूमि पर भयानक काण्ड उपस्थित हो'। यह शाप सुनते ही रम्भा डर कर कापने लगी और उसने शिव के चरणों पर गिर कर प्रार्थना की कि हे नाथ अब मेरे उद्धार का उपाय भी बतलाइए। निदान शिव ने भी रम्भा से वही बात कही जो कि उससे सुमन्त के पिता जरज ने कही थी।

शुक बोला कि हे शुकी राजा देव की पुत्री जो कि कन्नौज में ब्याही गई थी उसी के गर्भ से रम्भा ने जन्म लिया। वही बालिका इस समय वयःप्राप्त होकर मदन बेभनी के यहां पढने गई और उसने उसे विनय मंगल पढ़ाने के लिये मुहूर्त निश्चय किया।

कवि ने अपनी स्त्री से कहा हे प्रिये "कन्नौज में कमधुज्ज वंशी राजा विजैपाल राज्य करता था एक समय उसने अपनी सब सेना सहित मतिगम और चितविद्या नाम के दोनों बुद्धिमान मंत्रियों को साथ लेकर दक्षिण की तरफ कूच किया। विजैपाल ने मरु भूमि को छोड़ कर क्रम से पूर्व से दक्षिण को यात्रा की।

उस समय पूर्वी समुद्र के किनारे सोमवंशी राजा मुकुददेव राज्य करता था। उसकी राजधानी कटक थी। उसके यहां तीस लाख सवार एक लाख हाथी और दस लाख पैदलों की वैतनिक सेना थी। उसने विजैपाल को सात कोस की पेशवाई देकर लिया और बड़ी पहुनाई साथ कर बहुत से धन रत्न और दास दासियों सहित अपनी पुत्री विजैपाल के नजर की। विजैपाल ने उस कुमारी का विवाह अपने पुत्र जैचन्द के साथ कर दिया। निदान जैचन्द पूर्वी किनारे से होता हुआ स्वेतबन्ध पहुंचा। स्वेतबन्ध से चल कर उसने तैलग कर्नाट मैथिल, कुकन पुलग असेर गुर्जर गुंड मगध चन्द कास कालिग आदि देश के हिन्दू और म्लेच्छ नरेशों को

जीतकर भोराराय भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर की ओर पयान किया। उसने चढ़ी सवारी भीमदेव के मुख्य नगर सोनपुर के प्रकोट को तोड कर क़िले पर दख़ल जा जमाया और फिर सेत्रुंजा में डेरा जा डाला। जब यह खबर भीमदेव को लगी तब तो उसने अपने पुत्र को बहुत से धन रत्न के साथ विजैपाल के पास भेज दिया। विजैपाल ने वह गुजरात से आया हुआ सब नजराना स्वीकार किया और भीमदेव के पुत्र को अपनी तरफ़ से सिरोपाव देकर विदा किया।

इस प्रकार विजैपाल जल थल में सर्वत्र अपना आतंक और अधिकार जमाकर कन्नौज को लौट आया। जल में बड़वानल और थल में केवल अजमेर पति चहुआन ही उससे न जीते जा सके।

विजैपाल के सकुशल कन्नौज में आजाने पर राज्य भर में आनन्द बधाई होने लगी। विजैपाल के पुत्र पतोहू का जुगल जोड़ा सानन्द समय विताने लगा। जब जैचन्द की उक्त स्त्री की सोलह वर्ष की अवस्था हुई तब उसके गर्भ से चन्द्रमा के समान दीप्तवती एक सुकुमारी कुमारी का जन्म हुआ। वह कन्या दिन दूनी दुइज की जुन्हैया सी बढ़ने लगी। यह वही जुन्हैया है जिसके कारण जैचन्द के अस्सी लाख अश्वारोहियों का नाश हुआ और उसके अर्द्धाङ्ग पृथ्वीराज का अन्तिम पतन हुआ।

इस प्रकार संयोगिता की पूर्व्व कथा कह कर अब कवि उसके आगे की कथा कहेगा।

(१) प्रकोट = शहर पनाह। लयो सुगढ सोभन्न कोट भज्यौ परिकोटह।

सूचना।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डाकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
कविवर बिहारीलाल–(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
समालोचना–(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
समालोचनादर्श–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	) ॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र– (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	–)
बिसूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
हरिश्चन्द्र–पद्य–(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
भगवद्गीता–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।–)	) ॥
उथेलो–(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य–प्रति भाग	१)	–)
हिन्दी लेकचर–(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	–)	) ॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	–)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।–)	) ॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	–)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	) ॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला–१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	–)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।–)	) ॥
पृथ्वीराजरासो–पहिला भाग (समय १–११)	४)	।)
,, दूसरा-तीसरा भाग (समय १२–४८)	१०)	॥)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	) ॥
श्रीधर का जंगनामा	।॥)	–)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	–)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	) ॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	–)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	) ॥

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी ...	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	।॥)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥।)	-)
विरहलीला-आनन्दघन कृत	=)	)॥
दादूदयाल का सबद-	१।)	=)
हम्मीररासो	२)	=)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	।=)	-)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-13

THE PRITHVÍRÁJ RÁSO

OF

CHAND BARDÂI,

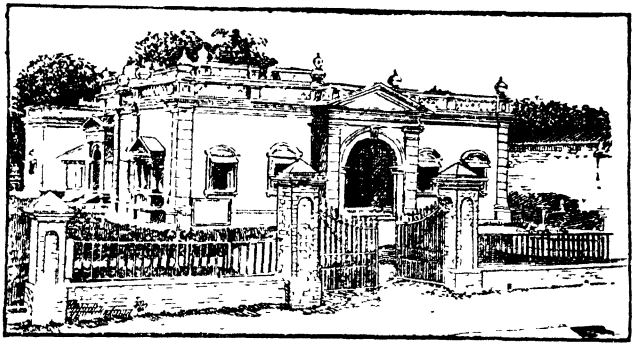
EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS LV to LVIII.



महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

पर्व्व ५५ से ५८ तक।

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1908.

मूल्य १।) Issued 25th March 1908. [*Price Re. 1/4/.*

सूचीपत्र ।

—:o—

(५५) सामंत पंग जुद्ध	....	....	पृष्ठ १४१७ से १४४७ तक
(५६) समर पंग जुद्ध	....	....	,, १४४९ ,, १४६३ ,,
(५७) कैमास बध	....	....	,, १४६५ ,, १५०९ ,,
(५८) दुर्गा केदार समय (अपूर्ण)	....		,, १५११ ,, १५४४ ,,
रासोसार	....	....	,, १६७ ,, १९८ ,,

———o———

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिप्यते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अंगन ॥
सबर सेन सुरतान । बान बंधन पल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन । देव सेव गंधब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडै आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ इक्क हथ्थ महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै अब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद । दंद दारन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्यिन पुब्ब । कोन मंडै दल उत्तर ॥
ढिल्लिय चिचय कोट । जोट अड्डै दल षंगं ॥
सेव दंड अन मंड । षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रब्ब घर उग्रहै । इम तष्यै रट्ठौर पह ॥
सुष इंद्र ब्यंद छत्तीस दर । मुकट बंधि बिन मान मह ॥
छं० ॥ ३ ॥

अति उतंग तन बल। विभंग जग महि सूर जुध ॥
अहत वाह जम दाह। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फुट्टि दल जानिक साइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मले सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जे सुबर ॥
आवाज कंन पंगह सुनी। हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिष्टि सु नृप दिष्षे सकल। दिष्षावत बनि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरो। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक्क सबल सित सूर। इक्क बल सहस प्रमानं ॥
इक्क लष्प साधंत। दंति भंजै गज पानं ॥
इक्क विरुध जम करहि। इक्क जम जोर भयंकर ॥
इक्क जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव ध्रम्म स्वामित्त मन। तन हित्तन मंडै बियौ ॥
तिन रष्पि घरह प्रथिराज नृप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि से उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर दिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि चिय नयन्न बरिषा जुजल। मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥

अढर ढुरहि गढ़ ढरहि। मेर घर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ पर पिट्ठ। सेस सल्ल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल थल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

हिंदवान राह पहुपंग बर। चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन। षग पंति मंडी सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान सूर छुट्टै न महि। विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग बिनु। इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भयंकर अरि भवन। भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मैं। सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म। क्रम्म को करै सँघारन ॥
को मुवौं कर धरै। मूर महि कोन उपारन ॥
को दरिया दुस्तौं। नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै। कोन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो ज्यंग जुरि। दनु देवत्तरु नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर। उदधि जानि जलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
बेली भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं। अनभंग छचिय धारयं ॥
चहुआन बलनह बंधयं। द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं। डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अट्ठ दिसि बसि बिच्छुरै। जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं। धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती। कहों दुतिन दिप्पिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग घूनिय ना रहै। सुरलोक संकति आरहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल। धनि कहूँ हूं कंद ॥
घूनी पंग नरिंद कौ। को रप्पै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ। सिंघ पष्पन्यो झलालह ॥
पंग अमृत फल चषै। अमृत लग्गौ जु तमालह ॥
आगेई बर अप्प। नाग नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई बर करन। भान साहै चिंता चढ़ि ॥

को करै पंग सो जंग जुरि। सु विधि काल दिष्पै नहीं॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही॥ छं० ॥ १७॥

जयचन्द के सोमन्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंचीस। मंच पुच्छै जु मंच बर॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गन्यौ मंड धुर॥
धवल सुमंची मंच। तक्त आरिष्य प्रमानिय॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय॥
विधि मंच जंच आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रबल॥
छं० ॥ १८॥

सबद बाद से वरें। इष्ट मंची न तक्त गुर॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स धृम्म नर॥
स्वामि धृम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्पै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर॥ छं० ॥ १९॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु सस्त्र नर॥
ग्राम धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं॥
तारा क्रत चिचंग। दियो संदेस सु कज्जं॥
करि करिनि कंक चिचंग वस। करौ जग्य आरंभ बर॥
मंची सुमंच राजन बली। ते हक्कारे मंत धर॥ छं० ॥ २०॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंची सुमंत। पुच्छै सुमंच बर॥
पहु सुमंत विग्गन्यौ। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर॥

सोइ मंची स प्रमान। जग्ग धुर वधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। कित्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव जंत दिष्पै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो भिट्टावहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुच्च हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड वुहिल्लौ ॥
चिचंग राव रावर समर। विनक बंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सवर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुअ सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्ग उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कौन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुबर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंच मंचिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह जग्ग धर ॥
नर उत्तिम चिचंग। राज उत्तिम चिचंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्पन गज अंगी ॥
कालंक अछिय कट्टन सु छिप्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चिचंग राव रावर समर। मिलि सु जग्ग फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति बर बर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। जग्ग समप्पैं लोग ॥
जग्ग समप्पैं लोग। उभ्भ सारंग सुनाई ॥

एकल्ल सारंग । तिमिर अप कहूं न जाई ॥
वियौ तिमिर भंजियै । अप्प पुलि जाइ तमं घन ॥
अप्प तिमिर भंजिये । प्रलै हाइय सु अप्प पुनि ॥ छं० ॥ २५ ॥

सोमंतक का चितौर को जाना ।

कवित्त ॥ पंग जग्य आरंभ । मंत प्रारंभ समर दिसि ॥
सोमंतक परधान । पंग हक्कारि बंधि असि ॥
सत तुरंग गति उड्ड । पंग गजराज विशालं ॥
मुक्ति अवेध सुरंग । एक दस लालति मालं ॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ । अड्ड देस अध बंटियै ॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर । जग्य अरंभ सु ठट्टियै ॥
छं० ॥ २६ ॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना ।

आहुठ्ठां मझ्झांम । समर साहस चिचंगी ॥
निविड बंध बंधे । अबंध सा भ्रम्म सु अंगी ॥
चिंतानी कलपत्ति । रूक रत मोह अरत्ता ॥
सिद्धानी मोगर सुभैस । सम सद्ध सु गत्ता ॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय । जग्य बेलि जिमि उद्धरै ॥
चिचंग राव रावर समर । मिलि जीवन जिहि उद्धरै ॥
छं० ॥ २७ ॥

पद्धरी ॥ मुक्कलै पंग बर मंच बीर । जानै सु गत्ति राजन सरीर ॥
मन पंग होइ सो कलें बत्त । बिन बुलत बोल बोलें सुतत्त ॥
छं० ॥ २८ ॥
जानै सु चित्त नर नरनि बत्त । अमि रत्त रत्त ते लषहि गत्त ॥
कोटी सु भ्रंग ज्यौं मिलहि स्याम । डर ग्रहैं रहैं जामित्त जाम ॥
छं० ॥ २९ ॥
तिन मध्य एक सारंग सूर । सह मत्त बिद्ध जानत सपूर ॥
पाषंड दंड रच्चै न अंग । भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग ॥
छं० ॥ ३० ॥

भृगुराज पैज जिन करिय देव। मंगी सु मृत्यु जिन मृत्य सेव॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त। रध्यै जु राज राजन सु पत्ति॥
छं०॥ ३१॥

पगो सुजार चिचंग थान। चिचंग राज मिलि दीन मान॥
छं०॥ ३२॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना।

दूहा॥ समर सपति पति समर की। समर सभेद सपंग॥
जग्य वेद जौ उद्धरौ। भूमि भेद ग्रह जंग॥ छं०॥ ३३॥

पूछ कही चलतहिं न्रपति। सुबर बीर कमधज्ज॥
दीन भये दीनत भगै। सुबर बीर बर कज्ज॥ छं०॥ ३४॥

दीन भयें अरि अंग बर। छल छुट्टियै न छच्च॥
मय मत्तह सो वृत्त है। वै पुज्जै गुन मत्ति॥ छं०॥ ३५॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना।

नाम सु मंची तिन धर्यौ। रे सोमंत परधान॥
दीनत भयें भयौ न जग। जग्यवेर बलिदान॥ छं०॥ ३६॥

अरिल्ल॥ मिलिरु समर उच्चरि चौहानं। जग्य करन पहुपंग निधानं॥
चेता द्वापर कर्यौ जु देव। कलिजुग पंग जग्य करि सेव॥
छं०॥ ३७॥

कवित्त॥ समर रूप सुनि समर। पंग आरंभ जग्य धुर॥
सत्य पहुर बलिराइ। जग्य पहुरै सु जग्य बर॥
बियौ पहुर रघुबीर। जग्य आरंभन जग्यौ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ। ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय। सुबर बीर कमधज्ज धुअ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग। जग्गि जग्य विजपाल सुअ॥
छं०॥ ३८॥

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल ॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गल ॥
राज इच्छ राजसू। राज रा पंड पंड बन ॥
नघुअ राजसू जग्य। कूर कर कुष्ट कूप जन ॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन ॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन ॥
छं० ॥ ३९ ॥

अश्वमेद राजसू। लंब गौषंभ मेद बर ॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर ॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चौय आचरन ग्रेह बर ॥
ब्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर ॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उद्धरै ॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। हँसे लोइ बहु बिग्गरै ॥छं०॥४०॥

पद्धरी ॥ उच्चयौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं ध्रम्म चाव ॥
बल करो नन्न भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छचौ अनंभ। अन्यन कोस सित्तए मंझ ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान ॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंचौ न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह ॥
चैवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान ॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कहौ बत्त ॥
सुद्धरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर ॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त ॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति ॥
भव भवस्य त्रिम्मान। ब्रह्म भूलै त्रिमान गति ॥

---

(१) ए.-ना कुष्ट।

इह अजग्ग चिंतयौ। ग्रह ग्राहारन मांई ॥
तन मनुच्छ सम देव। बुल्ल बुल्यौ बल तांई ॥
चैलोक अप्पि बलिराइ ने। राम जुद्ध चैता सु बर ॥
जदुबीर सहाइक पथ्थ बँध। तब कुबेर बरष्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥
पंग सुवर परधान। समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्ग विग्गच्यौ। ध्रम्म छिची न सम्हारिय ॥
चंद जग्ग विग्गच्यौ। मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त। क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह ध्रम्म क्रम्म पल षंडि पग। जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह। अवर जग्ग नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद। समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्ध। समर आकृत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति। समति सम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान। सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि। भवतव्य सु चिंता सद्दरिय ॥
चिचंग राव रावर समर। इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना।

हम नरिंद जोगिंद। भूत सुभ्भौत भवसि गति ॥
हम चिकाल दरसी सु। क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान। अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरौं। जग्ग चट्टै नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष बर। रही जच तचह सु बर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर। तौ अग्गैंई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना।

बंदीजन रिषि ब्रह्म। जग्ग पंडव बष्यानिय ॥

अकसमात इक प्रगट । निकुल जंपिय इय वानिय ॥
द्वादस वरस दुकाल । पर्‍यौ कुरषेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान । न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ । अद्ध देह कंचन भयौ ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में । आयौ पन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ कहि मोकलि परधान कर । इह सु कथ्थ चिचंग ॥
तौ तुम अध जग अंज से । कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अस्वमेद जग छसें करि । विस्वमिच तप जोर ॥
कहा करै नृप मंद मति । अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि । बचन स्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष । चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज । बचन बर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चिचंग । करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद । तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग । पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उच्च दिठ उच्च । समर तप करन उचाइय ॥
पंग लज्ज सिर मंडि । बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ नृपत्ति जयचंद । नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ । नयन कालो जुग जानं ॥
कविचंद देव विजपाल सुअ । सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चिचंगराव रावर समर । रज नष्पै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुमंच मंची प्रमान । कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप । चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति बलह समरह समाज॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल वितल कहुँति तूंमि॥
छं० ॥ ५५ ॥
बग्गुरि समेद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ॥
मंडै समूल सुरतान तीर। करनाट करन घुरसान मीर॥छं०॥५६॥
गुज्जर सु कोह दक्षिन लगाइ। लग्गै न गहन कह अरिन पाइ॥
उतरत्त बंध पुन्नह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान॥
छं० ॥ ५७ ॥
तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार॥
पाताल पंथ नन व्योम पंथ। बन वहन हरन दुरि सोम अंथ॥
छं० ॥ ५८ ॥
दल सज्जि करहि न्रप सच भेद। पहुपंगराइ राजह्ह बेद॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार॥
मनों विदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार॥ छं० ॥ ६० ॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्पि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज॥
किन दुष्पह तन किस्सता। किन दुष्पह आकाज॥ छं० ॥ ६१ ॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्प प्रति। अस्त्री अस्त सरूप॥
तिन कारन तन जरज्यौ। अग्गि विभंगन रूप॥ छं० ॥ ६२ ॥
कवित्त॥ अंग षंड न्रप राज। मान षंडनति विप्र वर॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक्क घर॥
निसि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरथानं॥
इत्तने षंड कीने हुते। तदपि दुष्प जर जर तनह॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि न्रमय घनह॥छं०॥६३॥

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा ॥ सोनंतहु तिन बिप्प कहि । नव नव चरित प्रमान ॥
तू आज्ञा जो देइ गौ । सो आज्ञा परमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

विअप्पी ॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं । विप्र और औरै उच्चानं ॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै । तौ वह बेद भंग नव लिज्जै ॥
छं० ॥ ६५ ॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं । बहुत भ्रम्म आरत उच्चारं ॥
पंड मंड लीने कर धारिय । कांति सराप भई सिल नारिय ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तहां आइ बर बाज बिलग्गे । सुनै पंग आतुर मन मग्गे ॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै । तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

हंका कार दुहू न्रप भारी । पंग जाउ जानै न प्रकारी ॥
जिन डहाल क्रन्नं गुन षेद्यौ । तीन बाल भारथ्थह भेद्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

उभै बान करि मान प्रकारं । सुबर बीर संचै सिर सारं ॥
छं० ॥ ६९ ॥

सोमंत का राजा की सलाह देना कि चहुआन से पहिले गवल समरसी दोनों की परास्त करना चाहिए।

कवित्त ॥ सुमत समंती स्याम । सुमति संग्रही पंग बर ॥
बंचि राज चहुआन । बंधि चिचंग सम्म घर ॥
सुलप लज्ज पति जीह । बेंन क्रक्कस उच्चारहि ॥
* ... .
मधि भूप रूप दारुन वचन । पंगराइ अम्मर अरस ॥
मज सेन सु वंधौ वंध बल । देव राज देवह परस ॥ छं० ॥ ७० ॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नही है।

सोचहि पंग नरिंद। राज जानै इह सत्तिय ॥
ता छचौ कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय ॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई ॥
सस्त्र मंच उद्धरै। सार धर धार समोई ॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय ॥
दैवत्त कला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय ॥ छं० ॥ ७१ ॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा ॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग ॥
इक्क विधिना अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग ॥ छं० ॥ ७२ ॥

कवित्त ॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि ॥
ज्यों गुन मुकि उठि चंग। सीह बर म्रग्ग अंड हलि ॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय ॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय ॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन ॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन ॥ छं० ॥ ७३ ॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया ॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान ॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि ॥
पंग समुद्रह आनि। सेन नृप मंडप साचै ॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल तौ रंग राचै ॥
दइय पंग अनभंग। सक्र सहाय छिति डुल्लै ॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै ॥ छं७ ॥ ७४ ॥

चोटक ॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं ॥
विधि बंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि धरै ॥
छं० ॥ ७५ ॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं ॥

नव बत्ति निसान त्रिघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनइह सवहनि जानि सजै॥
घन नकहि घुघघर पष्पर के। सु बुलै जलजात किधौं जल के॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कवि देषि उपम्म कलें॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास। झर मद्धि प्रगट्टि मनों कैलास॥
छं० ॥ ७८ ॥

बंधि पंघि उमा वधि सीस सधी। वढ़ि ससि कला मनों ईस बंधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह बसीठ हलं॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अठ्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गिययं। सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति सूरति मुष्प। मनों सतपच विकासिय सुष्प॥
मुदे मुष काइर झुझिझग मोद। मनों भए संझ सु दिष्पि कमोद॥
छं० ॥ ८३ ॥

---

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोष है। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं।

उभै षट फौजति पंम सजै। दिसि अट्ठ उभै दुरि थान खजै ॥
चल्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुब्ब बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बँध्यौ चहुआन सों। पुब्ब बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अट्ठ सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस पृथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर ॥
बीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर ॥
बीरा ही अनसंक। रहै बीरा बिन बंकी ॥
है पुर षग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पावंड डंड रचै नहीं। पाषंडह रचै न गुन ॥

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

क्रम विक्रम चारि चच्चर जिमसि। अहत दृत्त जावै न पन ॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्ठै धारा धर ॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर ॥
छल छुट्टै [1]मुष सह। गरुअ हरुअं सु प्रमानं ॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं ॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै ॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै ॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के बचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय ॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय ॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं ॥
एक एक आवड्ड। देव देवत्त विचारं ॥
पहुपंग राय राज सु अदर। जाइ कही तामस विधिय ॥
सजि सेंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय ॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिचौ छबि छाइ ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त ॥ चंदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर ॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर ॥
तिमिरलिंग षेदयो। षेदि कढ्यौ तत्तारिय ॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय ॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गौ निग्गह भगिय ॥
भौमंत भयानक भौम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय ॥ छं० ॥ ९५ ॥

(१) कृ.-सुख।

दूहा ॥ सो फु नि जीत्यो पंग पहु । धरनि बीर सों बीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु नृप । बढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९९ ॥
भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं । असी एक मंतेय होवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न होवंत कंदं । भुजंगी प्रयातं कहै कब्बिचंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चल्यो पंग रायं प्रकारं प्रकारं । फुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं । मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल प्रकारं । जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं । कंपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥
कवित्त ॥ धर तुट्टै घुरतार । पंग असि बर अस सज्जी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन । दोऊ देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जम द्रोन । पथ्थ प्रथिराज गनिज्जैं ॥
ए न डुले ए डुले । ए म रंजे ए रज्जैं ॥
जैचंद सपूरन कर पवित । परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन । विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥
चोटक ॥ सु सुनी धुनि बैन प्रमान धरं । चढ़ि संमुष पंग नरिंद धरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी । सु कलू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
बर बंक चिलक्क करच्च इसी । घन सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं । सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं । जल बट्टि जलं जर वीरज तं ॥
सम बंच करूर कुरंग दिसा । पुरहे जनु कायर बीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े बल सूर प्रमान रनं । सु मनो बरसें बर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं । सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
छत भंग निसानति बीर बजै । रथ बाज करी करुनान लजै ॥

कलहंत करे किहि चिंत बरं। दुरि इंद्र रह्यौ पय बंधि नरं॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्गो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन सोहै॥
मिलें पंग तौ पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
षट विय षोडस जन्न जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। देव द्रजोध जोध सौ॥
.... ॥
तौ पंष समह जुद्धह करन। .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छच छिति छांह बर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मीन॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ बन घन षग लग्गीय। हलिय चतुरंग सेन बर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय वर॥
यों हल्लै द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बहर पवन प्रकार। ध्यान डुल्लंति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन बर। मातुल घर उर षग्ग पिति॥
मंगै जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥छं०॥ १०८॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा ॥ सु बिधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार विरान॥ छं० ॥ १०९ ॥

---

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

पहुपंग सु भैभीत गति। बीर डंड मद्धि सूर ॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर ॥ छं० ॥ ११० ॥
नव गति नव मति नव सपति। नव सति नव रति मंद ॥
चाहुआन सुरतान सों। फिरि किय पंग सु दंद ॥ छं० ॥ १११ ॥
सत्त अरुझि संकरह ज्यौं। उठी बीर बर बेलि ॥
बढ़न मतैं चहुआन रज। बर भारथ्थ सु केलि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर ॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर ॥
अग्ग क्रंम क्रम धरिय। क्रंम पच्छा न उचारै ॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ बंचै न सुधारै ॥
बर बन बिहस्सि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजन सु अरि ॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा ॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान ॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान ॥ छं० ॥ ११४ ॥

पद्धरी ॥ अन बुद्ध जुद्ध आबद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर ॥
बर बुद्धि जान आबुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध ॥
छं० ॥ ११५ ॥

इक्कंत तमसि तेजं करूर। कड्ढैति दंत गज मंत सूर ॥
बज्जी सु बाह वाहंत वज्ज। झिल्लैति वज्ज सुर्ग सु रज्ज ॥
छं० ॥ ११६ ॥

सामंत सूर पति तोन बाहु। चंप्पोति पंग दल गिलन राहु ॥
डह डहक बदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच भार ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहुपंग जंग ॥

छिति मिच छच छची न जान। नर लोइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन हूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रुक्कवन पंग बर॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज षग्ग झर॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सवन बर॥
ध्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्प बंधि भर॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हस्थिय दिसह॥
धनि हूर त्रप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह षल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दग्ध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मद्धि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चहुई। पय्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
मयमंत मयक्कत मोह गति। सुबर जुद्ध जम कृत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्पन परवान॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्पि परधान। थान कयमास मंच वर॥
अति उतंग मति चंग। नदिय नंदन बंदन बर॥
अति उतंग मंचह। अभंग भिल्लै प्रहार कर॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर॥
दल दृढ्ढि सु रिधि राजन बलिय। अभै भयंकर बल गरुअ॥
सामंत हूह तिन मंच बर। सबर बीर लग्गौ हरुअ॥ छं० ॥ १२३ ॥

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्पि कन्ह चौहान। अत्तताई रूई भर॥
रषि तोअर पाहार। बीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रट्ठौर। रष्पि लंगा बाबारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उद्दिग बाह पगार बर॥
जज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्पंति भर॥ छं० ॥ १२४॥

जमुना पार करके दवपुर को दहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्पिना देव फिरि॥
उतरि जमुन परि बीर। देवपुर सुनि पल षड्डी॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद डग्यौ कल अद्धी॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट बिकट। सुबर बैर बर बीर षरि॥ छं० ॥ १२५॥

दूहा॥ विकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं० ॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड बर विकट। हक्क बज्जिय चावहिसि॥
पंग सेन संमूह। सूर कट्टै संमुह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्पै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं० ॥ १२७॥

दूहा॥ अढर ढरहिं अनमन्न महि। ढरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोज दीन सिर भार॥ छं० ॥ १२८॥

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद । गहन उच्चरि संभरि सुर ॥
सबर सूर सामंत । लोह कढ़े बढ़े बर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क । बज्जि चावहिस झानं ॥
मुष मुष रुष अवलोकि । बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि । झमकि हथ्थ सिप्पर लइय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन । दइ दुवाह उभ्भै दइय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज ॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं ।
जमी जु गंज मेत जेत बद्धि सिद्धि सुभ्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कस्ति मस्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनौ मनं मनौ मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उभ्भरं ।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुभ्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं ।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लान ताम बद्दयं ।
नृपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धक्काई धक्काइ । मग्ग लोना षग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग । बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्पियै । पंग नन दिष्पि नयंनं ॥
भय भयान पिष्पियै । सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्प मोह माया न तद्द । क्रोध कलह रस पिष्पियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम । लष्प एक सर लष्पियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाद अनी । करि देव दुवारन दुंद घनी ॥

रननंकहि बीर नफेरि सुरं। मनो बीर जगावत बीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥
दुअ स्वामि दुहाइय मुष्प पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मथ्थति जोगिनी कूक करै। सुनि सद्द तिमंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥
नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥
गज षग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय बंधि जला जल दिव्य नचै। .... ॥ छं० ॥ १३७॥
परिरंभ अरंभति रंभ बरै। जिनके झर सौस दुझार झरै॥
गज दंतन कढ़ि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्प परै॥
छं० ॥ १३८ ॥
उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अथयौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥
परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
मरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन।

भुजंगी॥ लरै सूर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क बज्जै सु भूतं उभानं॥
सुअं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चचरी डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥
तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कब्बी उपम्मा बिचारे॥

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी। मनों षेल होहेलुआ देत तारी॥

छं० ॥ १४४ ॥

तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती। कही चंद कत्ती उपम्मा सु रत्ती॥
तरं बेलिबट्टी सु चट्टीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥

छं० ॥ १४५ ॥

पियै चौसठी रुद्धि गज्जं अहारं। घुटै घुंट लोही करै मृत्यु न्यारं॥
मनों मोर वंध्योति मोरंत अष्पै। फरस्सी कपूरं मनौं मुष्प नंषै॥

छं० ॥ १४६ ॥

तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै पुष्ठ बैरं फिरै सीस मग्गै॥

छं० ॥ १४७ ॥

उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै। जंपै झंषि केकी मनों मौन बज्जै॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी मृनालंति षग्गी॥

छं० ॥ १४८ ॥

फुलै भान दिष्पै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥

छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया॥ सार प्रहारंति सार झर। वरन विहसि दछिराज॥
सो दिष्पौ भारथ्थ में। कथ्थ कहिग सिरताज॥
कथ्थ कहिग सिरताज। सार सम्हौ सहि बीरं॥
धार षग्ग उभझरी। मुष्प उभझरि नह नीरं॥
मवति मत्ति उज्जली। बीर बीरह लगि वारं॥
गजदंती विच्छुरै। सूर [1]टुट्टै धर सारं॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त॥ सुहत पंग आभंग। रंग रबनी रवनंगन॥
मो हत अंगम काल। अंग अंगमै देव धन॥
सार धार देवत्त। देव दुज्जन दावानल॥
पंग सहायक सूर। वीर मारुत मारुत कल॥

(२) ९. ढुंढे।

चहुआन वैर चिचंग दोउ। दुअ सज्जन बंधी अनी॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में। नव निसान जुद्धं पनी॥ छं०॥ १५१॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह।

भुजंगी॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं। मनो सूर वृष रासि उग्यौति सारं॥
महा तेज मुष रत्त द्रग बीर लस्सै। भयं छंडि भूपाल अलि थान हस्सै॥
छं०॥ १५२॥
मनों जोगमाया जुगं जुद्ध तारं। झुक्यौ पंग पंगं सु लभ्भै न पारं॥
न जानं न जानं न जानंत सेनं। तिह्नं लोक पंगंति सेनं समेनं॥
छं०॥ १५३॥
तितंची तितंची तितंची प्रकारं। मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै। घनं बद्दलं मद्धि षग्गं विसेषै॥
छं०॥ १५४॥
तजै तारुनी तार अहकार तारं। इसे सार सों सार बज्जै करारं॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं। रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं॥
छं०॥ १५५॥
महाबीर बंके भयं ढिग्ग दूरं। तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे। मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रसेघे॥
छं०॥ १५६॥
दुद्दै तोन बंधे सुरं तीन जोधं। तिनं बालुकी बुद्धि ब्रह्मा विवोधं॥
छं०॥ १५७॥
साटक॥ सासोधं पहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं॥ छं०॥ १५८॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त॥ इय गय नर थर अरुरि। सरुरि सज्जिय सनाह बर॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल। सिंभ विभ्भूत धरा धर॥

सुकर मध्य प्रतिबिंब । अग्नि मद्धे सु सांत सधि ॥

....

पहुपंग सेन सजि सुक्रित बर । बजि निसान उन मान रिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ । धीर छंडि बीरह तन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना ।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुबर । ग्रह न रहै गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै । सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज । बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंची बर संभर्‍यौ । राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुअ गुर घरिय । प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
हय मुलतान सु जान । राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बोधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना ।

कवित्त ॥ जमुन बिहड़ गहि विकट । निकट रोकै पहुपंगं ॥
सार धार चहुआन । पान बंधें प्रति जंगं ॥
सुनत सिद्धि विधि समति । लोह कब्यौ प्रति हैवै ॥
मवन मत्त चहुआन । राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर । गहिग ठौर बंकट करस ॥
नृप राज कमंधन सुनि भए । अंमर कै अंमर अरस ॥छं०॥१६१॥

निढुढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढुढुरराइ बल । तिन बल कन्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै । तोंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वरि धर्म के लिये लड़ेंगे ।

दूहा ॥ हम बंधे बर तेक बर । तूं मुक्के धर राज ॥

जिय अंगमै सु अप्पनौ। भान पुत्त किं काज ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कवित्त ॥ कहै सूर सामंत। सुनहि वर पुहमि ईस बर ॥
अप अंगमै सु जीव। पुत्त बंधहति भान बर ॥
जोग जोइ अंगमै। नेह नारी नह रष्पै ॥
बीर राग आनंद। राज तिन वृत्त विसष्पै ॥
लिष्पवै सोइ जीवत्त वर। सुवृत्त बत्त लिष्पै न बर ॥
तिन काज सूर सामंत बर। राज बरजि बरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना।

दूहा ॥ गुरु भ्रत गुरु जानी न विधि। रिधि रष्पन कमधज्ज ॥
तिहित बीर पहुपंग सुनि। मतौ मत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे।

कवित्त ॥ व्यंजं वरन कवित्त। जंपि कन्ना चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद। राव निड्डर उनमानं ॥
गरुअ गब्ब गहिलोत। मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिढ्ढ कैमास। चंद डिढ़ कलहति सूरं ॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह बलि। रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति। कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ तऊ सुमत इन मत्त किय। भयन तजिय भय राज ॥
पंगानौ डर सुजल मधि। भए सतपत्र विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुबर बीर सतपत्र छर। पंग नीर प्रति बद्ध ॥
सुबर बीर प्रथिराज कौ। अंग अवृत न चद्ध ॥ छं० ॥ १६८ ॥
गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं। तेछचीय सूर बीरहं ॥
माहं चवथि प्रमानं। साछिप्पीय लोययं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना।

जंबंधा चल्या चहुआनं। षग्गं सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं॥ छं० ॥ १७० ॥
कवित्त॥ स्वामि धृम्म रत्ते। सुमंत लग्गै असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस पानं॥
हथ्थ थकत श्रम करहिं। मनति श्रम सों उचारहिं॥
.... । .... ॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कय्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लय्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥
दूहा॥ बंदिय बल जिन निय नृपति। त्रपन रुजाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं० ॥ १७२ ॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाघा॥ संभरि बत्त जु पंग श्रवन्नं। बीर बिरा रस बद्धिय कंनं॥
है गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कषाइत नेनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गेनं॥
है दल पैदल गैदल गट्ठं। सूर सनाह सनाह सबट्ठं॥ छं० ॥१७४॥
यों रचै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन षग्गं। सो दिष्यं चियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अग्र नन डट्ठति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्ते नेन कषाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं॥
छं० ॥ १७७ ॥
नंचै भैरव रुद्द प्रकारं। जानि नटौ नट रंभ प्रकारं॥
अग्गें होइ गिवान मुनारं। बंध्या ज्यों बर कोटति सारं॥
छं० ॥ १७८ ॥
ढाहै गाहै साहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उट्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत मेंनं॥ छं० ॥ १७९ ॥

भषै दान प्रोहित्त राजं। अप्पै मेर सुमेररति साजं॥
यों कीनी धर पंगति सावं। जै जै वाय सु वायति नावं॥
छं० ॥ १८० ॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं। बूड़त नाव नीर गुन रंगं॥
यों धाए पहुपंग सयंनं। मंस काज दीपी उनमंनं॥
छं० ॥ १८१ ॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली। वाय विषंम पात बहु थल्ली॥
एहि प्रकार चल्यौ चित राजं। कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं॥
छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना।

दूहा॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनी। दल हल्लिय पहुपंग॥
मानो उत्तर वाय ते। चावहिसा विभंग॥ छं० ॥ १८३ ॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

कवित्त॥ संमुह सेन प्रचंड। पंग सज्जी चतुरंगनि॥
ज्यौं उग्गै दुष सूर। बैर करि तपै कमोदनि॥
सुबर सोभ कविचंद। हितू चक्रवाक प्रकारं॥
बरै विरह बिरहनी। हेत उड़गन ससि सारं॥
सा बैर नैर नारिय निकट। विकट कंत विछुरहि बधुअ॥
बहुपंग राव राजन बली। सजी सेन सेनह सु भुअ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना।

कुंडलिया॥ बंधि कविज्जै बीय बर। दिसि दच्छिन अरु पुब्ब॥
सुबर बीर सम्हौ भिरिग। करि भारथ्थ अपुब्ब॥
करि भारथ्थ अपुब्ब। कोन अंगम पल षोलै॥
मार मार उच्चारि। असिर अवसानति डोलै॥
सो भग्गा घट सेन। माग आकारति संध्यौ॥
चीय लच्छि तजि मोह। मरन केवल मग बंध्यौ॥ छं० ॥ १८५ ॥

दूहा ॥ संभरि जुद्ध अरुद्ध गति। बर विरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी। सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय। बीर हक्कै चावहिसि ॥
मत्त सार बरषंत। बीर नचहंत मंत कसि ॥
बंकौ असि के सुद्ध। केय लंबौ उभ्भारै ॥
घात घंभ निरघात। जानि झल्लरि झल्लारै ॥
बुद्दंत रस न संनाह पर। अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारथ्थ यों। बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम ।

परिग सुभर नारेन। रूप नर रष्पि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार। नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त। परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पय्यौ सूर सूरिमा। सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बारुड़ हरिय। मुकति मग्ग पोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय। ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पय्यौ भीम भट्टी भुआल। बंधव नाराइन ॥
पय्यौ राव जैतसी। भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध। कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ। ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते। जुद्ध घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल। सुबर बीर संभर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु ।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह। सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज। फिरि मंडौ घर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि। डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

केहरि बर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद ॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद ॥ छं० ॥ १९२ ॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद धरि। जमुन विहड़ तजि बंक ॥
धर पड्डर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक ॥ छं० ॥ १९३ ॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ क्रमं क्रम्म कट्टे क्रमं तंति सस्त्रं। रनं निर्वसीयं निवासीय तच्चं॥
छिती छच्च भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लभ्भै न पारं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

कवित्त ॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं ॥
सहस बरस तप करै। मुगति लभ्भै न सु पारं।
छिनक पग्ग मग अंग। जंग सोई कत छंडै ॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै ॥
धर परै बहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सब नेह मनि ॥
रजक्रम्म भासयं देह सब। सुनहु सूर कबिचंद भनि ॥ छं० ॥ १९५ ॥

इति श्री कविचंद बिरचिते प्राथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५५ ॥



(१) "संगी को" पाठ है।

अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि। जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चिचंगी उप्पर तमकि। चढ़ि पंगुरौ नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चिचंग देस। चढ़ि चल्यौ स गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान। कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥

घुम्मलिय विदिसि दिसि परि अँधेर। उरझै कुरंग प्रज्जरइ नैर ॥
मिटि भान थान तजि रहिय तक्कि। अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥

बज्जै निसान सुर मान सद्द। सुत ब्रह्म रीझ कट्टेति हद्द ॥
बिप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर। नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस। पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद। दंद भंजन सु अरिन धर ॥
बजि निसान घुम्मरिय। चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांह। मुक्कि मंद्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल। चलं हथ्थ उर विप्फुरहिं ॥
चिचंग राव रावर समर। भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरबारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना।

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन मुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुत्तं। एक कहत जीवन सुष सत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एक कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्पंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अटत्त कारन मिदं। सुप्राय सुप्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुभ्भ उच्चार ॥
जइति प्रान पवनह रमे। मुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

चिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिद्वारं ॥
मुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिद्वारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनायं, रुंकि सबारं, अनहद्दं ॥
सुरकन्न सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं झिलिमिलि मंतं, नन भुलि जंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, रुंधित वीधं, सब्बानं ॥

---

(१) ए.-प्रकारिय। (२) ए.-सुषे।

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्जानं ॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर सुष्यय बत्तं, चिंतिय मत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षह मइयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं ॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालह कलिय। बल भ्रम्मह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर। ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में। घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ। मति बिय बीय रमंत ॥
चिचंगी रावर समर। तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि बसहि। कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर। मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे। चिचंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर। मंचिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चिचंगपति। बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर। ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारौ लज्जा सु जल। विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा। आतम [1]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत।

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि वस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संझ मान। भ्रमि जाइ काल रष्यै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रह्मंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संझया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। भर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। के टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्यिय विसाल ॥छं०॥२७॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिलोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) कृ. को.-मनत।

* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं।

कवित्त ॥ फुनि पुच्छै फिरि ग्यान । कनक केवल रघुवंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग शृंगार कब । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

चोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि बत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुब दष्यिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्यनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्य भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि वृन्न धरं ॥
तिहि षंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । बर भोगव बुद्धि सुकम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नोल बरन्नह उघ्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ बसै मनयं । तिय दोष बढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं [1]हुररं । तहां पीतह रंग सु वृन्न धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति कुम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुररं ।

नयरत्ति निरत्तय धुंमरियं । नभ भ्रमि रहै तन घुम्मरियं ॥
छं० ॥ ३८ ॥
पच्छिम दिसि नील बरन्न करं । तहाँ प्रात पुरष्प सजै समरं ॥
दिस बायवयं बनि छाण रँगं । दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं ॥
छं० ॥ ३९ ॥
दिसि दष्पिन उज्जल वन्न धरं । सजि सातुक मत्ति तनं अमरं ॥
ईसायन यं रंग सुक्कसयं । उपजै सु उचाट मनं नभयं ॥
छं० ॥ ४० ॥
ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं । घर मद्धि अनेक मनं सुरयं ॥
मन इष्थ करै प्रथमं मनुषं । हुअ निर्भरयं तन बद्धि सुषं ॥
छं० ॥ ४१ ॥
जिम दीपक बात बसं हलयं । इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं ॥
मन इष्थ भयें सब इष्थ भयौ । प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ ॥
छं० ॥ ४२ ॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त ॥ सुगति कठिन मारग्ग । क्रम्म छुट्टै न पंच बर ॥
मन लिप्पै मन छिपै मन । सु अवतरै घरघ्घर ॥
मन बंधै क्रम राज । मन सु क्रम जमय छुड़ावै ॥
मन साधी सुष दुष्य । मनइ जावै मन आवै ॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि । गुर उपदेसह संचरै ॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै । समर सिंघ इम उच्चरै ॥छं०॥४३॥

दूहा ॥ समर सिंह भारथ्थ में । जोग इहै गुन जान ॥
सो निकस्यौ भर समर तें । को जिन करौ गुमान ॥ छं० ॥ ४४ ॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त ॥ तब ढुंढारह राइ । मत्त मन बत्त सु कथ्थिय ॥
समर सिंघ राबरह । समर साहस गति पथ्थिय ॥
तुम बीरन गंजागि । भूप साहस रस पाइय ॥
भारथ्था रजपूत । स्वामि आचारा धाइय ॥

आचार धार भरथ्थ मति । तत्त बत्त जानौ जुगति ॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि । राज रष्पि कीजै सुमति ॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है ।

दूहा ॥ कहै मंचि भर समर सुनि । सरभर करि संग्राम ॥
सबला सूं मंडत कलह । धर भर छिज्जै ताम ॥ छं० ॥ ४६ ॥

रावल जी का उत्तर देना ।

कहि मंची रावर समर । सुनि मंची बर बेंन ॥
तमकि तेग तन तोक बँधि । करि रत्ते बर नेंन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

चौपाई ॥ ससिर रित्त रित राजह संधि । गम आगम सित उष्ण प्रवंधि ॥
तपति खूर रत्ते रन रंगं । दुरिग सीत भगि कायर अंगं ॥
छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना ।

दूहा ॥ बंधि परिग्गह गुर जनह । मंची सजन सु इष्ट ॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्वपति । सुमति सुमंच अदिष्ट ॥ छं० ॥ ४९ ॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार ।

कवित्त ॥ सुनि सुमंत पंमार । इक्क गरुडहु रु नगन गन ॥
अगस्ति एक सायर सु । इंद्र इक्क रु कूट घन ॥
निसचर घन काली सु । पंच पंडव रु लष्प अरि ॥
तारक चंद अनेक । राह चंपै सु वसन जुरि ॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह । मत्त एक धक्कह वहै ॥
चिचंग राव रावर कहै । अतत मंत मंची कहै ॥ छं० ॥ ५० ॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना ।

कवित्त ॥ स्वामि बचन सुनि सिंह । जूह रतिबाह विचारिय ॥
सबला सों संग्राम । भार भारथ्थ उतारिय ॥
जं जानै सब कोइ । जीभ जंपै जस लोइय ॥

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निघ्घटै। हय गय हय मंचै रव न ॥
भंजै न भ्रम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सद्वै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उट्ठहि सु मंच जपि ॥
धवल दिव्य सुनि कन्न। धवल कट्ठै धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै बरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सुनिय मंच बर मंच। गुभ्भ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ कित्ति। कित्ति भंजिय तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्हिमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन मुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवौ दुष्प जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद परं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग वह निबंधि सनाह कसी। उर नह चिपंडिय बद्दर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं। हर चूर चमंकति गंग बरं।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं। सु उलद्दति मद्दति भद्द गजं॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहनाइ नफेरि अनेक सुरं। बर बज्जि छतीस निसान घुरं॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं। जम तेज सु बंधन निद्दुरयं॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी। तिन दिष्पत पंति समुद्द लजी॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं। पहुपंड निसान दिसा कु रसं॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे। पटतार मनों कठतार बजे॥
घन घुघ्घर पष्पर बज्जि करी। सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन ॥ बिधि विनान चतुरंग ति, सज्जि रुहल्लि हय।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय॥
उठ्ठौ छच नयजानिय, मानिय पंग त्रिय।
कट्ठि लोह बढ़ि कोह, समाहिरु बीर वय॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ कटै लोह सारं, विहथ्थंति झारं। तुटैं सार भारं, सरोसं प्रहारं॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सद्दरं पचारं। जगी कूक वारं, उड़ें छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं। कमद्धं निनारं, रुधिं छिंछ सारं॥
छं० ॥ ६४ ॥

---

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है। किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है। अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है। पढ़ते समय ह+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा। इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है। अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है।

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग झारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं ॥
छं० ॥ ६५ ॥
रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवठ्ठी सु भारं ॥
छं० ॥ ६६ ॥
रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं ॥
*गहै मुत्ति तथ्थं, उछारें विहथ्थं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा ॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग ॥
यों उभ्भौ सुभ्भै सुभुअ। तिहुंपुर मंडन जंग ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त ॥ हक्कि मंगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर ॥
रत्तें रेन विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर ॥
कै इथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता ॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता ॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग ॥
सारथ्थ किष्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग ॥छं०॥६९॥
भुजंगी ॥ चल्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी ॥
फिरै पथ्थरं भार कूदै उतंगा। मनों बायपूतं धरै द्रोन अंगा ॥
छं० ॥ ७० ॥
जसं पंग जथ्थौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी ॥
चमक्कंत नालं विसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै ॥
छं० ॥ ७१ ॥
रबी रथ्थ जोरें सु भोंरै भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै ॥

---

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से बिलकुल विरुद्ध पड़ता है।

मनों वाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी॥
छं० ॥ ७२ ॥
डमं सीस डोलं चिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त ॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर॥
कन्ह जैत बर बीर। भान नारेन सिंघ हर॥
पल्हदेव न्रप सोम। अमर न्रप ब्यंटि जानि जम॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई भ्रम॥
बंकम्म बीर बलिभद्र बर। झर तरवारनि अधर झर॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार विभार झर॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा ॥ बार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
समुष सूर संमुह लरै। मुकति सु लूटन रासि॥ ७५ ॥
नद पारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध बर बीर॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ पग षोलि बिहथ्थ सु बथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग सुझार झरें॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी॥
छं० ॥ ७७ ॥
फुटि पग्ग किरच्च जुझार झरं। मनु झिंगन भद्दव रेनि परं॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। विरुझाइन धाइन सूर नए॥
छं० ॥ ७८ ॥
घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रसूनय बंधु पुजै॥
विफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै। बहु सूर उचीरन से उचरें॥
छं० ॥ ७९ ॥

चित डोलन पिंड को जाइ कहीं। दिषि बीर भरं लपटाइ तहीं॥
दोउ सूर महाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें॥
छं० ॥ ८०॥

करि भंजि कुंभस्थल पग्ग लसी। कुवलष्यलकें झर में करसी॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनुं इंदबधू चढ़ि पुठ्ठि लगै॥
छं० ॥ ८१॥

उपमा पलयं चलयों न कही। सकुचें सरसी जु समुद्द मही॥
गज भंजि कुंभस्थल पग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में॥
छं० ॥ ८२॥

गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सष्थ महावत कून परी॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुल्लि किलास बरं॥
छं० ॥ ८३॥

गज राजति पग्गति मष्थ गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं॥
गजमुत्ति लगै पग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै॥
छं० ॥ ८४॥

मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी॥
छं० ८५॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भल्लिय॥
आहुट्ठां मभ्भझाम। परिय द्वादस चमरल्लिय॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंपत पग वग्गिय॥
बीरा रस बलबंड। हथ्थ दच्छिन झर लग्गिय॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निक्करि परत॥
षुरतार धरें हय षुटि धरनि। पलन पलक पग्गह झरत॥ छं०॥८६॥

पद्धरी॥ झर करत विदुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल उड्डत पहार॥
उट्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुधि गूद मान॥छं०॥८७॥
रुंडंत व्योम अंतो अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोथ। उथ्थलकि थलकि बाराह मोथ॥
छं० ॥ ८८॥

कमधज्ज सेन आहुट्ठ ऐम। राहु अरु केत रवि सोम जेम ॥
सुभ्भै न अंषि नह सब्द कान। भर रेंन दीह रच्छत्त भान ॥
छं० ॥ ८९ ॥

चट्ठे जु समर मुष समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव ॥
रन रच्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप ॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर ॥
दह अग्गै अस्तुति सुबर। न्रप भारथ्थ करूर ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त ॥ कट्ठि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर ॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र। सस्त्र बज्जै सुमंत झर ॥
भय अभ्भित मय राम। बीर छुट्टे घन छुट्टै ॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै ॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि ॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि ॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत सांई सु। मत्त लग्गे असमानं ॥
इतत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस रानं ॥
हथ थक्कत श्रम करै। मन न श्रम सों उच्चरैं ॥
गान दग्ध सों कथ्थ। गुरु न मंचह विस्तारैं ॥
घन धार भार हरुअंत घट। कय्यौ घट्ट गरुअंत जुरि ॥
दिन पंच परें पंचो बिपत ल्यौ न को रबि चक्कतर ॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं ॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं ॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। मुकत्ती मुकत्ती मुकत्तीत सोभी ॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं ॥
छं० ॥ ९५ ॥

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं ॥
छं० ॥ ९६ ॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा ॥ भयति भरवि भ्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज ॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज ॥ छं० ॥ ९७ ॥
सार सार सज्जे सु इत। सु इत बचन सुनि काज ॥
सो सिर मंडिय लोन बर। जित छिति छित्तौ आज ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कल सु मित्त मत्तह सु मित। रषि न्रप करन उपाय ॥
भर भारथ्थति मुंच तह। रहै सु जीव न चाय ॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट ॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ दादस्स भट ॥
[2]बीच घत्त सो मद्धि। षग्ग षल रुक्कि भंजि थट ॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट ॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट ॥
प्राक्रम्म पिष्पि अम्मेव सुर। सीस कज्ज भ्रमि धर जट ॥
छं० ॥ १०० ॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर ॥
दादस अग रावर परत। न्रिप कढि निठ्ठ करूर ॥ छं० ॥ १०१ ॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी ॥ कढि सेन समर अस मभ्भि सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन ॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तष्पि सब षग्ग देन ॥
छं० ॥ १०२ ॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार ॥

(१) ए.-कह्यौ। (२) ए. कृ. को.-बीस घटत।

झम झमी तेग बर तड़िग रूप। बाहेवि हथ्थ करि आन भूप ॥
छं० ॥ १०३ ॥
ढल मली ढाल गज फिरति खून। नग पंति दंति दीसै सदून ॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरें मीन जल जानि सुक्कि ॥
छं० ॥ १०४ ॥
आघात घात घट भंग कीन। बर भइग खूर तन छीन छीन ॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ षेत सह पंग भूप ॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा ॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन ॥
समर खूर सोरह परिग। मुगति मग्ग जस लीन ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ कन्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन ॥
सोम खूर सामला। नरन नीरह नारायन ॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल ॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साई छल ॥
बैकुंठ बट्ट जिन सइयौ। रषि सांई जिन सस्त्र बल ॥
माहेस महनसी महन बर। महन रंभि जित्यौ सकल ॥छं०॥१०७॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा ॥ कन्ह भतीज उठाय लिय। हय नंध्यौ बर अग्ग ॥
पंग ढूंढि भारथ्थ भर। सह मिल्यौ जुरि दग्ग ॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सइ समर बर। बाल [1]सुयंबर लोग ॥
जिन बर बर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग ॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर।

अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्तावनवां समय ।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना ।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन । तपै अति तेज षग्ग बर ॥
चंपि देस सब सीम । गंजि अरि मिलय धनुद्धर ॥
रयन कुमर अति तेज । रीझि हय पिट्ठ विसंमं ॥
साथ राय चामंड । करै कलि कित्ति असंमं ॥
मेवास वास गंजै द्रुगम । नेह नेह बद्धै अनत ॥
मातुलह नेह भानेज पर । भागनेय मातुल सुरत ॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि । इक्क आसन आश्रमहि ॥
[1]बीरा नह विहार । भार जल्ल राह सुरम्महि ॥
भागनेय मातुलह । जानि अति प्रीति सु उभ्भर ॥
चिंति चंदपुंडीर । कही प्रति राज हित्त भर ॥
चावंड रयन सिंघह सु [2]घर । अप्प नेह बंध्यौ असम ॥
जानौ सु कृत्य कारनह कलि । कलै भ्रम्म धरन्तिय विसम ॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चित्ति बत्त पुंडीर चित । अप्प सु गुन गंभीर ॥
समय काज प्रथिराज न्रप । हिय न प्रगट्टिय हीर ॥ छं० ॥ ३ ॥
दल बद्दल भर भौर भरि । चवत सूर सुर छंद ॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि । क्रीड़त ईस नरिंद ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना ।

---

(१) ए. कृ. को.-बारी । (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह ।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल षष्प उद्योत भान। प्राचीय जमस [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूढ़ राज। मंड्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज बर षेल मंडि। मंचौन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

यज्जूनराव बर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वाम तेन। मुष अग्ग कन्ह निढ्ढुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विच्चर सु छंद। तिहि प्रत्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान। उघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टै सु वाय चर चक्क होत। दष्षिनह्ह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ ससूर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टेव [5]घूर थट्टे सु ताप। उघ्घर्‌यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्कसे घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बहरन पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल हल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बद्दिय विसाल। विछुरेय सुभ्भगन प्रातकाल ॥
ठट्ठौ सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

---

(१) मो.-काट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेव।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेव। (४) मो.-विट्ठरे।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज"।

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु । सजे सूर भर साज ॥
सजे बीर दुंदुभि बजे । इदफ पेखि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज । सज्जि बर थट्ट बाज गज ॥
मंचि बोलि कयमास । राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड बर जैत । कन्ह निद्दुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघ्घेल । नरिंद विंझा षग वाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि । बान बिबिध बाहंत बर ॥
बाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित । सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्वान माल हथ्थान । जोर घेरे घवास रज ॥
बेढ़ि कूट कंठेर । बग्घ बायात कोरि हर ॥
दक्क बत्त कहति वहि । बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर मुष अथ्थमित । जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि । घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग । आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर बात जल जात उट्ठि । घन पूरि सजल थल प्रथम बुट्ठि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल विसाल । विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उभ्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प । संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

कीलंत केलि चढ़ि अप्प राज । सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट । मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्थमन। (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

बंध्यौ सु षंभ संकर गुराह। मानै न सह उनमत्त थाह ॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय अप्प। धुन्निय सु षंभ संकर सु दप्प ॥
छं० ॥ १९ ॥

उप्पथ्यौ अप्प चल्ल्यौ विराह। मानै न अनिय अंकुस दुबाह ॥
ढाहंत मट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप ॥ छं० ॥ २० ॥
ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार प्राहार हक्क ॥
फारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सब्बह हँकार ॥
छं० ॥ २१ ॥

पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु [1]दुयस चौपय प्रमान ॥
मदगंध अंध सुझ्झै न राह। सनमुष्प मिलिग चामंड ताह ॥
छं० ॥ २२ ॥

दाहिम्म षेलि आवंत ग्रेह। संकरे रोहि मिलि गज सु रेह ॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्प धाइ ॥
छं० ॥ २३ ॥

चामंड देषि आवंत गज्ज। पच्छै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज ॥
उप्पारि संग है संष देस। उक्कसिय कंध अड्डह असेस ॥
छं० ॥ २४ ॥

लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार ॥
ढ़हि पर्‍यौ मंत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस ॥
छं० ॥ २५ ॥

चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्थ रयनं कुमार ॥
संभलिय बत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त अप्पह असेस ॥
छं० ॥ २६ ॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज ॥
चिंति बत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुझ्झ रज ॥

---

(१) ए. क्र.को.-दुयय।

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिन्न कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्प अग्गे अभ्भारिय ॥
बेरी सु आनि दीनि न्रपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । नतरु षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥

षिझ्यौ बीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । काल्हि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तबै ॥
इहि काज कौन अब अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अबै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड ब मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहूत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ बेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति रायन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि बर अग्र । बीर बाहै कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । अत्त इहै अ्रम्म न होइय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि दोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-काढिन ।

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह ॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज घून कह ॥
तब लीना दाहिम्म। ध्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन ॥
सो लीनी करझेलि। प्रेम धारी पय अप्पन ॥
धनि धन्नि धन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद ॥
चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्पी सु हद ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा ॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हौ हथ्थ ॥
साम ध्रम्म जुग रष्पयौ। जौरन जग्ग सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
यों घल्ली चामंड पय। ज्यों मद मत्त गयंद ॥
लाज [1]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
यों अग्गा प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद ॥
ज्यों सुनि मंचह गारडी। मानत आन फुनिंद ॥ छं० ॥ ३४ ॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल ॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब ॥
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्पौ कैमास मंच रय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
जोगीनिपुर बर रष्पि कैं। [2]दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ ३६ ॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग मुक्कि कैमास ॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुर्गाबन पास ॥ छं० ॥ ३७ ॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास का राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म । रहै दरबार अप्प बर ॥
आषेटक दिल्लिय । नरेस षेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस । राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै । हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल । स्वामि भ्रम रप्पै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति बहुँ बिसह । [1]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन ।

सुर गुर वासर सेष । घटिय दसमीय देव दिन ॥
पुन्न घाट भद्दों सु गाढ़ । घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि । रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान । चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्रप । कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[2]घन संकुस तुछ सथ्थे सयन । चित्त मित्त दुअ [3]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम । षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना ।

राज चित्त कैमास । चित्त कैमास [4]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल । कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु । भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ । लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं । गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति ।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुअ । बेसब नंजन दत्त ॥
बीन जान रस बनसु घर । राजन रष्पिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को. वंधै । (२) ए. को.-छन ।
(३) ए. कृ. को.-घन । (४) मो.-दाहिम्म ।

दिव्य दास रष्यिय दिवस । सुग्रह पवारिय द्वार ॥
तिन अवास दासिय सघन । अह निसि रस रषवार ॥ छं० ॥ ४२ ॥

कवित्त ॥ समुष समुष ग्रह राज । [1]महल साला सु रूव रँग ॥
तहं सु रोहि कयमास । [2]सजन आवरिय अप्प अँग ॥
ऊँच महल करनाटि । देषि डंबर घन अंमर ॥
बैठी गवष ससष्यि । सुमन [3]मंती अरु संमर ॥
सम दिट्ठि उट्ठि दाहिम्म दुअ । जग्गि मार उभ्भार चित ॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय । प्रीति परट्ठिय [4]कालक्रत ॥ छं० ॥ ४३ ॥

दूहा ॥ नव जोवन शृंगार करि । निकरि गवष्यह पास ॥
देषि उझकि बर सुंदरी । काम द्रष्टि कयमास ॥ छं० ॥ ४४ ॥

करनाटी दासी सुबर । चित चंचल तिय वास ॥
काम रत्त कैमास तन । दिट्ठ उरभ्भिय तास ॥ छं० ॥ ४५ ॥

करनाटी कैमास मन । राजन नष्थि अवास ॥
भावी गत को मिट्टई । ज्यों जनमेजय व्यास ॥ छं० ॥ ४६ ॥

द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग । मति राजन ग्रह काज ॥
सहिय करत असहिय समर । असहवान तन साज ॥ छं० ॥ ४७ ॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना।

ग्रह बाहुरि सामंत गय । रहि चौकी कैमास ॥
करनाटी सहचरि उभै । मुक्कि दई तिन पास ॥ छं० ॥ ४८ ॥

बाघा ॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं । धरकी दुअर धार ना धारं ॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं । लग्गे मीन केत क्रत बानं ॥
छं० ॥ ४९ ॥

---

(१) मो.."माहिल साली सु सूव रँग"। (२) ए. कृ. को.-सुजन।
(३) मो.-मतिनि। (४) मो.-काजल।

किय दाहिम्म केविक्रत काजं। उद्यौ सूर अस्त मनि साजं॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ। मेन बान गुन ग्यान बियत्तौ॥ छं० ॥५०॥

छिन अंदर भीतर आवासं। नन धीरज्ज हंस रहै तासं॥
नठी मत्ति रति गत्ति उद्दासं। अविगत देव काल निसि नासं॥
छं० ॥ ५१ ॥

घटिय पंच पल बीस सबें कल। विग्गिव निसा उसास समुक्कल॥
अति झंषत करनाटिय [1]ऊरं। काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास। प्रिष्ठ देषत मन लग्गो॥
कलमलि चित्त सुहित्त। मयन पुरन जुरि जग्गो॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म। तलप अलपं मन किन्नौ॥
बोलि अप्प सो दासि। काम कारन हित दिन्नौ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस। जौ हम आनें चित्त हर॥
सम चली दासि कैमास दिसि। जंपिय भेव सनेह बर॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच। निज संचरि सथ मुद्ध॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति। काल निसा क्रत निद्ध॥ छं० ॥ ५४ ॥

सहचरि बर मोकल्लि कै। तकै बट्ट कैमास॥
सम समद्धि सज्जें रह्यौ। करि करि हिये विलास॥ छं० ॥ ५५ ॥

निसि भद्दव कद्दव कहल। आषेटक प्रथिराज॥
दाहिम्मौ दहि काम रत। काल रैनि कौ काज॥ छं० ॥ ५६ ॥

दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय। चिय अंबर आछादि॥
दासिय अंतर अप्प हुअ। [3]दरन स पिष्यौ सादि॥ छं० ॥ ५७ ॥

---

(१) मो.-कुंजर।

(२) ए. कृ. को.-"लै अप्प राज मंत्री सरिस"। (३) मो.-दरसन।

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन प्रतिमा, रामा रमे साभती ॥
* नित्तौ रंकरि काम वाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती।
सो मंची कयमास मास विषया, दैवी विचिचा गती ॥ छं० ॥ ५८ ॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास। दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि। काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास। जानि वित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लेस। कहा सुर वास सु भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चीया वसन। चढ्यौ अप्प सिद्धिय सुमन ॥
इथ्यौ सु द्वार इंछिनि तड़ित। नर सु [2]पित्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति बचन।

सुक चरिच दासिय परषि। कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै। हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय। एक्क आचिज्ज परष्पिय ॥
बीर भजन मृगमदक। षाय कग्गं तन दिष्पिय ॥
बचन पंषि संभरै। बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि। भेद सुक कौं किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अथ्थ सुभभै नहीं। बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास क्रम्म गहि दासि भरि। जेम क्रम्म सम्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना।

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-कामन मन। (२) ए. कृ. को-पिट्ट।

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम इक ॥
तंबुल्लिय सषि साष। पट्ट रागनिय निकट सिक ॥
बाय घात दिय पूर। भ्रमिय पिय किय अति अंतह ॥
अति सरोस पिक पानि। सु नष लिषि सषि कर कंतह ॥
असि असन वारि मग्गह धरिय। अवधि दीन दो घरिय कह ॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जह ॥
छं० ॥ ६२ ॥

रोला ॥ *बर चढ़िय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि हथ संदेस चली बोलह अवधारिय ॥
दीनौ संग पवारि उभै तब चढ़ि चतुरगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई बाली अनुरंगं ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त ॥ विमल बग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुब्बर ॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि अंम्यौति संस[1]तर ॥
मंडे वासुर म्रगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन ॥
उभय सत्त हय तथ्थ। ताम विश्राम [2]आम तन ॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुअ। अरिय सेज नृप सयन किय ॥
सूतौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिष्षि जिय ॥
छं० ॥ ६४ ॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विश्राम नींद भर ॥
जाम देव बलिभद्र। बरन चहुआन संघहर ॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं ॥

---

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ "वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय" पाठ है।

(१) र. कृ. को.-समंतर। (२) ए. कृ. को.-श्रम।

(३) ए. कृ. को.-निम्मय।

खंगी लंगरराव। खूर सा अल्ह कुआरं॥
आजानबाह गुज्जर [1]कनक। सोलंकी सारंग बर॥
सामलौ खूर आरज कमँध। बाम जु दृष्य विसग्ग भर॥
छं० ॥ ६५ ॥

गाथा॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं एमं॥
ज्यों स्त्री बल भरति अंगं। अम थक्के दंपती उभयं॥ छं० ॥ ६६ ॥

दूहा॥ रष्या करौव देव तुहि। सोवत न्रप भ्रत सब्ब॥
दासी चौकी चक्रित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब॥ छं० ॥ ६७ ॥
न्रप खूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास॥ छं० ॥ ६८ ॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

[2]बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज॥ छं० ॥ ६९ ॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा॥ भू भ्रत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं॥
विद्व दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि॥छं०॥७०॥

साटक॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, नेहाय जग्गाइने॥
संसाहस्स बसाह साहि सकलं, इच्छामि जुद्धायने॥
मिद्धं चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्वारने॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे॥ छं० ॥ ७१ ॥

श्लोक॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे॥ छं० ॥ ७२ ॥

दूहा॥ सुनिय सु नूपुर सद्द न्रिप। सषी सु चिंतिय चित्त॥
मन्निय कारन सिद्ध मनि। न्रप गति दुक्रित निम्न॥ छं० ॥ ७३ ॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यो रंभ सुथंभ।

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय इथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्पिन इथ्थ सु बंचि दिषाययौ॥
जिन बाना बलबान रोस रस दाहयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ॥ छं० ॥ ७४ ॥
साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्पियं॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं॥ छं० ॥ ७५ ॥
दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद चरह। तरकि तोन कर सज्ज॥
निर तिन [1]कह दीनो न्रपति। सब सामंतन लज्ज॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि॥
अगनि दझ्झ कैमास कै। बीर बरन्निय पानि॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत॥
दनुकि देव गंध्रव्व जछि। [2]दासी निसि विलसंत॥ छं० ॥ ७८ ॥
† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्रपत्ति न जानयौ।
दुहु विचच्छै इक दासिय संग समानयौ॥
इंद नरिंद फुनिदर अथ्थि समानयौ।
घरह घरी दुअ मद्धि ततच्छिन आनयौ॥ छं० ॥ ७९ ॥
दूहा ॥ रति पति मुच्छि आलुझ्झि तन। घन घुम्यौ चिहुँ पास॥
पानिन अंपन संचरै। महल कहल कैमास॥ छं० ॥ ८० ॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिषाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म॥

---

(१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।
* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २१ मात्रा और तीन जमक होते है। † रासा।

बर मंची प्रथिराज कहि। दइ दुवाह वर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्पि रमनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चिच दिषात सु चिंचनी। मोन विलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चिच देष्यौ दुचित। सलष सलष्पिय नेंन ॥
हृदै सुयस ...सुंदरिय। दुअ थप यंपिय बैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन कित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। [1]अरूचि दान विधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

विजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अद्धी सुझ्झै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं दृत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

वाण वेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थै बुझिभय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ भरिग वान चहुआन। जानि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुलिग। चुक्कि निकरिग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचार्यौ ॥
बानि दृत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि अषार्यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

---

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

यों पऱ्यौ कैमास आवास तें। जानि [1]निसानन छिचपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ संदरि गहि सारंगो। दुज्जन दुभनोपि पिष्पि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं। किंकिनो दुष्प दुष्पाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन।

श्लोक ॥ भवित्यं भवित्यं भवित्यं। लिलाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं। मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति। शृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप। प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत दृष्ट बहर विरूर। पहु मुष्प मंच बहु दुक्कि क्रूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि। में मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बर गजिय व्योम रजि इंदवान। गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल। गुन थकित जानि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पब्ब। मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तब्ब ॥
.... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि। षोदि षट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि। राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि। पारि परिहार मुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि। मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप। तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
बाराह बघ्घ बाराह बिच। सु बस्सि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

---

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "
(२) मो.-गरह रत्तर।

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक ॥ कन्हं कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं ॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रतं, रामंच सलषं व्रतं ॥
[1]द्वै कंता बड़ गुज्जरं च कनकू, परदारते विम्मुहा ॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता ॥ छं० ॥ ९८॥

कवित्त ॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ षट वारं॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह दुष्ष॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची ग्रब्बहन तुष्ष॥छं०॥९९॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा ॥ षनि गज्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग॥ छं० ॥ १०० ॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद॥
साम प्रगट बर कंधनह। बर [3]प्रमाद मुष इंद॥ छं० ॥ १०१ ॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गज्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कहिग सु प्रात॥ छं० ॥ १०२ ॥
षनि गज्यौ तिहि गबषनह। तजि गौषति गई दासि॥
षनि गज्यौ कैमास बर। कित दै दासी भासि॥ छं० ॥ १०३ ॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान॥
संकर रस संकर न्रपति। बर दंपति चहुआन॥ छं० ॥ १०४ ॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत बर। पुच्छिय इंछिनि भास॥ छं० ॥ १०५ ॥

---

(१) मो.-द्वै। (२) मो.-" जिनव बंधी बहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

उपोद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कै मास सपत्तौ। दासी प्रनह अमंत सु रत्तौ ॥
जामनि गई सुक्क आभासी। बिय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्रप कित्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥
गाथा ॥ न्रप हति बीर कै मासं। [2]मुर घट्टी रहि निस्सया ॥
बर गौ पुब्बह धनयं। रैनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दूहा ॥ मुष रत्तौ पत्तौ न्रपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानौ लिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सुभ्रत द्रिगया मन किन्नौ। रवि मुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नौ ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट भ्रम्म दृत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥
दूहा ॥ भ्रम परंत दिखिय नयर। चित सुहि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्पे हरि पूज बिन। निसि नष्पे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्रप्प बन अद्ध निसि। सुंदरि सोंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों। सरसे बहिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो "सुर घटी रहि नीलया"। (३) ए. कृ. को. यसाय

मुरिल्ल ॥ तब परतष्पि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
त्रिमल चीर हीर विन मंडं। तिहि कल कित्ति कही सु प्रचंडं॥
छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि सो बर वित्तक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती ॥
बर ब्रंनत सर अंबर छाइय। तबहि रूप चंद्रह कवि ध्याइय ॥
छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परस्सिय कब्बी। सुपनंतर कविचंद सु दिब्बी ॥
बद्रिय थुत्ति उचार तुंब बर। बरन उचार कियौ आसा उर ॥
छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्पि सु कब्बि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई ॥
बाहन हंस अंस सुष दाई। तब तिहि रूप ध्यान कबि पाई ॥
छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अलित्त [1]साय सासनं ॥
सुहंत जास तामरं। सुराग राग धामरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस मुक्करे। उरग्ग बाल विष्थुरे ॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं ॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाथयौ ॥
उछाइ कीर षंजनं। तरुन्न रूप रंजनं ॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई ॥
सुहंत तेज भासई। रुलंत मुत्ति पासई ॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद जंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ ॥
विभूअ जूअ षंचयौ। कलंक राह चंचयौ ॥ छं० ॥ १२३ ॥
चिभंग मार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं ॥
अवन्न चाट पिष्पयौ। अनंग रथ्थ चक्कयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुभ्भयौ। [2]उपम्म तासु लुभ्भयौ ॥
दिपंत तुच्छ दिट्ठयौ। विचै अनार फुट्टयौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ.को.-"तंकत रत्त विवंयौ"।

सु ग्रीव कंठ मुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच्च तुंमरं । [1]सुरच्छि लग्गि अंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नषादि ईस अच्छनं । धरंति सुच्छि लच्छिनं ॥
सुरंग हथ्थ सुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव भ्रम्म बालयं । सुगंध तिष्प तालयं ॥
कनक्क बिष्प पब्बया । सुराज सिंभ दिब्बया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविच्च रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छब्बि जामिनी । कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । बरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक्क तेज कंबुजं । चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी । कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कव्वि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्योवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सों । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कैमास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि विलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
अद्धं बच्चं परष्पं । चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि बास अलियायौ । स्वामि बचन सुदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी [2]दू आयौ । आषेटक जंपिरु न्रप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-मुरत्ति । (२) ए. कृ. को.-अद्ध ।

घनूफाल ॥ घन घुम्मियं चिहुपास । आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत । आकास कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंड़न सुद्ध । [1]दल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल । गिरि अंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन म्रगय राजन सेन । धर स्याम अभ्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति बिज्जि । चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
भ्रित पंति पंति सु सज्जि । छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझ्झ्म लुंम विपष्प । बहु बत्ति जल अति कष्प ॥
छं० ॥ १४१ ॥

दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल । नवबति बज्जि बिसाल ॥
चव अत ग्रह कैमास मत । भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं । भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्प सु बारयं । दिसि दसमि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३ ॥
तम भूमि तंमि नितं तयं । गत महल गुरु गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं । जनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
इल मिलिति मिलि जुग मंतयं । जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्पयं पट रंगिनी । मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥ छं० ॥ १४५ ॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं । सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं । दिय दोर ओर पियासियं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दुति जाम पल दुति अंतयं । सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्त्तयं । रुचि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं । घन प्रथल रस [3]वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं । रुचि राज राजित तलपयं ॥ छं० ॥ १४८ ॥
दम दमकि दामिनि दोसयं । झम झमकि बूंद बरीसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को. सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

धुनि नूपुरं कृत मंदयं। गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
हिय पानि मंडित जागरं। कर मद्धि निरषत कागरं ॥
छिन बंचियं असु हंकियं। क्रम क्रमत राजन बंकियं ॥
छं ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं। घनघोर रोर कृतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्यन अंगयं। कलमहल कलह अलंगयं ॥
छं ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं। मुष भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास। बाल नन चिपति भुष्य गुर ॥
मदन बढ्यो जुर जोर। लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ। चिष्य लग्गिय ओतानं ॥
लाज बैद गयौ छंडि। रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु। राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सिथल [1]तन। बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह। महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते। लिषि पट्ठयौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो। न जानं जष्य किन्नरं ॥
त्रै अपूरबं देहं। दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना। इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना।

दूहा ॥ सुनि रु बचन चल्ल्यौ न्रपति! जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ कृत्त कैमास कौ। जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन।

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैषद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह षंति। जनु मेंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्पि कूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां बैनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पचारि इंछनि ताम ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्प धष्पि न सिद्ध। बढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि क्रन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३॥
[4]गद्यौ मुधन न्रप अप्प। बर उट्ठि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्पि। दिष्पि दाहिम उर उभ्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
षनि गद्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपौ सुरिद्धि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प बन पिष्प [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

---

(१) मो.-वद्दिय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (२) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गड्यो सु। (५) मो. मयं उर। (६) मो.-रथ।

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना।

दूहा ॥ गयौ राज बन जहां सयन। जहं सामंतरु सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों। सब बहै सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना।

गई मात कविचंद कहि। भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय। चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार। देव दरबार नूर घुलि ॥
भ्रम्म सुक्कत अंकुरिय। पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन बिसतरन। मिलन उद्दिम सत पत्री ॥
[1]काम घरी संकुटिय। उड़न पंषी मन मची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर। चंद किरन बर मंद हुअ ॥
विड्डुरिग बीर बीरं रहन। सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥छं०॥१६८॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद। महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आकृत्य। देषि अबधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरदैत। नेंन बीरा रस पिष्पिय ॥
सो ओपम कविचंद। रूप हरनार सदिष्पिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय। कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी विगत्ति जाने न को। कहा विधाता न्हिम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभै। नीकी ठौर बैठक प्रारंभै ॥
सूर सामंत बोले। दरीषानै दुलीचै षोलै ॥
छच चमर कर लीने। मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥छं०॥१७०॥

---

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी। (२) मो.-चक्क।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ। (४) ए. कृ. को.-राज।

*अरिल्ल ॥ मद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बैठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चोंर सोहै लगै छच ढोरै। तहां चंद कव्वी उपम्मानि जोरै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं। लग्यौ राहु निद्वंतियं अप्प मेलैं ॥
मिलो मंडली भ्रत्य [1]विच न्रप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुद्धार तेनं ॥
[3]विरद्दाप चंदं बरद्दाय सव्वी। दियौ जोति चौहान संजोति हव्वी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रह्वं गरै। न्रप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली।

चोटक ॥ सभ इन्नन भट्ट कविंद कियं। सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दप्पिन लप्पिन कन्ह हुअं। रन भूमि बिराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं।

(१) मो.-विचित्र भारि। (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत्त।

(३) मो.-वरदास। (४) ए. कृ. को.-दच्छिन, लच्छिन।

जिन बीर महंमुद मान ह्यौ। अरि[1] अच्छ अछच पवार ध्यौ॥
हरसिंघ दसिंह सुवाम [2]भुजं। उन मद्धि विराजत राज [3]दुजं॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं। जब चालुक भीम मयंद भुअं॥
घर बिंभ विराजत राज दलं। जब चालुक चार नछिच हलं॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति मंघ धरै। न्रप जाहि बकारत रौरि परै॥
बर वीर सु बाहररराय तनं। अचलेसर भट्टिय जासु रनं॥
छं० ॥ १८० ॥

कर बीर सिंघासन जासु चंपै। नर निल्लुर एक निसंक तपै॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कँपै। धर विग्रह जाहि जिहांन जपै॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्यन देपन दो ललियं। मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै। [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ कै चावँड लोह जय्यौ। मदगंध गयंदन सों सु लय्यौ॥
गहिलोत गयंद सु राज [5]बरं। भुज ओट सु जंगल देस धरं॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही। दल दिष्प सु [6]साह सिताब ग्रही॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं। जुध मंडय साह सहाब रुषं॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली। जिहि सज्जत पंगुर देम हली॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं। जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह पलं॥
छं० ॥ १८५ ॥

---

(१) मो.-अनूअ। (२) ए. कृ. को.-भुअ। (३) ए. कृ. को.-दुज।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है। (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं। "चावंड रिसाइ कै लोह जय्यौ" (५) मो.-वरी, धरी। (६) ए. कृ. को.-ताह।

नअगौर नरेस नरसिंघ सही। जिन रिद्धि सरंतन माझ लही॥
परमार सलष्यन लष्य गनै। इक पट्ठिय कंगुर देस तनै॥छं०॥१८६॥

दस [1]पुत्रति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै॥
जिन बंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं॥छं०॥१८७॥

नवनिक्करि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै। कलहौ कलहौ निसि द्योस जपै॥
छं०॥१८८॥

कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन जंग जंजीरनि तीन रहै॥
सर सधि समंतत तेज लहै। सबदं सर हेत अनंत बहै॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो वन्न कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै॥
सम मंडप मंडित चिच कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं॥
छं०॥१९०॥

गाथा॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं॥
तिहुं पुर परागद वानी। अग्गें आव राव आएसं॥छं०॥१९१॥

पद्धरी॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़॥
अनपुट्ठराय पुट्ठिय पलानि। मुह कंठराय तालू लगान॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ॥
महाराज राज सोमेस [4]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट नृपत्ति सु तप्प॥छं०॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व्व कथा पूछना।

---

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।
* यह गाथा मो. प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यो न जाइ"
† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नहीं मिलता।

जराजित्त मानिक सुतन । कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन । काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय । मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय । इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ । अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियो मानिक्क । जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी । करे अपमान निकासिय ॥
सेंभरि कै उपकंठ । रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै । बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक्क बधतो निरषि । हरषि आस बट्टिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ मुरधर पंडह्न काल परि । लैब सही सँग झंड ॥
आय कमधती कर रहिय । चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच । पठय परधान विचच्छन ॥
दै असंष धन धान । लगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ । कुअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसह्न दिसि उड़ि बत्त । सुने अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोल करि फौज को । गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के बज्जते । नव सुलष्प साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

भुजंगी ॥ नवं लष्प सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं ॥
पलक्कंत अंदू गजं मद्द छक्के। कमठ्ठं दिगंपाल नागं कसक्के ॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं ॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं ॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्प क्रम्यौ सु मानिक्क जायं ॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथंमं मिलानं ॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूम नो रागिनी गोठि कीनं॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सापरं सत्त अंबं ॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचै बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं ॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं ॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती ॥
कवच्चं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारें दहल्लं ॥
नषं तिष्प धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे ॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं ॥
वहे रत्त धारान के षाल नालं। परे भूमि झूमे भरं विक्करालं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जगीसं॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं॥
छं० ॥ २०८ ॥
गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्य भुजा दंडि॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि॥
पुनि सेंभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय॥
उर्द्ध पाल दिय नाम। विरद हाड़ा बुल्लाइय॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लद्धिय तबै॥
अस्तिपाल हुअ संभरि नृपति। हद्ध मंड फट्टिय जबै॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी ॥ सेंभरिह मझ्झ सेंभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन बरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि॥
छं० ॥ २११ ॥

चढ़ि पवँग पहुमि पर है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क॥
करि हुकुम मात सेंभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि॥
छं० ॥ २१२ ॥

द्वादसह कोस ऊतर क्रमंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ॥
छं० ॥ २१३ ॥

उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास॥
अनचिंत मृत्त हुअ कलह बट्टि। बड़ पुच जराजित बंध कट्टि॥
छं० ॥ २१४ ॥

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंघि जल घाट रुक्कि॥
घंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर बेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध बादि॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उपिन्न घार॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि षिय रवि उदोत॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तब नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल॥ मध्य प्रहर पुच्छै नृप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ २१९ ॥

कविचन्द का आशीर्वाद।

साटक॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा नृपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्पयं॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं॥
छं० ॥२२०॥

कवित्त॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस॥
कै मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन बस॥
सबे षाइ संसार। किनै संसार न षायौ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ॥

---

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।

(१) ए.कृ.को.-नारी।

नचै न मोह जग द्रोह जिम। मुगति भुगति करि ना नचै ॥
बसि परै पंच पंचो अगनि। मोह छांह सब को पचै ॥छं०॥ २२१ ॥

चौपाई ॥ [1]हुंकरि चंद देवि बरदाइय। भट्ट विरद तिहूं पुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय। मुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि। बिना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन। मंचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥

अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय। है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ। प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है।

दूहा ॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि। जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन। कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिट्ठौ कैमास कवि। मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा बीरह सुमन। अप्पौ न्रप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह। कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ। कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि। निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि। हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय। देव संचौ बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास। देवि बर छडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै। सक्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि। जोग पाषंडह षाई ॥

---

(१) ए. कृ. को- हक्कारि (२) ए. कृ. को- तुरि।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस।

मानहु सु बात अरु बेग बत। कहिग साच कविचंद तत ॥
मन बच क्रम कैमास धन। जौ दुरगा सची सुभत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कनि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा ॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद ॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद ॥ छं० ॥ २३० ॥

हठ लग्गौ चहुआन नृप। अंगुलि मुष्प फुनिंद ॥
तिहुं पुर तुअ अति संचरै। कहै बनै कविचंद ॥ छं० ॥ २३१ ॥

जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि ॥
अब कित्ती उपर चंपौ। सिंचन जानि गमारि ॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर सूर तन। जौ पुच्छै न्रप एस ॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कव्वि कहेस। छं० ॥ २३३ ॥

होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मान्यौ अप धाइ ॥ छं० ॥ २३४ ॥

गाथा ॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं ॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिट्ठं ॥ छं० ॥ २३५ ॥

कवित्त ॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्यौ ॥
उर उप्पर [3]थर ह्न्यौ। बीर कप्यं तर चुक्यौ ॥
बियौ बान संधान। ह्न्यौ सोमेसर नंदन ॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। पनिव गज्यौ संभरि धन ॥
थल छोरि न जाइ अभागरौ। गाज्यौ गुन गहि अग्गरौ ॥
इम जंपै चंद बरहिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ ॥ छं० ॥ २३६ ॥

---

(१) मो.- वित्तं। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंतं।
(३) ए. कृ. को.-परह्न्यौ। (४) मो.-प्रलै।

राजा का संकुचित होना।

दूहा ॥ सुनि न्रपत्ति कवि के वयन। अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ। सूर कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥
गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी। संझ्या वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझ्झामि हाम को इनं। पम दम उर मझ्झ रष्यियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन। कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
विसम परिग सामंत। सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह। हुओ मंची इह राजन ॥
निसि अद्धी आषेट। कियौ किं कीऐ भाजन ॥
किं भट्ट बीर जान्यौ सु रिन। कह सुझ्यौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत चंपी सकल। अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं। कलिमलि चित्त सुभट सन्नानं ॥
के अवलोइ सु मुष्यं चंदं। निरषे नयन के विभृत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ जढ़ बर अप्पं। के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं। गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥
निरषे द्रग मुष रत्त करूरं। असही तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजूरं। भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥
गहके बद्दर गज्जि गुहीरं। भय न्निघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं। उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मद्ध पंच पल सेषं। विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

(१) मो.-पेचन।

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बद्दी देवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि ओनि आयासं॥
मन्न सह आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन कृत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठे आसन हुंत अराहं॥
चल अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं। फुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[1]उनमन मन्न उट्ठि सामंतं। कलमलि विकल उकल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [2]हनि कैमास दासि रिस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्रप कानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [3]जग्गत चहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त ॥ राजन मझ्झ [4]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। मंत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विमुप पग डगन सरक्क्यौ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल पिन पिन सुक्क्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघर बत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्ग्यौ घरौ। मिटै न कलि सों उत्तरी॥छं०॥२४९॥

चौपाई ॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। बर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मिचद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम वरन बरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

---

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे मामत। (२) ए. कृ. को.-हति।
(३) मो.-नग्गे। (४) ए. कृ. को.-संभारिय।

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी ॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक ॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास ॥
छं० ॥ २५१ ॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि ॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। बिन तरुनि करुन मुष छादि राज ॥
छं० ॥ २५२ ॥

दर रष्पि बोल आएस दीन। रक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह ॥
किय सयन पेम न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज दप्प रप्प ॥
छं० ॥ २५३ ॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट सूर घट्ट। रष्पे सु जक्कि सब थान थट्ट ॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्हे अकाज ॥
छं० ॥ २५४ ॥

हह कत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार राम ॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिस्सि दिट्ठिय डरान ॥
छं० ॥ २५५ ॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह। कत्या सु कत्य मन्हे व एह ॥
इह कम्यौ दुष्प विते चिजाम। भयभीति निसा मन्ही [4]सहाम ॥
छं० ॥ २५६ ॥

भइ [5]पिनद जाम चव जुग समान। सब लोक दुष्प बित्ती डरान ॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गज्यौ सु दासि पूनह सरोस ॥छं०॥२५७॥

चंद्रेन चिंति निज नाह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त ॥
छं० ॥ २५८ ॥

---

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास"।
(३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाभ। (५) ए. कृ. को. पिमद।

उग्गियं मान पायान पूर। बज्जियं देव [1]दर संष तूर ॥
*कलत्र कैमास चढ़ि वरन साल। बरदाइ देवि वर मंगि बाल ॥
छं० ॥ २५९ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना।

चंद्रायन ॥ चलै चौय बर मंगन भट्ट सु भट्ट बर।
अप्पावै कैमास मिले आइ अंग बर ॥
न्हर छुट्टी कवि हित्त घरी पल बरनि बर।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव बर ॥ छं० ॥ २६० ॥
रोला ॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी ॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब बर बरनि उचारी ॥ छं० ॥ २६१ ॥
गाथा ॥ बाला न अच्छि लग्गी। हुं बरदाइ कड्ढिया अग्गी ॥
तंबाल विरस लग्गी। लच्छिन पुरसान रष्पिया मग्गे ॥छं०॥२६२॥
आदर दीन सु कव्वी। आसन आछादि रोहि तिय तथ्थं ॥
निज प्रारथना राजं। गोमझ्झे ग्रेह साजनं साजः ॥ छं० ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना।

चौपाई ॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय। अंचल गंठि विलग्गिय धाइय ॥
को [2]अति जात अप्प जम आनै। अनि सिर मृत्य अप्प सिर तानै ॥
छं० ॥ २६४ ॥
जिन कैमास रिद्धि रज रप्पी। जिन कैमास मंच सिर मप्पी ॥
जिन कैमास देस नव आने। सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥छं०॥२६५॥

---

(१) मो-दरबार नूर।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है। मूल पाठ भी "उग्गियं भान पायान पूरं, बज्जिय देव दर संख तूरं। कलत्र कैमास चढ़ वरन साला। देवी बरदाय वर मंगबाला।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है। भुजंगी छन्द में चार यगण होता है। मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं।

(२) ए. क. को.-अनि।

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिमुद्ध मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ जा जीवन कारनह। ध्रम्म पालहि मत टारहि॥
जा जीवन कारनह। अथ्थि दै चित्त उबारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति [1]अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। नृपति बहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कलि बुभ्भै अधियार [2]भौ॥छं०॥२६७॥

जो मनुच्छ धर ध्रम्म। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ॥
मोर बीर अनुकार। सास नन असन बंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय [3]बंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्प न करो महंत पिय॥छं०॥२६८॥

मात गरभ बस करी। जम्म बासुर बस लभ्भय॥
पिनन नग्गि पिरु दाय। मुदय पिन हंस अलुभ्भय॥
बपु विसष्प बढ्ढयौ। अंत रुद्दह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ नृपति। सकै न [4]प्रान पमुक्कयौ॥छं०॥२६९॥

दूहा ॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्यौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार॥ छं० ॥ २७० ॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौ।
(३) मो.-वधिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

कवित्त ॥ रष्पि सरनि सह गवनि । मरन मंगल अपुन्न किय ॥
दरनि पिष्पि दरबार । रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जलनि प्रथिराज । नैन नेनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर । करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तब दीन हुअ । कनक काम कबि अच्छयौ ॥
तुम देव कित्ति कुहलिय कमल । धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन । कविन ध्रम्म धर झूर ॥
इह अध्रम्म लग्गहि उरह । क्रम्म उरक्कहि ऊर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न मंगि बरयौ । काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै । संभरि वै राय राएसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना ।

दूहा ॥ पढ़िय कित्ति बुल्लिय बयन । दिल्ली पुरह नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर । को कहै कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना ।

कवित्त ॥ रावन किन गड्डयौ । क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गड्डयौ । चौय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्ने गड्डयौ । कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गड्डयौ । पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड़यौ न इंद्र गोतम रिषह । सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि । मति गड्डय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद । [4]नाक वत्ती [5]क्रन कट्टी ॥
अध्रम्म बीर विक्रम्म । सक्क बंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सह सु रारि । दिप्पि गंध्रव नृप भंजौ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सिरयाई, सिरपाई । (२) कृ.-गुरवास हिल्लह ।
(३) ए.-स्वानि ।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती । (५) मो.-कट्ठी । (६) मो.-कट्ठी

तमकि तास अगि मारि। कित्ति पुत्त मुक्किय अज्जौं॥
सो सत्ति बात आतम पुरिसि। तामस इह आपुन मिटै॥
किं जान लोय किं किं [1]जपह। कित्ति तोय बहु न्रप नटै॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना।

मति कैमास मति मेर। दोस दासी न हनिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। सामि दो हौ न गनिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। दंड कुब्बेर भरिज्जै॥
मति कैमास मति मेर। दाग बिन धरनि धरिज्जै॥
बहि गई सरक नगौर की। मंच जोर सेवर कहर॥
चहुआन राव चिंतारि चित। गद्यौ कढ्ढि दै करि न हर॥
छं० ॥ २७७

दूहा॥ दासि संग कैमास कढि। जग दिप्पवै नरिंद॥
बरै बरनि अंगन धरी। बर मंगै कविचंद॥ छं० ॥ २७८॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना।

कवित्त॥ रोस मेल्ही दासी सु। राज लिन्नौ अध लिष्यौ॥
सो नट्ठौ तिन बेर। कढ्ढि कैमासह दिष्यौ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ। अप्प बरनी बर लिन्नौ॥
पुत्र बीर दाहिम्म। हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि। पेम पंसि विधि विधि करै॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। भावी गति को उच्चरै॥ छं० ॥ २७९॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना।

कविय पुत्र कैमास। राज हांसीपुर दिन्नौ॥
पुत्र धनं पन अप्पि। गोद नरसिंह [2]सु किन्नौ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज। बीर दुरबार सजोइय॥
बरनि बज्जि नीसान। रोस छिम सात्वक होइय॥

(१) ए. कृ को. जयियं। (२) मो.-कैवास। (३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ।

सुरतान गहन मोषन न्रपति । पंग बीय पातुर दरसि ॥
दिषि चीय सभा मन पंग कौ । छबि संमुह बरि बरि बिरसि ॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्रप । सो अप्पे विह सत्त ॥
न्रप पुच्छत कबिचंद कौं । अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कबी । तुम जानौ बहु काम ॥
किहि परि गह लंछन लगै । [1]को मेटै लगि साम ॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज । कल कहै बत्त सो नीत राज ॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त । कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त ॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज । सम दान मान सामत्ति साज ॥
पलटै कि राज लछन्न लीन । बहु भंति कुलह विग्गरै तीन ॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै सूअ हंकार मभ्भ । वर जाय अप्प रस भ्रम्म रज्ज ॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ । विग्गरै ग्रेह चौया अछाय ॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ । तिन चंद चंद प्रातह दिषाइ ॥
विग्गरै दुष्टपन कट्ठ नेह । विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह ॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज । विग्गरै लच्छि बौहरे लाज ॥
प्रसट्ठै अधम्म विगरै धम्म । संभरि सु राज राजन सु भम्म ॥
छं० ॥ २८७ ॥

---

(१) मो.-"कै मेटन लग्गी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

साधम्म सेव गरुअत्त जीव । चिय राज नीति राजह न सीव ॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु ह्रव । मादक्क ग्रेह बहु इष्ट ह्रव ॥
छं० ॥ २८८ ॥

विग्गरै राज परदार [1]पान । लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान ॥
विग्गरै राज सुय बाल ह्रर । संचरै बहुत सषि मभ्भ दूर ॥
छं० ॥ २८९ ॥

विग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान । विग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान ॥
विग्गरै राज राजन सु जानि । जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि ॥छं०॥२९०॥

परनारि [2]पित्त आचरन होइ । बिग्गरै राज निज मंच सोइ ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान । पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान ॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस । तत ग्रहै राज नीतह सुरेस ॥
उच्चर्यौ राव जंबू नरेस । संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं०॥२९२॥

[3]तव वंस भाव जरतित्त मान । संभरी हुत ऊपत्ति थान ॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज । सो नीत राज जित [4]सुरग राज ॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान । बंधयौ सकल तिन राज [5]थान ॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड । दिज्जियै ओर जोगिंद डंड ॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल । भजि कठिन कंक कै कठिन बाल ॥
बल पुच [6]माय सम सुमति जाइ । आनयौ पुच्छ सम रहिस धाय ॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय । न्रप दुरै झूठ कित्तो सु [8]दीय ॥
न्रप नीति धम्म समकाल लोय । बंकै कटाछ्य बंकै न कोय ॥
छं० ॥ २९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-थान । (२) ए. कृ. को.-नित्त । (३) ए. कृ. को.-तम ।
(४) ए. कृ. को -सुगि । (५) ए. कृ. को.-थान । (६) ए. कृ. को.-न्याय ।
(७) ए .कृ. को-"मंडिय सुदेस हुज दान प्रीति" । (८) ए. कृ. को.-दीत ।

संसार नीति किय तत्त पंथ। विभ्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ॥
सह भ्रम्म पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम पास ब्रह्मा सु ध्यान॥
छं० ॥ २९७ ॥

रषिये सु भ्रत्य रष्यन सु लच्छि। फिरि हीत ताहि हित तत्त अच्छि॥
न्रिप भजै नीति उमराव हीति। न्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति॥
छं० ॥ २९८ ॥

न्रप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों पुबह षेद॥
न्रप मेटि करै समता सरीर। बुझ्झवै अगनि जिम बरसि नीर॥
छं० ॥ २९९ ॥

भोग यै राज परिगह संजुत्त। मति प्रान करै मा भ्रम्म पुत्त॥
रिषियै सु भ्रत्य इन भांति मान। ते सामि काम अमरित्त जान॥
छं० ॥ ३०० ॥

मा भ्रम्म सहै मो मित्त सेव। जानै न सामि उत्तर न देव॥
न्रप पास बत्त इह भंति जानि। कवि बहि लज्जि गंभीर बानि॥
छं० ॥ ३०१ ॥

न्रप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ॥
हय गय सु मांहि धुअ परी सूअ। समाइ जेम जल छांह कूअ॥
छं॥ ३०२ ॥

सममान अग्गि निधि न्रपति जीय। न्रप चित्त भृंग कीटी [2]सु लीय॥
रष्यो सु अंब जौ न्रपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सकूप॥
छं० ॥ ३०३ ॥

जन हथ्थ आन पंकी सु रंग। तामंस लोह जनि [3]मनित पंग॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चित सदा कलपंत होइ॥
छं० ॥ ३०४ ॥

सा भ्रम्म बिना परि गहन काच। रूपं न रत्त दरबार साच॥

(१) प. दहै। (२) मो.-नीय।
(३) प. कृ. को. मन पतंग।

दुज सफर जम्म 'नाही सनाम । संसार रतन नृप परय वान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

दोय कंठ लग्गिय अगमि । नयन जलग्गि लखान ॥
अंब जीव बंछै अधिक । कहि कवि कौन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पौं कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्या वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

पिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिप्पत तिन काल ॥
अति बर बर बुल्लै नहीं । सुकिम [२]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

सुरिस्स ॥ चलौं भट्ट सेवक्क होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हूअ । तब संभरु अंग करौं दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिस्स ॥ अब उपाय समझ्यौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल षंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंद्यौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

(१) ए. छ. को.-तीही । (२) मो. चलहु ।

मरन गरुअ सिर हरुअ है। जियन हरूअ सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचय्यौ।
मरन लगन विधि हथ्थ तत्थ कवि उच्चरयौ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहौं।
इन उपहास विलास न प्रानय पंडिहौं॥ छं०॥ ३१३॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय कित्ति मन्यो सु काज॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि [1]क्रत त्रि सथ्थ॥
छं०॥ ३१४॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय बरष्प अति रूअ रंस॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। थप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ॥
छं०॥ ३१५॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति जूर॥
छं०॥ ३१६॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुभ्भा सु भासि॥
अप्पान कृत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प॥
छं०॥ ३१७॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पौ सु तेग हमकों सु षोलि॥
किय सुमन सूर सामंत सब्ब। हुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब॥
छं०॥ ३१८॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। षोले किपाट नृप जुगति गन्नि॥
उय्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन॥
छं०॥ ३१९॥

---

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुरिछ करके लिखा है। (१) मो.-कुम।

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कौने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति बिधि कित्ति अंग। बिन सच्च रच्च दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुभ्भै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा॥ उरसल्लौ कैमास नृप। पुच्च परट्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अब्बल करिय। दिय हय गय बर थट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय बेरी भरन क्रन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-मुझै।

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।

(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच मुष्प गवष्प यह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुप । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥
कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । सष्थ सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग । तब्ब संभरै मंचि बर ॥
जब क्रीड़त जल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तष्थ दाहिम बर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला । पुहप सुगंधह [1]वास रस ॥
जब जबह अवर सुप संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥
दूहा ॥ अति उर सालै मंचि दुप । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यौं । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्टी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झि झय ॥
पीची राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झिझय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान । राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्प कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना ।

---

(१) ए. कृ. को. बीस । (२) ए. कृ. को.-वचन ।

कही जाम जद्दो जुवान। सुनि कन्ह नाह नर॥
चंद्र सेन पुंडीर। राय गोयंद राज बर॥
आषेटक प्रथिराज। सह अंतर गति आदै॥
दै समद्धि संक्रमौ। करौ इन बुद्धि सवादै॥
मन्नौ सु सब्ब सामंत मिलि। थपि सामंतन सत्ति करि॥
बरनौ सु जाम जद्दव नृपति। तबहि राज मृगया सुभरि॥छं०॥५॥

सज्जि सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन पान भर॥
अटल अवनि आभंग। सज्जि सक कन्ह नाह नर॥
गरुअ राव गोयंद। अतत्ताईय ईस बर॥
चढ़िय निडर रट्ठौर। सलष लष्मन बघेल झर॥
सामंत सूर मिलि इक्क हुअ। चले सथ्थ राजन ररिय॥
औछंग अंग सन्नाह लै। इम सु राज मृगया करिय॥ छं०॥ ६॥

प्रनित सब्ब सामंत। चल्यौ चहुआन अनब्बर॥
सथ्थ सूर सामंत। विरद अन्नेक बहत सिर॥
सथ्थ लौन सन्नाह। अवर परकार साथ सजि॥
बानगीर हथ नारि। धारि दिढ़ मुट्ठि [1]हथ्थ रजि॥
घन लौन सज्जि सथ्थें [2]सयन। करि टामंक सु कूचकिय॥
क्रीड़न सु राज मृगया चल्यौ। सब आषेटक साजलिय॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन।

पद्धरी॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज। सथ लिये सूर सामंत साज॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक। सथ लिये तुंग सो भषन तेक॥
छं०॥ ८॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि। जीव लैं जाव वच्छंतिवार॥
इक सहस बधन वादाह तेज। जुटि पटकि भुम्मि कट्टत करेज॥
छं०॥ ९॥

(१) मो.-रथ्थ। (२) ए. कृ.- को.-सथन।

सारङ्ग सहस बल गनै कौन । धावंत भूमि भुल्लाइ पौन ॥
छुल छेद भेद जीवन लषंति । जुट्टंति अंत पसु पल भषंति ॥
छं० ॥ १० ॥

पय तरह रत्त मुष अग्र नास । रत्ती सु रसन कोमल सु भास ॥
नष बीह अग्र कै बीय चार । चौरार पुंछ तिष्षे सु तार ॥छं०॥११॥
कर पदह थोर जङ्घे सजोर । नष तिष्प विज्ज गिरि वज्ज रोर ॥
कटि कसल थूल निस्तंब जानि । उर थूल लंक केहरि समान ॥
छं० ॥ १२ ॥

गररत्त गरुअ विस्साल भाल । तिष्षे सु दसन दंपति कराल ॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच्च । सोभंत गात वैताल रुच्च ॥
छं० ॥ १३ ॥

बिन अंग रोम के प्रथुल रोम । अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम ॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्प जास । जघनं सु गत्ति म्रगराज ग्रास ॥
छं० ॥ १४ ॥

जर हेम पट्ट के डोरि पट्ट । सेवक्क एक प्रति उभय घट्ट ॥
धावंत धरनि आजानवाह । बर बेग पवन मन लच्छि गाह ॥
छं० ॥ १५ ॥

नर जान रोह के अस्व जान । आरुढ़ सकट के वृषभ थान ॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार । अन्नेक देस साजोति सार ॥
छं० ॥ १६ ॥

सत तुंग भषन लंगीस राव । तुंगह सु पंच जामानि ताव ॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ । द्वै तुंग भषन लोहान तथ्थ ॥
छं० ॥ १७ ॥

चय तुंग चंद पुंडीर धीर । द्वै तुंग राम गुज्जर [1]गहीर ॥
बलिभद्र एक सारङ्ग तुंग । परसंग राव द्वै तुंग जंग ॥ छं० ॥ १८ ॥
द्वै तुंग महन परिहार सार । चय तुंग बरुन बंधव सहार ॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग । गिरवर विहार थल बहि रंग ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सहीर ।

सारङ्ग दन में चिच साज। बर साज बहस्त के भास भाज॥
हय रोय केय आरोहि पिट्ठ। खी गोस केस जन्नाव थट्ठ॥
छं० ॥ २० ॥
फंदैत कुरंग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मघार॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त॥
छं० ॥ २१ ॥
[2]षेदा सु सहस सारङ्ग एक। तरिया सु सहस चौ जूवि मेक॥
सें पंच भूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल॥ छं० ॥ २२ ॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। क्रीड़ंत राज सम विषम थान॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय॥
पानी पन्न प्रवास। सबै मुष तिन दुष तज्जिय॥
तिन सु बैर उर चिंति। प्रात अप्पिय सम [3]दूतन॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धू तन॥
लिषि पत्र साह धृम्मान सम। मुष बानी इम रट्टियौ॥
कैमास कृत्य सामंत सम। पबरि विवरि सब पट्टियौ॥ छं० ॥ २४ ॥
दूहा ॥ दूत सपत्त साहि तब। जहं कायथ धृम्मान॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान॥ छं० ॥ २५ ॥

धर्म्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

धृम्माइन काइथह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त॥ छं० ॥ २६ ॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धर्म्मायन का पत्र देना।

(१) ए. कृ. को.-घट्ट। (२) ए. कृ. को. दोषा।
(३) ए. कृ, को.-दतह, धतह। (४) ए. कृ. को. चिन्त।

दूत सपत्ते गज्जनै। जहँ गोरी सुरतान ॥
तपै साह साहाब बर। मनों भान मध्यान ॥ छं० ॥ २७ ॥
दिन चढ़तें साहाब दर। आनि कगर कर दीन ॥
मुदित चित्त भए मीर सब। मन उछाह सब कीन ॥ छं० ॥ २८ ॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त ॥ निमा एक निज ग्रेह। भट्ट साहाब दुग बर ॥
धरिय देवि उर ध्यान। इष्ट चिंतन सु अप्प करि ॥
निमा अङ्ग सुत जानि। देवि आई सुहित्त धरि ॥
कहै चंडि सुनि चंड। मुझ्झ विग्यान इक्क बर ॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ। सुनिय अपूरब कथ्थ तस ॥
सम बाद विद्य मंडौ रसन। जौ पाऊं देवी दरस ॥ छं० ॥ २९ ॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि दुग। उभय पुत्तह नह अंतर ॥
दीरघ चंद सु चारु। अनुज केदार कलाधर ॥
वाद विवाद जु कोइ। जाय चंदह सम मंडै ॥
ग्रीन होइ मति हीन। ष्याति तिन बानी पंडै ॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम। एक चंद अंतर सुचिर ॥
अनि वस्त विवह अप्पों अनत। पुच्च सु पुज्जन प्रेम धर ॥ छं० ॥ ३० ॥

हनूफाल ॥ उच्चरिय देविय गाजि। सुनि भट्ट तूं कविराज ॥
कविचंद दीरघ सेव। तुम अनुज अंतर भेव ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नन करहु तिन सम वाद। आनि देस जिप्पन स्वाद ॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अप्पय एम। चहुआन देपन प्रेम ॥ छं० ॥ ३२ ॥

जो हुकम अप्पै मात। सुविहान पुच्छौं बात॥
बोली सु देवी बेंन। तुम चलौ दिल्लिय चेंन॥ छं० ॥ ३३ ॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पच परेम॥ छं० ॥ ३४ ॥
सत बाज इथ्थिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट लभ्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं० ॥ ३५ ॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्ट। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कब्बी॥ छं० ॥ ३६ ॥
दूहा॥ मुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं० ॥ ३७ ॥
गाथ॥ कवि पहुंच्यौ दरबारं। करि सलाम साह बर गोरी॥
दिष्टे वासब सेनं। पेंसत दिट्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं० ॥ ३८ ॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मज्झ्भै। ना खूभंत हरअ गरुआई॥
छं० ॥ ३९ ॥
भुजंगी॥ दिषे साहि गोरी दरबार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं० ॥ ४० ॥
कही बागबानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ४१ ॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो वाज दिन संझने। (२) प. क्र. को.-ताकि।

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान । दिष्पि बोल्यौ ततार बर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल । अप्प कित्ति तौ [1]हान मम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना।

दूहा ॥ सुनि सहाब हसि उच्चरिय । दिप्पहु चंदह मत्त ॥
सुपनेंज धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना।

सुनय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [2]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना।

घरी एक बिसमति भयौ । मुष दिप्पै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना।

सुनत बचन सुरतान मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि बिराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार घन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) ए. कृ. को.-दान मम। (२) ए. कृ. को.-छछुंदरी।

कवित्त ॥ [1]चलिय भट्ट बर ताम । नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवदेस । लष्य अष्पै विलष्य गुर ॥
अति उतंग चहुआन । मान मरदन षल पानं ॥
अरब षरब उप्परैं । कोरि अष्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ । आसमान अभिलाष षल ॥
भिद्दै न [2]जाहि माया प्रबल। मनों नीर मझ्झैं कमल ॥ छं० ॥४९॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्य पंच पंथह गवन । आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनौ । पानौ पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गहर बन । नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय । पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ । आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह । हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्य । घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहै । [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत । हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि । चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल इक आया निथ्थारे ।
संभल्ल हक्क गहक्क हौ उठ्या [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे ।
कंध बिबथ्या प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ । (२) ए. कृ. को. नाहि ।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष । (४) ए. कृ. को. गहन । (५) मो. दूत ।
(६) ए. कृ. को. अनंग । (७) ए. कृ. को.-अननीति । (८) ए. कृ. को.-मारे ।

जोह झाक झक झकै मनों बीज पथारे।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्रह तारे॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सारे।
संभरिया पंच मुष्प थापें देष्या दस बारे॥ छं० ॥ ५४ ॥
आया कुंअर उप्परे षावास निहारे।
आडा आया संकडा परवार पचारे॥
आवत [2]सीस उझक्किया सिर सिंगी झारे।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पलारे॥ छं० ॥ ५५ ॥
रेंनि करष्पे कोपिया झुक्का असि झारे।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे॥
मनों सारे स्रत पिंड हो धग्गा कुल्हारे।
पड़िया सीस धरट्ठ हे परसह पहारे॥ छं० ॥ ५६ ॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे॥
कै अष्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे॥
जानि अलुझ्झी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे॥ छं० ॥ ५७ ॥
कूर कवारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे।
रेनि कहंदै धन्य हो जै सह उचारे॥ छं० ॥ ५८ ॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना।

कवित्त ॥ आषेटक संभरिय। कुंअर म्रगराज प्रहारे॥
जामदेव जहों। पुंडीर का कन्ह विचारे॥
दस दिस अरिय प्रचंड। तुच्छ सिक्कार सथ्थ हम॥
मिलि चिन्त्य चहुआन। अष्प घिल्लियै भोमि क्रम॥
सुनि राज अष्प मन फिरन हुअ। मानि मंत सामंत किय॥
सित माह प्रथम बर पंचमी। पानीपंथ मेलान दिय॥ छं०॥५९॥

गोठ रचना।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे। (२) ए.-सीर।

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु । करिय गोठि तथ्थाहु ॥
घन पकवान सुअन अनत । गनै कोन जी हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना ।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज । सह परिहार सबन किय ॥
आय सूर सामंत । अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट । नाम द्रुग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि । सथ्थनी सर नीसारह ॥
सिर हेम छच उप्पर उरग । अंकुस तस कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्रपति । मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ । सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन ।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह । अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै । किय न्रप सम्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा ।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं । रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वित्तर्क । सरल बानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार । रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह । लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि । लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोन बान बर भलक करि । वर विधान मा बुज्झि कबि ॥
बिय गुनिय देषि ग्रब्बह गरै । ज्यौं तम भगत देषंत रबि ॥
छं० ॥ ६५ ।

---

(१) प. क्र. को.-नृप छाई । (२) मो.-उकंतं लहर तरंगयं रंगं ।
(३) मो -जुगत । (४) मो.-वंचै ।

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद"।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिष्ट न्रपती प्रमान। बुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंदप्रथ्थ आजानबाह। तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ। तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग। तुंहि बीर मुरबि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि धम्मराइ। तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग दिष्यौ न ईस। नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्रम्म पच्छ सब बंध तूंहि। तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिष्ट वाद श्रोतान लग्ग। सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कों। बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि। तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव। चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ। भोमि गाहै पल पानं ॥
सूर गरूअ [1]गुर बीर। बीर बीराधि सु बीरं ॥
छचपती छिति सोभ। सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर। उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर। कहैं भट्ट द्रुग्गा सु बर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना।

करि जुहार चहुआन। भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट। चिंति मुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान। भट्ट दोज रस बद्दे ॥

---

(१) मो.-नुर, उर।

उन उचार उच्चरत। वाद दोऊ तब बद्दे ॥
उच्चर्यौ द्रुग्ग केदार बर। क्यों बरदा अप्पन ग्रद्दै ॥
भानो तो साच बरदाय पनु। जो द्रुग्गा सेंमुष कद्दै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा ॥ कद्दै भट्ट न्रप राज सुनि। मुद्दि मति बुद्धि अगाध ॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बद्दन बाद ॥ छं० ॥ ७३ ॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं ॥
उभय ब्रम्म हिंदवान। आइ बेठे इक थानं ॥
उभय बेद रह जानि। उभय बरदाय उभय बर ॥
उभय बाद जित वान। उभय वर सूर सिद्ध नर ॥
न्रप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितद्द रचिय ॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय ॥
छं० ॥ ७४ ॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा ॥ थल अप्पौ सु दुद्धून कवि। ससि बरनौ इक बाल ॥
इक पूरन बरनौ ससो। इक जंपो वै काल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
इक्क कद्दौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान ॥
कद्दै राज कविराज द्दौ। तत्तद्दि तत्त बषान ॥ छं० ॥ ७६ ॥
मिलिय चंद भट ताम सम। किय सादर सनमान ॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ वाद विद्यान ॥ छं० ॥ ७७ ॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु मत्ति ॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति ॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उभया। (२) मो.-प्रसंसित।

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद विध कही। सुनो प्रथिराज राज बर ॥
मदन बाज नष लग्यौ। मदन बांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष षित पिय ॥
चक्र काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बड्डियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुप सड्डियौ ॥छं०।७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
द्वीपानं सह राजन। सा जंपी कित्तियं भट्ट ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पच भार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भ्रंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रह्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंस समुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसव वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम नृपति दै आन। कट्टि सैसव तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब भ्रंग तर। [4]मिसिर कट्टि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दोय बंधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति षोट उचार ॥

---

(१) ए. कृ. को.-निवक्क। (२) मो. भै।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-मभिर।

अष्पर कुकवि कवित्त ज्यौं । गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय । अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्पर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यौं । चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन ।

सो सरसत्तिय सुष दियन । बाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल । मत कवित्त बढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना ।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट । सत अग्र मुष्प इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्प होंहि ज्वाला प्रचार । [2]मुष मुष्प वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥

कविचंद कहै सुनि भट्ट राज । प्रगटौ जु अष्प विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट । उच्चर्यौ मुष्प प्रति अंग षट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥

सब मुष्प प्रगटि पावक्क ज्वाल । किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद । उच्चर्यौ मुष्प प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥

दस च्यार मुष्प विद्या उचार । ज्वाला सु मद्धि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक । पूरी सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥

बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट । केदार ताम करि अवर थट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक । [3]बुल्लाउं बाल जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

---

(१) मो.-बन्नन ।
(२) ए. कृ. को.-सब मुष्प वेद विद्या विचार । (३) ए कृ को बल्लाउ ।

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल। जंपै छ भाष दिन एक बाल॥
ठट्ठौ जु अग्ग जकि वाज राज। दिय अषित सीस केदार साज॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस। उट्ठे विचंद दिप कुसुम सीस॥
उच्चर्यौ बाज गाथा सु एक। आसीस राज बर विधि [1]विवेक॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा॥ जिन सारथ सजि पथ्थौ। निज रथ्थौ सु ग्रभ्भ उत्तरया॥
जिन रथ्थौ प्रहलादौ। सो करौ रथ्था राज प्रथिराजं॥ छं०॥९३॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना।

हनूफाल॥ वै संधि बाल प्रमान। घट घटिय द्रुग्गा पान॥
पढ़ि छंद मंच विसाल। नर रीझि देवन माल॥ छं०॥ ९४॥
भय अग्ग जंगम अंग। गति लही थावर जंग॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग। नय जानि जमुन तरंग॥ छं०॥ ९५॥
[2]थुति करत सामँत सूर। धनि चंद मंच गरूर॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि। नंषीति मध्य प्रमान॥ छं०॥ ९६॥
गुन पढ़त रहिय सुभट्ट। भय प्रथम उपल सु घट्ट॥
कर मंगि मुद्रिक चंद। नन दई मुद्रि कविचंद॥ छं०॥ ९७॥
कीनी सु विद्य प्रमान। फिरि बाद मंडिय जान॥ छं०॥ ९८॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना।

दूहा॥ प्रथम बाद पाहन कियो। फिरि मंड्यौ बिय बाद॥
चंद सिला पानी करी। दुग्गा आनि प्रसाद॥ छं०॥ ९९॥
साटक॥ छचं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं बरं॥

---

(१) ए. कृ. को.-विसेक। (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति।

भ्रम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कवी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं छिंदवान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि मुषयौ तर्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्पि अद्धौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरिच विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संग्यौ पंठ। हुं तब छंडि [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अद्धी जानं ॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भीनी ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

भाई सी बोलिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहराही ॥
षिझ्यौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्य बोल्यौ गुन हारं ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

---

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-वर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर। गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ। विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज। हारि अंतरिष बुलिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज। कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव। नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत। कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग। छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर। जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
बाला जा गुन वृद्धि मौर सु धितं न्त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं। हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बै ति देवं। तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥

करै रिद्धि कौ काज सब्बै बिहंसं। तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गन्नै सछंडै। तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥

इतं बात जानै न तो बाद जीतं। ननं सस्त्र बीरं मनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानो। सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह। मोह तत भेदन तुंही ॥
तूं जिह्वा मोथान। तूंब गुन में गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय। एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बद्ध। लष्प लष्पन सिरताजं ॥

तजि मोह बीर बंछै सु कवि। तत्त भेद नन अंग तिहि ॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि ॥छं०॥ ११२ ॥

देवी का वचन।

दूहा ॥ सु कवि सों सरसति कहैं। मो तो अंतर नाहि ॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अमृत छांह ॥ छं० ॥ ११३ ॥
लीलावती ॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहुं ननंहुं ननंहुं तुं नांही॥
भयं तो भयं तो महंतो महंतो। कथं तूं कथंतूं ननंहूं ननं हूं ॥
॥ छं ॥ ११४ ॥
गुनं तो गुनं तो हुं जंची हुं जंची। तु जंचं तु जंचं कयती पढ़ंती ॥
कथंती कथंती न्हतंती न्हतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती ॥
छं० ॥ ११५ ॥
भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ पय दष्यन कर उंच। मुष्य बोले तूंहै बर।
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रंम गुर ॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना ॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना ॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय ॥
उच्चर्यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय ॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा ॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बंध कीन ॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन ॥ छं० ॥ ११८ ॥
जु कछु कहै कविचंद सो। [1]करै बनै कवि सोय ॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय ॥ छं० ॥ ११९ ॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय ॥
जो उमया सेंमुष कहै। तो सांचो बरदाय ॥ छं० ॥ १२० ॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ ॥
हो नंषों बर सुंदरी। तूं कर कहि सु ताउ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

एक संधि वै बरनवों। इक चंद इन्नों भट्ट ॥
दो बर साषि उमा कहै। अंतर मझ्झ सु घट्ट ॥ छं० ॥ १२२ ॥

घट के भीतर से लालो प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त ॥ सुनि सैसव बिछुरन्त। बाल किय अमर अरुन द्रिग ॥
बाल जगावन काज। रह्यौ [1]षिलदार जानि ढिग ॥
छीनरु उन्नित बद्दै। घटै करकादि मकर जिम ॥
कामसास्त्र गति पढ़ति। चिंति उतरादि सूर भ्रम ॥
इच्छइ जु अंछि बंके करन। संका [2]लज्ज बसंकरी ॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिप्पिए। श्रवन कथा रसनन चरी ॥
छं० ॥ १२३ ॥

गज निसि अंकुस चंद। कम्म तारक्क विहीनी ॥
कै प्राची दिसि चिया। बिंद कै कंदर हीनी ॥
कै कुंचिक शृंगार। काम द्रप्पत बर लोभै ॥
गाहनि काननि [3]ग्रनी। सिंघ नष गज मुष सोभै ॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि बधुअ मुष ॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्र एक एक इति रुष ॥
छं० ॥ १२४ ॥

रोला ॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी ॥
अति रिझ्झय बरदाय। सुरंग यासों सर भुन्नी ॥ छं० ॥ १२५ ॥

*चान्द्रायना ॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धर्यौ।
मोहि चंद बरदाय। सु अंतर मति कर्यो ॥ छं० ॥ १२६ ॥

चौपाई ॥ सो बिन अछर एक न होई। घट घट अंतर कव्विन जोई ॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

---

(१) मो -पिलवार। (२) ए. कृ. को.-लक। (३) ए कृ. को.-गनी।

* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चान्द्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं जुगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै। कियं कै सभुक्के उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥
लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तइंदं बंदै लोय जाकी ॥
रुरें रत्त सोभै बरन्ने सु चंदं। घसे गंग हेमं झुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥
पढ़ै तुंमरं ताहि पावै न पारं। दियो चंद कव्वी इयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार वत्त तव जंपि एह। दिष्पाउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तव बज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥
नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥
झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हूअ [2]सभ सभा एह। दिष्पय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥
आघात बात चलि फारि मेह। न्निम्मलिय नभ्भ रवि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुल्लि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥
भ्रमि भ्रंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[3]सभ सकल माहि रहि इन सु छंद। किन्नौ अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को. अधारं। (२) ए. कृ. को.-सभ सकल।
(३) ए. कृ. को.-सभ। (४) ए. कृ. को.-छद।

जे जेय विद्य देषी केदार। ते तेय चंद देषिय [1]वियार॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्थ। दिष्पिय सु चंद उच्चरिय कथ्थ॥
छं० ॥ १३६ ॥
सुनि बत्त अहो भ्रुग्गा केदार। प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अब्ब सार॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद। हुअ उपल गलित तो विद्यवंत॥
छं० ॥ १३७ ॥
चिंतिय सु चित्त बरदाय देव। मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त। वर बानि ग्यान सद्यौ सु मंत॥
छं० ॥ १३८ ॥
कुहलाय उपल हलहलिय अंग। झलमलगि जानि पारद सुरंग॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि। मुद्रकिय नंषि कवि मध्य थान॥
छं० ॥ १३९ ॥
डुब्बी सु मध्य मुद्रिक अभिंदु। भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कबिंद॥
कविचंद कहै बर बदौं तोहि। अप्पै जौ काढ़ि मुद्रिय सु मोहि॥
छं० ॥ १४० ॥
लग्यौ जु पढ़न केदार बानि। बर भास छंद अन्नेक आनि॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि। थक्यौ अनंत करि करि उपाय॥
छं० ॥ १४१ ॥
फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत। किल किलकि मध्य देवी हसंत॥
अन्नेक बीज मंचह उचार। पढ़ै सु बानि कविचंद सार॥
छं० ॥ १४२ ॥
फिरि भयौ गरित गिरिवर सु अंग। कढ़िग सु चंद मुद्रीय नंग॥
*लग्यौ सु पाय केदार तब्ब। सम तोहि दिषि न चिभुवन्न कब्ब॥
छं० ॥ १४३ ॥
कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट। बर विमल तुंही बानी सु घट्ट॥छं०॥१४४॥
कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार। बाद मंड्यौ मरनं चित॥
सुबर [4]कट्ठ पुत्तरी। देहि उत्तर सजीव हित॥

(१) ए. कृ. को.-चिथार। (२) ए.-जु। (३) ए. कृ. को.-सरी।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं। (४) ए. कृ. को. कष्ठ।

तब चंद बंदि आराधि । घट्ट जल बंधि उड़ायौ ॥
गंग हेत बरदाइ । बरनि नौ रस्स पढ़ायौ ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै । कर अंतर भ्रंमत करि ॥
घिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ । सो ओपम कविचंद हरि ॥छं०॥१४५॥

दूहा ॥ नीर भ्रमं तजि पिष्पियै । घट पष्पै कविचंद ॥
मानौ [1]किरनि पतंग कौ । षेलत पारस मंडि ॥ छं० ॥ १४६ ॥

चौपाई ॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्पिय । भला भला ऐसा तुम अष्पिय ॥
चंद सूर दोऊ करि सष्पिय । बाद विवाद परस पर रष्पिय ॥
छं० ॥ १४७ ॥

कवित्त ॥ पढ़त मंच बरदाय । चल्यौ पाषान सुरंग कल ॥
घट बद्दै रिति कलिय । दिड्ड आसीस हय सु बल ॥
बर सुंदरि कढ़ि नंघि । और आरंभ सु किन्नौ ॥
जंच मंच बहु जुगति । मंगि फिर बोल सु दिन्नौ ॥
ठट्ठक्यौ सु दुर्गा केदार बर । देव विष्ट नंषे सुमन ॥
जीत्यौ न काय हार्यौ न को । सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना ।

दूहा ॥ बाद विबादन बीर [2]कवि । सत्ति सुभाव सुधीर ॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी । जौ चंद वयट्ठौ नीर ॥ छं० ॥ १४९ ॥

दोनों कवियों की प्रशंसा ।

नीसानी ॥ पुच्छ राह पढ़मष्परां हिंदू तुरकाना ।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना ॥
दोई सास्त्र विचार दो कौरान पुराना ।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना ॥ छं० ॥ १५० ॥
इक्कै पुच्छ विवस्त्र कर इक नीर पपानां ।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां ॥ छं० ॥ १५१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-विरति । (२) मो.-कोइ ।

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ बाद बीर संबाद। [1]रहै मन मझ्झ मनोरथ ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरँग। लग्गयौ कि बान पथ ॥
संझ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उच्चित सु अति। सु कवि दिष्यि ताथें सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्यि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति महिमान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरंग सजि बेग। सक्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सु प्रसंसित कित्ति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करुन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

श्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुत्र प्रपौत्रस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ बर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसन बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

---

(१) ए. कृ. को.-रहेन।
(२) ए. कृ. को.-कूप छांह।
(३) ए. कृ को.-पौत्रस्य।
(४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

*

आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारह सरद करिय॥
आदर अदब्ब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय॥
छं० ॥ १५६ ॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान पग्ग धर॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ बाच वर॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जौ दिज्जै॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै॥
सोमेस सुआन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ॥
छं० ॥ १५७ ॥

दूहा॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस॥ छं० ॥ १५८ ॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय॥
'लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय॥ छं० ॥ १५९ ॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ रह मिल्यौ सहाब॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। इय गय [2]तथ्थ तहाव॥ छं० ॥ १६० ॥

गजनी के गुप्तचर का धर्म्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावनि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "डोढ़ें के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मूल छन्द से बिलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो. सथ्थ।

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्थ बर दूत। रहै ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद बहे सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुबर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥१९१ ॥
अर्द्ध सथ्थ चहुआन। राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी बर साज। सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हार्‌यौ सु [1]निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
धम्मान बोर कग्गद लिष। करो साहि सो सत्ति धुर ॥छं०॥१९२॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय बत्त साहाब। बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंध राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ़न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि बर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रग रत्त पीत डेरा बने। हय गय मीर गँभीर जिय ॥छं०॥१९३॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा॥ बोलि परिग्गह सूर सब। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां षुरसान सु बोलि बर। बर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥१९४॥
कवित्त ॥ कहै षान षुरसान। साहि गोरी परिमानं ॥
बर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ बनि दानं ॥
लहुति लोह लोहार। पग्ग षुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत बर बेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-निव।

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुन्ना कय्यौ ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सुर। करि गोरी आतुर चय्यौ ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय ॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय ॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि ॥
पंच निवाज विकाज। [1]जादू गोरी गुम्मानहि ॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन बत्ता सु गुर ॥
भर सूर सधै बंधै नृपति। कै जीवत गड्ढै सुधर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

दूहा ॥ कय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग ॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच्च वेग ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सौगँध मानि साहाब धरि। ढिल्लीवै चहुआन ॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुन्न बैर सुरतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पय्यौ जानि सायरन अंभ ॥
जल थल थलं न [2]जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस ॥
छं० ॥ १६६ ॥

बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल ॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं० ॥ १७० ॥

सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर ॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज ॥
छं० ॥ १७१ ॥

सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज ॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि ॥
छं० ॥ १७२ ॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

चहुआन सत्त हय दीय उच्च । सामंत अवर समदिय सरुच्च ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्प । अप्पिय सु हेम राजन विलष्प ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ । सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर । धारेव उअर मझ्झे गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति पान । दस पंच हथ्थ उत सुव्विहान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल । मानो कि सुम्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि । बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि । देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर । दिसि दष्पिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब । मीर महुब्बति पान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय । किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाब बयट्ठौ । आयौ महल [3]उम्मरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गा केदारह । दीन असीस बिविधि विद्यारह ॥
मिलि सहाब सादर सम्मानिय । पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय । सम द्रुग्गा केदार ॥
तन बिभूत जट सिंग म्रग । आए दूत सुचार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुवाह तिन चरच वस । काइम साहि सहाब ॥

(१) ए. क. को.-"अति द्रव्य कोर दीनौ सु भाइ"।
(२) मो.-साव। (३) मो.-उमराव।

[1]अग्र बोलि गोरी गरुअ। तब अति दिथ्यौ [2]आव ॥ छं० ॥ १८१ ॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा ॥ आयस दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षवरि विवरि चहुआनं ॥
अरु सामंत सु धीरं। पुछियं प्रीति रीति साहाबं ॥ छं० ॥ १८२ ॥
अरिल्ल ॥ बषत बड़े सुरतान मानि मन। बंधी गास पंग प्रथि मंतन ॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत हूर भर ॥
छं० ॥ १८३ ॥
भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं ॥
भयौ षीन चहुआन मंच दुष। गय पिपास निद्रारु सुधा सुष ॥
छं० ॥ १८४ ॥
चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ हूर सामंत चिंति रजि ॥
क्रीड़त देस मद्धि पंथानह। कंपै असि अरि मत्त पयानह ॥
छं० ॥ १८५ ॥
भरि भंगान पुंडि मौना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर ॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह ॥
छं० ॥ १८६ ॥
रोज तीस मुकाम थयौ थह। उतर्‌यौ आनि मद्धि जलपंथह ॥
बषत समथ साहि साहाब सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि महरनि रन ॥
छं० ॥ १८७ ॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त साहाब चर। दिय निरिघाव निसान ॥
अप्प षान मौरं वरा। कहो सजन सन्नान ॥ छं० ॥ १८८ ॥
कहो षान घुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति ॥
कहो सुचर सुनियै सबै। जुरन याह घर घत्ति ॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) ए. हू. को.-अग बोले। (२) ए.-आव।

अरिल्ल ॥ कीय बत्त पुरसान तत्तारह । आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह । कूच कूच भय सेन सबानह ॥
छं० ॥ १९० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना।

दूहा ॥ अप्प अप्पथह उम्मरा । आय सज्जित सज्ज ॥
चमकि चंड केदार मन । आयौ तात [1]सु तज्ज ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सुनिय बत्त कवि बिबिध बर । पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुद्ध थिर । मलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १९२ ॥
द्रग्ग मत्ति सुत सों कहिय । तुम जानहु चहुआन ॥
पंहिली भट अपराध बहु । माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १९३ ॥
कवित्त ॥ बल मोगर मेवात । राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट । राज बैसास म आनं ॥
करौ बत्त न्रप छित्त । कपट दिष्यौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज । षबरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि ध्रम्म बंध संभरि न्रपति । निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेंन राज श्रीफल उदित । दै कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना।

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन । दरक चढ़ाइय सु बेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम । करहि नरह उद्देग ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा।

कुंडलिया ॥ दिष्प फौज सुरतान कौ । बंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुबर । है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट । सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर । भीर सज्जे बहु षानं ॥

(१) मो.-सुन। (२) मो.-लाज।

तीस लष्य में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्षे ॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्षे ॥ छं० ॥ १९६ ॥

कवित्त ॥ सीर फिरन्ते टारि। दब्ब माऱ्यौ सिंधु तट्टें ॥
सिंधु विहथ्थै वीच। साह पुल बंधन घट्टें ॥
छुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे ॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे ॥
उप्परे हेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे ॥
नीसान हवाई सुंदरी। गज घंटानन डर सजे ॥ छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षवरि सुरतान ॥
कहियो [3]बेगौ सेन सजि। आयौ पंथ चंपान ॥ छं० ॥ १९८ ॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ्यौ चंड कविदास। दमकि उठ्यौ दा सेरक ॥
मनुं वामन किय दृष्ट। क्रम्म चयलोक मने सक ॥
[4]कुसा तिष्प कर कट्टि। अग्र द्रिय वक्र निरष्पै ॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्यै ॥
संचऱ्यौ एम संमीर बर। प्रोथ बात रोद्धौ प्रबल ॥
अध धऱ्यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा ॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत ॥
अनल बेग हक्क्यौ दरक। आयौ पानी पंथ ॥ छं० ॥ २०० ॥

कवित्त ॥ उत्तम निम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम ॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम ॥

---

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-बेगी। (४) ए.-कसा।

सथ्थ सूर सामंत । मत्त षेलत हड्डूअ ॥
.... । .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअइ । [1]इहकि दरक मन वेग तहां ॥
कविदास आय तब जंपि न्रप । करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्यै न्रप दिष्पियौ । गोरी साहि नरिंद ॥
इसम हयग्गह सज्जि कै । दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहबदी सुरतान अब । तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्यै देषौ न्रपति । धरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के बचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना ।

वृद्धभ्रमराबली ॥ सुनियं तब राजन चंड तनं [3]बयनं ।
तब जग्गिय बीरह धीर तनं नयनं ॥
तब सद्दिय सब्बह एक किए अयनं ।
सब सामंत सूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं ।
मुष रत्तह ब्यंबह ओन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भौंह समं षयनं ।
सब आवध सज्जिय भत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तब सज्जि सेन प्रथिराज । मंत सब सामँत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि । काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चौहान । सु थल या अग्गें बेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि बाम । पूर जल किन्न सु केहरि ॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सब । इक्क भाग रष्यौ च.ह्यौ ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्रप । भल भल सब सेना प.ह्यौ ॥छं०॥२०६॥

---

(१) ए. कृ. को.-हक्कि । *यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है ।
(२) ए. कृ. को.-मै । (३) ए. कृ. को.-वनयं । (४) ए. कृ. को.-पय ।

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच वाजिच बाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अन्नी। 'रसं हूर सामंत सा हूर मन्नी ॥
छं० ॥ २०७ ॥
भरं सहस बा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रचियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं ॥
छं० ॥ २०८ ॥
बडं गुज्जरं दून इट्ठा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं ॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार साजं ॥
छं० ॥ २०९ ॥
भए च्यार सामंत सो कर्षि कारं। वियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं ॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं ॥
छं० ॥ २१० ॥
भरं मध्य उद्दिग्ग बाहं पगारं। तिनं मद्धि जद्दौं सु जामानि सारं ॥
सजे मध्य चंदेल भोंहा सु धीरं। तिनं मद्ध लोहान सा बिंझ बीरं ॥
छं० ॥ २११ ॥
चढ़े रष्पिनं दष्पिनं रा पहारं। सहस्संच अट्ठं चढ़े हूर सारं ॥
छं० ॥ २१२ ॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि ॥
दिष्पि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि ॥ छं० ॥ २१३ ॥
गंभीरां सुरतान दल। अति उतंग 'वरजोर ॥
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें। चाहुआन चित घोर ॥ छं० ॥ २१४ ॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीयन चहुआनं ॥
षां मुस्तफा दलेल। पुट्ठि रष्पे गिरवानं ॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-अति।

सजे सेन चतुरंग। दंद दंती बनि घट्टा॥
सुबर बीर सुरतान। बान [1]उब्बरि जल छुट्टा॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर। सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ॥
दोउ दीन आध आवरि सुभर। पग्ग कट्टि पग्गह घुल्यौ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन।

हनूफाल॥ आयो सु सज्जि सहाब। [2]उल्लयौ सायर आब॥
है लष्ष सारध एक। प्रति रचौ फौज विसेक॥ छं० ॥ २१६ ॥
जति अनंत बज्जै बज्ज। गिरधरनि अंबर गज्जि॥
भर सिलह बंधिय बीर। तजि आस जीवन धीर॥ छं० ॥ २१७ ॥
सजि कसे आवध सब्ब। बर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ। बर बेग राह सु घट्ठ॥ छं० ॥ २१८ ॥
करि दौरि आयौ साहि। पंचास कोस [4]पहाहि॥
विच राज जोजन एक। विश्राम सज्जिय सेक॥ छं० ॥ २१९ ॥
तहां सिलह है गै भार। परसंसि पौर भुभार॥
उन्नमिय नेज उतंग। गनि जाइ रुवन रंग॥ छं० ॥ २२० ॥
षुर षेह उड्डिय रेन। आकास मुंदिय तेन॥
गहगही सद्द सु गाह। रन गहर पष्षर पाह॥ छं० ॥ २२१ ॥
बानैति बानै साज। रस बीर धरिय सु गाज॥
भय निजरि दूनिय सेन। भर भीर चिंतिय तेन॥ छं० । २२२ ॥
बज्जंत रन रनतूर। निज भ्रम्म संभरि सूर॥
जब देषि हिंदु उतारि। उच्चय्यौ षान ततार॥ छं० ॥ २२३ ।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना।

दूहा॥ कहि ततार साहाब सौं। किय दल हिंदु उतार॥
हम उत्तरियै मीर सब। तुम रहौ पुट्ठि साधार॥ छं० ॥ २२४ ॥

(१) मो.-उच्चरि। (२) ए. कृ. को.-उद्धय्यो।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब। (४) ए. कृ. को.-पहाड़।

कवित्त ॥ लष्प एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अड्ड लष्प दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुभ्भर ॥
कुल अरेह अस्सीस । बोलि पित पिच नाम नर ॥
अग्गै सु भार हथनारि धरि । बानग्गौर बानेत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि बीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हथनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरपंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जे वि सुभ्भर देवि ईसर आय गंधव किन्नरं ॥
नारह नद्दह मंडि मद्दह इष्पि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्या सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्के दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सौस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
बहि ओन पूरह कल करूरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बितालि तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमकि डोंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै धाक धाहै झाक आवध ओझरं ॥

(१) नो.-पदि नीर। (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि।

विनयमंगल

(छियालिसवां समय।)

जरज ऋषि तो रम्भारूपधारिणी रंभा को शाप देकर हरद्वार को चला गया। इधर उसका शिष्य सुमन्त शान्ति रस रत्त होकर पुनः तपस्या में प्रवृत्त हुआ।

आनंन्द संवत् ११४४ में जब कि राजा जैचन्द ने राजसूययज्ञ करने का विचार किया तब संयोगिता की अवस्था १२ वर्ष की थी अर्थात् उसका जन्म संवत् ११३३ [२] में हुआ था। वह पूर्ण चन्द्रमा के समान निर्मल दीप्तमान मुखारविन्दवाली कुलच्छनों से हीन सुन्दर सुलच्छनों से लच्छित लच्मी समान शीलवती बाला दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। उसका राजसी के बत्तीसो लच्चण युत स्वाभाविक सौन्दर्य मानो मक्रकेतु की रंगशाला थी और उसके नित नव उन्नत उरोज उस रंग शाला के छतरी गोख कलसा कमानी आदि के समान थे, उसका सुन्दर स्वरूप उस रंगशाला की चित्रसारी और छवि का लावण्य साक्षात दीपक की द्युति के समान था। वह अपनी समवयस्का सहेलियों में तारा गणों के बीच चन्द्रमा सी सुशोभित होती थी।

सुना सारो से बोला कि छत्रधारियों के समस्त सुलच्छणों सयुत कुमारी संयोगिता सुलतान शहाबुद्दीन को बन्दी करने वाले चहुआन पृथ्वीराज के साथ व्याही जावेगी। जैचन्द उसी के लिये यज्ञ करेगा, उसी के लिये द्वापर में रुक्मिणी विवाह के समान इस समय सहस्त्रों छत्रधारियों का क्षय होगा और अन्त में इसके पति और पिता दोनों का वैभव भी भ्रष्ट होगा।

संयोगिता शैशव काल से ही पिता की बड़ी लाड़िली थी आठ प्रहर चौसठ घडी सदैव पिता के पास रहती और तोतरी बातें कह कह कर उसका चित्त प्रसन्न किया करती थी। संयोगिता ऐसे दुलार के कारण हठी स्वभाव की हो गई जिस का अन्त में अत्यन्त घोरतर परिणाम हुआ निदान शुक्ल पच्च पच्चमी रविवार को संयोगिता के विद्याध्ययन के आरम्भ का सुदिन विचारा गया। उसकी छोटी बहिन तारा भी उसी के साथ पढ़ने बैठी और उसी के साथ साथ छाया के समान विद्याध्ययन में उसकी अनुगामिनी बनी।

जिस समय संयोगिता साधुवस्त्र पहिना कर पाठिका के पास लाई गई उस समय यद्यपि वह लज्जित सी होती थी परन्तु वास्तव में उन वस्त्रों से वह योगिनी नहीं मालूम होती थी वरन वे योगी आवरण उसकी सुशोभा में और भी अच्छे लगते थे। पाठिका के पास आकर उसने जब सोलहों शृगार बारहों आभूषणों से सुसज्जित होकर अध्यन आरम्भ किया उस समय उसकी ऐसी शोभा होती थी जैसे सहस्रों कामदेव इस स्त्री के स्वरूप मे प्रकाशित हो रहें हों। पाठिका मदन ब्राह्मणी का पति राजकुमारी के हाव भाव लच्चणों को देख कर ताड़ गया कि इसका भविष्य होनहार ऐसा होगा। संयोगवश एक दिन ब्राह्मणी ने अपने पति से पूछा कि आप ने इस राजकुमारी के विषय में क्या गणित विचारा

(१) आनन्द सवत् का विवरण पहिले समय के ११६ पृष्ठ में देखो।

(२) 'ग्यारह से च्यालीस चव पंग राज सूमडि। वर पंचमि ससि तीय मह जनम सजोग विखड"। छः ४ 'आगे" पूरन बाल षटविध वरख नेव मास दिन पंच वर। इसमें संयोगिता के जन्म सवत् का संकेत किया गया है। पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन ने सवत् ११५६ में पकड़ा इसी समय संयोगिता का शरीरान्त हुआ। इस हिसाब से ४४ और बारह छप्पन होते हैं। यदि चौरालीस के इस तरफ देखिये तो ३२ और बारह ४४ होते हैं परन्तु इधर नव मास अधिक हैं इस लिये इधर ३३ का हिसाब रक्खा है। साथ ही इसके यह भी बात है कि मेरे चचा कुँवर रघुनाथसिंह जी जो कि ऐतिहासिकविषयों का अच्छाज्ञान रखते थे मुझे बाल्यावस्था में इसी रासो के सम्बन्ध की कथा कहनी सुनाया करते थे जो बातें जैसी उन्होंने मुझे आज से १६ या १७ वर्ष पहिले बताई थी आज रासो मे मैं उनको यथाक्रम वैसा ही पाता हूं अत एव उन्होंने मुझे संयोगिता का १८ वर्ष की उमर में ब्याह होना और २४ वर्ष की अवस्था मे उसका देहान्त होना बतलाया था। सो यह हिसाब भी ठीक पड़ता है — तीसरी बात यह है कि कवि ने इस कथा के सबध में कथा समय सब सवत दिए हैं परन्तु कन्नौज समय पर्य्यन्त संयोगिता के जन्म का और कहीं भी पता नहीं पड़ता।

है सो कहिए। तब ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि यह राजकुमारी अगनित छत्रधारियों की छत्र भंग कारिणी उनके रुधिर की प्यासी साक्षात् कंकाली स्वरुप कलहतर नाम से प्रसिद्ध होगी। यह कन्या स्वर्ग की अप्सरी का अवतार है और मै एक यज्ञ हूं जो कि इसके भविष्य होनहार का अकुर सपच्च करने के लिये अवतीर्ण हुआ हू। राजा पग के यज्ञ के समय से ही ऐसे सब सामान एकत्रित होंगे और उनका परिणाम भी शीघ्रही देख पडेगा।

जिस समय सयोगिता मदन ब्राह्मणी के यहां पढ़ने गई उस समय वह अपनी आयु के तेरहवें साल में थी। पाठिका के भवन में एक सुन्दर हिडोला घला हुआ था। जिस समय सयोगिता उस पर बैठ कर झूलती और पृथ्वी पर पदाघात करके मिचकी मारती उस समय उसके सुकोमल लंबे बालों से गुंथी वेनी उसके पीन नितंब स्थलों को स्पर्श करती हुई ऐसी सुशोभित होती थी मानो उसका यौवन काल जान कर उसके जीवन की बागडोर कामदेव अपने करो से साध रहा हो। सयोगिता की एक बड़ी बहिन और थी जिसे जैचन्द ने दक्षिण के राजा देवग्रह को व्याहा था। पाठिका ने उसे विनय मंगल पाठ पढाया था इसलिये वह सुशील कुमारी अपने पति और पिता दोनों की प्यारी बन कर जीवन बिताती थी। निदान पाठिका ने सयोगिता का भी यौवन काल जान कर उसे विनय मगल पाठ पढ़ाना उचित समझा। पाठिका जिस विनय मंगल पाठ को सयोगिता को पढ़ाती थी उस का यह तात्पर्य्य है कि उसे पढ कर स्त्री सुलक्षणा बने और मुग्धा और प्रौढा इन अवस्थाओं मे भी नवोढ़ा की भांति पति की प्यारी बनी रहे।

पाठिका ने सयोगिता से कहा कि हे सुकुमारी कुमारी. स्त्री को चाहिए कि प्रातःकालही शैय्या से उठ कर अपने पति के मुख का दर्शन करे और फिर प्रीति पूर्व्वक उसके पैर छूकर अपनी तुच्छता प्रगट करती हुई विनय पूर्व्वक उसकी स्तुति करे और दर्पण हाथ में लेकर अपना मुँह देखे। पुनः शौचादि से निश्चिन्त हो अपना नखशिख सँवारकर नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन परिपाक करके पति के सम्मुख परोसे और उसे ही अपना इष्टदेव एवं सर्वस्व जानकर प्रीतिवूर्व्वक जिमावे तिसके पश्चात् रुचिर वस्त्र और आभूषणों को धारण करके अधीनता पूर्व्वक सदा पति की आज्ञा पालन करने को प्रस्तुत रहे। हे कुमारी! कोई स्त्री कैसीही स्वरूपवती क्यों न हो परन्तु जो हठ कर पति के प्रति मान ठानती है उसे उसका पति तुरन्त ही त्याग देता है। इस लिये दूतियों के प्रपंच में पड़कर पति से कलह और मान न करे और आत्मेच्छा की सिद्धि के लिये धैर्य्यपूर्व्वक तन मन से सदा पति की अनुगामिनी बनी रहे। स्त्री को चाहिए कि अपने तन, मन, धन, हृदय, प्राण, गेह, नेह, देह, सुख, दुख, कीर्ति, धैर्य्य, जप, तप, आदि सब का स्वामी अपने स्वामी ही को समझे। हे कुमारी! जो कुछ मै तुझ से कहती हूं सो निपट ही सत्य जानो। बात केवल इतनी ही है कि विषय कोई हो उसका गुण ग्राहक होना चाहिए जैसे पवन हिम को स्पर्श करने से शीतल और चन्दन को स्पर्श करने से सुगधित होती है वैसे ही शास्त्र का भी बुद्धिमान पर अच्छा और मूर्ख पर बुरा प्रभाव पडता है। हे कुमारी जैसे युक्ति के बिना शुभ, शिव की भक्ति के बिना सासारिक सुख और हरि की भक्ति के बिना मोक्ष नहीं मिलती, वैसेही स्नेहहीन स्त्री का जन्म वृथा है। जल बिना उज्वलता नहीं होती, ज्ञान के बिना निर्वाण पद नहीं मिलता, सुकर्म के बिना कीर्ति नहीं होती, हथियार के जोर बिना भूमि भोग करने को नहीं मिलती और माता के बिना सच्चे वात्सल्य प्यार की प्राप्ति नहीं होती, उसी प्रकार विनय बुद्धि के बिना जीवन का सुख नही मिलता। हे राजकुमारी, मान (अभिमान) बुरा है। मान से परस्पर का स्नेह भग होता है, सज्जन भी दुर्जन से देख पड़ने लगते हैं, और जुड़ा हुआ नाता टूट जाता है। मान से आत्मिक गुणों का ह्रास होता है इस लिये मान इस जीवन मे मदिरा के समान मंद माना

गया है। मान ही जीवन के दुःखों का मूल है सो हे कुमारी तू मान को सर्वथा त्याग कर शील सम्पन्न स्वभाव वाली सुशीला बन। हे कुमारी! जिस प्रकार क्षणमात्र पाला पड़ने से बड़े बड़े गहवर बन एक दम मुरझा जाते है उसी प्रकार विनय के आग्रह से मान जनित अमंगलमूलक विषय नष्ट हो जाते हैं।

हे सुन्दरी संयोगिता, विनय सब भांति सब के लिये कल्याणकारी है। विनय में कदापि कोई दोष नहीं है। विनय द्वारा ही योगीश्वर ईश्वर से मुक्ति पाते हैं—यद्यपि मानमय विनयहीन पक्षी जाति विनयशील वृक्षों के फल फूल खाते और उनके कोमल पल्लवों को कुतर डालते हैं, परन्तु विनयशील वृक्ष पक्षियों के इस अपकार पर जरा भी ध्यान न देकर उनका पालन ही किया करते हैं। विनय से देवता वर देता है। विनय से गुरू विद्या पढ़ाता है। विनय से स्वामी सेवक पर प्रसन्न रहता है। विनय से कंजूस भी दाता बनजाता है और इसी विनय के कारण कंत कामिनी के हृदय का हार होता है, इस लिये हे कुमारी करतार स्वरूप विनय ही संसार का सार है। इसलिये वयः वृद्धि के साथ साथ विनय के भार से अपने को नित नव नम्र बनानाही उचित है। चतुरता से विनय वाक्य उच्चारण करने पर सार हीन हृदय का भी द्रवकर कामनामय होना संभव है। कामाग्नि-संतप्त-हृदय कंत को कामिनी यदि कुछ कटु बचन कह भी डाले तो वह उसकी उस समय कुछ भी परवाह नहीं करता, उसे वे बचन दूध शक्कर से मधुर मालूम होते हैं। परन्तु भूलकर ऐसे समय पर भी विनय की बान न त्यागनी चाहिए। क्या जाने कामाग्नि शान्ति होने पर कभी वह मधुरता उसके क्रोध को उत्तेजना देने वाली हो—देखो! किसी समय दो बहिने थी उनमें से एक बड़ी विनयशील और दूसरी मानिनी थी। सो हे कुमारी विनयशील सुन्दरी का तो सारा जन्म आनन्द से बीता और मानिनी ने न तो जीवित सुख पाया न मरने पर भी। क्यों कि अन्तिम समय में जैसी मति होती है मरने के बाद वही भोग भोगना पड़ता है, इस लिये उसको अनेकों जन्म पशु पक्षियों की योनि भोगनी पड़ी थी। हे बेटी जीवन में विनय घर में दीपक के समान है। जिस प्रकार दीपक बिना घर, प्राण बिना देह, प्रतिमा बिना देवालय, कंत बिना कामिनी और लज्जा बिना राजपूत जाति का जीवन सूना है एवं जैसे बुद्धि बिना उपभोग का यथार्थ आनन्द नहीं मिलता, बेद की विद्वत्ता बिना ब्राह्मण ब्राह्मण ही नहीं है, बहरे के लिये सतुकीर्ति का होना न होना बराबर है उसी प्रकार विनय के बिना स्त्री का जन्म वृथा है क्यों कि विनयहीन स्त्री का स्वामी उससे सदा अप्रसन्न होकर उसे दुःख दिया करता है। इस लिये तू इस विनय मगल के मर्म को समझकर इसके अनुसार आचरण करने की चेष्टा कर।

जैसे बेद और वैदिक ग्रन्थों में कथित अनुपम गुणमय औषधिया चन्द्रमा से पोषित हुए बिना सब बेकाम हैं वैसे ही हे सर्वांग सुन्दरी विनय हीन होने से समाज में तू भी शोभा नहीं पा सकती। स्त्रियों की शोभा शृंगार नहीं है वरन सच्ची शोभा लज्जाशीलता है।

हे कुमारी, विनय ही संसार का सार है, क्यों कि यह सब जगत विनय के सूत्र से बंधा हुआ है। विनय ही काल का काल है और संसार में सच्ची शूरता है, विनय के बिना संसार में सुख की आशा न करे क्योंकि विनयविहीन पुरुष के सब शत्रु होते है। राजनीति की चारो शाखाओं का स्तंभ विनय ही है। हे सुन्दरी विनय के बिना सब सुख सपने की सपत्ति होते हैं। विनयशील पुरुष से आबाल वृद्ध सब प्रसन्न रहते हैं, इसलिये जिसमें जितना जितना विनय का अंश बढ़ता जाता है वह उतना ही सर्वप्रिय होता जाता है। विनय संसार सागर से पार उतरने के लिये नौका और साक्षात् मोक्ष का मार्ग स्वरूप है। विनय बिना वैराग्य या भक्ति किसी की भी साधना नहीं हो सकती। विनय से निर्गुण गुणवान और औगुणी सद्गुणसम्पन्न होता है। विनयहीन मनुष्य का जीवन ऐसा है जैसे प्रत्यंचा बिना धनुष और सुमेर या गुम्बद बिना देवालय

इसलिये यदि तू जीवन का सुख चाहती है तो विनय को धारण कर। विनयशील पुरुष तीनों पन में एक सा सुखी रहता है। विनय इस प्रकार सार है जैसे जीव का सार आत्मा है। जैसे जीवहीन शरीर बेकाम होता है वैसे ही विनय बिना स्नेह का निर्वाह होना असंभव है। विनय द्वारा जिसे तू अपने को आप अपना देगी वह फिर आपही तेरा हो रहेगा। इस प्रकार हे संयोगिता, विनय द्वारा दो तन एक प्राण किए जा सकते हैं।

हे संयोगिता, विनय का यही लक्षण है कि जिससे पति वस हो। स्त्री पति से नजर न मिलावे। विषय सुख का त्याग करे और जिससे देव तक वशीभूत हो वही विनय है। इस विनय के कारण तेरा प्रताप दूज के चन्द्रमा की भाँति दिन प्रति बढ़ेगा।

संयोगिता ने प्रश्न किया कि कंत किस प्रकार वश किया जा सकता है तब पाठिका बोली, हे बाले! "विनय से"। ज्यों ज्यो विनय का अभ्यास बढ़ता जायगा! त्यों त्यों दाम्पत्य सुख बढ़ता जायगा। जो विनय रूपी जल से सींच कर स्नेह की बेल बढ़ाता है उससे अमृत रूपी फल उत्पन्न होता है इस लिये उसका सदा आदर बढ़ता जायगा। हे सुन्दरी! विनय के बिना एक स्त्री जाति क्या संसार में किसी भी योनि में सुख प्राप्त नहीं हो सकता। हे सुन्दरी, यदि मंत्र भी न मालूम हो तो अच्छा सर्प विनय से वश हो जाता है। विनय से सुयश मिलता है। विनय से सुख और भोग रस मिलते हैं। विनय ही रस खानि और विनयशील आचरण अमृत के समान हैं यदि पति मानमय हो और स्त्री आधी रात के समय विनय पूर्व्वक विनती करे तो अवश्य है कि वह मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिये का हार बन जावे। हे सहज सुन्दरी संयोगिता, इस विनय मंगल को गांठ बाँध रख, इससे तुझे जीवन के सब सुख सहज ही प्राप्त होंगे। हे सुन्दरी इस सिखावन के मर्म विनयविहीन पुरुष नहीं जान सकते क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि प्रसव की पीड़ा को बांझ क्या जाने।

मदन ब्राह्मणी के आंगन में जो एक सुन्दर वृक्ष था उसी पर वे उक्त सुवा सारो (गंधर्व गंधर्वी) बैठे संयोगिता का सब चरित्र देखते रहे। एक दिन सायंकाल के समय ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा कि कोई ऐसी वार्ता करो जिसमें रात्रि कटे और कुछ काम भी सरे। तब ब्राह्मण बोला कि इस संयोगिता के योग्य नर संभरीनाथ चहुआन राजा पृथ्वीराजा ही है। यों कह कर वह पृथ्वीराज के यश गुण और बल पराक्रम का वर्णन करने लगा। इसी प्रकार होते होते प्रातःकाल हो गया और तब सुवा सारो वहां से उड़ कर दिल्ली की तरफ चल दिए।



सुक वर्णन।

(सैंतालीसवां समय।)

पाठिका के सुशिक्षित आँगन में सखी सहेलियों सहित पढ़ती हुई कुमारी संयोगिता इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारागणों के समूह में जुन्हैया की छवि छटा छाती है। लड़कपन में तो अपनी ही स्वाभाविक स्वछन्दता का आनन्द होता है परन्तु "जवानी में काम क्रीड़ा का आनन्द विशेष माना गया है"। संयोगिता के कानों को स्पर्श करते हुए बड़े बड़े नेत्र ऐसे सुशोभित होते थे मानों वे कानों के पास जाकर उक्त वाक्य के मर्म को पूछ रहे हों कि क्यों क्या यह बात सच है?।

इधर जैचन्द के यहां यज्ञ के लिये सामग्री जुटाई जाने लगी और जहा तहा होम जप जाप पूजन आदि आरम्भ हुआ। निदान तब वे दोनों सुवा सारो वेषधारी गन्धर्व उस वृच से उड़ कर दिल्ली की तरफ चले। कुछ दूर जाकर सुवा ने तो ब्राह्मण का वेष धारण कर दिल्ली का मार्ग लिया और सारो ब्राह्मणी का स्वरूप धारण कर संयोगिता के पास पहुची।

ब्राह्मण ने पृथ्वाराज से कहा कि हे संभरीनाथ हम तीनों लोक में आ जा सकते हैं, परन्तु मदन ब्राह्मणी के घर में पढ़ती हुई राजा जेचन्द की पुत्री का जैसा सौन्दर्य्य मैंने देखा वैसा और कहीं नहीं देखने में आया। उसके साथ में बारह कन्याएँ और भी पढ़ती हैं परन्तु वह सब के बीच में इस प्रकार सुशोभित होती है जैसे तारागणों में चन्द्रमा की शोभा होती है। वह रम्भा अप्सरी का अवतार है। रंभा ने परम तेजस्वी सुमंत ऋषि का तप भ्रष्ट करने की चेष्टा की इसलिये सुमन्त के पिता ने उसे शाप दिया जिससे उसे मानव शरीर धारण करना पड़ा। इस समय उसका महल गंगा के किनारे सुशोभित है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने गुरुराम से कहा कि उसका जन्म समय शोध कर एक जन्मपत्री लिखो। गुरुराम ने छः महीने के बाद जन्म कुंण्डली रच कर तय्यार की, उसमें उन्होंने दिखलाया कि मंगल, बुध, गुरू शुक्र शनि और चन्द्रमा ये ग्रह चौथे स्थान में गोचर पड़े है। गुरू और केतु केन्द्री और राहु अष्टम हैं। इसका फल यह बतलाया कि वह अत्यन्त सुन्दरी है, उसके कारण भारी संग्राम होगा और वह आप (संभरीनाथ) को व्याही जायगी। जन्म से पांचवें राहु और केतु का होना यह बतलाता है कि उसका जन्म विशेषतः रक्तपात के लिये ही हुआ है।

उधर ब्राह्मणी पाठिका विनय मंगल समाप्त करके संयोगिता को पृथ्वीराज का इतिहास पढ़ाने लगी। उसने कहा—"दिल्ली में अनंगपाल नामक तोमर वंशी राजा राज्य करता था। जब उसकी अवस्था ७७ वर्ष की हुई तो उसने, वैराग्य उत्पन्न होने के कारण, अपना राजपाट अपने दौहित्र अजमेर के राजा सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज को दे दिया और आप तपस्या करने के लिये बदरिकाश्रम को चला गया। यद्यपि पृथ्वीराज को गोद लेते समय अनंगपाल को उसके मंत्रियों ने अपना सा समझाया बुझाया और मना किया परन्तु उसने एक न माना। अन्त में परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य के सिंहासन पर बैठ कर अपना-पराया करके शासन करने लगा जिससे दिल्ली की प्रजा का दिल दुख गया और सब प्रतिष्ठित प्रजा ने अनंगपाल के पास जा पुकारा। यह सुनकर अनंगपाल स्वयं दिल्ली को आया। इससे पृथ्वीराज बड़े शिष्टाचार से मिला। अनंगपाल ने दिल्ली में कुछ दिन मिहमान की भांति रह कर पुनः बदरिकाश्रम का रास्ता लिया और यहां पृथ्वीराज राज्य करने लगा। वह बलवान पृथ्वीराज इस समय पृथ्वीतल के राजाओं में अद्वितीय बलशाली और सुकीर्तिमान पुरुष है। इस समय पृथ्वी पर उसका यश शरद ऋतु का सा चटक चादना फैल रहा है।

इधर ब्राह्मण बोला कि उस चन्दबदनी, मृगलोचनी बाला के उज्वल ललाट पर श्याम भ्रू भाग

ऐसा भासित होतो है मानो गंगधारा में भुजंग तैर रहे हों। उसकी कीर ऐसी नासिका, अनार के दाने से दाँत, पतली सी कमर, श्रीफल से उरोज और चंपा के समान सुन्दर अग रंग अजब ही छटा छाते हैं। सो ऐसी सुन्दरी संयोगिता हे पृथ्वराज आपको पति पाने की इच्छा से दिन रात शिव जी की आराधना किया करती है। हे पृथ्वीनाथ उस कुमारी के शरीर से शैशव के ह्रास और यौवन के प्रकाश की इस प्रकार शोभा हो रही है जैसे बसंत ऋतु में पुराने पत्ते झरने और नवीन कोंपों के कोपने से बन की शोभा होती है। उसकी अग आभा इस समय ऐसी सुन्दर मालूम देती है जैसे गोधूली वेला का राकापति। जैसे मकर की सक्रांति से दिन बढ़ कर रात्रि को दबाने लगता है, पावस ऋतु में बढ़ी हुई नदियों का जल समुद्र के हृदय में हल-चल मचाने लगता है तैसे ही सयोगिता का यौवन उसके बालपन को परास्त कर रहा है। इस समय संयोगिता की शरीर छवि शीतकाल की दुपहरी हो रही है जिसमें कवि घाम और छाँह दोनों का आनन्द पाने की इच्छा करते है। सच तो यों है कि उसके स्वभाव में अब लड़कपन की झलक केवल परिवा के चन्द्रमा के समान बिलकुल सूक्ष्म शेष रह गई है। हे राजन् वह सर्वाङ्ग सुन्दरी सयोगिता इस समय वसत ऋतु की फुलवारी बन रही है। जैसे वसन्त के आगम में दिन में कुछ पक्कापन आने लगता है वैसेही संयोगिता कुछ सकोच सहित प्रति दिन निडर होती जाती है। उसका मधुर अलाप मधुकर सा सोहता है बसन्त ऋतु में जैसे शीतल सुगध वायु मंद मद बहती है वैसे ही उस के चित्त में लज्जा की मात्रा बढ़ती जाती है। जैसे वसन्त में पत्र रहित तरुवृन्द नव पुष्प और फल के भार से नीचे होने लगते है वैसेही यौवन के जोर से उसकी सब बातों में भारीपन का आभास आता जाता है। उसके सुढार उदर पर रोमराजि काम किसान की बोई हुई जई सी जम रही है। हे राजन्! इसी समय जैचन्द ने यज्ञ करने के लिये आकाश और पाताल को मंत्र बल से और शेष आठों दिशाओं को मुसल्मान सिपाहियों के बल से जीतने की इच्छा की है। जैचन्द की एक पुत्री और भी थी जिसे उसने देवगढ के राजा को व्याहा है। वह भी अद्वितीय सुन्दरी है।

परन्तु सयोगिता संयोगिता ही है। उसका अंग रंग श्रीखंड पंकज एवं कुमकुम के समान सलौना है। उसकी पिंडुरी स्वर्ण की बुराद सी झलकती हैं। और जंघा तो कदली खभ एवं हाथी के भसुंड की सुढारता को मात करते हैं, उसकी अँगुरियों का अग्रभाग कनेर की सी कली जान पड़ता है। उसके अर्द्ध तुंवाकार पीन नितब, मुट्ठीभर चीते की सी कमर, उस पर सरती हुई सर्पिणी सी वेणी, राजीव लोचन, पपीलका की पलटन सी रोमराजि, हस शिशु एवं मदान्ध गज की सी चाल, नारंगी से युगुल यौवन, त्रिवलीयुत कलकंठ, बिंब फल से अरुण ओंठ, वायु विहित दीप शिखा सी नासिका, खजन मद गंजन स्वेत कमल से पैने नैन, स्वर्ण के खम्भ पर चढते हुए सर्प ऐसी वेणी आदि उसके सब अवयव देखने ही योग्य है। यह सुनते ही पृथ्वीराज का चित्त रागमय होकर संयोगिता के सच्चे अनुराग में रंग गया। संयोगिता के सौन्दर्य्य का खाका पृथ्वीराज के चित्त में इस प्रकार गाढ़ होकर खचित हुआ कि उसे अपने सब व्यवसाय भूल गए। उसे सोते जागते चारो तरफ संयोगिता की प्रतिमूर्ति देख पड़ने लगी। उसने अत्यंत विकल होकर ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम कृपा करके संयोगिता को मेरी ओर से प्रबोध करो तो मै तुम्हे असंख्य धन, द्रव्य पुरुष्कार दू।

पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर वह ब्राह्मण (गर्ग) दिल्ली से चलता हुआ और कन्नौज पहुच कर मदन पाठिका के घर जा उपस्थित हुआ। वह वहा सुवा बनकर आपही आप पृथ्वीराज का गुण गान करने लगा। "पृथ्वीराज" शब्द कान में पड़ते ही संयोगिता ने ऊपर आख उठाकर देखा और कहा "तुम कौन हो और यहा किस लिये आए?"।

यह सुन कर सुवा बोला एक राजा पृथ्वीराज है। इस समय वह अद्वितीय वीर्य्यमान और बलवान पुरुष है। उसने कई बार यवन बादशाह को बन्दी किया। वह अर्जुन के समान अचूक धनुर्धर है। चन्द्रमा के समान तेजवान और एक बाण से सात तवे फोड़ता है। वह राजा बलि के समान स्वरूपवान गुणवान और लज्जाशील है। धर्म्मराज की तरह सद्वक्ता, अर्जुन के समान धनुर्धर, दुर्योधन की तरह मानी, सूर्य्य के समान तेजवान, चन्द्रमा के समान सुखद, सत्य और विक्रम में विक्रमादित्य के समान, दान, सम्मान में इन्द्र एवं कल्पतरु के समान और काम क्रीड़ा में रमावल्लभ लक्ष्मीनारायण के समान शक्तिमान है। सुवा सारो की ऐसा वार्तालाप सुन कर संयोगिता के चित्त का चाव चौगुना हो गया। उसे चारों तरफ पृथ्वीराज की प्रतिमूर्ति भासित होने लगी और वह उस चमत्कृत चिन्ता में स्वय चित्र की पूतरी सी बन गई।

सुग्गा फिर बोला। क्या कहू पृथ्वीराज पृथ्वीराज ही है। उसके एक एक गुण मे सादृश्य पाने योग्य बहुत से राजा हो गए है परन्तु सर्वथा उसकी समानता का न तो कोई आजलों हुआ है और न होगा। वह शोकाब्द राजाओ में विक्रम के समान, सत्त में राम के समान, बाहुबल में सहस्राबाहु के समान, चन्द्रमा के समाम शीतल, हरिश्चन्द के समान सत्यव्रत धारी और युद्ध कौशल मे भीष्म के समान वह दैत्यवंशी वीर इस भूतल पर इन्द्र के समान उपमान पाने योग्य है, इत्यादि मैं उसकी किससे उपमा दूं? यह कह कर दोनों ओर परस्पर अनुराग का बीज बोकर सुवा सारो दोनो देव लोक को चल दिए।

जैसे सीता ने राम के लिये, दमयन्ती ने नल के लिये, पार्वती ने शिव के लिये, रुक्मिणी ने कृष्ण के लिये एवं जिस प्रकार काली ने वीर बाहन के लिये व्रत धारण किया था उसी प्रकार संयोगिता ने पृथ्वीराज के लिये ध्रुव व्रत धारण किया। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि एक इस जन्म में क्या यदि दूसरा अवतार भी धारण करूं तो भी पृथ्वीराज के सिवाय अन्य पुरुष को पति न स्वीकार करूंगी। इसी प्रकार अहर्निशि पृथ्वीराज के गुणों का चिंतवन करती हुई संयोगिता दिनप्रति प्रीति के रंग में रँगने लगी।

इधर बसन्त ऋतु के प्रथम चरण माधव मास के प्रारम्भ होते ही पृथ्वीराज का चित चाव चौगुना हो गया। ज्यों ज्यों वृक्ष प्राचीन पत्रों से रहित होकर नई नई केड़े फोड़ते, नई नई बेलों में फूल फूलते और उनके पराग से दिशाएँ सुगंधित होतीं, पुष्प गुच्छों पर भ्रमर पुज छत्राकार आच्छादित होते, कोयल कूकतीं एवं अन्य पक्षी गण कलरव करते, सुहागिनी सुखसेज पर मौज मारती और विरहिनी बेहाल होती, त्यों त्यों पृथ्वीराज के हृदय मे संयोगिता के प्रेम रूपी सर्प की विष ज्वाला अधिक अधिक प्राप्त होने लगी। निदान एक दिन पृथ्वीराज एक प्रहर रात्रि गए महलों से निकल कर अकेले जमुना के किनारे विचरने लगा। कुछ दूर जाकर देखता क्या है कि एक अति उत्तम बाग बना हुआ है जगह जगह सुन्दर वृक्षों के कुंज फूल और फलो के भार से नैकर जमीन को छू रहे है, उनके आस पास झूमते हुए रसलोभी भौरे उनके गुण गान कर कर अपने उदर को पोषण करने की चेष्टा करते है। चबच्चों में निर्मल जल भरा हुआ है और उनपर धानी रंग का छत्र तना हुआ है जिस पर नाना प्रकार के बेल बूटे गोख झाकी झरोखे बनाती हुई बेलें आच्छादित है। यह देख कर पृथ्वीराज ने घोड़े को एड़ लगाई और घोड़ा एक टपकार में कोट लाँघ कर बगीचे में जा दाखिल हुआ। इनके घोड़े की टाप सुनकर बगीचे का रक्षक प्रहरी इनके साम्हने आया। इधर पृथ्वीराज ने भी अपनी पचीस-टंकी कमान पर बाण चढ़ाया। तबतक एक यक्ष और यक्षनी टहलते हुए वहीं से आ निकले। यक्ष ने पृथ्वीराज से कहा "तुम किसी वृक्ष के नीचे छिपे छिपे तमाशा देखो। मालूम होता है तुम कोई प्रतापी राजा हो।"

(१) वे राजा जिनका संवत् प्रचलित हुआ हो।

यह कह कर यच्च यच्चिनी तो आगे चले। इधर पृथ्वीराज ने अपने सेवकों को आज्ञा देकर उस बाग में समस्त सुख सामग्री प्रस्तुत करवाई। हुक्म होते ही केसर कस्तूरी चूना पान पानी शरबत केतकी कमल केवड़ा कुसुम मालती जाती चंपक पांडरी आदि के पुष्प और अतर दाड़िम दाख केला अखरोट नासपाती अनार नरियर पिंडखजूर बिजौर आदि फल और घी दूध शक्कर युक्त अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवान बात की बात मे लाकर तय्यार किए गए। थोडी देर में एक गंधर्व अपनी नाटक मंडली सहित उसी बाग में आ उपस्थित हुआ। पहिले तो सब गंधर्व मडली ने कुंकुम युक्त सुगंध मय शीतल जल से मुख प्रच्छालन कर पान बीड़े चबाए बाद इसके अपने अपने साज सम्हाल कर गान नृत्य सहित नाटक आरम्भ किया। नाटक समाप्त होने पर सब मंडली ने प्रस्तुत भोज्य पदार्थ का भोग लगाया। खा पी कर दुरुस्त होने पर उस गंधर्व राज ने कहा "अहा आज यह सत्कार किसने किया है" तब वह यच्च बोला कि यह सब सोमेश्वर के पुत्र राजा पृथ्वीराज की तरफ़ से है। निदान उस गंधर्व ने पृथ्वीराज को सम्मुख आने की आज्ञा दी और जब पृथ्वीराज उसके सम्मुख गए तो उसने उन्हें एक सर्वसिद्धि मंत्र दिया और शीस स्पर्श कर प्रीति पूर्व्वक आशीर्वाद देकर बिदा किया।

बालुकाराय प्रस्ताव।

[अड़तालीसवां समय।]

राजसूय यज्ञ में छोटे से लेकर बड़े तक सब काम राजा लोग करते हैं। इस लिये देश देश के राजाओं को एकत्रित करने के लिये जगह जगह को बुलावे के परवाने और सेनाएं भेजी गई। इधर कन्नौज के राज्यमहल में आगन्तुकों के सत्कार और दान पूजन आदि के लिये नाना भांति की सामग्री जुटाई जाने लगी। एक लाख भार स्वर्ण, साठ भार मोती, एक करोड़ भार चांदी, असंख्य भार अन्य धातुएं, अगणित हाथी घोड़े, कपूर केशर कस्तूरी अगर अम्बर आदि सुगंधिया, जरकसी और पाटाम्बर के अमूल्य वस्त्र और और भी कई प्रकार की अगणित आडम्बर की वस्तुएं संग्रहीत की गई और राज्यग्रह के प्रशस्त आगन में विविध भांति से यज्ञमंडप की रचना की जाने लगी।

तबतक चारों तरफ से दूत भी लौट लौट कर समाचार देने लगे कि हे राजन् भारतवर्ष के क्या हिन्दू क्या मुसल्मान सब राजाओं ने आपका आदेश शिरोधार्य्य किया है। यह सुन कर जैचन्द की चर्चा चढ़ गई। वह मंत्री से बोला कि अब ऐसा प्रबन्ध करो जिसमें मेरी कीर्ति किसी प्रकार से कलंकित न हो सके। मैंने मंत्र बल से आकाश और पाताल के देवताओं को जीता है और शस्त्र बल से दशों दिशाओं के दिग्पालों को। इस समय पृथ्वी पर के सब शासक मेरा महत्व स्वीकार करते हैं इस लिये यह यज्ञ करना मेरा कर्तव्य है क्योंकि संसार में काल बली है दृष्ट अदृष्ट सब पदार्थ एक न एक दिन काल कवलित होते हैं केवल कीर्ति पर काल का पजा नहीं पड़ता। जो मनुष्य काल को छल कर कर्तव्य पालन कर लेते हैं उन्हीं का नाम ससार में अमर होता है।

जैचद बोला कि हे मंत्री सुमंत्र मेरे पिता ने समस्त देश पर विजय प्राप्त करके दिग्विजयी पद प्राप्त किया था। इसलिये आज समस्त हिन्दू राजाओं में समर्थ मेरे मौसेरे भाई पृथ्वीराज के पास दूत भेज कर कहला भेजो कि वह दिल्ली से लगा कर सोरा तक की आधी भूमि मुझे दे दे। हे सुमन्त पृथ्वीराज से कहना कि यद्यपि मातृ पक्ष के विचार से हम तुम दोनों भाई बराबर है परन्तु कमधुज्ज वश का राज्य अनादि है। चौहानों की आदि राजधानी सभर है इसलिये तुम अजमेर में राज्य करते रहो परन्तु हमारी सार्वभौम राज्यसत्ता के विचार से और भाई चारे के हिसाब से दिल्ली का आधी भूमि हमको दे दो।"

इधर तो राजग्रह मे राजसी आडम्बर और राजनैतिक मार पेंच की कारवाई हो रही थी। उधर प्रजा में भी घर घर आनन्द का समुद्र उमड़ रहा था। जहा तहा देव स्थानों पर विप्र वृंद वेद पाठ करते थे। द्वार द्वार पर बदनवार बंध और मंगल सूचक स्वर्ण कलश रक्खे थे। बड़ी बड़ी हवेलियों के गोखे और झरोखे सब भांति सुन्दरता से सजाए गए थे, रत्नजटित आभूषण और जरतारी वस्त्रो से विभूषित अपने अपने महलों में बैठी हुई मनोहर महिलाएं मद मद स्वर से मंगल गीत गा रही थीं। उस समय कन्नौज नगर साक्षात् कैलास के समान मनोहर मालूम होता था।

मंत्री सुमन्त ने स्वामी की सिखावन शान्त भाव से सुन कर सभ्यता पूर्वक उत्तर दिया कि

(१) भार = अष्टसहस्रनोलकात्मक (शब्द कल्पद्रुमः) अर्थात् एक भार सौ सेर अर्थात् ढाई मन के बराबर हुआ।

(२) मूल पुस्तक मे छन्द २२ से पाठ खंडित है। उसमें राजा के उपरोक्त वचनों पर मंत्री का उत्तर देना इन छन्दो मे स्पष्ट नहीं है परन्तु छन्द २४ की पहिली तुक "पुच्छयो सु वश कमधुज्ज मत्त्व" से स्पष्ट होता है कि राजा से शायद यह कहा जा चुका है कि वही राजसूय अथवा अन्य कोई यज्ञ कर सकता है जिसके वश परम्परा से होता आया हो और ये छन्द नष्ट हो गए हों—यदि ऐसा न होता तो गर्व करके प्रश्न करने का क्या प्रयोजन था? ऐसे समय पर कवियों को बिरदावली पढ़ना उचित है परन्तु गर्व करके प्रश्न करना कारणविशेष को सूचना देता है।

महाराज यज्ञ करना उचित नहीं। मंत्री के ऐसे बचन सुन कर जैचंद ने चारणों को हकार कर निज बंश की बिरदावली पाठ करने को कहा। वे बोले महाराज जिस राज्यवंश ने यज्ञ न किया उनराजाओं का राज्यभोग पूरा नहीं कहा जा सकता, हे राजन्! कमधुज्ज बंश के आदि पुरुष कमधुज्ज सूर ने बडा भारी राजसूययज्ञ करके सूर पद पाया था। उनके बाद बाहन नरिंद हुए जिनका अंतरिक्ष में रथ चल कर स्वर्ग पर्य्यन्त पहुचा। उनके बाद पुरूरे सूर हुए जो कि एक प्रकार से चक्रवर्ती राजा हो गए हैं। उनके बाद सतसिन्धु सूर नील राज आदि नामी राजा होगए हैं। राजा नल भी आपही के पूर्व्व पुरुष हैं जिनकी नैषध चरित चरचा चतुर्दिक चल रही है। हे राजन् छओ जगत प्रसिद्ध चक्रवर्ती इसी कमधुज्ज बंश में होगए हैं, उनमें से एक राजा जीमूत बाहन है जिन्होने शीश पर चक्र धारण कर संसार में अमर यश पाया। महाराज! ऐसा आपसे कौन कह सकता है कि आप यज्ञ न करें। राजसूय यज्ञ में अगनित हाथी घोड़े वस्त्र मणि मोती आदि का दान देने से अनत पुण्य मिलता है। दानियों में राजा वलि प्रसिद्ध है जिसने शरीर भी दे डाला। अस्तु हे महाराज छिति पर के छत्रधारियों को जीत कर आप अवश्य यज्ञ कीजिए।

यह सुनकर राजा ने पुनः प्रधान को आज्ञा दी कि अब शीघ्रही यज्ञ की सामग्री प्रस्तुत कर नाना प्रकार के धार्मिक कार्य्यों के होने और षोडस दान का, उत्तम प्रबन्ध करो। इसपर सुमन्त ने पुनः उत्तर दिया कि महाराज मेरी बिनती पर ध्यान दीजिए। न अब वह समय है न अब वह अर्जुन भीम के समान बलवान और प्रतापी पुरुष है। कलियुग में यज्ञ नहीं हो सकता। सुमन्त का ऐसा प्रत्युत्तर सुनकर जैचन्द खिसिया कर बोला "क्या व्यर्थ बेसमझी की बातें करता है।"

मंत्री सुमंत की बातों ने जैचन्द की बुद्धि पर ऐसे असर नहीं किया जैसे भारी ढोर या चट्टान पर तीर असर नहीं कर सकता। उधर तो जहां तहां यज्ञ के साज सामान दिन दूने होने लगे ब्राह्मण ने यज्ञ तिथि का सुदिन शोधा, इधर स्वामिधर्मधारी सुमन्त स्वामी की आज्ञा पालन करने के लिये मन में तरह तरह के सोच विचार और संकल्प विकल्प करता हुआ संभराधाथ पृथ्वीराज के पास चला। बुद्धिमान सुमन्त पृथ्वीराज के बल वैभव और उसकी सामन्त मंडली के ऐक्य एवं उनकी अखण्ड बीरतामय रीति नीति से भली भांति परिचित था। इस लिये उसे बड़ा भारी विचार इस बात का था कि दोनों बत कैसे पलें? "सांप मरे ना लाठी टूटे।"

मंत्री सुमन्त अपने स्वामी का सच्चा शुभचिन्तक था। जैचंद और सुमन्त दोनों दो तन एक मन थे। जब सुमन्त दिल्ली पहुंचा तो पृथ्वीराज ने राज्योचित शिष्टाचार से उसका उचित आदर किया। खान, पान, वसन, सुगंध घनसारादि सब सामान सुमन्त के डेरों पर पहुंचाए गए। दिल्ली पहुंचने के छः दिन पश्चात् सुमन्त ने पृथ्वीराज के दर्बार में जाकर जैचन्द का दिया हुआ पत्र पेश किया और कहा "हे राजन् जैसे हिरण्याक्ष और दक्ष प्रजापति के यज्ञ में कुबेर पर्य्यन्त सब यक्ष, किन्नर, आदि प्रस्तुत थे वैसे ही इस समय मनुष्य मात्र जैचन्द की सेवा में अपना सौभाग्य मानते हैं, अस्तु इस समय मेरी प्रार्थना है कि जिस इन्द्रप्रस्थ के लिये पहिले बड़े बड़े गन्धर्व जूझ मरे, जिसके लिये दुर्य्योधन का निधन हुआ उस इन्द्रप्रस्थ के ममेरे का आधा हिस्सा कनौजराज को दे दीजिए। सुमन्त के ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज ने अपने

(१) मूल प्रति में पुरूर रूर पाठ है परंतु टिप्पणी में "सूर" दिया हुआ है। कमधुज्ज बंश के आदि पुरुष का नाम कवि ने कमधुज्ज सूर लिखा है इसके पश्चात् भी अन्य राजाओं के नाम के साथ "सूर" पद है इससे मालूम होता है कि "सूर" शब्द कमधुज्ज बंश का स्वयं निर्धारित पद था प्रायः और और इतिहासों में भी यह बात पाई जाती है कि जिस किसी प्रतापी पुरुष से बंश की उत्पत्ति हुई उसके नामान्तक पद भी बदल गया जैसे गुप्त पाल, चन्द, वीर सिंह इत्यादि।

(२) तुम बंश भयौ नल राइ अइ।
नैषद्ध हार हा धन्या बध॥

भिन्नतन एकमन सामन्तों को बुलाकर उपरोक्त विषय पर उचित सलाह देने को कहा। पृथ्वीराज की इच्छानुसार यह गुप्त गोष्ठी देने के लिये गोइन्दराय गहलौत, सलख प्रमार, काका कन्ह, निदुर राय, गुरु राम प्रोहित, और कवि ये सात सामन्त प्रस्तुत हुए।

उक्त विषय पर विचार हो ही रहा था कि तबतक यज्ञ का निमंत्रण देने वाले दूत भी कन्नौज से आ पहुंचे। उनकी जाहिरी होते ही पृथ्वीराज ने उन्हें बुलाकर पूछा कि कहो किस अभिप्राय से आए हो? इसपर दूतों ने उत्तर दिया कि राजन् हमारे महाराज कन्नौजराज ने राजसूय यज्ञ आरम्भ किया है उनका निमंत्रण पाकर देश देश के नरेश कन्नौज नगर में आ उपस्थित हुए है। हम लोग आपको निमंत्रित करने आए हैं सो यह आज्ञा पत्र देखिए और कन्नौज को चलकर कन्नौजराज द्वारा नियत किए हुए अपने दरवान पद पर छेंड़ी लेकर काम कीजिए। यह सुनकर पृथ्वीराज तो ऐसा सन्न रहगया जैसे सांकर में फंसकर सिंह और गुरुजनों के सम्मुख सुशीला लज्जाशील स्त्री रह जाती है। परन्तु गोइन्दराय बोला "भला ऐसा कौन है जो कलियुग में यज्ञ करने का साहस करे। सतयुग में बलि ने यज्ञ किया था। त्रेता में राजा रघु ने यज्ञ किया जिसमें कुबेर उनके सहायक थे। द्वापर में युधिष्ठिर ने यज्ञ किया परन्तु श्रीकृष्ण भगवान और अर्जुन की सहायता से। ज्ञात होता है तुम्हें गर्व का अजीर्ण होगया है। तुम समझते हो संसार में क्षत्री ही शेष नहीं हैं। ऐसा न विचारो। यह वसुमती निर्बीज नहीं होती। क्या जैचन्द इस कालिन्दी कूल पर आसन्न दिल्लीपति पृथ्वीराज को नहीं जानते, जिसके रुंड पर मुंड रहते यज्ञ करने की इच्छा करना केवल कल्पना मात्र कहा जा सकता है।" इन्द्रप्रस्थपति की सभा में स्वस्वामी प्रति अपमान सूचक बचन सुनकर वे दूत वहां से उठकर ऐसे चुप चाप चल दिए जैसे पंडितों की मंडली में से मूर्ख उठ जाता है। वे लोग परस्पर इस प्रकार वार्तालाप करते हुए कन्नौज को चले "आहा! जब स्यार की मृत्यु आती है तो उसे सिंह से उलझने की सूझती है। निर्बल की मौत आती है तब वह बलवान से बैर ठानता है न जाने इन्हें क्या सूझी है जो इतने बड़े पंगराज के बल वैभव की ओर ध्यान भी नहीं देते। जहां तक अनुमान है इसका यही परिणाम होगा कि पंगराय आक्रमण कर के इनके गर्ब रूपी समुद्र को अगस्त की तरह सोख लेगा और इस दिल्ली के दुर्ग पर कन्नौज राज्य का अधिकार होगा?"

ऐसा विचारते हुए वे मलिनमन हतोत्साह कन्नौज जा पहुँचे और उन्होंने यावत् सब बीतक जैचन्द के सम्मुख वर्णन किया। दूतों के बचन सुनकर कन्नौजराज जल गया। उसने सुमन्त प्रधान को बुलाकर सब हाल कहा, तब वह पुनः बोला कि श्रीमान् कलियुग में यज्ञ कार्य्य का पार होना कठिन देख पड़ता है; परन्तु जो आज्ञा हो सो शिरोधार्य्य है। सुमन्त की सलाह के अनुसार जैचन्द ने युद्ध-विद्या-विशारद बालुकाराय और मुसल्मान सेना के स्वामी खुरासान खां को बुलाया और उनसे कहा कि तुम एक मात्र राज्य की रक्षा का प्रबन्ध करो। यदि मैं इसी समय चहुआन को चूर्ण करने की चेष्टा में चलता हूं तो इधर यज्ञ का समय निकल जायगा; इसलिये मुझे यह उचित जँचता है कि पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित करवा कर कार्य्य आरम्भ किया जाय। उसने अन्य कर्मचारियों को भी यथा योग्य कार्य्यों पर नियत करके मन्त्री को आज्ञा दी कि पंडित बुलाए जाय और यज्ञ की तिथि और संयोगिता के स्वयम्बर का उत्तम मुहूर्त्त शोधन कराया जाय। सुमन्त ने स्वामी की इच्छानुसार सब कार्य्य सम्पादन होने का उचित प्रबन्ध कर दिया।

---

(१) जमीन से लेकर कान पर्य्यन्त ऊंची एक लकड़ी होती है जो कि चांदी वा सोने से मढ़ी होती है-यह छड़ी राजाओं के द्वारपालों का चिन्ह अथवा राजाओं का रूप स्वरूप समझी जाती है इस समय इस छड़ी को धारण करने वाले 'नकीब' कहे जाते हैं यही लोग दर्बार के समय सब दर्शकों को यथा स्थान बैठालने और सरदारों के अलकाब आदि बखानने का कार्य्य संपादन करते हैं।

और सारे नगर में भी इस बात का शोर होगया।

ये सब समाचार संयोगिता पर भी प्रगट हुए। एक दिन संयोगिता ने अपनी सखियों से मुस्करा कर कहा "मुझे बड़ा आश्चर्य्य है कि मेरे मानसिक भाव और मेरी बुद्धि न जाने क्यों सहसा पलट गई है। यह मलयमारुत पुष्पों का पराग और कोकिलाओं का कलाप कंटक मय प्रपंच सा सूझता है। रह रह कर मन में कभी उत्कंठा और कभी शंका का आविर्भाव होता है, गुड़ियों के खेल में पाणिग्रहण के समय दिल में दाह होती है और उनके सोंनारे के समय लज्जा विनय और चाह की अभिलाषा होती है—कन्नौजराज के कंचनमय महलों में मोतियों के बंदनवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे सुमेर के आश्रय में गंगा आ बही हो, अथवा हिमाञ्चल कण कण हो कर सूर्य्य की शरण में जा पहुंचा हो—ऐसे स्थान में विचरती हुई संयोगिता यदि कामेच्छा से रहित न होती तो हम उसे रतिरानी कहते परन्तु इस भोलेपन की सहज लुनाई पर तो स्वय कोटि रतिरानी आरती उतारती है। वह जो छोटे छोटे पालित पशु शावकों को चुगाती और इठलाती हुई सखियों से बताती थी उससे यह भी भासित होता था कि उसके शरीर पर मनासिज की छाया कुछ न कुछ अवश्य पड़ गई है क्योंकि रसीली बातों को सुनकर सकुचना और दिनों दिन नजर का नीचा होना कामदेव के ही कला विस्तार की निशानी है।

संयोगिता की समवयस्का अन्यान्य राजकुमारियां कल्लोलें कर कर कलकंठ से गान करती हुई उसके मानसिक हृदयोच्छास को और भी उद्दीपन करती थीं। वे अठखेलियां करती हुई संयोगिता के चिबुक को स्पर्श कर कर के कहतीं कि अब तो शीघ्रही सात आठ दिन में तेरा पाणिग्रहण होने वाला है। वे किशोर वयस्का सुन्दरी जब परस्पर हँस हँस कर ऐसी बातें करतीं तब संयोगिता कुछ अनख सी मानकर लज्जा से पलाच्छादित चक्षु करलेती थी। कोई कोई कहती, कहो तो कौन इसका बर होगा, तब दूसरी उत्तर देती कि इसके योग्य तो वही जोगिनपुरपति पृथ्वीराज ही है।

उस समय संयोगिता सिसिर और बसन्त की संधि के समान ऐन वयःसंधि अवस्था में थी उसके अंग प्रत्यगों में मधुर मधुमय माधुर्य्य छवि की आभा झलकने लगी थी उसके हृदय सरोवर में कमल कली से युग यौवनाङ्कुर अङ्कुरित होने लगे और उन पर अधिक स्यामले सलोने भ्रमर बिन्दु छितर छितर कर और ही छवि छटा छाने लगे थे। उसपर घूंघरू स्वर तो ऐसा मालूम होता था मानों भँवरी अपने पति से कह रही हो कि हे प्राणपति उठो ऋतुराज की अवाई हुए विलंब हो चुका।

संयोगिता की अवस्था की बसंत ऋतु से पूर्णोपमा वर्णन करता हुआ कवि कहता है "उसके अरुणारे अधरही कुसुमित रसाल पल्लव थे, खंजरीकच साक्षात् मौर की मंजरी और उनपर लटकती हुई काली काली बालों की लटें अलिश्रेणी सी जान पड़ती थीं। कंठ स्वर कोकिला को मात करने वाला तो था ही। हिमन्त को हराकर बसन्त जोर पकड़ रहा था। प्रातः वायु भांति भांति के सुगंधित पुष्पों की सुवास को लूट कर संसार को सुखमय कर रही थी। बन बाग उपबन हार पहार सर्वत्र मौरे हुए आमों के मौर प्रकृति पर ढरते हुए काम के से चर ज्ञात होते थे। जहां तहां कोयल कलापती और लाल हरे पीरे पत्र अद्भुत छवि छटा छाते थे। भांति भांति के फूले हुए फूलों की कतारें साक्षात् पंचबाण के बाग सी बिरही जनों के हृदय बेधने को सन्नद्ध थीं। इस सुखमय दृश्य जनित परिरंभन भाव की कृपाण तथा और भी नाना भांति के प्राकृतिक शस्त्रों से बसंत ऋतु ने शिशिर को जीत कर लाल लाल पलास पुष्पों के निशान रोपकर संसार पर अपना अधिपत्य जमा लिया। इसी समय इधर तो संयोगिता के हृदय मंदिर में कामाग्नि उद्दीपित हुई। उसी के स्वयंबर एवं यज्ञ के लिये सुदिन रक्खा गया और उधर पृथ्वीराज ने यज्ञ विध्वंस करने के लिये सेना सजी।

जब पृथ्वीराज के दरबार में समाचार पहुंचा कि जैचन्द ने यज्ञ आरम्भ कर दिया और पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित की गई है तो सब सामन्त लोग क्रोध के मारे कुढ़ उठे और पृथ्वीराज से बोले कि "हे राजन्! अब जीवन की मोह छोड़ कर मरने पर कमर बाँधिए।" पृथ्वीराज बोला "मेरे रहते जैचन्द ने यज्ञ करने का साहस किया है। यदि मैं इस समय यज्ञ विध्वंस करता हूं तो देवताओं का द्वेषी होना पड़ेगा और जो प्रजा पर चढ़ाई करता हूं तो भी अभिप्राय सिद्ध होता नहीं देख पड़ता।" ऐसा विचार कर उसने कैमास सहित अन्य मुख्य सामन्तों से पूछा कि अब क्या करें तब गोइन्द राय बोला कि जैचन्द जानता है कि पृथ्वी पर पृथ्वीराज है ही नहीं, यह नहीं जानता कि यह वसुमती वसुंधरा कभी निर्वीज नहीं होती!

उस समय गुरुराम प्रोहित, जैतप्रमार, निद्दुर राय, जामराय यादव, भौंहा चंदेल, कैमास, चंद पुंडीर और काका कन्ह ये सब हाजिर थे। कन्ह बोला "बस अब विलंब केहि काज' तुरंत सेना तय्यार करके कन्नौज को लुट पाट कर यज्ञ विध्वंस किया जाय। और भी जो जिसके जी में आया सो सब ने कह सुनाया परन्तु चन्द पुंडीर ने कहा कि कैमास से तो पूछिए क्या कहते हैं!। इस बात को सबने स्वीकार किया और सब के सब कैमास का मुँह ताकने लगे' निदान कैमास ने कहा कि कन्नौज पर चढ़ चलने से नहीं बनेगा। जैचन्द का बल बड़ा है इसलिये खोखंदपुर पर चढ़ाई करके बालुकाराय को मार लिया जाय बस फिर यज्ञ आप ही विध्वस हो जायगा। *

इस प्रकार सलाह पक्की हो जाने पर उस समय दरबार बरखास्त हुआ' तीसरे पहर फिर से पृथ्वीराज ने कैमास को बुला कर चला चली के बारे में कुछ बातें कीं। पंडित से यात्रा के लिये सुदिन पूछा। पंडित ने कहा कि पुष्य नक्षत्र रविवार की साइत अच्छी है। निदान पंचमी रविवार के दिन दिल्ली राज्य की समस्त चतुरंगिनी सेना राजद्वार पर आ उपस्थित हुई। पृथ्वीराज ने अच्छे बलिष्ट और अच्छे अच्छे खेत के जात वाले ताजी एक एक सब सामन्तों को दिए। वे सब सामन्त उन घोड़ों पर सवार होकर सन्नद्ध हुए और पृथ्वीराज आप खुरासानी खेत के श्रृंगारपाट नाम के एक भीमकाय अश्व पर सवार हुआ। उस श्रृंगारपाट की पूछ का गुच्छा अच्छा चौर सा छहराता और चलते समय उसकी खुरी से धरती धमकती और बिजली कैसी चमचमाहट पैदा होती थी।

ज्योंही बालुकाराय का विनाश करने के लिये पृथ्वीराज ने अपने घोड़े की बाग उठाई त्यों ही बंदीजनों ने बिरदावली अलापी, जिसे सुनकर सूरों का चित्त चौगुना हो गया और कायरों का कलेजा कँप गया। पृथ्वीराज के साथी सिपाही ऐसे बलवान जवान थे कि यदि एक, हजार को पछारने की हिम्मत रखता तो दूसरा इसको दम की दम में दमन कर देता। यदि एक सौ को साफ करता तो दूसरा लाखों का मुँह मारता था। ऐसे ऐसे बीरों के बीच में स्थित पृथ्वीराज के शीश पर आच्छादित सोने का छत्र समुद्र में बड़वा नल की सी ज्वाला जान पड़ता था।

पृथ्वीराज ने प्रमुख अनी में तो निद्दुरराय को प्रेषित किया और समस्त सेना सहित पीछे से आप चला। पृथ्वीराज के चलते समय जंगी बाजों की विषम ध्वनि से चारों ओर हलचल मच गया। इस सेना का सेनामुख कन्ह हुआ। उसके पीछे बलिभद्रराय और उसके पीछे पृथ्वीराज था। ज्यों ही इस सेना ने कन्नौजराज्य की सरहद में पैर दिया कि चारों ओर हाहाकार मच गया, जहां तहां गांव के गांव उजाड़े जाने लगे और भूमिया (जमींदार) लोग पकड़ पकड़ कर बांधे और मारे जाने लगे। चहुआन सेना के इस जघन्य आतंक और उत्पात से दुखित होकर प्रजावर्ग ने बालुकाराय के द्वारे जा

* पहिले लिखा जा चुका है कि बालुकाराय जैचन्द का भाई था अस्तु भाई के मरने पर हिन्दू शास्त्रानुसार एक साल पर्य्यन्त अशौच के कारण कोई शुभ कार्य्य नहीं हो सकता।

पुकार मारी। प्रजावर्ग ने बालुकाराय की पौरि पर पहुंच गुहार और दुहाई दे, द्वार मार रो रो कर कहा कि हे प्रभू ! पृथ्वीराज चहुआन ने चढ़ाई करके सारे देश को उजाड़ कर रक्खा है। बड़े बड़े लखपती साहूकार लूटे जाकर लंगोटी लगाए डोलते हैं। जहां तहा गांव के गांव खड़े जला दिए जाते हैं, सो इस पृथ्वीराज के दल बल रूपी समुद्र को आप अगस्त होकर सोखिए नहीं तो हम सब लोग ढह बह जायगे।

यह समाचार सुनकर जैचन्द का भाई बालुका राय ललकार कर बोला "हैं क्या हल्ला हो रहा है ऐसा कौन पुरुष है जो जैचन्द के बल वैभव को न जान कर प्रजा को सताने आया है, अच्छा मैं उसकी धृष्टता को नष्ट भ्रष्ट करता हूं।" यों कह कर बालुकाराय ने भी अपनी सेना सम्हाल कर चहुआन की चमू का मोरचा मारने के लिये कूच होने की आज्ञा दी। एक तो भाई का स्नेह, दूसरे राजाज्ञा, तीसरे अपने बान की आन मान कर प्रजा की पुकार पर बालुकाराय चहुआन पर ऐसे चढ़ चला जैसे सुन्दर सुन्दरी का मधुर कंठ स्वर सुनकर कामी के मन में कामाग्नि दमक उठती है, घोडे के गिरते हो जैसे बन्दूक से गोलियां चलती है या बहर की गरज के साथ बिजली चमक उठती है।

परन्तु विचार करने पर अन्त में यह निश्चय हुआ कि यहां से कूच करना उचित नहीं, शत्रु के यहां आ पहुँचने पर ही वार बचाया जाय। उधर से चहुआन सेना भी किसान की तरह स्यारी सी निराती भारी उत्पात मचाती चोप से चली आती थी। अस्तु जब चहुआन सेना चलती हुई बिलकुल बगमेल में आगई तो इधर से बालुकाराय के भी निशान उठे। यह देखकर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को व्यूहबद्ध होने की आज्ञा दी।

"धन्य है, वीर पुरुषों के दोनों हाथ लड्डू हैं। यदि वे युद्ध में कट मरते हैं तो परलोक में उत्तम गति पाते हैं और जो जीते जागते विजयी होते हैं तो जगत में उनका यश जाहिर होता है।" दिखादाव होतेही दोनों दल एक दूसरे से भिड़ पड़े और एक दूसरे अपने अपने प्रतिद्वंदियों को पकड़ पकड़ मारने पछाड़ने और उनका उदर विदारने लगे। इस प्रकार की भयानक रंगभूमि में अटल रूप से डटा हुआ बालुकाराय स्वयं करारे वार करता और अपने सिपाहियों से कहता था कि पंगराज की रत्नमयी भूमि को जो लुटेरे लूटने आए हैं उन्हें बड़वाग्नि बन कर भस्म करो, शरीर में चेतना शक्ति के रहते पर्य्यन्त बार बार शस्त्र प्रहार करते हुए क्षत्री धर्म को निबाहो। हे वीरो जैसे नवोढ़ा नारि रात्रि से और कुल कामिनी कुल विहित परिपाटी से डरती है वैसे ही क्षत्रियों को छल से डरना चाहिए। मंत्र और चर का चलायमान होना भला है परन्तु पर्व्वत और वीर पुरुषों को सदा अचल होना चाहिए। इस शरीर की शक्ति अंतरात्मा एवं जीव चचल कुलटा कामिनी के समान चपल है, न जाने कब चंचला सी चमक कर चट से चल बसे; इसलिये लोह की झार में झिलकर झूठे झगड़े से मुक्ति पाना ही भला है। इस समय मुक्ति मार्ग का द्वार खुला हुआ है पंचतत्व रचित प्रपंच मय कच्चे पिंड को खंडन कर सच्चा आनन्द लेना ही सार है।

बालुकाराय के ऐसे बचन सुनकर सैनिकों ने बिचित्र कौशल दिखाया। सारी सेना ने चंद मंडल एवं नाचते हुए मोर के परों की नाईं चक्राकार हो कर चहुआन सेना को चारों ओर से घेर लिया। जोशीले जवान बढ़ बढ़ कर हाथ देते और शत्रु के सिर को भुट्टे सा काट लेते थे। जहां तहां छहराते हुए रक्त के छींटे ऐसे जान पड़ते थे मानो तेंदू (१) के कुंजों में दवार लगी हो। जिस किसी हाथी के कुंभस्थल पर हाथ बैठता तो पहाड़ी झरने की तरह रुधिर की धारा बह निकलती थी। इसी प्रकार मारामार होते हुए बालुकाराय ने पृथ्वीराज को आ दबाया परन्तु पृथ्वीराज ने बालुकाराय के हाथी को एक हाथ ऐसा मारा कि जिससे वह भहराकर गिर पड़ा बस उसी दम से बालुकाराय की सेना के

(१) तेंदू एक लकड़ी होती है जिसका ऊपर का बक्कला काला होता है आग लगने पर वह चिट चिटाता है और चिनगारियां उड़ती हैं।

कदम पीछे पड़ने लगे और चहुआन सेना का बल बढ़ उठा। चहुआन सेना के हरावल में कन्ह और कैमास, दहिने गोयंदराय और बाएँ निढ्ढुरराय थे। उधर से बालुकाराय स्वयं अपने सिपाहियों को बाढ़ें देता हुआ बराबर आगे बढ़ने की चेष्टा करता था।

दोनों ओर के योद्धा अपने अपने ईस (स्वामी एवं महादेव) की दुहाई दे दे कर मार करते और मार मार पुकारते थे। रण वाद्यों की भीषण ध्वनि से धरती धसकती और वसु कसमस होते थे। मुंड बिन रुंड भसुंडहीन हाथी दौड़ते हुए बड़े भयानक देख पड़ते थे। कटार से पेट या पंजर आरपार होने पर कलेजा तिल्ली और फेफड़े सहित आंते निकल पड़ती थीं। छुरी बिछुआ कटार बांक वगुरदा आदि बख्तरों पर खड़ खड़ होते तो खोपड़ी पर गुरज का कड़ाका होने से टोप टूट जाता और भेजी निकल पडती थी, कँधे पर खड्ग का हाथ पड़ता तो हाड़ कट कर कमर तक वारापार हो जाता था। कटे हुए सिर जमीन पर पड़े पड़े फुदकते हुए विहार करते जान पड़ते थे। एक बबकारता, तो दूसरा हुंकारता था, एक ललकारता, तो दूसरा प्रचारता था, एक हाहाकार करता तो दूसरा पानी पानी पुकार मरता था। यह सब होते हुए भी बानैत वीर अपनी अपनी बान पर डटे कट कट कर पटते जाते पर हठ से हठ कर हटना हराम जानते थे। इसी बीच में कन्ह चहुआन और बालुकाराय का चौनजरा होगया और कन्ह ने बालुका का सिर काट गिराया। परन्तु उसका कमंध तलवार खींच कर कन्ह पर झपटा जिसे कन्ह ने सेल से ठेल कर अस्व पर से ढकेल दिया।

बालुकाराय के भूमि पर पड़तेही उधर तो उसके शीश को शिव ने रुंड माल में सादर स्थान दिया और इधर चहुआन सेना की चढ़ लगी। इस युद्ध में चहुआन सेना के सात सौ सिपाही और बहुत से रावत खेत रहे और बालुकाराय के पांच हजार योद्धा काम आए।

बालुकाराय के मारे जाने पर चहुआन सेना ने व्यूहबद्ध होकर आगे बढ़ना चाहा मगर खंधार बच्चा यानी खेधार खां ने मोरचा बाँध लिया और अब चहुआन सेना की मुसल्मानों से छिड़गई। दिन का कुछ थोड़ा सा अंश शेष था इसलिये उस दिन तो दोनों सेनाएं शान्त होगई दूसरे दिन आधी घड़ी दिन चढ़े से फिर लोहा बजने लगा। जिस समय बहादुर योद्धा युद्ध के लिये सन्नद्ध होते हैं तब और सब देवता तो प्रसन्न होते हैं परन्तु ब्रह्मा चिंता ग्रस्त होता है हताहत होकर मरने वाले वीर उसकी सृष्टि से एक दम उठ जाते हैं और चिन्मय ब्रह्म में लवलीन होकर संसार के आवागमन से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं—यवनसेना के साथ कन्नौज राज्य की सीमान्तर्गत कुछ और भी सेना आ मिली परन्तु इन सामन्तों के साम्हने कौन ठहर सकता था। सायंकाल तक खूब मारा मार हुई। सैकड़ों सूर वीर मारे गए। रक्त की नदी बह निकली। लोथों के अटंबलग गए और मांसाहारी जीव मांस खाकर और खून पी कर खूब अघागए। दिन भर युद्ध होते होते अंत में पंग सेना परास्त हुई और पृथ्वीराज विजयी हुआ।

सम्मुख संग्राम में शत्रु सेना को परास्त कर के पृथ्वीराज ने खोखंदपुर को लूटने के लिये बाग उठाई। उसी रात्रि को बालुकाराय की स्त्री ने स्वप्न में देखा कि उसकी सुढार मोटी जाँघें पतली और पतली सी कमर मोटी होगई हैं। नेत्र साक्षात कमल के पुष्प और केश सजीव सर्प से हो गए हैं। आगे आगे बालुकाराय और उसके पीछे आप पृथ्वीराज के भय से भाग कर पहाड़ पर चढ़ती जाती है। इतने में चारों तरफ कूह मच गई कि बीर वर बालुकाराय को मारकर पृथ्वीराज नगर लूटने के लिये चला आ रहा है। यह भयानक समाचार सुन कर नगर निवासियों के तो देवता कूच कर गए। नगर निवासिनी एवं महलों की महिलाओं का कलेजा कांप उठा और नीवी के बन्धन ढीले हो गए। बालुकाराय की स्त्री की तो यह दशा थी कि उसकी सखी सहचरी उसे हाथ पकड़ पकड़ आंसू पोंछ पोंछ बहुतेरा समझाती थीं परन्तु वह बिलख बिलख कर विलाप करती हुई बार बार यही कहती थी

"हाय प्यारे ने विधाता को बाम करने के लिये पृथ्वीराज से शत्रुता क्यों ठानी थी। जिस भूमि की रक्षा के लिये सहस्रों सिपाही सन्नद्ध थे जो भूमि इन्द्र की उपबन बन रही थी, जहां अनेकों प्रकार के राग रंग मय पुष्प प्रस्फुटित होते और आनन्द के मकरन्द आच्छादित रहते थे, जहां नित नव सुख सारे के नवीन रसाल पल्लव देख पड़ते थे उस भूमि को पृथ्वीराज रूपी सुग्गों ने लूट पाट काट छाँट एवं कतर कर कौड़ियों का कर दिया।" इस प्रकार बालुकाराय को मार कर, खोखंदपुर को उजाड़ कर, कन्नौज राज्य की प्रजा में हाहाकार डाल कर, जैचन्द का यज्ञ बिगाड़ कर, पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया।

इधर बालुकाराय की स्त्री नाना प्रकार के विलाप वाक्य उच्चारण करती हुई कन्नौज जा पहुंची और जैचंद के साम्हने सब दुःख रोकर कहने लगी "हा चहुआन से वैर विसाहने में सर्वनाश हुआ।"

पंगयज्ञ विध्वंस समय।

[उनचासवां समय।]

माघ वदि ५ से यज्ञ आरंभ होकर त्रयोदशी तक एक सप्ताह हो चुका था। एक तो राजसूययज्ञ दूसरे संयोगिता का स्वयंबर दोनों आनन्दमय कार्य्यों के कारण समस्त कन्नौज नगर कुसुम सा फूल रहा था। राजमहल का तो कहना ही क्या था। प्रत्येक द्वार द्वारी महराब गोख और झरोखों पर जड़ाऊ बन्दनवारें झलमला रहे थे। महल के आँगन में यज्ञ मंडप स्थापित था; जिसके खम्भे सोने से मढ़े हुए थे। ललित ललाम तरुलता आच्छादित उत्तंग मंडप पर रंग विरंगे ध्वजा केतु और पताके फहरा रहे थे और कमलपुष्पों के लटकन और कुसुम के तोरण लटक रहे थे। ऐसे मंडप के बीच में बैठा हुआ जैचन्द अपने भाग्य को धन्य मनाता हुआ फूला अंग नहीं समाता था। कहीं कोकिल कंठी नायिकाएं मंगल गीत अलापती थीं, कहीं गवैये लोग राग रागनियों को गा रहे थे, कहीं मधुर स्वर वाले सुरीले बाजे बजते थे और कहीं धानुक मंडली भीम-स्वर बाजे बजाती थी। उस मंडप में नाना भाँति की बेलें बूटेदार रोशनी हो रही थी*। और एक तरफ नाना प्रकार के नाच रंग नाटक रास इत्यादि के तमाशे भी हो रहे थे। आगन्तुक पाहुने तथा अन्य कर्मचारी गण भी यथास्थान आसीन थे। इसी समय बालुकाराय की स्त्री और उसके साथ वालों ने हाथ बाँध कर आ पुकारा।

"गंगा की गैल में मदारों के गीत" सुनकर जैचन्द ने अकुला कर पूछा, क्या है? उन्हों ने उत्तर दिया महाराज पृथ्वीराज ने सर्वनाश कर दिया!! बालुकाराय को मार दिया और खोखंदपुर को उजाड़ दिया। यह सुनते ही जैचन्द के हृदय समुद्र में क्रोध रूपी बड़वाग्नि की उर्फानें सी आगयीं। वह लाल लाल आंखें कर चबड़ी बांधकर बोला "पूर्व्व दिशा का देवता इन्द्र है, अग्नि कोण का अग्नि, दक्षिण दिशा का यम और नैऋत का राक्षस है। पश्चिम दिशा का अधिपति वरुण और वायव्य कोण का वायु है उत्तर का कुबेर और ईशान के ईशान अर्थात् देवता हैं। आकाश में ब्रह्मा और पाताल में शेष है। अस्तु यदि पृथ्वीराज इनमें से किसी की भी शरण जाय पर वह जीता बचेगा नहीं। उसे अधिक गर्व हो गया है, परन्तु ईश्वर गर्व प्रहारी हैं। हनुमान जी की जब द्रोणागिरि के उपारने पर गर्व हुआ तो भरत जी ने बांण मार कर उनके गर्व को गिरा दिया। यदि आज अपना दल बल सज कर पृथ्वीराज को मय उसके सहायक समरसिंह सहित बांध कर न लाऊं तो मैं अपने पिता विजयपाल की जाया न कहाऊं। उसने मंत्री सुमत को आज्ञा दी कि इसी समय सेना सजी जाय और कहा, मैं इसी समय जाकर पृथ्वीराज और समर सिंह दोनों को बाँध लाकर तिल की तरह पेरूंगा, तब मेरे जी में जी आयगा।

इस समाचार के सुनते ही सर्वत्र सन्नाटा छा गया, जैचन्द की रानी जुन्हाई ने सब हाल सुना तो उसने राजा को बुलाकर कहा कि पहिले संयोगिता की स्वयम्बर कर लो फिर पृथ्वीराज को पकड़ना। इस समय स्वयम्बर के लिये सब तरह से सुपास है। देश देश के नरेश उपस्थित हैं। अस्तु बेटी का पाणिग्रहण कराके तब पृथ्वीराज को पकड़िए और फिर निश्चिन्तता पूर्व्वक यज्ञ कीजिए।

जैचन्द का क्रोध करना और रानी का समझाना बुझाना संयोगिता ने भी सुना इसलिये उसने अपनी धा से पूछा कि पिता जी आज किस पर कुपित हो रहे हैं? तब धा ने उत्तर दिया कि पृथ्वीराज पर, जिसने रंग में भंग कर सारा सुख सत्यानाश कर दिया। यह सुनकर संयोगिता ने

(१) बाजा बजाने वाले एक नीच जाति के लोग।

* मूल पाठ "अतस्तस्मै खेलं बहु स्वेतस्य" से आतिशबाजी का भी ख्याल हो सकता है।

(१) दोनों के बीच निपटने छोड़ को देखकर कुविवाह होने को झगड़ा बाँधना कहते हैं।

गन्धर्व के बचन स्मरण करके अपने मन में निश्चय कर लिया कि इस तन पिंजर मे प्राण पखेरू के रहते संभरी नाथ के सिवाय और बर को बरना स्वीकार तो न करूंगी चाहे इधर की धरती उधर हो जाय। ये सब बातें जैचन्द के कान में भी पड़ गई, परन्तु उसकी रानी ने कहा कि लड़कों की बातों पर कान नहीं देना होता।

निदान जैचन्द की आज्ञानुसार उधर तो मंत्री सुमन्त ने सेना सज कर तय्यार की और वह सेना फुटकर होकर दिल्ली की तरफ रवाना की गई, इधर संयोगिता के स्वयम्बर का साज बाज सजा जाने लगा— उधर स्वयम्बर का समाचार पाकर संयोगिता तो बे सुध होकर धराशायी हुई और इधर पंग सेना ने दिल्ली राज्य की सीमा में पैर दिया।

इस समय के ४० से लेकर ४६ तक चार छन्दों का सिलसिला आगे के प्रस्ताव से मिलता हुआ है अस्तु हम उस शीर्षक को अग्रिम प्रस्ताव के साथ संगठित करके लिखते हैं।

संयोगिता नाम प्रस्ताव।

[पचासवां समय।]

खोखंदपुर को उजार कर और बालुकाराय को संहार कर आने पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से सलाह कर निश्चय किया कि अब यहां ठहरना उचित नहीं है। इस लिये दस सामंत तो दिल्ली की गढ़ रक्षा पर और तीन तीन प्रत्येक नाके पर छोड़ कर पृथ्वीराज शिकार के बहाने जंगल में जा पडा।

बालुकाराय के बध का समाचार पा कर जैचन्द ने दो गुप्तचर उसी समय दिल्ली को भेज दिए थे। उन्होंने सब भेद लेकर जैचन्द से आकर कहा कि महाराज दिल्ली में केवल दस सामन्त छोड़ कर पृथ्वीराज जंगल में शिकार खेल रहा है। असल बात तो यों है कि वह आपके डर से डर कर भागता फिरता है। इस समय फौज भेज कर उसे जंगल ही में घेर लिया जाय तो बहुतही अच्छा हो। दूतों के ये बचन जैचन्द ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार किए और कन्ह कमधुज्ज को बुलाकर आज्ञा दी कि वह तत्तार खां की कुमक सेना लेकर पृथ्वीराज को पकड़ लावे। राजा की ऐसी आज्ञा पाकर कन्ह साठ हजार सेना सहित पृथ्वीराज पर चढ़ चला।

इस कन्ह की सेना के सिपाहियों ने सब हथियार छिपा कर सौदागरों का भेष धारण किया और जिस जंगल में पृथ्वीराज पडा हुआ था उसीके आस पास किसी गांव में वे जा टिके। शायंकाल होतेही समस्त सेना की चार तुंगें हो गई और रात्रि भींजते ही चहुआन सेना को चारों तुंगों ने चार तरफ से धर दबाया। सबसे पहिले धावा करने वाला वाजिद खां था। उस तरफ कैमास उस दिन पहरे पर था। वाजिद ने किनारे किनारे चुपके से आकर पृथ्वीराज की सुसुप्त सेना का मार करना शुरू कर दिया। इस अनायास आपत्ति से घबड़ा कर सब हिन्दू सैनिक जिधर तिधर तीन तेरह होगए परन्तु सामन्त मंडली ने राजा को न छोड़ा। निढ दुरराय, पज्जूनराय, महाड़-राय तूंअर, नरसिंह दाहमा, कैमास, रामराय बड़ गुज्जर आदि सामन्तों ने अतुलित पराक्रम करके राजा पृथ्वीराज को बेदाग बचा लिया और पंग सेना को हराकर हटा दिया।

यह समाचार सुनकर जैचन्द ने सुमन्त को सब फौज जुटाने की आज्ञा दी और कहा कि सब से पहिले विषम विष के मूल का ही नाश करना उचित है—कहा है—"न रहे बांस न बाजे बाँसुरी" इसपर सुमन्त विनीत भाव से बोला कि महाराज इस समय दूर दूर के सब राजा लोग उपस्थित हैं इस लिये ऐसा सु अवसर न चूककर स्वयंबर कर देना ही उचित है फिर शत्रुओं का संहार करना तो अपने वश की बात है। यह बात जैचंद को भी भा गई और उसने उसी समय रानी जुन्हाई के पास जाकर अपना अभिप्राय कह सुनाया और इस विषय में उसकी भी उचित मत लिया।

जैचन्द ने रानी जुन्हाई की जबानी संयोगिता का सब हाल सुन तो लिया; परन्तु विमाता भाव के विचार से उसपर विश्वास न किया। इधर दूतियों को बुलाकर उसने आज्ञा दी कि वे संयोगिता के पास जाकर उसका मत लें और उसकी जिद छुड़ावें। जैचन्द ने जिस दूती को संयोगिता के पास प्रेषित किया था वह साम, दाम, दंड, भेद, नीति के सब अंगों में दक्ष समयानुसार विचारमय चतुरता पूर्व्वक उचित वचन उच्चार करने वाली मनहरण मूर्ति साक्षात मेनिका के समान सुन्दर थी। हाव भाव कटाक्ष कला चातुरी और तरह वजह में तो मुनि जनों के मन को मोह लेने वाली थी। उसकी स्वाभाविक चंचलता और चातुरी मय चाल ढाल तो चतुरों के चित्त में चुभने के लिये मानो मनसिज की बंसी थी। कलकंठ से मधुरस्वर उच्चारण कर अच्छे अच्छे धीरपुरुषों का धैर्य्य हरती और श्रीखंड समान मीठी मुख स्वांसा से वायु मंडल को प्रसन्नतामय कर देने

(१) मछली पकड़ने का कांटा।

वाली थी। और भी नाना प्रकार के फरफंद दंद फंद एवं छरछंद करके मूर्छित काम को जगाने वाली थी। मौनधारी मुनियों को हँसाना, विषम व्रतधारी जटिल योगियों का तप लगाना तो उस दूती के बाएं हाथ का खेल था। ऐसी चतुरा चरी संयोगिता के चित्त से अचल व्रत को चलायमान करने के लिये चुप चाप चलती हुई रनिवास में पहुंची।

दूती को देख कर संयोगिता ने उससे सहज स्वभाव परन्तु सादर पूछा कि मेरे पिताजी की क्या इच्छा है और तुम लोग मेरे पास क्या जुटी हो। संयोगिता के ऐसे बचन सुनकर दूती ने कहा कि आपके पिताजी ने आपके स्वयम्बर की सामग्री रची है। इस समय पंगराज के दरबार में देश देश के राजा लोग हाजिर हैं उनमें से हे कुमारी! आप किस भाग्यवान के गले में जैमाल मेलेंगी?

यह सुन, संयोगिता की सैन पाकर, उसकी सखी उस सहचरी दूतिका से बोली "अरी बहिन, कैसी बेसमझ बूझ की बातें करती है। मद के मतवारे को स्वर्ग कर गेगा का गुण गान करना, बाझ के सामने पुत्र सुख को सुनाना और बहिरे के आगे ज्ञान बखान करना न जाने कौनसी बुद्धिमानी है। देखो! संयोगिता वयःप्राप्त है उससे ऐसी छिछोरी बातें न कर।" संयोगिता भी बोल उठी "जो राजा मेरे पिता का लोह खाकर उसके बँधुआ बन चुके वे मेरे वर बनने योग्य क्योंकर कहे जा सकते हैं। री सहचरी तू दासी होकर कुलीनों की लीक को क्या जाने? सुन! वे लोग, जो मेरे पिता को माता पिता समान मानते हैं क्या धर्म्म के नाते मेरे भाई न हुए! या तो मेरा पाणि ग्रहण पृथ्वीराज से होगा, या मैं गंगा में निमग्न हो मरूंगी।"

संयोगिता का ऐसा हाल जानकर जैचन्द का दिमाग जल उठा। वह स्वतः सोचने लगा कि मैं जब बरबस अन्य वर से व्याह दूंगा, तब क्या? परन्तु फिर कुछ सोचकर उसने संयोगिता की धा को बुला कर कहा कि तू जाकर बेटी को समझा और उसका हठ दूर कर।

जब धा संयोगिता के पास पहुंची तो संयोगिता उससे बोली, मैं तुम बड़े बूढ़ों के सामने कहती सकुचती हूं परन्तु कुसमय पाकर कहना पड़ता है। मैंने पृथ्वीराज से पाणिग्रहण कराना विचारा है। इसपर दाई बोली "बेटा! कैसी बौरी हुई है!! जिसके लिये माता पिता बरजते हैं, जिसके खरे खोटे की परख नहीं उससे सहसा सम्बन्ध स्वीकार करना कैसा? मेरी सीख मानो और मन में समझ लो।" यह सुनकर संयोगिता ने प्रत्युत्तर दिया "क्या कहती हो" चामीकर की चमक और चन्दन की सुगन्ध ही परख है। जिस चहुआन की चरचा चतुर्दिक चरचराटे सी चल रही है उसका परिचय क्या? यह सुन कर सहचरी बोली तू राजकुमारी है और वह लुहार कुल में उत्पन्न है सो भी तो सोच? यह सुन कर संयोगिता बोली सुन "वह वह लुहार है? जिसने शंकर गढ़ खड़ा जला दिया, जिसकी तलवार ने सारा यज्ञ बिगार दिया, जिसने सांड़सी के युद्ध में भोला भीम का बध किया और और भी जहां जहां काम पड़ा तहां उसने आरनी की आग होकर शत्रु समूह को भस्मही कर दिया, जिससे अजमेर, में धुआं हुआ और मंडोवर में लौ लपटी, मोरारी आदि जिसकी लपट में लिपटे और रसथंभ और कालिंजर जिस की ज्वाला से जल गए। अब उसी की चहुआन कृपान रूपी अग्नि गोरी रूपी घड़े को पका रही है*।" उसकी सखी बोली कि समस्त मरहट्टे नीमच बैरागर कर्नाट कोकन आधा मालवा देश जिसने निज बाहु बल

---

(१) चौड़े चहड़े वार बरनर की लकड़ी का एक टुकड़ा होता है जिसपर एक खड़ी लकड़ी रखने से आग निकलती है। पहिले समय में क्षत्रिय लोग इसी अरनी की आग से काम लेते थे अब भी बहादि के लिये अरनी से अग्नि दहाई जाती है॥

* यहां यह बात विचार करने की है कि कुंभों वा नदी से घड़े में जल भर कर आग बुझाई जाती है।

से दबालिया और शाह शहाबुद्दीन को जिसने बिन प्रयास पकड़ पकड़ कर छोड़ दिया है वही पृथ्वीराज संयोगिता का वर होने योग्य है न कि पंगराज के अनुचर अन्य राजा लोग।

संयोगिता पुनः बोली कि किसी की सिखावन या आग्रह से मैं पृथ्वीराज को कैसे भूल जाऊं! यह कहते हुए उसकी आंखो से आंसू निकल पड़े। अपना प्रण, जैचन्द का हठ और सखी सहचरियों के समझाने बुझाने पर विचार करने से संयोगिता की जो दशा थी वह बड़ी ही बिलक्षण और विचारनीय थी। क्रोध के कारण उसके आरक्त नेत्रों से जो दो चार जल कण गिरे वे ऐसे भले मालूम होते थे मानों चन्द्रमा को अमृत कुंड में पखाने से उसकी कलंक कालिमा निकल पड़ी हो। संयोगिता का यह हाल देख कर सहचरी तो चुप हो गई पर संयोगिता सखियों से बोली कि मनुष्य जीवन में बात की बात ही सब कुछ है। यदि बात गई तो जीना किस काम का इस लिये तूं मुझे ऐसा उपाय बतला कि जिसमें मेरी बात न बिगड़े। यह सुन कर सखी बोली कि चढ़ती जवानी में जवान प्रीतम से मिलना ही सलाह है। जोबन की मजेज दर जाने पर फिर संसार का सुख कहां!! यह सुन कर संयोगिता बोली चलो चुप रहो। ऐसी बातें उससे करो जो तुम्हारी बराबरी की हों, मैं तो तुम्हें तात मात समान समझ कर तुम्हारी लज्जा करती हूं और तुम ऐसी बातें करती हो। इसपर सहचरी ने उत्तर दिया कि यहां तात मात की बात नहीं है, मैं सच कहती हूं यह जवानी आम की सी मंजरी है। चित्त की चोप रूपी कोप एवं चतुरता की लहलही ललामी के बीच से उत्पन्न चढ़ती हुई जवानी पंकज के पुष्प के समान है जिस पर कंदर्प की कोमल प्रभा पड़ती और रस लोभी प्रेमियों की भौर भीर उड़ती फिरती है। सो हे सुन्दरी बसन्त ऋतु के समान तेरी जवानी के आलम का यही समय संसार सुख के उपभोग करने का है। इस पर संयोगिता बोली यह सब कुछ है परन्तु इस शरीर में स्वांसा रहते मैं प्यारे पृथ्वीराज के सिवाय दूसरे को न बरूंगी! न बरूंगी!! मैंने तो अपना मरना निश्चय विचार लिया है! अब तक केवल संभरीनाथ की आशा पर स्वांसा चलती है। हिन्दू एवं हिन्दुअत्व की हद पृथ्वीराज को भूलना भला कैसे हो सकता है? गुरुजनों के प्रत्यक्ष या परोक्ष में जो कुछ है मेरा यही प्रण है। यह सुन कर पुनः सखी बोली अरी राजकुमारी तेरे अंग अंग में अनंग की अवाई से अरविंद की सी अरुनाई आ गई है। चक्रवाक से यौवन उठ रहे हैं और भुजंग सी वेणी लटक रही है तेरे सचक्कन सटकारे कारे कारे कच चंचरीकों की कतार को मात करते हैं, तेरे पैर के तलवों से रसालपल्लवों की सी लाली झलक मारती है। इस प्रकार तूं बसन्त की नवेली वेली बन रही है। तेरा स्वाभाविक चातुरता से मधुर वचन उच्चारण करना तो मधुर मधु से कदापि कम नहीं है। हे सुकुमारी तूं पंगराज जैचंद के घर जन्म पाकर पृथ्वीराज के घर जाना चाहती है, भला विचार तो इसमें कितनी आपत्ति और कितना खून खराबा होगा। इस पर संयोगिता ने पुनः वही बचन कहे "अरी चाहे जो हो। मुझे तो अहिर्निशि सोते जागते उठते बैठने एक मात्र प्राणेश्वर पृथ्वीराज ही प्राणाधार हैं तुम सब सखी मेरी बात गांठ बांध रक्खो कि जीती जाऊं गी तो जोगनपति पृथ्वीराज के घर नहीं तो इस घर से मरी निकलूंगी।

संयोगिता ने जो कुछ अन्तिम उत्तर दिया वही दूती ने जैचन्द को जा सुनाया, जिसे सुन कर वह गुस्से के मारे लाल हो गया। उसने उसी समय आज्ञा दी कि उसे गंगा किनारे के महलों में रख दिया जाय वहीं से पानी में अपनी परछाई देख देख कर रहेगी या वहीं डूब मरेगी। यह कह कर उसने उधर तो संयोगिता को सौ दासियों सहित गंगा किनारे के महलों में भेज दिया और इधर पृथ्वीराज को निर्मूल करने का उपाय रचने लगा।

गंगा किनारे के सतखंडे महलों में निवास करती

हुई संयोगिता के पास सौ दासियों के सिवाय उस की पाठिका मदनिका ब्राह्मणी भी रहती थी। संयोगिता ने नए महलों में जाकर अन्न खाना छोड़ केवल पय और पानी के आधार पर रहकर योग साधना से पृथ्वीराज का ध्यान करना आरम्भ किया। ब्राह्मणी ने संयोगिता को सिखावन दी कि सुन—यह प्राण पंखी की तरह अनिस्थिर है अस्तु इसे ब्रह्मांड के कमल—चक्र के बीच में स्थिर कर पृथ्वीराज का ध्यान कर। उस कमल चक्र के आठ दल हैं। उसका पूर्व्व दिशावाला दल स्वेत है और उस पर प्राण जाने से शान्त रस की भावना उत्पन्न होती है। आग्नेय का दल लाल और उसका गुण आलस्य और नींद को उपजाना है। दक्षिण दिशा का दल अग्नि शिखा के समान है और वह क्रोध का बीज है। नैऋत का दल नीला और उस पर चित्त जाने से भय का आभास होता है। पश्चिम दिशा का दल श्याम है और उससे हास्य एवं अन्य आनन्द प्रमोद की उपज जानो। वायव्य कोण के दल का रंग आकाश के समान है और उस पर चित्त जाने से उच्चाट चित्त एवं चिन्ता उत्पन्न होती है। उत्तर दिशा का दल पीला है और उसमें नाना भांति के भोग विलास और शृंगार बनाव की वासना बसती है। ईशान दिशा का दल गौर वर्ण है और वहां पर लज्जा और शंका की समाधि समझनी चाहिए। अस्तु इन सबको छोड़ कर इनके गोचर स्थान अर्थात् एक मध्य में ध्यान रख कर उपासना करने से सर्व्वसिद्धि होती है और कुत्सित प्रपंचों का सर्व्वनाश होता है।



हांसीपुर प्रथम युद्ध।

(एक्यावनवां समय।)

जैचन्द की आज्ञानुसार कन्नौज राज्य की फौज दिल्लीपति को दमन करने के लिये बराबर घात में फिरा करती थी। पृथ्वीराज के यज्ञ विध्वंस करने पश्चात् कन्नौज की फौज ने दिल्ली की राज्य सीमा में उपद्रव मचाते हुए बहुत सी भूमि दबा ली और दिल्ली से केवल पांच कोस के अन्तर पर कई गांव लूट लिए। इस पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से सलाह कर निश्चय किया कि दस सामन्त तो हांसीपुर में शाही सरहद की नाकेबंदी पर रक्खे जांय और दस सामन्तों सहित कैमास दिल्ली की गढ़ रक्षा पर रहे। शेष सामन्तों सहित पृथ्वीराज को शिकार के मिस जंगल पकड़ना उचित है। तदनुसार कन्ह, भीम, पुंडीर, सलखसुत, भान, जैत प्रमार, राम राय रघुवंसी, कनकराय बड़गुजर, देवकर्ण मोरी, बग्गरी राय, चामड राय इन दस सामन्तों सहित कैमास को दिल्ली में छोड़ कर पृथ्वीराज मालवे की तरफ चल दिया और कन्नौज राज्य की प्रजा को लूटता मारता हुआ शिकार करने लगा।

हांसीपुर से कुछ थोड़ी दूर पर आसीपुर से शाही सरहद का सिलसिला चलता था। हांसीपुर के पहाड़ों में एक बलोचे सरदार रहता था। उसने जब दश सामन्तों के सीमा पर आने का समाचार सुना तो शाह शहाबुद्दीन को लिख भेजा कि यहां हांसीपुर में हिन्दुओं का जोर बढ़ता जाता है यदि आज्ञा हो तो यहां के हम सब पहाड़ी भूमिया भूमियावट ठान दें और हांसीपुर की भूमि हाथ कर लें। बेगमों के साथ जो फौज आती है उससे तो बहुत कुछ मदत मिलेगी फिर भी यदि थोड़ी बहुत ज़रूरत पड़े तो समय पर सहायता दी जाय। जब यह पत्र शहाबुद्दीन के पास पहुंचा तो उसने इस पर अपनी सम्मति प्रकाश की परन्तु उसके मंत्री ने कहा कि इस समय जो लोग हांसीपुर में हैं उन्हें साक्षात् चहुआन का बाहुबल समझिए। इस समय पृथ्वीराज और सामन्तों की ऐसी पटती है कि कुछ कहने की नहीं। राजा प्रजा में भी बड़ा बन है इसके सिवाय हिन्दुस्तान भर में सर्वत्र इस समय चहुआन की दुहाई फिर रही है। इस लिये बेगमों को सीधे मक्के जाने दीजिए, किसी के कहे में आकर नाहक की छेड़ छाड़ न कीजिए। निदान शहाबुद्दीन की माता सात सौ बेगमों के साथ मक्के शरीफ़ को प्रस्थानित हुई, साथ में बहुत से मुसल्माम सर्दारों और सिपाहियों के साथ नुसरत खां प्रेषित किया गया।

इस समय हांसीपुर में नरवाहन नामक एक नागवंसी सरदार सूबेदार था। बीर नरवाहन बड़ा-ही बलवान रणकुशल और युद्ध विशारद पुरुष था। परंतु इसे पृथ्वीराज ने बड़े मान पान से दिल्ली में अपने साथ रख लिया था और हांसीपुर में पाच सामन्तों सहित चामंडराय रहता था। समय पाकर शाह के एक सेनानायक ने आसीपुर को दबा लिया था। परन्तु नरवाहन ने अपने ही बल से शाही सेना को हटा कर पुनः वहां पर अपना अधिकार जमा लिया। तब से पृथ्वीराज ने हांसीपुर की सुबेदारी का पक्का पट्टा उसी नरवाहन के नाम कर दिया था।

गजनी से शहाबुद्दीन की माता बड़े लाव लश्कर की रक्षा में बहुत सा धन द्रव्य और दास दासी लेकर मक्के को रवाना हुई। जब उसकी सवारी दिल्ली राज्य की हद के पास पहुंची तो बलोच पहारी स्वयं सामन्तों के पास हांसीपुर को गया और उनसे उसने कहा कि शाही बेगमें मक्के को जा रही हैं उनके साथ में खुरसानखां स्वय है पर जितना रास्ता आपकी सरहद में पड़ता है उसमें उनकी रक्षा का जिम्मा

(१) "हांसी पुर सामन्त सुनिय बालोच पहारी" यहां पर 'पहारी' शब्द से नाम से अभिप्राय नहीं है वरन पहारी से पहाड़ का रहने वाला बोध होता है।

आप लोगों पर है। इस पर सब सामन्तों ने विचारा कि बेगमों का डेरा लूट लिया जाय परन्तु रामराय रघुवंसी ने कहा कि इस समय बली पज्जूनराय तो नागौर में हैं और सब सामन्त राजा के साथ हैं इस समय ठाले बैठे, फिर भी राजा की आज्ञा बिना, वृथा उपद्रव उठाना अच्छा नहीं। इस पर और तो सब चुप रहे पर चामंडराय कब मानने वाला था उसने उलटा रामराय को मूर्ख बना दिया और सब को अपनी बातों में गांस लिया। पज्जून राय को भी इस बात की खबर लगी और उसने भी मना कर भेजा, परन्तु हांसीपुर की सामन्त मण्डली ने किसी की एक न सुनी और किले के मालिक बड़गुज्जर से पूछे बिनाही चुपचाप कूच करके बेगमों के डेरे पर डांका जा डाला।

शाही बेगमों का डेरा नदी के किनारे एक उत्तम उपबन में पड़ा हुआ था। आधी रात के ऊपर जब सामन्तों ने छाप मारा तो बेगमों के साथी सिपाही क्या पीनस लेने वाले कहार तक भाग गए बेगमों को अकेला पाकर सामन्तों ने उनकी बुरी दुर्दशा की। यहां तक कि उनके वस्त्र तक खींच लिए। उस समय वे बेगमें बोलीं अरे सामन्तो! अधर्म न करो। यद्यपि हमारे तुम्हारे भिन्न भिन्न दो दीन हैं पर दोनों का मालिक एकही खुदा है। दुनिया में खुदा से जुदा है क्या? परन्तु प्रमादी पुरुषों को भेद देख पड़ता है। ऐसा नहीं है कि तुम हमको दुःख देने से स्वर्ग पा जाओ। सुकर्म का अच्छा और कुकर्म का बुरा हिन्दू मुसल्मान दोनों दीनों को एक सा फल मिलता है। इस दुनियां में जो ओछी बुद्धि के होते हैं जिनकी रीति नीति ओछी होती है वेही लोग ओछे कहाते हैं वे जरा जरा सी बातों पर जमाने भर में टकराते हैं धक्के खाते फिरते हैं और अन्त में (संसार सागर में) तिनके की तरह उतराते हुए वह कर मरजाते हैं; परन्तु जो लोग धीर गंभीर होते हैं वे ही बड़े कहाते है और संसार में कमाल ऐशो अशरत और यश पाते हैं। सो हे चामण्डराय! ऐसा नीच विचार न कर कि दूसरे दीन को दुःख देने से तू सुख पा जायगा। परन्तु चामण्डराय ने एक न सुनी बेगमों के डेरे डोरे डोरे करके लूट लिए और तब वह सब सामन्तों सहित हांसीपुर को लौट आया। उधर अधमरी होकर बेगमों ने शाह के सामने सब दुःख रो रो कर पुकार मारी।

बेगमों ने शहाबुद्दीन से कहा "ऐ सुलतान आपको परवरदिगार ने शहंशाह का रुतबा अता फरमाया है। तुझे और तेरे तावेदारों को माकूल मर्दुमी और कुव्वत हासिल है, मगर लानत है तेरे तावेदारों को जो खाने के अपने और अचैने के पराए हैं, जिनको न तो नमक का ख्याल है न दीनदारी की मलाल है। हुक्मउदूल नमकहराम नौकरों का न होनाही भला है!! अफसोस जिस मालिक की आन पर नौकर जान न दें वह मालिक भी हुआ न हुआ सा है। आपके जीते जी हमारी (तुम्हारी स्त्रियों की) ऐसी बेइज्जती होना कितनी शरम की बात है।" उसकी मा भी बोली ऐ नूरचश्म लख्तेजिगर बर्खुर्दार बच्चे मैंने तुझे नौ महीने हमल में रखकर जिस तरह से परवरिश की है वो मैं ही जानती हूं—हमल के वक्त औरत को क्या तकलीफ होती है सो कोई क्या जाने, जाड़े में जाड़ों गरमी में गरमी और मौसिम बारिश में सैकड़ों फितूर बर्दाश्त करने के बाद बच्चा जना जाता है। ऐसी अजब अज़ीज़ मा सी चीज से जो औलाद नफरत करती है उसे जमीन पर क्या दोजख में भी लगह नहीं दी जाती। ऐसे अहसान—फरामोश मर्द का मुँह देखना भी मुनासिब नहीं है। यह कहते हुए उस वृद्धा की आंखों में आंसू भर आए। माता की ऐसी दीन हीन दशा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया। उसके क्रोध से दोनों नेत्र अंगारे से लाल हो गए, होंठ फड़कने लगे और धुक धुकू धक धक धड़कने लगी। उसने उसी समय अपने सब सलाहकार मुसाहिब और मन्त्रियों को बुलाकर सैनिक साज सामान सजने की आज्ञा दी और मंत्री तत्तारखां को सहायकों के नाम परवाना भेजकर उनकी कुमक जुटाने को कहा। शाह की

ऐसी आज्ञा होतेही बात की बात में सब सेना इकट्ठी होगई। तब तत्तार खां ने तख्त के सामने जाकर दाहने पैर के अंगूठे के बल खड़े होकर कोरनिस करके अर्ज कियां कि इर्शाद बजा लाया गया। फौज हाजिर है।

शहाबुद्दीन ने अपने मुसल्मान सर्दारों को खिताब दे और सिरोपाव पहिना कर कहा कि जो हांसीपुर को लूट कर अपने कब्जे में करे वही मेरी ऐन मेहरबानी का हकदार होगा। इस पर सब सर्दारों की एक गुप्त गोष्ठी होना निर्धारित हुआ। निदान उस मजलिस में शाह ने कहा कि दुश्मन को जेर कर अम्माजान के दिल को राहत देने के लिये जो कुछ मुनासिब हो करना चाहिए। तब खुरासान खां बोला कि बुद्धिमान तत्तार खां जो कहे सो सलाह पक्की। यह सुन कर तत्तार खां बोला कि पहिले यहां से कुछ फौज भेजी जाय जो चढ़ीसवारी हांसीपुर को फतह करे और फिर बढ़ कर दिल्ली पर धावा करे। दिल्ली पर धावा होने के समय शाह का भी शामिल होना शोभा देगा। यह सुन कर शाह बोला "रे बेवकूफ तत्तार तू क्या बकता है। मै कई बार पकड़ा गया और तुम लोग भाग भाग आए इसी से ऐसा कहते हो। मै अब की बार कुरान की कसम खा कर कहता हूं कि दुश्मनों को नेस्तनाबूद किए बिना न लौटूंगा। यह सुन कर तत्तारखां ने उत्तर दिया कि यह कैसा हुक्म होता है हांसी की सत्यानाशी करदूं और सामन्तों को पकड़ कर शाह सलामत के सामने सात सलामें कराऊ तो मेरा नाम तत्तार खा, नहीं तो नहीं!!! युद्ध में जुटने पर अपना उनका जी एक कर दूंगा। तब तक बलोच पहारी भी आ पहुंचा और उसने अर्ज किया कि हांसी की मुहिम के लिये मुझे हुक्म मिले। उसके प्रस्ताव को शाह ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और उसे अपने हाथ से तलवार बँधा कर सब सेना का सिरे सरदार स्थापित किया और तत्तार खां और निसुरत्तखां को उसकी सहायता के लिये दिया। इस प्रकार शाही सेना चार तुंगों में हो कर जुमैरात (बृहस्पतिवार) को हांसीपुर पर रवाना हुई।

जब शाही फौज सिन्धु नदी को पार करके पहाड़ों की तराई मे जा पहुंची, तब वहां से गुप्त चर रवाना हुए। गजनी से जो चार फौजें चली थीं वे इस प्रकार थीं। पहिली सेना का नायक बलोची पहारी था। दो सेनाएं जो कि बराबर चलती थीं उन में से एक तत्तार खां के और दूसरी खुरासान खां के ताबे थी। चौथी अनी का स्वामी शहाबुद्दीन आप था। इस समय शाही सेना के सब सिपाही और सर्दार बड़े जोश मे थे। हर एक का हौसिला चढ़ा बढ़ा हुआ था। जब शाह मीर जमरोज की सरहद में आया तो वह भी आगे बढ़ कर शाह से आमिला और सेना सहित शाही लश्कर मे शामिल होगया। यहां पर पहाड़ी रास्तो मे रसद आदि का प्रबन्ध करके सब फौज आगे चली और शहाबुद्दीन स्वयं सब सेना का सेनानायक हुआ। यह लश्कर दिन दूना रात चौगुना पड़ाव करता हुआ हांसीपुर से दस कोस के ऊपर आगया। तब सामन्तो को खबर हुई। परन्तु समाचार पातेही चामुण्डराय ने चट से किले की मोरचे बन्दी करली। मुसल्मानी सेना का बल इस समय बढ़ा हुआ था। यवन सेना की चारों तुंगों ने किले को बीच मे देकर सब नाके बांध लिए थे किले में रसद बरदास पहुचने के सब मोंके अच्छी तरह बद थे। यहां तक कि किले वाला कोई बाहर के किसी आदमी को सन्देसा तक न पहुँचा सकता था। मुसल्मानी सेना मे इस समय हब्सी रूमी खिलची (खिलजी) इलब, खुरेस, बुपारी, सय्यद, सैलानी, सेख, चगत्ताई, पीर, तुरक, बलोच आदि भांति भांति के मुसल्मान जमा थे। एक दिन निस्तब्ध पड़े रहने पर जब सामन्तो की तरफ से कोई सीधा सदेसा न पाया तब उन्होंने व्यूह बद्ध होकर किले पर चारों ओर से आग बर्साना आरम्भ किया। किले से भी उसका जवाब दिया गया। दोनों ओर से खूब आग बरसी, पर किसी ने चिक्कस न खाई। अन्त में कुछ थोड़ासा दिन शेष रह गया और जब सामन्तों ने जान लिया कि किले में रहकर जान दे

(१) जमीन चूमकर तीन बार सलाम करने को कोरनिस कहते हैं।

देने के सिवाय और कोई यत्न नहीं हो सकता, तब सब ने किले से निकलकर भागना चाहा, परन्तु रामराय ने कहा कि ऐसा करना ठीक नहीं, यद्यपि हमारा जोर कमजोर है परन्तु तारीफ इसी में है कि अब की बार फिर भी बादशाह को बांध लिया जाय। वक्त पड़ने पर हिम्मत न हारना चाहिए। लोहाना भी बोला "हा ऐसाही करो जिसमें सुकीर्ति विस्तृत हो; अपकीर्ति का काम न करना चाहिए" चामडराय बोला माना कि शाही सेना का बल बढ़ा चढ़ा है और हमारा जोर कम है परन्तु कहा है कि 'सड़ी शिकार दाल को पड़ेगी हीं'। हम लोग मार तलवारों सारी मुसल्मान सेना छिन्न भिन्न कर देंगे। इस लिये सबेरे मैदान में बढ़ कर हाथ किए जांय। उस दिन दिन के शेषांश भर युद्ध होता रहा सायंकाल के समय दोनों सेनाएं विश्राम करती रहीं।

प्रातःकाल होतेही अचलेस खीची, गोयंदराय, महनसिंह, नरवाहन, नरसिंह समरसी, दोनों भाई महनंग मोरी, देवकर्न साँखुलासूर, भीमपुडीर, जैतप्रमार, बग्गरी, राय, चामड राय और सब का सर्दार रामराय रघुबंसी आदि सामंत कील कांटे से सन्नद्ध हो युद्ध में प्रवृत्त हुए। इधर से राजपूत उधर से मुसल्मान सिपाही दोनों में परस्पर मार मच उठी। दोनों दलों में खूब घमासान युद्ध हुआ, रक्त की नदी बह निकली और लोथों के ढेर लग गए। कोई कोई सूरमा पैर कट जाने पर केवल धड़ से तलवार लिए लुढ़कता फिरता ऐसा मालूम होता था मानो कोई बौना भीमकाय होकर कहर कर रहा हो। जिन के शरीर में सनाह भेद कर घाव लगे थे वे तो ऐसे मालूम होते थे मानो सफेद चद्दर पर रंगरेज ने महावर के ढारे ढरे हों इसी प्रकार मार होते होते तत्तार खां की अनी पिछल पड़ी और सामन्तों की जीत रही। इस युद्ध में शाही सेना का करीब आधा हिस्सा खेत रहा और १०० हाथी मारे गए और सामन्तो की तरफ के केवल २० सिपाही मारे गए, परन्तु शाही सेना मोरचे पर से करीब २५० कदम पीछे हट गई।

दूसरे दिन यवन सेना की ओर से आलीलखां ने अग्रसर होकर आक्रमण किया। उसने कहा कि मै शाही सरहद का प्रकोट हूं, मेरे रहते कौन ऐसा है जो शाही जमीन पर दखल कर सके। चहुआन सेना के सामन्त तो विचारे हैं क्या चीज़! एक बार जम के भी छक्के छुड़ा दूं तो मेरा नाम।" फिर भी लोहा बजा, पहिली ही उचौनी में सामन्तो ने आलील खां को पांच डोरी पीछे हटा दिया, परन्तु उसने फिर से जोर बाध कर धावा किया और डँट कर हाथ फटकोरे परन्तु अन्त को सामन्त मण्डली ने समस्त शाही सेना बिड़ार दी और हांसी का किला बेदाग बचा लिया।



द्वितीय हांसी युद्ध।

[बावनवां समय।]

निदान दूत ने सुल्तान शहाबुद्दीन के सम्मुख जाकर अर्ज किया कि हुजूर हिन्दुओं ने हमारी सब फौज हरा दी और सब रखत बखत लूट लिया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन के नेत्र आरक्त होगए। उसने दीन इसलाम के आदि पैगम्बर महम्मद साहब की दुहाइ देकर जंगी तैय्यारी होने की आज्ञा दी। हुक्म होतेही रूमी, हेरवी, पेरवी, भप्पर, गप्पर समरकन्दी, कासकंदी, बलोच, तकी तुर्की, मकराव, उजबक आदि नाना भांति के मुसल्मान सिपाही सज कर दुरुस्त होगए। इनके सिवाय अराकान के पहाड़ी लोग भी शाही लश्कर में आजुटे। इन लोगों का रंग घूमला और सिर पर बहुत कम बाल थे। बाज बाज लोगों के तो घोड़े के से मुँह और सूप से कान थे वे प्रायः रोज दो दो दुंबे खाते थे। वे लोग मल्लयुद्ध में तो पहाड़ के समान अटल थेही साथ ही इसके बाण चलाने मे भी विलक्षण दक्ष थे। उनके धनुष पर कइ टक की प्रत्यंचा चढ़ती और प्रत्येक मौ मौ तीर वाले दो दो तरकस कसे हुए थे। वे लोग बाण की अनी पर बाण मार कर उसे मोड़ देनेवाले थे, फिर भला उनसे आसमान मे उड़ता हुआ पक्षी तो बचनाही क्यों। ऐसे सिपाहियो का बड़ा भारी लश्कर जोड़कर शाह ने हांसीपुर पर आक्रमण किया। उसने उसी पहिले पड़ाव से सब सेना को आठ हिस्सों मे बाँट कर आठो दिशाओं को रवाना कर दिया और केवल पचास हजार सवार और कुछ हाथियो के साथ आप स्वयं सामने से हांसीपुर पहुचा।

शहाबुद्दीन ने दूत द्वारा किले मे कहला भेजा कि या तो इस वक्त लोह लो, या खिड़की के रास्ते से निकल जाओ। शाह का ऐसा सन्देसा पाकर सामन्तों ने परस्पर सलाह की, कि अब क्या करना चाहिए? इस पर किसी किसी ने कहा कि निकल चलना सलाह है। दूसरे की भूमि पर मरने में कौन सी भलाई है, सो नहीं समझ मे आता। इस पर पज्जून राय कूरभ बोला, भाइ हम अपना पराया कुछ नहीं जानते हमारा काम तो मरना मारना है! 'कल्ह नहीं तो आज ही सही,' एक न एक दिन मरना अवश्य है फिर क्यो अपकीर्ति लेकर नाम को कलंकित करें। निदान चामण्डराय, जैतमी, रामराय पज्जून, प्रसगराय, चन्दपुराडीर, महनम मोरी, देवराव बग्गरी आदि सामन्त लड़ने पर मुस्तैद होगए परन्तु रात्रि होते शाही सेना किले के चारों तरफ अधिक उमड़ पड़ी। यह देखकर सब सामन्तों का मत पलट गया, परन्तु एक मात्र देवराव बग्गरी ने हिम्मत न हारी। और तो सब लोग रात्रि को निकल भागे केवल बग्गरी वीर ने सारी रात भगवती के भजन मे बिताई। नागौर मे जो सामन्त लोग इस समय सहायतार्थ आए थे वे भी भागने मे सहमत हो गए, परन्तु वे लोग बाहर थे इसलिये उन्होंने दक्षिण की तरफ से शाही सिपाहियो को काट छाट कर रास्ता साफ कर दिया जिससे किले के सामन्तों को भागने में और भी सुबीता पड़ा।

सच है, जिसके मुँह पर पानी नही रहता और जो मरने से डरता है वही ऐसे मौके से निकलता है। चामण्डराय, सावलासूर, गोयन्दसय, भोंहा चन्देल आदि सब सामन्त निकल भागे परन्तु देवराव बग्गरी न निकला। इस समय जो लोग किले से निकल भागे वे वास्तव में निकलने वाले नहीं थे, परन्तु होनहार ऐसी होती है कि उस वक्त सब अक्ल बक्ल भूल जाती है। इसलिये किसी को कायर कहना वृथा है, क्यों कि होनहार प्रबल होती है। रामचन्द्र का स्वर्णमृग के पीछे जाना, भरत का हनुमान जी पर बाण चलाना, विक्रम का जीव रक्षा के लिये कौवे का मांस खाना, इन्द्र का अहिल्या के कारण कुरूप होना, नल का दमयन्ती को त्यागना, आदि सब घटनाओं का

(१) इस समय यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि शहाबुद्दीन कहां पर था। परन्तु अनुमान है कि वह सिन्ध पार करके वहीं पर पड़ा हुआ था क्योंकि सिन्ध नदी तक सेना आने के बाद फिर बादशाह का जिक्र नहीं किया गया।

मूल होनी ही है। फिर किसी को क्या दोष दें!

प्रातः काल होतेही शाही सेना का आक्रमण हुआ। किले में देवराव बग्गरी के साथ कल्हन, कमधुज्ज, सांखला सूर और अचलेस खींची ये सामन्त और भी थे प्रातः काल होतेही तत्तार खां ने शपथ कर के कहा कि अब दम की दम में किला खाली कराकर छोड़ता हूं। यह कहकर उसने किले पर चारों तरफ से एक बारगी हल्ला बोलने की आज्ञा दी। हुक्म पातेही, मुसल्मान सिपाही चारों ओर से अल्लाह अल्लाह कहते हुए झुक पड़े और किले के ऊपर अग्नि वर्षा करने लगे। इधर से सामन्त भी वार बचाने के लिये उद्यत हुए बारह दिन पर्य्यन्त बराबर लड़ाई होती रही और देवराव बग्गरी अकेला वार बचाता रहा। जब शाह ने देखा कि इस तरह से पेश नहीं पा सकते, तब उसने समस्त सेना के दो दल कर दिए। एक दल लड़ता तो दूसरा विश्राम करता और जब वह श्रम से श्रान्त होता तो दूसरा लोह लेता। इस प्रकार से अब रात्रि दिन बराबर युद्ध जारी रहने लगा। शाही सेना के व्यूह में सब से आगे हाथी लगाए गए और तिन के पीछे पैदल दल चला। होते होते किले के एक हजार सिपाही साखुला सूर और अल्हन कुमार इन सामन्तों के मारे जाने पर शाही सेना किले में घुस पड़ा, तब शेष सिपाहियों सहित बग्गरी राव तलवार ले युद्ध करने लगा। तलवार के युद्ध में तो राजपूत वीर एकही थे। उन्होंने मुसल्मान सिपाहियों को काट काट कर अटब लगा दिए। इधर से ये उधर से वे, जब दोनों एक साथ एक दूसरे पर वार करते तो दोनों गले मिले से रह जाते थे, मानो दोनों ने एक दूसरे की वीरता का पूरा परिचय पाकर भुज-भर भेंट की हो। गीध और चील्ह बड़े बड़े मांस के लोथड़ों को उठा करके आसमान में ले जाते और वहां परस्पर लड़ मरते थे। जवानों के सहजोर वज्र से सीने पर कटार क्या लगती थी मानों प्राण पखेरू के लिये माया मोह मय पिंजर में निकल जाने के लिये स्वर्ग का रास्ता बनाया जाता था। इसी मारा मार में जब देवराव बग्गरी मारा गया तो अप्सराएं स्थभित होगईं और सूर्य्य के रथ का चक्का अचल होगया। देवांगनाएँ सोचती ही रहगईं और शिवजी ने उसका मुंड रुण्डमाल में पोह लिया। देवराव बग्गरी के शरीर में जब तलवार के चौंव्वालीस गहरे घाव लग चुके और शरीर से शीस भी अलग जा छटका तब रुण्ड ने कटार से वार किए और तिल तिल होकर मरते तक शत्रु सेना के सहस्रों सिपाही मार दिए। इस प्रकार से भूनिंगराय का पुत्र बग्गरी राय स्वर्गवासी हुआ और उसके साथी भी रानिग राव दोनों भाई, मोरी सर्दार, सांखला सूर, नाराइन, पज्जूनराय का पुत्र पंचाइन, रघुबंसराय, आदि सब लोग मारे गए। धन्य है वीर बग्गरी को! जैसी करनी उसने की वैसी न तो पहिले किसी ने की थी न अब कोई करेगा। यदि कोई वैसा हो तो कर दिखावे। आलीलखां ने किले पर शाही निशान रोप दिया। केवल सौ राजपूत सिपाही बचे थे सो वे दिल्ली को चल दिए।

चन्द बरदाई कहता है इधर तो यह हाल हो रहा था, उधर एक दिन राजा पृथ्वीराज ने स्वप्न में देखा कि हासीपुर की भूमि धवल वस्त्र धारण किए हुए उसके पास आई और बोली कि आज दो दिन से मेरे किले पर बराबर गोला गोली चल रहे हैं। आक्रमण कर्ताओं के आतंक में आकर सामन्तों ने भी किला छोड़ दिया, परन्तु मैं न भागी। इस पर पृथ्वीराज ने पूछा कि तू तब भी क्यों न भागी। उसने उत्तर दिया कि वह सामंत जिसकी मैं व्याह बसी थी स्त्री की तरह भाग निकला; परन्तु साखुला सूर और देवराव बग्गरी ने यही कहा कि जिसे जाना हो जाओ हम तो जीते जी राजपूत बाने की लाज न जाने देंगे बस मैं उन्हीं दोनों की आखें देख रही थी। परन्तु जब वे भी समाप्त होगए तब म्लेच्छों ने मुझे अपना लिया। इस बीतक की बात विचार कर चहुआन के चित्त की विचित्र दशा होगई। स्वामिधर्मी सामन्तों की मृत्यु पर तो वह पश्चाताप करता और

मुक्त भूमि का जाना जानकर क्रोध की ज्वाला में जल जाता था; परन्तु भागतों के हावभाव का आभास होतेही उसे हँसी आता थी। उसने उसी समय सामन्त-शिरोमणि कैमास को बुलाकर कहा "इस समय हांसीपुर की भूमि शत्रुओं से ऐसी नठी हुई है जैसे बाबली * के वक्त हाथी, सोच के सबब से स्नेह, और अच्छे गुणी के संमुख अनूठी विद्याएं नठ जाती हैं। इसलिये कुछ ऐसी सलाह विचारो जिसमें हांसी का उद्धार हो। तब कैमास ने उत्तर दिया कि इससे तो ऐसा मालूम होता है कि यह कोई दैवगति है, क्योंकि ये सामन्त सहजही भागने वाले नहीं हैं! कैमास ने कहा कि महाराज इस समय रावल समरसीजी के पास सहायतार्थ सन्देसा भेजना उचित है, उनके आजुड़ने से सहजही काम बन जायगा। तदनुसार एक दूत चित्तौर को भेजा गया। उस दूत के मुख से ऐसे समाचार सुनते ही समरसीजी हांसीपुर को चलदिए।

तबतक हांसीपुर से भागे हुए सामन्त लोग भी दिल्ली आ पहुंचे। उन्हे पृथ्वीराज ने अपने पास बुलाया और सब से सादर गले मिल कर कहा "भाइ! हमारा तो बल भरोसा सब आपही लोग हो। बीती बात का विचार न करो, ईश्वरेच्छा से जो होनी थी सो हुई।" तब वे सामंत बोले अन्नदाता बात तो यों है कि जिस राजपूत के जीते जी जबर्दस्ती जमीन जीत ली जाय उसका जीवित रहना भी मरे के समान है। इस पर पृथ्वीराज बोला इस से क्या! 'समय करे सो कोइ न करे,' एक समय सुग्रीव स्त्री को रक्षा न कर सका, अर्जुन के साम्हने द्रोपदी का चीर खीचा गया, श्रीकृष्ण कालयवन के साम्हने से भाग निकले, और पांडवो को बनवास भोगना पड़ा। सुनो हे सामन्तो तुम लोग अजेय और सहजोर हो, इस लिये ऐसा करो जिसमें बात रहे। यह सुनते ही सामन्त लोग लाल लाल आखें करके बोले तो बस "अब विलंब कोहि काज' कूच कीजिए और चढ़ी सवारी धर लीजिए। निदान पेशखेमा लेकर प्रधान और खवास तो उसी दम रवाना किए गए और पंचमी को सामन्त मंडली सहित पृथ्वीराज ने कूचकिया। पृथ्वीराज धनुषबाण बांधे हुए भारथ के दल में पारथ सा सोहता था। उसके रतनारे नेत्रो में त्रिनेत्र का सा तेज देख पड़ता था और उसकी भोहों को स्पर्श करती हुई बड़ी बड़ी मूछें इन्दु की सी कलाएँ जान पड़ती थी। सेना समूह के बीच स्थित सभरी नाथ तरैयों के बीच पूनों कैसा चंदा देदीप्यमान होता था। उसके साथी सूर वीर सिपाही अंग अंग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित थे, उसके लश्कर के हाथी साक्षात् कज्जल गिरि से और उनके गंडस्थलों से झर हुए मद पनार पावस के झरने से जान पड़ते थे। रणवाद्यों का बाजा बदर की गरज से कम न था। कहीं जांगड़ा कालिगड़ा अलापते, कहीं नकीब पदवी कलापते, कहीं बदी बिरद गाते और कहीं कवि कवित्त सुनाते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे पावस में मोर और पपीहादि पक्षी बोल रहे हों। घुड़ सवारों के नेजों की अनी इतनी घनी थी कि बीच से परेवा पर भी नहीं मार सकता था। कोई कहां तक कहे उस चहुआन सेना के आतंक से दसों दिग्पाल सशंकित हो उठे और कमठ की पीठ सटपटा उठी।

खबर पाते ही रावल जी तो पृथ्वीराज से ही पाहिले चल चुके थे अस्तु वे दिन दूने रात चौगुने पड़ाव तै करते हुए चार पाच नौ दिन में हांसीपुर जा पहुंचे। साथ में उनके भाई अमर सिंह जी भी थे। जब तत्तार खां ने रावलजी के आने का समाचार सुना तब मारे खुशी के फूल उठा। रावल समरसिंह जी तत्तार खा को बहुत खटकते थे अतः उन्हें अकेला पाकर तत्तार की छाती फूल उठी। उसने खुरासान खा की अनी को हरावल में करके तुरन्त ही रावल जी पर हल्ला

(१) यह शब्द कवि ने नहीं लिखा है।

* मतवारा हाथी मैदान मे छोड़ दिया जाता है चारों ओर से सवार और लाटमार लोग उसे घेरते है वे लोग उसे चारो तरफ से मारते है और वह उनपर झपटे करता है इसी खेल का नाम बाबली है कहीं कहीं रमता भी बोलते हैं रियासतो मे यह खेल अब भी देखने मे आता है

बोल दिया। इधर से नाहरराय और अमरसिंह जी ने हरावल का मोरचा लिया। उधर से मुसल्मान सेना ने बिसमिल्ला बोला और इधर से अमरसिंह जी ने जै एक लिंगजी कह कर गैटा उठाया। बाग बतलाते ही घोड़ा क्या कस के सिर का वज्र, आसमान का चील्ह या चिड़िया के सिर पर का बाज हो गया। साथही इसके अमरसिंह की चपला सी चंचल तलवार भी मीर बन्दों को मार मार गिराने लगी। सिपाही सिपाही और सर्दार सर्दार की भी परस्पर ऐसी ठनी कि घना घनी की मार में परस्पर लोहे की झार से झरती हुई अग्नि बुन्द बर्षा की बहार बतलाती थी। राजपूत सेना ने यवन अनी को आध कोस पछेल दिया। इसी तहर ठेलमेठल रेला पेल युद्ध होते होते अमरसिंह जी की खुरासान खा से ठन गई। बड़ी देर तक दोनों की बराबरी होती रही अन्त में खुरासान खा के एक हाथ में अमरसिंह जी दो होगए। अमरसिंहजी तो इस असार संसार से चलकर अमरपुरी में जा बसे और यहा कसामसे की रमा मच उठी।

भाई का पतन होते देख रावलजी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने ऐसी मार की कि सारी यवन सेना क्षणमात्र में छिधर तिधर तीन तेरह हो उठी। संघटित शत्रु सेना को काटते छाँटते हुए रावलजी ने अपने भाई के मारिया खुरासान खा को भी मारलिया। खुरासान खा को खपता हुआ देख, तत्तार खां ने तैश मे आकर अपने घोड़े को एड़ लगाई और सिपाहियों को ललकारता, तलवार फटकारता हुआ वह आगे बढ़ा। उसके साथ में पाच सौ तातारी जवान भी तेगा चलाते हुए अग्रसर हुए। इस अवसर पर राजपूत सेना में से पचीस कबन्ध खड़े हुए। समरसिंह इस समय अपनी सेना के बीच मे थे। मुसल्मान सेना का ऐसा जोर बढ़ा कि जिसे देख कर समरसिंह जी भी मैदान में आ खड़े हुए। उस समय हिन्दू मुसल्मान दोनों दलों में ऐसी मार मची कि आकाश से देखती हुई अप्सराएँ पुष्प वृष्टि करतीं और भूत बेताल ताली दे दे कर नाचते गाते नहीं सिहाते थे। समरसिंह जी की सेना के सुबह से दो पहर तक केवल १७ सर्दार खेत रहे थे कि तब तक पृथ्वीराज भी आपहुंचा। पृथ्वीराज के पहुचतेही हिन्दू सेना का बल बढ़गया। इधर से राजपूत सिपाही लम्बे हाथ देते शत्रु सेना में पिलते जाते थे उधर से मुसल्मान भी पीछे को पैर देना हराम समझते थेइस ठसाठसी में घोड़ों की ऐंठदार गरदन नवोढ़ा के घूघट को मात करती थी। बानैत वीर अपनी अपनी पैंज पर ऐसे अटल थे जैसे पनिहारी सदा अपने सिर पर के घड़े पर सुरत रखती है। ऐसे वीर पुरुषों के कट मरने पर उनकी आत्मा चिन्मय ज्योति में इस प्रकार से तन्मय हो जाती है जैसे दिये के बुझने पर उसकी ज्योति का पता नहीं पड़ता। जब कभी टोप फट जाने पर खोपड़ी निकल पड़ती तो ऐसा मालूम पड़ता मानो चन्द्रमा का पेट फाड़ कर राहु निकल पड़ा हो। बख्तर पर खाली हाथ पड़ जाने से धार भरे हुए दुधारे केतकी के पुष्प की पखुरी से नजर आते थे। परन्तु इस समय कायरों की बुरी दशा थी। वे बिचारे दूसरों को मरता देख आप हाथ मोड़ते हाय हाय करते और झमा खाकर गिर गिर पड़ते थे।

रावल समरसिंह जी के भाई अमर सिंह जी और उनके खवास दोनों को गहरा घाव लगा था। अमरसिंहजी अब तक जीते थे परन्तु सायंकाल होते होते वे चल बसे। और स्वामि सेवी खवास जो अब तक उन्हें कौवे गीधो से बचाए हुए था सो भी निपटा रावल समरसिंह जी की सेना तो पहलेही से लड़ रही थी इसी पर सामन्त सेना के आजाने पर हिन्दू दल की पट लगी। पहिले तो दोनों दलों ने एक में मिलकर मुसल्मान सेना का मुह मोड़ दिया परन्तु मौका पाकर फिर दोनों दल अलग अलग हो गए और उन्होंने यवन सेना को बीच में दे लिया। इतने में सन्ध्या हो गई और दोनों श्रमित

(१) "गटा" घोड़े का बाग के उस हिस्से को कहते है जहां पर सवार पकड़ता है। उसी के इशारे से घोड़ा चलता, खड़ा होता और लौट फेर करता है।

सेनाएं विश्राम करने में तत्पर हुईं। इस युद्ध में तत्तार खां घायल हुआ. खुरासान खेत रहा, छओं भाई हबूसी,बलोच पहारी, महनंसिय मेर आदि साठ सर्दार मारे पड़े। याकूब खां, मारूफ खा, खूब खां, और तत्तार खां आदि सरदारों ने बड़ी बीरता से युद्ध किया। राजपूत सेना में से महनंगराय भट्टी ने विलक्षण बीरता दिखाई।

प्रातः काल प्रभाकर की प्रभा का आभास होतेही प्रत्येक कर्म्म का मानो पुनः संस्कार होता है। चोर चुपके से चल देते हैं, चकवा चकवी से मिलतें हैं, तरुलता पल्लव प्रफुलित हो उठते हैं, जहां तहां भ्रमर भन्नाते हुए भ्रमण करने लग जाते हैं, सौरभित समीर सञ्चालित होती है, और उड़गन अदृष्ट हो जाते है। इसी प्रकार और भी जानो। भास्कर भगवान की किरणों की प्रभा पाकर कमलकली तो मानो सहस्र मुख से मुस्करा उठती है। पूर्व्व दिशा मे लालिमा की झलक पड़तेही संसार के कालिमामय कर्म तड़ाक से कुंठित हो जाते है। देवालयों में आनन्द ध्वनि होने लगती है और पण्डित सुन्दर सीतल जल से स्नान कर पाठ पूजन करने लग जाते है इस प्रकार जगत के जाल रूपी तिमिर को तोड़कर एक चक्के के रथ पर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करनेवाले जगत के जीवधारी मात्र के प्राणाधार सूर्य्य देव सब का शुभ करते है।

ऐसे सूर्य्य भगवन का उदय होते ही दोनों दल पुनः युद्ध के लिये सन्नद्ध होकर रणक्षेत्र में आ उपस्थित हुए। उस समय सेना के बीच में स्थित पृथ्वीराज के मुख पर मध्यान्ह के सूर्य्य की सी प्रभा भासित होती थी। उसके साथी राजपूत वीर भी आतंक में आकर नाना प्रकार के हुंकार धुंकार के शब्द करते हुए कोलाहल मचा रहे थे और क्रोध के मारे उनके नेत्र अंगारे से आरक्त हो रहे थे। इशारा होते ही दोनो दल के असवार पैदल सब लोह की लपट से लपटने के लिये लपक पड़े। सब से पहिले पृथ्वीराज ने ही यवन हरावल के एक हाथी के कुभस्थल को कृपाण से काट दिया। उस समय ऐसा भाव भासित होता था मानो मेघों के बीच बिजली समा गई हो और रक्त के साथ घाव से निकलती हुई तलवार तो कज्जल गिरि से गिरती हुई त्रिवेणी की सी धारा भान होती थी। इस समय पृथ्वीराज भारथ में पारथ सा सुशोभित होता था, और उसका सखा भीमकाय चामंडराय भी भीम से कम न था। उधर से मुसल्मान लोग भी रात्रि भर मंत्र सलाह करके और प्रातः काल से कुरान और सीपारे पढ़ कर आए थे। अस्तु दोनों दलों में ऐसी घली कि जैसी कभी किसी ने देखी क्या सुनी भी न होगी। फिर किसी कबि की क्या मजाल है जो उसका यावत् वर्णन कर सके। बानों की सरसराहट गोलियों की झरझराहट और तलवारो की झनझनाहट एवं खटखटाहट के कारण अपना स्वर आप को सुनाई नहीं देता था। जहां तहां चमचमाती हुई उज्वल तलवारें ऐसी मालूम होती थीं मानों बिजली ने हजार कला होकर दर्शन दिया हो। यदि एक एक हाथ हाथी का किलाया काट देता, तो दूसरा दूसरों से दांत उखाड़ लेता था। मुसल्मान लोग जुदे पटैती के हाथ फेरते हुए शत्रुओं के शीस कलमों से उतार लेते थे। इस युद्ध में इतना रक्त प्रवाह हुआ कि शेष नाग का सिर भीग गया। कमठ सटपटा उठा और दसों दिशाओं के दिगपाल दहल उठे। देवता लोग दांतों उँगली देकर रह गए। इस प्रकार से समस्त दिन संग्राम होते होते अन्त में राजपूतों की जीत रही और यवन अनी परास्त होकर पीछे हट गई। मुसल्मानी सेना के खुरासान खां, रूपराय हिन्दू और भीमसिंह ये तीन भारी सर्दार मारे गए—चाहुआन सेना मे से बलिभद्र भट्टी, जगली राव, किल्हन राय और बनबीर ये योद्धा खेत रहे और हुसैन खां का पुत्र बहुत घायल हुआ। इसीपर मुसल्मानी सेना धर भागी और तत्तारखां तो ऐसा तीन तेरह हुआ कि फिर उसका पता भी न पड़ा। खेत साफ कराए जाने पर सब तेरह सामन्त अशक्त घायल पाए गए। हासीपुर का पहिला पतिकदार नबराहन गौर मृतप्राय पाया गया। प्रताप

सिंह, सागर सिंह, मानसिंह चन्देल, महनंगमोरी, पूरनराय प्रमार, केसरी सिंह, नाहरराय कन्ह का पुत्र, रघुवसचंद चंदेल, नरसिंह का पुत्र हरसिंह और मल्हनराय, इस युद्ध में सब इतने राजपूत मारे गए। किले पर राजपूती निशान रोप दिया गया। घायलों को लाकर उनकी मल्हम पट्टी का प्रबंध किया गया और पृथ्वीराज और समरसिंह सब सेना सहित हांसीपुर में रहे।

इस प्रकार से हांसीपुर के युद्ध में शत्रुओं को संहार कर तत्तार के मुंह का पानी उतार और गई भूमि को अपनाकर पृथ्वीराज समरसी जी सहित दिल्ली को वापिस आए। वहां पांच दिन पर्य्यन्त रावलजी की सब भांति से उचित महिमानदारी कर के उन्हें सादर चित्तौर को बिदा किया गया और पृथ्वीराज आप अपनी राजसी का स्वच्छन्द आनन्द उपभोग करने लगे।

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डाकव्यय
लेक मुहम्मद की अखरावट	।=)	) ॥
वेवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	) ॥
न्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	) ॥
मालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	) ॥
मालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	) ॥
व्याकर्तव्यशास्त्र- (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
सूचिका चिकित्सा	।)	) ॥
रश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	) ॥
ावदूगीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	) ॥
लो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	) ॥
रीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	) ॥
दास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
लमिश्र की चन्द्रावती	।-)	) ॥
न कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
ल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
दास की रासपञ्चाध्यायी...	।=)	) ॥
चीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
ोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	) ॥
ल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	) ॥
वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
,, दूसरा-तीसरा भाग (समय १२-५४)	१०)	॥)
मारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	) ॥
ोधर का जंगनामा	॥।)	-)
म्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
ाभा के पुस्तकालय की सूची	=)	) ॥
मनोनि ज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चंद्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	) ॥

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी ...	१॥)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	॥)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥)	-)
विरहलीला-आनन्दघन कृत	=)	)॥
दादूदयाल का सबद	१)	=)
जोधराज का हम्मीररासो	२)	≡)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	⊏)	-)
धनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।